

## विषय सूचि

विषय	पेज नं.
कुरुआन मजीद त्रिलावत करने की फ़ज़ीलत, सूरतुल फातिहा	2
कुरुआन करीम के अन्तिम तीन पारे और उनकी संषिद्धत तफ़सीर	4
मुसल्मान के जीवन के महत्वपूर्ण प्रश्न	71
दिलों के कर्म	88
एक गंभीर ब्रात-चीत	99
ला-इलाहा इलल्लाह की गवाही	117
मुहम्मदुर्सूलुल्लाह की गवाही	119
तहारत	121
हैज़ और इस्तिहाज़ा के मसाएल	126
इस्लाम में औरतों का मुकाम	128
नमाज़	132
ज़कात	138
रोज़ा	142
हज्ज तथा उमा	145
विभिन्न लाभदायक बातें	150
शारई झाड़-फूँक	155
दुआ	162
कुछ अहम दुआएं	164
लाभदायक व्यापार	169
स्वेच्छ-सांझ की दुआएं	171
महान सवाब वाले कथन और कर्म	174
ऐसे काम जिन्हें करना निषिद्ध है	181
सदा के लिए जन्नत या जहन्ज़म की ओर	185
वुजू का तरीका	
नमाज़ का तरीका	
ज्ञान अनुसार कर्म की अनिवार्यता	

## کوڑاں میں تیلواٹ کرنے کی فوجیلٹ

کوڑاں اُن اُنہاں کا کلمہ ہے، اور سارے کلموں سے اپنے جملے اور بढ़کر ہے، اسکی بड़ائی ساری باتوں پر اُسی تراہ ہے جس تراہ اُنہاں کی فوجیلٹ اُسکی سُعْتی پر ہے، مُونھ سے نیکلنے والی تماام باتوں میں سب سے اُنہاں بات اسکی تیلواٹ ہے۔

✿ کوڑاں سیخنے سیخانے اور پढ़نے والوں کی فوجیلٹ میں بہت سی ہدیتوں آرہی ہیں، جن میں سے کوچھ ہدیتوں یہ ہیں :

✿ کوڑاں سیخانے کی فوجیلٹ (سکھا) : نبی ﷺ کا فرمान ہے :

(خَيْرٌ كُمْ مِنْ تَعْلَمَ الْقُرْآنَ وَعَلَيْهِ) “تُو میں بہتر وہ ہے جو کوڑاں سیخے اور سیخائے” (بُوخاری)

✿ کوڑاں پढ़نے کی فوجیلٹ : نبی ﷺ کا فرمान ہے :

(مَنْ قَرَأَ حَرْفًا مِنْ كِتَابِ اللَّهِ فَلَهُ بِهِ حَسَنَةٌ وَالْحَسَنَةُ بِعَشْرِ أَمْثَالِهَا) (عَلَيْهِ) “جس نے اُنہاں کی کتاب کا ایک ہرہ (آنے والے) پढ़ا تو اُس کے لیے اک نکی ہے، اور اک نکی دس گुنہ نہیکیوں کے برابر ہے۔” (تیرمذی)

✿ کوڑاں سیخنے، ڈسے یاد کرنے اور تیلواٹ کی فوجیلٹ : نبی ﷺ کا فرمान ہے :

(مَكْلُ الْيَيْ يَقْرَأُ الْقُرْآنَ وَهُوَ حَافِظٌ لَهُ مَعَ السَّفَرَةِ الْكَرَامِ الْبَرَّةِ وَمَكْلُ الَّذِي يَقْرَأُ وَهُوَ يَتَعَاهِدُ وَهُوَ عَلَيْهِ شَيْدٌ فَلَهُ أَجْرٌ) “عَلَيْهِ

“عَلَيْهِ اُنہاں کی میساں جو کوڑاں پढ़تا ہے اور وہ اُس کا ہافیز بھی ہے، مُوکر رم اور نک لیخنے والے (فارشتوں) جسی ہے، اور جو اُنہاں کوڑاں بار-بار پढ़تا ہے اور اُس کے پढ़نے میں

عَلَيْهِ اُنہاں کوڑاں کی ہوتی ہے تو اُس کے لیے دو گुنا سવاب ہے۔” (بُوخاری و مُسْلِم)

اور نبی ﷺ نے یہ بھی فرمایا :

(يُقَالُ لِصَاحِبِ الْقُرْآنِ: إِنَّمَا وَارِثُهُ وَرَتِيلٌ كَمَا كُنْتَ تُرَتِيلُ فِي الدُّنْيَا فَإِنَّ مَرِيلَكَ عِنْدَ أَخْرَى آيَةٍ تَقْرَأُ بِهَا)

“کوڑاں پढ़نے والے سے کہا جائے گا : کوڑاں پढ़تا جا اور چढ़تا جا، اور اُسی تراہ سے ٹھہر ٹھہر کر پढ़ جسسا کی سانسار میں پढ़ کرتا ہے، کہوںکہ تera مکام اننتیم آیات کے پاس ہے جس سے تُو پढ़ے گا।” (تیرمذی)

خُٹا بُوی کہتے ہیں کہ اس سارے میں یہ بات آرہی ہے کہ : کوڑاں کی آیاتے جننعت کی سیڈھیوں کے برابر ہیں، اُنہیں کاری کو کہا جائے گا : کوڑاں کی جیتنی آیاتے تُو پढ़تا ہے اُسی کے برابر سیڈھیوں پر چढ़تا جا، تو جو پورا کوڑاں پढ़ لے گا وہ آخیزیرت میں جننعت کی سب سے چُنچی سیڈھی پر پہنچ جائے گا، اور جو کوچھ ہیرسا پढ़ے گا وہ اُسی کے برابر سیڈھیوں پر چढ़ے گا، تو سواب کی سیما وہ ہو گی جہاں اُس کی کیرا اُنہاں کا اننت ہو گا۔

✿ عالم ہر کی کا سکھا جیسا کہ بچے نے کوڑاں کی تائیم ہافیز کی : نبی ﷺ کا فرمान ہے :

(مَنْ قَرَأَ الْقُرْآنَ وَتَعْلَمَهُ وَعَمِلَ بِهِ أَلْبِسَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ تَاجًا مِنْ نُورٍ ضَوْءَ الشَّمْسِ، وَيَكُسِّيَ الْوَالَادَ حَلْبَنَ لَا يَقُومُ بِهِمَا الدُّنْيَا فَيَقُولُ: بِمَ كَسِينَا؟ فَيَقَالُ: بِأَخْذِ وَلَدِكَمَا الْقُرْآنَ) الحاکم۔

“جس نے کوڑاں پढ़ا، اُسے سیخا اور اُس کے انہیں اُنمیل کیا تو اُس کے والی دیں کوئی کیا نہ کر سکتی، اُنہیں دو اسے جوडے پہنایا جائے گا جس کی برا باری سانسار نہیں کر سکتی، تو وہ پوچھے گے : یہ ہمے کیس اُنمیل کے کارण پہنایا گیا ہے؟ تو جواب دیا جائے گا : تُو ہماری اُنہاں کے کوڑاں سیخنے کے کارण ہے۔” (ہاکیم)

✿ آخیزیرت میں کوڑاں پढ़نے والوں کے لیے کوڑاں کی شیفاظ : نبی ﷺ کا فرمान ہے :

(اقْرِئُوا الْقُرْآنَ فِيَّ أَيُّنِي يَوْمَ الْقِيَامَةِ شَفِيعًا لِأَصْحَابِهِ) مسلم

اوپر آپ ﷺ نے یہ بھی فرمایا : احمد الحاکم :

(الصَّيَامُ وَالْقُرْآنُ يَشْفَعَانِ لِلْعَبْدِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ) احمد الحاکم

“روزا اور کوڑاں بننے کے لیے کیا نہ کرے گا؟” (احمد اور ہاکیم)

✿ کوڑاں پढ़نے اور سیخنے کے لیے یکٹا ہونے والوں کا سکھا : نبی ﷺ کا فرمान ہے :

(وَمَا اجْتَمَعَ قَوْمٌ فِي بَيْتٍ مِّنْ بُيُوتِ اللَّهِ يَئِلُونَ كِتَابَ اللَّهِ وَيَتَدَارُسُونَهُ بَيْنَهُمْ إِلَّا نَزَّلْتُ عَلَيْهِمُ السَّكِينَةُ  
وَغَشِّيَتْهُمُ الرَّحْمَةُ وَحَفَّتْهُمُ الْمَلَائِكَةُ وَذَكَرْهُمُ اللَّهُ فِيمَنْ عِنْدَهُ) أُبُودَادِ

“जो लोग अल्लाह के घरों में से किसी घर में इकट्ठा होकर अल्लाह की किताब की तिलावत करते हैं, और एक दूसरे को उसका दर्स देते हैं तो उन पर (अल्लाह की ओर) से शान्ति नाज़िल होती है, और रहमत उन्हें ढांप लेती है, और फ़रिश्ते उन्हें घर लेते हैं और अल्लाह तआला अपने पास मौजूद फ़रिश्तों में उनका ज़िक्र फ़रमाता है” (अबूदाऊद)

✿ **कुरुआन की तिलावत के आदाब :** इब्ने कसीर رض ने कई एक आदाब बताए हैं जिन में से कुछ का चर्चा यहाँ किया जा रहा है : **1-** कुरुआन पढ़ने वाला व्यक्ति पाकी के बिना न तो कुरुआन छुए और न पढ़े, **2-** तिलावत करने से पहले मिस्वाक करे, **3-** अच्छा कपड़ा पहने, **4-** का'बा की ओर चेहरा करे, **5-** जमाही आने लगे तो कुरुआन पढ़ने से रुक जाए, **6-** तिलावत करते समय बिना ज़रूरत बात न करे, **7-** ध्यान के साथ पढ़े, **8-** वादे की आयतों पर ठहर कर अल्लाह से मांगे और सज़ा वाली आयतों के पास पनाह चाहे, **9-** कुरुआन खुला हुवा न छोड़े और न ही उस पर कोई चीज़ रखे, **10-** तिलावत करते समय क़ारी एक दूसरे पर अपनी आवाज़ ऊँची न करें, **11-** और बाज़ार, शोर और हल्ला वाली जगह पर कुरुआन की तिलावत न करे।

✿ **कुरुआन की तिलावत कैसे की जाए :** अनस رض से नबी صلی الله علیه و آله و سلم की किराअत के बारे में पूछा गया तो उन्होंने जवाब दिया : आप तिलावत करते समय अपनी आवाज़ को खींचा करते थे, जब आप **بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ** के साथ अपनी आवाज़ को खींचते, **أَرْجِعْهُ** के साथ अपनी आवाज़ को खींचते।

✿ **तिलावत के सवाब का कई गुना बढ़ना :** जो व्यक्ति इख्लास के साथ कुरुआन पढ़ेगा वह सवाब का हक़्कदार है, लेकिन उसका यह सवाब उस समय कई गुना बढ़ जाता है जब वह दिल को ह़ाज़िर करके ध्यान देकर और समझ कर पढ़ता है, तो हर ह़फ्फ (अक्षर) के बदले एक से लेकर सात सौ गुना तक उसे नेकी मिलती है।

✿ **दिन और रात में कुरुआन की तिलावत की मात्रा :** सहाबए किराम رض ने हर दिन के लिए एक हिस्सा मुकर्रर (नियुक्त) कर रखा था, और उनमें से किसी ने सात दिन से पहले कुरुआन ख़त्म करने की पाबन्दी नहीं की, बल्कि तीन दिन से कम में कुरुआन ख़त्म करने से रोका गया है।

इसलिए मेरे भाई कुरुआन की तिलावत के लिए आप अपना समय लगाइए और हर दिन के लिए एक हिस्सा नियुक्त कर लीजिए जिसकी हर हाल में पाबन्दी किजिए, क्योंकि थोड़ा सा काम जिसे बराबर किया जाए ज्यादा करने से बेहतर है जिसकी पाबन्दी न की जाए। यदि आप भूल गए या सो गए तो उसे दूसरे दिन पढ़ लीजिए, आप رض का फ़र्मान है :

(مَنْ نَامَ عَنْ حِزْبِهِ أَوْ عَنْ شَيْءٍ مِّنْهُ فَقَرَأَهُ فِيَّا بَيْنَ صَلَاةِ الْفُجْرِ وَصَلَاةِ الظُّلَمَهُ كُتِبَ لَهُ كَانَمَا قَرَأَهُ مِنْ اللَّهِ)  
“जो अपने मुकर्रर हिस्से या उसमें से कुछ को बिना पढ़े सो जाए फिर उसे अगले दिन फ़ज़्र और ज़ुहू के बीच पढ़ ले तो वह उसके लिए उसी तरह लिखा जाता है गोया कि उसने उसे रात ही में पढ़ी हो” (मुस्लिम)

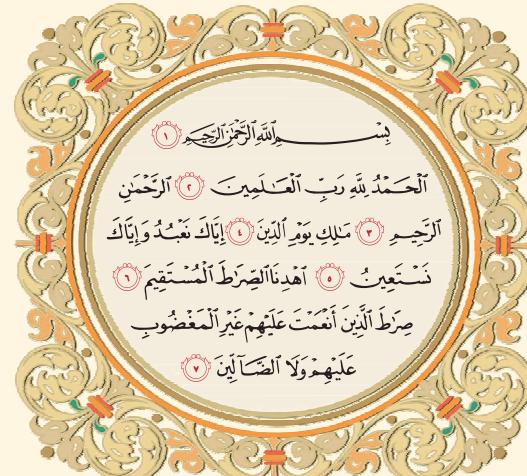
और आप उन में से न होजाएं जिन्होंने कुरुआन को छोड़ दिया या उसे भूला दिया, यह छोड़ना किसी भी प्रकार का क्यों न हो, जैसे तिलावत छोड़ देना, या तर्तील छोड़ देना, या ध्यान न देना, या उसके अनुसार काम न करना, या उस के माध्यम से शिफ़ा न चाहना।

## सूरतुल फातिहा

- १** अल्लाह के नाम से शुरू करता हूँ जो बड़ा मेहरबान  
और रहम करने वाला है।
- २** सब तारीफे सर्व संसार के पालनहार अल्लाह के लिए हैं।
- ३** बड़ा मेहरबान, बहुत रहम करने वाला है।
- ४** बदले के दिन (कियामत) का मालिक है।
- ५** हम तेरी ही इवादत (उपासना) करते और तुझ ही से  
मदद मांगते हैं।
- ६** हमें सीधा (सत्य) रास्ता दिखा।
- ७** उन लोगों का रास्ता जिन पर तू ने इन्हाम किया,  
उन का नहीं जिन पर तेरा ग़ज़ब हुआ और न गुमराहों का।

## सुरतुल मुजादिला । - 58

- शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान बहुत रहम करने वाला है।**
- १** अवश्य अल्लाह तआला ने उस औरत की बात सुनी जो तुझ से अपने शौहर के बारे में झगड़ रही थी <sup>१</sup> और अल्लाह के आगे शिकायत कर रही थी, अल्लाह तआला तुम दोनों के प्रश्न व उत्तर को सुन रहा था <sup>२</sup> अवश्य अल्लाह सुनने देखने वाला है।
- २** तुम मैं से जो लोग अपनी बीवियों से जिहार करते हैं <sup>३</sup>। (अर्थात् उन्हें मां कह बैठते हैं) वह हकीकत में उनकी माएं नहीं बन जातीं <sup>४</sup> उनकी माएं तो वही हैं जिन के पेट से वह पैदा हुए <sup>५</sup>, अवश्य यह लोग ना पासन्दीदा और झूटी बात कहते हैं <sup>६</sup>, वेशक अल्लाह तआला माफ करने वाला और बखशने वाला है <sup>७</sup>।
- ३** जो लोग अपनी पत्नियों से जिहार करें फिर अपनी कहीं हुई बात को वापस ले लें <sup>८</sup> तो उनके जिम्मे आपस में एक दूसरे को हाथ लगाने से पहले <sup>९</sup> एक गर्दन आजाद करना है<sup>१०</sup>, इसके



द्वारा <sup>११</sup> तुम्हें नसीहत की जाती है, और अल्लाह तुम्हारे सभी कामों को जानता है <sup>१२</sup>।

**४** हाँ जो व्यक्ति न पाए उस के जिम्मे एक दूसरे को हाथ लगाने से पहले वो महीनों के लगातार रोजे हैं <sup>१३</sup>, और जिस व्यक्ति को इस की भी ताकत न हो <sup>१४</sup> उस पर साठ गरीबों को खाना खिलाना है <sup>१५</sup>, यह आदेश इस लिए है कि तुम अल्लाह पर और उस के रसूल पर ईमान लाओ <sup>१६</sup>, यह अल्लाह तआला की मुकर्रर की हुई हड्डें (सीमाएं) हैं <sup>१७</sup> और काफिरों के लिए ही <sup>१९</sup> दुखदायी अज़ाब <sup>२०</sup> है।

करना है, चाहे दास हो या दासन, और एक राय यह भी है कि आयत में लौटने का अर्थ ज़िहार के बाद तलाक की ताकत रखने के बावजूद उसे पत्नी बना कर रखना है।

**१०** दोनों के एक दूसरे को हाथ लगाने का अर्थ संभोग करना है, इसलिए ज़िहार करने वाले के लिए उस समय तक सुहृदत करना जायज़ नहीं है जब तक कि वह कफ़क़रा हो दे दे सुहृदत करना जायज़ नहीं।

**११** ऊपर बताए हुए आदेश द्वारा।

**१२** अर्थात् इसी का तुम्हें आदेश दिया जाता है, अथवा इस द्वारा ज़िहार करने से तुम्हें रोका जाता है।

**१३** अर्थात् जिस के पास गुलाम या लौंडी न हो और न ही इतना पैसा हो कि उस से वह कोई गुलाम या लौंडी लेकर आजाद कर सके तो उस पर लगातार दो महीने के रोजे हैं, इन दोनों महीनों में वह एक दिन का भी रोज़ा नहीं तोड़ सकता, और यदि विना किसी मजबूरी के उसने किसी दिन का रोज़ा नहीं रखा तो उसके पछले सभी रोज़े भग बोजाएंगे और उसे फिर से लगातार दो महीने रोजे रखने पड़ेंगे, और यदि उस में या रात में संभोग कर लिया तो भी महीनों के बीच जान बूझ कर दिन में या रात में संभोग कर लिया तो भी रुक्स से फिर यह रोजे रखने पड़ेंगे।

**१४** अर्थात् जिसे लगातार दो महीने रोजे रखने की ताकत न हो।

**१५** हर गरीब को आपा सा'अू गैरू, खजूर, चावल या इसी तरह की कोई दूसरी खाने की चीज़ दे, उन्हें पकाकर खिलाना कि उनका पेट भर जाए या इतना देना जो उनका पेट भर दे दोनों जायज़ है।

**१६** अर्थात् हमने यह आदेश इसलिए दिए हैं ताकि तुम इस बात को स्विकार करो कि अल्लाह ने इसी का आदेश दिया है, और इसी को शरीअत बनाया है इसलिए शरीअत की सीमाओं के पास आकर रुक जाओ और उस से आगे न बढ़ो और फिर दोबारा ज़िहार न करो जो कि नापसन्दीदा और हकीकत के खिलाफ बात है।

**१७** यह बताए हुए आदेश।

**१८** इसलिए तुम इस से आगे न बढ़ो क्योंकि उस ने तुम्हें यह बता दिया कि ज़िहार गुनाह है, और उस का कफ़क़रा जो ऊपर बताया गया क्षमा और बद्धिशः का माध्यम है।

**१९** जो अल्लाह की सीमाओं पर नहीं रुकते।

**२०** अर्थात् जहन्म का अज़ाब है।

**१** अर्थात् वह अपने शौहर के बारे में आप से जो झगड़ा कर रही थी उसे अल्लाह ने सुन लिया। उम्मत मुमिनीन आइशा <sup>१</sup> रिवायत करते हुए फर्माती हैं : बड़ी बर्कत वाला है अल्लाह जो हर चीज़ सुन लेता है, मैं खोने विना साँलबा की बात जो अपने शौहर के बारे में नवी <sup>२</sup> से कह रही थी सुन रही थी, कुछ बातें मैं नहीं सुन पारही थीं, वह अल्लाह के रसूल से अपने शौहर की शिकायत कर रही थीं और कह रही थीं : “अल्लाह के रसूल के बारे में वह मेरी जावानी खाया, मैं ने अपना पेट उन के लिए फैलाया यहाँ तक कि जब मेरी उम्र ढल गई और बच्चे होने वन्दे होए तो उन्होंने मुझ से जिहार कर लिया, ऐ अल्लाह! मैं तुम्हे से शिकायत करती हूँ।” आइशा फर्माती हैं अपनी वह आप के पास से हड्डी भी नहीं थीं कि जिब्रिल वस्त्र लेकर उत्तर : उनके शौहर एक अन्सारी सहायी थे जिन का नाम औस बिन सामित था।

**२** अल्लाह तुम दोनों का झगड़ा सुन रहा था।

**३** ज़िहार का मृत्युलव है आदमी का अपनी बीवी से कहना :

(أَنْتَ عَلَىٰ كُفَّارِ مَوْلَانِي <sup>४</sup>) (तू मूझ पर मेरी मां की पीठ की तरह है)। इस के ज़िहार होने में कई विवाद नहीं है।

**४** अर्थात् उनकी पत्नियों उनकी माएं नहीं हो जाती हैं, यह उनकी ओर से झूटी बात है, इस में ज़िहार करने वालों के लिए फ़टकार है।

**५** उनकी माएं तो मात्र वही हैं जिन्होंने उन्हे जन्म दिया है।

**६** यकीनन ज़िहार करने वाले यह कह कर कि उनकी बीवीयां उनकी मां समान हैं बहुत ही नापसन्दीदा बात कह रहे हैं, यह उनकी माताओं के लिए बहुत अपमान जनक बात है।

**७** ज़ूर का झार्थू है : हकीकत के खिलाफ बात।

**८** एवं घूर्फ़ दोनों मुबालगा के सेरे हैं, अर्थात् वह बहुत ही ज्यादा क्षमा करने वाला और बख्शने वाला है, क्योंकि उसने कफ़क़रा के जरिए इस नापसन्दीदा बात से छुटकारे का रास्ता पैदा कर दिया।

**९** अर्थात् जो बात उन्होंने कही थी उसे वापस लेकर अपनी पत्नी से संभाग करना चाहै।

**१०** तो उस बात के कारण जो उन्होंने कही उन पर एक गर्दन आजाद

## بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

قَدْ سَعَى اللَّهُ قَوْلَ الَّتِي تَبَعَّدُكُ فِي زَوْجَهَا وَنَشَّكَ إِلَى اللَّهِ  
وَاللَّهُ يَسْمَعُ تَحَاوُرَكُمَا إِنَّ اللَّهَ سَمِيعٌ بَصِيرٌ ۝ ۱ ۲  
مِنْكُمْ مَنْ يَسْأَبِهِمْ مَا هُنَّ أَمْهَنُهُمْ إِلَّا أَنَّهُ  
وَلَدَنَهُمْ وَإِنَّهُمْ لِيَقُولُونَ مُنْكَرًا مِنَ الْقَوْلِ وَزُورًا وَإِنَّ  
اللَّهَ لَعُوقٌ عَفُورٌ ۝ ۳ ۴ وَالَّذِينَ يَظْهَرُونَ مِنْ يَسَّأَهُمْ كُمْ يَعُودُونَ  
لِمَا قَالُوا فَتَحَرِّرَ رَبَّهُ مِنْ قَبْلِ أَنْ يَتَمَاسَّ ذَلِكُمْ نُوعَطُونَ  
يَهُ وَاللَّهُ يُعَاتِمُ الْمُلُوْكَ خَيْرٌ ۝ ۵ فَنَّ لَمْ يَمِدْ فَصِيَامَ شَهْرَيْنَ  
مُتَنَاعِيْنَ مِنْ قَبْلِ أَنْ يَتَمَاسَّ فَمَنْ لَمْ يَسْتَطِعْ فِي طَعَامِ سِتِّينَ  
مِشْكِنَاتِ ذَلِكَ لِتُؤْمِنُوا بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ وَنَلَكَ حُدُودُ اللَّهِ  
وَلِلْكُفَّارِ عَذَابٌ أَلِيمٌ ۝ ۶ إِنَّ الَّذِينَ يُحَادِثُونَ اللَّهَ وَرَسُولَهُ كُفُّارٌ  
كَمَا كَيْتَ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ وَقَدْ أَنْزَلْنَاهُمْ بَيْنَنِتَ وَلِلْكُفَّارِ  
عَذَابٌ مُهِينٌ ۝ ۷ يَوْمَ يَعْثِمُ اللَّهُ جَمِيعًا فِي شَهْمِهِمْ بِمَا  
عَمِلُوا أَحْصَنَهُ اللَّهُ وَنُسُوهُ وَاللَّهُ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ شَهِيدٌ ۝ ۸

**5** बेशक जो लोग अल्लाह और उसके रसूल की मुख्यालफत करते हैं वह अपमानित किए जाएंगे, जैसे उन से पहले के लोग किए गए थे, और बेशक हम खुली आयतें उतार रहे हैं और काफिरों के लिए ज़लील करने वाला अज़ाब है।  
**6** जिस दिन अल्लाह उन सब को दोबारा उठाएगा, फिर उन्हे उनके किए हए अमल की जानकारी देगा, जिसे अल्लाह ने गिन रखा है, और जिसे यह भूल गए थे, और अल्लाह तआला हर चीज से अवगत (बाख्वर) है।  
**7** क्या तू ने नहीं देखा कि अल्लाह आकशों और धरती की हर चीज को जानता है, तीन व्यक्तियों की कानाफूसी नहीं होती मगर अल्लाह उनका चौथा होता है, और न पाँच की

मगर वह उनका छठा होता है, और न उस से 11 कम की और न उस से ज्यादा की मगर वह उनके साथ ही होता है जहां भी वह हों 13 फिर कियामत के दिन उन्हें उनके अमल की जानकारी देगा 14, अवश्य अल्लाह हर चीज का जानकार है।  
**8** क्या तूने उन लोगों को नहीं देखा जिन्हें कानाफूसी से रोक दिया गया था? 15 वह फिर भी उस मना किए हुए काम को दोबारा करते हैं, और आपस में पाप की 16 और नाइंसाफी की और रसूलों की नाफरमानी की 17, कानाफूसियां करते हैं। और जब तेरे पास आते हैं तो तुझे उन शब्दों में सलाम करते हैं, जिन शब्दों में अल्लाह ने नहीं कहा 18, और अपने दिल में 19 कहते हैं कि अल्लाह (तआला) हमें हमारे इस कहने पर सजा क्यों 20? उनके लिए नरक काफी है 21, जिसमें ये जाएंगे 22, तो वह कितना बुरा ठिकाना है 23।  
**9** हे ईमानवालो! जब तुम कानाफूसी करो तो यह कानाफूसी पाप, उदण्डता और रसूल की नाफरमानी की न हो 24, बल्कि नेकी और तक्वा की बातों पर कानाफूसी करो 25, और उस अल्लाह से डरते रहो जिसके पास तम सब इकट्ठा किए जाएंगे 26।  
**10** कानाफूसी 27 तो शैतान का काम है 28, जिस से ईमान वालों को दुःख हो 29, परन्तु अल्लाह की मर्जी बिना वह

जाहिर सभी को जानता है उस से कोई भी बात छिपी नहीं रहती।

11 अर्थात उल्लिखित संख्या से न कम, जैसे एक और दो, और न ही उस से ज्यादा, जैसे छः और सात।

12 अर्थात वह जो कानाफूसी करते हैं उसे उसका ज्ञान होता है, उस में से कोई भी चीज उस से छुपी नहीं रहती।

13 अर्थात जिस जगह भी हो।

14 जानकारी देगा ताकि वह जान लें कि उनकी कानाफूसियां उस से छुपी नहीं थीं, और ताकि उस का बताना उन लोगों के लिए फटकार हो जो दुर्दृशी और नाहक कानाफूसीयां करते हैं। और उनके खिलाफ प्रमाण और हज्जत हो।

15 यहूद के पास से कोई मुसलमान गुज़रता तो वह आपस में कानाफूसी करने लगते यहां तक कि मुसलमान बुरा गुमान करने लगता तो अल्लाह तआला ने उन यहूदियों को ऐसा करने से रोका लेकिन वह नहीं रुके तो यह आयत उत्तरी।

16 अर्थात ईमानवालों की पीठ पीछे दुराई करना उन्हें तकलीफ देना और इसी तरह की चीजें जैसे : इट और अन्याय वाली कानाफूसियां।

17 अर्थात अल्लाह के रसूल विरोधी कानाफूसियां।

18 इस से मुराब यहूद हैं वे जब नवी 20 के पास आते तो अस्सलामु अलैकुम व रहमतुल्लाह न कर कर अस्सामु अलैक (अर्थात : तुम पर मौत आए) कहते, और जाहिर यह करते कि वह आप को सलाम कर रहे हैं, पर उनके हृदय में यह द्वैता कि आप की मृत्यु हो, इसके जवाब में नवी 21 मात्र (व अलैकुम) कहते। (अर्थात तुम ने जो कहा वह तुम्हे ही आए।)

19 अर्थात आपस में।

20 अर्थात यदि मुहम्मद अवश्य नवी होते, तो उनके बारे में हमारी अपमान जनक बातें करने पर अल्लाह हमें ज़रूर अज़ाब देता। और एक राय अनुसार इसका अर्थ यह है कि यदि वह नवी होते तो हमारे बारे में जो वह (व अलैकुम) कहते हैं ज़रूर कबूल किया जाता और उसी समय हमें मौत आ जाती।

21 अर्थात उन्हें तुरन्त मारने और हलाक करने के बजाए अज़ाब के लिए नरक ही काफी है।

22 अर्थात धूसेंगे।

23 मसीर का अर्थ ठिकाना है। और वह नरका है।

24 जैसा कि यहूद और मनाफिकीन किया करते हैं।

25 अर्थात फरमावदरी की और पाप न करने की कानाफूसी किया करो।

26 और वह तुम्हारे आमाल का बदला देगा।

27 अर्थात पाप, अन्याय और रसूल की नाफरमानी की कानाफूसियां।

28 शैतान की ओर से है किसी और की तरफ से नहीं, वहीं उन चीजों की सुन्दर बनाकर लोगों पर पेश करता और उन्हें गुप्ता करता है।

29 ताकि वह ईमानवालों को भ्रम में लाकर दृष्टिकोण साज़िशें हो रही हैं।

30 अर्थात शैतान उन्हें कोई नुकसान नहीं पहुँचा सकता, अथवा यह कानाफूसियां जो जिन्हें वह सुन्दर बनाकर पेश करता है ईमान वालों को कुछ

1 मुहाद्दद का अर्थ दुश्मनी और मुख्यालफत के हैं।

2 यह उसी तरह अपमानित किए जाएंगे जैसे उन से पहले के लोग किए गए थे।

3 एक साथ एक ही हालत में उठाया, कोई ऐसा नहीं बचेगा जो न उठाया जाए।

4 अर्थात वह उन्हें उनके धिनाउने कर्तृत से जो उन्होंने दुनिया में किए उन्हें अवगत करे ताकि उन पर दलील पूरी होजाए।

5 अल्लाह ने उन सब को मिन्ती कर रखवायी है ऐसा नहीं होगा कि कोई छूट जाए।

6 जैसे वह लोग भूल चुके हैं उसे भी वह लोग मौजूद और अपने नामए आमाल में लिखा हुआ पाएंगे।

7 अर्थात हर चीज से बाख्वर है क्योंकि सभी चीजें उस की नजरों के सामने हैं।

8 उस का ज्ञान आकशों और धरती की सारी चीजों को धेरे हैं, इस तरह से कि इन दोनों में जो चीज़ें भी हैं उन में से कोई भी उस से छुपी नहीं है।

9 जो इस कानाफूसी को जानने में उनका साझी होता है।

10 क्योंकि वह हर संख्या के साथ होता है कम हो या ज्यादा, छिपे और

उन्हे कोई नुकसान नहीं पहुँचा सकता, और ईमानवालों को चाहिए कि अल्लाह ही पर भरोसा रखें।

**11** हे ईमानवालो! जब तुम से कहा जाए कि सभाओं में थाड़ा फैल कर बैठो, तो तुम जगह कुशादा करदो<sup>2</sup>, अल्लाह तुम्हें कुशादी (विस्तार) देगा<sup>3</sup>, और जब कहा जाए उठ खड़े होजाओ, तो तुम उठ खड़े होजाओ<sup>4</sup>, अल्लाह तुम में से उन लोगों के जो ईमान लाए हैं और जो इल्म दिए गए हैं पद ऊँचे कर देगा<sup>5</sup>, और अल्लाह तआला हर उस काम को जो तुम कर रहे हो अच्छी तरह जानता है।

**12** हे मोमिनो! जब तुम अकेले में रसूल से बात करना चाहो, तो अपनी इस अकेले में बात करने से पहले कछ दान कर दिया करो<sup>6</sup>, यह<sup>7</sup> तुम्हारे हक्क में अच्छा है और पाक है<sup>8</sup>, हाँ यदि न पाओ तो अवश्य अल्लाह माफ करने वाला रहस करने वाला है<sup>9</sup>।

**13** क्या तुम अपनी अकेले की बातों से पहले दान करने से डर गए<sup>10</sup>? तो जब तुम ने यह न किया<sup>11</sup> और अल्लाह

नुकसान नहीं पहुँचा सकती, परन्तु यदि अल्लाह की यही मर्जी हो।

**1** अर्थात ईमान वाले अपने सभी काम अल्लाह के हवाले करवें, अल्लाह से शैतान की पानाह चाहें और उन कानाफूसियों की यकदम परवाह न करें जिन्हे वह सुन्दर बनाकर पेश करता है। बुखारी और मुस्तिम वैयराह ने इन्हे मस्त्र द से रिखायत किया है कि अल्लाह के रसूल ने फरमाया : “जब तीन लोग हों तो उनमें से दो आदमी तीसरे को छोड़कर कानाफूसी न करें क्योंकि यह चीज उसे दुःखित और उदास कर देगी।

**2** इसमें अल्लाह तआला ने अच्छे अदब की शिक्षा दी है कि वह सभा में एक दूसरे के लिए फैलाव पैदा करें और उसमें तीनी न करें। कतादा और मुजाहिद कहते हैं, वह नवी<sup>12</sup> की सभा में एक दूसरे से आगे बढ़ने की कोशिश करते थे, तो उहें आदेश मिला कि वे खुल कर बैठें, अर्थात् सभा का दायरा फैला हुआ रखें ताकि पीछे आने वालों के लिए बैठने की जाह रहे।

**3** अर्थात् तुम फैलाव पैदा करो अल्लाह जन्म में तुम्हें कुशादी अत करेगा, और यह हर उस सभा को शामिल है जिस में मुसलमान भलाई और नेकी हासिल करते हैं इकट्ठा हुए हों, जना का सभा हो या जिक्र का अनुकर और जुमाया का, हर व्यक्ति अपनी उस जगह का जायदा डक्कार है जहाँ वह पहले से बैठा हो, लेकिन उसे चाहिए कि वह अपने भाई के लिए कुशादी पैदा करे, नवी<sup>13</sup> से मरवी है कि आप ने फरमाया : لا يَقِيمُ الرَّجُلُ الرَّجُلَ مِنْ جِلْسِهِ تَحْسِلُ فِيهِ وَلَكِنْ تَقْسِحُوا وَتَوْسِعُوا

“कोई व्यक्ति किसी दूसरे व्यक्ति को उसकी जगह से उठाकर न बैठें, लेकिन तुम कुशादी और फैलाव पैदा करो।”

**4** अर्थात् जब सभा में बैठने वालों से अपनी जगह से उठ जाने के लिए कहा जाए ताकि उस जगह जानी और प्रतिष्ठित व्यक्ति बैठ सकते तो उहें उठ जाना चाहिए।

**5** अर्थात् जो तुम में जानी हैं अल्लाह उनके पद ऊँचे कर देगा, अर्थात् संसार में प्रतिष्ठा देगा और अधिकार में सवाब देगा और पद ऊँचा करेगा, तो जो व्यक्ति मौमिन हो और जानी भी हो तो अल्लाह उसके ईमान के कारण उसके पद ऊँचा करेगा। फिर उसके ज्ञान के कारण उसके पद अधिक ऊँचा करेगा।

**6** इसका अर्थ यह है कि जब तुम अपने किसी काम में अल्लाह के रसूल से अकेले में बात करना चाहो तो अपनी इस अकेले की बात से पहले दान और सदका कर दिया करो, अल्लाह तआला ने यह आयत उतारी तो ब्राह्मणारी कानाफूसी करने से रुक गए, इसका कि वह अपनी कानाफूसियों से पहले सदका नहीं कर सकते थे, और यह चीज़ मूमिनों के लिए भी परेशानी का कारण हो गई और उहें भी अकेले बात करने से रुक जाना पड़ा; क्योंकि उनमें से बहुत से लोग ग्राहित थे, सदका नहीं कर सकते थे, तो इसके बाद वाली आयत उतार कर अल्लाह ने उनके लिए आसानी कर दी।

**7** अर्थात् अकेले बात करने से पहले सदका करना।

**8** क्योंकि इसमें अल्लाह के आदेश का पालन है।

**9** अर्थात् उनमें से पास का कुछ भी है करने के लिए न हो तो सदका किए बिना भी अकेले में बात कर सकता है, ऐसा करने से वह पापी नहीं होगा।

**10** अर्थात् क्या तुम अकेले में बात करने से पहले सदका करने के कारण फक्कीर से डर गए, मुकाबिल कहते हैं, यह आदेश मात्र दस रातों तक

الَّمَّا تَرَأَنَ اللَّهَ يَعْلَمُ مَا فِي السَّمَاوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ مَا يَكُونُ  
مِنْ نَجْوَىٰ ثَلَاثَةٍ إِلَّا هُوَ رَابِعُهُمْ وَلَا حَسَنَةٌ إِلَّا هُوَ سَادِسُهُمْ  
وَلَا أَدْفَنَ مِنْ ذَلِكَ وَلَا كَرِّ إِلَّا هُوَ مَعْهُمْ إِنَّمَا تَنْوِيمُ  
بِمَا عَمِلُوا يَوْمَ الْقِيَمَةِ إِنَّ اللَّهَ يَعْلَمُ شَيْءًا عَلَيْمٌ **٧** إِنَّمَا تَرَىَ اللَّهَ  
هُوَ عَنِ النَّجْوَىٰ مَمْ بَعُودُونَ لِمَا هُوَ عَنْهُ وَيَنْجُونَ بِالْأَئْمَرِ  
وَالْعَدُونَ وَمَعْصِيَتُ الرَّسُولِ وَإِذَا جَاءُوكَ حَيْوَكَ مَا يَعْلَمُكَ  
بِهِ اللَّهُ وَيَقُولُونَ فِي أَنفُسِهِمْ لَوْلَا يَعْلَمُ اللَّهُ بِمَا نَوْفُلُ حَسْبُهُمْ  
جَهَنَّمُ يَصْلُوْنَهَا إِنَّمَا يَصْلُوْنَهَا إِنَّمَا يَأْتِيهَا الَّذِينَ  
تَسْجِيْمُ فَلَا تَنْجُونَ بِالْأَئْمَرِ وَالْعَدُونَ وَمَعْصِيَتُ الرَّسُولِ وَنَجْوَىٰ  
بِالْأَرْبَرِ وَالْقَنْوَىٰ وَأَنْقَوَا إِلَيْهِ شَعْرُونَ **٨** إِنَّا النَّجْوَىٰ  
مِنَ الشَّيْطَنِ لَيَحْزُنَنَّ إِلَيْهِ الَّذِينَ إِمَانُوا وَلَيَسْ بِضَارِّهِمْ شَيْئًا  
إِلَيَّا يَدِنَّ إِلَيْهِ وَعَلَىَ اللَّهِ فَلِيَسْوُكَ الْمُؤْمِنُونَ **٩** إِيَّاكَ يَا إِلَيْهِ  
إِمَانُوا إِذَا قِيلَ لَكُمْ نَفْسَهُو فِيْنَ الْمَجَالِسِ فَاقْسِحُوهَا يَسْعَ  
الَّهُ لَكُمْ وَإِذَا قِيلَ أَنْشُرُوا فَانْشُرُوا يَرْفِعَ اللَّهُ الَّذِينَ إِمَانُوا  
مِنْكُمْ وَالَّذِينَ أُوتُوا الْعِمَدَ رَحِيْمٌ وَلَلَّهُ بِمَا عَمَلُونَ حَسْبُهُ **١١**

ने भी तुम्हें माफ कर दिया<sup>12</sup>, तो अब परिपूर्ण नमाजों को कायम रखो, जकात देते रहा करो और अल्लाह और उसके रसूल की फरमांबदारी करते रहो<sup>13</sup>, तुम जो कुछ करते हो उन सब से अल्लाह अच्छी तरह अवगत (बाखबर)<sup>14</sup> है।

**14** क्या तुम ने उन लोगों को नहीं देखा जिन्होंने ने उस समुदाय से दोस्ती की<sup>15</sup> जिन पर अल्लाह गुस्सा हो चुका है<sup>16</sup>, न ये मुनाफिक तुम्हारे ही हैं न उन के हैं<sup>17</sup>, और जानने के बावजूद ये झूट पर कस्मे खा रहे हैं<sup>1</sup>।

रहा फिर उठा लिया गया।

**11** अर्थात् अकेले में बात करने से पहले जिस सदके का तुम्हें आदेश मिला है उसके भारी होने के कारण जब तुमने उसे नहीं किया।

**12** और अल्लाह ने तुम्हें माफ कर दिया इस तरह से कि सदका न करने की तुम्हें छूट दी थी।

**13** अर्थात् अकेले में बात करने से पहले सदका करने को यदि तुम बोझ समझ रहे हो तो नमाज कायम करने, जकात देने और अल्लाह और उस के रसूल की फरमांबदारी और उनके आदेशों का पालन करो।

**14** अर्थात् वह तुम्हें उसका बदला देने वाला है।

**15** से मुनाफिकों नुसाद हैं।

**16** और (الَّذِينَ تَوْلَمُونَ) से मुराद यहूद हैं, अर्थात् मुनाफिकों ने यहूद से दोस्ती की।

**17** (مُبَدِّلُونَ بَيْنَ ذَلِكَ وَلَا إِلَيْهِ فُلُؤْدَةٌ) जैसा कि अल्लाह ने उनके बारे में फरमाया।

**18** अर्थात् अल्लाह तआला ने उनके बारे में कहा है कि यह यहूद हों, और अर्थात् अल्लाह मिमानों से कहा है कि यहूदी तुम में से नहीं हैं और न मुनाफिकों उन में से हैं, तो मुनाफिकों उन में से दोस्ती क्यों नहीं कर लेते।

**19** अर्थात् जिस बात पर वह कस्मे खा रहे हैं उस के बातिल होने के बारे में

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذَا نَذَّرْتُمُ الرَّسُولَ فَقَدِمُوا بَيْنَ يَدَيْنِكُمْ  
صَدَقَةً ذَلِكَ خَيْرٌ لَّكُمْ وَأَطْهَرُ فَإِنْ لَمْ يَمْهُدوْ فَإِنَّ اللَّهَ عَفُورٌ رَّحِيمٌ  
أَشَفَّنُمْ أَنْ تُقْدِمُوا بَيْنَ يَدَيْنِكُمْ صَدَقَتْ فَإِذَا مَا تَفَعَّلُوا  
وَتَابَ اللَّهُ عَنْكُمْ فَأَقِيمُوا الصَّلَاةَ وَامْتَأْنُوا الزَّكُورَةَ وَأَطْبِعُوا اللَّهَ  
وَرَسُولُهُ وَاللَّهُ خَيْرٌ يَمْأَلُونَ ١٣

غَضَبَ اللَّهُ عَنْهُمْ مَا هُمْ مِنْ كُلٍّ وَلَا مِنْهُمْ وَيَحْلِفُونَ عَلَى الْكَذِبِ  
وَهُمْ يَعْلَمُونَ ١٤ أَعَدَ اللَّهُ هُمْ عَذَابًا شَدِيدًا إِنَّهُمْ سَاءُ مَا كَانُوا  
يَعْمَلُونَ ١٥ أَخْدُوْ أَيْمَنَهُمْ جَنَّةً فَصَدُّوْ عَنْ سَيْلِ اللَّهِ فَاهُمْ  
عَذَابٌ مُّهِينٌ ١٦ لَّنْ تَغْنِيَ عَنْهُمْ أُمُوْلُهُمْ وَلَا أُولَادُهُمْ مِنْ اللَّهِ  
شَيْئًا أَوْ لِئَكَ أَصْحَبُ النَّارِ هُمْ فِيهَا خَدِيلُونَ ١٧ يَوْمَ يَعْثُرُونَ  
اللَّهُ جَيْعَانًا فَيَحْلِفُونَ لَهُ كَمَا يَحْلِفُونَ لَكُمْ وَرَحْسَبُونَ أَنَّهُمْ عَلَى شَيْءٍ أَلَا  
يُهْمِمُهُمُ الْكَذِبُونَ ١٨ اسْتَحْوِذُ عَلَيْهِمُ الشَّيْطَنُ فَأَنْسَاهُمْ ذَكْرَ  
اللَّهِ أَوْ لِئَكَ حِزْبُ الشَّيْطَنِ أَلَا إِنْ حِزْبَ الشَّيْطَنِ هُمُ الْخَسِيرُونَ  
إِنَّ الَّذِينَ يَحْمَدُونَ اللَّهَ وَرَسُولَهُ أَوْ لِئَكَ فِي الْأَذَلِينَ ١٩  
كَتَبَ اللَّهُ لَأَغْلَبَكَ أَنَا وَرَسُولِي أَنَا اللَّهُ قَوْيٌ عَزِيزٌ ٢٠

**15** अल्लाह ने उन के लिए कठोर अज़ाबा तैयार कर रखा है  
और अवश्य ये लोग जो कुछ कर रहे हैं<sup>3</sup> बुरा कर रहे हैं।

**16** इन्होंने तो अपनी कस्मों को ढाल बना रखा है<sup>4</sup>, और  
लोगों को अल्लाह के रास्ते से रोकते हैं<sup>5</sup>, तो इनके लिए  
अप्रमाणजनक अज़ाबा है<sup>6</sup>।

**17** उनके माल और उनकी ऐलाद अल्लाह के यहाँ कुछ  
काम न आएंगे, यह तो जहन्मी हैं, सदा ही उस में रहेंगे।

**18** जिस दिन अल्लाह हतआला उन सब को उठा खड़ा करेगा  
तो यह जिस तरह तुम्हारे सामने कस्में खाते हैं<sup>7</sup> अल्लाह हतआला  
के सामने भी कस्में खाने लगेंगे<sup>7</sup> और समझेंगे कि वे भी किसी

- वह जानते हैं, और जानते हैं कि वह इट है उस की कोई वास्तविकता नहीं।
- अर्थात् कर्में खा खा कर कह रहे हैं कि वह मुसलमान हैं, अथवा वे कर्में खा खा कर कह रहे हैं कि उन्होंने ने यद्यपियों को खेबों में नहीं बताई है।**
- इस दोस्ती और बातिल पर उन के कसम खाने के कारण।**
- बुरे कर्तृतों में से।**
- यह वही इट है जिस पर कुफ के कारण क़तल कर दिए जाने से बचने के लिए वे कर्में खा खा कर कहते थे कि वे मुसलमानों में से हैं, अपने उन कस्मों को उन्होंने अपने लिए ढाल और बचाव का माध्यम बना लिया था, चुनावें कतल किए जाने से बचने के लिए जुबान द्वारा ईमान रखार करते जबकि उन के लिए मोर्हिन नहीं होते थे।
- अर्थात् वे लोगों को अपनी इन करतूतों के कारण इस्लाम से रोकते हैं।**
- जो उहें अपमानित कर देगा।**
- अर्थात् वे इट पर क्रियात्मक दिन अल्लाह के सामने अल्लाह की कर्में खाएंगे जैसे कि वे तुम लोगों से संसार में कर्में खाते हैं। और कहेंगे कसम है अल्लाह की ऐ ए हमारे रब हमें यह नहीं किया, और यह**

प्रमाण पर हैं<sup>8</sup>, यकीन करो कि अवश्य वही झूटे हैं,  
**19** उन पर शैतान ने गुल्बा हासिल कर लिया है<sup>9</sup>, और  
उनसे अल्लाह का जिक्र भुला दिया है<sup>10</sup> यह शैतानी सेना है<sup>11</sup>  
कोई शक नहीं कि शैतानी सेना ही धारा उठाने वाला है<sup>12</sup>।  
**20** अवश्य अल्लाह तआला और उसके रसूल के जो विरोधी  
हैं वही लोग अधिक अपमानितों में हैं<sup>13</sup>।  
**21** अल्लाह तआला लिख चुका है<sup>15</sup> कि अवश्य मैं और  
मेरे रसूल ही विजयी रहेंगे, यकीनन अल्लाह तआला ताक़तवर  
और ग़ालिब है<sup>16</sup>।  
**22** अल्लाह तआला पर और कियामत के दिन पर ईमान  
खबन वालों को आप अल्लाह और उसके रसूल के विरोधियों के  
साथ महब्बत रखने हुए कभी भी नहीं पाएंगे<sup>17</sup> चाहे वे उनके  
पिता, या पुत्र, या भाई, या समुदाय के सम्बन्धी ही क्यों न हों<sup>18</sup>,  
यही लोग हैं<sup>19</sup> जिन के दिलों में अल्लाह ने ईमान को  
लिख दिया है<sup>20</sup>, और जिन की पुष्टि अपनी रुह से की है<sup>21</sup>,  
और जिन्हें उन जन्तों में प्रवेश करेगा जिन के नीचे नहरे बह  
रही हैं, और जहां यह सदा रहेंगे, अल्लाह उन से खुश है<sup>22</sup>  
और यह अल्लाह से खुश है<sup>23</sup>, यही अल्लाह के सेना है<sup>24</sup>,  
और जान लो कि अवश्य अल्लाह के सेना ही सफल है<sup>25</sup>,

उनकी बहुत ही बड़ी बद बख़्ती होगी क्योंकि कियामत के दिन हकीकतें स्पष्ट हो जाएंगी, और मसले देखकर जान लिए जाएंगे।

<sup>8</sup> अर्थात् वे यह समझेंगे कि कियामत के दिन भी इन छुटी कस्मों के द्वारा कुछ लाभ उठा लेंगे या किसी घटे से बच जाएंगे जैसे वे संसार में छुटी कस्मों के द्वारा कष्ट देर के लिए कुछ लाभ उठा लिया करते थे।

9 अर्थात् उन पर शैतान ने ग़लबा पा लिया है और उन्हे धेरे में ले लिया है।  
10 तो उन्होंने अल्लाह के आदेशनुसार काम करना छोड़ दिया।

11 अर्थात् यही उसके अनुकारी हीं उस के ग्रुप के लोग हैं।  
 12 क्योंकि उहनोंने जन्म का जहन्नम से, हिंदायत का गुमराही से सौदा कर लिया है, और अल्लाह और उस के नबी के बारे में झटी बातें कहीं हैं, और

**झूठी कर्मों खाल हैं, वह दुनिया और आधिकार दोनों में घाटे में रहेंगे।**  
**१३ अल्लाह और उस के रसूल से विरोध करने का अर्थ इस सूरत के श्रूति में बीत चुका है।**

<sup>14</sup> यह भी उन्हीं लोगों में से हैं जिन्हें अल्लाह दुनिया और आखिरत दोनों में अपमानित करेगा।

**अर्थात् अल्लाह अपने पिछ्ले ज्ञान की रोशनी में यह निर्णय कर चुका है कि मैं और मेरे रसुल ही प्रमाण तथा ताकत में गालिब रहेंगे।**

**16** अर्थात् अपने औलिया की सहायता पर कादिर और शत्रुओं पर गालिब है उसे कोई पछाड़ नहीं सकता।

<sup>17</sup> अथात तुम मामना को एस लगा से जिन्हान अल्लाह और उस के रसूल से दुश्मनी और विरोध कर रखा हो, दोस्ती करने वाला नहीं पाओगे।  
<sup>18</sup> ऐसी अप्राप्त और यादे याद से दूधारी करो यादे सेही यादे यादों के

<sup>10</sup> गाच अल्लाह आर उसक रसूल स दुश्मना करन वाल, दास्ता करन वाला क बाप ही हों; क्योंकि ईमान उन्हें इस से रोकता है, और ईमान का पास रखना पिता पन शर्व और सम्पदाय के समर्थनों का पास रखने से मनवत है।

<sup>19</sup> अर्थात् जो लोग उन लोगों से दोस्ती नहीं करते जिन्होंने अल्लाह और उस के रसुल से विरोध किया है।

**20** **کتب** کا ار्थ **انبیاء** ہے : (پुڑھا کر دیا) اور اک ویچار یہ ہے کہ اسکا ار्थ ہے : (کر دیا)، اور اک ویچار کے انہاسار اسکا ار्थ

21 अर्थात् उन के दुश्मनों पर उनकी सहायता करके संसार में उन्हें ताकत बख्खी है, और अपनी इस सहायता का नाम रुह रखा है; क्योंकि

**इसी सहायता द्वारा उनके मसले में जीवन आता है।**  
**22 अर्थात् उसने उनके कर्मों को स्वीकार कर लिए हैं और उन पर**

<sup>23</sup> और वे उन चीजों से खुश हैं जो अल्लाह ने उन्हें दुनिया और

**आखिरत में दिए हैं।**  
**24** यही लोग अल्लाह के सेना हैं जो उसके आदेशों का पालन करते हैं,

**उसके दशमर्ने से लड़ते हैं और उसके दोस्तों की सहायता करते हैं।**  
**25 अर्थात् दुनिया और आखिरत में सफलता उन्हें मिलने वाली है, इन्हे अबी**

## सूरतुल हक्श - 59

श्रु करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहबून बहुत रहम करने वाला है।

**१** आकाशों और धरती की हर चीज़ अल्लाह की तस्वीह (प्रवेत्रता) बयान करती है, और वह गालिब हिक्मत वाला है।  
**२** वही है जिसने अल्ले किताब में से काफिरों को <sup>१</sup> उनके घरों से, पहले हक्श के समय निकाला, तुम्हारा गमान भी न था कि वे निकलेंगे <sup>२</sup> और वे स्वयं इस भ्रम में थे कि उनके मजबूत किले उन्हें अल्लाह के अज़ाब से बचा लेंगे <sup>३</sup>, तो उन पर अल्लाह का अज़ाब ऐसी जगह से आ पड़ा कि उन्हें गमान भी न था <sup>४</sup> और उनके दिलों में अल्लाह ने भय डाल दिया, वे अपने घरों को स्वयं अपने ही हाथों से उजाड़ रहे थे, और मुसलमानों के हाथों बर्बाद करवा रहे थे <sup>५</sup>, तो ऐ आँखों वालों! नरीहत हासिल करो <sup>६</sup>।

**३** और यदि अल्लाह तआला उन पर देश-निकाला न लिखा होता तो अवश्य उन्हें संसार ही में अज़ाब देता <sup>८</sup>, और

لَا تَجِدُ قَوْمًا يُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَالْيَوْمَ أَلَّا خَرِيُّوْدُورَكَ مَنْ حَادَ اللَّهَ وَرَسُولَهُ، وَلَوْكَأَلْوَاءَبَاءَهُمْ أَوْبَاءَهُمْ أَوْ إِحْرَانُهُمْ أَوْ عَشِيرَتَهُمْ أُولَئِكَ كَتَبَ فِي قُلُوبِهِمْ الْأَيْمَنَ وَأَيَّدَهُمْ بِرُوحٍ مِنْهُ وَيُدْخِلُهُمْ جَنَّتِ تَجْرِي مِنْ تَحْنِهَا الْأَنْهَرُ خَدِيلِينَ فِيهَا رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمْ وَرَضُوا عَنْهُ أُولَئِكَ حِزْبُ اللَّهِ الْأَلِإِنْ حَزْبُ اللَّهِ هُمُ الْمُفْلِحُونَ <sup>११</sup>

شَوَّالُ الْمُبْتَدَأِ

تَسْبِيحٌ

का बाप चाहता था कि वह उसकी तलबार तले आजाएं ताकि वह उन्हें कतूल करदे, और स्वयं अबू उवेदा के तलबार तले जब वह आता तो अबू उवेदा कतरा जा रहे थे, मगर जब उन्होंने देखा कि वह इनका ख्याल नहीं कर रहा है और इन्हे कतूल कर देना ही चाहता है तो इन्होंने भी उसका कोई ख्याल नहीं किया और उसे कतूल कर दिया तो यह आयत उत्तरी।

**१** इस से सुराद बनू नज़ीर हैं, यह यथादियों का एक समुदाय था, जो हारून <sup>५५</sup> के संतान में से थे, बनू इमार्झिल के कठोर दिनों में वह मदीना में आकर बस गए थे, नवी से उनका ऐपीमेंट था, परंतु आगे चलकर इन्होंने ऐपीमेंट तोड़ दिया और मक्का के मुसलिमों के साथ ही गए, तो अल्लाह के रसूल ने उनको धेराव किया यहाँ तक कि वे मदीना छोड़ने पर तैयार होगए।

कलबी का कहना है कि अल्ले किताब में से सबसे पहले यहीं लोग अरब महाद्विष से निकाले गए, फिर उनमें से जो लोग बच गए थे उन्हें उपर बिन खत्ताब <sup>५६</sup> के समय निकाल दिया गया, इस तरह पहले हक्श के समय उनकी जलावतीनी मदीना से हुई, और उनकी अनित्म जलावतीनी अद्वे फारूकी में हुई, और एक राय अनुसार आखिरी इथ से सुराद हक्श के मैदान में सभी लोगों का इकट्ठा किया जाना है।

**२** अर्थात् ऐ सुसलमानो! बनू नज़ीर के गल्वा और उनकी आन-बान के कारण उन्हें यह गुमान न था कि यह अपने घरों से निकाल दिए जाएंगे, क्योंकि यह मजबूत किलों वाले और भूमिति थे, और इनके पास बड़े खजूर के बागीचे थे, और संतान वाले भी थे और सभी तरह के हथियार भी इनके पास थे।

**३** अर्थात् स्वयं बनू नज़ीर भी इसी भ्रम में थे कि उनके मजबूत किले उन्हें अल्लाह के अज़ाब से बचा लेंगे।

**४** अर्थात् ऐसी तफस से उन पर अल्लाह का अज़ाब आ पड़ा कि उनके दिल में भी यह ख्याल नहीं आया था कि यहाँ से भी उन पर अल्लाह का अज़ाब आ सकता है, और उह देश-निकाला करने का आदेश दे दिया था, वे कभी भी यह नहीं समझ रहे थे कि हालत यहाँ तक पहुँच जाएगी, बल्कि वे अपने को ताकतवर और गालिब समझ रहे थे।

**५** रेव <sup>५७</sup> से सुराद बहुत ज़्यादा भय है, नवी <sup>५८</sup> का फरमान है जो मेरा शृंखु एक महिने की बराबरी की दूरी पर होता है तभी से उस पर मेरा डर बैठ जाता है।

**६** ऐसा उस समय हवा जब उन्हें यह विश्वास हो गया कि अब उनका देश-निकाल होगा, तो वे इस डांग में कि मुसलमान उनके घरों में न रह सकें और यह उनके रहने के कठिन न रह सकें, वे अन्दर से अपने घरों को स्वयं उजाड़ने लग गए, और मुसलमान बाहर से उजाड़ने लगे। और ज़ोड़ी और उवा बिन जुबैर का कहना यह है कि जब नवी <sup>५९</sup> ने उनसे इस बात पर सुलह कर ली कि जितना सामान वे अपने ऊँटों पर लाद कर ले जा सकते हों तो जाएं, तो उन्हें जो लकड़ियां और शहरीर अच्छे लगते उन्हें उजाड़कर अपने ऊँटों पर लाद लेते और जो बच रहता उन्हें मुसलमान नष्ट कर देते।

**७** अर्थात् यह जान लो कि जो लोग अल्लाह का बादा तोड़ते हैं और उस से दुश्मनी करते हैं उनके साथ वह ऐसा ही करता है।

**८** यदि अल्लाह तआला ने उनके लिए यह न लिख दिया होता और उनके बारे में यह निर्णय न कर दिया होता कि यह अपने घरों से निकाल दिए

سَبَّحَ لِلَّهِ مَا فِي الْأَسْمَاءِ وَمَا فِي الْأَرْضِ وَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ  
**१** هُوَ الَّذِي أَخْرَجَ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ أَهْلِ الْكِتَابِ مِنْ دِيْرِهِمْ  
**२** لِأَوْلَى الْحَمْرَ مَا طَنَشُوهُمْ أَنْ يَخْرُجُوا وَلَظِنَوا أَنَّهُمْ مَانِعُوهُمْ  
**३** حُصُونُهُمْ مِنْ أَنَّ اللَّهَ فَإِنَّهُمْ أَنَّهُمْ مِنْ حَيْثُ لَمْ يَحْتَسِبُوا وَقَدْ  
**४** فِي قُلُوبِهِمْ الرُّغْبَةُ يَخْرُجُونَ بِيُوْتِهِمْ وَأَيْدِيهِمْ وَأَيْدِيَ الْمُؤْمِنِينَ  
**५** فَاعْتَبِرُوا وَإِنْ أُولَئِكَ بَصَرُ  
**६** وَلَوْلَا أَنْ كَبَ أَنَّهُ عَلَيْهِمْ  
**७** الْجَلَاءُ لَعْنَهُمْ فِي الدُّنْيَا وَلَمْ فِي الْآخِرَةِ عَذَابُ أَنَارِ

अधिरत में उनके लिए आग का अज़ाब तो है ही।  
**१** यह इसलिए हुआ कि उन्होंने अल्लाह तआला और उसके रसूल का विरोध किया <sup>९</sup> और जो भी अल्लाह का विरोध करता तो अल्लाह भी कठोर अज़ाब देने वाला है।  
**२** तुम ने खजूरों के जो पेड़ काट डाले या जिन्हें तुमने उनकी जड़ों पर बाकी रहने दिया यह सब अल्लाह तआला के आदेश से थे <sup>१०</sup>, और इसलिए भी कि कुर्कियों को अल्लाह तआला अपमानित करे <sup>११</sup>।

जाएंगे तो उन्हें इस तरह अज़ाब देता कि या तो वे कतूल कर दिए जाते या बन्दी बना दिए जाते, जैसा कि बनू कुरेजा के साथ किया गया कि उनके जवानों को कतूल कर दिया गया और बाकी को बन्दी बना लिया गया, और उनका माल मुसलमानों के लिए गनीमत बना दिया गया।

**९** अर्थात् उनका देश-निकाला इसलिए हुआ कि उन्होंने अल्लाह और उसके रसूल का विरोध किया और नवी के साथ वादा तोड़ा।  
**१०** बनू नज़ीर की लड़ाई में कुछ मुसलमानों ने उन्हें कृषित करने के लिए उनके खजूरों के पेड़ों को काटने शुरू किया तो बनू नज़ीर के लोग जो अल्ले किताब में से थे कहने लगे कि मुहम्मद! क्या आप यह नहीं कहते थे कि : “आप अल्लाह के नवी हैं, और दंगा के बजाए अम्न व शान्ति और भलाई चाहते हैं, तो क्या खजूर के पेड़ों को काटना और उन्हें जलाना भलाई है? क्या आप पर जो चीज़ उतारी गई है उन में यह है कि जमीन में फसाद फैलाना जायज़ है?”

**११** और इसलिए भी हुआ है कि अल्लाह उन लोगों को जो कुर्की हैं उन्हें अपमानित करे, और उनके कुछ पेड़ों को काटकर और क्रोधित करे, क्योंकि जब वह थे देखेंगे कि मुसलमान उनके मालों में अपनी मर्जी कर रहे हैं तो यह चीज़ उन्हें और क्रोधित करेगी और उनके बारे में यह निर्णय न कर दिया होता कि यह अपने घरों से निकाल दिए

**ذلَّكَ يَأْمُمُ شَاقُوا اللَّهَ وَرَسُولَهُ، وَمَن يُسَاقُ اللَّهَ فَإِنَّ اللَّهَ شَدِيدٌ**

**الْعَقَابُ ۖ مَاطَعُتُمْ مِنْ لِيْسَةً أَوْ تَرَكْتُمُهَا فَإِمَامَةً**

**عَلَىٰ أَصْوْلِهَا فَيَادِنُ اللَّهَ وَلِيُخْرِجُ الْفَسِيقِينَ ۚ وَمَا فَاءَ اللَّهُ**

**عَلَىٰ رَسُولِهِ مِمْهُمْ فَمَا أَوْجَحْتُمْ عَلَيْهِ مِنْ حَيْلٍ وَلَارِكَابٍ**

**وَلَكِنَّ اللَّهَ يُسْلِطُ رُسُلَهُ عَلَىٰ مَن يَشَاءُ وَاللَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ**

**قَدِيرٌ ۖ مَا أَفَاءَ اللَّهُ عَلَىٰ رَسُولِهِ مِنْ أَهْلِ الْقُرْبَىٰ فِلَلَّهِ وَلِلرَّسُولِ**

**وَلِذِلِّي الْقُرْبَىٰ وَالْيَتَمَّ وَالْمَسْكِينَ وَأَبْنَىٰ السَّيْلَ كَيْ لَا يَكُونُ**

**دُولَةٌ بَيْنَ الْأَغْنِيَاءِ مِنْكُمْ وَمَا أَنْسَكَ الرَّسُولُ فَعَذْدُوهُ وَمَا**

**بَهْكُمْ عَنْهُ فَانْهُوْ وَاتَّقُوا اللَّهَ إِنَّ اللَّهَ شَدِيدُ الْعَقَابِ ۗ**

**لِلْفُقَرَاءِ الْمُهَاجِرِينَ الَّذِينَ أُخْرِجُوا مِنْ دِيْرِهِمْ وَأَمْوَالِهِمْ**

**يَتَعْنُونَ فَضْلًا مِنَ اللَّهِ وَرَضُونَ يَنْصُونَ اللَّهَ وَرَسُولَهُ وَلِتَكَ**

**هُمُ الصَّادِقُونَ ۖ وَالَّذِينَ تَبَوَّءُ الدَّارَ وَالْأَيْمَانَ مِنْ قَبْلِهِمْ**

**يُحْكُمُونَ مِنْ هَاجَرَ إِلَيْهِمْ وَلَا يَحْدُثُونَ فِي صُدُورِهِمْ حَاجَةً**

**مَمَّا أُوتُوا وَيُؤْرِثُونَ عَلَىٰ أَفْسِحِهِمْ وَلَوْ كَانَ هُمْ خَاصَّةً ۖ**

**وَمَنْ يُوقَ سُحْنَ فَنِسِيمٍ، فَأُولَئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُونَ ۗ**

**۶** और उनका जो माल अल्लाह ने अपने रसूल के हाथ लगाया है जिस पर तुमने अपने घोड़े दौड़ाए हैं । और न ऊँट बल्कि अल्लाह तआला अपने रसूल को जिस पर चाहे प्रभावशाली करदेता है, और अल्लाह तआला हर चीज़ पर ताकत रखने वाला है।

**۷** वरित्यों वालों का जो धन अल्लाह तआला तुम्हारे लड़ भीड़ विना अपने रसूल के हाथ लगाए २ वह अल्ला का है ३ और रसूल का ४, और रिश्तेदारों का ५, और अनाथों का ६,

गरीबों का ७ और यात्रियों का है ८, ताकि यह धन तुम्हारे धनवानों के हाथों में ही घूमता न रह जाए ९, और तुम्हे जो कुछ रसूल दें उसे ले लो, और जिस से रोक दें उससे रुक जाओ १० । और अल्लाह तआला से डरते रहा करो, अवश्य अल्लाह कठोर यातना वाला है।

**۱۱** (फै का धन) उन मुहाजिर गरीबों के लिए है जो अपने घरा ११ और अपने धनों से निकाल दिए गए हैं, वे अल्लाह के फ़ज्जल और खुशी के इच्छक हैं १२, और अल्लाह और उस के रसूल की सहायता करते हैं १३, यही सच्चे लोग हैं १४ ।

**۱۲** और उन के लिए जिन्होंने इस घर में (मदीना में) और इमान में इस से पहले जगह बना ली है १५ । और अपनी तरफ हित्रत करके आने वालों से महब्बत करते हैं १६, और मुहाजिर को जो कुछ दे दिया जाए उस से वह अपने दिलों में कोई तंगी नहीं रखते १७, बल्कि स्वयं अपने ऊपर उनको प्राथमिकता (तर्जीह) देते हैं १८ चाहे उनको स्वयं उनको कितनी ही अधिक ज़रूरत हो १९, बात यह है कि जो अपने नफस की कंजूसी से बचाया गया वही कामयाब है २० ।

**۱۰** और (उनके लिए) जो उनके बाद आए २१ जो कहेंगे कि ऐ हमारे रव! हमें बध्या दे और हमारे उन भाइयों को भी जो

५ अर्थात् इस से मुराद बनू हाशिम और बनू मुतलिब हैं, अर्थात् उनके मुहाताज लोगों के लिए है, क्योंकि वह सदूक नहीं खा सकते, तो उसके बदले फ़यू में उनके लिए हिस्सा रखा गया।

६ अर्थात् उन बालक-बालिकाओं का है जिन के पिता उनके बालिग होने से पहले मर गए।

७ इस से मुराद वह यात्रा और ज़रूरतमंद लोग हैं।

८ इस से मुराद वह यात्रा है जो यात्रा कर रहे हों और यात्रा के समय उनके पैसे खत्म हो गए हों।

९ कि थीं उस पर प्रभावशाली रहें और गरीबों और ज़रूरतमंदों के हाथ न आ सके।

१० अर्थात् फ़यू के धन में से जो तुम्हें वह दें उसे ले लो और जिसे लेने से वह तुम्हें रोक दें उस से रुक जाओ, उसे मत लो।

११ इससे मुराद मक्का है, अर्थात् मक्का वालों ने उन्हें मक्का से निकलने पर मजबूर कर दिया जिस के कारण उन्हें मक्का छोड़ देना पड़ा, इसलिए इस फै में उनका भी हिस्सा रखा गया, ताकि यह धन उनके काम आए, और उन्हें बेनियाज (निःयुक्त) कर दे।

१२ अर्थात् वह दुनिया में रोज़ी और आखिरत में अल्लाह की खुशनूदी के इच्छुक हैं।

१३ कायदों से जिहाद करके।

१४ अर्थात् यहीं सच बोलने और सच्चाई में पुखता और मजबूत लोग हैं।

१५ इस से मुराद मदीना के अन्सार हैं जो मुहाजिरों के मदीना आने से पहले ही से वह बरसे हुए थे, और अल्लाह और उसके रसूल पर इमान ला चुके थे।

१६ क्योंकि उन्होंने मुहाजिरों से अच्छा बताव किया और अपने धनों और धरों में उन्हें हिस्सा दिया।

१७ अर्थात् मुहाजिरों को फै का धन देने और अन्सार को न देने से अन्सार अपने दिलों में जलन, हस्द, डाह, गुस्सा और दुःख नहीं करते, बल्कि उन्हें इस से खुशी होती है, शुरू में मुहाजिरों, अन्सारियों के धरों में ही रह रहे थे, फिर जब नवी को बनू नजीर का धन मिल तो आप ने अन्सारियों को बुला कर उनका खास्ता अदा किया कि उन्होंने को अपने धरों में बसाया, और उन्हें अपने माल-जन में शामिल किया फिर आप ने फरमाया : यदि तुम यादों तो अल्लाह ने बनू नजीर का जो धन मुझे दिया उसे मैं तुम में और मुहाजिरों में बाट दूँ और मुहाजिरों का हिस्सा तुम्हारे धरों में उन्हीं तरह बाकी रहें, जैसे अभी है, और यदि यादों तो मैं यह सब उन्हीं को दे दूँ और वह तुम्हारे धरों को छोड़ दूँ, तो वह उसे मुहाजिरों ही में बाट देने पर राजी हो गए और वह उस पर खुश रहे।

१८ अर्थात् दुनियावी हिस्से में वह अपने आप पर उन्हें प्राथमिकता देते हैं।

१९ ‘खसास’ का अर्थ अधिक हाजिर और ज़रूरत के है।

२० अर्थात् जिसे उसके माल में जो ज़कात वाजिब की है उसे उन्हें उसका हक्क माल कर अदा किया तो वह कामयाब है, और जिसे बचीली की अंतर अल्लाह का हक अदा नहीं किया तो वह नाकाम है।

२१ इससे मुराद कियामत तक अनें वाले वह सारे लोग हैं जो इख्लास के साथ उनकी पैरवी करने वाले हैं।

१ ईजाफ का अर्थ सवार के घोड़े दौड़ाने के हैं, आयत का अर्थ यह है कि अल्लाह तआला ने अपने रसूल को बनू नजीर के माल में से जो दिया है, उसे लेने के खातिर न तो तुम्हें घोड़ों और ऊँटों पर सवार होकर सफर की परिशानी उठानी पड़ी है, और न ही लड़ाई करनी पड़ी है, उनका गांव मदीना से मार दो मील दूर था, इसलिए अल्लाह ने उनके मालों को अपने रसूल के लिए खास कर दिया है, ज्योंकि तुम ने सुलह के माध्यम से उसको जीता है, और तुम्हारे लड़े पाना यह माल रसूल के हाथ आए है, यही कारण है कि उसे गरीबत के बजाए फ़यू कहा गया और उसे अन्सारियों में बांटा नहीं गया।

२ इस अयत में यह सच्च करने के बाद कि यह धन अल्लाह के रसूल के लिए खास है, इसमें गणिमीन का कोई हिस्सा नहीं फ़यू के मासारिफ को स्पष्ट किया गया है कि किस किस में अल्लाह के रसूल उसे खर्च करें, और यही हर उस बस्ती का हुक्म है जिसे अल्लाह के रसूल और कियामत तक आप के बाद जो मुसलमान भी आने वाले हैं लड़े विना सुलह सफाई के माध्यम जीत लें, और मुसलमानों को उन पर घोड़े और ऊँट दौड़ाने न पड़ें, और उन्हें यात्रा की दिक्कते न उठानी पड़ें।

३ अर्थात् वह उसमें जैसा चाहे निर्णय करे।

४ अर्थात् उसके मालिक रसूल होंगे फिर आप के बाद मुसलमानों के लाभ की खातिर उसे खर्च किया जाएगा।

हमसे पहले ईमान ला चुके हैं<sup>1</sup>, और ईमानदारों के बारे में हमारे दिल में कपट<sup>2</sup> और दुश्मनी न डाल, हमारे रब! अतृश्य तू प्रेम और मेहर्बानी करने वाला है।

**11** क्या तुने मुनाफिकों को नहीं देखा<sup>3</sup> कि अपने अहले किताब काफिर भाइयों से कहते हैं यदि तुम देश से निकाल दिए गए तो हम भी तुम्हारे साथ ज़रुर निकल जाएंगे, और तुम्हारे बारे में हम कभी भी किसी की बात स्वीकार नहीं करेंगे<sup>4</sup>, और यदि तुम से युद्ध कीया जाए तो हम तुम्हारी ही सहायता करेंगे<sup>5</sup>, लैंकिन अल्लाह तआला गवाही देता है कि यह बिल्कुल झूठे हैं।

**12** यदि देश से निकाले गए तो उनके साथ कभी भी न जाएंगे आर यदि उन से युद्ध किया जाए तो यह उनकी सहायता भी न करेंगे<sup>6</sup> और यदि सहायता के लिए आ भी गए तो पीठ फेर कर<sup>7</sup> भाग खड़े होंगे, फिर मदद न किए जाएंगे<sup>8</sup>।

**13** (मुसलमानों विश्वास करो) कि तुम्हारा भय इनके दिलों अल्लाह के भय के मुकाबले बहुत अधिक है<sup>9</sup>, यह इसलिए कि यह नासमझ लोग हैं<sup>10</sup>।

**14** यह सब मिलकर भी तुम से लड़ नहीं सकते, हाँ यह और बात है कि किलों के अन्दर हों या दीवारों की आड़ में हों<sup>11</sup>, उनकी लडाई तो आपस ही में बहत कठोर है<sup>12</sup>, यथापि (अगरचि) आप इन्हें इकट्ठा समझ रहे हैं, लैंकिन इनके दिल आपस में एक दूसरे से अलग हैं<sup>13</sup>, इसलिए कि यह नासमझ लोग हैं<sup>14</sup>।

**1** जो इस्लाम में पहल करने वाले मुहाजिरीन और अन्सार से महब्बत करते और उनके लिए बखिशाश की दुआ करते रहते हैं।

**2** गिल से सुराद खोट, हसद और जलन है, और (لَدَنِينَ اَمْتُوا) में सब से पहले सहावा किराम शामिल हैं, क्योंकि ईमान वालों में सबसे अशफ और अफ़ज़ल यही लोग हैं, और आयत का सियाक भी इन्हीं के बारे में है, तो जो अपने दिल में इनके बारे में कपट और दार रखे जैसे रवाफिज रखते हैं तो उसका अर्थ है कि शैतान के जाल में फ़स चुका है, और उसके अधिक हिस्सा पहुँच चुका है, क्योंकि वह अल्लाह का नाफरमान है और उसके ओलिया और उसके नवी की उम्मत के अच्छे और बेहतरीन व्यक्ति से दुश्मनी रखता है, ऐसे लोगों का फै के माल में कोई हिस्सा नहीं और न ही ऐसे लोगों का है जो उन्हें गलियाँ दें और दुःख पहुँचाएं और उन्हें बुरा कहें।

**3** इससे मुराद अब्दुल्लाह बिन उबे और उसके साथी हैं जिन्होंने बूनू नज़ीर को यह ऐसाम भेजा कि तुम लोग जमे रहो और बहादुरी से मुकाबला करो, हम तुम्हें असहाय नहीं छोड़ोगे, यदि तुम से युद्ध किया गया तो हम भी तुम्हारे साथ मिलकर लडाई करेंगे और यदि तुम्हें घरों से निकाल गया तो हम भी अपने घर बार छोड़ कर तुम्हारे साथ निकल जाएंगे।

**4** अर्थात् जो हमें तुम्हारे साथ निकलने से रोकना चाहेंगे हम उनकी बात कभी नहीं मानेंगे चाहे कितानी ही लम्बी समय कमों न बीत जाए।

**5** अर्थात् यदि तुम्हें अपने दुश्मनों से लड़न पड़ा तो हाँ तुम्हारी सहायता करेंगे, इसके बाद अल्लाह ने उनको छुटाया और फरमाया कि यह जो उनके साथ निकल जाने और सहायत करने का बाद कर रहे हैं, उनमें वे झूठे हैं।

**6** और ऐसे ही हुवा बनू नज़ीर और उनके साथी यहूदियों को देश से निकाला गया तो मुनाफिकों ने उनको छुटाया और फरमाया कि यह जो उनके साथ करौजा और खैबर के यहूदियों की मदद की जिन से युद्ध हुवा था।

**7** अर्थात् हार कर।

**8** अर्थात् उन मुनाफिकों की फिर कोई सहायता नहीं करेगा, बल्कि अल्लाह उन्हें अपमानित कर देगा, और उनका निष्कार उन्हें कुछ भी काम न देगा।

**9** अर्थात् इन मुनाफिकों या यहूदियों के दिल में अल्लाह से अधिक तुम्हारा भय है।

**10** अर्थात् यदि उनमें समझ होती तो यह अच्छी तरह जान लेते कि उन पर तुम्हें ग़ातिल बनने वाला अल्लाह ही है, इसलिए वह ज्यादा हकदार है कि उससे डरा जाए।

**11** वह सब इकट्ठा होकर भी तुम से नहीं लड़ सकते, मगर यह कि वह तहायानों और घरों में छपरक या दीवारों की आड़ से तुम पर हमले करें, क्योंकि यह अधिक ही डरपेक लोग हैं।

**12** अर्थात् वे स्वयं आपस में एक दूसरे के लिए बड़े कठोर और बेरहम हैं।

**13** अर्थात् उनकी यह एकता मात्र दिखावे का है वास्तव में वह एक दूसरे के कठोर शरू है, सब के विचार अलग अलग हैं।

وَالَّذِينَ جَاءُ وَمِنْ بَعْدِهِمْ يَقُولُونَ رَبَّنَا أَعْفِرْلَنَا وَلِإِحْوَنَنَا الَّذِينَ سَبَقُونَا بِالْأَيَمْنِ وَلَا تَجْعَلْ فِلْوِسَا غَلَّ لِلَّذِينَ إِمَّا نَوَّا رَبَّنَا إِنَّكَ رَءُوفٌ رَّحِيمٌ ۖ ۱۰

الَّذِينَ نَفَقُوا يَقُولُونَ لِإِحْوَنَهُمُ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ أَهْلِ الْكِتَبِ لِئَنِ اخْرَجْتُمْ لَنَخْرَجْ بِمَعْكُمْ وَلَا تُنْظِعْ فِي كُلِّ أَهْدَأَ وَإِنْ قُوْلَتُمْ لَنَصْرَتُكُمْ وَاللَّهُ يَعْلَمُ لِكُلِّ بُنْوَنَ

لِئَنِ اخْرَجْتُمْ لَأَخْرَجْ بِمَعْكُمْ وَلَا تُنْظِعْ فِي كُلِّ أَهْدَأَ وَإِنْ قُوْلَتُمْ لَأَيْصُرُونَهُمْ ۖ ۱۱

وَلِئَنِ تَصْرُوْهُمْ لَيُولَبْ الْأَدْبَرَ ثُمَّ لَأَيْصُرُونَهُمْ ۖ ۱۲

لَأَنَّمَا أَشْدُرَهَةَ فِي صُدُورِهِمْ مِنَ اللَّهِ ذَلِكَ بِأَنَّهُمْ قَوْمٌ لَا يَقْهُوْنَ ۖ ۱۳

مُحَسَّنَةٌ أَوْ مِنْ وَرَاءَ جَدَرٍ بِأَسْهَمِهِ يَنْهَا سَدِيدٌ تَحْسِبُهُمْ جَيْعَانًا وَقُلُوبُهُمْ شَقَّ ذَلِكَ بِأَنَّهُمْ قَوْمٌ لَا يَعْقُلُونَ ۖ ۱۴

كَشِّلَ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ قَرِبَيَا ذَاقُوا وَبَالْ أَمْرِهِمْ وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ۖ ۱۵

كَمْثُلَ الشَّيْطَانِ إِذَا قَالَ لِلْإِسْلَمِنَ أَكُّفْرُ فَلَمَّا كَفَرَ قَالَ إِنِّي بَرِيٌّ مِنْكَ إِنِّي أَخَافُ اللَّهَ رَبَّ الْعَالَمِينَ ۖ ۱۶

۱۵) उन लोगों की जो उनसे कुछ ही पहले बीते हैं जिन्होंने अपने कर्तृत का मजा चख लिया<sup>16</sup>, और जिन के लिए दखदायी अजाब तैयार है।

16) शैतान की<sup>17</sup> तरह कि उसने इन्सान से कहा कुफ़ कर और जब वह कुफ़ कर चुका तो कहने लगा : मैं तुझ से अलग हूँ, मैं तो संसार के रब से डरता हूँ।

17) तो (शैतान और इस इन्सान) दोनों को परिणाम यह हुवा कि (नरक की) आग में सदा के लिए गए, और ज़ालिमों के लिए यही दण्ड है<sup>18</sup>।

18) ऐ ईमानवालो! अल्लाह से डरते रहो<sup>19</sup>, और सभी व्यक्ति देख-भाल ले कि कल (प्रलय) के लिए उसने (कर्तव्यों

14) अर्थात् उनमें समझ होती तो वह हक को ज़खर जान लेते और सब इकट्ठा होकर उसकी पैरवी करते और उनमें आपस में भिन्नता न होता।

15) अर्थात् मक्का के अधर्मियों की तरह।

16) इस से मुराद उनके कुफ़ का वह बुरा परिणाम है जिससे उन्हें बदर के युद्ध में दोचारा होना पड़ा था, और बनू नज़ीर के युद्ध से मात्र ६ महीने पहले ही चुका था।

17) अर्थात् उनका उदाहरण उन्हें अकेले छोड़ देने में और उनकी सहायता न करने में शैतान की तरह है, कि वह इन्सान को कुफ़ करने पर उक्साता है और उसे इस के लिए खूबसूरत बालक पेश करता है और उस पर उभारता है, फिर जब वह शैतान की मात्र कर और उसके बहकावे में आकर उसे कर वैठता है तो वह कहता है कि अब मैं तुझ से अलग थलग हूँ।

18) यह शैतान की बात है जिसे वह इन्सान से अपना नाता तोड़ते हुए कहता है।

19) अर्थात् जिन बातों का वह तुम्हें आदेश दे उन्हें करो, और जिन से रोके उनसे रुक कर उसकी सज़ा से डरते रहो।

فَكَانَ عَنْ قِبْلَتِهِمَا أَنْهَمَا فِي الْأَنَارِ خَلِيلِينَ فِيهَا وَذَلِكَ حَزْقُونَ  
الظَّالِمِينَ ١٧ يَكَانُوا إِلَيْهِمْ أَمَّا مَنْ آمَنُوا أَنَّقُوا اللَّهَ هُنَّ لَنْسُنُرُ  
نَفْسٌ مَا قَدَّمَتْ لَعَلَيْهِ وَأَنَّقُوا اللَّهَ إِلَيْهِ خَيْرٌ بِمَا تَعْمَلُونَ  
وَلَا كُوْنُوا كَالَّذِينَ سُوْأُ اللَّهُ فَأَنْسَاهُمْ أَنْفُسُهُمْ أُولَئِكَ  
هُمُ الْفَسِيْقُونَ ١٨ لَا يَسْتَوِي أَصْحَابُ الْأَنَارِ وَأَصْحَبُ  
الْجَنَّةِ أَصْحَابُ الْجَنَّةِ هُمُ الْفَارِيْرُونَ ١٩ لَوْ أَنْزَلْنَا هَذَا  
الْفُرْقَانَ عَلَى جَنَّلِ رَأْيِتَهُ خَشِعًا مُّتَصَدِّقًا مَّا فِي خَشْيَةِ  
اللَّهِ وَتَلَكَ الْأَمْثَلُ نَضْرُهُمَا لِلنَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَنْفَكِرُونَ  
هُوَ اللَّهُ الَّذِي لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ عَلَيْهِ الْغَيْبُ وَالشَّهَدَةُ  
هُوَ الرَّحْمَنُ الرَّجِيمُ ٢٠ هُوَ اللَّهُ الَّذِي لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ  
الْمَلِكُ الْقَدُوسُ السَّلَامُ الْمُؤْمِنُ الْمَهِيمُ الْعَزِيزُ  
الْجَبَارُ الْمُتَكَبِّرُ سُبْحَنَ اللَّهِ عَمَّا يُشَرِّكُونَ  
هُوَ اللَّهُ الْخَالِقُ الْبَارِئُ الْمُصْوِرُ لِهِ الْأَسْمَاءُ الْحُسْنَى ٢١  
يُسَيِّدُ لَهُ مَا فِي السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ وَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ٢٢

سُورَةُ الْمُتَكَبِّرِ

- का) क्या भंडार भेजा है ? और (सदा) अल्लाह से डरते रहो अल्लाहों तुम्हारे सारे कर्तृतों से अवगत है।  
 १९ और तुम उन लोगों की तरह मत हो जाना जिन्होंने अल्लाह के आदेश को भुला दिया , तो अल्लाह ने भी उन्हें अपने आप से भुला दिया , और ऐसे ही लोग नाफर्मन होते हैं।  
 २० जहन्नमी (नरकवाले) और जन्नती (स्वर्वाले) (आपस में) बराबर नहीं, जो जन्नती हैं वही सफल हैं ५।  
 २१ यदि हम इस कुरआन को ६ किसी पहाड़ पर उतारते तो तु दखिता के अल्लाह के डर से ७ वह झुक कर टुकड़े टुकड़े हा

जाता, हम इन उदाहरणों को लोगों के सामने बयान करते हैं, ताकि वह सोच-फिक्र करें ।

१८ वही अल्लाह जिस के सिवा कोई सत्य उपास्य नहीं, छिपे और खुले ९ का जाननेवाला, बड़ा मेहबून और बहुत दयालू है।

१९ वही अल्लाह है जिस के सिवा कोई सत्य उपास्य नहीं १०, राजा, बहुत ही पवित्र, सभी बुराइयों से साफ ११, शान्ति देने वाला १२, रक्षक १३, गालिब १४, तकतवर १५, और बड़ाईवाला है १६, है उन चीजों से जिन्हें यह उसका साझा बनाते हैं १७।

२० वही अल्लाह है पैदा करनेवाला, बनाने वाला १८, रूप देनेवाला १९, उसी के लिए बहुत अच्छे नाम हैं २०, हर चीज़ चाहे आकाशों में हो या धरती में हो उसकी पाकी बयान करती है २१, और वही गालिब हिक्मत वाला है।

## सूरतुल मुम्ताहिना । - 60

शूल करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहबून बहुत रुम करने वाला है।

२२ ऐ वह लोगों जो ईमान लाए हो! मेरे और स्वयं अपने दुश्मनों को अपना दोस्त न बनाओ २२, तुम तो दोस्ती से तरफ संदेश भेजते हो २३, और वह इस हक का जो तुम्हारे आद्युका है इन्कार करते हैं २४, रसूल को और स्वयं तुम्हे भी मात्र इस कारण निकालते हैं २५ कि तुम अपने रब पर ईमान रखते हो २६ यदि तुम मेरे रास्ते में जिहाद के लिए और मेरी खुशी की खोज में निकलते हो (तो उन से दोस्ती न करो) २७

७ उन चीजों में जिन में सोच-बीचार करना ज़रूरी है, ताकि वह उसके सदुपदेशों से नसीहत हासिल कर सकें, और उसकी फटकार से बच सकें।

८ अर्थात जो चीज़ आंखों से देखी जाने के काबिल नहीं हैं।

९ अर्थात जो चीज़ आंखों से देखी जाने के काबिल हैं।

१० इसका चर्चा दोबारा मज़बूती पैदा करने के लिए किया गया है।

११ कुद्रुस का अध्यै है जो हर बुराई से पाक, और हर कमी से पवित्र हो, और एक विचार अनुसार कुद्रुस वह है जिस के अन्याय से सुरक्षित रखनेवाला हो, और एक विचार अनुसार मोमिन वह है जो चमत्कार दिखा करके अपने रसूलों की तर्सीक करने वाला है।

१२ अर्थात जो आपने भानों के आमाल का गवाही देनेवाला और उनका रक्षक हो।

१३ ऐसा काहिर और जिजेता जो कभी पराजित न हो।

१४ अल्लाह की जबरून से मराद उसकी बड़ाई है। और एक विचार अनुसार : जब्बाव वह है जिस के कठर को सहा न जा सके।

१५ यह आपके हातिव बिन अबी बत्ता २५ के बारे में उस समय उत्तरी जब वह एक विद्वी द्वारा मक्का के मुशर्रिकों को यह खबर दे रहे थे कि नबी २६ उन पर आक्रमण करने वाले हैं, यह फले मक्का की युद्ध की बात है जो ८ हिजरी में हुई।

१६ अर्थात इस दोस्तों के कारण जो तुम्हारी उन से है नबी २७ की बातें तुम उन्हें पहुँचा रहे हो।

१७ और हाल यह है कि वे अल्लाह के रसूल के और इस कुरआन और ईश्वरीय संदेशा (इलाही हिदायत) के इन्कारी हैं जिसे रसूल तुम्हारे पास लेकर आए हैं।

१८ रसूल के तुम्हारे पास लाए हुए हक के अपने इसी इन्कार के कारण, जाता, तो तुम इस देखते कि वह अपनी कठोरता, मज़बूती, बड़ाई, और लम्बाई के बावजूद अल्लाह के भय से, और उसकी पकड़ से बचने के भय से और इस डर से कि वह अल्लाह के कलाम की वह बड़ाई नहीं कर सकेगा जो उसके लिए

ज़रूरी है, फट कर कण-कण हो जाता।

१९ वह तुम्हें इस कारण निकाल रहे हैं कि तुम अल्लाह पर ईमान रखते हो।

२० अर्थात यदि तुम ऐसे ही हो तो मेरे और अपने दुश्मनों को दोस्त न बनाओ।

तुम उनके पास प्रेम-संदेश छुपा-छुपा कर भेजते हो<sup>1</sup>, और मैं अच्छी तरह जानता हूँ जो तुमने छुपाया और वह भी जो तुमने जाहिर किया, तुम्हे मैं से जो भी इस

**2** यदि वे तुम पर कहीं काबू पालें तो वे तुम्हारे (खुले) दुश्मन होजाएं<sup>3</sup>, और बुराई के साथ तुम पर हाथ उठाने लगें और बुरे शब्द कहने लगें<sup>4</sup> और दिल से चाहने लगें कि तुम भी कुफ करने लग जाओ<sup>5</sup>।

**3** तुम्हारी नातेदारियां और औलाद तुम्हें कियामत के दिन काम न आएंगी<sup>6</sup>, अल्लाह तआला तुम्हारे बीच फैसला करदेगा<sup>7</sup>, और जो कुछ भी तुम कर रहे हो अल्लाह उसे खबर देख रहा है।

**4** (मुसलमानो!) तुम्हारे लिए इब्राहीम (عليه السلام) में और उनके साथियों में अच्छा नमना है, जब्कि उन सभों ने अपनी कौम से खुले शब्दों में कह दिया कि हम तुम से और<sup>8</sup> जिन-जिन की तम अल्लाह के सिवाय पूजा करते हो उन सभों से पूरी तरह से विमुख हैं<sup>9</sup>, हम तुम्हारे अकीदे (आस्थाओं) का इन्कार करते हैं<sup>10</sup>, जब तक तुम अल्लाह के एक होने पर ईमान न लाओ<sup>11</sup> हम में तुम में हमेशा के लिए दुश्मनी और कपट पैदा होगई<sup>12</sup>, लेकिन इब्राहीम (عليه السلام) को इतनी बात अपने पिता से हुई थी<sup>13</sup> कि मैं तुम्हारे लिए क्षमा याचना (इस्तिराफ़ा) जरूर करूंगा, और तुम्हारे लिए मझे अल्लाह के सामने किसी चीज का कुछ भी इधिक्यार नहीं<sup>14</sup>, ऐ हमारे

<sup>1</sup> अर्थात् अपनी इनसे दोस्ती के कारण तुम चुपके चुपके इन्हें खबरें भेजते हो।

<sup>2</sup> अर्थात् मैं हर व्यक्ति के हर उस कम को जानता हूँ जिसे वह उन्हें खबरें भेजने के लिए करता है।

<sup>3</sup> अर्थात् यदि वे तुम पर काबू पालें तो अपने दिलों में तुम्हारे विरुद्ध जो दुश्मनी छुपाए हुए हैं उसे जाहिर कर दें।

<sup>4</sup> अर्थात् वे तुम्हें मारने पाने और बुरा भला कहने जैसी बुरी चीजें करने लगें।

<sup>5</sup> अर्थात् तुम्हारे इस्लाम से फिर जाने और कुफ़ की तरफ पलट जाने के इच्छुक होजाएं।

<sup>6</sup> अर्थात् तुम्हारी औलाद और तुम्हारी नातेदारियां जिन के लिए तुम काफिरों से दोस्ती का दम भरते हो कियामत के दिन तुम्हारे कुछ भी काम न आ सकेंगे, जैसे कि हातिब बिन अबी बल्तआ के घटना में हआ, बल्कि काफिरों से दुश्मनी रखना, उन से जिहाद करना और उनसे दोस्ती न करना जिसका अल्लाह ने तुम्हें आदेश दिया है, यही तुम्हारे काम आएगा।

<sup>7</sup> अर्थात् तुम में जुदाई करदेगा: आजाकरियों को जन्मत में और अवज्ञाकरियों को जहन्म में दाखिल करेगा।

<sup>8</sup> अर्थात् प्रशंसा योग्य विशेषता है जिसकी तुम अनुकरण करो, इस आयत में गोयाकि हातिब बिन अबी बल्तआ से कहा जा रहा है कि तुम ने इब्राहीम और उनके साथियों का अनुकरण करों न किया, अतः तुम भी अपने बाल-बच्चों से उसी तरह विमुखता बरतते जैसे इब्राहीम ने अपने समुदाय के लोगों से की थी।

<sup>9</sup> अर्थात् अल्लाह के साथ तुम्हारे कुफ़ करने के कारण हम तुम से विमुख हैं, हमारे और तुम्हारे बीच कोई सम्बंध नहीं। **وَمَا تَبْدِلُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ** से मुराद अस्ताम (بुत) है।

<sup>10</sup> अर्थात् हम तुम्हारे धर्म, या तुम्हारे कर्मों का इन्कार करते हैं।

<sup>11</sup> अर्थात् जब तक तुम कुफ़ करना नहीं छोड़ोगे तुम्हारे साथ हमारा यही बर्ताव रहेगा।

<sup>12</sup> और जब शिर्क करना छोड़ दोगे तो हमारी दुश्मनी दोस्ती में और कीना और कपट प्यार और महब्बत में बदल जाएगी।

<sup>13</sup> अर्थात् इब्राहीम (عليه السلام) की सभी बातें ही ऐसी हैं जिन में तुम्हारे लिए बेहतरीन नमूना है, सिवाए इस एक बात के जो उन्होंने अपने पिता से कही थी, तुम उसे अपने लिए नमूना न बनाना कि तुम भी मुशरिकों के लिए धमा-याचना करने लग जाओ, क्योंकि उन्होंने ऐसा उस बाद के कारण किया था जिसे उन्होंने अपने पिता से किया था, तो जब यह बात खुलकर सामने आगई कि उनका पिता अल्लाह का शरू है तो वह उससे विमुख होगए।

<sup>14</sup> अर्थात् मैं तुम से अल्लाह का अजाब थोड़ा सा भी नहीं टाल सकता।

## سُلْطَانُ الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَنْجِدُوا عَدُوَّي وَعَدُوكُمْ أُولَئِكَ نَقْرُونَ  
إِنَّمَا يَنْهَا إِلَيْهِ الْمَوْدَةُ وَقَدْ كَفَرُوا بِأَيْمَانَ جَاءَكُمْ مِنَ الْجَنَّةِ بُخْرُونَ رَسُولُ  
وَإِيَّاكُمْ أَنْ تُؤْمِنُوا بِاللَّهِ رَبِّكُمْ إِنْ كُنْتُمْ حَرْجَتُمْ جِهَادَ فِي سَيِّلٍ  
وَأَبْغَاهُ مَرْضَافِ شَيْءٍ وَنَوْنَاتِ اللَّهِمَّ بِالْمَوْدَةِ وَأَنَا أَعْلَمُ بِمَا أَخْفَيْتُمْ  
وَمَا أَعْلَمُتُمْ وَمَنْ يَقْعُلُهُ مِنْكُمْ فَقَدْ ضَلَّ سَوَاءَ السَّيِّلُ إِنْ  
يَشْفُوْكُمْ يَكُوْلُوكُمْ أَعْدَاءَ وَيَسْطُوْكُمْ أَيْدِيهِمْ وَأَسْنَاهُمْ  
بِالسُّوءِ وَدُوْلُوكُمْ كُفَّارُونَ لَكَنْ تَفَعَّكُمْ أَرْحَامُكُلُوكُمْ لَا أَوْلَادُكُمْ  
يَوْمَ الْقِيَمَةِ يَفْصِلُ بَيْنَكُمْ وَلَلَّهُ يَعْلَمُ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ فَقَدْ  
كَانَتْ لَكُمْ أَسْوَةٌ حَسَنَةٌ فِي إِبْرَاهِيمَ وَأَلِّيْنَ مَعَهُ إِذَا قَالُوا لِقَوْمَهُمْ  
إِنَّا بَرِّهُمْ وَفُلُوْمُكُمْ وَمَا نَعْبُدُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ كُفَّارُ إِنْجُوكُمْ وَبِدَاهُ إِلَّا  
وَبَيْنَكُمُ الْعَدُوُّ وَالْعَضَاءُ أَبْدَأَ حَتَّى تُؤْمِنُوا بِاللَّهِ وَهَذَهُ إِلَّا  
قَوْلُ إِبْرَاهِيمَ لَأَيْهِ لَا سَتَغْفِرُنَ لَكَ وَمَا أَمْلَكَ لَكَ مَنْ لَلَّهُ مِنْ شَيْءٍ  
رَبِّنَا عَلَيْكَ تَوَكَّلْنَا وَإِلَيْكَ أَبْنَنَا وَإِلَيْكَ الْمَصِيرُ رَبِّنَا لَا تَجْعَلْنَا  
فَتَنَّةً لِلَّذِينَ كَفَرُوا وَأَعْفُرْنَا لَرَبِّنَا إِنَّكَ أَنْتَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ

रव! तुम्ह पर हमने भरोसा किया है, और तेरी ही तरफ पलटते हैं, और तेरी ही तरफ लौटना है।

**3** ऐ हमारे रब! तुम्ह में काफिरों के इस्तिहान में न डाल, हमारे पालने वाले! हमारी गलतियों को माफ़ करदे, अवश्य तुम्ही गालिव और हिक्मत वाला है।

**6** अवश्य तुम्हारे लिए उनमें<sup>16</sup> अच्छा नमूना है, (और अच्छी पैरवी है खास कर) हर उस व्यक्ति के लिए जो अल्लाह की और कियामत के दिन की मुलाकात की उम्मीद रखता हो<sup>17</sup>, और यादि कोई मंह मोड़ले<sup>18</sup> तो अल्लाह तआला परी तरह से बेनियाज है<sup>19</sup>, और बाईद्द और प्रशंसा के लायक है<sup>20</sup>।

**5** क्या तअज्जुब कि करीब ही अल्लाह तआला तुम में आर तुम्हारे दुश्मनों में प्रेम डाल दे<sup>21</sup>, अल्लाह को सभी

**15** इसकी तपसीर में मुजाहिद कहते हैं कि इसका अर्थ यह है कि हमें इनके हाथों से किसी यातना में न डाल, और न हमें अपनी तरफ से किसी अजाव में डाल के उन्हें यह कहने का अवसर मिल जाए कि यदि यह हक़ पर होते तो इस अजाव से क्यों दोचार होते।

**16** अर्थात् इब्राहीम (عليه السلام) और उनके साथियों में तुम्हारे लिए अच्छा नमूना है।

**17** अर्थात् यह नमूना मात्र उन लोगों के लिए है, जो दुनिया और आखिरत में अल्लाह से भलाई की उम्मीद रखते हैं।

**18** अर्थात् मंह फेरकर।

**19** अपनी मखलूक से।

**20** अर्थात् प्रशंसा के योग्य है, और उसके औलिया भी तरीक के काविल हैं।

**21** अर्थात् तुम्हारे और मक्का के मुश्किलों के बीच, और वह इस तरह से कि वे इस्लाम स्थीरत कर लें तो वे तुम्हारे ही धर्म के मानने वाले हों जाएं, तुम्हारी उनमें से कुछ लोग फहें मक्का के बाद इस्लाम से आए और अपने इस्लाम में

لَقَدْ كَانَ لِكُفَّارِهِمْ أَسْوَأُهُنَّاً سَهْنَةٌ لَمَنْ كَانَ يَرْجُوا اللَّهَ وَالْيَوْمَ الْآخِرَ  
وَمَنْ يَتَوَلَّ إِنَّ اللَّهَ هُوَ الْعَلِيُّ الْمَعِيدُ ۖ عَسَى اللَّهُ أَنْ يَجْعَلَ  
بَيْتَكُوْنَ وَبَيْنَ الَّذِينَ عَادُوكُمْ مَمْهُونَ مَوْدَةً وَاللَّهُ قَدِيرٌ وَاللَّهُ عَفُورٌ رَّحِيمٌ  
لَا يَأْتِهِنَّكُمُ اللَّهُ عَنِ الَّذِينَ لَمْ يُقْتَلُوكُمْ فِي الْأَرْضِ وَلَا تُخْرِجُوكُمْ  
مِّن دِيْرِكُمْ أَنْ بَرُّوهُمْ وَقُنْصُطُوا إِلَيْهِمْ إِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ الْمُقْسِطِينَ  
إِنَّمَا يَأْتِهِنَّكُمُ اللَّهُ عَنِ الَّذِينَ قُتْلُوكُمْ فِي الْأَرْضِ وَلَا خَرْجُوكُمْ  
مِّن دِيْرِكُمْ وَظَاهِرُهُمْ وَأَعْلَمُ بِإِحْرَاجِكُمْ أَنْ تُرْوَهُمْ وَمَنْ يَتَوَلَّهُمْ فَأُولَئِكَ  
هُمُ الظَّالِمُونَ ۖ يَكْتُبُهُمُ الَّذِينَ أَمْنَوْا إِذَا جَاءَهُمْ كُمُّ الْمُؤْمِنِينَ  
مُهَاجِرُتِ فَأَمَّا مَنْ حَوَّهُنَّ اللَّهُ أَعْلَمُ بِإِيمَانِهِنَّ فَإِنْ عَلِمْتُمُوهُنَّ مُؤْمِنُونَ  
فَلَا تُرْجِعُوهُنَّ إِلَى الْكُفَّارِ لَا هُنَّ حُلُمٌ وَلَا هُمْ يَحْلُونَ لَهُنَّ وَإِنْوَهُمْ  
مَا أَنْفَقُوا وَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ أَنْ تُنْكِحُوهُنَّ إِذَا آتَيْتُمُوهُنَّ جَوْهَرَهُنَّ  
وَلَا تُنْسِكُو أَعْصَمَ الْكُوَافِرِ وَسَعَوْمَا أَنْفَقُوا وَلَيَسْلُوْمَا مَا أَنْفَقُوا  
ذَلِكُمُ حُكْمُ اللَّهِ يَعْلَمُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ فِي وَاللَّهِ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ۖ وَإِنْ فَاتَكُمْ  
شَيْءٌ مِّنْ أَنْوَحِكُمْ إِلَى الْكُفَّارِ فَعَاقِبُمْ فَأَتَوْا الَّذِي بَرَّ ذَهَبَتْ  
أَزْوَاجُهُمْ مِثْلُ مَا أَنْفَقُوا وَأَنْقُوا اللَّهُ أَذْنَمْ بِهِ مُؤْمِنُونَ ۖ ۗ

کوکر رہتے ہیں<sup>1</sup>، اور اعللہاہ بڈا ماف کرنے والा اور رحم کرنے والा (کوکار) ہے।

**۸** جین لोگوں نے تुम سے دharma کے بارے میں یوچ نہیں کیا اور تھر دش سے نہیں نیکالا، عنا کے ساتھ اچھا برتاؤ<sup>2</sup> اور نیا کرنے سے<sup>3</sup> اعللہاہ تھا۔ تھر نہیں رکتا، بالکل اعللہاہ تھا۔ تو نیا کرنے سے<sup>4</sup> پرم کرتا ہے।

میکھیسا رہے، اور عنا سے اور پھلے اسلام لانے والوں سے ہبھ دستی بھی ہیگا، ان لوگوں نے عنا کے ساتھ میلکر جیتا اور نہیں اور اعللہاہ سے کوئت کے بھوت سے کام کیا، یہاں تک کہ نبی<sup>5</sup> نے ابھ سمعان<sup>6</sup> کی بیٹی عتمہ بھی<sup>7</sup> کو آنے نیکاہ میں آنے کا شک<sup>8</sup> بھجھا، لیکن وہ مبکت عنا سے اس سماں ہری<sup>9</sup> جب وہ مکا فکر ہونے والے عنا کے بھوت اسلام لے آتا، اور اعللہاہ کے دشمنی ہیڈ دی، ابھ سوپھان<sup>10</sup> سے ریویاٹ ہے کہ عنا نے کہا، اعللہاہ کے دیون کو مسٹر کے لیا اور مسٹر ہونے والے سے سب سے پہلے ابھ سوپھان<sup>11</sup> نے سوچ کیا، اور عتمہ کی<sup>12</sup> نے یوچ کیا، اور عتمہ کے بارے میں وہ ایسا کریما<sup>13</sup> تھری: عَسَى اللَّهُ أَنْ يَجْعَلَ بِيْنَكُمْ وَبَيْنَ الَّذِينَ عَادُوكُمْ مَمْهُونَ

**۱** امریت وہ سارا چیزوں پر اپار، شاکشانی ہے، دشمنوں کے دیلوں کو فر کر عنا نہیں اپنی ماری اور دھ کے اندر لے آنے کا بھ شکت رکھتا ہے।

**۲** امریت تھر نہیں عنا کے ساتھ نہیں اور مہمان نواڑی<sup>14</sup> ایسا کریما سے پہنچا اور مہمان نواڑی<sup>15</sup> سے مہمان نواڑی<sup>16</sup> کو کیا۔

**۳** امریت عنا کے ساتھ نیا کرنے سے، جسے عنا کے ادھکاروں کو ادا کرنا، عنا سے کیا، اسے کا تھا رخانا، عنا کی امامانوں کو لیتا، اور عنا سے خریدے، اس سماونا کو اونہ پورا دام دئنا ایسا دیا۔

**۴** امریت نیا پسند کرنے والوں سے، ایسا کا ایسے یہ ہے کہ اعللہاہ تھا۔ تھر نے اسے کاپریوں سے جنہوںے مسٹلماں سے یوچ ن کرنے، عنا کے ویسلو

**۹** اعللہاہ تھا۔ تھا تھر ماتھ سے دharma کے بارے میں یوچ کیا، اور تھر تھر دش سے نیکالے<sup>5</sup>، اور دش سے نیکالنے والوں کا سہاہت کیا، جو لوگ اپسے کاپریوں سے پرم کر کر وہی (اویشی) اتھاڑا ہے<sup>8</sup> ۱

**۱۰** اے ایمان والو! جب تھر دش سے پاس مومینا اور اورتے ہیجڑ کر کرک آए<sup>9</sup> تو تھم عنا کا ایمتھان لے<sup>10</sup>، واسطہ میں عنا کے ایمان کو اچھے تراہ جانے والے تو اعللہاہ ہی ہے<sup>11</sup>، پرانے یادی وہ تھر تھر دشاندار لگاتی ہے<sup>12</sup> تو اب تھم عنا نہیں کاپریوں کی تھرک واپس ن کرے<sup>13</sup>، یہاں تھم کے لیا<sup>14</sup>، اور جو خرچ عنا کاپریوں کا ہوا ہے وہ عنا نہیں دے دے<sup>15</sup>، اور عنا اورتے کو عنا کا مہار دکر کر نیکاہ کر لئے میں تھم پر کوئی پاپ نہیں<sup>16</sup>، اور کاپری اورتے کے

کاپریوں کی سہاہت ن کرنے کا وہن کر رکھا ہے، عنا کے ساتھ نہیں کر رکھے نہیں رکھتا اور ن عنا کے ساتھ کوئی نیا ایک برتاؤ کر رکھے سے رکھتا ہے۔

**۵** اسے موراد کاپریوں کے سردار اور عنا جائے لوگ ہے، جو کاپری اور اورتے مسٹلماں سے سبھے رکھتے ہے۔

**۶** امریت جن لوگوں نے تھم سے یوچ کیا، اور تھر دش سے نیکالنے والوں کی مدد کی، اور اسے سوچ دسارے مکا والے، اور عنا کے ساٹھی ہے، جو عنا کے ساتھ میا ایک برتاؤ<sup>17</sup> میں عنا کے ساٹھی ہے۔

**۷** امریت عنا نہیں اپنا دوست بنائے اور عنا کے سہاہت اور مدد کا سیل سیلیا بکاری رکھے۔

**۸** کوئیک اونہوںے اسے لوگوں سے دوستی کی ہے، جو اعللہاہ، عنا کے رسویں، اور عنا کی کیتاب سے دشمنی کے کارण، دشمنی کے لایک ہے۔

**۹** امریت کاپریوں کے پاس سے، دراسیل کا وات یہ ہے کہ جب نبی<sup>18</sup> نے ہدیتیا کے دن کوئی شک<sup>19</sup> کے لوگوں سے اس وات پر سامنہ جاؤ کیا کہ کاپریوں کے لیا دے گے، تو جب کوئی شک<sup>20</sup> اور عنا کے پاس آئے وہ عنا نے کاپریوں کے لیا دے گے، اور جب نبی<sup>21</sup> نے مسٹلماں ہوکر عنا کے پاس آئے تو جب کوئی شک<sup>22</sup> اور عنا کے پاس آئے تو جب کاپریوں کے لیا دے گے، اور جب نبی<sup>23</sup> نے کاپریوں کے لیا دے گے، اور جب نبی<sup>24</sup> نے کاپریوں کے لیا دے گے، اور جب نبی<sup>25</sup> نے کاپریوں کے لیا دے گے، اور جب نبی<sup>26</sup> نے کاپریوں کے لیا دے گے، اور جب نبی<sup>27</sup> نے کاپریوں کے لیا دے گے، اور جب نبی<sup>28</sup> نے کاپریوں کے لیا دے گے، اور جب نبی<sup>29</sup> نے کاپریوں کے لیا دے گے، اور جب نبی<sup>30</sup> نے کاپریوں کے لیا دے گے، اور جب نبی<sup>31</sup> نے کاپریوں کے لیا دے گے، اور جب نبی<sup>32</sup> نے کاپریوں کے لیا دے گے، اور جب نبی<sup>33</sup> نے کاپریوں کے لیا دے گے، اور جب نبی<sup>34</sup> نے کاپریوں کے لیا دے گے، اور جب نبی<sup>35</sup> نے کاپریوں کے لیا دے گے، اور جب نبی<sup>36</sup> نے کاپریوں کے لیا دے گے، اور جب نبی<sup>37</sup> نے کاپریوں کے لیا دے گے، اور جب نبی<sup>38</sup> نے کاپریوں کے لیا دے گے، اور جب نبی<sup>39</sup> نے کاپریوں کے لیا دے گے، اور جب نبی<sup>40</sup> نے کاپریوں کے لیا دے گے، اور جب نبی<sup>41</sup> نے کاپریوں کے لیا دے گے، اور جب نبی<sup>42</sup> نے کاپریوں کے لیا دے گے، اور جب نبی<sup>43</sup> نے کاپریوں کے لیا دے گے، اور جب نبی<sup>44</sup> نے کاپریوں کے لیا دے گے، اور جب نبی<sup>45</sup> نے کاپریوں کے لیا دے گے، اور جب نبی<sup>46</sup> نے کاپریوں کے لیا دے گے، اور جب نبی<sup>47</sup> نے کاپریوں کے لیا دے گے، اور جب نبی<sup>48</sup> نے کاپریوں کے لیا دے گے، اور جب نبی<sup>49</sup> نے کاپریوں کے لیا دے گے، اور جب نبی<sup>50</sup> نے کاپریوں کے لیا دے گے، اور جب نبی<sup>51</sup> نے کاپریوں کے لیا دے گے، اور جب نبی<sup>52</sup> نے کاپریوں کے لیا دے گے، اور جب نبی<sup>53</sup> نے کاپریوں کے لیا دے گے، اور جب نبی<sup>54</sup> نے کاپریوں کے لیا دے گے، اور جب نبی<sup>55</sup> نے کاپریوں کے لیا دے گے، اور جب نبی<sup>56</sup> نے کاپریوں کے لیا دے گے، اور جب نبی<sup>57</sup> نے کاپریوں کے لیا دے گے، اور جب نبی<sup>58</sup> نے کاپریوں کے لیا دے گے، اور جب نبی<sup>59</sup> نے کاپریوں کے لیا دے گے، اور جب نبی<sup>60</sup> نے کاپریوں کے لیا دے گے، اور جب نبی<sup>61</sup> نے کاپریوں کے لیا دے گے، اور جب نبی<sup>62</sup> نے کاپریوں کے لیا دے گے، اور جب نبی<sup>63</sup> نے کاپریوں کے لیا دے گے، اور جب نبی<sup>64</sup> نے کاپریوں کے لیا دے گے، اور جب نبی<sup>65</sup> نے کاپریوں کے لیا دے گے، اور جب نبی<sup>66</sup> نے کاپریوں کے لیا دے گے، اور جب نبی<sup>67</sup> نے کاپریوں کے لیا دے گے، اور جب نبی<sup>68</sup> نے کاپریوں کے لیا دے گے، اور جب نبی<sup>69</sup> نے کاپریوں کے لیا دے گے، اور جب نبی<sup>70</sup> نے کاپریوں کے لیا دے گے، اور جب نبی<sup>71</sup> نے کاپریوں کے لیا دے گے، اور جب نبی<sup>72</sup> نے کاپریوں کے لیا دے گے، اور جب نبی<sup>73</sup> نے کاپریوں کے لیا دے گے، اور جب نبی<sup>74</sup> نے کاپریوں کے لیا دے گے، اور جب نبی<sup>75</sup> نے کاپریوں کے لیا دے گے، اور جب نبی<sup>76</sup> نے کاپریوں کے لیا دے گے، اور جب نبی<sup>77</sup> نے کاپریوں کے لیا دے گے، اور جب نبی<sup>78</sup> نے کاپریوں کے لیا دے گے، اور جب نبی<sup>79</sup> نے کاپریوں کے لیا دے گے، اور جب نبی<sup>80</sup> نے کاپریوں کے لیا دے گے، اور جب نبی<sup>81</sup> نے کاپریوں کے لیا دے گے، اور جب نبی<sup>82</sup> نے کاپریوں کے لیا دے گے، اور جب نبی<sup>83</sup> نے کاپریوں کے لیا دے گے، اور جب نبی<sup>84</sup> نے کاپریوں کے لیا دے گے، اور جب نبی<sup>85</sup> نے کاپریوں کے لیا دے گے، اور جب نبی<sup>86</sup> نے کاپریوں کے لیا دے گے، اور جب نبی<sup>87</sup> نے کاپریوں کے لیا دے گے، اور جب نبی<sup>88</sup> نے کاپریوں کے لیا دے گے، اور جب نبی<sup>89</sup> نے کاپریوں کے لیا دے گے، اور جب نبی<sup>90</sup> نے کاپریوں کے لیا دے گے، اور جب نبی<sup>91</sup> نے کاپریوں کے لیا دے گے، اور جب نبی<sup>92</sup> نے کاپریوں کے لیا دے گے، اور جب نبی<sup>93</sup> نے کاپریوں کے لیا دے گے، اور جب نبی<sup>94</sup> نے کاپریوں کے لیا دے گے، اور جب نبی<sup>95</sup> نے کاپریوں کے لیا دے گے، اور جب نبی<sup>96</sup> نے کاپریوں کے لیا دے گے، اور جب نبی<sup>97</sup> نے کاپریوں کے لیا دے گے، اور جب نبی<sup>98</sup> نے کاپریوں کے لیا دے گے، اور جب نبی<sup>99</sup> نے کاپریوں کے لیا دے گے، اور جب نبی<sup>100</sup> نے کاپریوں کے لیا دے گے، اور جب نبی<sup>101</sup> نے کاپریوں کے لیا دے گے، اور جب نبی<sup>102</sup> نے کاپریوں کے لیا دے گے، اور جب نبی<sup>103</sup> نے کاپریوں کے لیا دے گے، اور جب نبی<sup>104</sup> نے کاپریوں کے لیا دے گے، اور جب نبی<sup>105</sup> نے کاپریوں کے لیا دے گے، اور جب نبی<sup>106</sup> نے کاپریوں کے لیا دے گے، اور جب نبی<sup>107</sup> نے کاپریوں کے لیا دے گے، اور جب نبی<sup>108</sup> نے کاپریوں کے لیا دے گے، اور جب نبی<sup>109</sup> نے کاپریوں کے لیا دے گے، اور جب نبی<sup>110</sup> نے کاپریوں کے لیا دے گے، اور جب نبی<sup>111</sup> نے کاپریوں کے لیا دے گے، اور جب نبی<sup>112</sup> نے کاپریوں کے لیا دے گے، اور جب نبی<sup>113</sup> نے کاپریوں کے لیا دے گے، اور جب نبی<sup>114</sup> نے کاپریوں کے لیا دے گے، اور جب نبی<sup>115</sup> نے کاپریوں کے لیا دے گے، اور جب نبی<sup>116</sup> نے کاپریوں کے لیا دے گے، اور جب نبی<sup>117</sup> نے کاپریوں کے لیا دے گے، اور جب نبی<sup>118</sup> نے کاپریوں کے لیا دے گے، اور جب نبی<sup>119</sup> نے کاپریوں کے لیا دے گے، اور جب نبی<sup>120</sup> نے کاپریوں کے لیا دے گے، اور جب نبی<sup>121</sup> نے کاپریوں کے لیا دے گے، اور جب نبی<sup>122</sup> نے کاپریوں کے لیا دے گے، اور جب نبی<sup>123</sup> نے کاپریوں کے لیا دے گے، اور جب نبی<sup>124</sup> نے کاپریوں کے لیا دے گے، اور جب نبی<sup>125</sup> نے کاپریوں کے لیا دے گے، اور جب نبی<sup>126</sup> نے کاپریوں کے لیا دے گے، اور جب نبی<sup>127</sup> نے کاپریوں کے لیا دے گے، اور جب نبی<sup>128</sup> نے کاپریوں کے لیا دے گے، اور جب نبی<sup>129</sup> نے کاپریوں کے لیا دے گے، اور جب نبی<sup>130</sup> نے کاپریوں کے لیا دے گے، اور جب نبی<sup>131</sup> نے کاپریوں کے لیا دے گے، اور جب نبی<sup>132</sup> نے کاپریوں کے لیا دے گے، اور جب نبی<sup>133</sup> نے کاپریوں کے لیا دے گے، اور جب نبی<sup>134</sup> نے کاپریوں کے لیا دے گے، اور جب نبی<sup>135</sup> نے کاپریوں کے لیا دے گے، اور جب نبی<sup>136</sup> نے کاپریوں کے لیا دے گے، اور جب نبی<sup>137</sup> نے کاپریوں کے لیا دے گے، اور جب نبی<sup>138</sup> نے کاپریوں کے لیا دے گے، اور جب نبی<sup>139</sup> نے کاپریوں کے لیا دے گے، اور جب نبی<sup>140</sup> نے کاپریوں کے لیا دے گے، اور جب نبی<sup>141</sup> نے کاپریوں کے لیا دے گے، اور جب نبی<sup>142</sup> نے کاپریوں کے لیا دے گے، اور جب نبی<sup>143</sup> نے کاپریوں کے لیا دے گے، اور جب نبی<sup>144</sup> نے کاپریوں کے لیا دے گے، اور جب نبی<sup>145</sup> نے کاپریوں کے لیا دے گے، اور جب نبی<sup>146</sup> نے کاپریوں کے لیا دے گے، اور جب نبی<sup>147</sup> نے کاپریوں کے لیا دے گے، اور جب نبی<sup>148</sup> نے کاپریوں کے لیا دے گے، اور جب نبی<sup>149</sup> نے کاپریوں کے لیا دے گے، اور جب نبی<sup>150</sup> نے کاپریوں کے لیا دے گے، اور جب نبی<sup>151</sup> نے کاپریوں کے لیا دے گے، اور جب نبی<sup>152</sup> نے کاپریوں کے لیا دے گے، اور جب نبی<sup>153</sup> نے کاپریوں کے لیا دے گے، اور جب نبی<sup>154</sup> نے کاپریوں کے لیا دے گے، اور جب نبی<sup>155</sup> نے کاپریوں کے لیا دے گے، اور جب نبی<sup>156</sup> نے کاپریوں کے لیا دے گے، اور جب نبی<sup>157</sup> نے کاپریوں کے لیا دے گے، اور جب نبی<sup>158</sup> نے کاپریوں کے لیا دے گے، اور جب نبی<sup>159</sup> نے کاپریوں کے لیا دے گے، اور جب نبی<sup>160</sup> نے کاپریوں کے لیا دے گے، اور جب نبی<sup>161</sup> نے کاپریوں کے لیا دے گے، اور جب نبی<sup>162</sup> نے کاپریوں کے لیا دے گے، اور جب نبی<sup>163</sup> نے کاپریوں کے لیا دے گے، اور جب نبی<sup>164</sup> نے کاپریوں کے لیا دے گے، اور جب نبی<sup>165</sup> نے کاپریوں کے لیا دے گے، اور جب نبی<sup>166</sup> نے کاپریوں کے لیا دے گے، اور جب نبی<sup>167</sup> نے کاپریوں کے لیا دے گے، اور جب نبی<sup>168</sup> نے کاپریوں کے لیا دے گے، اور جب نبی<sup>169</sup> نے کاپریوں کے لیا دے گے، اور جب نبی<sup>170</sup> نے کاپریوں کے لیا دے گے، اور جب نبی<sup>171</sup> نے کاپریوں کے لیا دے گے، اور جب نبی<sup>172</sup> نے کاپریوں کے لیا دے گے، اور جب نبی<sup>173</sup> نے کاپریوں کے لیا دے گے، اور جب نبی<sup>174</sup> نے کاپریوں کے لیا دے گے، اور جب نبی<sup>175</sup> نے کاپریوں کے لیا دے گے، اور جب نبی<sup>176</sup> نے کاپریوں کے لیا دے گے، اور جب نبی<sup>177</sup> نے کاپریوں کے لیا دے گے، اور جب نبی<sup>178</sup> نے کاپریوں کے لیا دے گے، اور جب نبی<sup>179</sup> نے کاپریوں کے لیا دے گے، اور جب نبی<sup>180</sup> نے کاپریوں کے لیا دے گے، اور جب نبی<sup>181</sup> نے کاپریوں کے لیا دے گے، اور جب نبی<sup>182</sup> نے کاپریوں کے لیا دے گے، اور جب نبی<sup>183</sup> نے کاپریوں کے لیا دے گے، اور جب نبی<sup>184</sup> نے کاپریوں کے لیا دے گے، اور جب نبی<sup>185</sup> نے کاپریوں کے لیا دے گے، اور جب نبی<sup>186</sup> نے کاپریوں کے لیا دے گے، اور جب نبی<sup>187</sup> نے کاپریوں کے لیا دے گے، اور جب نبی<sup>188</sup> نے کاپریوں کے لیا دے گے، اور جب نبی<sup>189</sup> نے کاپریوں کے لیا دے گے، اور جب نبی<sup>190</sup> نے کاپریوں کے لیا دے گے، اور جب نبی<sup>191</sup> نے کاپریوں کے لیا دے گے، اور جب نبی<sup>192</sup> نے کاپریوں کے لیا دے گے، اور جب نبی<sup>193</sup> نے کاپریوں کے لیا دے گے، اور جب نبی<sup>194</sup> نے کاپریوں کے لیا دے گے، اور جب نبی<sup>195</sup> نے کاپریوں کے لیا دے گے، اور جب نبی<sup>196</sup> نے کاپریوں کے لیا دے گے، اور جب نبی<sup>197</sup> نے کاپریوں کے لیا دے گے، اور جب نبی<sup>198</sup> نے کاپریوں کے لیا دے گے، اور جب نبی<sup>199</sup> نے کاپریوں کے لیا دے گے، اور جب نبی<sup>200</sup> نے کاپریوں کے لیا دے گے، اور جب نبی<sup>201</sup> نے کاپریوں کے لیا دے گے، اور جب نبی<sup>202</sup> نے کاپریوں کے لیا دے گے، اور جب نبی<sup>203</sup> نے کاپریوں کے لیا دے گے، اور جب نبی<sup>204</sup> نے کاپریوں کے لیا دے گے، اور جب نبی<sup>205</sup> نے کاپریوں کے لیا دے گے، اور جب نبی<sup>206</sup> نے کاپریوں کے لیا دے گے، اور جب نبی<sup>207</sup> نے کاپریوں کے لیا دے گے، اور جب نبی<sup>208</sup> نے کاپریوں کے لیا دے گے، اور جب نبی<sup>209</sup> نے کاپریوں کے لیا دے گے، اور جب نبی<sup>210</sup> نے کاپریوں کے لیا دے گے، اور جب نبی<sup>211</sup> نے کاپریوں کے لیا دے گے، اور جب نبی<sup>212</sup> نے کاپریوں کے لیا دے گے، اور جب نبی<sup>213</sup> نے کاپریوں کے لیا دے گے، اور جب نبی<sup>214</sup> نے کاپریوں کے لیا دے گے، اور جب نبی<sup>215</sup> نے کاپریوں کے لیا دے گے، اور جب نبی<sup>216</sup> نے کاپریوں کے لیا دے گے، اور جب نبی<sup>217</sup> نے کاپریوں کے لیا دے گے، اور جب نبی<sup>218</sup> نے کاپریوں کے لیا دے گے، اور جب نبی<sup>219</sup> نے کاپریوں کے لیا دے گے، اور جب نبی<sup>220</sup> نے کاپریوں کے لیا دے گے، اور جب نبی<sup>221</sup> نے کاپریوں کے لیا دے گے، اور جب نبی<sup>222</sup> نے کاپریوں کے لیا دے گے، اور جب نبی<sup>223</sup> نے کاپریوں کے لیا دے گے، اور جب نبی<sup>224</sup> نے کاپریوں کے لیا دے گے، اور جب نبی<sup>225</sup> نے کاپریوں کے لیا دے گے، اور جب نبی<sup>226</sup> نے کاپریوں کے لیا دے گے، اور جب نبی<sup>227</sup> نے کاپریوں کے لیا دے گے، اور جب نبی<sup>228</sup> نے کاپریوں کے لیا دے گے، اور جب نبی<sup>229</sup> نے کاپریوں کے لیا دے گے، اور جب نبی<sup>230</sup> نے کاپریوں کے لیا دے گے، اور جب نبی<sup>231</sup> نے کاپریوں کے لیا دے گے، اور جب نبی<sup>232</sup> نے کاپریوں کے لیا دے گے، اور جب نبی<sup>233</sup> نے کاپریوں کے لیا دے گے، اور جب نبی<sup>234</sup> نے کاپریوں کے لیا دے گے، اور جب نبی<sup>235</sup> نے کاپریوں کے لیا دے گے، اور جب نبی<sup>236</sup> نے کاپریوں کے لیا دے گے، اور جب نبی<sup>237</sup> نے کاپریوں کے لیا دے گے، اور جب نبی<sup>238</sup> نے کاپریوں کے لیا دے گے، اور جب نبی<sup>239</sup> نے کاپریوں کے لیا دے گے، اور جب نبی<sup>240</sup> نے کاپریوں کے لیا دے گے، اور جب نبی<sup>241</sup> نے کاپریوں کے لیا دے گے، اور جب نبی<sup>242</sup> نے کاپریوں کے لیا دے گے، اور جب نبی<sup>243</sup> نے کاپریوں کے لیا دے گے، اور جب نبی<sup>244</sup> نے کاپریوں کے لیا دے گے، اور جب نبی<sup>245</sup> نے کاپریوں کے لیا دے گے، اور جب نبی<sup>246</sup> نے کاپریوں کے لیا دے گے، اور جب نبی<sup>247</sup> نے کاپریوں کے لیا دے گے، اور جب نبی<sup>248</sup> نے کاپریوں کے لیا دے گے، اور جب نبی<sup>249</sup> نے کاپریوں کے لیا دے گے، اور جب نبی<sup>250</sup> نے کاپریوں کے لیا دے گے، اور جب نبی<sup>251</sup> نے کاپریوں کے لیا دے گے، اور جب نبی<sup>252</sup> نے کاپریوں کے لیا دے گے، اور جب نبی<sup>253</sup> نے کاپریوں کے لیا دے گے، اور جب نبی<sup>254</sup> نے کاپریوں کے لیا دے گے

विवाह बन्धन को अपने कब्जे में न रखो<sup>1</sup>, और जो कुछ तुमने खर्च किया हो मांग लो<sup>2</sup>, और जो कुछ उन काफिरों ने खर्च किया हो वह भी मांग लें<sup>3</sup>, यह<sup>4</sup> अल्लाह का फैसला है<sup>5</sup>, जो तुम्हारे बीच कर रहा है, अल्लाह तआला बहुत जासूने वाला और हिक्मत वाला है।

**११** और यदि तुम्हारी कोई पत्नी तुम्हारे हाथ से निकल जाए<sup>6</sup> आर काफिरों के पास चली जाए फिर तुम्हें उसके बदले का समय मिल जाए, तो जिनकी पत्नियाँ चली गई हैं उन्हें उनके खर्च के बराबर दे दो<sup>7</sup>, और उस अल्लाह तआला से डरते रहो जिस पर तुम ईमान रखते हो<sup>8</sup>।

**१२** हे नबी! जब<sup>9</sup> मुसलमान औरतें आप से इन बातों पर बै'अत करने आए<sup>10</sup> कि वह अल्लाह के साथ किसी को साझी नहीं बनाएंगी, चोरी नहीं करेंगी, जिनाकारी (व्यधिभार) नहीं करेंगी, न ही अपनी औलाद को मार डालेंगी<sup>11</sup>, और न कोई ऐसा आक्षेप (बहतान) लगाएंगी जो स्वयं अपने हाथों और पैरों के सामने गढ़ लें<sup>12</sup>, और किसी पुण्य के काम में<sup>13</sup> तेरी

**१** अर्थ यह है कि जिस मुसलमान के पास कोई काफिर औरत हो तो वह उसकी पत्नी नहीं रही, क्योंकि धर्म बदलने के कारण उसका निकाह खत्म होगया। पहले काफिरों और मुसलमानों के बीच शादी विवाह जायज़ था, काफिर मुसलमान औरतों से शादी करते थे और मुसलमान काफिर और मुशिरक औरतों से, इस आयत के उत्तरने के बाद यह हुक्म उन काफिरों के बारे में खत्म होगया जो मुशिरक हैं, रहीं काफिर किताबिया औरतें तो वह इस हुक्म में दाखिल नहीं, मुसलमान अब भी उन से निकाह कर सकते हैं।

**२** अपनी पत्नीयों के महर मांग लो जब वह इस्लाम से फिर कर उनके पास चली गई हो।

**३** मुफसिरिन कहते हैं कि कोई मुसलमान औरत इस्लाम से फिर कर उन काफिरों के पास चली जाती जिनका मुसलमानों से प्रतिज्ञा (संधि) थी तो उन काफिरों से कहा जाता कि तुम इसकी महर वापस कर दो, और यदि कोई काफिर औरत इस्लाम कबूल करके मुसलमानों के पास आ जाती तो मुसलमान उसकी महर उक्ते काफिर शौहर को वापस लौटा देते।

**४** अर्थात् दोनों ओर से महरों की वापसी का यह हुक्म।

**५** उन मुशिरकों के साथ जिनसे हुद्दीबिया में समझौता हवा, परन्तु उन मुशिरकों के अतिरिक्त जिन से कोई समझौता नहीं, और एक कोल यह है कि यह हुम्म खत्म हो चुका है, कुर्तुर्बा कहते हैं कि महरों के लौटाने का यह हुम्म उसी ज़माने के साथ खास था, परन्तु पति पत्नी में से जब कोई इस्लाम स्वाक्षर कर ले तो उनके बीच युद्ध का हुम्म हमेशा की लिए बाकी है।

**६** वह इस तरह से कि इस्लाम से मुंह पोइकर काफिरों के मुल्क में चली जाए, चाहे वे किताब वाले ही क्यों न हों।

**७** अर्थात् उन काफिरों से जिहाद में जो ग़नीमत के माल तुम्हें मिले हों उन्हें बाँटने से पहले उन मुसलमानों को जिनकी पत्नीयाँ काफिर मुल्कों में चली गई हैं और मुशिरकों ने उनके महर उन्हें नहीं लौटाए हैं तो इस फैू और ग़नीमत के माल में से उनके खर्च के बराबर दे दो ताकि उनके नुकसान की भरपाई होजाए।

**८** अर्थात् कोई ऐसा काम न करो जिस से तुम अल्लाह की पकड़ में आजाओ।

**९** अर्थात् इस्लाम पर आप से बै'अत करने के इरादे से आएं।

**१०** चाहे वह कोई मक्का की बात है, क्योंकि मक्का वालों की ओरतें आँ-आकर आप से बै'अत कर रही थीं, तो अल्लाह तआला ने आपको हुक्म दिया कि आप उनसे इस बात पर बै'अत करें कि अल्लाह के साथ किसी को साझी नहीं बनाएंगी।

**११** जैसे वह जातिलियत में करती थीं कि लड़कियों को जिन्दा गाड़ दिया करती थीं।

**१२** अर्थात् अपने शौहर की तरफ उन औलाद की निसवत नहीं करेंगी जो उनसे नहीं हैं, फरी कहते हैं : औरत किसी पड़े हुए नौ-मौलूद बच्चे को उठा लेती और अपने शौहर से कहती के यह मेरा बच्चा हैं जो आपके वीथ से है। इने अब्बास करते हैं कि, औरत बच्ची जनती थी तो उसके बदले कोई बच्चा ले लेती थी।

**१३** अर्थात् किसी भी काम से जिस में अल्लाह का अनुकरण हो, जैसे मृतक पर विलाप (नैहा) करने, कपड़े फ़ाइने, सर के बाल नैवेन, गला फ़ाइने, चैंबरा

يَأَيُّهَا النَّٰئِيْهُ إِذَا جَاءَكَ الْمُؤْمَنَاتُ يُبَارِعْنَكَ عَلَى أَن لَا يُشْرِكُنَ  
بِاللَّهِ شَيْئًا وَلَا يُسْرِفْنَ وَلَا يَزِينَنَ أَوْلَادَهُنَ وَلَا يَأْتِنَ  
بِيَهْتَنَ بِفَرَرَيْهُ بَيْنَ أَيْدِيهِنَ وَأَرْجُلَهُنَ وَلَا يَعْصِنَكَ  
فِي مَعْرُوفٍ فِي بَيْاعِهِنَ وَأَسْتَغْفِرْهُنَ اللَّهُ إِنَّ اللَّهَ عَفُورٌ رَّحِيمٌ  
يَأَيُّهَا الَّذِينَ ءاْمَنُوا لَآتُنَّهُنَّ قَوْمًا عَاصِبَ اللَّهُ عَلَيْهِمْ  
قَدِيسُوْمَانَ الْآخِرَةِ كَمَا يَسَّرَ الْكُفَّارُ مِنْ أَصْحَابِ الْقُبُوْرِ

سُبْحَانَ رَبِّ الْعَالَمِينَ

سُبْحَانَ رَبِّ الْعَالَمِينَ  
يَأَيُّهَا الَّذِينَ ءاْمَنُوا لَمْ تَقُولُنَ مَا لَا تَعْلَمُونَ  
كَبَرَ مَقْتاً عِنْدَ اللَّهِ أَنْ تَقُولُوا مَا لَا تَعْلَمُونَ إِنَّ  
الَّهَ يُحِبُّ الْلَّذِينَ يُقْتَلُونَ فِي سَبِيلِهِ صَفَّاً كَانُوكُمْ  
بَنِينَ مَرْضُوشُ وَإِذَا قَالَ مُوسَى لِقَوْمِهِ يَقُولُمِ  
تُؤْذُونَ وَقَدْ تَعْلَمُونَ أَنِّي رَسُولُ اللَّهِ إِلَيْكُمْ فَلَمَّا  
رَأَغُوا أَرَأَعَ اللَّهُ قُلْوَبَهُمْ وَاللَّهُ لَا يَهِيْدُ الْقَوْمَ الْفَسِيقِينَ

नाफरमानी नहीं करेंगी, तो आप उनसे बै'अत कर लिया करें, और उनके लिए अल्लाह से क्षमा-याचना करें<sup>14</sup>, अवश्य अल्लाह तआला माफ करने वाला रहम करने वाला (दयातु) है। **१३** ऐ मेमिनो! तुम उस कोम से दोस्ती न रखो जिस पर अल्लाह का अजाब आयुका है<sup>15</sup>, जो आखिरत से इस तरह निराश हो चुके हैं<sup>16</sup>, जैसे कि मुर्दे कब्र वालों से काफिर निराश हैं<sup>17</sup>।

## सूरतु स्त्सफ़ । - 61

श्रु करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहब्बन बहुत रहम करने वाला है।  
**१** आकाशों और धरती की अल्लाह की पवित्रता (पाकी) बयान करती है, और वही ग़ालिब (प्रभावशाली) हिक्मत वाला है।  
**२** ऐ ईमान वालों! तुम वह बात क्यों कहते हो जो करते नहीं<sup>18</sup>?

पीटें, और वर्वाही और वर्वादी इत्यादि का विलाप करने से रुक जाने में।

**३** अर्थात् उनसे यह बै'अत लेने के बाद आप अल्लाह से उनकी माफी और क्षमा की याचना करें।

**४** इसमें काफिरों के सभी ग्रुप शामिल हैं, और एक राय यह है कि इससे मात्र वहाँ मुशद्द

**५** अर्थात् उन्हें अपने कुप्र के कारण आखिरत पर यकदम विश्वास नहीं।

**६** जैसे मृत्यु पश्चात दोबारा न उठाए जाने पर आस्था रखने के कारण उन्हें अपने मृतकों के दोबारा उठाए जाने की उम्मीद नहीं।

**७** इने अब्बास फ़रमाते हैं कि कुछ मुसलमान जिहाद कर्ज़ होने से पहले कहते थे कि हम चाहते हैं कि अगर अल्लाह हमें बता देता उसे सबसे अधिक प्रिय अमल का निनासा है? तो हम उसे करते, तो जब अल्लाह हो जाए तो उसे बता दिया कि सबसे प्रिय अमल जिहाद है।

**८** और जिहाद का हुम्म उन्हें मुशक्तल लगा तो यह आयत उतरी।

وَإِذْ قَالَ عَيسَى ابْنُ مُرْسَلٍ يَدْبَغُ إِسْرَئِيلَ إِلَيْ رَسُولِ اللَّهِ إِلَيْكُمْ مُصَدَّقًا  
لِتَابِيْنَ يَدِيَّ مِنَ الْتَّورَةِ وَمِشَرِّاً رَسُولَ يَأْتِيَ مِنْ بَعْدِيَ أَسْمَهُ أَحْمَدُ فَلَمَّا  
جَاءَهُمْ بِالْبَيِّنَاتِ قَالُوا هَذَا سِحْرٌ مِّنْ ٦٠ وَمِنْ أَظْلَمُ مَمْنَ أَفْزَى  
عَلَى اللَّهِ الْكَذِبُ وَهُوَ يُدْعَى إِلَى الْإِسْلَامِ وَاللَّهُ لَا يَهِيَّدِ الْقَوْمَ الظَّالِمِينَ  
يُرِيدُونَ لِيُطْفَئُونَ نُورَ اللَّهِ بِأَفْوَاهِهِمْ وَاللَّهُ مِنْ نُورٍ وَلَوْ كَرِهَ ٧  
الْكَفَّارُونَ ٨ هُوَ الَّذِي أَرْسَلَ رَسُولَهُ بِالْهُدَىٰ وَدِينُ الْقَيْمَدِيَّ لِيُظْهِرُهُ  
عَلَى الَّذِينَ كَفَرُوا وَلَوْ كَرِهَ الْمُشْرِكُونَ ٩ يَأْتِيْهَا الَّذِينَ أَمْنَوْهُنَّ أَذْلَكُمْ  
عَلَى تَحْرِزِ شَجَيْكُمْ مِّنْ عَذَابِ الْيَمِّ ١٠ نَوْمُنَزْنَ بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ وَجَهَدُونَ  
فِي سَبِيلِ اللَّهِ يَأْمُلُوكُمْ وَأَنْفَسُكُمْ ذَلِكُمْ خَيْرُ الْكُوَانِ كُمْ نَعْلَمُونَ ١١  
يَغْفِرُ لَكُمْ ذُنُوبُكُمْ وَيُدْخِلُكُمْ جَنَّتَ بَحْرِيَّ مِنْ تَحْمَنَ الْأَهْرَارِ وَمُسْكِنَ  
طَبِيبَةَ فِي جَنَّتَ عَدْنَ ذَلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ ١٢ وَلَخَرَى شَجَونَهَا نَصْرٌ  
مِنَ اللَّهِ وَفَنْحُ فَرِيقٌ وَلِشَرِّ الْمُؤْمِنِينَ ١٣ يَأْتِيْهَا الَّذِينَ أَمْنَوْهُنَّ كُونَوا  
أَنْصَارَ اللَّهِ كَمَا قَالَ عَيسَى ابْنُ مُرْسَلٍ لِلْحَوَارِيْنَ مِنْ أَنْصَارِيَ إِلَى اللَّهِ  
قَالَ الْمَعْوَارِيْونَ نَحْنُ أَنْصَارُ اللَّهِ فَأَمْنَتْ طَابِيقَةً مِنْ بَيْتِ إِسْرَائِيلَ  
وَكَفَرَتْ طَابِيقَةً فَأَيْدِنَا الَّذِينَ أَمْنَوْهُنَّ عَدُوَّهُمْ فَأَضْبَحُوا ظَاهِرِيْنَ ١٤

**३** तुम जो करते नहीं उसका कहना अल्लाह को बहुत नाप्रसन्द (अप्रिय) है<sup>1</sup>।

**४** अवश्य अल्लाह तज़्अला उन लोगों से प्रेम करता है जो उसके रास्ते में पंक्तिकब्द (सफ बस्ता) होकर जिहाद करते हैं<sup>2</sup>। जैसे कि वह सीसा पिलाई हुई इमरात है<sup>3</sup>।

**५** और (याद करो) ज़क्क भरा (عَلَيْكُمْ) ने अपनी कौम से कहा<sup>4</sup> हे मेरे समदाय के लोगों! तम मझे क्यों सता रहे हो<sup>5</sup>।

<sup>1</sup> अर्थात् अल्लाह तज़ाता ऐसी वातों से अधिक नाराज होता है, और एक कौल यह है कि यह ऐसे लोगों के बारे में है जो नव्वी के पास आते ही उनमें से एक कहता कि मैं अपनी तलवार लेकर लड़ा, और मैं न इतने इतने लोगों को मार गिराया, परन्तु न तो वह लड़ा होता और न किसी को उसने मारा होता।

२८ अल्लाह तआला यहां उनसे यह बयान कर रहा है कि अल्लाह को अपने बन्दों के आमाल में से सब से अधिक प्रिय अल्लाह के रास्ते में जिवाह करना है, और हवीस शरीक में है : “सारी चीजों का सारा : इस्लाम है, और उसकी खम्बा : नमाज़ है, और उसकी चौंटी : अल्लाह के गणे में जारी है”।

<sup>3</sup> अर्थात् वह आपस में एक दूसरे से मिल जाते हैं यहाँ तक कि वह एक चीज़ की तरह हो जाते हैं, और ऐसा अल्लाह के दीन पर उनकी मज़बूती के कारण होता है, इस सम्बन्ध में वह जगा भी लेट नहीं करते, तुरन्त एक जट हो जाते हैं, दश्मन उनमें घुस नहीं सकता।

**4** जब अल्लाह तत्त्वाता ने यह बताया कि वह अपने रास्ते में शिराद करने वालों को प्रसंद करता है, और उनसे महबूत करता है, तो उनसे यह बताया भी स्पष्ट करके कि मस्रु (مسری) और इंसा (إنسا) दोनों ने लोगों को तौहीद करना आवश्यक दिया था। और दोनों ने अल्लाह की गरात में खिलाफ किया था। और लोगों ने इनका विषय किया वह अल्लाह की सजा के हक्कर हए, ताकि

जब्कि तुम अच्छी तरह जानते हो कि मैं तुम्हारी तरफ अल्लाह का रसल हूँ<sup>6</sup>, तो जब वे देखे ही रहे तो अल्लाह ने उनके दिलों को (और अधिक) टेढ़ा कर दिया, और अल्लाह तज़ाला नारुर्मान कौम को मार्गदर्शन (हिदायत) नहीं देता।

**६** और जब मयम के पुत्र इसा ने कहा ए (मर समाय) इस्माइल की ओलाद! मैं तुम सभों की ओर अल्लाह का रसूल हूँ अपने से पहले की किताब तौरात की मैं पृष्ठि करने वाला हूँ, और अपने बाद आने वाले एक रसूल की मैं तुम्हें खुशखबरी सुनाने वाला हूँ जिन का नाम अहमद है, फिर जब वह उनके पुत्र स्पष्ट प्रमाण लाए तो यह कहने लगे यह तो खला जाद है<sup>१०</sup>

७ और उस व्यक्ति से अधिक अन्यायी और कौन होगा जो अल्लाह पर झूट गढ़े? जबकि वह इस्लाम की ओर बुलाया जाता है<sup>11</sup> और अल्लाह ऐसे जालिमों को हिदायत नहीं देता<sup>12</sup>।

**१** वे चाहते हैं कि अल्लाह के नूर को अपनी फूंक से बचाएं<sup>१३</sup>, और अल्लाह अपने नूर का परिपुर्ण करने वाला है<sup>१४</sup> काफिर बुरा ही क्यों न मानें।

 यह वहीं अल्लाह है जिसने अपने रसुल को मार्गदर्शन और सत्य धर्म देकर भेजा, ताकि उसे दृश्य सारे धर्मों पर गालिब करदे<sup>15</sup>, मुण्टपूजक नाखुश ही क्यों न हों<sup>16</sup>।

مُحَمَّد (ﷺ) کی عالمتِ اپنے کے ساتھ وہ سب کوچھ کرنے سے ڈرے جو مُسَا (رسول اللہ) اور ایسا (رسول اللہ) کی کوئی نہ انکے ساتھ کیا۔

<sup>5</sup> उन बातों का विरोध करके जिनका मैं तुम्हें आदेश दे रहा हूँ, उन शरीरी अंतों में जो अल्लाह ने तुम पर अनिवार्य किया है, या गालिया देकर और बुराइयाँ बयान करके मुझे क्यों सता रहे हो? विस्तार से इसका चर्चा सुरतल अह्नजाव आयत न० ६५ में हो चुका है।

अंथोट तुम मुझे क्योंकर सता रहे हो जबकि तुम्हें इसकी जानकारी है कि मैं अल्लाह का रसूल हूँ, और रसूल का आदर-भाव किया जाता है, और उसका मान-मयदा होता है, मेरे रसूल होने में तुम्हें कुछ शीर्षक नहीं क्योंकि तुम उन मोर्जों (घमकरों) को अपनी ऊँचों से देख रहे हो, जो मेरी रसालत स्थीरता करने पर तुम्हें विवश कर रहे हैं, और जो

तुम्हें दृढ़ विश्वास का लाभ दे रहे हैं।  
अस्थियां तो जलवाह ने उन लोगों का सत्य को छोड़ दिया और अपने नवी को सत्याम तो जलवाह ने उनके इस पाप के बदले उनके दिलों को टेढ़ा कर दिया और वह सत्याम से विमुख होगए।

<sup>8</sup> अर्थात मैं अल्लाह का रसुल हूँ तभीरे पास इन्जीत लेकर आया हूँ कोई ऐसी चीज़ लेकर नहीं आया हूँ जो तीरात के प्रतिकूल हो, बल्कि इसके ऐसी बातें हैं जिनकी मैं तुम्हें खुश-खबरी देने वाला हूँ फिर क्योंकेर तुम मुझ से नफरत और धुना करते हों और मेरा विरोध कर रहे हों।

९ तो जब बात ऐसी है कि तो कोई कारण नहीं कि उम मुझे मुर्छा मिलती है। अहमद हमारे नवी का नाम है, इसके अर्थ वास्तव में ऐसी व्यक्तित्व के हैं जिसकी गुणों के कारण उसकी इनी प्रशंसा होती ही कि उतनी व्यक्ति और उसी की व्यक्ति की जीते हैं।

कितना आर का न का जाता है।

10 अर्थात् इसा (श्री) जब उनके पास मोंज़ों को लेकर आए तो उन्होंने उसे जादू ठाना और कहने लगे : यह जो हमारे पास लेकर आए हैं वह तो खुला जादू है, और एक कौल यह है कि इस से मुराद नवीं है, जब आप मोंज़ों (चंकारों) को लेकर आए तो मक्का के कफिर दूसरे दूसरे तो भाटे जाएंगे।

**कहने लगे यह तो खुला जूँड़ ह।**  
**11** जो सरे खासे में उत्तम और सर्व श्रेष्ठ है, तो जब इसका हाल यह है तो वह दृश्यों पर झटक बांध ही नहीं सकता तो अपने रव के विश्वलृष्टि क्यों गढ़ेगा।  
**12** और जिनका वापर नहीं दिया जाता हो भी उन्हीं अल्लाजागरिण् में से हैं।

जारी जिनका ऊपर दया दुख पना उहा जीवारपान मन सह ह।  
१३ अर्थात् उनका हाल इस्लाम का अपमान करने और अपनी झूठी बातों  
के द्वारा लोगों को उसकी हैदरायत से रोकेने के लिए प्रयास करने में उस  
कंट्री के हाल की तरह है जो महान नूर को अपने मुंह से फूँक कर  
दबापारा चाढ़ता है।

<sup>14</sup> इस्लाम धर्म को पूरे संसार में ग़ालिब करके और उसे दूसरे धर्मों पर बलन्द करके।

**१५** ताकि उसे सारे धर्मों पर गालिब कर दे और उनपर उसे श्रेष्ठता और उत्तमता प्रदान करदे।

**16** अर्थात् हर अवस्था में ऐसा होकर रहेगा

**१०** ऐ ईमान वालो! क्या मैं तुम्हें वह व्यापार बतलाऊं जो तुम्हारी दुखदायक अज़ाब से बचा ले<sup>१</sup>।

**११** अल्लाह तआला पर और उसके रसूल पर ईमान लाओ, और अल्लाह के रास्ते में तन, मन और धन से जिहाद करो, यह तुम्हारे लिए बेहतर यदि तुम में ज्ञान हो।

**१२** अल्लाह तआला तुम्हारे पाप माफ करदेगा<sup>२</sup>, और तुम्हें उन जन्नतों में पहुँचाएगा, जिन के नीचे नहरें बह रही हैंगी, और साफ सुधरे धरों में जो अद्दन के जन्नत में होंगे<sup>३</sup>, यह बहत बड़ी सफलता है<sup>४</sup>।

**१३** और तुम्हें एक दूसरा उपहार भी देगा जिसे तुम चाहते हो<sup>५</sup>, वह अल्लाह की सहायता और तुरन्त फतह है<sup>६</sup>, ईमान्दारों को खुशबूरी देदो।

**१४** ऐ ईमान वालो! तुम अल्लाह के मददगार बन जाओ<sup>८</sup> जिस तरह मर्यम (ع) के बेटे ईसा (ع) ने हवारियों (मित्रों) से कहा : कि कौन है जो अल्लाह के रास्ते में मेरा मददगार बने<sup>९</sup>? हवारियों ने कहा हम अल्लाह के रास्ते में मददगार हैं<sup>१०</sup>, तो इस्माईल की औलाद में से एक गुट तो ईमान लाया<sup>११</sup>, और एक गुट ने कुफ किया<sup>१२</sup> तो हमने मोमिनों को उनके दुश्मनों के विरोध में सहायता की<sup>१३</sup> तो वो विजयी होगए<sup>१४</sup>।

**१** अर्थात् अमल को तिजारत की जगह में रखा गया, इसलिए कि इसमें शी उहें व्यापार की तरह ही लाभ होगा, और वह लाभ जन्नत में जाना और नरक से बचना है, यहीं व्यापार है जिसकी व्याख्या अमली दोनों आयतों में आई है, क्योंकि इन दोनों आयतों का अर्थ यह है कि ईमान और जिहाद का मूल्य अल्लाह के यहाँ जन्नत है और यह बहुत लाभदायक बिक्री है।

**२** पहले उस सामान का चाचा हुवा जिस से वह व्यापार कर रहे हैं, और यहाँ उस मूल्य का चाचा हुवा है जिसका उसने उनसे वादा किया है, अर्थात् यदि तुम ईमान लाया गे तो वह तुम्हारे पाप माफ कर देगा।

**३** हमेशां वाले बांगों में होंगे, जहाँ तो तात आएगी कि यह उपहार खस्त होजाए और न वहाँ से निकलना ही होगा।

**४** अर्थात् यह माझी जिसका चाचा हुवा और जन्नत में जाना इतनी बड़ी सफलता है कि उससे बचकर कोई सफलता नहीं, और ऐसी कामयाबी है कि कोई भी कामयाबी उसकी बाबावरी नहीं कर सकती।

**५** अर्थात् वह तुम्हें एक और उपहार भी देगा जो तुम्हें पसन्द है और जिसे तुम चाह रहे हो।

**६** और यह अल्लाह की ओर से तुम्हारी मदद और ऐसी जीत है जो बहुत जल्द होने वाली है, वह तुम्हें विजेता बनाएगा, अर्थात् कुरैश के खिलाफ तुम्हारी सहायता करेगा, और तुम उन को जीत लोगे, अता कहते हैं इससे मुराद फारस और रूम की जीत है।

**७** अयत का अर्थ यह है कि ऐ मुहम्मद! आप ईमानवालों को संसार में मदद और जीत और परलोक में जन्नत की खुशबूरी दे दीं जिए।

**८** अर्थात् धर्म की इस सहायता पर जमे रहो जिस पर तुम हो।

**९** अर्थात् अल्लाह के धर्म की ईसी तरह सहायता करो, जिस तरह ईसा (ع) के हवारियों ने की थी, जब ईसा (ع) ने उन से कहा था :

कौन है जो अल्लाह के रास्ते में मेरा मददगार बने? तो उन्होंने कहा :

हम अल्लाह के रास्ते में मददगार हैं।

**१०** अर्थ यह है कि तुम में से कोई है जो उन चीजों में जो अल्लाह से करीब करने वाली हैं मेरी मदद करे? और यह हवारी ईसा (ع) के मददगार और उनके मुख्य साथी थे जो सब से पहले उन पर ईमान लाए, यह टोटल १२ आदमी थे।

**११** एक गुट ईसा (ع) पर ईमान लाया।

**१२** और एक गुट न उनके साथ कुफ किया।

**१३** अर्थात् हमन सत्यपूर्णियों को असत्यपूर्णियों पर शक्ति प्रदान की।

**१४** तो उन्होंने उन पर विजय प्राप्त कर ली, कलातः ने अल्लाह तआला के कौल :

या ابीهَا الَّذِينَ آمَنُوا كُوْنُوا أَنْصَارَ اللَّهِ كे बारे में उल्लेख किया है कि : अल्लाह की कृपा से यहीं हुआ, आप के पास ७० लोग आए और “अङ्कवा” में आप से बैंधत की ओर और कपों को पाह किया, और आप की कृपा की यहाँ तक कि अल्लाह तआला ने

अपने धर्म को गालिव कर दिया, अल्लाह के रसूल (ع) ने उन लोगों से जो आप से अङ्कवा में मिले थे फरमाया : तुम आपें मैं से १२ लोगों को निकालो, जो अपनी कौम में मेरे कफील होंगे जिस तरह हवारी ईसा बिन मर्यम (ع) के कफील थे, फिर

سُبْحَانَ رَبِّ الْجَمَعَةِ  
يُسَبِّحُ لِلَّهِ مَا فِي السَّمَاوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ الْكَلِمُونَ الْعَزِيزُ  
**الْحَكِيمُ** ١ هُوَ الَّذِي بَعَثَ فِي الْأَمْمَاتِ رَسُولًا مِّنْهُمْ يَشَّهُدُونَ  
عَلَيْهِمْ إِيمَانِهِ، وَيَرَكِبُهُمْ وَيَعْلَمُهُمُ الْكِتَبَ وَالْحِكْمَةَ وَإِنْ كَانُوا  
مِنْ قَبْلِ لَقِيَ ضَلَالًا مُّبِينًا ٢ وَمَا حَرَّكَهُمْ لَمْ يَأْتِهِ حَقُوقُهُمْ  
وَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ٣ ذَلِكَ فَضْلُ اللَّهِ يُؤْتِيهِ مَنْ يَشَاءُ وَاللَّهُ  
دُوَّالْفَضْلِ الْعَظِيمِ ٤ مَثَلُ الَّذِينَ حُمِلُوا النُّورَةَ كَمْ  
يَحْمِلُوهَا كَشَلَ الْحِمَارِ يَحْمِلُ أَشْفَارًا بِكُسْ مَثَلُ الْقَوْمِ  
الَّذِينَ كَذَّبُوا بِإِيمَانِ اللَّهِ وَاللَّهُ لَا يَهِيدُ الْقَوْمَ الظَّالِمِينَ ٥  
فَلْ تَأْتِهَا الْأَذِيَّنَ هَادِرًا إِنْ رَعَمْتُمْ أَنْكُمْ أَوْلَى لِأَئِمَّةِ اللَّهِ مِنْ  
دُونِ النَّاسِ فَتَمَنُوا الْمَوْتَ إِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ ٦ وَلَا يَمْنَوْنَهُ  
أَبْدًا إِمَامَدَمَتْ أَيْدِيهِمْ وَاللَّهُ عَلِمُ الظَّالِمِينَ ٧ فَلْ إِنَّ  
الْمَوْتَ الَّذِي تَفَرُّوْتُ مِنْهُ فَإِنَّهُ مُلَقِّي كُمْ كُمْ مُرَدُّونَ  
إِلَى عِلْمِ الْغَيْبِ وَالشَّهَدَةِ فَيُنَتَّكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ٨

## सुरतुल जुम्मा - 62

श्रू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहबून बहुत रुक्म करते वाला है।

**१** सारी चीजें जो आकाशों और धरती में हैं अल्लाह की पाकी करती हैं, जो बादशाह, बहुत पाक<sup>१५</sup>, गलिब और हिक्मत वाला है।

**२** वही है जिसने अनपढ़<sup>१६</sup> लोगों में उन्हीं में से एक रसूल भेजा जो उन्हें उसकी आयतें पढ़कर सुनाता है<sup>१७</sup>, और उनको पाक करता है<sup>१८</sup>, और उन्हें किताब और हिक्मत सिखाता है<sup>१९</sup>, अवश्य यह इससे पहले स्पष्ट गुग्राही में थे<sup>१</sup>।

अल्लाह के रसूल (ع) ने उन नुकाब से कहा : तुम लोग अपनी कौम पर (मेरे) कफील होगे, जैसे ईसा बिन मर्यम (ع) के कफील उनके हवारी थे, और मैं अपनी कौम का कफील हूँ। तो उन लोगों ने कहा : ठीक है।

**१५** कुहस वह हस्ती है जो हर ऐव से पवित्र हो।

**१६** उम्माइन से मुराद अरब हैं, जिन में कुछ जो अच्छी तरह लिखना पढ़ना जानते थे, और कुछ ऐसे थे जो अच्छी तरह पढ़ नहीं सकते थे, क्योंकि वह अहले किताब नहीं थे, उम्मा वास्तव में ऐसा व्यक्ति है जो न लिख सकता हो, और न लिखी हुई कोई चीज पढ़ सकता हो, और अरब लोग आम तौर से ऐसे ही थे।

**१७** अर्थात् कुरआन पढ़ कर सुनाता है, बावजूद इसके कि वह अनपढ़ है, लिख पढ़ नहीं सकता, और न ही उसने लिखना पढ़ना किसी से सीखा है।

**१८** अर्थात् उन्हें कुफ, पाप और बूरे अल्लाह के पवित्र करता है, और एक कौल यह यह है कि ईमान द्वारा उनके दिलों को पवित्र करता है, और उन्हें पाक-दिल बना देता है।

**१९** किताब से मुराद कुरआन और हिक्मत से मुराद सुन्नत है, और सुन्नत से मुराद धर्म की समझ है, जैसा कि मालिक बिन अनस ने कहा है।

يَأَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذَا نُودِي لِلصَّلَاةِ مِنْ يَوْمِ الْجُمُعَةِ  
فَاسْعُوا إِلَى ذِكْرِ اللَّهِ وَذَرُوا الْبَيْعَ ذَلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ إِنْ كُنْتُمْ  
تَعْلَمُونَ ١٦ فَإِذَا قُضِيَتِ الصَّلَاةُ فَانشِرُوا فِي الْأَرْضِ  
وَابْنُغُوا مِنْ فَضْلِ اللَّهِ وَادْكُرُوا اللَّهَ كَثِيرًا لَّعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ  
وَإِذَا رَأَوْا تَحْرِةً أَوْهُمْ أَنْفَضُوا إِلَيْها وَتَرَكُوكُ فَإِيمَاقُ  
مَا عِنْدَ اللَّهِ خَيْرٌ مِّنَ اللَّهِ وَمِنَ الْبَيْرَةِ وَاللَّهُ خَيْرُ الرَّازِقِينَ ١٧

سُورَةُ الْمَنَافِقُونَ  
الْمَنَافِقُونَ قَالُوا نَشْهُدُ إِنَّا لَرَسُولُ اللَّهِ وَاللَّهُ يَعْلَمُ  
إِذَا جَاءَكُم مُّنْتَفِقُونَ فَالْمُنَافِقُونَ لَكُذُوبُونَ  
إِنَّا لَرَسُولُهُ وَاللَّهُ يَشْهُدُ إِنَّ الْمَنَافِقَنَ لَكَذُوبُونَ  
أَخْذُوا أَيْمَنَهُمْ جَنَّةً فَصَدَّوْا عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ أَيْمَنَهُمْ سَاءَ مَا كَانُوا  
يَعْمَلُونَ ذَلِكَ بِأَنَّهُمْ أَمْوَالُهُمْ كُفُرٌ وَأَفْطَعَ عَلَى قُلُوبِهِمْ  
فَهُمْ لَا يَفْقَهُونَ وَإِذَا رَأَيْتُمْهُمْ تَعْجِبُكَ أَجْسَامُهُمْ  
وَإِنْ يَقُولُوا تَسْمَعُ لِغَوْلِهِمْ كَانُوهُمْ حَسِيبٌ شَسِيدٌ يَحْسُبُونَ كُلَّ  
صَيْحَةٍ عَلَيْهِمْ هُمُ الْعَدُوُ فَاحْذَرُهُمْ فَنَاهِمُ اللَّهُ أَنِّي يُؤْفِكُونَ

**३** और दूसरों के लिए भी उन्हीं में से, जो अब तक उनसे  
नहीं मिले<sup>२</sup>, और वही गालिव और हिक्मत वाला है<sup>३</sup>।

**४** यह अल्लाह की कृपा (फ़ज्ल) है, जिसे चाहे अपनी कृपा  
से नवाज़े, और अल्लाह तआला बड़े फ़ज्ल वाला है।

**५** जिन लोगों को तौरत के अनुसार कर्तव्य करने का आदेश  
दिया गया<sup>४</sup> फिर उन्होंने उसके अनुसार कर्तव्य नहीं किया<sup>५</sup>  
उनकी मिसाल उस गधे की तरह है जो बहुत सी<sup>६</sup> किताबें

<sup>1</sup> अर्थात् शिर्क कर रहे थे और इक से अनभिगा थे।

۱۔ جو اپنے شاک کر رہ یہ اور جو اپنے گھر تک جانے والی ہے

۲۔ ایسا بھائی جو اپنے اپنے پاک کرتا ہے، اُبڑا فیر دُسرا لئوگا کو بھی پاک کرتا ہے جو اُبھرے اُبھر میں سے ہے، اُبڑا یہ اُبھر کے لئوگ ہے جو سہماوا کے پھاتک میلٹیپ تک اُنے وارے والے ہے، ڈیم پاک بُھاری نے اُبڑا ہُڈیرا سے ریخا یت کیا ہے کہ جس سامی سرھلُوں چُمعاً نہیں لیں، ہڈیم لئوگ نبُھا کے پاس بُدھے ہوئے، اُپنے اسکی تیلا دھات کی، جب اپنے پاک پاک پورا وَعْدَنَمِ لَمَ يَلْعَبُو بِهِمْ

**अर्जीज़ और हकीम दोनों मुबालगा के सेगे हैं, अर्थ यह है कि वह बहुत अधिक गात्रिक और हिक्मत वाला है।**

<sup>4</sup> अर्थात् उसके अनुसार अमल करने और जो कुछ भी उसमें है उसे बजाने का उद्देश आदेश दिया गया।

5 अर्थात् उसके अनुसार अमल नहीं किए, और उनका अनुकरण नहीं किया जिनका उन्हें आदेश दिया गया था।

**६** यह अल्लाह ने उन यहूदियों की मिसाल बताई है जिन्होंने तौरत के अनुसार अमल करना छोड़ दिया था।

ગુરૂા ગાંધી વરણ અદ્દ દિકા બા

लादे हो, अल्लाह की निशानियों को झूटलाने वाले की बहुत बूरी मिसाल है<sup>8</sup>, और अल्लाह ऐसे जालिमों को मार्गदर्शन नहीं देता।  कह दिजिए कि ऐ यहूदियों! यदि तुम्हारा दावा है कि तुम अल्लाह के मित्र हो दश्रे लोगों के सिवाय<sup>9</sup>, तो यदि तुम सच्चे हो<sup>10</sup> तो मौत की कामना (तमन्ता) करो<sup>11</sup>।

यह कभी सौत की तमन्ना नहीं करेंगे उन अमरतों के कारण जो अपने आगे, अपने हाथों भेज रखे हैं<sup>12</sup>, और अल्लाह जालिमों का अच्छी तरह जानता है।

**३** कह दिजिए कि जिस मौत से तुम भागते हो, वह तो तुम्हें पहुँच कर रहेगी <sup>13</sup>, फिर तुम सब, छिपे और खुले जानने वाले (अल्लाह) की तरफ लौटाएं जाओगे <sup>14</sup>, और वह तरह से तम्हारे किए हए सारे काम बतला देगा <sup>15</sup>।

१५ वह लोगों जो ईमान लाए हों। जुम्आ के दिन जब  
नमाज की अजान <sup>१६</sup> दी जाए, तो तुम अल्लाह के प्रियकर्ता  
तरफ थौड़ी पड़ी <sup>१७</sup>, और किनना बेचना छोड़ दो <sup>१८</sup> यह <sup>१९</sup>

तुम्हारे हङ्क में बहुत ही बेहतर है<sup>20</sup> यदि तुम जानते हो। 22  
10 फिर जब नमाज़ होचुके<sup>21</sup> तो धरती में फैल जाओ,

<sup>7</sup> अस्फार सिफ्र की जमूअ (बहुवचन) है, जिसके अर्थ बड़ी किताब के हैं। गद्य नहीं जानता कि उसकी पीढ़ पर किताब है या कहा-कहा-

8 गधे से तुलना की गई है, और यहूद जो उससे वास्तव में एक-रूपता रखते हैं उनकी तुलना की गई है, जब से बूढ़ी मिसाल है जो उन द्वितीयाने वालों की दी गई है, अर्थ यह है कि मुसलमानों तुम उनके जैसे न हों जाओ, इस तश्वीह का चर्चा पहले इस लिए किया गया है, ताकि उसके द्वारा उन लोगों को डराया जाए जो अल्लाह के रसूल ﷺ को मिश्वर पर खुत्ता देते हुए खड़ा छोड़कर अनाज खीरीदेने चले गए थे, और उसी जैसे हर वह व्यक्ति भी है जो खुत्ता सुन कर विमुख होजाए, जैसा कि हीदीस में आया है : जो युमुआ के द्विन इसम के खुत्ता देने की अवस्था में बात करे उसकी मिसाल उस गधे की है, जो अपने ऊपर बितावों का बोझ लादे हो, और जो उससे चुप हो जाने के लिए कहे उसका भी युमुआ नहीं।

9 اس سے वह लोग मुराद हैं जो तकल्फु के साथ यथोदी बने हुए थे, और यह इस काम के लिए कि यहूदी लोगों पर अपनी श्रेष्ठता और बरीत के दोवार थे, और कहाँ थे कि वह अल्लाह के द्वारा, उसके द्वेषे और बदले हैं, तो अल्लाह तथा उन्हाँ ने आपि यसके द्वारा दिया गया कि जब तब यह लालित द्वारा देखे जाएं तब उन से कहें।

अपन रसूल का हम द्वाकि जब वह वालत दव कर ता उन स कह।  
 10 अपने इस उमान में, क्योंकि जिसे इसकी जानकारी हो कि वह जन्ती है, तो वह जन्त में जल्द पहुँचने की चाहत करता है।  
 11 तुम मौत की कामाकरा ताकि तुम्हें वह श्रेष्ठा प्राप्त हो जाए।  
 12 अर्थात् दिवा ताकै और दिवा तो ताकै तो दिवा आया है, और

**12** अर्थात् जिस कुक्ख आर पाप के काम का वह करत आए हैं, आर अल्लाह की किताब में इहोने जो परिवर्तन किए हैं, इनके कारण वह मौत की घात और आर्जू कभी नहीं कर सकते।

**13** अर्थात् वह तुम पर उसी तरफ से आकर रहेगी जिस तरफ से तुम

भाग रहे हों, और जल्द ही वह तुम्हारा सामना करके रहेंगा।  
**14** और यही कियामत का दिन होगा।

**15** अर्थात् सरे दुरे कामों को बतला देगा, और तुम्हें उनकी सज़ा भी देगा।  
**16** इससे मुग्रद अजान है, जो जमआ के दिन इमाम के मिर्बर पर बैठने के समय दी जाती है, इसलिए कि नवबी दूर में उसके सिवाय कोई और अजान नहीं दी जाती थी। रही जमआ की फहली अजान तो उस्मान ने उसे सहावा की मैजदीरी में

उस समय बढ़ाया जब मरीना फैल गया और उसकी आवादी बढ़ गई।

**17** अर्थात् अल्पालाह के जिक्र की ओर चल पड़ो, (दौड़ीन से मुराद चलना है, क्योंकि नमाज़ के लिए दौड़ कर आने से रोका गया है, इत्मीनान और संजीविती के साथ अच्छे पर जांग दिया गया है, और जिक्र से मगर खल्ता

सजादगा के साथ अन पर ज़ार दिया गया है, आर ज़क्र स मुराब खुल्ला  
और जामे'अू मस्जिद में नमाज़ अदा करना है) और उसके अस्वाव  
अर्थात् नहाने वज़ करने और जमआ के प्रबन्ध में लग जाओ।

**18** अर्थात् काम-काज रोक दो, इसमें सारी सांसारिक चीजें शामिल हैं, इसी लिए जब जमआ के दिन मअज्जिन अज्ञान श्रू करदे तो खरीदना बेचना जायज नहीं।

**19** अर्थात् अल्लाह के जिक्र की तरफ चल पड़ना और खरीदना बेचना छोड़ देना ।  
**20** अर्थात् खरीदने बेचने में लगे रहने, और अल्लाह के जिक्र की तरफ न जाने

**21** अर्थात् जब नमाज पढ़ चको और उसे अदा करके फरिंग हो जाओ।

**22** व्यापार के लिए और उन कामों को निपटाने के लिए जिनकी तुम्हें ज़रूरत है।

और अल्लाह का फ़ज्जल (कृपा) खोजो<sup>1</sup>, और अत्यधिक अल्लाह का जिक्र किया करो<sup>2</sup>, ताकि तुम सफलता प्राप्त करते हो<sup>3</sup>।

**३** और जब कोई सौदा बिकता देखे<sup>4</sup> या कोई खेल-तमाशा दिखाई दे,<sup>5</sup> तो उसकी तरफ दौड़ जाते हैं<sup>5</sup>, और आप को खड़ा ही<sup>6</sup> छोड़ देते हैं, आप कह दिजिए कि अल्लाह के पास जो है<sup>7</sup>, वह खेल और व्यापार<sup>8</sup> से बेहतर है, और अल्लाह तआला सबसे अच्छा रोजी देने वाला है।

## सुरतुल मुनाफिकून - 63

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहबून बहुत रहम करने वाला है।

**१** तेरे पास जब मुनाफिक आते हैं<sup>9</sup> तो कहते हैं कि हम इस बात के गवाह हैं कि अवश्य आप अल्लाह के रसूल हैं<sup>10</sup>, और अल्लाह जानता है कि अवश्य आप उसके रसूल हैं<sup>11</sup>, और अल्लाह गवाही देता है कि यह मुनाफिक झूट है<sup>12</sup>।

**२** उन्होंने अपनी कस्मों को ढाल बना रखा है<sup>13</sup>, तो उन्होंने अल्लाह के रास्ते से रोका<sup>14</sup>, बेशक बूरा है वह काम जिसे यह कर रहे हैं।

**३** यह इस कारण है कि यह (दिखाने को) ईमान लाए (दिल में) काफिर ही रहे<sup>15</sup>, तो इनके दिलों पर मोहर कर दी गई

وَإِذَا قَلَ هُمْ تَعَالَوْا سَغَفَرْ لَكُمْ رَسُولُ اللَّهِ لَوْرَأْ وَسَهْ  
وَرَأْيَتْهُمْ يَصْدُونَ وَهُمْ مُسْتَكِرُونَ ٥ سَوَاءٌ عَلَيْهِمْ  
أَسْتَغْفِرْتَ لَهُمْ أَمْ لَمْ سَتَغْفِرْ لَهُمْ لَكَنْ يَغْفِرَ اللَّهُ لَهُمْ إِنَّ  
اللَّهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْفَاسِقِينَ ٦ هُمُ الَّذِينَ يَقُولُونَ  
لَا نُفْقِي أَعْلَى مَنْ عَنْدَ رَسُولِ اللَّهِ حَقَّ يَنْفَضُوا وَلَهُ  
خَرَّانِ الْسَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَلَكِنَّ الْمُتَفَقِّينَ لَا يَفْقَهُونَ  
يَقُولُونَ لَيْلَ رَجَعْنَا إِلَى الْمَدِينَةِ لِيُخْرِجَ الْأَعْزَمُ  
مِنْهَا الْأَدْلَلَ وَلَهُ الْعِرَّةُ وَرَسُولُهُ وَالْمُؤْمِنِينَ وَلَكِنَّ  
الْمُتَفَقِّينَ لَا يَعْلَمُونَ ٧ يَأْتِيَ الَّذِينَ أَمْنَوْ لَا تَنْهَكُمْ  
أَمْوَالُكُمْ وَلَا أَوْلَادُكُمْ عَنْ ذَكْرِ اللَّهِ وَمَنْ يَفْعَلْ  
ذَلِكَ فَأُولَئِكَ هُمُ الْخَسِيرُونَ ٨ وَأَنْفَقُوا مِنْ تَارِفَنْكُمْ  
مِنْ قَبْلِ أَنْ يَأْتِيَكُمُ الْمَوْتُ فَيَقُولُ رَبِّ لَوْلَا أَحْرَنْتَنِي  
إِلَى أَجْلِ قَبْيُ فَأَصَدَّقَ وَكَانَ مِنَ الصَّالِحِينَ ٩ وَلَنَ  
يُؤْخِرَ اللَّهُ نَفْسًا إِذَا جَاءَهُ أَجْلَهُ وَاللَّهُ خَيْرٌ لِمَا تَعْمَلُونَ ١٠

شُورَةُ النَّعْمَانِ

**1** फ़ज्जल से मुराद वह रोजी है, जिससे अल्लाह अपने बन्दों को नवाज़ता है, अर्थात् अपने व्यापार और काम-धैर्यों का लाभ खोजो।

**2** अपने कारोबार और खरीदने बेचने के बीच भी अल्लाह के जिक्र को न भूलो, बल्कि अत्यधिक उसका जिक्र करते रहो, उस आखिरत और दुनिया की भलाई और अच्छाई पर जिसका उन्हें मार्गदर्शन किया है, उसका शुभ करके, इसी तरह ऐसी विरदें और अज्ञाकर करके जिन से अल्लाह की कुर्तल दासिया होती है, जैसे स्वीह, तक्बीर, हङ्द करके और इस्तिगाफ़ कर द्वारा उसे याद करते रहो।

**3** ताकि तुम दिनिया और आखिरत की भलाई और सफलता पा सको।

**4** इस आयत का शब्द नुज़ूल यह है कि मर्दिना वाले फ़के काट रहे थे, और उन्हें अनाज की सख्त जुरूत थी, और इसी बीच कि नवी<sup>16</sup> जुमाया का खुला दे रहे थे कि मुक्ले शाम से व्यापारियों का एक दल आ गया, तो आप को खुला देते थे और लोग अनाज लेने चले गए, और मरिजद में मात्र १२ व्यक्ति बाकी रह गए, और एक रिवायत में ७ औरतों का चर्चा है।

**5** انتظروا اباهَا का अर्थ उसकी तरफ बाहर जाकर फैल जाने का है।

**6** अर्थात् मिम्बर पर।

**7** “अल्लाह के पास जो है” से मुराद बड़ा सवाब अर्थात् जन्मत है।

**8** इस तमाश और व्यापार से जिन की तरफ तुम गए, और जिन के कारण तुम मस्तिजद में नहीं रहे, और नवी<sup>17</sup> का खुला नहीं सुना।

**9** अर्थात् जब तुम से मिलते और तुम्हारी सभा में होते हैं।

**10** अर्थात् वह पूरा जोर यह बात बताने पर देते हैं कि वह दिल की गहराई और खालिस अकीदे के साथ यह गवाही दे रहे हैं।

**11** यह अल्लाह की तरफ से मुहम्मद<sup>18</sup> की रिसालत की तस्वीक है, जिसका चर्चा उनकी बातों में है, ताकि कोई यह न समझे कि आगे जो झुठलाया गया है उसका सम्बन्ध रिसालत से है।

**12** अपने इस दावे में कि नवी<sup>19</sup> की रिसालत की जो गवाही दे रहे हैं, पर उनकी वातें जिस में रिसालत की गवाही है, वह हक़ है।

**13** उन लोगों ने अपनी कस्मों को जो तुम्हारे पास आकर खाते हैं, ढाल बना रखा है, कि उसके द्वारा वह तुम से बचाव करते हैं, और उसे मारे जाने और कैदी बनाए जाने से अपनी सुरक्षा का माध्यम बनाते हैं।

**14** अर्थात् उन्होंने आप की नुबुवत में शब्द है पैदा करके लोगों को ईमान, जिहाद और नेकी और इत्तात के कामों से रोका।

**15** अर्थात् यह इस कारण कि इनका ईमान बाहर ही तक रहा, अन्दर से यह काफिर ही थे, और एक कैल यह है कि यह आयत उन लोगों के बारे में नाजिल हुई है जो ईमान लाकर मुर्तद हो गए थे, (इस सूरत में तर्जुमा यह होगा : इस सब से कि यह ईमान लाकर फिर काफिर होगा।)

**16** अर्थात् इनके कुकुर के कारण इनके दिलों पर मुहर लगा दी गई, तो इसके बाद इनमें ईमान प्रवेश नहीं कर सकेगा।

अब यह नहीं समझते<sup>21</sup>।

**4** और जब आप उन्हें देख लें तो उनके जिस आपको खुशनुमा (तुभावना) मालूम हों<sup>22</sup>, यह जब बातें करते लगे तो आप इनकी बातों पर कान लगाएं<sup>19</sup>, जैसाकि यह लकड़ियां हैं दीवार के सहारे लगाए हुई<sup>20</sup>, हर ऊँची आवाज को अपने खिलाफ समझते हैं<sup>21</sup>, यही वास्तविक (हकीकी) दुश्मन हैं, इन से बचो<sup>22</sup>, अल्लाह इन्हें नाश करे<sup>23</sup>, कहां फिरे जाते हैं<sup>24</sup>।

**5** और जब इनसे कहा जाता है कि आओ तुम्हारे लिए

**17** उन चीजों को जिनमें इनकी भलाई है।

**18** अर्थात् इनके रूप अपनी रौनक और सुन्दरता के कारण उस व्यक्ति को अच्छे लगे जो इन्हे देखे।

**19** अर्थात् इनकी फ़साहत और चर्व-ज़वानी के कारण आप इनकी बातों को दुरुस्त और सत्य जानें, मुनाफिकों का सरदार अब्दुल्लाह बिन उबे बहुत फ़सीह, चर्व-ज़वान, लम्चा और सुन्दर था।

**20** अर्थात् अल्लाह के रसूल की सभा में उनके टेक लगाकर बैठने को ऐसी लकड़ियों से तश्वीह दी गई है जो बीबों से टेक लगाकर खड़ी की गई हों, जो लाभदायक समझ से खाली होने के कारण किसी बात को समझती बूझती न हों।

**21** कहा जाता है कि मुनाफिकों को हमेशा डर लगा रहता था कि उनके बारे में कोई ऐसी चीज़ नाजिल न हो जाए जो उन्हें बे-निकाब कर दे, और उनके खून और माल की मुचाह कर दे।

**22** अपनी तरफ से उन्हें कोई अवसर देने से, या अपनी भेद की बातें उन्हें बताने से, या इनके द्वारा देखने से यह दुश्मनों के जासूस हैं।

**23** अल्लाह की इन पर लान्त हो, यह शाप है, या इसमें ईमान वालों के लिए तात्सीम है कि वह कह करें।

**24** अर्थात् यह कैसे हक़ से फिरे जा रहे हैं, और कुकुर की ओर खिंचे जारहे हैं।

## سُبْحَانَ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

سُبْحَانَهُ مَا فِي السَّمَاوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ لَهُ الْحَمْدُ  
وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ عَقِيدَرٌ ۖ هُوَ الَّذِي خَلَقَكُمْ فَنَّكُمْ كَافِرٌ  
وَمِنْكُمْ مُّؤْمِنٌ وَاللَّهُ يَعْلَمُ مَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ ۗ خَلَقَ السَّمَاوَاتِ  
وَالْأَرْضَ بِالْقِوَّةِ وَصَوَّرَ كُلَّ فَاحِشَّ صُورَكُمْ وَإِلَيْهِ الْمَصِيرُ  
يَعْلَمُ مَا فِي السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ وَيَعْلَمُ مَا يَشْرُونَ وَمَا يَعْمَلُونَ وَاللَّهُ  
عَلَيْهِ بِذَاتِ الصُّدُورِ ۚ أَلَّا يَأْتِكُمْ بَنُو الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ قَبْلِ  
فَذَادُوا بِأَوْبَابِ أُمَّرِهِمْ وَلَمْ يَعْذَبْ أَلِيمٌ ۖ ذَلِكَ بِأَنَّهُ كَانَتْ تَائِبَتِهِمْ  
رُسُلُهُمْ بِالْبَيْتِ فَقَالُوا إِنَّا شَرِّجَدُونَا فَكَفَرُوا وَتَوَلُوا وَاسْتَعْنُ  
اللَّهَ وَاللَّهُ أَعْلَمُ حَمِيدٌ ۖ زَعْمَ الَّذِينَ كَفَرُوا أَنَّ لَنْ يَعْوَافَلَ بَلَ وَرَبِّ  
لَبَعْثَنَّ لِمَنِ الْبَيْنِ بِمَا عَمِلُوكُمْ وَذَلِكَ عَلَى اللَّهِ سَيِّرٌ ۖ فَعَامِلُوا بِاللهِ  
وَرَسُولِهِ وَالنُّورُ الَّذِي أَنْزَلْنَا وَاللَّهُ يَعْلَمُ مَا تَعْمَلُونَ حَيْرٌ ۖ يَوْمٌ  
يَجْمِعُكُلُومُوَالْجَمِيعَ ذَلِكَ يَوْمُ الْغَيْبَنِ وَمَنْ يُؤْمِنُ بِاللهِ وَيَعْمَلُ  
صَلَحاً يُكَفَّرُ عَنْهُ سَيِّئَاتِهِ وَيُدْخَلُهُ جَنَّتِي مِنْ تَحْمِئَا  
الْأَنْهَرُ خَلِيلِكُمْ فِيهَا أَبْدَأَ ذَلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ ۖ

1. अल्लाह के रसूल माफी की दुआ करें तो अपने सर मटकाते हैं ।  
2. औ तुम देखोगे कि घमन्ड करते हुए 2 रुक जाते हैं 3 ।

3. उनके लिए तुम्हारा माफी की दुआ करना और न करना वालों बरबर है 4 , अल्लाह तआला उन्हें कभी माफ न करेगा 5 , अवश्य अल्लाह तआला ऐसे फांसिकों को 6 हिदायत नहीं देता ।

7. यही वह हैं जो कहते हैं कि जो लोग अल्लाह के रसूल के पास हैं उन पर खर्च मत करो, यहां तक कि वह इधर-उधर होजाएं 7 , और आकाशों और धरती के सरे ख़ज़ाने अल्लाह तआला की मिलकियत हैं 8 , लेकिन यह मुनाफिक नासमझ हैं 9 ।

10. यह कहते हैं कि यदि हम अब लौट कर मदीना जाएंगे तो

1. अर्थात टट्टा करते हुए इस्तिफ़ार से मुंह मोड़ते हुए अपना सर मटकाते हैं ।

2. अल्लाह के रसूल के पास आने और आप से इस्तिफ़ार की दरखास्त करने से अपने को बड़ समझते हुए, अर्थात वह अपने आप को इस से बड़ा समझ रहे थे, और ऐसा करने में अपने लिए अपमान समझ रहे थे ।

3. अर्थात अल्लाह के रसूल से मुंह फेते हैं ।

4. अर्थात आपका इस्तिफ़ार इनके निफाक और कुफ़ पर अड़े रहने के कारण इनके कुछ भी काम न आएगा ।

5. जब तक वह निफाक पर अड़े रहेंगे ।

6. अर्थात इत्त'अत से पूरे तौर पर निकल जाने वालों और अल्लाह की मासीयत (पाप) में मस्कूफ़ रहने वालों को, और मुनाफिकीन इन में सब से पहले आते हैं ।

7. यहां तक कि खिखर जाएं, इसके वह तुम्हारिजन फ़कीरों को मुराद लेते थे ।

8. इन मुहाजिरों को भी वही रोज़ी देने वाला है ।

9. अर्थात उक्त उम्मी समझ में यह बात नहीं आती कि रोज़ी के खजाने अल्लाह के हाथ में हैं, इसी लिए उन्होंने यह गुमान कर लिया कि अल्लाह मीमिनों पर कुशादगी नहीं करेगा ।

इज्जत वाला वहां से ज़लील (अपमानित) लोगों को निकाल देगा 10 सुनो! सम्मान तो मात्र अल्लाह ही के लिए है, और उसके रसूल के लिए और इमान वालों के लिए है, पर यह मुनाफिकीन जानते नहीं । 11 ऐसे मुमिनों तुम्हारे धन और तुम्हारी औलाद तुम्हें अल्लाह के जिक्र से ग़ाफिल न करदें 11 , और जो ऐसा करे 12 वह बड़े ही घाटा उठाने वाले लोग हैं 13 ।

14 और जो कुछ हमने तुम्हें दे रखा है उसमें से (हमारे रासे में) इससे पहले खर्च करो 14 कि तुम में से किसी को मौत आजाए तो कहने लगे कि : ऐ मेरे खर्च मुझे तु थोड़ी देर की छुट क्यों नहीं देता 16 कि मैं दान करूँ 17 और नैक लोगों में से होजाऊ ।

18 और जब किसी का निर्धारित समय आजाता है 18 तो फिर उसे अल्लाह तआला कभी मौका नहीं देता, और जो कुछ रुम करते हो उसे अल्लाह तआला अच्छी तरह जानता है 19 ।

## سُرُّتُرُّ تَنَاجِبُونَ - 64

श्रू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहबून बहुत रहम करते वाला है ।

1. (सारी चीजें) जो आकाशों और धरती में हैं अल्लाह की पाकी बयान करती हैं, उसी का राज है, और उसी के लिए प्रशंसा है, और वह हर चीज पर शक्तिमान है ।

2. उसी ने तुम्हें पैदा किया, सो तुम में से कुछ तो काफिर हैं 20 और कुछ मुमिन हैं 20 , और जो कुछ तुम कर रहे हो अल्लाह खबर देख रहा है ।

3. उसीने आकाशों और धरती को ह़क के साथ पैदा किया, उसीने तुम्हारे रूप बनाए, और बहुत अच्छे बनाए 21 , और

10. कहने वाला मुनाफिकों का सरदार अद्बुल्लाह बिन उबै है, और **الْأَعْزَى** से सुराद उसने स्वयं अपने को और अपने साथियों को लिया है, और उसके साथियों को लिया है, और अल्लाह के रसूल 22 और आप के साथियों को । और लौटने से उसकी सुराद उस युद्ध से उसकी वापसी है ।

11. जैद बिन अकम से रियायत है वह कहते हैं कि : मैं नवी 23 के साथ एक गजे में था, अद्बुल्लाह बिन उबै ने कहा कि यही हम मदीना वापस लौटे तो उनमें से इज्जत वाले लोगों को निकाल देगा, वह कहते हैं : मैं नवी 23 के पास आया, और उसकी यह बात बाईश, वह कहते हैं कि अद्बुल्लाह बिन उबै ने कसम खा ली कि उसने इस तरह ये कोई बात नहीं की है, जैद कहते हैं : मेरों कैम्प के लिए मुझे कोसने लगे और पूछने लगे इससे तुम्हारा क्या मक्कद था? वह कहते हैं कि मैं उदास (दुखित) होकर से गया, अल्लाह के नवी ने एक व्यक्ति भेज कर मुझे बुलाया, और फरमाया : अल्लाह ने तुम्हारा उम्र नाजिल किया है, और तुम्हारी तस्वीर की है, और यह आयत उतारी है ।

12. अल्लाह मीमिनों को उन मुनाफिकों की लतों की खबर दे रहा है, जिन्हें उनके धन और औलाद ने अल्लाह के जिक्र, अर्थात इस्लामी फ़राइज से ग़ाफिल कर दिया है, और एक कैलू यह है कि **ज़िन्न** से सुराद तिलावते कुर्जान है ।

13. अर्थात पूरे तौर पर घाटे में हैं ।

14. अर्थात हम ने तुम्हें जो दिया है उसमें से कुछ भलाई के रसैन में खर्च करो । एक और कथन यह है कि : खर्च करने से सुराद फ़र्ज़ जकात है ।

15. अर्थात उसके पास मौत के असबाब आ जाएं, या वह मौत की निशानियाँ देख ले ।

16. क्यों तु मुझे मौत की देता, और मेरी मौत को कुछ समय के लिए ताल नहीं देता ।

17. कि मैं अपने माल से सैद्धान्त कर लूँ ।

18. अर्थात जब उसकी मौत का समय आ पहुँचता है, और इसकी जीवन की अवधि पूरी हो जाती है ।

19. अर्थात उससे तुम्हारी कोई भी चीज़ छुपी नहीं रहती, जो कुछ तुम कर रहे हो उसके ज्ञान में है, इसका बदला वह तुम्हें ज़रूर देगा ।

20. अल्लाह तआला ने काफिर को पैदा किया और काफिर का कुफ़ और काफिर का कुफ़ और काफिर का काम उसका कसब (उपार्जन) है, और मीमिन को पैदा किया, मीमिन का ईमान और उसका काम उसका कसब है, काफिर कुफ़ करता है और कुफ़ को पसन्द करता है, और मीमिन ईमान लाता और ईमान को पसन्द करता है, और यह सब अल्लाह के हृष्म से होता है, तुम्हारी चाहत और बस में कुछ नहीं, जब तक कि अल्लाह रख्युल अलमीन न चाहे ।

21. अर्थात अल्लाह तआला ने तुम्हें पूरा और अच्छे रूप में पैदा किया, और तुम्हारा नाक-नक्शा अच्छा बनाया । अच्छी सूरत और सुडौल शरीर में इन्सान की सुन्दरता कोई





बनाते हैं<sup>1</sup>, और अल्लाह की खूशी के लिए ठीक ठीक गवाही दो<sup>2</sup>, यही है वह जिसकी नसीहत उसे की जाती है जो अल्लाह पर औ अक्षयमत के दिन पर इमान रखता हो<sup>3</sup>। और जो व्यक्ति अल्लाह से डरता है<sup>4</sup>, अल्लाह उसके निकलने का रास्ता बना देता है<sup>5</sup>।

**३** और उसे ऐसी जगह से रोज़ी देता है जिसका उसे गमन भी न हो, और जो व्यक्ति अल्लाह पर भरोसा करेगा, अल्लाह उसे काफ़ी होगा<sup>7</sup>। अल्लाह तआला अपना काम पूरा करके ही रहेगा<sup>8</sup>, अल्लाह तआला ने हर चीज़ का एक अद्विज्ञा निर्धारित कर रखा है<sup>9</sup>।

**४** तुम्हारी औरतों में से जो महिनवारी से निराश होगई हूँ<sup>10</sup>, यदि तुम्हें शक हो<sup>11</sup> तो उनकी इहत तीन महीने हैं, और उन की भी जिन्हें महिनवारी आना शुरू ही न हुवा हो<sup>12</sup> और गर्भवती (हामिला) औरतों की इहत उनका बच्चे का जनन देना है<sup>13</sup>, और जो व्यक्ति अल्लाह से डरेगा अल्लाह उसके हर काम में आसानी कर देगा<sup>14</sup>।

**५** यह अल्लाह का आदेश है जो उसने तुम्हारी तरफ उतारा है, और जो व्यक्ति अल्लाह से डरेगा अल्लाह उसके गन्नाह मिटा देगा, और उसे बहुत भारी बदला देगा<sup>15</sup>।

**६** तुम अपनी शक्ति के अनुसार<sup>16</sup> जहाँ तुम रहते वहाँ उन (तलाक वाली) औरतों को रखो<sup>17</sup>, और उन्हें तंग करने के कष्ट न दो<sup>18</sup>, और यदि वह गर्भवती हों तो जब तक बच्चा जन्म ले ले, उन्हें खर्च देते रहा करो<sup>19</sup>, फिर यदि

**१** अर्थात् यदि तुम लौटा रहे हो तो लौटने पर और यदि अलग कर रहे हो तो अलग करने पर, ताकि लड़ाई झगड़े का पूरे तौर से सफाया होजाए।

**२** यह आदेश गवाहों को है कि वह अल्लाह से कुर्बत और नज़ारीकी चाहने के लिए ठीक ठीक गवाही दें।

**३** इमान वालों को खास इसलिए किया गया है कि वास्तव में यही लोग लाभ उठाने वाले हैं, दूसरा कोई नहीं।

**४** अर्थात् जो सीमांन अल्लाह ने अपने बन्दों के लिए नियुक्त कर दी है उनका उल्लंघन न करके अल्लाह से डरता है।

**५** उन चीजों से जिसमें वह फँसा है।

**६** अर्थात् ऐसे तरीके से जो उके गुणान में भी नहीं होते, तो जिसने तलाक दी फिर इहत खत्म होने पर अलग होने पर, या लौटने पर गवाह बना लिया, तो अल्लाह उसके निकलने और छुकूकारा पाने का रास्ता बना देगा, तंगी तो मात्र उस होगी जो तलाक या लौटाने के बारे में अल्लाह के आदेशों का उल्लंघन करे।

**७** अर्थात् अपने आने वाले समस्याओं में जो अल्लाह पर भरोसा रखेगा, तो अल्लाह उसे काफ़ी होगा।

**८** अर्थात् उससे कोई चीज़ छूट नहीं सकती और न ही किसी चीज़ की तलब उसे बेबस करती है।

**९** अर्थात् तंगी के लिए उसने एक समय निर्धारित कर दिया है, और आसानी के लिए भी, यह दोनों अपने अपने समय पर पहुँच कर खत्म हो जाते हैं, और सुधी कहते हैं कि : इससे मुराद माहवारी और इहत की मुदत (अवधि) है।

**१०** इससे मुराद बड़ी औरतें हैं, जिन्हें माहवारी आना बन्द घोगया हो, और वह इससे निराश हो चुकी हो।

**११** यदि तुम्हें शक हो और इसकी जानकारी न हो कि उनकी इहत कितनी होगी।

**१२** उनकी कम उम्री और माहवारी की उम्र को न पहुँचने के कारण, अर्थात् नाबालिक लड़कियों की भी इहत तीन महीने है।

**१३** अर्थात् उनकी इहत उस मध्य पूर्णी होनी जब अपने गर्भ को जन्म दे दीं।

**१४** ज़हाक क कहते हैं : जो अल्लाह से डरेगा और सुन्नत के अनुसार तलाक देगा, तो अल्लाह लौटाने के समस्या को आसान कर देगा।

**१५** अर्थात् उसे आशिर्वत में बहुत भारी बदला देगा, और वह जन्मत है।

**१६** इस आयत में रिहाइश का बयान है, जो मुत्तल्का रज्ज्या (ऐसी औरतें जिन्हें मात्र १ या २ तलाक हूँगे हो) के लिए बाजिब है।

**१७** अर्थात् अपनी आसानी के अनुसार तुम उहें उन्हीं जगहों में से किसी में रखो जहाँ हमने तुम्हें रखा है, यह आदेश मुत्तल्का रज्ज्या के बारे में है, रहीं वह औरतें जिन्हें तीन तलाकों की जा चुकी हों तो उनके लिए नफ़ा कौर सुन्नत (खर्च और रिहाइश) के बारे में है।

**१८** रिहाइश और खर्च के बारे में।

**१९** मुत्तल्का औरत यदि गर्भवती हो तो उसके खर्च और रिहाइश के

## سُلْطَانُ الرَّمَضَانِ الرَّحِيمِ

يَا أَيُّهُ الَّذِي إِذَا طَلَقْتُمُ النِّسَاءَ فَطَلَقُوهُنَّ لِعَدَّتِهِنَّ وَأَحْصَوْا  
الْعَدَّةَ وَأَنْقُوا اللَّهَ رَبَّكُمْ لَا تُخْرِجُوهُنَّ مِنْ بُيُوتِهِنَّ  
وَلَا يَخْرُجُنَّ إِلَّا آنَ يَأْتِيَنَ بِفَحْشَةٍ مُّبِينَةً وَتَنَكِ حُدُودٌ  
اللَّهُ وَمَنْ يَعْدُ حُدُودَ اللَّهِ فَقَدْ ظَلَمَ نَفْسَهُ لَا تَدْرِي لَعْلَى  
اللَّهِ يُحِدِّثُ بَعْدَ ذَلِكَ أَمْرًا ۝ فَإِذَا بَلَغَنَ أَجْلَهُنَّ فَأَمْسِكُوهُنَّ  
بِمَعْرُوفٍ أَوْ فَارِقُوهُنَّ بِمَعْرُوفٍ وَأَشْهِدُوا دَوْمَى عَدْلَ مِنْكُمْ  
وَأَقِيمُوا الشَّهَادَةَ لِلَّهِ ذَلِكُمْ يُوعَظُ بِهِ مَنْ كَانَ يُؤْمِنُ  
بِاللَّهِ وَالْأَيُّوبُ الْأَخْرَى وَمَنْ يَقُولَ لَهُ يَجْعَلُ لَهُ الْمُخْرَجَ ۝ وَرُونَهُ  
مِنْ حَيْثُ لَا يَحْتَسِبُ وَمَنْ يَوْكُلُ عَلَى اللَّهِ فَهُوَ حَسِيبٌ ۝ إِنَّ اللَّهَ  
بِلَعْ أَمْرِهِ قَدْ جَعَلَ اللَّهُ لِكُلِّ شَيْءٍ قَدْرًا ۝ وَأَتَيْتَ بِسِنَ

مِنَ الْمُحِيطِ مِنْ تَسَابِكِ إِنْ أَرْتَبْتُمْ فَعَدَّتِهِنَّ ثَلَاثَةَ أَشْهُرٍ  
وَأَتَيْتَ لَهُمْ حُسْنَ وَأَوْلَاتُ الْأَحْمَالِ أَجْهَنَّ أَنْ يَصْبَعُنَ حَمَاهُنَّ  
وَمَنْ يَقُولَ اللَّهُ يَجْعَلُ لَهُمْ أَمْرًا ۝ ذَلِكَ أَمْرُ اللَّهِ أَنْزَلَهُ ۝  
إِلَيْكُمْ وَمَنْ يَقُولَ اللَّهُ يَكْفُرُ عَنْهُ سَيْعَاتِهِ وَيُعَظِّمُ لَهُ أَجْرًا ۝

तुम्हारे कहने से वही दूध पिलाएं तो तुम उन्हें उनकी उज्रत दें दो<sup>20</sup>, और आपस मैं अच्छी तरह राय-मश्वरा कर लिया करो<sup>21</sup>, और यदि तुम आपस मैं तनाव रखो तो उसके कहने से कोई और दूध पिलाएगी<sup>22</sup>।

**७** धनी व्यक्ति को अपने धन अनुसार खर्च करना चाहिए<sup>23</sup>, और जिस पर उसकी रोज़ी तंग को गई हो उसे चाहिए कि जो कुछ अल्लाह तआला ने उसे दे रखा है उसी मैं से अपनी शक्ति अनुसार दे<sup>24</sup>, किसी व्यक्ति पर अल्लाह बोझ नहीं डालता मगर

वाजिब होने के बारे में उलमा के बीच इतिफाक है।

**२०** अर्थात् बच्चा जनने के बाद यदि तुम्हारे कहने से तुम्हारे बच्चे को दूध पिलाएं, तो तुम उन्हें उनके दूध पिलाने की उज्रत दो।

**२१** यह फरमान उन पतियों और पत्नियों दोनों के लिए है, जो तलाक के कारण एक दूसरे से अलग हो चुके हैं, अर्थ यह है कि तुम दोनों अपने राय-मश्वरे से तय कर लो, और तुम मैं से हर एक वह चीज़ स्वीकार कर ले जो वेतर हो, और सरालूर बक्रा आयत<sup>20</sup> न० २२३ मैं किया है :

**فَإِنْ أَرَادُ فُضَالًا عَنْ تِرَاضِهِنَّهُمَا وَتَشَوُّفًا جَنَاحَ عَلَيْهِمَا**

**२२** और यदि दूध पिलाने की उज्रत (प्रार्थिमिक) मैं तुम आपस मैं विरोध कर बैंगे, और शौर बच्चे की माँ को वह उज्रत न देना चाहे जो वह चाहती हो, और माँ बिना उस उज्रत के जिसे वह चाहती हो दूध पिलाने पर रायी न हो, तो वह उज्रत पर बैर्ड और दाया रख ले जो उसके बच्चे को दूध पिलाए।

**२३** इसमें धनवानों को यह आदेश है कि उनकी पत्नियों मैं से जो उनके बच्चों को दूध पिलाए।

**२४** अर्थात् जिसकी धन-सम्पत्ति कम हो, और वह परेशानी और तंगी मैं हो तो अल्लाह ने उहें जो जीविका दे रखी है उसी मैं से अपनी शक्ति के अनुसार उन्हें दें, उन पर मात्र उतना ही है जिसकी वह शक्ति रखते हैं।

أَسْكُنُوهُنَّ مِنْ حَيْثُ سَكَنُوكُمْ مِنْ وُجُودِكُمْ وَلَا نَصْرَارُهُنَّ لِنُضْعِفُوا  
عَلَيْهِنَّ وَإِنْ كُنَّ أُولَاتٍ حَمَلْ فَإِنْفَقُوا عَلَيْهِنَّ حَقَّ يَصْعَنَ حَلَاهُنَّ  
فَإِنْ أَرْضَعُنَ لَكُمْ فَتُوَهُنَّ أَبْجُورُهُنَّ وَأَتَمْرُوا بِنَكُمْ بِمَعْرُوفٍ وَإِنْ  
تَعَاسَرُتُمْ فَسَارِضُ لَهُ أُخْرَى ٦ لِيُنْفِقُ دُونَسَعَةٍ مِنْ سَعْيَتُمْ  
وَمَنْ قُدِرَ عَلَيْهِ رِزْقُهُ فَلَا يُنْفِقُ مِمَّا أَنْهَ اللَّهُ أَكْيَفُ اللَّهُ نَفْسًا  
إِلَّا مَا مَأْتَهَا سِيَّجَعْلُ اللَّهُ بَعْدَ عَسْرَيْسَرًا ٧ وَكَانَ مِنْ قَرِيبَةِ  
عَنْ أَمْرِ رَبِّهَا وَرَسُلِهِ فَحَاسِبَتْهَا حِسَابًا سَيِّدِيًّا وَعَذَّبَنَهَا  
عَذَّابَ الْكُفَّارِ ٨ فَذَاقَتْ وَبَالْ أَمْرِهَا وَكَانَ عِقَبَةً أَمْرِهَا خَسْرًا  
عَذَّابَ اللَّهِ لَهُمْ عَذَّابًا سَيِّدِيًّا فَانْقُوَ اللَّهُ يَتَوَلِّ الْأَلْبَى الَّتِينَ أَمْنَوْا  
قَدْ أَنْزَلَ اللَّهُ إِلَيْكُمْ ذِكْرًا ٩ رَسُولًا يَنْتَلِعُ عَلَيْكُمْ كَمَا يَأْتِ اللَّهُ مُبِينَ  
لِيُخْرِجَ الَّذِينَ أَمْنَوْا وَعِمِلُوا الصَّالِحَاتِ مِنَ الظُّلْمَاتِ إِلَى النُّورِ  
وَمَنْ يُؤْمِنُ بِاللَّهِ وَيَعْمَلْ صَلِحًا يُدْخَلُهُ جَنَّتِ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا  
الْأَنْهَرُ وَخَلِيلِهِنَّ فِيهَا أَبْدًا فَدَأْ حَسْنَ اللَّهُ لَهُ رِزْقًا ١٠ اللَّهُ الَّذِي خَلَقَ  
سَبْعَ سَمَوَاتٍ وَمِنَ الْأَرْضِ مَا لَهُنَّ يَنْزَلُ الْأَمْرُ بَيْنَهُنَّ لِتَعْلَمُوا أَنَّ  
الَّهُ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ وَإِنَّ اللَّهَ قَدْ أَحْاطَ بِكُلِّ شَيْءٍ عِلْمًا ١١

उतनी ही जितनी शक्ति<sup>1</sup> उसे दे रखी है<sup>1</sup>, अल्लाह तंगी के बाद  
आसनी भी कर देगा<sup>2</sup>।

**३** और बहुत सी बसियों वालों ने अपने रब के हुक्म का  
और उसके रसुलों की नाकर्मानी की तो हमने उन से भी कड़ा  
हिसाब लिया<sup>3</sup> और उन्हें बहुत ही कठोर अज़ाब दिया।

**४** **५** तो उन्होंने अपने कर्तृत का मज़ा चख लिया<sup>4</sup>, और  
पौराणम स्वरूप (नतीजतन) उनका थाटा ही हवा<sup>5</sup>।

**६** **७** **८** **९** **१०** उनके लिए अल्लाह तआला ने कठोर अज़ाब<sup>6</sup> तैयार  
कर रखा है, तो अल्लाह तआला से डरो है अक़ल्मन्द<sup>7</sup> ईमान<sup>8</sup>  
वाले! अबश्य अल्लाह तआला ने तम्हारी तरफ जिक्र

<sup>1</sup> अर्थात् जितनी जीविका उसे दे रखी है, तो वह फ़कीर व्यक्ति पर उतना खर्च करने का बोझ नहीं डालता जिसकी उसे शक्ति न हो, जैसा कि धनवान् खर्च करते हैं।

**2** अर्थात् तंगी और सख्ती के बाद मालदार बना देगा। अर्थात् बहुत सी बस्तियों  
वालों ने अल्लाह और उसके रसूल की ना-फरमानी की और मुंह फेरा।

**3** अर्थात् अल्लाह ने उन कामों का जो उहाँने विए कठोर हिसाब लिया, और  
उन्हें देखा तो उन्हें उन कामों का जो उहाँने विए कठोर हिसाब लिया, और

आखिरत में उन्हें कठोर अज्ञाब में डाला, और संसार में उन्हें, भूक, अकाल, संदोचार किया, और उन्हें धंसाया और उनके चेहरों को बदल दिया।

**४** अर्थात् उस भारा अजाव का मज़ा जो उनके कुक्क के कागण है।  
**५** अर्थात् परिणाम यह निकला कि वे संसार में हलाक और बर्बाद कर दिए गए, और आखिरत में कठोर अजाव से दोचार होंगे, तो वे अपने अपनी आपी मात्रा के लिए आवश्यक ताकत के दोषों में डैटे।

धन, अपना सत्तान आर अपना जान क अन्दर धाट म रह।  
६ अर्थात् चरक का अज्ञान।

७ हे तीक-ताक अकल रखने वालो! इससे मगद नहीं  के उम्मती हैं।

**अर्थात् जिन्होंने अल्लाह के सामने अपने सर झक्का रखे हैं, और जो**

मुहम्मद ﷺ के फर्मावंदीर हैं, तो तुम अपने ईमान में सच्चे बनो, और अपने से पहले की उम्मतों की तरह न हो जाओ, जो अवज्ञाकारी (बाही) होगए, तो

उत्तार दिया है।

**११** और रसूल जो तम्हें अल्लाह के स्पष्ट अदेशों को पढ़कर सुनाता है<sup>१०</sup>, ताकि उन लोगों के जो ईमान लाए और नेक कर्म किएं अचेरों से गैरशीनी की ओर ले आए<sup>११</sup>, और जो व्यक्ति अल्लाह पर ईमान लाए और नेक कर्म करे अल्लाह उसे ऐसी जनतों में प्रवेश देगा जिसके नीचे नहरें बह रही हैं, जिनमें यह हमेशा-हमेशा रहेंगे। अवश्य अल्लाह ने उसे बैठतरीन रोजी दे रखवी है।

**१२** अल्लाह वह है जिसने सात आकाश बनाए, और उसी के बराबर धरती<sup>१२</sup> भी, उसका हुक्म उनके बीच उत्तरता है<sup>१३</sup>, ताकि तुम जान लो कि अल्लाह हर चीज़ पर शक्तिमान है, और अल्लाह तआला ने हर चीज़ को अपने इस्म के इहते में धेर रखा है।

सरत तहरीम - 66

श्रृंग करता हूं अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहबून बहुत रहम करने वाला है।

**①** हे नबाह! जिस चीज़ को अल्लाह ने आप के लिए हलात कर दिया है उसे आप क्यों हराम करते हैं? क्या आप अपनी पत्नियों की खुशी प्राप्त करना चाहते हैं, और अल्लाह माफ़ करने वाला है, बड़ा दयालू है।

२ हे नवी! जिस चीज़ को अल्लाह ने आप के लिए हळाल कर दिया है उसे आप क्यों ह्राम करते हैं? क्या आप

उनसे कठोर हिसाब लिया गया, और अजाब से दोचार हुए।

९ जिक्र से मुग्रद कुरआन अजीम है, और एक कौल यह है कि यहाँ जिक्र से मुग्रद स्वयं अल्लाह के रसूल ही है, इसी कारण फ़साया अर्थात् तुम्हारी तरफ कुरआन उतारा, और उस कुरआन के सथ एक रसूल भेजा।

**१०** जो लोगों के लिए उन आदेशों को जिनकी उन्हें ज़रूरत है, खोल-खोल कर बयान करता है।

११ ताकि अल्लाह उन आयतों के द्वारा उन लोगों को जो ईमान लाए हैं और नेक कर्म किया है, ग्राही के अधेरों से निकाल कर हिदायत की गैरपत्री की ओर और कफ के अधेरों से नने ईमान की ओर ले आया।

राशना का आर और आर कुक तक अचारा से नूर दिमान का आर ल आए।  
12 अर्थात् सात आकाशों की तरह उसने सात धरतियां भी पैदा की हैं, एक मर्फ़ूज़ सही हैवीस से इसकी ताहिरी भी है। (सही हैवीरी और मुरिलम में) नवी ~~का~~ का फरमान है : «من ظلم شبرا من الأرض طوقيه من سبع رياض» (जिसने किसी का एक बीता जमीन भी हथयाता तो कियमत के दिन उस जमीन का उतना हिस्सा सातों जमीनों से तैक बनाकर उसके गले में डाल दिया जाया।»  
13 अर्थात् सातों आकाशों से उसका हुक्म सातों धरतियों पर उतरता है तो पानी बरसता है, और पेढ़-पौदे निकलते हैं, और रात और दिन और गर्मी और जाड़ा आता है।

<sup>14</sup> नवी ने जिस चीज़ को अपने ऊपर हराम कर लिया था, उसके बारे में कहा गया है कि : नवी जैनव विन्ते जहश جہش के पास शहद (मधु)

पते थे, तो आइशा और हमसा को जैनव के पास समय से अधिक ठहरना नहीं भाया, और उन दोनों ने आप को इससे रोकने के लिए एक स्क्रीम बनाई कि जब आप उनके पास आएं तो यह दोनों आप से यह कहें कि हमें आप के मुंह से (मांपाफेर) जो कि एक पूर्ण है जिससे बास आती है) की बास आ रही है, तो उन दोनों ने ऐसा ही शिव पर आप ने पर्माण्य—मैं ने तो जैनव के घर में मात्र शब्द प्रयोग है, अब मैं कसम खाता हूँ कि यह नहीं पिछँगा, और आप ने अपने ऊपर इसे हमास कर लिया।

**१५** इस तरह कि आप ने अपने ऊपर वह चीज़ हराम कर ली जिसे अल्लाह ने आप के लिए हलाल किया था।

**१६** इस कोताही को अल्लाह की हलाल की हूँड चीज़ को अपने लिए हराम करके आप से हूँड तहान की हलाल की हूँड चीज़ को अपना पाप था, इसी कारण अल्लाह ने इस पर आप को खबरदार किया।

**१७ नवी** ने जिस चीज़ को अपने ऊपर हराम कर लिया था, उसके बारे में कहा गया है कि : नवी जैनब बिन्ते जहश رض के पास शहद (मध्य)

पीते थे, तो आइशा और हफ्सा <sup>लैटिन</sup> को जैनव के पास समय से अधिक ठहरना नहीं भाया, और उन दोनों ने आप को इससे रोकने के लिए एक

स्कॉप बनाइ थे कि जब आप उनके पास आएं तो यह दोनों आप से यह कहें कि हमें आप के मंह से (माणपीर जो कि एक फूल है जिससे वास आती है) की वास आ रही है, तो उन दोनों ने ऐसा ही किया, जिस पर आप ने फर्माया : मैं ने तो जैनव के घर में मात्र शहद पिया है, अब मैं कसम खाता

अपनी पत्नियों की खुशी प्राप्त करना चाहते हैं<sup>1</sup>, और अल्लाह माफ़ करने वाला<sup>2</sup>, बड़ा दयातुल है।

**२** वेशक अल्लाह ने आप के लिए कस्मै से निकलने का रास्ता नियुक्त कर दिया है<sup>3</sup>, और अल्लाह आप का कार्यक्षम (कारसाज़) है<sup>4</sup>, और वही (पूरी) तरह से जानने वाला<sup>5</sup> हिक्मत वाला है<sup>6</sup>।

**३** और याद करो जब नबी ने अपनी कुछ पत्नियों<sup>7</sup> से एक बात चुपके से कही, तो जब अल्लाह ने इस बात की खबर कर दी<sup>8</sup>, और अल्लाह ने अपने नबी को उस पर अवगत (आगाह) कर दिया<sup>10</sup>, तो नबी ने थोड़ी सी बात तो बता दी, और थोड़ी सी टाल गए<sup>11</sup>, फिर जब नबी ने अपनी इस पत्नि को यह बात बताई<sup>12</sup> तो वह पूछने लगी : इसकी खबर आप को किसने दी? कहा : सब जानने वाले परी खबर रखने वाले अल्लाह ने मुझे यह बतलाया है<sup>13</sup>।

**४** (ऐ नबी की दोनों पत्नियों) यदि तुम दोनों अल्लाह के सामने तौबा करलो, (तो बहुत बहतर है) अवश्य तुम्हारे दिल झुक पड़े हैं<sup>14</sup> और यदि तुम नबा के विरुद्ध एक दशे की मदद करोगी<sup>15</sup>, तो अवश्य उसका कारसाज़ अल्लाह है, और

हाँ कि यह नहीं पिऊँगा, और आप ने अपने ऊपर इसे हराम कर लिया।  
१ इस तरह कि आप ने अपने ऊपर वह चीज़ हराम कर ली जिसे अल्लाह ने आप के लिए हलाल किया था।

२ इस कोताही को जो अल्लाह की हलाल की हूँ चीज़ को अपने लिए हराम करके आप से हूँ है, कहा गया है कि यह एक छोटा पाप था, इसी कारण अल्लाह ने इस पर आप को खबरदार किया।

३ अर्थात् तुम्हारे लिए जायज़ किया कि कफ़ारा अदा करके अपनी कस्मों को हलाल कर लो, जैसा कि सूरहुतु मादिदा आयत न० ८८ में है, और तुम्हें उसका तरीका बता दिया, और किसी के लिए जायज़ नहीं कि जो चीज़ें अल्लाह ने हलाल की हों उन्हें हराम करते, यदि किसी ने ऐसा किया तो यह स्वीकार नहीं होगा, और ऐसा करने वाले पर यह लाज़िम नहीं होगा, क्योंकि हलाल और हराम करने का अधिकार मात्र अल्लाह तआला का है, लेकिं यदि किसी ने ऐसा कर लिया तो कुछ फुकड़ा इस बात की तरफ गए हैं कि यदि उसने अपने ऊपर कोई कपड़ा या पोशाक, या खाने पीने की कोई चीज़, या कोई ऐसी चीज़ हराम की जिसे अल्लाह ने उसके लिए हलाल की है तो यह कसर के दर्जे में होगा, यदि उस काम को जिसे उसने अपने ऊपर हराम कर लिया है फिर करना चाहे तो उसे उन्हें उन्होंने अपने ऊपर हराम कर लिया है कि यह कसर का कफ़ारा देना होगा, और यही दुक्षम सारी चीज़ों का है यहाँ तक कि पत्नी का भी यदि उसे अपने ऊपर हराम कर ले तो, और कुछ लोगों ने कहा है कि यदि उसने पत्नी को हराम कर लिया और हराम करने से उसने तलाक की नियत की हो तो तलाक पड़ जाएगा। वल्लाह आ'लम।

४ अर्थात् तुम्हारा कारसाज़, नासिर और मददगार है।

५ उन चीजों को जिसमें तुम्हारी भलाई और सफलता है।

६ अपनी बातों और अपने कामों में।

७ इससे मुराद हफ्सा<sup>16</sup> हैं हैं जैसा कि पीछे गुज़रा।

८ चुपके से कही जाने वाली बात से मुराद शहद हराम कर लेना है, और कलबों कहते हैं कि : आप<sup>17</sup> ने चुपके चुपके उनसे यह कहा था कि तुम्हारे और आइशा के पिता<sup>18</sup> यह दोनों मेरे बाद मेरी उम्मत में मेरे ख्लोगी होंगे।

९ उसने उस दूसरी का अर्थात् आइशा<sup>19</sup> को भी बता दिया।

१० अल्लाह ने<sup>20</sup> अपने नबी<sup>21</sup> को इसकी खबर दे दी, कि हफ्सा ने आइशा<sup>19</sup> को इसकी खबर कर दी है।

११ अर्थात् आप ने हफ्सा को थोड़ी सी वह बात बता दी जिसकी उहोंने आइशा को खबर दे दी थी, और कुछ बताए बिना टाल गए।

१२ तो जब आप ने हफ्सा को वह बात बताई जो वह बता चुकी थीं।

१३ अर्थात् मुझे उस अल्लाह ने इस की खबर दी है जिस पर कोई चीज़ भी नहीं छुपती।

१४ खिताब आइशा और हफ्सा<sup>16</sup> को है, अर्थात् यदि तुम दोनों तौबा कर लों तो बेहतर है, तुम दोनों के दिल नबी<sup>22</sup> के विरुद्ध एक दूसरे की मदद करने से तौबा करने की ओर झुक ही चुके हैं।

१५ अर्थात् यदि तुम दोनों में उनके विरुद्ध अपनी गैरत में और उनके भेद को बताने में एक दूसरे की मदद की और एक दूसरे का साथ दिया।

سُورَةُ الْبَيْحَقِ الْجَمِيعِ

سُورَةُ الْمُرْسَلُونَ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

يَا أَيُّهُمَا الَّتِي لَمْ يَحْرِمْ مَا حَلَّ اللَّهُ لَكُمْ تَبَغْفِي مَرَضَاتٍ أَزْوَجُكُمْ وَاللَّهُ أَعْلَمُ

عَفْوُرِ رَحِيمٌ ۝ ۱ قَدْ فَرَضَ اللَّهُ لَكُمْ تَحْلِمَةً أَيْمَنَكُمْ وَاللَّهُ مُوْلَكُكُمْ

وَهُوَ الْعَلِيمُ الْحَكِيمُ ۝ ۲ وَإِذْ سَرَّ اللَّهُ إِلَيْهِ بَعْضَ أَرْوَاحِهِ حَدِيثًا

فَلَمَّا بَأَتَاهَا يَهُوَ قَالَ مَنْ أَبَيَكَ هَذَا ۝ ۳ قَالَ نَبَأَنِي الْعَلِيمُ الْخَيْرُ

إِنَّ نُوبَاءَ إِلَى اللَّهِ فَقَدْ صَعَّتْ قُلُوبُكُمَا ۝ ۴ وَإِنْ تَظَهَرَ عَلَيْهِ

فَإِنَّ اللَّهَ هُوَ مَوْلَهُ وَجَبَرِيلُ وَصَلَحُ الْمُؤْمِنِينَ وَالْمُلَكِكَةَ

بَعْدَ ذَلِكَ ظَهِيرٌ ۝ ۵ عَسَى رَبُّهُ ۝ ۶ إِنْ طَلَقْنَكُنَّ أَنْ يُبْدِلَهُ ۝ ۷ أَرْجَأَ

حَيْرًا مِنْكُنَّ مُسْلِمَتْ ۝ ۸ مُؤْمِنَتْ قَبَنِتْ تَبَكَّتْ عَيْدَاتْ سَعَيْتَ

تَبَيْنَتْ وَأَبَكَارَا ۝ ۹ يَا أَيُّهُمَا الَّذِينَ أَمْنَوْفُوا أَنْفُسَكُمْ وَأَهْلِكُمْ

نَارًا وَقُوْدُهَا النَّاسُ وَلَحْجَارَةُ عَلَيْهَا مَلِئَكَةُ غَلَاطُ شَدَّادَ

لَا يَعْصُونَ اللَّهَ مَا أَمْرَهُمْ وَيَفْعُلُونَ مَا يَمْرُونَ ۝ ۱۰ يَا كَيْمَا

الَّذِينَ كَفَرُوا لَا نَعْنَزُ رُوَالِيُومُ إِنَّمَا تَجْزَوُنَ مَا كَدْنَمَ تَعْلَمُونَ ۝ ۱۱

जिब्रिल हैं, और नेक इमानदार<sup>16</sup>, और उसके बाद<sup>17</sup> फरिश्ते भी मदद करने वाले हैं<sup>18</sup>।

**३** यदि वह (पैगम्बर) तुम्हें तलाक देदें तो बहुत जल्द उन्हें उन्होंना रब<sup>19</sup> तुम्हारे बदल तुम से<sup>20</sup> अच्छी पालियाँ इनायत फर्मदिगा, जो इस्लाम वालियाँ<sup>21</sup> इमान वालियाँ<sup>22</sup> अल्लाह के सामने झुकने वालियाँ<sup>23</sup> तौबा करने वालियाँ<sup>24</sup> इबादत करने वालियाँ<sup>25</sup> और कुवारियाँ<sup>1</sup>।

१६ तो अल्लाह उसकी मदद कर्माएगा, इसी तरह जिब्रिल और उसके नेक मोमिन बने, जैसे अबू बक्र और ऊमर भी उसकी मदद करेंगे, ऐसा नहीं होगा कि उसका कोई मदद करने वाला न होगा।

१७ अर्थात् अल्लाह, जिब्रिल और नेक मोमिन बनों की मदद के बाद।

१८ उसके मददगार हैं जो उसकी मदद करेंगे, और एक कौल यह है कि आइशा और ऐस्मा<sup>26</sup> के बीच यह आपसी मदद नबी<sup>27</sup> से नफ़ा के तलब करने के बारे में था।

१९ अल्लाह तआला ने अपने नबी की पत्नीयों को डराने के लिए खबर दी है, कि अल्लाह के पास यह शक्ति है कि यदि वह उन्हें तलाक दें तो वह उन्हें उन से अच्छी पत्नीयाँ इनायत फरमा दे।

२० इस्लाम के फरीजों पर अमल करने वालियाँ।

२१ अल्लाह और उसके फरिश्तों, उसकी किताबों और उसके रसूलों की पुष्टि करने वालियाँ।

२२ अर्थात् अल्लाह और उसके रसूल की फर्माबद्दरी करने वालियाँ।

२३ अर्थात् गुणानों से।

२४ अल्लाह की इबादत करने वालियाँ और उससे गिर्गिड़ाने वालियाँ।

२५ “सैइबा”: शादी शुदा औरत जिसके पति ने उसे तलाक दे दी हो या उसकी मौत होगई हो।

يَأَيُّهَا الَّذِينَ أَمْنَوْا تُوبَةً نَصُوحًا عَنِ رِبِّكُمْ  
أَن يُكَفِّرَ عَنْكُمْ سَيِّئَاتِكُمْ وَيُدْخِلَكُمْ حَتَّىٰ بَحْرِي  
مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَرُ يَوْمَ لَا يُخْرِي اللَّهُ الَّتِي وَالَّذِينَ أَمْنَوْا  
مَعَهُ دُورُهُمْ يَسْعَىٰ بَيْنَ كُلِّ أَيْدِيهِمْ وَبِأَيْمَانِهِمْ يَقُولُونَ رَبَّنَا  
أَتَيْمَ لَنَا نُورًا وَأَغْفِرْنَا إِنَّكَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ  
يَأَيُّهَا النَّّيَّ جَهَدَ الْكُفَّارُ وَالْمُنْفَقِينَ وَأَغْظَطُ عَلَيْهِمْ  
وَمَا وَنَاهُمْ جَهَنَّمَ وَبِئْسَ الْمَصِيرُ ① ضَرَبَ اللَّهُ مَثَلًا  
لِلَّذِينَ كَفَرُوا أَمْرَاتٍ نُوْجَ وَأَمْرَاتٍ لُوطٍ كَانَتَا تَحْتَ  
عَبْدِينَ مِنْ عِبَادِنَا صَلَبِحِينَ فَخَاتَاهُمَا فَلَمْ يُغْنِيَا عَنْهُمَا  
مِنْ أَنَّ اللَّهَ شَيْعًا وَقَبِيلَ أَدْخَلَ الْنَّارَ مَعَ الْمَالِكِينَ ⑩  
وَضَرَبَ اللَّهُ مَثَلًا لِلَّذِينَ أَمْنَوْا أَمْرَاتٍ فَرَعَوْنَ إِذَ  
قَالَتْ رَبِّ ابْنِي لِي عِنْدَكَ بَيْتًا فِي الْجَنَّةِ وَيَخْتَيِي مِنْ فِرْعَوْنَ  
وَعَمَلَهُ وَيَخْتَيِي مِنْ الْقَوْمِ الظَّالِمِينَ ⑪ وَمَرِمَ ابْنَتَ  
عِمَرَنَ الَّتِي أَحْصَنَتْ فَرَجَهَا فَنَفَخْتُ فِيهِ مِنْ رُوْحِنَا  
وَصَدَّقَتْ بِكَلِمَتِ رَبِّهَا وَكُنْتُهُ وَكَانَتْ مِنَ الْقَنِينِ ⑫

﴿١﴾ ऐसे मुमिनों! तुम खुद अपने आप को <sup>२</sup>, और अपने घर वालों का, उस आग से बचाओ <sup>४</sup>, जिसका इन्थन इन्सान और पथर हैं, जिस पर कठोर दिल वाले मञ्जूत फरिश्ते तैनात हैं <sup>५</sup>, जिहे जो हक्म अल्लाह तआला देता है उसकी नाफर्मानी नहीं करते, बल्कि जो हक्म दिया जाए उसका पालन करते हैं <sup>७</sup>।  
 ﴿٢﴾ हे काफ़िरो! आज तुम बहाना मत करो (मञ्जुरी मत बताओ) तुम्हें मात्र तुम्हारे करतूतों का बदला <sup>९</sup> दिया जारहा है।

1 “विक्र” का अर्थ अज्ञाय् अर्थात् कुँवारी है।

2 अर्थात् अपने आप को बचाओ, उन चीजों को करके जिनका अल्लाह ने तुम्हें हुक्म दिया, और उन चीजों से बच कर जिन से उसने तुम्हे रोका है।  
 3 उह्ये अल्लाह की फ़र्मावर्दी का हुम देकर और उसकी नाफर्मानी से रोक कर।  
 4 अर्थात् ऐसी बड़ी आग से कि जिसका इंधन लोग और पथर होंगे, जैसे संसार की आग का इंधन लकड़ी है।

इब्ने जरीर कहते हैं कि इस आयत की रौशनी में हमारे लिए ज़रूरी है कि हम अपने बाल-बच्चों को धर्म, भलाई, और उन स्वभावों की शिक्षा दें, जिसके बिना बारा नहीं।

5 जहन्नम पर दारोगा, और जहन्नम के कामों और जहन्नमियों को अज्ञाव देने वाली चीजों के निगराँ फरिश्ते होंगे, जो जहन्नमियों पर ऐसे बे-रहम और कठोर दिल होंगे, कि वे उनसे रहम चाहेंगे तो कुछ भी दया न करेंगे, वह अजाव के लिए पैदा ही किए गए हैं।

6 अर्थात् वे अजाव के बारे में उसका विरोध नहीं कर सकते।

7 वे उसे देरी किए बिना तुरन्त करते हैं, उसमें थोड़ी भी देर नहीं लगते, और वे उस पर अच्छी तरह शक्ति रखते हैं, इससे उन्हें कोई चीज़ वह चाहे जैसी ही क्यों न हो बेबस नहीं कर सकती।

8 यह बात उनसे उनके जहन्नम में पुरते समय कही जाएगी, ताकि वह कदम निराश होजाएं, और उनकी रही सही सभी आशाएं खत्म होजाएं।

﴿٩﴾ हे ईमान वालो! तुम अल्लाह के सामने सच्ची खालिस तौबा करो, करीब है कि तुम्हारा रब तुम्हारे पाप मिटादे, और तुम्हें ऐसी जन्तों में दाखिल करे जिन के नीचे नहरें वह रही हैं, जिस दिन अल्लाह तआला नबी को और ईमानदारों को जो उनके साथ हैं रुखा (अपमानित) न करेगा, उनका नूर उनके सामने और उनके आगे दौड़ रहा होगा <sup>11</sup>, वह यह दुआएं करते होंगे : हे हमारे रब! हमें कामिल नूर अता फर्मा, और हमें बर्खा दे अवश्य तू हर चीज पर कुदरत रखने वाला है।

﴿١٠﴾ हे नबी! काफिरों और मुनाफिकों से जिहाद करें <sup>12</sup>, और उन पर कड़ाई करें, और उनका ठिकाना जहन्नम है, और वह बहुत बूरी जगह है।

﴿١١﴾ अल्लाह तआला ने काफिरों के लिए नूह की और तूत की पातलों का उदाहरण दिया, यह दोनों औरतें हमारे बन्दों में से दो नेक बन्दों के घर में थीं, फिर उन्हीं उहोंने खायानत की (विश्वासघात किया) <sup>13</sup>, तो वह दोनों नेक बन्दे उनसे अल्लाह के किसी अजाव को न रोक सके <sup>14</sup>, और आदेश हवा (हे औरतों) नरक में जाने वालों के साथ तुम दोनों भी चलो जाओ।

﴿١٢﴾ और अल्लाह तआला ने ईमान वालों के लिए फिर्झान का पत्ति का उदाहरण दिया <sup>16</sup>, जब्कि उसने दुआ की कि हे मेरे रब! मेरे लिए अपने पास जन्तत में घर बना <sup>17</sup>, और मुझे फिर्झान से और उसके कुर्कम से बचा <sup>18</sup>, और मुझे अत्याचारियों से <sup>19</sup> छुटकारा दे।

﴿١٣﴾ और उदाहरण दिया मर्यम बिन्ते इम्रान <sup>20</sup> का जिसने अपनी सतीत (इस्मत) की हिफाजत की <sup>21</sup>, फिर हमने अपनी ओर से उसमें जान फूँक दी <sup>22</sup>, और मर्यम ने अपने रब की बातों <sup>23</sup> और उसकी किताबों की पुष्टि की, और वह इवादत

9 अर्थात् तुम्हारे उन कुकर्मों का जो तुमने संसार में किए हैं।

10 सच्ची खालिस तौबा यह है कि विक्र अपने किए हुए पाप पर दिल से लंजित (शर्मना) हो, और जुबान से माफी चाहे, और अपने अंगों से उसे करने से रुक जाए, और भविष्य में उसके दोबारा न करने का पवका इरादा करे।

11 अर्थात् यह नूर उनके साथ उस समय होगा जब वह पुल-सिरात पार कर रहे होंगे।

12 अर्थात् काफिरों से युद्ध करके, और मुनाफिकों से उन्हें दंड दे कर, योकि वे ऐसे कुर्कम कर रहे थे जिनके कारण उन पर हृद वाजिब हो रहा था, अर्थात् इन दोनों के साथ कठोर रखवा अपनाएं, ताकि उन पर तुम्हारा डर बैठ जाए।

13 अर्थात् उन दोनों ने उनके साथ विश्वासघात किया, कहा गया है नूह <sup>24</sup> की पत्ती उनके बारे में लोगों से कहती कि उन <sup>25</sup> की बात न मानो, यह पागल और मज्नून हैं, और लूट <sup>26</sup> की पत्ती अपनी कौम को घर में आने वाले मेहमानों के बारे में बताती थी।

14 तो नूह <sup>27</sup> और लूट उन दोनों औरतों को अपनी बीवियाँ होने के बावजूद किसी तरह का काई लाभ नहीं पहुँच सके और अल्लाह के बहां प्रतिष्ठित और सम्मानित होने होने के बावजूद उनसे कुछ भी अल्लाह का अजाव टाल नहीं सके।

15 काफिरों और पापियों में नरक में जाने वालों के साथ।

16 अर्थात् कुफ़ का बदवद उहें शादा न पहुँचास केगा, जैसे फिर्झान की पत्ती को शादा न पहुँचास कका, जब्कि वह सब से बड़े काफिर के निकाह में थीं, इसके बावजूद वह अपने इम्रान के कारण उपराहों वाली जन्तों का हक्काब <sup>28</sup> है।

17 और मेरे लिए ऐसा घर बना जो तेरे दया से करीब, तेरे नेक और मुकर्ब बन्दों के दरजों में हो।

18 अर्थात् स्वयं फिर्झान से और उसके कुकर्मों से जिन्हें वह कर रहा है।

19 इससे मुराद किंच्ची वंश के काफिर लोग हैं।

20 अर्थात् मर्यम को अल्लाह ने एक साथ दिनिया और आँखिरत का समान दिया, और सारे जहान की औरतों से उहें बुना, जबकि उनका सबक्ष कुकर्मी वंश से था।

21 बदवकारी से।

22 यह इस तरह से कि जिर्बाल <sup>29</sup> ने उनके कूतूं के गरीबान में फँक मारी तो वह गर्ववती होगी, और उनके पेट में ईसा <sup>30</sup> को परवरीश होने लगी।

23 अर्थात् उन आदिशों का जिन्हें अल्लाह ने अपने बन्दों के लिए निर्णारित किया है, और जिनके साथ फरिश्ता उनसे बात किया, और यह जिर्बाल का उनसे कहना है

करने वालियों में से थी १

## सूरतुल मुल्क - 67

**श्रृङ करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़ा महबून बहुत रहम करने वाला है।**

१ बहुत वर्कत-वाला है वह (अल्लाह) जिसके हाथ में राज्य है और जो प्रत्येक वस्तु पर शक्ति रखने वाला है।<sup>२</sup>

२ जिसने जिन्दगी और मौत को इसलिए पैदा किया है कि तुम्हारी परिक्षा ले कि तुममें से अच्छे कर्म कौन करता है, और वह गालिब (प्रभावशाली) और बख्शने वाला है।<sup>३</sup>

३ जिसने सात आकाश ऊपर-नीचे पैदा किए (तो हे देखने वाल! अल्लाह) रहमान की पैदाइश में कोई बेजाबती (असंगति) न देखोगा, दोबारा पलट कर देख ले कि क्या कोई चीर भी दिखाई दे रही है।<sup>४</sup>

४ फिर दोहरा कर दो-दो बार देख ले, तेरी निगाह तेरी आर हीन (और विवश) हो कर थकी हुई लौट आएगी।<sup>५</sup>

५ और निःसंदेह हम ने संसारीय आकाश को दीपों (तारों) से संवारा और उहें शैतानों के मारने का साधन बना दिया और शैतानों के लिए हमनें (नरक का जलाने वाला) अज़ाब तैयार कर दिया।

६ और अपने और के साथ कफ़ करने वालों के लिए नरक का अज़ाब है, और वह क्या ही बुरा स्थान है।

७ जब उसमें ए डाले जाएंगे तो उसकी बड़े ज़ोर की आवाज़ सुनेंगे और वह उबाल खा रहा होगा।

कि मैं आप के ख का रसूल हूँ, और इसी तरह उम्मे इसके फैला होने और उनके मुकर्ख रसूल बनाए जाने की खुश-खबरी देना। (विधेय सुरुतु जले इमान ४२-४८)

१ अर्थात् वह अपने रब की फर्मावारी और इबादत करने वाले लोगों में से थी, और उनका धराना नेकी और इत्ताजत का धराना था।

२ तबारक का अर्थ है : बहुत अधिक खूर और वर्कत वाला। और बादशाहत का अर्थ संसार और आखिरत में आकाश और धरती की बादशाहत है।

३ मौत : शरीर से रूह का सम्पर्क ख़त्म होजाने का नाम मौत है, और शरीर से स्फ़्र का सम्पर्क वाकी रहने का नाम : जीवन है। तो जीवन का अर्थ इस्तमान को पैदा करना और उसमें रूह डालना है।

अर्थात् तुम पर अपनी शरीरत का बोझ डाल कर तुम्हें आज्ञाए, फिर तुम्हें उसका बदला दे, और आज़माइश का उद्देश्य तेज़ लोगों की नेकी और पैरवी करने वालों की पैरवी के कमाल का स्पष्ट होना है।

४ अर्थात् : एक के नीचे एक, कुछ को कुछ के ऊपर।

अर्थात् : उसमें कोई इश्किलाफ़, ज़ुदाई, टेढ़ापन, और मुख्लाफ़त नहीं पाओगे, बल्कि यह बराबर और सोंध हैं जो अपने पैदा करने वाले पर दलील (प्रमाण) हैं।

अर्थात् : तुम अपनी नजर दोबारा आकाश पर डालो, और फिर से ध्यान देकर देखो क्या तुम्हें उसको बड़ाई और चौड़ाई के बावजूद तुम्हें उसमें कोई फॉटन और दराड़ दिखाई दे रहा है।

५ अर्थात् : बार-बार नजर डालो, जितना अधिक नजर डाल सको, यह बहुत ऊँची चोज़ है दलील कायम करने को नक्ष करने के लिहाज़ से।

अर्थात् : आकाश की पैदाइश में कोई देखने से अपमानित और नीची होकर जौट आएगी। अर्थात् : और वह थकी हारी होगी।

६ अर्थात् : यह तारे आकाशों के लिए शोभा होने के साथ-साथ शैतानों को मारने का माध्यम भी हैं जो उन पर आग बन कर घिरते हैं। कतादा कहते हैं कि अल्लाह तआला ने तीन मक्सद के लिए तारे पैदा किए : आसमानों की शोभा के लिए, शैतानों को मारने के लिए, और जल-थल में रास्ते के निशान बताने के लिए।

अर्थात् : संसार में उहें शिहावे सकिव से जलाने के बाद हमने

आखिरत में उन शैतानों के लिए नरक का अज़ाब तैयार कर रखा है।

७ अर्थात् : वे नरक में फेंके जाएंगे जिस तरह कि लकड़ी आग में फेंकी जाती है। तो वे जहन्म की ऐसी आवाज़ सुनेंगे जिस तरह कि गथा पहली बार अपनी बुरी आवाज़ निकलता है। और यह जहन्म उनके साथ हांडी के खौलने की तरह खौल रही होगी।

شَوَّكُ لِلْمُتَّقِينَ

سُبْحَانَ رَبِّ الْجَنَّاتِ

١ تَبَرَّكَ الَّذِي بَدَأَ الْمُلْكَ وَهُوَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ١ الَّذِي خَلَقَ  
الْمَوْتَ وَالْحَيَاةَ يَبْلُو مَمْكُمْ أَحَسْنَ عَمَلاً وَهُوَ أَعْزِيزُ الْغَفُورُ ٢  
الَّذِي خَلَقَ سَعَ سَمَوَاتٍ طَبَاقًا مَا تَرَىٰ فِي خَلَقِ الرَّحْمَنِ مِنْ  
تَفَوُتٍ فَإِنَّجِعَ الْبَصَرَ هَلْ تَرَىٰ مِنْ قُطُورٍ ٣ هُمْ أَنْجَعُ الْبَصَرَ كَرَبَّنِ  
يَنْقَبِلُ إِلَيْكَ الْبَصَرُ حَاسِئًا وَهُوَ حَسِيرٌ ٤ وَقَدْ زَيَّنَا السَّمَاءَ  
الدُّنْيَا بِمَصْبِحٍ وَجَعَلْنَاهَا مُجْوَمًا لِلشَّيْطَنِ وَأَعْنَدْنَا لَهُمْ عَذَابَ  
السَّعِيرِ ٥ وَلِلَّذِينَ كَفَرُوا بِرَبِّهِمْ عَذَابٌ جَهَنَّمُ وَيَسِّرْ مَصْبِرُ  
إِذَا الْقَوْافِيَ سَعَوْلَهَا شَهِيقًا وَهُوَ نَقْوَرٌ ٦ تَكَادْ تَمِيزُ  
مِنَ الْغَيْطِ كَمَا أَنَّقَ فِي هَا فَوْجٌ سَلَمَهُمْ حَرَنَّهَا لَهُ يَكُونُ دَنَّيْرٌ ٧  
قَالَ الْوَالِيٌّ قَدْ جَاءَنَا نَذِيرٌ فَكَذَبَنَا وَقُلْنَا مَا نَزَّلَ اللَّهُ مِنْ شَيْءٍ إِنْ أَنْتُمْ  
إِلَّا فِي ضَلَالٍ كَيْرٌ ٨ وَقَالُوا لَوْكَاسْتَمْ أَوْعَقْلَ مَاكَافِنَ أَحَسْبَنَ  
السَّعِيرِ ٩ فَاعْتَرُو فَوْأِدَنِهِمْ فَسُحْقًا لِأَصْحَبِ السَّعِيرِ  
إِنَّ الَّذِينَ يَخْشُونَ رَبَّهُمْ بِالْغَيْبِ لَهُمْ مَعْرِفَةٌ وَجَرِيْرٌ ١٠

८ करीब है कि (अभी) क्रोध के मारे फट पड़े, जब कभी उसमें कोई गिरोह डाला जाएगा उससे नरक के दारोगा पूछेंगे कि क्या तुम्हारे पास कोई डराने वाला नहीं आया था?<sup>8</sup>

९ वे जवाब देंगे कि बै-शक आया तो था, परन्तु हम ने उस झुल्लाया और कहा कि अल्लाह (तआला) ने कुछ भी नहीं उतारा, तम भयंकर गुम्राही में ही हो।<sup>9</sup>

१० और कहेंगे कि यदि हम सुनते होते या समझते होते तो जहन्मियों (नरकवासियों) में (साम्लित) न होते।<sup>10</sup>

८ अर्थात् : जहन्म काफियों पर अपने कठोर गुस्सा के कारण करीब है कि वह फट कर एक दूसरे से अलग-अलग होजाए।

तोगों का एक गिरोह। यह बारोगे फ़रिश्तों में से होंगे, जो उनसे डांट के तौर पर पूछेंगे।

संसार में। जो तुम्हें इस दिन से डराता।

९ अल्लाह के पास से जो हमारा रख है, डराने वाला रसूल आया था, जिसने हमें डराया, और इस दिन के बारे में जानकारी दी।

तो हमने उस डराने वाले को नकार दिया। और हमने कहा अल्लाह ने तुम्हारी जुबानों पर गैब की बातें, अखिरत की खबरें और शरीरत को कोई ऐसी चोज़ नहीं उतारी है जो वह हमसे चाहता है। हम ने उन रसूलों को कहा कि तुम इन बातों को बताने में ज्ञूठे और सत्य से बहुत दूर हो।

१० अर्थात् : यदि हम उस व्यक्ति की तरह सुनते होते जो सुन कर याद रखता है, और उस व्यक्ति की तरह समझते होते जो सत्य और असत्य में फक्कर करता है और उनमें ध्यान देता है, तो हम जहन्मियों में से न होते, बल्कि हम उन चीज़ों पर ईमान ले आए होते जो अल्लाह ने उतारी हैं, और हमने रसूल की पैरवी की होती।

وَأَسْرَوْفُولَكُمْ أَوْ أَجْهَرْ وَإِنَّهُ عَلِمُ بِذَاتِ الصُّدُورِ أَلَا<sup>١٢</sup>  
بَعْدَمَ مَنْ خَلَقَ وَهُوَ الظَّلِيفُ الْخَيْرُ<sup>١٣</sup> هُوَ الَّذِي جَعَلَ لَكُمْ  
الْأَرْضَ ذُلُولاً فَامْشُوا فِي مَنَابِكُهَا وَلَكُمْ مِنْ رِزْقٍ وَإِنَّهُ الشُّوَرُ  
أَمَّنْتُمْ مَنْ فِي السَّمَاءِ أَنْ يَخْسِفَ بِكُمُ الْأَرْضَ فَإِذَا هُرَّ<sup>١٤</sup>  
تَمُورُ<sup>١٥</sup> أَمَّنْتُمْ مَنْ فِي السَّمَاءِ أَنْ يُرْسِلَ عَلَيْكُمْ حَاصِبًا  
فَسْتَعْلَمُونَ كَيْفَ نَذِيرٌ<sup>١٦</sup> وَلَقَدْ كَذَّبَ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ فَكَيْفَ  
كَانَ نَذِيرٌ<sup>١٧</sup> أَوْ لَمْ يَرَوْا إِلَى الظَّيْرِ فَوَقَمْ صَفَقَتْ وَقَيْصِنْ مَا  
يُمْسِكُهُنَّ لَا الْرَّحْمَنُ إِنَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ بَصِيرٌ<sup>١٨</sup> مَنْ هَذَا الَّذِي  
هُوَ جُنُدُ لَكُمْ يَصْرُكُ مِنْ دُونِ الْرَّحْمَنِ إِنَّ الْكُفَّارُ إِلَّا فِي غُرُورٍ<sup>١٩</sup>  
أَمَّنْ هَذَا الَّذِي يَرْزُقُهُنَّ أَمْسَكَ رِزْقَهُ بِلَجَّوْفِ عُثُرٍ<sup>٢٠</sup>  
وَنَفُورٍ<sup>٢١</sup> أَفَنْ يَمْتَشِي مُبْكَأْعَلَى وَجْهِهِ أَهْدَى مِنْ يَمْتَشِي سَوَيَا  
عَلَى صَرَاطٍ مُسْتَقِيمٍ<sup>٢٢</sup> قُلْ هُوَ الَّذِي أَنْشَأَهُمْ وَجَعَلَ لَكُمُ الْسَّمَعَ  
وَالْأَبْصَرَ وَالْأَفْئِدَةَ قِيلَّا مَا تَشْكُرُونَ<sup>٢٣</sup> قُلْ هُوَ الَّذِي زَرَأْتُمْ  
فِي الْأَرْضِ وَإِلَيْهِ تَحْشُرُونَ<sup>٢٤</sup> وَيَقُولُونَ مَنْ هَذَا الْوَعْدُ إِنْ كُنْتُمْ  
صَدِقِينَ<sup>٢٥</sup> قُلْ إِنَّمَا الْعِلْمُ عِنْدَ اللَّهِ وَإِنَّمَا أَنْذِيرُ مُمْلِئِينَ<sup>٢٦</sup>

11) तो उन्होंने अपने अपराध को स्वीकार लिया, अब ए नक़्वासी हट जाएं (दूर हो)।<sup>1</sup>

12) बेशक जो लोग अपने रब से बिना देखे ही डरते रहते हैं, उनके लिए बर्खिश्वाश है और बड़ा सवाब है।<sup>2</sup>

13) और तुम अपनी बातों को चुपके से कहो या ऊँची आवाज़ में, वह तो सीनों में (छिपी हुई) बातों को भी अच्छ लाह जानता है।<sup>3</sup>

14) क्या वही न जाने जिसने पैदा किया फिर वह बारीक-बीन (सूक्ष्मदर्शी) और जानने वाला भी हो।<sup>4</sup>

1) कुफ़ करने और नवियों के झुल्लाने के गुनाहों को स्वीकार कर लिया जिसके कारण वे जहन्नम के अजाब के हक्कदार हुए।

तो उनके लिए अल्लाह और उसकी रहमत से दूरी हो, और जब उन्होंने

अपने गुनाहों को स्वीकार लिया तो अल्लाह तज़्अला ने उन पर अजाब लगिया

कर दिया; क्योंकि इस स्वीकृति के कारण उन पर दरील कायम हो गई, और

उनके लिए अब कोई बदाना न बचा।

2) सारी बातों को अल्लाह तज़्अला जानता है, उस से कोई चीज़ छुपी नहीं रहती, वह तो दिलों के भेद का जानने वाला है।

3) क्या जिस हस्ती ने उसे पैदा किया, और उसे तुग्रुद (अस्तित्व) में लाया वही उसके भेद और दिलों में छुपी हुई बात नहीं जानेगा? जबकि उसने उसे अपने हाथ से पैदा किया, और जो किसी चीज़ का बनाने वाला हो, वह उसके बारे में अधिक जानता है।

4) अर्थात् उसका ज्ञान इतना लोटीक है कि वह दिलों में उठने वाली बातों को भी जानता है।

और वह खबर-दार है उन बातों से जो तुम छुपते और दिल में रखते हो, उससे कोई भेद में रहने वाली चीज़ भेद में नहीं रह सकती।

15) वह वही हस्ती है जिसने तुम्हारे लिए धरती को अधीन (और पस्त) बनाया ताकि तुम उसके रास्तों पर चलते-फिरते रहो और उसकी दी हुई रोजी को खाओ पिओ, उसी की ओर (तुम्हें) जीकर उठ खड़ा होना है।<sup>5</sup>

16) क्या तुम इस बात से बे-ब्लौफ (निर्भय) हो गए हो कि आकाशों वाला तुम्हें धरती में धंसा दे और अचानक धरती कपकपा उठे।<sup>6</sup>

17) या क्या तुम इस बात से निडर हो गए हो कि आकाशों वाला तुम पर पथर बरसा दे? फिर तो तुम्हें जानकारी हो ही जाएगी कि मेरा डराना कैसा था?<sup>7</sup>

18) और उनसे पहले के लोगों ने भी झुठलाया था, (तो देखो) उन पर मेरा अजाब कैसा कुछ हुआ?<sup>8</sup>

19) क्या यह अपने ऊपर कभी पंख खोले हुए और (कभी-कभी) समेरे हुए (उड़ने वाले) पंक्षियों को नहीं देखते, उन्हें (अल्लाह) रहमान ही (हवा और फिज़ा में) थाम हुए हैं। नि-सदिह प्रत्येक वस्तु उसकी निगाह में है।<sup>9</sup>

20) अल्लाह के सिवाय तुम्हारी कौन सी सेना है जो तुम्हारी सहायता कर सके काफिर तो सरासर थोखे ही में हैं।<sup>10</sup>

21) यदि अल्लाह (तज़्अला) अपनी रोज़ी रोक ले, तो (बताओ) कौन है, जो फिर तुम्हारी जिविका चलाएगा? बल्कि (काफिर) तो उद्घट्टता एवं विमुख होने पर अड़ गए हैं।<sup>11</sup>

22) अच्छा वह व्यक्ति अधिक हिदायत (मार्गदर्शन) पर है जो

5) समतल और नर्म बनाया, ताकि तुम उस पर आबाद हो सको, और उस पर चल सको, इतना कठोर नहीं बनाया कि तुम्हारा उस पर रहना और चलना फिरना कठिन होजाए।

अर्थात् उसके रास्तों और किनारों में चलो फिरो।

जो उसने तुम्हें दी हैं, और तुम्हारे लिए धरती में पैदा की हैं।

अल्लाह तज़्अला अस्त वास्तवी की सत्तान पर अपने एहसानों को जाता रहा है, कि उसने उठें इस वास्तवी पर शक्ति दी, और उठें ऐसी योग्यताएं दी जिन्हें कार्य में लातक वे इसके पायदें को प्राप्त कर सकते हैं, लेकिन उक्ते लिए यह भी जानना ज़रूरी है कि उठें उसकी तरफ लौट कर जाना है, इसी लिए फरमाया : अपनी कंडों से उठ कर उठें उसी की ओर जाना है, किसी और नहीं।

6) अर्थात् : अल्लाह तज़्अला।

अर्थात् तुम्हें इस में धांसादे, इसके बाद कि उसने तुम्हारे लिए इसे नर्म और समतल बनाया, कि तुम इसके रास्तों और किनारों में चल सको, जैसे कि कारून के साथ उसने किया।

इस नरमी और ठहराव के प्रतिकूल जिस पर अभी वह है हिलने और लरजने लग जाए।

7) जैसे उसने लूट की कौम और अस्त्वातुल फ़ील (हाथियों वाले अब्राहा और उसकी फौज) पर बरसाए, और एक कौल यह है कि इसका अर्थ ऐसी हवा है जिसमें कंकरियां हों।

अर्थात् : जब तुम यह अजाब देख लोगे तो तुम जान लोगे कि मेरा डराना कैसा था, लेकिन इस जानने से तुम्हें कोई लाभ न होगा।

8) अर्थात् : मेरा इन्कार करना उन पर कैसा रहा रहा उस अपमानित करने वाले अजाब के कारण जिसमें भैंसे उठें डाला।

उड़ने के समय फ़ज़ान में अपने पंखों को खोले और सिमटाए हुए।

जो हर चीज़ पर शक्ति रखता है।

अर्थात् : उससे कोई चीज़ छुपी हुई नहीं है।

10) अर्थ यह है कि कोई फौज ऐसी नहीं जो तुम्हें अल्लाह के अजाब से रोक सके, और तुम्हारी सहायता पर शक्ति रख सके, यदि अल्लाह अपनी दया और सहायता द्वारा तुम्हारी मदद न करे।

शैतान की ओर से बड़े थोक में हैं, वह उसके द्वारा उठें थोके देता है।

11) अर्थात् कौन है जो तुम पर वर्षा द्वारा जीविका बरसाए गा, यदि अल्लाह वर्षा को तुम से रोक ले।

सरकारी खबर-दार है उन बातों से जो तुम छुपते और दिल में रखते हो, उससे कोई भेद में रहने वाली चीज़ भेद में नहीं रह सकती।

अपने मुख के बल औंधा होकर चले या वह जो सीधा (पैरों के बल) सीधे रास्ते पर चल रहा हो।<sup>1</sup>

**23** कह दीजिए कि वही (अल्लाह) है जिसने तुम्हें पैदा किया और तुम्हारे कान, आँखें और दिल बनाए। तुम बहुत ही कम शुक्र-गुजारी (कृतज्ञता व्यक्त) करते हो।<sup>2</sup>

**24** कह दीजिए कि वही (अल्लाह) है जिसने तुम्हें धरती पर फेला दिया और उसकी ओर तुम इकट्ठे किए जाएंगे।<sup>3</sup>

**25** और (काफिर) पूछते हैं कैं कि वह वायदा कब प्रकट होगा यदि तुम सच्चे हो (तो बताओ)?।

**26** (आप) कह दीजिए इसकी जानकारी तो अल्लाह ही को है मैं तो स्पष्ट रूप से आगाह (सावधान) कर देने वाला हूँ।<sup>4</sup>

**27** जब ए लोग उस (वायदे) को करीब-तर (निकटतम्) पा लेंगे, उस समय इन काफिरों के चेहरे बिगड़ जाएंगे और कह दिया जाएगा कि यही है जिसे तुम माँगा करते थे।<sup>5</sup>

**28** (आप) कह दीजिए! कि ठीक है यदि मुझे और मेरे साथियों को अल्लाह (तात्त्व) नष्ट कर दे या हम पर दया करे, (जो भी हो, यह तो बताओ) कि काफिरों को दर्द-नाक अज्ञाब (कष्टदायी यातना) से कौन बचाएगा?<sup>6</sup>

**29** (आप) कह दीजिए कि वही रहमान है, हम तो उस पर इमान ला चुके और उसी पर हमने भरोसा किया। तुम्हें जल्द ही जानकारी हो जाएगी कि स्पष्ट भटकावे में कौन है?

**30** (आप) कह दीजिए ठीक है, यह तो बताओ कि यदि तुम्हारा (पैरों का) पानी धरती चूस जाए तो कौन है जो तुम्हारे लिए निधरा हुवा पानी लाए?<sup>7</sup>

<sup>1</sup> मुंह के बल औंधा चलने वाले से मुराद काफिर है, जो दुनिया में औंधे मुंह पाप में डूबा रहता है, तो अल्लाह क्रियात के दिन उसे उसके चेहरे के बल ही उठाएगा। सीधा जो अपने आगे देख रहा हो।

<sup>2</sup> बराबर और समतल रास्ते पर जिसमें टेढ़ापन न हो, इससे मुराद मोभिन है, जो दुनिया में अल्लाह के बनाए हुए कानून पर हिदायत और बंसीरत के साथ चलता है, तो अल्लाह उसे अखिरत में सिरत मुस्तक्म पर सीधा उठाएगा, जो उसे सीधा जननत में पहुँचा देगा।

<sup>3</sup> उहें धरती में पैदा किया गया, और उसकी पीठ पर उहें फैला दिया।

<sup>4</sup> अर्थात् कियामत कब कायथ होगी इसकी जानकारी मात्र अल्लाह को है, दूसरा कोई भी इसके बारे में नहीं जानता। मैं तुम्हें इससे डरा रहा हूँ, और तुम्हें कुकुर के परिणाम से डरा रहा हूँ, और तुम्हें केवल चीज़ बता रहा हूँ। जिन्हें अल्लाह ने मुझे हुक्म दिया है, उसने मुझ से यह नहीं कहा है कि मैं तुम्हें यह बताऊँ कि कियामत कब कायथ होगी।

<sup>5</sup> अर्थात् अज्ञाब को करीब देख लेंगे। काले होजायेंगे, उन पर हवाइयाँ उड़ने लगेंगी, और जिल्लत छा जाएंगी।

अर्थात् संसार में मज़ाक के तौर पर तलब कर रहे थे, और जिसकी जल्दी मवा रहे थे।

<sup>6</sup> मौत देकर या कतल करके, जैसाकि तुम मेरे लिए उसकी तमन्ना और चाहत करते हो, और मेरी मुसीबतों और हलाकत के इन्तिज़ार में रहते हो। इमान वालों में से मेरे साथियों को।

कुछ समय के लिए अज्ञाब को रोक करके, तो यदि मान लिया जाए कि हमारे साथ ऐसा हो गया।

यह पूछना उन पर रद्द करने के लिए है, अर्थात् उहें उससे कोई नहीं बचा सकेगा, तो बात बराबर है चाहे अल्लाह अपने रसूल और जो सहाबा उनके साथ हैं हलाक करदे, जैसा कि काफिर चाहते हैं, या उन्हें मोहलत दे दे।

<sup>7</sup> मुझे बताओ यदि मीतों, कुँवों, और नदियों-नहरों का तुम्हारा वह पानी जिसके द्वारा अल्लाह ने तुम पर एहसान किया है, धरती की तह में इस तरह चला जाए कि बिल्कुल उसका बुजूद ही न रहे, या धरती के इतना भीतर चला जाए कि तुम उसे डोले और फैड पाहुंच से निकाल ही न सको। तो कौन इतना अधिक बहता पानी लाएगा जो खत्म न हो, अर्थ यह है कि अल्लाह के सिवाए कोई ऐसा नहीं जो उसे तुम्हारे पास वर्षा और नहर द्वारा ला सके, ताकि तुम उससे लाभ उठा सको।

فَمَّا رَأَوْهُ زُلْفَةَ سِيَّتٍ وُجُوهُ الَّذِينَ كَفَرُوا وَقَيْلَ هَذَا الَّذِي  
كُنْتُ بِهِ تَدْعُونَ ٢٧ قُلْ أَرْءَيْتَ إِنَّ أَهْلَكَنِي اللَّهُ وَمَنْ مَعَهُ  
أَوْ رَحْمَنَ فَمَنْ يُحِيرُ الْكُفَّارِ مِنْ عَذَابِ أَلِيمٍ ٢٨ قُلْ هُوَ  
الَّرَّحْمَنُ إِنَّمَا نَبَاهُ ۖ وَعَلَيْهِ تَوْكِنَنَا فَسَتَعْلَمُونَ مِنْ هُوَ فِي ضَلَالٍ مُّبِينٍ  
قُلْ أَرْءَيْتَ إِنْ أَصْبَحَ مَا قُلْمُكُمْ عَوْرَافًا مِنْ يَأْتِكُمْ بِمَا مَعَمَّيْنَ ٢٩

سُورَةُ الْقَلْمَنْ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

بَتْ وَالْقَلْمَمْ وَمَا يَسْطِرُونَ ١ مَا أَنْتَ بِعِمَّةٍ رِّبِّ الْمَجْمُونِ  
وَإِنَّ لَكَ لَا جَرَأً غَيْرَ مَمْنُونِ ٢ وَإِنَّكَ لَعَلَىٰ حُلْقٍ عَظِيمٍ  
فَسَبِّصُرْ وَبِصِّرُونَ ٣ يَا يَأْتِكُمُ الْمُغْنُونُ ٤ إِنَّ رَبَّكَ هُوَ  
أَعْلَمُ بِمَنْ ضَلَّ عَنْ سَبِيلِهِ وَهُوَ أَعْلَمُ بِالْمُهَمَّدِينَ ٥ فَلَا طُعِّمَ  
الْمُكْذِنِينَ ٦ وَدُوَّا لَوْتَدُهُنْ فِي دِهْنِهِنَ ٧ وَلَا تُطِعِّمَ كُلَّ  
حَلَافِ مَهِينَ ٨ هَذَا زَانِ مَشَاءٌ بَعِيمٌ ٩ مَنَاعَ الْخَيْرِ مُعْتَدِلٌ  
أَشِيهِ ١٠ عُلِّيٌّ بَعْدَ ذَلِكَ زَيْمِ ١١ أَنْ كَانَ ذَا مَالٍ وَبَنِينَ  
إِذَا تُتَلَّ عَلَيْهِ إِنْتَنَاقَ الْأَوَّلِينَ ١٢

## सूरतुल कल्म - 68

श्रू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहबूब बहुत रहम करने वाला है।

**1** नून, कसम (सौगंध) है कलम की ओर उसकी जो कुछ कि वे (फरिश्ते) लिखते हैं।<sup>8</sup>

**2** आप अपने रब के फ़ज्जा (कृपा) से पागल नहीं है।<sup>9</sup>

**3** और निःसंदेह आपके लिए अनन्त बदला है।<sup>10</sup>

**4** और निःसंदेह आप बड़े उम्दः (अति उत्तम) स्वभाव पर हैं।<sup>11</sup>

**5** तो अब आप भी देख लेंगे और यह भी देख लेंगे।

<sup>8</sup> अक्षरों में से एक अक्षर है, जिस तरह से कि सूरतों के आरम्भ में दूसरे अक्षर आए हैं जिन से सूरतों का आरम्भ हुवा है।

अल्लाह तुआने ने कलम की कसम खाई है; क्योंकि स्पष्टता इसी के द्वारा होती है, और कलम आय है, हर उस कलम को शाशित है जिससे लिखा जाए।

अर्थात् तुम्हारी जानों की जिन्हें लाग कलम द्वारा लिखते हैं।

<sup>9</sup> अर्थात् ऐसे मुस्म्मद! अल्लाह ने तुम्हें नुबुवत और आप सरदारी की जो नेमत दी उसके कारण तुम्हारा नुबुवत और यादगल्पन और दीवानी से पवित्र हो।

<sup>10</sup> नुबुवत का बोझ उठाने में जो परेशानियाँ आप ने डोली हैं, और विभिन्न तरह की जो कठिनाइयाँ बरदाश्त की हैं, उस पर आप के लिए असंख्य सवाल हैं।

अर्थात् अत्यधिक सवाल है जो कभी खत्म न होगा, या इस एहसान का बदला लोग चुका ही नहीं सकते।

<sup>11</sup> अर्थात् अप उस अख्लाक पर है, जिसका हुक्म अल्लाह ने आप को कुर्रान में दिया है, सहीह (मुस्लिम) में उम्मुत मेमिनी आइशा <sup>ع</sup> से रिवायत है कि उन से नवी के अख्लाक के बारे में पूछा गया तो उन्होंने कहा : आप के अख्लाक सरपा कुर्रान के नमूना थे।

سَيِّدُهُمْ عَلَى الْخَرْطُومِ ١٦ إِنَّا بَأَوْتَهُمْ كَمَا بَلَوْنَا أَصْحَابَ الْجَحَّةِ إِذَا أَفْسَوْا<sup>١٦</sup>  
لِيَصْرُمُنَاهُمْ مُصْبِحِينَ ١٧ فَطَافَ عَلَيْهَا طَاءِبٌ مِّنْ رَّبِّكَ ١٧  
وَهُوَ نَابِيُّونَ ١٨ فَاصْبَحَتْ كَالصَّرَمِ ١٨ فَنَنَادَهُمْ مُصْبِحِينَ ١٩ أَنَّ<sup>١٨</sup>  
أَغْدُوا عَلَى حَرْثِكُمْ إِنْ كُنْتُمْ صَرَمِينَ ٢٠ فَانْطَلَقُوا وَهُوَ يَنْخَفَنُونَ ٢٠  
إِنَّ لَا يَدْخُلُنَّا الْيَوْمَ عَلَيْكُمْ مُسْكِنٌ ٢٤ وَغَدَوْا عَلَى حَرْدَقِدِينَ ٢٥ فَلَمَّا<sup>٢٠</sup>  
رَأَوْهَا قَالُوا إِنَّا الصَّالُونَ ٢٦ بِلْ مَخْرُومُونَ ٢٧ قَالَ أَوْسَطُهُمُ الْمُأْفَلُ<sup>٢٦</sup>  
لَكُولَوْلَا تَسْتَحِنُونَ ٢٨ قَالُوا سَبْحَنَ رَبِّنَا إِنَّا كُلُّ أَذَلَّمِينَ ٢٨ فَأَقْبَلَ<sup>٢٨</sup>  
بِعْضُهُمْ عَلَى بَعْضٍ تَلَوُمُونَ ٢٩ قَالُوا نُونَلَيْلَانَا إِنَّا كُلُّ أَطْغِيَنَ ٢٩ عَنِ<sup>٢٩</sup>  
رِبِّنَا إِنْ بَيْلَانَا خَيْرًا مِّنْهُمْ إِنَّا إِلَى رِينَارِغُونَ ٣٠ كَذَلِكَ الْعَذَابُ وَلِعَذَابٍ<sup>٢٩</sup>  
الْآخِرَةِ كَبُرُوكُنُوا يَعْلَمُونَ ٣١ إِنَّ الْمُشْنَقِينَ عِنْ دَرَرِهِمْ جَنَّتُ الْأَقِيمِ<sup>٣٠</sup>  
أَفَنَجْعَلُ لِلْمُسْلِمِينَ كَالْمُجْرِمِينَ ٣٥ مَا لِكُمْ كَيْفَ تَحْكُمُونَ ٣٥ أَمْ<sup>٣٠</sup>  
لِكُمْ كَتْبٌ فِيهِ تَدْرُسُونَ ٣٧ إِنَّكُمْ فِيهِ مَا لَمْ يَخْرُونَ ٣٧ أَمْ لَكُمْ أَيْمَنٌ<sup>٣٧</sup>  
عَلَيْنَا بَلْغَةٌ إِلَى يَوْمِ الْقِيَمَةِ إِنَّ لَكُمْ مَا تَحْكُمُونَ ٣٩ سَلَّهُمْ أَيْمَهُمْ<sup>٣٧</sup>  
بِيَدِكُلَّ رَّاعِيٍّ ٤١ أَمْ أَمْ سَرَّاكَلَيْلَانُو شَرَكَلَيْلَانُو إِنْ كَافُوا صَلَدِقَيْنَ<sup>٣٩</sup>  
بِنَمْ يُكَشَّفُ عَنْ سَاقٍ وَيَدِعُونَ إِلَى السُّجُودِ فَلَا يَسْتَطِعُونَ<sup>٤١</sup>

कि तुम में भ्रष्ट कौन है।<sup>1</sup>  
 निःसंदेह तेरा रब अपने रास्ते से भटकने वालों को  
 अच्छी तरह जानता है,<sup>2</sup> और वह रास्ता पाए लोगों को भी  
 भरी-भरी जानता है।  
 तो आप द्युलालने वालों की (वात) स्वीकार न करें।  
 वे तो चाहते हैं कि आप तनिक ढीले हों तो यह भी ढीले  
 पढ़ जाएं।<sup>3</sup>  
 और आप किसी ऐसे व्यक्ति की भी कहना न मानें जो  
 अधिक कर्म स्वाने वाला हो।<sup>4</sup>

<sup>1</sup> अर्थात् ऐसे मुहम्मद बहुत जल्द आप भी देख लेंगे, और यह कफिर भी देख लेंगे कि दोनों गिरोहों में कौन पागल है, और यह कियामत के दिन होंगा, जब हक्क स्पष्ट हो जाएगा, और आँखों पर पड़े परदे उठ जाएंगे, यह उके उस उमामान का खिंचन है कि मुहम्मद  पागल और सोधे सोधे वे चढ़ते हैं  कि यह किया गया है।

<sup>2</sup> कि इसत्व में संखे रास्ते से भटका दुहा किन हैं, स्वयं तुम हो या वह जिस पर तुम संखे रास्ते से भटकने का आगरा लगा रहे हो, अर्थ यह है कि वे स्वयं ही संखे रास्ते से भटके हए हैं, क्योंकि वे ऐसी चीजों का विरोध करते हैं

जिनमें उनके लिए दुनिया और आखिरत दोनों में लाभ है, और ऐसी चीजों को चाहते हैं जिनमें उनके लिए दुनिया और आखिरत दोनों में घाट है। जो ऐसे गद्दे पर हैं जो उन्हें दोनों जड़न की सहित दिलने लाता है।

**3** अर्थ यह है कि कफिर चाहते हैं कि वस उनके साथ जरुर ल्यावहार करो

जब वह हर कुनौन बाहा ह कि पुन उनक ताप नरन व्यवहार करा, तो वे भी तुम्हारे साथ नरम दर्शन करें, और एक खौल यह है कि इसका ताकि तम नंखी ओर झुक सको।

<sup>4</sup> حَلَافٍ: جो अधिक बातिल करमें खाता हो। مَهِينٌ: तुच्छ, हँकीर, अपमानित।

(1) वे-वकार, कमीना (दुष्ट, दुराचारी) और चुगली करने वाला हो।  
(2) भलाई से रोकने वाला, सीमा उल्लंघन करने वाला पापी हो।  
(3) धमंडी फिर साथ ही वे-नसब (कुवंश) हो।  
(4) (उसकी उड्हण्डता) केवल इसलिए है कि वह धनवान और पुत्रों वाला है।  
(5) जब उसके सामने हमारी आयते पढ़ी जाती हैं तो यह कह देता है कि ऐसा पूर्व के लोगों की कथाएँ हैं।  
(6) हम भी उसकी सूँड़ (नाक) पर दाग देंगे।  
(7) वे-शक हमने उनकी उसी प्रकार परीक्षा ली, जिस प्रकार हमने बाग वालों की परीक्षा ली थी। जबकि उन्होंने कसर्म खार्यों कि सवेरे होते ही उस (बाग) के फल तोड़ लेंगे।  
(8) और इंशा-अल्लाह (यदि अल्लाह ने चाहा) न कहा।  
(9) तो उस पर तेरे रख की ओर से एक बला चारों ओर से घूम गयी और वे सो ही रहे थे।  
(10) तो वह (बाग) ऐसा हो गया जैसे कटी हुई खेती।  
(11) अब सवेरे होते ही उन्होंने एक-दूसरे को आवाजें दीं।  
(12) कि यदि तुम्हें फल तोड़ना है तो अपनी खेती पर सवेरे ही चल पड़ो।  
(13) फिर ये सब चपके-चपके बातें करते हुए चले।  
(14) कि आज के दिन कोइ निधन तृष्णारे पास न आपाए।

**5** **ہنزا:** جو لوگوں کا بُراؤ اُنکے سامنے بُرائی سے کرتا ہے۔  
**6** **پیشونتا:** جو لوگوں کی بُرولیخواری (پیشونتا) کرکے، اُنہے لڈاتا  
 اور **7** **بُرائی کی طرف** جاگنا بُدھاتا ہے۔

**عطل**: علخ بड، بھم دا، بور س्व�اواں کا۔ جن جا جاں کہتے ہیں اسکے لئے اس کا امیرتھ: کٹھر اور بورے س्व�اواں کے ہیں۔

इन बुराईयों के साथ-साथ वह **نिश्चय** (कवंश, जिसकी नसब में सन्देह हो, किसी वंश से मिला दिया गया हॉ, हालांकि वह उसमें से न हो) भी है।

7 तुम इसका बात इस कारण से न माना कि वह धना आर सन्तान वाला है,  
और एक कौल यह है कि इससे मुराद डांट फटकार है, इस तरह से कि  
अल्लाह ने धन और संतान के रूप में जो नेमतें दी हैं, उसका बदला वह यह दे

रहा है कि वह अल्लाह, उसके रसूल और उसकी निशानियों का इन्कार कर रहा है।  
**८** अर्थात् हम उसकी नाक पर कालक लगादेंगे, जिसके कारण उसका चेहरा जहन्मम में डाले जाने से पहले काला होजाएगा, और उसकी यह नाक उसके जहन्मी होने की निशानी होगी, फिर हम उस पर बदुनुमाई प्रयोग देंगे ताकि उसपर हटाए नहीं, उसी से वह पहचान लिया जाएगा।  
**९** अर्थात् अल्लाह तभी न नवी के शराप के कारण मक्का के काफिरों को भक्त और काल में ग्रस्त किया।

जिनकी घटना कूरैश में प्रसिद्ध थी, कहा जाता है कि यमन में सन्ना शहर से ६ मील की दूरी पर एक व्यक्ति का बागीचा था, वह उसमें से अल्लाह का हक अदा करता था, जब वह मर गया और फुलवारी उसके सतना के कब्जे में आगई तो उन लोगों ने उस फुलवारी के लाभ लोगों से रोक लिए, और उसमें जो अल्लाह का हक था उनका साथ कंजुसी की, और कहने लगे कि : धन थोड़ा है, और सतना अधिक है, हमारे लिए इन चीजों के करने की मुनाफ़ा नहीं हो जाएगी यह मारे तथा खो दें, उन लोगों ने गरीबों को उस फुलवारी के लाभ से महसूम कर देने का इच्छा कर लिया तो उनका परिणाम वही हुआ जिसका चर्चा अल्लाह ने अपनी किंतवाम में किया।

अर्थात् जब उन लोगों ने कसम खाया कि वे उसके फल तड़के सवेरे ही लौट लेंगे।

**10** अर्थात् इन-शा-अल्लाह नहीं कह रहे थे, और एक कौल यह है कि उसमें से

ग्रावाका के लिए उस मात्रा को अलग नहीं किया जिसे उनका बाप उन्हें देता था।  
11 अर्थात् अल्लाह की ओर से एक आग उस पर धूम गई जिसने उसे जलाकर राख कर दिया।

12 ऐसे बाग की तरह जिसके फल तोड़ लिए गए हों, और उसमें उसके फलों में से कुछ भी बाकी न रहा है।

**१३** अर्थात् एक-दूसरे से कहने लगे कि तड़के सवेरे ही निकल पड़ो, और

**१४** अर्थात् यह बात एक-दूसरे से चूपके चूपके कह रहे थे, और उनका यही

कहना था कि इस बाग में आज कोई फूल आने न पाए ताकि वह तुम से मांग सके और कह सके कि : तुम लोग भी उसे वह दो जो तम्हारे बाप देते थे।

- 25** और लपके हुए सुबह-सवेरे गए, (समझ रहे थे) कि हम काब पा गए।  
**26** फिर जब उन्होंने बाग देखा तो कहने लगे कि बे-शक हम रास्ता भूल गए हैं।  
**27** नहीं-नहीं, बल्कि हम महरूम (विवित) कर दिए गए।  
**28** उन सबमें जो उत्तम था उसने कहा कि: मैं तुम सबसे कहता न था कि तुम (अल्लाह की) पाकी क्यों नहीं बयान करते?  
**29** (तो) सब कहने लगे कि हमारा रब पवित्र है, बे-शक हम ही अत्याचारी थे।  
**30** फिर वे एक-दूसरे की ओर मुख करके बुरा भला कहने लगे।  
**31** कहने लगे हाय अफ़सोस! बे-शक हम उदाहण थे।  
**32** क्या अजब (विवित) है कि हमारा रब हमें इससे उत्तम बदला दे दे, हम तो अब अपने प्रभु से ही आशा रखते हैं।  
**33** इसी प्रकार प्रकोप (अज़ाब) आता है, और आखिरत (परलोक) का अजाब बहुत बड़ा है। काश! उन्हें बुद्धि होती।  
**34** बे-शक परहेजगार (सदाचारियों) के लिए उनके रब के पास उपहारों वाले स्वर्ग (जन्नत) हैं।  
**35** क्या हम मुसलमानों को पापियों के बराबर कर देंगे? 7  
**36** तुम्हें क्या हो गया है, कैसे निर्णय कर रहे हो? 8  
**37** क्या तुम्हारे पास कोई किताब है जिस में तुम पढ़ते हो? 9  
**38** कि उसमें तुम्हारी मनमानी बातें हों। 10  
**39** या हमसे तुमने कछु ऐसी कस्में ली हैं जो कियामत (प्रलय के दिन) तक बाकी रहें कि तुम्हारे लिए वह सब है, जो तुम अपनी ओर से मुकर्रर (निर्धारित) कर लो? 11

خَشْعَةَ أَنْصَرُهُ تَرَهُقُهُمْ ذَلِيلٌ وَقَدْ كَانُوا يُدعَوْنَ إِلَى السُّجُودِ وَهُمْ سَلَمُونَ  
**41** فَذَرُنِي وَمَنْ يَكْرِبُ بِهَذَا الْحَدِيثِ سَنَسْدِرُهُمْ مِنْ حَيَثُ  
 لَا يَعْمَلُونَ **42** وَأَمْلِئُ لَهُمْ أَنْكَدِي مَيْنَ **43** أَمْ تَسْلَهُمْ أَجْرَافُهُمْ  
 مِنْ مَغْرِمٍ مُمْقَلُونَ **44** أَمْ عِنْدَهُمْ عَيْبٌ فَهُمْ يَكْبُونَ **45** فَاصْبِرْ  
 لِكُوْرِيْلِكَ وَلَا تَكُنْ كَصَاحِبِ الْمَوْتِ إِذْ نَادَى وَهُوَ مَكْطُومٌ **46** لَوْلَا  
 أَنْ تَدَرِكُهُ تَعْمَمَهُ مِنْ رَبِّهِ لَيْذَ بِالْعَرَاءِ وَهُوَ مَدْمُومٌ **47** فَاجْنَبْهُ رَبُّهُ  
 فَجَعَلَهُ مِنَ الصَّالِحِينَ **48** وَإِنْ يَكُادُ الَّذِينَ كَفَرُوا يُلْقَوْنَ بِأَصْسَارِهِ  
 لَمَّا سَعَوْا إِلَيْكُوْرِيْلِكَ وَقَوْلُونَ إِلَهَ لَجَنْجُونَ **49** وَمَا هُوَ إِلَّا ذَكْرُ الْعَامِينَ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ  
**1** مَا الْحَاقَةُ **2** وَمَا أَذْرَكَ مَا الْحَاقَةُ **3** كَذَبَتْ شَعُودْ  
 وَعَادِيْلَالْحَاقَةِ **4** فَأَمَّا شَعُودْ فَأَهْلِكَوْ بِالظَّاغِنَيَةِ **5** وَمَا  
 عَادِيْلَالْحَاقَةِ كُوْرِيْلِكَوْ بِرِبِيعِ صَرَصِيرِ عَاتِيَةِ **6** سَحَرَهَا عَلَيْهِمْ  
 سَعْيَ لَيَالِي وَثَمَنِيَّةِ أَيَامِ حُسُومَا فَتَرَى الْقَوْمُ فِيهَا صَرَعَى  
 كَاهْلِهِمْ أَعْجَازُ خَلْقِ خَاوِيَّةِ **7** فَهُلْ تَرَى لَهُمْ مِنْ بَاقِكَةِ

- 40** उनसे पूछो कि उनमें से कौन इस बात का ज़िम्मेदार (और दावेदार) है? 12  
**41** क्या उनके कुछ साझिदार हैं? तो चाहिए कि अपने-अपने साझिदारों को ले आएं यदि ए सच्चे हैं। 13  
**42** जिस दिन पिंडली खोल दी जाएगी और सजदा करने के लिए बुलाए जाएंगे तो (सजदा) न कर सकेंगे। 14  
**43** उनकी आधें नीची होंगी और उन पर अपमान (और ज़िल्लत) छा रही होगी, हालांकि ए सजदे के लिए, (उस समय

- सकता हो जब तक कि वह उस दिन तुम्हारे लिए इसका निर्णय न करदे।  
**12** ऐ मुहम्मद! आप डांट और फटकार के तौर पर इन काफिरों से पूछिए कि इनमें कौन इस बात का ज़िम्मेदार है?  
**13** क्या उनके ब्रह्म अनन्सार अल्लाह के कुछ साझी हैं जो इस बात की शक्ति रखते हों कि वे उन्हें आँखें रसायन में मुसलमानों की तरह करदें?  
**14** जिस दिन अल्लाह अपनी पिंडली खोल देगा जो घटना की कठोरता का प्रमाण होगा। इमाम बख़री इत्याहा ने अबू سईद खुद्री **15** से रिवायत की है उन्होंने कहा कि: मैं ने अल्लाह के रसूल ﷺ को फर्माते हुए सुना कि: “हमारा रब पिंडली खोलेगा (जिस तरह कि उसकी शान के लायक है) तो हर मोमिन मर्द और औरत उसके समाने सज्जे में गिर जाएंगे, परन्तु वे लोग बाकी रहेंगे जो दिखलावे के लिए सज्जे किया करते थे, वे सज्जा करना चाहेंगे लेकिन उनकी रीढ़ की हड्डी तख्ते की तरह एक होजाएंगी, जिसके कारण उनके लिए झुकना सम्भव न हो सकेगा।  
 अर्थात् सारी सुष्टि अल्लाह का सज्जा करेंगी, काफिर और मुनाफिक भी सज्जा करना चाहेंगे लेकिन उनकी रीढ़ की हड्डी सख्त होजाएंगी और सज्जे के लिए झुक न सकेंगी; क्योंकि वे संसार में ईमान नहीं लाए थे, और न ही अल्लाह का सज्जा किया था।

भी) बुलाए जाते थे जब भले-चंगे थे।<sup>1</sup>

**44** तो मुझे और इस बात को झूठलाने वाले को छोड़ दें, हम उन्हें इस प्रकार धीरे धीरे खींचते कि उन्हें जानकारी भी न होगी।<sup>2</sup>

**45** और मैं उन्हें ढील दूँगा बै-शक मेरी तद्दीर (योजना) बड़ी मङ्गूँत है।<sup>3</sup>

**46** क्या तु उनसे कोई बदला चाहता है, जिसके भार से ए वर्दे जाते हों?<sup>4</sup>

**47** या क्या उनके पास गैब का इल्म (परोक्ष का ज्ञान) है जिसे वे लिखते हों?<sup>5</sup>

**48** तो तू अपने रब के आदेश का सब्र (धैर्य) से (इन्तज़ार कर) और मछली वाले की तरह न हो जा, जबकि उसने दुःख की अवस्था में पुकारा।<sup>6</sup>

**49** यदि उसे उसके रब की नेमत (कृपा) न पालेती तो बै-शक वह बुरी अवस्था में चट्टल मैदान (ऊसर धरती) पर डाल दिया जाता।<sup>7</sup>

**50** तो उसे उसके रब ने फिर नवाज़ा (निर्वाचित किया) और उसको नेक लोगों में कर दिया।<sup>8</sup>

**51** और करीब है कि (यह) काफिर अपनी तेज़ निगाहों (तीव्र

दृष्टि) से आपको फिसला दें, जब कभी कुरआन सुनते हैं, और कह देते हैं कि यह तो निश्चित रूप से दीवाना है।<sup>9</sup>

**52** और वास्तव में यह (कुरआन) तो पूरी जगत वालों के लिए सरासर शिक्षा ही है।

## सूरतुल हाक्कः - 69

ज़ल करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहबून बहुत रहम करने वाला है।<sup>10</sup>

साबित (सिद्ध) होने वाली।<sup>11</sup>

क्या है साबित (सिद्ध) होने वाली?

और तुझे क्या पता है कि वह साबित होने वाली क्या है? उस खड़का देने वाली को समूदियों और आदियों ने छाटलाया था।<sup>12</sup>

(जिसके परिणाम स्वरूप) समूद तो बहुत ही भयंकर (और ऊँची) आवाज़ से नष्ट कर दिए गए।<sup>13</sup>

और आद अन्यन्त तीव्रगति की पाले वाली (तेज़ों तुन्द) आधी से नष्ट कर दिए गए।<sup>14</sup>

जिसे उन पर लगाता सात रात और आठ दिन तक (अल्लाह ने) लगाए रखा तो तुम देखते कि ए लोग धरती पर इस प्रकार पछाड़े गए हैं जैसे खजुर के खोखले तर्जे हों।<sup>15</sup>

तो क्या उनमें से कोई भी तझे बाकी दिखाई दे रहा है?<sup>16</sup>

फिर औन और उससे पूर्व के लोग और जिनकी बस्तियाँ उल्ट दी गयीं, उन्होंने भी त्रिट्याँ (गलतियाँ) की।<sup>17</sup>

और अपने रब के रसल (सदेष्टा) की नाफर्मानी की, (अन्ततः) अल्लाह ने उन्हें (भी) कठोर पकड़ में ले लिया।<sup>18</sup>

जब पानी में बाढ़ आ गयी तो उस समय हमने तुम्हें नाव पर चढ़ा लिया।<sup>19</sup>

ताकि उसे तुम्हारे लिए नसीहत (और यादगार) बना दें

<sup>1</sup> उन पर बहुत अधिक जिल्लत, और रुसवाई छाई हुई होगी।

अर्थात् संसार में। अर्थात् निरोग थे, और सज्जा करने की शक्ति थी, फिर भी यह नहीं करते थे। इत्ताहीम तैमी कहते हैं कि : अज़ान और इकामत छारा बुलाये जाते थे लोकेन इन्कार कर देते थे।

<sup>2</sup> अर्थात् उनका मुआफ़ाना आप में जिसे कर दें, अपने को तबाही में न डालें, मैं अपने ही उनके लिए कामी हूँ। और **بِالْمُلْكِ** से सुराद कुरआन मनीद है।

हम उन्हें धीरे-धीरे अज़ाब की ओर ले चल रहे हैं, यहाँ तक कि हम उसमें उन्हें इस तरह फँसा देंगे कि वे जान ही न सकेंगे कि यह ढील है; क्योंकि वे उसे दया समझ रहे थे और उसका परिणाम नहीं सोच पा रहे थे, और न वे यही समझ पा रहे थे कि ज़ल्द ही वे इसमें फँसे वाले हैं।

<sup>3</sup> अर्थात् उन्हें समय दूँगा कि वे पाप पर पाप करते चले जाएं।

अर्थात् उन्हें इस अज़ाब की पकड़ में लेने की मेरी योजना बहुत मङ्गूँत है, वे इस से बच कर निकल नहीं पाएंगे।

<sup>4</sup> **مَعْنِي** क्या जो आप इन लोगों को इमान की दावत देते हैं उस पर इन से कोई बदला मांगते हैं, जो उस बदले के तावान का बोझ उठाए हूँ गे।

अर्थात् कज़सी के कारण उसका बोझ उठाना उन पर भारी पड़ रहा हो, तो क्या आपने उसे कोई बदला मांगा है जिसके कारण वे इसे स्वीकार करने से मुंह मोड़ रहे हैं।

<sup>5</sup> या उनके पास गैब का इल्म (परोक्ष का ज्ञान) है, जिससे जो दलीलें वे चाहते हों अपने भ्रम अनुसार लिख लेते हों, और उनके द्वारा वे आप से लड़ाई कर रहे हों।

<sup>6</sup> मछली वाले से मुराद यूनुस हैं, अर्थात् आप गुरुसे और उकताहट में उनकी तरह न होंगए।

अल्लाह अपने नवी को तसल्ली दे रहा है, और उन्हें सब्र से काम लेने का आदेश दे रहा है, और यह कि उत्तालेपन से काम न लें, जैसे कि मछली वाले ने ज़ल्दबाजी की, उनका किस्सा सुरुत अम्बियों, यूनुस और साम्फ़त में बीत चका है, और उनकी यह दुआ इन्द्र शब्दों द्वारा थी : **إِنَّمَا أَنْتَ مُحَمَّدٌ إِنَّمَا أَنْتَ سُبْحَنَكَ إِنَّمَا أَنْتَ مُكَفَّرٌ بِأَنَّكَ مُكَفَّرٌ**। अर्थात् इस अवस्था में कि वह दुःख और तक्काम से भर हुए थे, और यह भी सम्भव है कि इस से मुराद उनका मछली के पेट में बढ़ जाना हो।

<sup>7</sup> इससे मुराद उन्हें तौबा की तौफ़ीक की है कि उन्होंने अल्लाह से तौबा की, और अल्लाह ने उनकी तौबा स्वीकार कर ली।

यदि उन्हें तौबा की तौफ़ीक न मिली होती तो वह मछली के पेट से एक चट्टल और खाली मैदान में डाल दिए जाते।

जो पाप उन्होंने किया था उसके कारण वह बुराई और मलामत किए जाने के हक्कदार होते और अल्लाह के दया से धूलकार दिए जाते।

<sup>8</sup> अर्थात् उन्हें नुबुक्त के कारण अपना मुर्खलस, चुना हुवा और प्रिय भक्त बना लिया।

अर्थात् नेकी और पुण्य में कमिल कर दिया। और एक कौल यह है कि उनकी ओर नुबुक्त लौटा थी, और उनकी सिपाहिश स्वयं उनके और उनके वंश के बारे में स्वीकार की, और उन्हें रसूल बनाया और एक लाख या इससे अधिक लोगों की ओर उन्हें भेजा, तो वे सब इमान लाए।

<sup>9</sup> अर्थात् जब आप कुरआन पढ़ते हैं तो दशमनी और शत्रुता के कारण वे आप को तो अपनी तेज़ निगाहों से धूर रहे होते हैं, जैसे कि वे आप को अपनी निगाह से फिसला देंगे, अर्थ यह है कि वे आप को बड़े गुस्से से भरी निगाह से देखते हैं।

<sup>10</sup> **سَمْلَأ** “साबित होने वाली” इससे मुराद कियामत है, इसे “साबित होने वाली” इसलिए कहा गया है कि उस दिन हक्कवर्ते साबित और स्पष्ट होजाएंगे।

<sup>11</sup> **بِالْقَارِئَةِ** “खड़का देने वाली” अर्थात् कियामत को इसे “खड़का देने वाली” इसलिए कहा गया है कि यह अपने डरावेन और भयानकपन से लोगों को खड़का देंगी।

<sup>12</sup> **سُوْدَ** से मुराद से सालिंह **سَلِيمَ** की कीम है, और **سَلِيمَ** की चौख और सीमा पार कर जाए, अर्थात् बहुत ही धयकर चौख।

<sup>13</sup> **عَدْ** **عَدْ** की कीम है, और गृह **صَرْصَر** पाले वाली हवा, सरकश, किसी के वश में न आने वाली बहुत धयकर आँधी।

<sup>14</sup> अर्थात् उन पर सात रात और आठ दिनों तक छोड़े रखा जो लगातार चली जा रही थी, न वह रुक रही थी और न ही उसकी तेज़ी में कोई कमी आ रही थी, और उन्हें कंकरियों से मार रही थी। अर्थात् उन्हें पूरे तौर पर खत्म कर देने वाली और मिटा देने वाली थी। अर्थात् अपने घरों में।

<sup>15</sup> अर्थात् कोई दल जो उनमें से बाकी बचा हो, या कोई व्यक्ति जो उनमें से जीवित रह गया हो तरह दिखाई दिया है? (पूछना इनकार करने के लिए है) अर्थात् उनमें से कोई जीवित नहीं रहा।

<sup>16</sup> काफिर वंशों और उम्मतों में से बुराद लूत **مُكَلِّفَة** के वंश के गाँव हैं। ग़लत कर्म किए अर्थात् शिक्षा और पाप किए।

<sup>17</sup> उनकी ऐसी पकड़ की जो दूरीयों की पकड़ से बढ़कर थी, और वह यह थी कि उन्हें उनके घरों समेत पलट दिया और उन पर पर्खरों की वर्षा की।

<sup>18</sup> अर्थात् पानी ऊँचाई में सीमा पार कर गया। **مُكَلِّفَة** के मुख्यातव नववी ज़माने के लोग हैं, अर्थ यह है कि तम अग्रवे नाव में नहीं थे, परन्तु अपने उन पुर्खों के पैरों में थे जिन्हें हमने नाव में बैठाया था, **مُكَلِّفَة** से मुराद नहू **مُكَلِّفَة** की नाव है, क्योंकि वह उहे बाढ़ के पानी में लेकर चल रही थी।

और (ताकि) याद रखने वाले कान उसे यादु रखें। <sup>1</sup>  
 १३ तो जब सूर (नरसिंहा) में एक फूँक फूँकी जाएगी।  
 १४ और धरती और पर्वत उठा लिए जाएंगे, और एक ही चोट में कण-कण कर दिए जाएंगे। <sup>2</sup>  
 १५ उस दिन हो पड़ने वाली घटना (प्रलय) हो पड़ेगी। <sup>3</sup>  
 १६ और आकाश फट जाएगा तो उस दिन अत्यन्त क्षीण (बोदा) हो जाएगा। <sup>4</sup>  
 १७ और उसके किनारों पर फरिश्ते होंगे और तेरे रब का अश (आसन) उस दिन आठ फरिश्ते अपने ऊपर उठाए हुए होंगे। <sup>5</sup>  
 १८ उस दिन तुम सब सामने प्रस्तुत (पेश) किए जाओगे, तम्हारा कोई भेद छिपा न रहेगा। <sup>6</sup>  
 १९ तो जिसका कर्मपत्र (नाम-आ'माल) उसके दाहिने हाथ में दिया जाएगा तो वह कहने लगेगा कि लो मेरा कर्मपत्र पढ़ो। <sup>7</sup>  
 २० मुझे तो पूरा विश्वास था कि मैं अपना हिसाब पाने वाला हूँ। <sup>8</sup>  
 २१ तो वह एक सुखद (दिल-पसन्द) जीवन में होगा। <sup>9</sup>  
 २२ उच्च (बुलन्द व बाला) जन्नत में। <sup>10</sup>  
 २३ जिसके फल झुके पड़े होंगे।  
 २४ (उससे कहा जाएगा) कि आनन्द से खाओ, पिओ अपने उन कर्मों के बदले जो तुमने पहले किए। <sup>11</sup>  
 २५ परन्तु जिसे उसका नाम-आ'माल (कर्मपत्र) बाएं हाथ में दिया जाएगा, वह तो कहेगा कि हाय मुझे मेरा नाम-आ'माल दिया ही न जाता।  
 २६ और मैं जानता ही नहीं कि हिसाब क्या है। <sup>12</sup>  
 २७ काश! मृत्यु (मेरा) काम ही समाप्त कर देती। <sup>13</sup>

१ अर्थात् नूह ﷺ की कौम की बर्बादी के घटना को तुम्हारे लिए ऐ उम्मते मुहम्मद ﷺ !  
 अर्थात् इब्रत और नसीहत बनादें ताकि तुम उसके द्वारा अल्लाह के शक्तिमान और उसके बदले की कठोरता पर दलील पकड़ सको।  
 याद रखने वाले लोग जो कुछ सुने उसे सुन कर याद रख सकें।  
 २ अर्थात् वे दोनों एक ही चोट में कण-कण (जर्ज-जर्ज) कर दिए जाएंगे, अधिक चोट की जरूरत नहीं पड़ेगी, और एक कौल यह है कि वे दोनों एक क्षण में बिछा दिए जाएंगे, और चटवल मैदान बना दिए जाएंगे।  
 ३ अर्थात् कियामत कायम होजाएंगो।  
 ४ अर्थात् आकाश में जो फरिश्ते हैं उनके उत्तरने के कारण आकाश फट जाएगा, और वह उस दिन कम्ज़ोर और ढीला-ढाला होजाएगा।  
 ५ अर्थात् फरिश्ते आकाश के किनारों पर होंगे, यहाँ तक कि अल्लाह तआला उन्हें धरती पर उत्तरने का आदेश देगा तो वे धरती पर उत्तर जाएंगे, और धरती को और धरती की सारी चीज़ों को धेर लेंगे।  
 अर्थात् आठ निकतस्थ (मुर्कट्वा) फरिश्ते।  
 ६ अर्थात् अल्लाह के सामने हिसाब-किताब के लिए तुम्हारी पेशी होगी।  
 अर्थात् अल्लाह तआला से न तो स्वयं तुम् छुंगे रहेंगे, और न ही तुम्हरे कथन और कर्म छुंगे होंगे, कोई भी चीज़ उससे छुपी नहीं रहेगी।  
 ७ हाँ का अब है : लो।

ऐसा वह प्रसन्न और युश्व होकर कहेगा, उन अकिंदों और सुकर्मों के कारण जिन्हें वह अपने नाम-आ'माल (कर्मों के जिस्टर) में लिखा हुआ देखेगा।  
 ८ मुझे संसार में इस चीज़ की अच्छी तरह जानकारी थी, और मुझे इस पर पूरा विश्वास था कि आखिरत में मेरा हिसाब होगा।  
 ९ जहा मात्र मन-पसंद चीज़ ही होंगी, कोई धृष्णित चीज़ नहीं होगी।  
 १० ऊँचा इसलिए कहा जैते हैं, क्योंकि वह जन्नत आकाश में होगी, या पदों और दर्जों में ऊँची होगी।  
 ११ अर्थात् उसके फल बहुत ही कीरब होंगे हर व्यक्ति आसानी से तोड़ सकेगा, चाहे वह खड़ा हो, या बैठा या लेटा।

अपने उन कर्मों के बदले जो तुम ने संसार में करके प्रलय के दिन के लिए भेजे थे।  
 १२ मुझे जानकारी न होती कि मेरा हिसाब क्या है, क्योंकि पूरा हिसाब उसकी विपरीत होगा।  
 १३ काश मुझे जो मृत्यु आई थी वही मेरी अन्त होती, और मैं उसके बाद जीवित न किया जाता, सदा के लिए मौत और दोबारा न उठाए जाने की आजूँ वह अपने कुकर्मों के कारण और उस अज़ाब को देख कर करेगा जिसमें वह तुरंत ही जाने वाला होगा।  
 १४ अर्थात् जो धन मैंने कमाया था वह मुझ से अल्लाह के अज़ाब को कुछ भी न रोक सका।  
 १५ मुझे जानकारी न होती कि मेरा हिसाब क्या है, क्योंकि पूरा हिसाब उसके विपरीत होगा।  
 १६ काश मुझे जो मृत्यु आई थी वही अन्त होती, और मैं उसके बाद जीवित न किया जाता, सदा के लिए मौत और दोबारा न उठाए जाने की आजूँ वह अपने कुकर्मों के कारण और उस अज़ाब को देख कर करेगा जिसमें वह तुरंत ही जाने वाला होगा।  
 १७ अर्थात् जौँ धन मैंने कमाया था वह मुझ से अल्लाह के अज़ाब को कुछ भी न रोक सका।  
 १८ और मेरी कोई दलील मेरे काम न आसकी, सभी बर्बाद और अकारत गई, और एक कौल यह है कि सुल्तान से मुराद मयादा और मतवा, शसन और सिंधासन है, और उस समय अल्लाह तआला फरमाएगा :

وَجَاءَ قَرْعَوْنَ وَمَنْ قَبْلُهُ، وَالْمُؤْتَفَكُتُ بِالْحَاطِةَ <sup>١</sup> فَعَصَمُوا رَسُولَ رَبِّهِمْ فَأَخْذَهُمْ أَخْدَهُ رَابِيَّةً <sup>٢</sup> إِنَّا لَمَّا طَغَا الْمَاءُ حَلَّتْكُمْ فِي الْجَارِيَةِ <sup>٣</sup> لِنَجْعَلَهَا الْكُنْذِكَرَةَ تَرْجِمَهَا أَذْنَنَّ عَيْمَةً <sup>٤</sup> فَإِذَا نُفِخَ فِي الصُّورِ <sup>٥</sup> نَفَخَهُ وَجْدَهُ <sup>٦</sup> وَجْهَتِ الْأَرْضَ وَلِلْجَابُ فَدَكَادَهُ كَوَافِدَهُ <sup>٧</sup> وَجْدَهُ <sup>٨</sup> فَوَمِيزَ وَقَعَتِ الْوَاقِعَةُ <sup>٩</sup> وَأَشَقَّتِ السَّمَاءَ فَهَيَّ بَوْيَزَدَ وَاهِيَّهُ <sup>١٠</sup> وَالْمَلَكُ عَلَى أَرْجَائِهَا وَيَمْلُعُ عَرْشَ رَبِّكَ فَوْهَمُ يَمِيزَ مَنَيْنَيَهُ <sup>١١</sup> يَوْمِيَنْ تُعَرَضُونَ لَا تَخْفَنَ مِنْكُمْ خَافِفَةً <sup>١٢</sup> فَامَّا مَنْ أُوْقَى <sup>١٣</sup> كَبَنْبَهُ بِمَيْنَهُ، فَيَقُولُ هَافِمْ أَفْرَعَ وَأَكَبَنْبَهُ <sup>١٤</sup> إِنِّي طَنَتْ أَنَّفَ مُلَقَّهُ <sup>١٥</sup> حَسَابَيَهُ <sup>١٦</sup> فَهُوَ فِي عِشَّةِ رَاضِيَهُ <sup>١٧</sup> فِي جَنَّتَهُ عَالِكَهُ <sup>١٨</sup> قُطُوفُهُهَا دَاهِيَهُ <sup>١٩</sup> مُكَلُّو وَأَشَرُوْهُهُنَّيْنَيَهُ بِمَا أَسْفَلْتُمْ فِي الْأَيَّامِ <sup>٢٠</sup> الْخَالِيَهُ <sup>٢١</sup> وَامَّا مَنْ أُوْقَى كَبَنْبَهُ بِشَمَالِهِ، فَيَقُولُ يَلِيَّنَتِي لَئِنْ أُوْتَ كَنَبَنْبَهُ <sup>٢٢</sup> وَلَئِنْ أَدَرَ مَاجَسِيَهُ <sup>٢٣</sup> يَلِيَّتِهَا كَانَتِ الْقَاضِيَهُ <sup>٢٤</sup> مَا أَغْفَنَ عَنِي مَالَيَهُ <sup>٢٥</sup> هَلَكَ عَنِ سُطْنَيَهُ <sup>٢٦</sup> خُذَوْهُفُلُوْهُ <sup>٢٧</sup> صَلُوهُ <sup>٢٨</sup> مُرْفِي سِلِسَلَهُ ذَرْعَهَا سَعَوْنَ ذَرَاعَهَا فَاسِلُوكُهُ <sup>٢٩</sup> إِنَّهُ <sup>٣٠</sup> كَانَ لَا يُؤْمِنُ بِاللهِ الْظَّيِّمِ <sup>٣١</sup> وَلَا يَحْضُ عَلَى طَعَامِ الْمَسْكِينِ <sup>٣٢</sup>

२८ मेरे धन ने भी मुझे कोई लाभ न दिया। <sup>14</sup>  
 २९ और मैं जानता ही नहीं कि हिसाब क्या है। <sup>15</sup>  
 ३० काश! मृत्यु (मेरा) काम ही समाप्त कर देती। <sup>16</sup>  
 ३१ मेरे धन ने भी मुझसे जाता रहा। <sup>17</sup>  
 ३२ मेरा ग़ल्वा भी मुझसे जाता रहा। <sup>18</sup>  
 ३३ (हुक्म होगा) उसे पकड़ लो फिर उसे तौक पहना दो। <sup>19</sup>  
 ३४ फिर उसे जहन्नम में डाल दो। <sup>20</sup>  
 ३५ फिर उसे ऐसी ज़ंजीर में जिसकी नाक सतर हाथ की है, ज़कड़ दो। <sup>21</sup>

जिसमें वह तुरंत ही जाने वाला होगा।

१४ अर्थात् जो धन मैंने कमाया था वह मुझ से अल्लाह के अज़ाब को कुछ भी न रोक सका।  
 १५ मुझे जानकारी न होती कि मेरा हिसाब क्या है, क्योंकि पूरा हिसाब उसके विपरीत होगा।  
 १६ काश मुझे जो मृत्यु आई थी वही अन्त होती, और मैं उसके बाद जीवित न किया जाता, सदा के लिए मौत और दोबारा न उठाए जाने की आजूँ वह अपने कुकर्मों के कारण और उस अज़ाब को देख कर करेगा जिसमें वह तुरंत ही जाने वाला होगा।  
 १७ अर्थात् जौँ धन मैंने कमाया था वह मुझ से अल्लाह के अज़ाब को कुछ भी न रोक सका।  
 १८ और मेरी कोई दलील मेरे काम न आसकी, सभी बर्बाद और अकारत गई, और एक कौल यह है कि सुल्तान से मुराद मयादा और मतवा, शसन और सिंधासन है, और उस समय अल्लाह तआला फरमाएगा :  
 १९ مُرْفِي سِلِسَلَهُ ذَرَاعَهَا فَلَوْهُ فَلَوْهُ فَلَوْهُ فَلَوْهُ <sup>٢٠</sup> مُرْفِي سِلِسَلَهُ ذَرَاعَهَا فَلَوْهُ فَلَوْهُ فَلَوْهُ فَلَوْهُ <sup>٢١</sup> १९ और उसके बाद ज़ंजीर होगा।  
 २० उसके बाद ज़ंजीर होगा।  
 २१ उसके बाद ज़ंजीर होगा।  
 २२ उसके बाद ज़ंजीर होगा।  
 २३ उसके बाद ज़ंजीर होगा।  
 २४ उसके बाद ज़ंजीर होगा।  
 २५ उसके बाद ज़ंजीर होगा।  
 २६ उसके बाद ज़ंजीर होगा।  
 २७ उसके बाद ज़ंजीर होगा।  
 २८ उसके बाद ज़ंजीर होगा।  
 २९ उसके बाद ज़ंजीर होगा।  
 ३० उसके बाद ज़ंजीर होगा।  
 ३१ उसके बाद ज़ंजीर होगा।  
 ३२ उसके बाद ज़ंजीर होगा।  
 ३३ उसके बाद ज़ंजीर होगा।  
 ३४ उसके बाद ज़ंजीर होगा।  
 ३५ उसके बाद ज़ंजीर होगा।  
 ३६ उसके बाद ज़ंजीर होगा।  
 ३७ उसके बाद ज़ंजीर होगा।  
 ३८ उसके बाद ज़ंजीर होगा।  
 ३९ उसके बाद ज़ंजीर होगा।  
 ४० उसके बाद ज़ंजीर होगा।  
 ४१ उसके बाद ज़ंजीर होगा।  
 ४२ उसके बाद ज़ंजीर होगा।  
 ४३ उसके बाद ज़ंजीर होगा।  
 ४४ उसके बाद ज़ंजीर होगा।  
 ४५ उसके बाद ज़ंजीर होगा।  
 ४६ उसके बाद ज़ंजीर होगा।  
 ४७ उसके बाद ज़ंजीर होगा।  
 ४८ उसके बाद ज़ंजीर होगा।  
 ४९ उसके बाद ज़ंजीर होगा।  
 ५० उसके बाद ज़ंजीर होगा।  
 ५१ उसके बाद ज़ंजीर होगा।  
 ५२ उसके बाद ज़ंजीर होगा।  
 ५३ उसके बाद ज़ंजीर होगा।  
 ५४ उसके बाद ज़ंजीर होगा।  
 ५५ उसके बाद ज़ंजीर होगा।  
 ५६ उसके बाद ज़ंजीर होगा।  
 ५७ उसके बाद ज़ंजीर होगा।  
 ५८ उसके बाद ज़ंजीर होगा।  
 ५९ उसके बाद ज़ंजीर होगा।  
 ६० उसके बाद ज़ंजीर होगा।  
 ६१ उसके बाद ज़ंजीर होगा।  
 ६२ उसके बाद ज़ंजीर होगा।  
 ६३ उसके बाद ज़ंजीर होगा।  
 ६४ उसके बाद ज़ंजीर होगा।  
 ६५ उसके बाद ज़ंजीर होगा।  
 ६६ उसके बाद ज़ंजीर होगा।  
 ६७ उसके बाद ज़ंजीर होगा।  
 ६८ उसके बाद ज़ंजीर होगा।  
 ६९ उसके बाद ज़ंजीर होगा।  
 ७० उसके बाद ज़ंजीर होगा।  
 ७१ उसके बाद ज़ंजीर होगा।  
 ७२ उसके बाद ज़ंजीर होगा।  
 ७३ उसके बाद ज़ंजीर होगा।  
 ७४ उसके बाद ज़ंजीर होगा।  
 ७५ उसके बाद ज़ंजीर होगा।  
 ७६ उसके बाद ज़ंजीर होगा।  
 ७७ उसके बाद ज़ंजीर होगा।  
 ७८ उसके बाद ज़ंजीर होगा।  
 ७९ उसके बाद ज़ंजीर होगा।  
 ८० उसके बाद ज़ंजीर होगा।  
 ८१ उसके बाद ज़ंजीर होगा।  
 ८२ उसके बाद ज़ंजीर होगा।  
 ८३ उसके बाद ज़ंजीर होगा।  
 ८४ उसके बाद ज़ंजीर होगा।  
 ८५ उसके बाद ज़ंजीर होगा।  
 ८६ उसके बाद ज़ंजीर होगा।  
 ८७ उसके बाद ज़ंजीर होगा।  
 ८८ उसके बाद ज़ंजीर होगा।  
 ८९ उसके बाद ज़ंजीर होगा।  
 ९० उसके बाद ज़ंजीर होगा।  
 ९१ उसके बाद ज़ंजीर होगा।  
 ९२ उसके बाद ज़ंजीर होगा।  
 ९३ उसके बाद ज़ंजीर होगा।  
 ९४ उसके बाद ज़ंजीर होगा।  
 ९५ उसके बाद ज़ंजीर होगा।  
 ९६ उसके बाद ज़ंजीर होगा।  
 ९७ उसके बाद ज़ंजीर होगा।  
 ९८ उसके बाद ज़ंजीर होगा।  
 ९९ उसके बाद ज़ंजीर होगा।  
 १०० उसके बाद ज़ंजीर होगा।  
 १०१ उसके बाद ज़ंजीर होगा।  
 १०२ उसके बाद ज़ंजीर होगा।  
 १०३ उसके बाद ज़ंजीर होगा।  
 १०४ उसके बाद ज़ंजीर होगा।  
 १०५ उसके बाद ज़ंजीर होगा।  
 १०६ उसके बाद ज़ंजीर होगा।  
 १०७ उसके बाद ज़ंजीर होगा।  
 १०८ उसके बाद ज़ंजीर होगा।  
 १०९ उसके बाद ज़ंजीर होगा।  
 ११० उसके बाद ज़ंजीर होगा।  
 १११ उसके बाद ज़ंजीर होगा।  
 ११२ उसके बाद ज़ंजीर होगा।  
 ११३ उसके बाद ज़ंजीर होगा।  
 ११४ उसके बाद ज़ंजीर होगा।  
 ११५ उसके बाद ज़ंजीर होगा।  
 ११६ उसके बाद ज़ंजीर होगा।  
 ११७ उसके बाद ज़ंजीर होगा।  
 ११८ उसके बाद ज़ंजीर होगा।  
 ११९ उसके बाद ज़ंजीर होगा।  
 १२० उसके बाद ज़ंजीर होगा।  
 १२१ उसके बाद ज़ंजीर होगा।  
 १२२ उसके बाद ज़ंजीर होगा।  
 १२३ उसके बाद ज़ंजीर होगा।  
 १२४ उसके बाद ज़ंजीर होगा।  
 १२५ उसके बाद ज़ंजीर होगा।  
 १२६ उसके बाद ज़ंजीर होगा।  
 १२७ उसके बाद ज़ंजीर होगा।  
 १२८ उसके बाद ज़ंजीर होगा।  
 १२९ उसके बाद ज़ंजीर होगा।  
 १३० उसके बाद ज़ंजीर होगा।  
 १३१ उसके बाद ज़ंजीर होगा।  
 १३२ उसके बाद ज़ंजीर होगा।  
 १३३ उसके बाद ज़ंजीर होगा।  
 १३४ उसके बाद ज़ंजीर होगा।  
 १३५ उसके बाद ज़ंजीर होगा।  
 १३६ उसके बाद ज़ंजीर होगा।  
 १३७ उसके बाद ज़ंजीर होगा।  
 १३८ उसके बाद ज़ंजीर होगा।  
 १३९ उसके बाद ज़ंजीर होगा।  
 १४० उसके बाद ज़ंजीर होगा।  
 १४१ उसके बाद ज़ंजीर होगा।  
 १४२ उसके बाद ज़ंजीर होगा।  
 १४३ उसके बाद ज़ंजीर होगा।  
 १४४ उसके बाद ज़ंजीर होगा।  
 १४५ उसके बाद ज़ंजीर होगा।  
 १४६ उसके बाद ज़ंजीर होगा।  
 १४७ उसके बाद ज़ंजीर होगा।  
 १४८ उसके बाद ज़ंजीर होगा।  
 १४९ उसके बाद ज़ंजीर होगा।  
 १५० उसके बाद ज़ंजीर होगा।  
 १५१ उसके बाद ज़ंजीर होगा।  
 १५२ उसके बाद ज़ंजीर होगा।  
 १५३ उसके बाद ज़ंजीर होगा।  
 १५४ उसके बाद ज़ंजीर होगा।  
 १५५ उसके बाद ज़ंजीर होगा।  
 १५६ उसके बाद ज़ंजीर होगा।  
 १५७ उसके बाद ज़ंजीर होगा।  
 १५८ उसके बाद ज़ंजीर होगा।  
 १५९ उसके बाद ज़ंजीर होगा।  
 १६० उसके बाद ज़ंजीर होगा।  
 १६१ उसके बाद ज़ंजीर होगा।  
 १६२ उसके बाद ज़ंजीर होगा।  
 १६३ उसके बाद ज़ंजीर होगा।  
 १६४ उसके बाद ज़ंजीर होगा।  
 १६५ उसके बाद ज़ंजीर होगा।  
 १६६ उसके बाद ज़ंजीर होगा।  
 १६७ उसके बाद ज़ंजीर होगा।  
 १६८ उसके बाद ज़ंजीर होगा।  
 १६९ उसके बाद ज़ंजीर होगा।  
 १७० उसके बाद ज़ंजीर होगा।  
 १७१ उसके बाद ज़ंजीर होगा।  
 १७२ उसके बाद ज़ंजीर होगा।  
 १७३ उसके बाद ज़ंजीर होगा।  
 १७४ उसके बाद ज़ंजीर होगा।  
 १७५ उसके बाद ज़ंजीर होगा।  
 १७६ उसके बाद ज़ंजीर होगा।  
 १७७ उसके बाद ज़ंजीर होगा।  
 १७८ उसके बाद ज़ंजीर होगा।  
 १७९ उसके बाद ज़ंजीर होगा।  
 १८० उसके बाद ज़ंजीर होगा।  
 १८१ उसके बाद ज़ंजीर होगा।  
 १८२ उसके बाद ज़ंजीर होगा।  
 १८३ उसके बाद ज़ंजीर होगा।  
 १८४ उसके बाद ज़ंजीर होगा।  
 १८५ उसके बाद ज़ंजीर होगा।  
 १८६ उसके बाद ज़ंजीर होगा।  
 १८७ उसके बाद ज़ंजीर होगा।  
 १८८ उसके बाद ज़ंजीर होगा।  
 १८९ उसके बाद ज़ंजीर होगा।  
 १९० उसके बाद ज़ंजीर होगा।  
 १९१ उसके बाद ज़ंजीर होगा।  
 १९२ उसके बाद ज़ंजीर होगा।  
 १९३ उसके बाद ज़ंजीर होगा।  
 १९४ उसके बाद ज़ंजीर होगा।  
 १९५ उसके बाद ज़ंजीर होगा।  
 १९६ उसके बाद ज़ंजीर होगा।  
 १९७ उसके बाद ज़ंजीर होगा।  
 १९८ उसके बाद ज़ंजीर होगा।  
 १९९ उसके बाद ज़ंजीर होगा।  
 २०० उसके बाद ज़ंजीर होगा।  
 २०१ उसके बाद ज़ंजीर होगा।  
 २०२ उसके बाद ज़ंजीर होगा।  
 २०३ उसके बाद ज़ंजीर होगा।  
 २०४ उसके बाद ज़ंजीर होगा।  
 २०५ उसके ब

فَلَيْسَ لَهُمْ لِيَوْمٍ هَنَاءٌ حَمِيمٌ<sup>٢٦</sup> وَلَا طَعَامٌ لِلَّادِينِ غَسَلِينِ<sup>٢٧</sup>  
إِلَّا لَخْطُونَ<sup>٢٨</sup> فَلَا أَقْسُمُ بِمَا تُبَصِّرُونَ<sup>٢٩</sup> وَمَا لَانْتَصِرُونَ<sup>٣٠</sup>  
إِنَّهُ لَقَوْلُ رَسُولٍ كَرِيمٍ<sup>٣١</sup> وَمَا هُوَ بِقَوْلٍ شَاعِرٍ قَلِيلًا مَأْثُونُونَ<sup>٣٢</sup>  
وَلَا يَقُولُ كَاهِنٌ قَلِيلًا مَانِذُكُونَ<sup>٣٣</sup> نَزِيلٌ مِنْ رَبِّ الْعَالَمِينَ<sup>٣٤</sup> وَلَوْ  
نَقُولَ عَلَيْنَا بَعْضُ الْأَقْوَابِ<sup>٣٥</sup> لِأَحْذَانَهُمْ بِالْمَيْنِ<sup>٣٦</sup> ثُمَّ لَقْنَعْنَا  
مِنْهُ الْوَيْنَ<sup>٣٧</sup> فَمَا مِنْكُمْ مِنْ أَحَدٍ عَنْهُ حَاجِزِنَ<sup>٣٨</sup> وَإِنَّهُ لَذَكْرٌ  
لِلْمُنْقَنِينَ<sup>٣٩</sup> وَإِنَّا نَعْلَمُ أَنَّ مِنْكُمْ مُكَذِّبِينَ<sup>٤٠</sup> وَلَهُ لَحْسَةٌ عَلَى  
الْكَافِرِينَ<sup>٤١</sup> وَإِنَّهُ لَحْقُ الْمُيَقِّنِ<sup>٤٢</sup> سَبِيعٌ بِاسْمِ رَبِّكَ الْعَظِيمِ<sup>٤٣</sup>

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

رَبِّ الْجَمِيعِ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

رَبِّ الْجَمِيعِ

سَأَلَ سَائِلٌ بِعَذَابٍ وَاقِعٍ<sup>١</sup> لِلْكَافِرِينَ لَيْسَ لَهُ دَافِعٌ<sup>٢</sup> مَرْتَ  
اللَّهُ ذِي الْمَعَارِجِ<sup>٣</sup> تَعْرُجُ الْمَائِكَةُ وَالرُّوحُ إِلَيْهِ فِي  
يَوْمٍ كَانَ مِقْدَارُهُ مُحَمَّسِينَ الْفَسَقَةُ<sup>٤</sup> فَاصِرٌ صَرَبٌ كَجِيلًا<sup>٥</sup>  
إِنَّهُمْ بِرَوْنَاهُ بَعِيدًا<sup>٦</sup> وَرَبِّهِ فَرِبِّا<sup>٧</sup> يَوْمَ تَكُونُ السَّمَاءُ كَالْمُهْلَلِ<sup>٨</sup>  
وَتَكُونُ الْجَنَّالُ كَالْعَمَنِ<sup>٩</sup> وَلَا يَشْئُلُ حَمِيمٌ حَمِيمًا<sup>١٠</sup>

33 बे-शक यह अल्लाह महान पर ईमान न रखता था।  
34 और निर्धन को खिलाने पर नहीं उभरता था।  
35 तो आज यहाँ उसका न कोई मित्र है,  
36 और न पाप के सिवाय उसका कोई खाना है।  
37 जिसे पापियों के सिवाय कोई नहीं खाएगा।  
38 तो मुझे कसम है उन चीजों की जिन्हें तुम देखते हो।  
39 और उन चीजों कि जिन्हें तुम नहीं देखते हो।  
40 कि बे-शक यह (कुरआन) मुअज़ज़ रसूल (प्रतिष्ठित संस्कृत) का कोल (कथन) है।  
41 यह किसी कवि (शाएर) का कथन नहीं, (अफसोस) तुम बहुत कम विश्वास रखते हो।

चुट्ट में घुसा करके मुँह के रास्ते से निकाल ली जाएगी।

1 अर्थात् प्रलय के दिन आखिरत में उसका कोई करीबी नहीं होगा, जो उसके कुछ भी काम आसके, या उसकी सिफारिश कर सके, इसलिए कि यह ऐसा दिन होगा कि इसमें करीबी अपने करीबी से और मित्र अपने मित्र से भागेगा।

2 उस बद्दूबार (दुर्गंधुक) थोवन को कहते हैं जो शरीर से खून और पीप थोते समय गिरते हैं।

3 इससे मुराद खताकार और पापी हैं जो संसार में कुफ़ और शिर्क किया करते थे।

4 अर्थात् मैं उन सारी चीजों की कसम खा रहा हूँ चाहे वे दिखाई देती हों या न दिखाई देती हों।

5 कौन से मुराद तिलावत है, अर्थात् यह कुरुअन प्रतिष्ठित रसूल की तिलावत है, या रसूल की से मुराद : मुम्भद हैं। या अथ यह है कि यह एक ऐसा कौल है जिसे एक प्रतिष्ठित रसूल तुम्हें पहुँचा रहा है, इस स्तिथि में रसूल की से मुराद जिब्रिल होगा।

6 जैसा कि तुम समझते हो क्योंकि यह कविता नहीं है।

7 और न किसी ज्योतिषी का कथन है, (अफसोस) तुम बहुत कम नसीहत ले रहे हो।

8 (यह तो) सारे जहां के रब का उतारा हुवा है।

9 और यदि यह हम पर कोई भी बात गढ़ लेता।

10 तो अवश्य हम उसका दाहिना हाथ पकड़ लेते।

11 फिर उसके दिल की नस काट देते।

12 फिर तुमसे से कोई भी (मुझे) उससे रोकने वाला न होता।

13 अवश्य यह (कुरआन) परहेजगारों के लिए नसीहत है।

14 और हमें पूरी जानकारी है कि तुम मैं से कुछ उसके झुटलाने वाले हैं।

15 निःसंदेह (यह झुटलाना) काफिरों के लिए पछतावा है।

16 और निःसंदेह यह यकीनो (विश्वसनीय) सत्य है।

17 तो तू अपने अजाब (महिमावान प्रभु) को पाकी बयान कर।

## سُورَةُ الْمُعْجَنَةِ - 70

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़ा भेद्यन बहुत रहम करने वाला है।

1 एक माँग करने वाले ने उस अजाब (प्रकोप) की माँग को जो (स्पष्टतः) होने वाला है।

2 काफिरों पर जिसे कोई हटाने वाली नहीं।

3 उस अल्लाह की ओर से जो सीढ़ियों वाला है।

4 जिसकी ओर फरिश्ते और रुह चढ़ते हैं एक दिन में जिसकी अवधि (मिक्वार) पचास हजार वर्ष की है।

5 तो तू अच्छी तरह से धैर्य रख (सब्र कर)।

6 बे-शक यह उस (अजाब) को दूर समझ रहे हैं।

7 और हम उसे करीब ही देखते हैं।

8 जिस दिन आकाश तेल की तलाष्ट जैसे हो जाएगा।

9 और पर्वत रंगीन ऊन जैसे हो जाएंगे।

10 और कोई मित्र किसी मित्र को न पूछेगा।

11 (हालाँकि) एक-दूसरे को दिखा दिए जाएंगे, पापी उस दिन के अजाब के बदले प्रतिवान (फिद्दे) में अपने बेटों को देना चाहेगा।

12 अपनी पत्नी को और अपने भाई को।

13 और अपने परिवार को जो उसे शरण देता था।

14 और धरती के सभी लोगों को देना चाहेगा, ताकि यह उसे मुक्ति दिला दे।

15 (मगर) कभी भी यह न होगा। बे-शक वह शोले (ज्वाला) वाला (आग) है।

16 जो मुख और सिर की खाल खींच लेने वाली है।

7 जैसा कि तुम समझ रहे हो; क्योंकि कहनत (शक्ती-कर्ती) दूसरी चीज़ है, इसमें और कहनत में कोई चीज़ मेल नहीं खाती है। <sup>प्र०</sup> अर्थ : थोड़ा, (यह दोनों जगहों पर इन्कार के अर्थ में है) अर्थात् : न तो तुम कुरुआन पर ईमान ही रखते हो, और न ही उससे कुछ नसीहत (झुपेश) पकड़ते हो।

8 अर्थात् : प्रतिष्ठित रसूल की जुबान से निकलने वाला यह कलाम (कथन) रख्युआतमन का उतारा हुवा कलाम है।

9 यदि यह रसूल मुम्भद या जिब्रिल जैसा कि ऊपर चर्चा हुवा, स्वयं अपनी ओर से कुछ गढ़ने की प्रयास करते और उसको पकड़ करते।

10 तो हम अपने दाँ धृथ से उसको पकड़ करते।

11 र्दन की वह नस जो दिल से मिलती है, और जिसके कटने से आदमी तुरन्त मर जाता है, यह तसवीर है उसके बुरी तरह हलाक कर दिए जाने की, जैसे राजा लोग ऐसे व्यक्ति के साथ करते हैं जिन से वे क्रीयत हों।

12 तुम मैं से कोई ऐसा नहीं जो हमें उस से रोक सके, या उसको हम से बचा सके, तो भला फिर वह तुम्हारे कारण हम पर झुटला बोलेगा।

13 क्योंकि इससे लाभ उठाने वाले वास्तविक रूप से यहीं लोग हैं।

14 तुम मैं से कुछ लोग कुरुआन को झुटला रहे हैं, हम उन्हें उसकी दंड देकर रहेंगे।

15 यह कुरुआन का झुटलाना कियामत के दिन काफिरों के लिए अफसोस और पछतावा होगा।

16 क्योंकि यह अल्लाह की ओर से है, इसमें कण बराबर भी शंका की गुञ्जाइश नहीं।

**17** वह प्रत्येकउस व्यक्ति को पुकारेगी जो पाए हटता और मरमय मोड़ता है।  
**18** और इकट्ठा करके संभाल रखता है।  
**19** बे-शक इन्सान अद्यन्त कच्चे दिल वाला बनाया गया है।  
**20** जब उसे कप्ट पहुंचता है तो हड्डवड़ा जाता है।  
**21** और जब सुख मिलता है तो कंजूसी करने लगता है।  
**22** मगर वह नमाज़ी।  
**23** जो अपनी नमाज़ पर पाबंदी रखने वाले हैं।  
**24** और जिनके धन में निर्धारित (मुकर्ररः) भाग है।  
**25** माँगनेवालों का भी और प्रश्न करने से बचने वालों का भी।  
**26** और जो न्याय के दिन पर विश्वास रखते हैं।  
**27** और जो अपने रब के अज़ाब से डरते रहते हैं।  
**28** बे-शक उनके रब का अज़ाब निर्भय होने की चीज़ नहीं।  
**29** और जो लोग अपने गुन्तांगों (शरमगाहों) की (हराम से) रक्षा करते हैं।  
**30** हाँ उनकी पत्नियों और लौन्डियों के बारे में जिनके वे मालक हैं, वे निन्दित नहीं।  
**31** अब जो कोई इसके सिवाय (मार्ग) ढूँढेगा तो ऐसे लोग सोमा उल्लंघन करने वाले होंगे।  
**32** और जो अपनी अमानतों का और अपने वचन का ध्यान रखते हैं।  
**33** और जो अपनी गवाहियों पर सीधे (और डटे) रहते हैं।  
**34** और जो अपनी नमाज़ों की सुरक्षा करते हैं।  
**35** यही लोग जन्तनों में आदर (और इज़्ज़त) वाले होंगे।  
**36** तो कफिरों को क्या हो गया है कि वह तेरी ओर दौड़ते आते हैं?  
**37** दाएं और बाएं से गुट के गुट।  
**38** क्या उनमें से प्रत्येक की इच्छा यह है कि वे सख-सुविधा वाले जन्तन में ले जाया जाएगा?  
**39** (ऐसा) कभी भी न होगा, हमने उन्हें उस (वस्तु) से पैदा किया है जिसे वे जानते हैं।  
**40** तो मुझे कसम है पूर्वों और पश्चिमों के रब की, (कि) हम यकीनन् कूद्रत रखने वाले हैं।  
**41** इस पर कि उनके बदले में उनसे अच्छे लोग ले आएं, और हम विवश नहीं हैं।  
**42** तो आप उहें झाङडता खेलता छोड़ दें, यहाँ तक कि ए अपने उस दिन से जा मिलें, जिसका उनसे वादा किया जाता है।  
**43** जिस दिन कब्रों से ए दौड़ते हुए निकलेंगे, जैसेकि वह किसी स्थान की ओर तेज़ी से जा रहे हैं।  
**44** उनकी आँखें झुकी हुर्क होंगी, उन पर अपमान (ज़िल्लत) छा रही होंगी, यह है वह दिन जिसका उनसे वादा किया जाता था।

## सूरतु नूह - 71

भ्रु करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहबून बहुत रहम करने वाला है।  
**1** बे-शक हम ने नूह (نُوح) को उनके समुदाय (कौम) की ओर भेजा कि अपनी कौम को डारा दो (और सचेत कर दो) इससे पहले कि उनके पास कष्टदायी यातना (दर्द-नाक अज़ाब) आजाए।<sup>1</sup>  
**2** (नूह (نُوح) ने) कहा कि हे मेरी कौम के लोगो! मैं तुम्हें स्पष्ट रूप से डराने वाला हूँ।  
**3** कि तुम अल्लाह की इबादत करो और उसी से डरो

<sup>1</sup> पहले इसका चर्चा होचुका है कि नूह (نُوح) सब से पहले रसूल हैं, जिन्हें अल्लाह ने अपना रसूल बनाकर भेजा, और सूरतु-अन्नबूत में इसका भी चर्चा हो चुका है कि वह अपनी कौम में किन्तु अवधि तक रहे। अर्थात हमने उनसे कहा कि तुम अपने समुदाय के व्यक्तियों को डराओ। अर्थात नरक का अज़ाब, या इससे मुरद वह बाढ़ है जो नूह (نُوح) के समुदाय पर आई थी।

بِصَرُّهُمْ بُودَ الْمُجْرُمُ لَوْلَيْقَدَى مِنْ عَذَابٍ يَوْمَئِذٍ بَنِيهِ  
 وَصَجِّبَتِهِ، وَأَخِيهِ **١١** وَفَصَبِّلَتِهِ إِلَيْ تُوْبِيهِ **١٢** وَمَنْ فِي الْأَرْضِ  
 جَمِيعَمَّ يُبَيِّهِ **١٣** كَلَّا إِنَّمَا الطَّنَّ **١٤** نَزَّاعَةً لِلشَّوَّى **١٥** دَعَوْهُ  
 مَنْ أَدْبَرَ وَتَوْلَى **١٦** وَجْهَ قَارَعَ **١٧** إِنَّ إِلَّا إِنْسَانٌ خَلَقَ هَلُوْعًا  
 إِذَا مَسَّهُ الشَّرْجُوْعَا **١٨** وَإِذَا مَسَّهُ الْخَيْرُ مُنْوِعًا **١٩**  
 الْمُصْلَيْنَ **٢٠** الَّذِينَ هُمْ عَلَى صَلَاتِهِمْ دَائِمُونَ **٢١** وَالَّذِينَ فِي  
 أَوْلَاهُمْ حَقَّ مَعْلُومٌ **٢٢** لِلسَّابِلِ وَالْمَحْرُومِ **٢٣** وَالَّذِينَ يُصَدِّقُونَ  
 يَوْمَ الْلَّيْلِ **٢٤** وَالَّذِينَ هُمْ مِنْ عَذَابِ رَبِّهِمْ مُشْفِقُونَ **٢٥** إِنْ عَذَابَ  
 رَبِّهِمْ غَيْرُ مَأْمُونٍ **٢٦** وَالَّذِينَ هُمْ لِفَرْوَحَجَمْ حَفَظُونَ **٢٧** إِلَّا عَلَى  
 أَرْوَاهُمْ أَوْ مَامَلَكَتْ أَيْمَنَهُمْ فَإِنَّهُمْ غَيْرُ مُؤْمِنِينَ **٢٨** فَنَّ ابْنَغَ وَرَأَهَ  
 ذَلِكَ فَأُولَئِكَ هُمُ الْمَعَادُونَ **٢٩** وَالَّذِينَ هُنْ لِمَأْتِيهِمْ وَعَهْدِهِمْ رَعُونَ  
 وَالَّذِينَ هُمْ شَهَادَتِهِمْ فَإِيمَونَ **٣٠** وَالَّذِينَ هُمْ عَلَى صَلَاتِهِمْ يُحَاطُونَ  
 أُولَئِكَ فِي جَنَّتِ مُكَرَّمَوْنَ **٣١** فَإِنَّ الَّذِينَ فَرَأُوا قِلَّكَ مُهَمَّهُونَ  
 عَنِ الْأَيْمَنِ وَعَنِ الشَّمَاءِ عَزِيزٌ **٣٢** أَيْطَعَ كُلُّ أَقْرَبٍ مِنْهُمْ  
 أَنْ يَدْخُلَ جَنَّةَ نَعِيْرٍ **٣٣** كَلَّا إِنَّا حَلَقْنَاهُمْ مَمَّا يَعْلَمُونَ **٣٤**

और मेरा कहना मानो।

**4** तो वह तुम्हारे पाप माफ कर देगा और तुम्हें एक निर्धारित समय तक छोड़ देगा। बे-शक अल्लाह का वायदा जब आ जाता है तो रुक्ता नहीं। काश (यदि) तुम्हें जानकारी होती।<sup>2</sup>

**5** (नूह ने) कहा कि हे मेरे रब! मैंने अपनी कौम को रात-दिन तेरी ओर बुलाया।

**6** मगर मेरे बुलान से ए लोग और अधिक भागने लगे।<sup>3</sup>

**7** और मैंने जब कभी उन्हें तेरी बरिद्धिश (क्षमादान) के लिए बुलाया उन्होंने अपनी ऊंगलियाँ अपने-अपने कानों में डाल लीं और अपने कपड़ों को ओढ़ लिया और अड़ गए और बड़ा घमंड किया।<sup>4</sup>

<sup>2</sup> अर्थात तुम्हारे पिछ्ले पाप जो रसूल की अनुकरण और उनकी दावत स्वीकार करने से पहले तुम से हुए हैं। अर्थात तुम्हारी मृत्यु को उस अन्तिम सोमा तक टाल देगा जो अल्लाह ने तुम्हारे लिए निर्धारित की है, मुराद यह है कि तुम्हारी उम्रत (अनुयायी) की अवधि बढ़ावेगा और उसे अधिक समय तक धरनी पर बसाए रखेगा जब तक वह अनुकरण करेगा।

<sup>3</sup> अर्थात अज़ाब जिसे उसने तुम्हारे लिए नियुक्त कर रखा है, जब वह आजाएगा और तुम कुफ़ पर अड़ रहेंगे तो वह टाला नहीं जा सकता।

<sup>4</sup> अर्थात जिस बात की ओर मैं उन्हें बुलाता था वे उससे बराबर भागते और अधिक दूर होते चले गए।

<sup>4</sup> अर्थात जब कभी मैंने उन्हें ईमान और अनुकरण के रास्ते की ओर

فَلَا أُقْسِمُ بِرِبِّ الْمَسْرِقِ وَالْمَغْرِبِ إِنَّا لَقَدْ رُونَ<sup>١٠</sup>  
وَمَا نَحْنُ مُسْبُوقُينَ<sup>١١</sup> فَذَرُهُ يَخُوضُوا وَيَعْبُوا حَتَّى يَلْقَوْا يَوْمَهُ الَّذِي  
يُوَعَّدُونَ<sup>١٢</sup> يَوْمَ يَخْرُجُونَ مِنَ الْأَخْمَاثِ سَرَّاً كَاهِمِينَ إِلَى صُبْرٍ يُوْفَصُونَ<sup>١٣</sup>  
خَشِعَةً بَصَرُهُ رَهْفُهُمْ ذَلِكَ الْيَوْمُ الَّذِي كَانُوا يُوعَدُونَ<sup>١٤</sup>

سُورَةُ الْوَاعِدَةِ  
٢٨

### بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

إِنَّا أَرْسَلْنَا نُوحًا إِلَى قَوْمَهُ أَنَّا لَنْدِرُ قَوْمَكَ مِنْ قَبْلٍ أَنْ يَأْتِيَهُمْ  
عَذَابًا أَلِيمًا<sup>١</sup> قَالَ يَقُولُ إِنِّي لَكُمْ نَذِيرٌ مُّبِينٌ<sup>٢</sup> أَنْ أَعْبُدُوا  
اللَّهَ وَأَنْقُوهُ وَأَطِيعُونَ<sup>٣</sup> يَعْرَفُ لَكُمْ مِنْ ذُنُوبِكُمْ وَيُؤْخِذُكُمْ  
إِلَى أَجْلٍ مُّسَمٍّ إِنَّ أَجْلَ اللَّهِ إِذَا جَاءَ لَا يُؤْخَرُ لَوْكُنْدُمْ تَعْلَمُونَ<sup>٤</sup>  
قَالَ رَبِّي دَعَوْتُ فَرِيَّيْلَا وَنَهَارًا<sup>٥</sup> فَلَمْ يَرِدْ هُرْدَعَاءَ إِلَّا  
فَرَارَا<sup>٦</sup> وَإِنِّي كَلِمَادُ عَوْتَهُمْ لِتَغْفِرَ لَهُمْ جَعْلُوا أَصْبِعَهُمْ  
فِي مَاءِ أَبِيَّمْ وَاسْتَعْشَوْ شَابِيَّمْ وَأَصَرُوا وَاسْتَكْبَرُوا أَسْتَكْبَرَا<sup>٧</sup>  
ثُمَّ إِنِّي دَعَوْتُهُمْ جَهَارًا<sup>٨</sup> ثُمَّ إِنِّي أَعْلَمْتُهُمْ وَأَسْرَرْتُ<sup>٩</sup>  
لَهُمْ سِرَارًا<sup>١٠</sup> فَقُلْتُ أَسْتَغْفِرُوْرَبُكُمْ إِنَّهُ كَانَ غَفَارًا<sup>١١</sup>

फिर मैंने उन्हें उच्च आवाज़ से बुलाया।

और बै-शक मैंने उनसे खुल कर भी कहा और चुक-चुपके भी।<sup>1</sup>

और मैंने कहा कि अपने रब से अपने पापों को माफ करवा ला। (और माफी माँगो) बै-शक वह बड़ा बरबशनेवाला (क्षमाशील) है<sup>2</sup>

वह तुम पर आकाश को खुब वर्षा करता हुआ छोड़ देगा।<sup>3</sup>

और उम्हे खुब माल और संतान में बढ़ा देगा और तुम्हे बाग देगा और उम्हारे लिए नहरें निकाल देगा।<sup>4</sup>

तुम्हे क्या हो गया है कि तुम अल्लाह की वर्ती (सवाच्चता) पर विश्वास नहीं करते? <sup>5</sup>

हालांकि उसने उम्हे विभिन्न प्रकार से पैदा किया है।<sup>6</sup>

बुलाया जिसके द्वारा तू क्षमा प्रदान करता है। ताकि वह मेरी आवाज़ न सुन सके। अर्थात् अपने कपड़ों से उन्होंने अपने चेहरे ढांक लिए, ताकि वे मुझे देख न सकें, और मेरी बात सुन न सकें। अर्थात् कुकु पर डट रहे।<sup>7</sup>

अर्थात् खुल्म-खुल्ला और उद्घवित-रूप से समाझे और मज्जिसों में उहें बात दी।<sup>8</sup>

अकेले-अकेले भी बुलाता रहा, अर्थ यह है कि विभिन्न तरीकों से मैंने उहें बात दी, और एक कोल यह है कि विभिन्न तरीकों से मैंने उहें बात दी।<sup>9</sup>

2 खुब वर्षा होता हुवा, इसमें इस बात की दलील है कि अल्लाह से माफ़ी मांगना वर्षा और जीविका की प्राप्ति का एक बहुत बड़ा माध्यम है।<sup>10</sup>

3 अर्थात् उसकी वरतरी और बडाई से नहीं डरते।<sup>11</sup>

4 वीर्य, फिर जमा हुवा खून, फिर गोथ के टकड़े से लेकर पूरी पैदाश तक, जैसा कि उसका विवरण सुरुतुल-मोपिनून में बैठ चुका है, फिर माँ के पेट से एक बालक के रूप में तुम निकलते हो, फिर जवान होते हो, फिर बड़े हो जाते हो, फिर क्योंकि उस हस्ती की बडाई और प्रतिष्ठा में तुम कोताही करते हो जिसने तुम्हे पैदा किया और इन विभिन्न मरहलों से गुज़ारा।<sup>12</sup>

5 क्या तुम नहीं देखते कि अल्लाह (तआला) ने किस तरह ऊपर तले सात आकाश पैदा कर दिया है?

6 और उनमें चांद को खुब जगमगाता बनाया है और सूरज को रौशन विराग बनाया है?<sup>13</sup>

7 और उम्हको धरती से (एक विशेष विधि से) उगाया है (और पैदा किया है)<sup>14</sup>

8 फिर तुम्हे उसी में लौटा ले जाएगा और (एक विशेष विधि से) फिर तुम्हें निकालेगा।<sup>15</sup>

9 और तुम्हारे लिए धरती को अल्लाह (तआला) फर्श बनाया है।<sup>16</sup>

10 ताकि तुम उसके चौड़े रास्तों में चलो फिरो।<sup>17</sup>

11 नह अलैहिस्सलाम ने कहा कि हे मेरे रब! उन लोगों ने मेरी ना-फर्मानी की और ऐसों का फर्माबदारी की जिनके माल और संतान ने उनको (निःसदेह) हानि ही में बढ़ाया।<sup>18</sup>

12 और उन लोगों ने बहुत बड़ा धोखा किया।<sup>19</sup>

13 और उन्होंने कहा कि कभी भी अपने देवताओं को न छोड़ना और न वह, सुवाअ, यगूस, यजुक और नस्त को (छोड़ना)।<sup>20</sup>

14 और उन्होंने बहुत से लोगों को भटकाया, (हे रब) तू उन अत्याचारियों के भटकावे को और बढ़ा दे।<sup>21</sup>

22 ए लोग अपने पापों के कारण (पानी में) डुबो दिए गए और नरक में पहुँचा दिए गए और अल्लाह के सिवाय उन्होंने अपना कोई सहायता करने वाला न पाया।<sup>23</sup>

5 अर्थात् सारे आकाशों में जबकि वह उन सातों आकाशों में से संसार वाले आकाश में है। जिससे धरती जगमगाती रहती है, और उसमें कोई गर्मी नहीं होती है। (तो योगा वह आकाश के मध्ये का द्वूपर है)

धरती पर वसने वालों के लिए एक रौशन विराग बनाया, (ताकि उसकी रौशनी में वह जीविका प्राप्त करने के लिए प्रयास कर सके।)

6 अर्थात् तुम्हारे पिता आदम ﷺ को जिन्हें अल्लाह ने मिट्टी से बनाया, फिर उके संतान बनाए जो धरती के उन हिस्सों को जो फ़लों और अनाजों और जानवरों में परिवर्तित होंगे हैं, खाकर बड़े होते हैं।

7 अर्थात् धरती ही में, इस तरह कि तुम मरकर उसी में दफन होगे, फिर तुम्हारे अंग गल कर मिट्टी होजाएंगे और धरती में मिल जाएंगे।

अर्थात् कियामत के दिन उसी से निकाल कर तुम्हें यकायक खड़ा कर देगा, पहले की तरह वीर-रथे नहीं।

8 (धूम) का बहुवचन है जिसका अर्थ है : ये पहाड़ों के बीच का रस्ता, अर्थात् इस धरती पर अल्लाह तआला ने बड़े-बड़े चौड़े रास्ते बना दिए हैं, )ताकि इसनां आसानी से एक शहर से दूसरे शहर में या एक मुल्क से दूसरे मुल्क में आ-जा सके।

9 अर्थात् उनके छाए व्यक्तियों ने अपने सरदारों और धनवानों का अनुकरण किया जिनके धन और संतान की बढ़ाती ने दुनिया और आखिरत के धारे ही में उन्हें बढ़ाया है।

10 उनका अपने बैकूक्सों को नूह अलैहिस्सलाम की हत्या पर उभारना था।

11 अर्थात् उन सरदारों ने अपने अनुजान करने वालों को नूह की अवज्ञाकारी पर उतारते हुए उनसे कहा : तुम अपने उपायों की पूजा को न छोड़न।

यह बुत उकी कैम के बुज़र्गों की मूर्तियां थीं जो उन्होंने बना रखे थे जिनके बाद में अरब-वाद में पूजने लगे थे।

अर्थात् इन मूर्तियों की पूजा न छोड़ना, वह, स्वाअ, यगूस, यजुक और नस्त के बीच जुरे थे, उन लोगों ने उनके फोटो और उनकी मूर्तियां बनाकर अपनी इवादत की जाहों में रख ली थीं, फिर उनके बाद जिन लोगों का जनम हवा उनसे इब्लीस ने आकर कहा कि : तुम से फहले जो लोग गुज़र चुके हैं वे इनकी पूजा करते थे, इनिलए तुम भी इनकी पूजा किया करो, और इस तरह उन लोगों ने इनकी इवादत शुरू करदी, इस तरह मूर्ति-पूजा आरम्भ हुआ, फिर यह मूर्तियां अरब महा द्वीप में पहुँचे गए और यहां भी कुछ वर्षों ने इनकी पूजा शुरू करदी।

12 अर्थात् उनके बड़ों और सरदारों ने बहुत से लोगों को भटकाया, और उहें धारे ही और नुकसान में अधिक बढ़ाया।

13 (مَّا مَّا) जाइदा है) अर्थात् वह अपने कुकर्मों के कारण शीषण वाड़ में डुबा दिए गए, फिर उसके बाद आग में पुस्त दिए गए, आग से मुरद आयिग्रत में नरक

- २६** और नूह (عليه السلام) ने कहा कि हे मेरे रब! तू धरती पर किसी काफिर को रहने-सहने वाला न छोड़! <sup>१</sup>
- २७** यदि उहें छोड़ देगा तो निःसदेह ए तेरे दूस्रे बन्दों को भी भटका देंगे और ए कुर्कम काफिरों ही को जन्म देंगे। <sup>२</sup>
- २८** हे मेरे रब! तू मुझे और मेरे माँ-बाप और जो ईमान लाकर मेरे घर में आए और सारे ईमानवाले पुरुषों और सारी ईमानवाली महिलाओं को माफ कर दे और काफिरों को विनाश (बर्बादी) के सिवाय अन्य किसी बात में न बढ़ा। <sup>३</sup>

## सुरतुल जिन - 72

- शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़ा महब्बत बहुत रहम करने वाला है।**
- १** (हे मुहम्मद ﷺ) आप कह दें कि मुझे वस्त्य (प्रकाशन) की गयी है <sup>४</sup> कि जिन्नों के एक गिरोह ने (कुरआन) सुना तथा कहा कि हम ने अजीब कुरआन <sup>५</sup> सुना है।
- २** जो सत्य रास्ते की ओर मार्गदर्शन देता है, हम तो उस पर ईमान ला चुके, (अब) हम कभी अपने रब का किसी दूसरे को साझीदार न बनाएंगे।
- ३** तथा अवश्य हमारे रब की शान महान है <sup>६</sup>, न उसने किसी को (अपनी) पत्नी बनाया है और न सन्तान।
- ४** और अवश्य हम में का मूर्ख अल्लाह के बारे में झूठी बातें कहा करता था।
- ५** और हम तो यही समझते रहे कि असंभव है कि इन्सान और जिन्नात अल्लाह पर झूठी बातें लगाएं <sup>८</sup>।
- ६** वास्तविकता यह है कि कुछ इन्सान कुछ जिन्नों से पनाह (शरण) मांगते थे <sup>९</sup>, जिससे जिन्नात अपनी उद्ढृतामें और बढ़ गए <sup>१०</sup>।

की आग है, और एक कौल यह है कि इससे मुराद कब्र का अंजाब है।

- १** जब नूह (عليه السلام) उनके ईमान से निराश होए, तो अल्लाह तात्त्वाता की इस वस्त्य अब अधिक कोई इमान नहीं रह गया (तेरी कौप में से जो ईमान लाचुके हैं उनके सिवाय अब अधिक कोई इमान नहीं रह गया) के बाद उन्होंने उहें शराया, और अल्लाह ने उनकी इस शराय को स्वीकार किया, और डुख दिया (يُعَلِّمُ دُخُلَّاً) के बजाए पर “نُورٌ” (نور) है, बाव को या से बदल कर इधरगां परिदिया गया है) जिस के माने हैं : जो बर्ती में रहता वसता हो, मतलब यह है कि उन काफिरों में से किसी को भी बाबी न छोड़।
- २** सीधे रास्ते से। जो तेरी अनुकरण करने वाले नहीं। जो तेरी नेमतों की नाशुकी (कृतज्ञता) में सीमा छलागे हुए हैं।
- ३** हलाकत और घाटे के।
- ४** नूह (عليه السلام) की यह कायमत तक आने वाले सारे अपराधियों के लिए है और मुहम्मद ﷺ आप अपनी उपत्त को कह दियिए कि अल्लाह ने जिन्हें द्वारा मुझ पर वस्त्य की कि जिन्नों में से कुछ ने मुझे कुरआन पत्ते सुना, और जो सूरत उस समय आप पढ़ रहे थे वह اُफ्रَا يَأْسِرُ رِبُّ الْأَرْضِ لَعْنَكَ اُفْرَأَيْتَ مُؤْمِنَةً رَبِّ الْأَرْضِ (कृतज्ञता के बाल्कि सभी रसूल आदम (عليه السلام) की संतान इन्सानों में से ही हुए)।

- ५** जब वे अपनी कौम में वापस लौटे तो उन्होंने उनसे कहा कि : हमने एक पढ़ा जाने वाला कलाम सुना है, जो अपनी फ़साहत और बलागत, स्पष्टता और साहित्य में बड़ा अनोखा और निराला है, और एक कथन यह है कि अपनी नरसीहत के लिहाज से बहुत आश्चर्य-जनक है।
- ६** अर्थात् हमारे रब की बड़ी और शान, और उसका जलाल इससे बहुत अधिक ऊँचा और बुलन्द है कि उसकी पत्नी या सन्तान हो। और एक कथन यह है कि **بُشِّرَ** से मुराद शक्ति है।
- ७** जिन्नात अपने मुश्कें और मूर्ख जिन्नों के इस झूटे द्वारे का कि अल्लाह की पत्नी और उसके संतान हैं खंडन कर रहे हैं। **بُشِّرَ** के मायने हैं :

कुछ में बढ़ना, सीधे रास्ते से दूर होना, और सीमा उल्लंघन करना।

**८** हमने तो यह भ्रम कर रखा था कि इन्सान और जिन्नात अल्लाह के बारे में झूठ बोल ही नहीं सकते, इसी लिए उन्होंने जब यह कहा कि अल्लाह के साथी हैं और वह पती और संतान वाला है तो हम ने उनकी यह बात मान ली।

**९** अज्ञानकाल (जाहिलियत) में अरबों में विजाय था कि जब कोई यक्ति किसी घाटी में पड़ाव डालता तो वह जिन्नों के सरदार से शरण मांगते हुए कहता : **أَعُوذُ بِسَيِّدِ هَذَا الْوَادِيِّ مِنْ شَرِّ فَهَاءِ قَوْمِهِ**

يُرْسِلُ السَّمَاءَ عَلَيْكُمْ مَذَارًا <sup>११</sup> وَيُمْدِدُكُمْ بِأَمْوَالٍ وَبَنِينَ وَيَجْعَلُ لَكُمْ جَنَّاتٍ <sup>१२</sup> وَيَجْعَلُ لَكُمْ أَنْهَرًا <sup>१३</sup> مَالِكُمْ لَا تَرْجُونَ لِلَّهِ وَقَارًا <sup>१४</sup> وَقَدْ خَلَقْتُمْ أَطْوَارًا <sup>१५</sup> الْمَرْءُ أَكْيَفَ حَلْقَ اللَّهِ سَبَعَ سَمَوَاتٍ <sup>१६</sup> طَبَاقًا <sup>१७</sup> وَجَعَلَ الْقَمَرَ فِيهِنَّ نُورًا وَجَعَلَ الشَّمْسَ سَرَاجًا <sup>१८</sup> وَاللَّهُ أَبْتَكَمُ مِنَ الْأَرْضِ نَبَاتًا <sup>१९</sup> تَمْ بَعْدَكُمْ فِيهَا وَتَحْرِجُكُمْ إِلَى خَرْجَاجًا <sup>२०</sup> وَاللَّهُ جَعَلَ لَكُمُ الْأَرْضَ سِاطًا <sup>२१</sup> لِتَسْلُكُوهُ مِنْهَا سُبْلًا فِي حَاجَاجًا <sup>२२</sup> قَالَ نُوحٌ رَبِّيَّاهُمْ عَصُوبٌ وَاتَّبَعُوا مِنْ لَمَرِيزَهُ مَالِهُ وَوَلَدَهُ إِلَى الْحَسَارَاتِ <sup>२३</sup> وَمَكُرُوْمَكَرًا كَبَارًا <sup>२४</sup> وَقَالُوا لَا تَدْرُنَنَ إِلَهَتُكُمْ وَلَا تَنْدَرُنَ وَدًا وَلَا سُوَاعًا وَلَا يَغُوثَ وَيَعُوقَ وَنَسَرًا <sup>२५</sup> وَقَدْ أَضَلُوا كَيْرًا وَلَا تَرَدَ الظَّالِمِينَ إِلَى الضَّلَالِ <sup>२६</sup> مَمَّا حَاطَتْ يَمَّهُمْ أَغْرِفُوا فَأَدْخَلُوا نَارًا فَلَمْ يَجِدُوا لَهُمْ مِنْ دُونِهِ الْمُلْكُ أَنْصَارًا <sup>२७</sup> وَقَالَ نُوحٌ رَبِّ لَانَّرَ عَلَى الْأَرْضِ مِنَ الْكُفَّارِ دِيَارًا <sup>२८</sup> إِنَّكَ إِنْ تَدْرِهُمْ يُضْلُّوْعَابَدَكَ وَلَا يَلِدُو إِلَى الْفَاجِرَاتِ كَفَارًا <sup>२९</sup> رَبَّ أَغْفَرِيَ لِوَلَدَيَ وَلَمَنْ دَخَلَ بَيْتَكَ مُؤْمِنًا وَلِمُؤْمِنَاتِ وَلَمُؤْمِنَاتِ الظَّالِمِينَ إِلَانَبَارًا <sup>३०</sup>

**३१** और (इन्सानों) ने भी जिन्नों की तरह ए समझ लिया था कि अल्लाह कभी किसी को नहीं भेजेगा। (अथवा किसी को पुनः जीवित न करेगा)।

**३२** और हमने आकाश को टोल कर देखा <sup>३१</sup> तो उसको अत्यन्त चौक्स सुरक्षाकर्मियों <sup>३२</sup> और तीव्र शोलों (जालाओं) <sup>३३</sup> से पूर्ण पाया।

**३३** और इस से पहले हम बातें सुनने के लिए आकाश में जगह-जगह पर बैठ जाया करते थे <sup>३४</sup>। अब जो भी कान लगाता है वह एक शोलों को अपनी ताक (घात) में पाता है <sup>३५</sup>।

**३४** और हम नहीं जानते कि धरती वालों के साथ किसी

पनाह चाहता है उसके बंश के मूर्खों से” इस तरह वह जिन्नों के सरदार की पनाह में रात बिताता यहाँ तक कि संवेदा होजाता।

**३५** अर्थात् जब जिन्नों ने यह देखा कि इन्सान हमसे डरते हैं और हमारी पनाह चाहते हैं, तो उन्होंने उनकी उड़डता और मर्खाता को और बड़ावा दिया, और उन्होंने इन्सानों पर अधिक अत्याचार किया। या इन्सानों के दुःख, कमज़ोरी और डर-भय को अधिक बड़ा दिया।

**३६** अर्थात् अपने स्वभाव अनुसार हमने खोज शुरू करदी कि आकाश में क्या घटना घटती है।

**३७** यह सुरक्षाकर्मी फरिस्तों में से थे, जो उसकी सुरक्षा कर रहे थे कि कोई आकाश की बात चोर-छोपे न सुन ले। जो कि **شَدِيدًا** ताकतवर है।

**३८** **بُشِّرَ** यह तारों के ज्याल है। वह सुरक्षा नवी <sup>३९</sup> की बेस्त के बाव सुरू हूँ थी, अल्लाह तात्त्वातों में इन आकाशों की सुरक्षा जलादेने वाले तिव्र ज्यालों से किया।

**३९** ताकि वह आकाश की खोले फरिस्तों से सुन कर ज्योतिषियों को बताएं।

**४०** उस सुनने वाले जिन्नात की ताक में रहते हैं ताकि आकाश की बात सुनने से रोकने के लिए उसे इससे मारा जाए।

لِّلَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ  
 قُلْ أَوْحَى لِكَ أَنَّهُ أَسْمَعَ نَفْرَمِ الْجِنَّ فَقَالُوا إِنَّا سَمِعْنَا فَإِنَّا  
 عَجِبٌ بِهِدِي إِلَى الرُّشْدِ فَأَمَّا يَهُدِي وَنَنْشِرِكَ بِرَبِّنَا حَدَّا  
 وَأَنَّهُ تَعْنِي جَدِّ رَبِّنَا مَا أَخْذَ صَحْبَةً لَوْلَدًا  
 يَقُولُ سَفِهِنَّا عَلَى اللَّهِ شَطَطًا  
 وَأَنَّا ظَنَّنَا أَنَّ لَنْ نَفُولُ إِلَيْنَ  
 وَأَلْجِنُ عَلَى اللَّهِ كَذِبَا  
 وَأَنَّهُ كَانَ رِجَالٌ مِنَ الْإِنْسِينِ يُؤْدُونَ بِرِجَالٍ  
 مِنَ الْجِنِّ فَرَادُوهُمْ رَهْقًا  
 وَأَنَّهُمْ طَنُوا كَمَا طَنُنَّمْ أَنَّ يَعْثَثُ  
 اللَّهُ أَحَدًا  
 وَأَنَّا مَلَسْنَةَ السَّمَاءَ فَوْجَدْنَاهَا مُلْثَثَ حَرَسًا  
 شَدِيدًا وَشَهِيًّا  
 وَأَنَّا كَانَقْعَدْ مِنْهَا مَقْعَدَ للسماع فَمَنْ  
 يَسْتَمِعُ أَنَّا لَنْ يَجِدَ لَهُ شَهِيًّا بَرَصَدًا  
 يَمْنَ في الْأَرْضِ أَمْ أَرَادَ هُنْ رِجَالُ رِشَادًا  
 وَأَنَّا مَنَّا الصَّلِحُونَ  
 وَمَنَادُونَ ذَلِكَ كَنَاطِرِيَّ قَدَدًا  
 وَأَنَّا ظَنَّنَا أَنَّ لَنْ تَعْجِزَ  
 اللَّهُ فِي الْأَرْضِ وَلَنْ تَعْجِزَ هُرَبًا  
 وَأَنَّا لَمَّا مَسِعْنَا الْمَهْدَى  
 أَمَانَيْهِ فَمَنْ يُؤْمِنُ بِرِبِّهِ فَلَا يَخَافُ بَغْسًا وَلَا رَهْقًا

बुराई का विचार किया गया है १ या उनके रब का विचार उनके साथ भलाई का है।

११ और यह कि (यकीनन) कुछ तो हममें से सच्चे हैं तथा विपरीत भी हैं २ हम विभिन्न तरह से बढ़े हुए हैं।

१२ तथा हमें पूरा यकीन हो गया कि हम अल्लाह तज़्अला को धरती में कभी बैवस नहीं कर सकते ३ और न हम भागकर उसे छोड़ सकते हैं ४।

१३ और हम हिदायत की बात सुनते ही उस पर ईमान ला चुके, और जो भी अपने प्रभु पर ईमान लाएगा उसे न किसी हानि का डर है न अत्याचार (और दुःख) का ५।

१ आकाश की इस चौकस सुरक्षा द्वारा बुराई का विचार है, या इसकी जानकारी नहीं कि अल्लाह ने इस रक्खावट के द्वारा धरती वालों पर अज़ाब जारीने का विचार किया है, या यह कि उनकी ओर रखून भेजेगा।

२ कुछ जिन्नों ने अपने साथी दूसरे जिन्नों से कहा जब उन्होंने अपने साथियों को मुहम्मद पर ईमान लाने की बाबत थी : कुरआन सुनने के बाद हम में से कुछ लोग उस पर ईमान लाकर नेक बन गए, और कुछ ईमान नहीं लाए, इस तरह हमारी विभिन्न टोलियाँ हो गईं और हमारे इच्छाएँ विभिन्न हो गईं। सँझ कहते हैं : वे जिन मुसलमान थे, यहूदी, नशीली और अग्नि के पूजारी थे।

३ अवश्य हमें यह जान लिया कि यदि अल्लाह ने हमारे साथ किसी चीज़ की इच्छा की तो वह होकर रहे गे, हम उस से बच नहीं सकते।

४ उससे भागते हुए हम उसे बैवस नहीं कर सकते।

५ बग्स के मायने हैं : नुकसान, कमी और घाटा, और रहें के मायने हैं : अत्याचार, ज़्यादता और सरकशी।

१६ और, हम में से कुछ तो मुसलमान हैं तथा कुछ अन्यायी हैं ६ तो जो मुसलमान हो गए उन्होंने सीधे रास्ते की खोज कर ली ७।

१७ और जो अत्याचारी हैं वे नरक का इधन बन गए ८।

१८ ( और हे नबी ९ यह भी कहदे ) कि यदि ए लोग सीधे रास्ते पर जमे रहते तो ज़्यार हम उहें बहुत अधिक पानी पिलाते १० और जो व्यक्ति अपने रब के जिक्र से मुंह मोड़ लेगा तो अल्लाह (तज़्अला) उसे कठोर अज़ाब में डाल देगा ११।

१९ और यह कि मस्तिष्क मात्र अल्लाह ही के लिए (विशेष) है, तो अल्लाह के साथ किसी अन्य को न पुकारो।

२० और जब अल्लाह का बंदा (भक्त) १३ उसकी इबादत के लिए खड़ा हुआ १४ तो करीब था कि वे भीड़ की भीड़ बनकर उस पर पिल पड़े १५।

२१ आप कह दीजिए कि मैं तो मात्र अपने रब को ही पुकारता हूँ और उसके साथ किसी को साझावार नहीं बनाता।

२२ कह दीजिए कि मुझे तुम्हारे लिए किसी लाभ-हानि का अधिकार नहीं १६।

२३ कह दीजिए कि मुझे हरणिज़ कोई अल्लाह से नहीं बचा सकता तथा मैं कभी उसके सिवाय पनाह की जगह भी नहीं पा सकता।

२४ परन्तु (मेरा काम) तो मात्र अल्लाह की बात और उसका सदर्श (लोगों को) पहुँचा देना है १८, (अब) जो भी अल्लाह और उसके रसूल की नाकर्मनी करेगा उसके लिए नरक की आग है जिसमें ऐसे लोग हमेशा रहेंगे।

२५ यहाँ तक कि जब उसे देख लेंगे जिसका उनको वचन दिया जाता है, तो जल्द भविष्य में जान लेंगे कि किस का मददगार (सहायक) कम्ज़ोर १९ और किसका गिरोह कम है २०।

२६ (आप) कहदीजिए कि मुझे ज्ञान नहीं कि जिसका वादा तुमसे किया जाता है वह निकट है अथवा मेरा प्रभु उसके

६ अत्याचारी हैं जो सीधे रास्ते से भटके हुए हैं।

७ उन्होंने सीधे रास्ते का इच्छा किया, और उसकी खोज के लिए प्रयास किया, तो उन्हें उसकी तौफीक मिल गई।

८ नरक की आग का इधन होंगे, जिन से नरक की आग भड़काई जाएगी, जिस तरह से कि वह कफिर इन्सानों से भड़काई जाएगी।

९ अर्थ यह है कि मूर्ति इस बात की वट्य की गई है कि यदि जिन्नात या इन्सान या दोनों सीधे रास्ते पर जमे रहते तो **لَسْقِنَتُهُمْ مَأْعَدُهُمْ** अर्थात् : अल्लाह तज़्अला उहें बहुत अधिक पानी पिलाता।

१० ताकि हम उनकी परीक्षा ले लें और जान लें कि वे नेमते प्राप्त करके किस प्रकार शुक्र करते हैं।

११ और जो व्यक्ति कुरआन से, या नसीहत से मुंह मोड़ेगा तो उसे बहुत ही मुश्किल और कठोर अज़ाब में डाल देगा।

१२ और मेरी और उसने इस बात की भी वट्य को कि मस्तिष्क मात्र अल्लाह के लिए विशेष है, वे मूर्ति पूजा के लिए नहीं हैं।

१३ इस बदे ने से मुराद नहीं है ११।

१४ अल्लाह को पुकार रहा था, और उसकी पूजा कर रहा था, और या घटना बल्कि नस्ला का है, जैसा कि चर्चा हुवा।

१५ तो करीब था कि जिन्नात अल्लाह के रसूल से कुरआन सुनने के लिए भीड़ के कारण उन पर झूँण्ड के झूँण्ड पिल पड़ते।

१६ मुझे इसकी शक्ति नहीं कि दुर्निया और आखिरत में तुम से किसी नुकसान और हानि को रोक सकें, और न ही इसकी कि तुम्हें कोई लाभ पहुँचा सकूँ।

१७ ठिकाना, पनाह और बचने का स्थान।

१८ मगर यह कि अल्लाह की ओर से पहुँचा हूँ, और उसके सदेशानुसार कर्तव्य कल्प, दूसरों को जिन चीजों का आदश देता हूँ स्वयं मैं भी वही करूँ, यदि मैंने ऐसा किया तो छुटकारा पालूँगा नहीं तो मैं भी वर्वाद हो जाऊँगा।

१९ सेना जिससे कि सहायता हिया जाता है।

२० क्या संख्या में वह कम हैं या मोमिन लोग।

लिए दूर की मुदत<sup>1</sup> मुकर्रर (निर्धारित) करेगा।

**26** वह गैब (परोक्ष) का जानने वाला है तथा अपने गैब पर किसी को अवगत (बाख्बर) नहीं कराता।

**27** सिवाय उस रसूल के जिसे वह प्रिय बना ले<sup>2</sup>, इसलिए कि उसके भी आगे-पीछे पहरे-दार लगा देता है<sup>3</sup>।

**28** ताकि जानकारी हो जाए कि उन्होंने अपने रब के संदेश पहुँचा दिए<sup>4</sup>, अल्लाह ने उनके आस-पास की चीजों को घेर रखा है<sup>5</sup> और प्रत्येकवस्तु की संख्या की गिनती कर रखी है।

## सूरतुल मुज्जम्मिल - 73

शुल कता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़ा मैहबून बहुत रहम करने वाला है।

हे चादर में लिपटने वाले।

रात (के समय तहज्जुद की नमाज़) में उठ खड़े हो जाओ, परन्तु थोड़ी देर।

आधी रात या उससे भी कुछ कम।

या उस पर बढ़ा दे और कुर्�ആन को ठहर-ठहर कर (स्पष्ट) पढ़ा कर।

अवश्य हम तुझ पर बहुत भारी बात जत्द ही उतारेंगे।

अवश्य रात का उठना दिल-जर्झ (मन की एकाग्रता) के लिए बहुत मुनासिब है और बात को बहुत उचित करने वाला है।

अवश्य तुझे दिन में बहुत से कायं होते हैं।

और तू अपने प्रभु के नाम जप किया कर और समस्त सौष्ठु द से अलग होकर उसकी ओर मुतवीज्ञाह (थानमन्न) हो जा।

पूर्व और पश्चिम का रब जिसके सिवाय कोई सत्य पूज्य नहीं, तू उसी को अपना कार-साज़ बना ले।

**10** और जो कुछ वे कहते हैं तू सहन करता रह और उन्से अस्ती प्रकार से अलग-थलग रह।

**11** और मुझे और उन झुठलाने वाले खुश-हाल लोगों को छाड़ दे और उन्हें थोड़ा अवसर दे।

**12** अवश्य हमारे यहाँ कठोर बेड़ियाँ हैं और सुलगता हुआ नरक है।

**13** और गले में अटकने वाला भोजन है और दृःख-दायक अजाब है।

**14** जिस दिन धरती और पर्वत थरथरा जाएंगे और पर्वत भूभूरी रेत के टीलों जैसे हो जाएंगे।

**15** अवश्य हमने तुम्हारी ओर भी तुम पर गवाही देने वाला रसूल भेज दिया है, जैसा कि हमने फ़िओन की ओर रसूल भेजा था।

<sup>1</sup> सीमा और मुदत, बस अल्लाह के सिवाय किसी को इसकी जानकारी नहीं कि कियामत कब होगी।

<sup>2</sup> पिछले हुक्म से उस रसूल को अलग कर लिया जिसे वह पसन्द करते, तो अपने गैबी जान में से जो चाहे उहें वस्त्र द्वारा बता देता है, और उसे उनके लिए मोंज़ा (चमत्कार) और उनकी तुरुवत पर सच्चा प्रमाण बनाया, और ज्येतिशी और उस जैसे अन्य लोग जो पर्वतों से मारते हैं, वहाँ की लकड़ियाँ पढ़ते हैं, या पक्षी उड़ते हैं, उन लोगों में से नहीं हैं जिन्हें अल्लाह ने पर्वत किया है, बल्कि यह तो अल्लाह के साथ कुकुर रहने वाले, अपने अन्दरूनी, झूट और अटकल द्वारा अल्लाह पर आरोप लगाने वाले हैं।

<sup>3</sup> अर्थात अल्लाह तात्त्वाता रसूल के आगे पीछे फ़रिश्तों में से सुरक्षाकर्म निर्धारित कर देता है, जो उस की सुरक्षा करते हैं ताकि जब वह उस पर वस्त्र को स्पष्ट करे तो शैतान आड़े न आसके, और इसी तरह उसे धेरे रहते हैं ताकि शैतान उसे सुन न सके और न ज्योतिषियों को बता सकें।

<sup>4</sup> ताकि अल्लाह तात्त्वात् जिस तरह गैब द्वारा जानता है उसी तरह यह देख भी ले कि उसके रसूलों ने उसके संदेश ठीक-ठीक पहुँचा दिए हैं।

<sup>5</sup> अर्थात धात में रहने वाले फ़रिश्तों के पास की, या रसूलों के पास की जो अल्लाह का संदेश लोगों तक पहुँचाते हैं, या उन लोगों के पास की चीजों को धेर रखा है।

وَأَنَا مِنَ الْمُسْلِمُونَ وَمِنَ الْقَسِطُونَ فَمَنْ أَسْلَمَ فَأُولَئِكَ تَحْرُرُ أَرْشَدًا **16** وَمَا الْقَسِطُونَ فَكَاوْلُوا جَهَنَّمَ حَطَبًا **17** وَالَّذِي أَسْتَقْمُوا عَلَى الْطَّرِيقَةِ لَأَسْقَيْنَاهُمْ مَاءً عَذَقًا **18** فِيهِ وَمَنْ يُعْرِضَ عَنْ ذِكْرِ رَبِّهِ يَسْلُكُهُ عَذَابًا صَعَدًا **19** الْمَسَجِدُ لِلَّهِ فَلَا تَدْعُوا مَعَ اللَّهِ أَحَدًا **20** وَإِنَّهُ لِمَا قَامَ عَبْدَ اللَّهِ يَدْعُوهُ كَادُوا يُكُونُونَ عَلَيْهِ لِبَدًا **21** قُلْ إِنَّمَا آدُعُوا رَبِّيَ لَا شَرِيكَ لَهُ أَحَدٌ **22** قُلْ إِنِّي لَا أَمِلُكُ لَكُمْ ضَرًا وَلَا رَشَدًا **23** قُلْ إِنِّي لَا بَلْغَانِ مِنَ اللَّهِ وَرَسْلَتِهِ وَمَنْ يَعْصِي اللَّهَ وَرَسُولَهُ فَإِنَّهُ نَارٌ جَهَنَّمَ خَلِدِينَ فِيهَا أَبَدًا **24** حَتَّىٰ إِذَا رَأَوْا مَا يُوعَدُونَ فَسَيَعْلَمُونَ مَنْ أَضْعَفَ نَاصِرًا وَأَفْلَعَ عَدَدًا **25** قُلْ إِنْ أَدْرِيٌّ أَفْرِبٌ مَا تُوعَدُونَ أَمْ يَجْعَلُ لَهُ رَبِّيَ أَمْدَادًا **26** عَذَلَمُ الْعَيْبِ فَلَا يُظْهِرُ عَلَىٰ غَيْرِهِ أَهْدًا **27** إِلَّا مِنْ أَرْضَنِي مِنْ رَسُولِ فَإِنَّهُ يَسْلُكُ مِنْ بَيْنِ يَدَيْهِ وَمِنْ خَفْهِهِ رَصَدًا **28** لِيَعْلَمَ أَنَّ قَدْ أَبْلَغُوا رِسَالَتَ رَبِّهِمْ وَلَاحْاطَ بِمَا لَدُهُمْ وَأَحْصَى كُلَّ شَيْءٍ عَدَدًا **29**

**16** तो फ़िओन ने उस रसूल की नाफ़र्मानी की तो हमने उस धोर आपद में पकड़ लिया।

**17** तुम यदि काफिर रहे तो उस दिन कैसे बचोगे, जो दिन बच्चों को बड़ा कर देगा?

**18** जिस दिन आकाश फट जाएगा, अल्लाह का यह वचन पूरा होकर ही रहनेवाला है।

**19** अवश्य यह शिक्षा है, तो जो चाहे अपने रब की ओर करासे को अपना ले।

**20** अवश्य तेरा रब भली-भाँति जानता है कि तू और तेरे साथ के लोगों का एक गुरु लगभग दो तिहाई रात के और आधी रात के और एक तिहाई रात के (तहज्जुद की नमाज के लिए) खड़ा होता है, और रात-दिन का पूरा अनुमान अल्लाह को ही है, वह (भली-भाँति) जानता है कि तुम उसे कभी न निभा सकोगे तो उसने तुम पर कृपा की, इसलिए जितना कुरुआन पढ़ना तुम्हारे लिए सरल हो उतना ही पढ़ो, वह जानता है कि तुम में कुछ रोगी भी होंगे, कछ अन्य धरती पर सफर करके अल्लाह की कृपा (अर्थात जीविका भी) खोजेंगे और कुछ अल्लाह के मार्ग में जिहाद भी करेंगे, तो तुम सरलता पूर्वक जितना (कुरुआन) पढ़ सकते हो पढ़ो। और नमाज पावनी से पढ़ो और ज़कात (भी) देते रहा करो और अल्लाह को अच्छा कर्ज (ऋण) दो, और जो नेकी तुम अपने लिए आगे भेजोगे उसे अल्लाह के यहाँ सर्वोत्तम रूप से बदल में अत्यधिक पाओगे। और अल्लाह से क्षमा माँगते रहो।

यकीनन् अल्लाह क्षमा करने वाला मेर्हबान (कृपालु) है।

# سورة المؤمنون

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ  
يَا أَيُّهَا الْمُرْسَلُونَ ١  
فِي أَيَّلَٰ إِلَّا قَيْلَٰ ٢ نَصْفَهُ وَأَوْنَصْ مِنْهُ فَلِيَا  
وَرَدَ عَلَيْهِ وَرَدَ الْقَرْءَانَ تَرِيَلَا ٣ إِنَّا سَلَقَيْ عَلَيْكَ قَوْلَا  
ثَقِيلًا ٤ إِنَّ نَاسَةَ أَيَّلَٰ هِيَ أَشَدُّ طَوْلًا وَأَقْوَمُ قَلِيلًا ٥ إِنَّ لَكَ فِي  
النَّهَارِ سَبَحَ طَوْلِيَا ٦ وَإِذْ كُرِّ أَسْمَرَتِكَ وَتَسْلَى إِلَيْهِ تَبَيِّلَا  
رَبُّ الْمَشْرِقِ وَالْمَغْرِبِ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ فَاتَّخِذْهُ وَكِيلًا ٧ وَأَصْدِرْ  
عَلَى مَا يَقُولُونَ وَأَهْجُوْهُمْ هَجَرَاجِيلًا ٨ وَدَرِفَ وَالْمَكْذِينَ  
أُولَى النَّعْمَةِ وَمَهَلَهُ قَلِيلًا ٩ إِنَّ لَدِنَا أَنْكَلَا وَاحِيَماً  
وَطَعَامًا ذَا عَاصَةَ وَعَذَابًا أَيْمَا ١٠ يَوْمَ تَرْجَفُ الْأَرْضُ وَالْبَيْلَلُ  
وَكَانَتْ الْجَلَالُ كَبِيَّا مَهِيلًا ١١ إِنَّا أَرْسَلْنَا إِلَيْكُمْ رَسُولًا شَهِيدًا  
عَلَيْكُمْ كَمَا أَرْسَلْنَا إِلَى فَرْعَوْنَ رَسُولًا ١٢ فَعَصَى فِرْعَوْنُ اَرْسُولَ  
فَأَخْدَنَهُ أَخْدَأَوِيلًا ١٣ فَكَيْفَ تَنَقُونَ إِنْ كَفَرْتُمْ بِوَمَا يَجْعَلُ  
الْوَلَدَنَ شَيْيَا ١٤ الْأَسْمَاءُ مُنْفَطِرَةُهُ كَانَ وَعْدَهُ مَفْعُولًا  
إِنْ هَذِهِ نَذْكَرَةٌ فَمَنْ شَاءَ اَخْتَذَ إِلَى رَبِّهِ سِيلًا ١٥

सुरतूल मुद्रिसर<sup>1</sup> - 74

शुरू करता हूँ अस्ताह के नाम से जो बड़ा मेहबूब बहुत रहम करने वाला है।  
 हे कपड़ा ओढ़ने वाले। <sup>2</sup>  
 खड़ा हो जा और आगाह (सावधान) कर दे। <sup>3</sup>  
 और अपने रब ही की बड़ाईयां (महिमा) बयान कर। <sup>4</sup>  
 और अपने कपड़ों को पवित्र रखा कर। <sup>5</sup>  
 और नापाकी को छोड़ दे। <sup>6</sup>

**१ मुफर्रिसीरीन कहते हैं** कि अल्लाह के रसूल ﷺ पर जब वट्य (प्रकाशन) की शुरूआत हुई, उस समय जिब्रिल ﷺ आप के पास आए, आप ने उन्हें आकाश और धरती के बीच एक कृष्ण पर जगमगाती रैशनी की तरह बैठे देखा तो आप घबरा गए और बैठोंस होकर गिर पड़े, फिर जब हाँस में आए तो ख़दीजा ؓ के पास आए, पानी मंगाया और अपने ऊपर पानी छिड़का, फिर फरमाया : मुझे कपड़ा ओढ़दो, मुझे कपड़ा ओढ़दो, तो उहाँने आप के ऊपर एक कपड़ा डाल दिया ।

**२ ऐ बह व्यक्ति जो अपने कपड़े में लिपटा हुआ है, और उसे ओढ़ रखा है।**

**३ अर्थात् :** उठ खड़ा हो, और मक्का वाली की याद वे इस्लाम नहीं लाते तो उहें अजब से डराओ ।

4 और अपने रख का ही जो कि तेरा आका, मालिक, और तेरे काजों की इस्लाह करने वाला है, और उस पाक हस्ती ने बड़ाई और महानता को अपनी विशेषता बताई है, और वह इससे महान है कि उसका क्रैंस साझेवार हो।

5 अल्लाह तआला ने आप को अपना कपड़ा पवित्र रखने, और उसे गन्धर्वों से पाक रखने का आदेश दिया। और कतादा कहते हैं कि अपने नप्स को पाप से पाक रखिए।

6 और बुत्तों और मूर्तियों को छोड़ दिजिए, और उनकी पूजा न कीजिए, क्योंकि यहीं अजाब के कारण है।

और इन्सान (उपकार) करके अधिक लेने की इच्छा न कर।  
और अपने प्रभु के मार्ग में सब (धैर्य) रख।  
तो जब सूर (नरसिंह) में फूँका जाएगा।  
तो वह दिन बहुत कठोर दिन होगा।  
(जो) काफिरों पर सरल न होगा।  
मुझे और उसे छोड़ दे, जिसे मैंने अकेला पैदा किया है।  
और उसे अत्यधिक धन दे रखा है।  
और हाजिर रहने वाले पुत्र भी।  
तथा मैंने उसे बहुत कुछ कश्शादी (समख्या) दे रख्या है।  
फिर भी उसकी चाहत है कि उसे और अधिक दें।  
नहीं-नहीं, वह हमारी आयतों का विरोधी है।  
जल्द ही मैं उसे एक कठिन चढ़ाइ चढ़ाऊँगा।  
उसने विचार करके अनुमान किया।  
उसका नाश हो! उसने कैसा अनुमान किया? 17  
फिर उसका नाश हो! किस प्रकार उसने अनुमान किया?  
उसने फिर देखा। 18  
फिर मुख सिकोड़ लिया और मुँह बना लिया। 19  
फिर पौछे हट गया, गर्व किया।  
और कहने लगा कि यह तो मात्र जादू है जो नकल किया जाता है। 20  
(यह) इन्सान की बात के सिवाय कुछ भी नहीं। 21  
मैं जल्द ही उसे नरक में डालूँगा।  
और तुझे क्या पता कि नरक क्या चीज है?  
न वह बाकी रखती है और न छोड़ती है।  
खाल को झ़लसा देती है। 23

7) और नुवूक्त का जो बोझ आप उठा रहे हैं उसका एहसान आप अपने रव पर न जताइए, उस व्यक्ति की तरह जो यदि किसी का बोझ उठाता है तो उससे अधिक मिलने की इच्छा रखता है। और एक कथन की रौशनी में इसका अर्थ यह है कि जब आप किसी को कई उपहार दें तो मात्र अल्लाह की खुशी के लिए दें और लोगों पर उसका एहसान न जताएं।

8) अर्जानी : आप पर भारी ज़िम्मेदारी लादी गई है, जिसके कारण आप से अरबी और अजंती युक्त करेंगे तो आप उस पर अल्लाह के लिए सब कीजिए।

9) इसका अर्थ बुढ़ा नहाना है, गोया कि कहा जा रहा है कि आप इनकी ओर से पहुँचने वाली कष्टों पर सब करें, क्योंकि इनके सामने एक भयंकर दिन है जिसमें वे अपने कर्तृतों की सजा पाने वाले हैं।

10) मुझे और उस व्यक्ति को अकेला छोड़ दें जिसे मैंने पैदा किया है जबकि वह अपनी मां के पेट में अकेला था, न तो उसके पास धन था और न ही सन्तान, या इसका अर्थ यह है कि : मुझे अकेला उससे बदला लेने के लिए छोड़ दें, मैं आप की ओर से उससे निपटने के लिए काफ़ी हूँ।

11) ढेर सारे धन दिए।

12) और ऐसे बेटे जो हर समय उसके साथ मक्का ही में रह रहे हैं, न वह यात्रा करते हैं और न ही अपने बाप के धन के कारण जीविका की खोज में बहाव जाने के महताज छूँ।

13 उसकी जीविका को फैला दिया है, लम्बी आय दी है, और कौशं भी सरदारी भी।

14 १५ मैं कभी नहीं बढ़ाउंगा। **لَا تَعْلُوْنَ عَنِّيْدِكُمْ** वह हमारी निशानियों का विरोधी है, और जो हमने अपने रस्ते पर उतारा है उसका इकार करने वाला है।

15 जल्द ही हम उस पर कोठन अज्ञाव का बोझ डालेंगे, इहांक कहते हैं कि इन्हाँ ऐसी भारी चीज उठाएं जिसकी वह शक्ति न रखता हो।

16 उसने नवी **كَوْكَبِ** के बरे में सोचा और जी मैं विचार कर लिया, और जवाब देने के लिए बताएं तैयार कर ली, तो अल्लाह ने उसे अप्राप्ति किया।

17 उस पर शराप हो और उसका नाश हो उसने कैसी बात सोची।

18 उसने सोचा कि किस तरह कुरुआन को रद्द करे और उसमें त्रुटि निकाले।

19 **جَعَلَ** जब उसे कोई ऐसी त्रुटि नहीं मिली जिसके द्वारा वह कुरुआन पर रद्द करे तो उसने अपना मुंह बनाया। **وَسَرَّ** और त्योरी चढ़ाई।

20 यह कुरुआन जादू के सिवाय और कुछ नहीं है जिसे मुहम्मद (ﷺ) दूसरों से नकल करके ले रहे हैं।

21 यह तो इन्सानों का कथन है, अल्लाह का कथन नहीं है।

22 जल्द ही मैं उसे जहन्म की आग में डालूँगा।

23 जहन्म लोगों को दिखाई देगी और वे अपनी आँखों से स्पष्ट रूप से देखेंगे, और कहा गय है कि वह लोगों के चेहरे का रंग बदल देगी, यहाँ

- ३०** और उस पर उन्नीस (फरिश्ते नियुक्त) मुकर्र हैं। <sup>१</sup>
- ३१** और हमने नरक के दारोगे मात्र फरिश्ते रखे हैं। और हमने उनकी संख्या मात्र काफिरों की परीक्षा के लिए मुकर्र (निर्धारित) कर रखी है, ताकि अहले किताब विश्वास कर लें और ईमान वाले ईमान में बढ़ जाएं और अहले किताब और मुसलमान शंका न करें, और जिनके दिल में रोग है वे और काफिर कहें कि इस उदाहरण से अल्लाह की क्या सुराद है? इसी तरह अल्लाह जिसे चाहता है भटका देता है और जिसे चाहता है हिदायत (मार्गदर्शन) देता है, और तेरे रब की सेनाओं को उसके सिवाय कोई नहीं जानता, यह सभी इन्सानों के लिए (साक्षत) शिक्षा (एवं उपदेश) है। <sup>२</sup>
- ३२** कभी नहीं! चन्द्रमा की कसम। <sup>३</sup>
- ३३** और रात की जब वह पीछे हटे। <sup>४</sup>
- ३४** और सवेरे की जब वह रौशन हो जाए। <sup>५</sup>
- ३५** कि (अवश्य वह नरक) बड़ी चीजों में से एक है। <sup>६</sup>
- ३६** लोगों को डराने वाला।
- ३७** उस व्यक्ति को जो तुम में से आगे बढ़ना चाहे या पीछे हटना चाहे। <sup>७</sup>
- ३८** प्रत्येक व्यक्ति अपने कर्मों के बदले गिरवी है। <sup>८</sup>
- ३९** परन्तु दाएं हाथ वाले।
- ४०** (कि) वे जन्मतों में (बैठे हुए) पूछते होंगे।
- ४१** पापियों से।

तक कि वह काले हो जाएंगे।

- १** जहन्नम पर फरिश्तों में से १६ दारोगे निर्धारित हैं, और कहा गया है कि १६ प्रकार के फरिश्ते निर्धारित हैं।
- २** जब यह आयत **عَلَيْهَا تَعَظِّمُ عَنْ** उतरी तो अबू जहल ने कहा : क्या मुहम्मद की सहायता करने वाले मात्र १६ होंगे? तो क्या तुम में से सौ सौ व्यक्ति मिल कर भी एक को न पकड़ पायेंगे कि लोग जहन्नम से निकल जाएं? तो यह आयत **أَنَّا لِلْمَكْرُورِ** के फरिश्तों से हमने की किस के पास शक्ति है? और कौन उहें हरा सकता है? वह तो अल्लाह के हक को उसकी मश्यूक (सृष्टि) में से सबसे अधिक कायम करने वाले हैं, और सबसे अधिक उसके लिए गुरसा होने वाले हैं, उनका अजाब सबसे कठिन है, और उनकी पकड़ सबसे मजबूत है। **أَنَّا لِلْمَكْرُورِ** ताकि यहूदी और ईसाई यकीन कराएँ; क्योंकि कुरआन में संख्या बताया गया है वहीं संख्या उनकी काफिरों की गुमाही और परीक्षा का कारण बनाया, तो उन्होंने अपने दिल की बातें कह लीं, ताकि उन पर अज़ाब में बदौतरी होजाएँ और उन पर अल्लाह का अंग अधिक होता चला जाए। तो यहूदी और ईसाई यकीन कराएँ; क्योंकि कुरआन में संख्या बताया गया है वहीं संख्या उनकी काफिरों की उल्लिखित है। **وَإِنَّمَا يُبَشِّرُ** यह देख कर उनका ईमान बढ़ जाए कि यहूदियों और ईसाईयों ने भी उनकी मुवाफकत की है। **وَيَقُولُونَ إِنَّمَا يُبَشِّرُ** और ताकि मुनाफिक कहें। और **وَإِنَّمَا يُبَشِّرُ** काफिर हैं। मुकाबला वासियों में से या अन्य स्थानों के : **مَلَكًا** कि इस अंचमे में डाल देने वाली संख्या से अल्लाह की इच्छा क्या है? **وَمَا تَعْلَمُ جُدُودُ** जहन्नम के दारोगे अपारबे १६ ही हैं लेकिन फरिश्तों में से उनके अंदर अल्लाह के लक्षण हैं जिन्हें अल्लाह के सिवाय कोई दूसरा नहीं जानता। **وَمَا هُنَّ إِلَّا كُفَّارٌ لِّلْبَشِيرِ**
- अर्थात् जहन्नम और जहन्नम के दारोगों की यह संख्या मात्र संसार वालों की नसीहत के लिए है, ताकि उन्हें अल्लाह की परिपूर्ण शक्ति की जानकारी होजाए, और इसकी भी कि उसे किसी मददगार की जरूरत नहीं है।
- ३** मैं इस पर चाँद की और इसके बाद आने वाली चीजों की कायम खाता हूँ।
- ४** जब वह पीछे मुड़ कर जाने लगे।
- ५** जब वह रौशन और स्पष्ट हो जाए।
- ६** जहन्नम बड़े कट्टों तथा मुसीबों में से एक है। और कहा गया है मुहम्मद (ﷺ) को झुटलाना बड़ी मुसीबों में से एक है।
- ७** हर एक के लिए डराने वाला है चाहे ईमान के साथ आगे बढ़े या कुफ द्वारा पीछे रह जाए।
- ८** अपने कर्मों का कारण हर व्यक्ति की पकड़ होगी और वह उसके साथ गिरवी है, अब उसका वह कर्म या तो उसे अज़ाब से बचा लेगा, या उसे वर्वाद कर देगा।

إِنَّ رَبَّكَ يَعْلَمُ أَنَّكَ تَقُومُ أَدْنَى مِنْ ثُلُثِيَّ الْيَوْمِ وَنِصْفَهُ وَثُلُثَهُ، وَطَالِفَةً  
مِنَ الَّذِينَ مَعَكَ وَاللَّهُ يُعَذِّرُ الَّيْلَ وَالنَّهَارَ عِلْمًا أَنَّ سَكُونَ مِنْكُمْ مَرْضٌ  
عَلَيْكُمْ فَاقْرُءُوا وَمَا تَسْرِرُ مِنَ الْقَرْءَانَ عِلْمٌ أَنَّ سَكُونَ مِنْكُمْ مَرْضٌ  
وَآخَرُونَ يَصْرِفُونَ فِي الْأَرْضِ بِيَتَغُونَ مِنْ فَضْلِ اللَّهِ وَآخَرُونَ  
يُقْتَلُونَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ فَاقْرُءُوا وَمَا تَسْرِرُ مِنْهُ وَآقِمُوا الصَّلَاةَ وَإِذَا  
الرَّكْوَةَ وَأَقْرِصُوا اللَّهَ قَرْصًا حَسَنًا وَأَقْبِلُوا لِنَفْسِكُمْ مِنْ خَيْرٍ مَجْدُوهُ  
عِنْدَ اللَّهِ هُوَ خَيْرٌ وَأَعْظَمُ أَجْرًا وَاسْتَغْفِرُوا اللَّهَ إِنَّ اللَّهَ عَفُورٌ رَّحِيمٌ

سُبْحَانَ رَبِّ الْعَالَمِينَ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ  
بِتَائِبِهِ الْمَدِيرِ ۖ ۖ قُوْمَانِدَرِ ۖ ۖ وَرَبِّكَ فَكِيرِ ۖ ۖ وَثَيَالِكَ فَطَهِيرِ ۖ ۖ  
وَالْمُزْفَاهَجِزِ ۖ ۖ وَلَا تَمْنَنْ شَتَّكِيرِ ۖ ۖ وَلَرِبِّكَ فَأَسِيرِ ۖ ۖ  
فَإِذَا أُنْقِرَفَ فِي النَّافُورِ ۖ ۖ فَذَلِكَ يَوْمٌ مَيِّدِيُومٌ عَسِيرٌ ۖ ۖ عَلَى الْكُفَّارِ  
عَنْ يَسِيرٍ ۖ ۖ ذَرْنِي وَمَنْ خَلَقْتُ وَجِيدًا ۖ ۖ وَجَعَلْتُ لَهُ مَا لَأَ  
مَمْدُودًا ۖ ۖ وَبَنْ شَهُودًا ۖ ۖ وَمَهَدَتْ لَهُ نَهَيْدَا ۖ ۖ مَمْ طَمَعَ  
أَنْ زَيْدًا ۖ ۖ كَلَانَهُكَانَ لَيَلَنَاعِنَدَا ۖ ۖ سَأَرْهَقَهُ صَمَودَا ۖ ۖ

- ३२** तुम्हें नरक में किस बात ने डाला? <sup>९</sup>
- ३३** वे जवाब देंगे कि हम नमाजी न थे।
- ३४** न खूबों को खाना खिलाते थे।
- ३५** और हम बाद-विवाद (इंकार) करने वालों के साथ बाद-विवाद में मश्गुल (व्यस्त) रहा करते थे। <sup>१०</sup>
- ३६** और हम बदलै के दिन को झुटलाते थे।
- ३७** यहाँ तक कि हमारी पूत्रु आ गयी।
- ३८** तो उन्हें सिफारिश करने वालों की सिफारिश लाभ न देगी।
- ३९** उन्हें क्या हो गया है कि वे नसीहत से मुख मोड़ रहे हैं? <sup>१२</sup>
- ४०** जैसे कि वे बिंदक हुए गधे हैं। <sup>१३</sup>
- ४१** जो तीर अंदाजो से भागे हैं। <sup>१४</sup>
- ४२** बल्कि उनमें से प्रत्येक व्यक्ति चाहता है कि उसे स्पष्ट किताब दी जाए। <sup>१५</sup>

९ उनसे पूछें : तुम्हें किस चीज़ ने जहन्नम में डाल दिया?

१० कुकमियों के साथ उनके कुकम में व्यस्त रहते थे, जब भी कोई पापी पाप करता हम उसके साथ रहते।

११ अर्थात् : मौत आगई।

१२ कौन सी चीज़ उन्हें मिल गई है जिसने उन्हें कुरआन से दूर कर दिया है जबकि इसमें तो बहुत बड़ी नसीहत है।

१३ जैसे कि वे बहुत अधिक बिंदक हुए गधे हैं।

१४ जो तीर अंदाजो से भागे हों जो उन्हें तीर से मार रहे हों, और कहा गया है कि अरबी में **فَسُورَةُ** का अर्थ शेर है। तो इसका अर्थ यह होगा कि वह जंगली गधे हैं जो शेर को अपनी ओर फाड़ खाने के लिए आता देख कर रहे हों।

१५ मुहम्मद से कहते हैं कि काफिरों ने मुहम्मद से मांग किया कि : हम

١٨ إِنَّهُ فَكِرْ وَقَدْرٌ فَقْتَلَ كَيْفَ قَدْرٌ ١٩ مُمْقِلٌ كَيْفَ قَدْرٌ ٢٠ ثُمَّ ظَرَرٌ  
٢١ مُمْعِسٌ وَبَرٌّ ٢٢ ثُمَّ أَذْبَرٌ وَأَسْتَكَبَ ٢٣ فَقَالَ إِنْ هَذَا إِلَّا سُخْرَى  
٢٤ إِنْ هَذَا إِلَّا قُوْلُ الْبَشَرِ ٢٥ سَاصِلِيَّهُ سَقَرَ ٢٦ وَمَا أَدْرَاكَ  
٢٧ لَا يَقُولُ وَلَا نَذِرٌ ٢٨ لَوَاحَةُ الْلَّهَشَرِ ٢٩ عَلَيْهِ تِسْعَةُ شَرَّ  
٣٠ مَاسَقَرَ وَمَا جَعَلْنَا أَحَبَّ لِنَارِ الْأَمَلَيَّةِ وَمَا جَعَلْنَا عَدَّهُمْ إِلَّا فِتْنَةً  
٣١ الَّذِينَ كَفَرُوا لِسْتَقِنَّ الَّذِينَ أَوْتُوا الْكِتَبَ وَزَرَادَ الَّذِينَ آمَنُوا إِلَيْنَا  
وَلَا يَرَبَّ الَّذِينَ أَوْتُوا الْكِتَبَ وَالْمُؤْمِنُونَ وَلَيَقُولُ الَّذِينَ فِي قُلُوبِهِمْ مَرَضٌ  
الْكَفَرُونَ مَاذَا أَرَادَ اللَّهُ بِهِنَا مَثَلًا كَذَلِكَ يُهَلِّلُ اللَّهُ مِنْ يَشَاءُ وَهُدِيَ  
إِنْ يَشَاءُ وَمَا يَعْلَمُ مُجْنِدُرَيَّكَ إِلَّا هُوَ وَمَا هُوَ إِلَّا ذَكْرٌ لِلْبَشَرِ ٣٢ كَلَّا  
وَالْقَمَرُ ٣٣ وَاللَّيلُ إِذَا أَذْبَرَ ٣٤ وَالصَّبَرُ إِذَا أَشَفَرَ ٣٥ إِنَّهَا إِلَّا حَدَى  
الْكَبِيرُ ٣٦ نَذِرًا لِلْبَشَرِ ٣٧ إِنَّ شَاهَ مِنْكُمْ أَنْ يَنْقَمِدْ أَوْ يَنْأِيَرُ كُلُّ  
نَفْسٍ يَمَا كَبَتْ رَهِيَّةً ٣٨ إِلَّا أَحَبَّ الَّذِينَ ٣٩ فِي جَنَّتٍ يَسَّأَهُ لَوْنَ  
عَنِ الْمُحْرِمِينَ ٤٠ مَا سَلَكَ كُثْرَى سَقَرَ ٤١ قَالُوا لَمَنْ كُنْتُمْ  
لِلْمُصْلِيَّنَ ٤٢ وَلَمْ نَكُنْ نُطْعَمُ الْمُسْكِنَ ٤٣ وَكُنَّا نَخْوُضُ مَعَ  
الْمُخَاضِيَّنَ ٤٤ وَكَانَ كَذَبُ بِيَوْمِ الْيَمِينَ ٤٥ حَقَّ أَنَّا الْيَقِينُ

३ क्या इन्सान यह विचार करता है कि हम उसकी हड्डियाँ इकट्ठा करेंगे ही नहीं ४।

४ हाँ, अवश्य करेंगे, हमें शक्ति है कि हम उसकी पोर-पोर का ठीक कर दें ५।

५ बल्कि इन्सान तो चाहता है कि आगे-आगे नाफ़र्मानियाँ करता जाए ६।

६ पूछता है कि कियामत (प्रलय) का दिन कब आएगा ७?

७ तो जिस समय आँखें पथरा जाएंगी ८।

८ और चांद बेनूर (प्रकाशहीन) हो जाएगा।

९ और सूर्य एवं चांद इकट्ठे कर दिए जाएंगे ९।

१० उस दिन इन्सान कहेगा कि आज भागने का स्थान कहाँ है १०?

११ नहीं-नहीं, कोई पनाह-गाह नहीं ११।

१२ आज तो तेरे ख की ओर ही ठिकाना है १२।

१३ आज इन्सान को उसके आगे भेजे हुए और पीछे छोड़े हुए से आगाह (अवगत) कराया जाएगा।

१४ बल्कि इन्सान स्वयं अपने आप पर हज्जत (प्रमाण) है १३।

१५ अगर्चि किनाने ही बहाने पेश करे १४।

१६ (हे नबी) आप कुर्झन को जलदी (याद करने) के लिए अपनी जीभ को न हिलाएं १५।

कोताही पर उसे मलामत करता है। यह बुराई करने पर मलामत करता है कि तूने ऐसा क्यों किया, और नेकी करने पर भी निंवा करता है कि और अधिक क्यों नहीं किया। मुकातिल कहते हैं कि इस से काफिर का नप्स मुराद है जो अखिरत में अपने आप को मलामत करेगा, और अल्लाह के बारे में जो कर्मी कोताही की है उस पर अफत्सीस करेगा, या दोनों की एक साथ अल्लाह कसम खारदा है कि वह शीघ्र ही हव्वियों को इकट्ठा करेगा फिर प्रत्येक व्यक्ति को दोबारा जीवित करेगा ताकि वह उस से हिसाब ले और उसे उस का बदला दे, (हव्वियों का चर्चा खास कर इसलिए किया गया है कि यही पैदाइश का असल ढाँचा है।)

<sup>4</sup> उसके बिखर जाने के बाद दोबारा नए सिरे से उसे पैदा करेंगे ही नहीं,

उसके बखर जान के बाद दबारा नए सिर से उस पद करने ही नहीं, तो उसका अप्पा गुमान है।

5 जल्द हम उहें ज़खर इकट्ठा करेंगे, और हमें इस की भी शक्ति है कि उस की उंगलियों के एक दूसरे से जोड़ कर ऊँट के खुर की तरह करदे लैकिन हम ने उन पांव करम किया है औं उहें उंगलियाँ दीं जिनमें जोड़, नाखुन, पतली रेंग, और बारीक हड्डियाँ हैं। और वास बारे में एक विचार यह है कि यह अल्लाह तआत की ओर से सावधानी है कि उसने प्रत्येक इकट्ठे के पीर पीर तक अलग बनाया है, जो उसकी महान शक्ति की दीवाल है, यदि वह चाहता तो सब की उंगलियों के पीरों को एक जैसा कर देता।

- 6 अर्थात् वह चाहता है कि अनेक वाले समय से पहले पहले बूराइयाँ कर गजेरे, तो वह गुनाहों को करते जाता और तौबा को टालते जाता, वह जिन्दगी भर गुनाह करते जाता और मौत को याद नहीं करता।
- 7 अर्थात् कियामत को दूर समझकर उसका मजाक उड़ाते हुए प्रश्न करता है।
- 8 अर्थात् मौत अथवा दीवारा उठाए जाने की घब्राहट, दहशत और डर से

**अँखे पथरा जाएंगी।**  
**९ अर्थात् सूर्य भी चाँद की तरह प्रकाशहीन होजाएगा, दोनों की रौशनी पत्ते साला बित्ता हो जाएंगी। उस दृष्टि से वैष्णव देव भी आपे उत्ते उत्ते उत्ते**

एक साथ ख़त्म हो जाएगा, इस तरह रात आर दिन के आन जान का चक्र ख़त्म हो जाएगा।

**10** अर्थात् अल्लाह से और उसके हिसाब और अज़ाब से भागने के लिए कोई स्थान न होगा।

**11** अर्थात् कोई पहाड़, या किला या शरण-स्थल ऐसी न होगी जो तुम्हें

अल्लाह से बचा सके।  
 12 **الْمُسْتَفْدِعُ** के अर्थ शरण-स्थल और पनाह-गाह के हैं, मुराद मैदाने महशर

है जहाँ अल्लाह बन्दों के बीच न्याय करेगा, और यह सम्भव न होगा कि कोई उम्म की अदालत से बच कर बिकल जाए।

**13** अर्थात् उसे वास्तविका का पता चल जाएगा कि वह ईमान पर है या कुफ़्

पर, कफ्मार्बारी पर या नाफ्मानी पर, सिथाई पर या टेढ़ाई पर। और कहा गया है कि उस के हाथ पैर और अंग स्थंय उसी के विरोध में गवाही देंगे।

**14** अर्थात् चाहे वह जितने ही बहाने बनाए और अपना दिक्षाओं के लिए यह सारी चीजें उस के कुछ काम न आएंगी, और स्वयं उसके

अंग उस के बहानों को झुटला देंगे।  
**15** अल्लाह के रसुल पर जब करआन नाजिल होता था तो आप जिब्रील

जर्सीहू के रूप में जब युद्धान्वयन संस्कृत भाषा या तो आप अप्रिय

संरक्षण क्रियाम - 75

श्रू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़ा महबून बहुत रहम करने वाला है  
 मैं कसम (सौगन्ध) खाता हूँ<sup>2</sup> कियामत (प्रलय) के दिन की  
 और कसम खाता हूँ उस मन की जो निन्दा करने वाला हो<sup>3</sup>।

आप को रसूल उस समय मानेंगे जब हम में से हर व्यक्ति के पास जब हम सवेरे उठें तो अल्लाह की ओर से एक खुली हुई किटाब हो जिसे यह लिया हो जिसे कि आप अल्लाह के रसूल हैं।

أَنْ يَكُونُ لِلَّهِ إِلَيْهِ أَنْ يُحْيِي أَفْئُلَ الْقَوْمِ  
ۚ وَمَا يَكُونُ لِإِلَهٍ إِلَّا أَنْ يُحْيِي أَنْفُسَ الْأَنْفُسِ

۱

अर्थात् : जब अल्लाह उहें हियत देना चाहे।

अनुकरण करें और अवहेलना छोड़कर।

अनुकरण करें और वास्तव में वही इसका अनुकरण करें जिसे कि मैंने आपको जो उन्हें देता हूँ याम देते।

लायक भा हा कि मूर्खन के बुनावा का जा उन से हुए हो नाक कर।

**فَمَنْ يَعْمَلُ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ إِلَّا يُؤْتَهُ أَقْسَطَهُ**  
2  
मैं कियामत के दिन की कसम खाता हूँ। अल्लाह तउला ने कियामत के दिन  
की कसम उसकी महानता बताने के लिए खाइ है, वह अपनी सृष्टि में से  
जिस की चाहे कसम खा सकता है, पर मळूक के लिए अल्लाह के सिवाय  
दूसरे की कसम खाना जायज़ नहीं है।

**وَمَا يَنْهَا الْأَنْفُسُ**  
3  
से मराद मोमिन का नफ्स है, जो कि उस की कसी और

- 17** उसको जमा करना <sup>1</sup> और (आप के मुख से) पढ़ाना हमारे जिम्मे है <sup>2</sup>।
- 18** हम जब उसे पढ़ लें, तो आप उसके पढ़ने की पैरवी करें <sup>3</sup>।
- 19** फिर उसे बयान (स्पष्ट) कर देना हमारे जिम्मे है <sup>4</sup>।
- 20** नहीं-नहीं, तुम तो जल्दी मिलने वाले (संसार) से प्रेम रखते हो।
- 21** और आखिरत (प्रलोक) को छोड़ बैठे हो।
- 22** उस दिन बहुत से चेहरे हरे-भरे और प्रकाशित होंगे <sup>5</sup>।
- 23** अपने रब की ओर देखते होंगे <sup>6</sup>।
- 24** और कितने चेहरे उस दिन (बदूरैनक और) उदास होंगे <sup>7</sup>।
- 25** समझते होंगे कि उनके साथ कमर तोड़ देने वाला व्यवहार किया जाएगा <sup>8</sup>।
- 26** नहीं-नहीं<sup>9</sup>, जब (स्वर्ग अर्थात् प्राण) हुंसुली तक पहुँचेगी <sup>10</sup>।
- 27** और कहा जाएगा कि कोई झाड़-फूक करने वाला है <sup>11</sup>?!
- 28** और उसने विश्वास कर लिया कि यह जबई का समय है <sup>12</sup>।
- 29** और पिंडली से पिंडली लिपट जाएगा <sup>13</sup>।
- 30** आज तेरे रब की ओर चलना है <sup>14</sup>।
- 31** तो उस ने न तो पुष्टि की न नमाज़ पढ़ी <sup>15</sup>।
- 32** बल्कि झुटलाया और पलट गया <sup>16</sup>।

के पढ़कर फ़ारिग़ होने से पहले उसे याद करने के लिए अपने दोनों होंठ और अपनी जीभ को हिलाते थे, तो यह आयत उतरी, कि जब वस्त्र आप पर उत्तर रही हो तो इस डर से कि कहीं आप उसे भूल न जाएं उसे जल्दी याद करने के लिए अपनी जीभ को न हिलाएं।

**1** आप के सोने में कि उस में से कुछ भी आप से छूटने न पाए।

**2** अर्थात् सही हर रूप में आप की जीभ पर उस की किरणत को सांचित करना।

**3** अर्थात् जिर्बहल द्वारा जब हम उसे पढ़कर फ़ारिग़ हो जाएं तो उसके पश्चात् आप उसे पढ़ें, और जब तक हम उसे पढ़ें आप चुप होकर ध्यान देकर सुनते रहें।

**4** रसूल द्वारा इसमें जो हलाल और हराम है उसे विद्यन कराना हमारा काम है, इस के बाद जिर्बहल जब भी आप के पास वस्त्र लेकर आते तो अल्लाह तआला की दिवात अनुसार आप चुप होकर उसे सुनते, फिर जब चले जाते तो उसे पढ़ते।

**5** यह ईमान वालों के चेहरे होंगे, जो अपने अच्छे अन्जाम के कारण खुश और प्रकाशित होंगे।

**6** अपने रब को देख रहे होंगे और उसकी दीदार से लुक़ उठा रहे होंगे, सही है हरीसों द्वारा तवाहुर के साथ यह प्रमाणित है कि नेक लोग कियामत के दिन अपने रब को ऐसे देखेंगे जैसे बिना परेशानी के चौदहवीं का चाँद देखते हैं।

**7** यह काफिरों के चेहरे होंगे जो पीले पड़े होंगे और गुम से काले होंगे।

**8** **كَافِرٌ** का अर्थ भयंकर आफत है, गोया कि उस ने उन की रीढ़ की हड्डी तोड़ दी।

**9** अर्थात् उनका कियामत पर ईमान लाना संभव नहीं है।

**10** **أَرْبَافُ تَرْفُقَةٍ** की जमा है, गर्दन के करीब सीने और कंधे के बीच एक हड्डी है, और स्वर की हंसली तक पहुँचने से किनाया मौत का करीब होना है।

**11** अर्थात् उस के घर वालों में से जो उस के पास होंगे, कहेंगे : कोई है झाड़-फूक करने वाला जो उसे स्वस्थ कर सके? जाओ हकीमों और डाक्टरों को ले आओ, लेकिन अल्लाह की आज्ञा के सामने कोई भी चीज़ उस के काम न आएगी।

**12** और जिस की रुह हंसली तक पहुँच गई है उसे विश्वास हो जाएगा कि अब चीज़ बच्चे और धन दौलत से जुदाई का समय आ चुका है।

**13** अर्थात् मौत के समय उस की एक पिंडली दुसरी पिंडली से मिल जाएगी, और उस के दोनों पैरों में भी जान बाकी नहीं रहेगी, उस की दोनों पिंडलियां भी सूख जाएंगी और उसे उठा नहीं पाएंगी, जबकि पहले वह इन्हीं दोनों पर खड़े होकर खुब टहलता घृमता था, और लोग उसके जिसम की ओर फरिश्ते उस की रुह लैजाने की तैयारी में लग जाएंगे।

**14** रुहों को शरीरों से निकलने के बाद उन्हें उकेरे रब की ओर ले जाया जाएगा।

**15** अर्थात् इस ने तो रिसात की तर्दीक की और न ही कुर्ऊअन की तस्वीर की, और न ही अपने रब के लिए नमाज़ पढ़ी, तो न वह दिल से ईमान लाया और न ही अपने अंगों द्वारा अमल ही किया।

**16** अर्थात् रसूलों और उन की लाई हुई शरीअत को झटुलाया और ईमान

فَمَا نَفَعُهُمْ شَفَعَةُ الشَّيْفِينَ **٤٤** فَمَا هُمْ عَنِ التَّذَكُّرِ مُعْرِضُينَ  
كَانُهُمْ حُمُرٌ مُسْتَفَرَةٌ **٤٥** فَرَّتْ مِنْ قَسْوَرَةٍ **٤٥** بَلْ يُرِيدُ  
كُلُّ أَمْرٍ مِنْهُمْ أَنْ يُؤْتَقَ صُحْفًا مُشَرَّةً **٤٥** كَلَّا لِلَّهِ لَا يَخْلُوْنَ  
الآخِرَةَ **٤٥** كَلَّا إِنَّهُمْ تَذَكَّرُهُ **٤٥** فَمَنْ شَاءَ ذَكَرَهُ **٤٥**  
وَمَا يَدْكُرُونَ إِلَّا أَنْ يَشَاءَ اللَّهُ هُوَ أَهْلُ الْقَوْىٰ وَأَهْلُ الْعَفْرَةِ **٤٥**

سُورَةُ الْقَيْمَاتِ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ  
لَا أَقِيمُ يَوْمَ الْقِيَمَةِ **١** وَلَا أَقِيمُ بِالنِّفَاسِ الْوَامَةَ **٢** أَيْخَسَبَ  
إِلَيْنَا أَنَّا لَنْ تَجْعَلَ عَظَامَهُ **٢** بَلْ قَدْرِنَا عَلَى أَنْ شُوَّبَيْنَاهُ **٢** بَلْ  
يُرِيدُ إِلَيْنَا لِيَفْجُرَ لَامَهُ **٣** يَسْتَأْلِمُ إِيَّاهُ يَوْمُ الْقِيَمَةِ **١** فَإِذَا رَأَيَ الْبَصَرُ  
وَخَسَفَ الْقَمَرُ **٤** وَجْهَ الشَّمْسِ وَالْقَمَرِ **٤** بَقَعُ الْإِنْسَنُ بِعِيْدَ **٤**  
أَيْنَ الْمَفْرُ **٤** كَلَّا لَا وَزَرَ **١١** إِلَى رَبِّكَ يَوْمَ الْمُسْتَفْرَ **١١** بِبَنْوَ الْإِنْسَنِ  
بِوَمِيْدَ بِمَا قَدَّمَ وَلَخَرَ **١٢** بَلِ الْإِنْسَنُ عَلَى نَفْسِهِ بِصَرِيرَهُ **١٢** وَلَوْلَقَنِ  
مَعَذِيرَهُ **١٣** لَا تَخْرُكْ بِهِ لِسَانَكَ لِتَعْجَلَ بِهِ **١٣** إِنْ عَلَيْنَا جَمَعَهُ **١٣**  
وَقْرَءَهُ **١٤** لِيَدَاقِرَنَّهُ فَلَيْقَعَ قُرَءَاهُ **١٤** مِمْ إِنْ عَلَيْنَا يَانَهُ **١٤** فَلَيْدَاقِرَنَّهُ فَلَيْقَعَ قُرَءَاهُ **١٤**

**33** फिर अपने घर वालों की ओर इतराता हुआ गया <sup>17</sup>।

**34** अफसोस है तुझ पर, पछतावा है तुझ पर।

**35** फिर तुध छौं खाराबी है तेरे लिए <sup>18</sup>।

**36** क्या इन्सान यह समझता है कि उसे बेकार छोड़ दिया जाएगा <sup>19</sup>।

**37** क्या वह एक गाढ़े पानी (मनी) की बूँद न था, जो टरपका गया था <sup>20</sup>?

**38** फिर वह खन का लोथड़ा हो गया, फिर (अल्लाह ने) उसे पैदा किया और ठीक रूप से बना दिया।

**39** फिर उससे जोड़े अर्थात् नर-मादा बनाए।

**40** क्या अल्लाह तआला इस बात की शक्ति नहीं रखता कि मुद्द को जिन्दा कर दे <sup>21</sup>?

लाने से मुंह मोड़ा।

**17** **إِتَّرَاتَا** और अकड़ता हुआ।

**18** अर्थात् तेरी बाबी हो, असल में है : **٥٥** اَوْ لَاكَ اللَّهُ مَا تَكْرُرُ **٥٥** اَلْلَهُمَّ  
तुझे ऐसी बाज़ी से दोचार करे जिसे तू नापसंद करता है। या तुझे हमशा बाबी का समाना रहे।

**19** अर्थात् उसे यूंही छोड़ दिया जाएगा जो मन में आए करे, न उसे किसी बाज़ी का आदेश दिया जाए और न ही उसे अच्छा या बुरा कोई बदला मिले।

**20** अर्थात् वह मनी की बूँद न था जो रहम में टपकाया गया था?

**21** अर्थात् जिस अल्लाह ने उसे अनेक मर्हलों से गुज़ार कर ऐसी ऐसी निराली और अछोती पैदाइश की ओर उस पर उस की शक्ति रही, क्या उस में इस की शरीर को दोबारा लौटाने पर शक्ति न होगी? जबकि दोबारा लौटाना पहले की निस्वत में आसान है।

كَلَّا لِمُجْرِيَنَ الْعَاجِلَةِ ۖ وَنَذَرُونَ الْآخِرَةَ ۗ وَجُوهٌ يَوْمَئِذٍ نَاضِرَةٌ ۚ  
إِلَى رَبِّهِ كَانَظِرَةٌ ۖ وَجُوهٌ يَوْمَئِذٍ بَاسِرَةٌ ۖ نَظَرٌ أَنْ يُقْلِدَ بَاهَافَرَةٌ ۖ  
كَلَّا إِذَا بَاعَتِ الْتَّرَاقَ ۖ وَفِيلٌ مِنْ رَاقٍ ۖ وَطَنٌ أَنَّهُ الْفَرَاقُ ۖ وَالنَّفَقَ  
السَّاقِيَ الْسَّاقِ ۖ إِلَى رَبِّكَ يَوْمَئِذٍ السَّاقُ ۖ فَلَا صَدَقَ وَلَا أَصَلَّ  
وَلَكُنْ كَذَبَ وَتَوْلَى ۖ شَمْ ذَهَبٌ إِلَى أَهْلِهِ يَسْتَطَعُ  
فَأَوْلَى ۖ شَمْ أَوْلَى لَكَ فَأَوْلَى ۖ أَيْحَسَبَ إِلَيْهِنَّ أَنْ يُرِيكَ سُدِّيَ ۖ  
أَغْرِيَكَ طَفَّةً مِنْ يَوْمِئِنَ ۖ شَمْ كَانَ عَلَقَةً فَلَعْنَقَ نَسْوَتَيْنَ ۖ فَعَلَّمَنَهُ  
أَزَوَّجَيْنَ الدَّكَرَ وَالْأَنْثَى ۖ لَيْسَ ذَلِكَ بِقِدْرٍ عَلَىَّ أَنْ يُخْبِي الْمُؤْنَى ۖ

سُورَةُ الْإِنْسَانِ

نَزَّلْنَاهُ عَلَيْكَ

## سُورَةُ الْإِنْسَانِ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

هَلْ أَنَّ عَلَىَّ إِلَيْهِنَّ حِينٌ مِنَ الدَّهْرِ لَمْ يَكُنْ شَيْئًا مَذَكُورًا ۖ  
إِنَّا خَلَقْنَا إِلَيْهِنَّ مِنْ تُطْفَلٍ أَمْشَاجَ بَنَتِيهِ فَجَعَلْنَاهُ سَمِيعًا  
بَصِيرًا ۖ إِنَّا هَدَيْنَاهُ السَّبِيلَ إِمَّا شَاكِرًا وَإِمَّا كُفُورًا ۖ  
إِنَّا أَعْتَدْنَا لِلْكُفَّارِنَ سَلَسَلًا وَأَغْلَلًا وَسَعِيرًا ۖ  
الْأَبْرَارَ يُشَرِّبُونَ مِنْ كَامِنَ كَاتِ مَرْجَحًا كَافُورًا ۖ

## سُورَتُ الْإِنْسَانِ - 76

श्रू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़ा महब्बन बहुत रहम करने वाला है।  
अवश्य ही इन्सान पर युग का एक वह समय भी गुजर चुका है । जबकि यह कोई कॉवेले जिक्र वस्तु न था ।  
वेशक हमने इन्सान को मिले जुले नुस्के (वीर्य) से परीक्षा के लिए ४ पैदा किया । और उसको सुनने वाला देखने वाला बनाया ।  
हमने उसे मार्ग दिखाया ६, अब चाहे वह शुक्र-गुजार

1 यहाँ جِنْ مें से मुराद अबुल बशर आदम हैं, (एक समय) से मुराद एक कौल अनुसार रुह फूंके जाने से चालीस साल पहले का समय है। वह मिट्ठी और पानी की मिलावट से, फिर सने हुए गारे से, फिर खनकती हुई मिट्ठी से पैदा किए गए।  
2 अर्थात् रुह फूंके जाने से पहले, और एक कौल अनुसार इस का अर्थ यह है कि ऐसे युग भी बीत चुके हैं कि आदम कुछ नहीं थे, अभी वह अदम से बुजूद में नहीं आए थे, और न सुष्टि के लिए चर्चा के कालिल थे।  
3 अर्थात् मर्द और औरत के जुताए से जो वच्चादानीं में जाकर मिल जाते हैं, और एक कौल के अनुसार अन्त में सिली हुई चौड़ी हैं क्योंकि वीर्य अनेकों वस्तुओं से मिला होता फिर उसी से इन्सान को पैदा किया जाता है, और उहाँ से विभिन्न स्वभावों जन्म लेती हैं।

4 हम ने उसे परीक्षा के लिए पैदा किया, और हम उस की नेकी और बुराई तथा दूसरी जिम्मेदारियों द्वारा परीक्षा ले रहे हैं।

5 अर्थात् हम ने उस के भीतर एहसास जगाया ताकि वह महसूस करे और उस की परीक्षा संभव हो सके।

6 अर्थात् हम ने उसे हिदायत और गुमाई, पुण्य तथा पाप के रास्ते, और उसके लाभ तथा हानि भी बता दिए, जिन की ओर वह अपनी फित्रत

बने या ना-शुक्रा।

7 वेशक हमने काफिरों के लिए जंजीरें, और तौक और भद्रकने वाली आग तैयार कर रख्वी हैं ।  
8 वेशक नेक लोग उसे प्याले से पिएंगे जिसमें काफूर की मिलावट है।

9 जो एक स्रोत है ९। जिससे अल्लाह के बंदे पिएंगे, उसकी नहरें निकाल ले जाएंगे १० (जिधर चाहें)।

11 जो मन्त्र पूरी करते हैं ११ और उस दिन से डरते हैं जिसकी बुराई चारों ओर फैल जाने वाली है १२।

13 और जरूरत के बावजूद खाना खिलाते हैं, गरीब, अनाथ और कैदियों १३ को।

14 हम तो तुम्हें मात्र अल्लाह की खूशी के लिए खिलाते हैं १४, न तमसे बदला चाहते हैं न शुक्र-गुजारी।

15 निःसदै हम अपने रब से उस दिन का डर रखते हैं जो उदासी १५ और कठोरता १६ वाला होगा।

17 तो उहें अल्लाह ने उस दिन की बुराई से बचा लिया १७ अर उहें ताजगी और खुशी पहुँचायी १८।

19 और उहें उनके सब्र (धैर्य) के बदले जन्मत और रेशमी कपड़ अंता किए।

20 यह वहाँ आसनों पर तुकिए लगाए हुए बैठेंगे १९, न वहाँ सूरज की गर्मी देखेंगे न जाड़े की कठोरता २०।

तथा बुद्धिमानी द्वारा मार्ग पा सकता है, अब वह चाहे शुक्र गुजार बने या नाशुक्रा।

7 अर्थात् हम ने इन चीजों को इन्हीं के लिए तैयार किया ताकि इनके द्वारा हम इन यातना में रखे गए औंगलियों की जमश्वि है, इसका अर्थ है बेड़ी जिस से हाथ को गदन से बांधा जाता है, और इसका अर्थ है भक्तियाँ हुई आग।

8 इस शराब में काफूर मिली होगी, ताकि उस की खुशबू और मजा दौनों अच्छी और खुशगवार होंगे।

9 जिस से वे शराब पियेंगे, इसका अर्थ यह भी हो सकता है कि उस शराब से उस स्रोत के पानी की मिलावट होगी।

10 अर्थात् उसे जिस ओर चाहेंगे वहा ले जाएंगे।

11 अर्थात् उसे जिस ओर चाहेंगे वहा ले जाएंगे। अथवा अन्मत मानते थे, फिर उसे पूरा करते थे, मन्त्र : नमाज, रोजा तथा कुर्बानी इत्यादि में से उस अमल को कहते हैं जिसे बन्दा ने स्वयं अपने ऊपर वाजिब कर लिया हो, अल्लाह ने वाजिब न किया हो।

12 अर्थात् वह बदला उहें इस कारण मिलेगा क्योंकि वह मात्र अल्लाह के लिए मन्त्र मानते थे, फिर उसे पूरा करते थे, मन्त्र : नमाज, रोजा तथा कुर्बानी इत्यादि में से उस अमल को कहते हैं जिसे बन्दा ने स्वयं अपने ऊपर वाजिब कर लिया हो, तरे दृट गाल तरे दृट गाल गिरने लगेंगे, और धरती कूट कर बराबर कर ली जाएंगी, और पहाड़ कण कण होकर विखर जाएंगे।

13 अर्थात् इन तीनों तरह के लोगों को खाना खिलाते थे, बावजूद इस के कि उनके पास खाना कम मात्रा में होता, और स्वयं उन्हें उसकी चाहत होती थी, और एक कौल के अनुसार १३ की जमीर अल्लाह की ओर लौटी है, अर्थात् वह अल्लाह तआला की महब्बत में खाना खिलाते थे।

14 अर्थात् वह बदले की भावना नहीं रखते, और न वह उस पर लोगों से अपनी प्रशंसा चाहते हैं, चौंकि अल्लाह उन के दिलों का भेद जानता है इसी लिए उसने इस पर उनकी प्रशंसा की है।

15 अर्थात् जिसको हैलानीकी और सख्ती से लोगों के चेहरे बिगड़ जाएंगे।

16 जिस में आंखें सिकुड़ जाएंगी, और पतलों पर बल पड़ जाएंगी, और एक कौल के अनुसार कठोरता और सख्ती के कारण वह सब से कठोर और लम्बा दिन होगा।

17 क्योंकि वह इस दिन की बुराई से डर कर नेकी और फर्मावर्दी के काम करते थे।

18 अर्थात् काफिरों के चेहरे पर उस दिन उदासी छाई होगी, उस के विपरीत इमान वालों के चेहरों पर ताज़गी होगी, और दिल खुशी से भरा होगा, चेहरों की यह खुशी नेमतों के प्रभाव के कारण होगी।

19 और उहें उनके नेक कर्मों के बदले ऐसी जन्मत मिलेगी जिन में वह ताज वाले आसनों पर टेक लगाए बैठे होंगे।

20 अर्थात् जन्मत में न तेज़ गर्मी होगी न कड़के की सरदी, (वहाँ सदा बहार का ही मौसम रहेगा)।

- १४** और उन पेड़ों के साए उन पर झुके होंगे और उनके (मैती) और गुच्छे नीचे लटकाए हए होंगे ।  
**१५** और उन पर चाँदी के बत्तों और उन गिलासों का दौर चलत्या जाएगा <sup>२</sup> जो शीशे के होंगे ।  
**१६** शीशे भी चाँदी के <sup>३</sup> जिनको (पिलाने वालों ने) अनुमान से नाप रखा होगा <sup>४</sup> ।  
**१७** और उन्हें वहाँ वे जाम पिलाए जाएंगे जिनमें सोंठ की मिलावट होगी ।  
**१८** जन्नत की एक नहर से, जिसका नाम सलसबील है <sup>६</sup> ।  
**१९** और उनके बारों और वे कम उप्र बच्चे धूसते-फिरते होंगे जो हमशा रहने वाले हैं <sup>७</sup> जब तू उन्हें देखो तो समझे कि वह बिखरे हुए (सच्चे) मीठी हैं <sup>८</sup> ।  
**२०** और तू वहाँ <sup>९</sup> जिस और भी निगाह डालेगा पूर्ण उपहार (नेमत) <sup>१०</sup> और महान राज्य <sup>११</sup> ही देखेगा ।  
**२१** उन के (शरीर) पर हरे मरीन और मोटे रेशमी <sup>१२</sup> कपड़े होंगे और उन्हें चाँदी के कान का ज़ेवर पहनाया जाएगा <sup>१३</sup> और उन्हें उनका रब पवित्र शराब पिलाएगा <sup>१४</sup> ।  
**२२** (कहा जाएगा) कि यह है तुम्हारे कर्मों का बदला और तम्हारी कोशिश की कदर की गई <sup>१५</sup> ।  
**२३** वेशक हमने तुझ पर (ब-तत्रीज) क्रमशः कुरआन अन्वतरित किया है <sup>१६</sup> ।  
**२४** तो तू अपने प्रभु के आदेश पर अटल रह और उनमें

عَنِّا سَرُبْ بِهَا عِبَادُ اللَّهِ يُجْزَوُنَمَا تَفْجِرُكَ ۖ ١ بُوقُونَ بِالنَّذِرِ وَمَحَاوُنَ  
يَوْمًا كَانَ شَرِهُ مُسْتَطِيرًا ۷ وَيُطْعَمُونَ أَطْعَامَ عَلَى حُجَّهِ مُسْكِنًا  
وَيَتَمَّا وَأَسْرًا ۸ إِنَّمَا نُظْعِكُ لِوَجْهِ اللَّهِ لَا تُرِيدُنَا كُجْزَهُ لَا شُكُورًا  
إِنَّا نَخَافُ مِنْ رَبِّنَا يَوْمًا عَبُوسًا قَطْطِيرًا ۹ فَوْقَهُمُ اللَّهُ شَرِذَلَكَ  
الْبُوَرُ وَلَقْنُهُمْ نَضْرَةُ وَسُورًا ۱۰ وَجَزَّهُمْ بِمَا صَدَرُوا جَاهَةً وَحَرِيرًا  
مُشَكِّكُينَ فِيهَا عَالِيَّ الْأَرْضِ لَكَ لَا يَرَوْنَ فِيهَا شَمْسًا وَلَا رَمَهَ بِرَا ۱۱  
وَدَانِيَّةً عَلَيْهِمْ طَلَلَهَا وَذَلَّتْ قُطْرُفُهَا نَذْلِيلًا ۱۲ وَيُطَافُ عَلَيْهِمْ بَانِيَّةً  
مِنْ فِضَّةٍ وَأَكْوَابٍ كَانَتْ قَوَارِيرًا ۱۳ فَوَارِيرًا مِنْ فِضَّةٍ قَدَرُوهَا نَقْدِيرًا ۱۴  
وَسَعْنَوْنَ فِيهَا كَاسًا كَانَ مِنْ أَجْهَمَ زَجْبِيلًا ۱۵ عَيْنَافِيَّاً تَسْعَنَ سَلَبِيلًا  
وَرِطْلُوفُ عَلَيْهِمْ وَلِدَنْ مُخْلَدُونَ إِذَا لَيْلَهُمْ حَسِبُهُمْ نُؤْلَوْا شَنُورًا ۱۶  
وَلِذَارِاتِهِمْ رَأَيْتَ نَبِعًا وَمُلَكَّكِيرًا ۱۷ عَلَيْهِمْ شَابِ سُنُسِ ۱۸  
خُضُرُ وَاسْتَبْرُ وَمُلْحُوا أَسَاوِرَ مِنْ فِضَّةٍ وَسَقَنَهُمْ رَبِّهِمْ شَرَابًا  
طَهُورًا ۱۹ إِنَّ هَذَا كَانَ لِكُمْ جَزَاءً وَكَانَ سَعْيُكُمْ مَشْكُورًا ۲۰ إِنَّا  
مَحْنُ نَزَلْنَا عَلَيْكَ الْقُرْآنَ تَنْزِيلًا ۲۱ فَاصْدِرْ لِشَكُورِ رَبِّكَ وَلَا تُطْعِنْ  
مِنْهُمْ كَثِيرًا وَكُفُورًا ۲۲ وَأَذْكُرْ أَسْمَ رَبِّكَ شُكْرَةً وَأَصْبِلَا ۲۳

से किसी पापी या ना-शूक्रे (कृतधन) का कहना न मान <sup>17</sup> ।  
**२५** और अपने रब के नाम का सवेरे-शाम ज़िक्र (वर्णन) किया कर <sup>18</sup> ।  
**२६** और रात के समय उसके समक्ष सज्जे कर और बहुत रात तक उसकी तस्वीह (महिमागान) किया कर।  
**२७** अवश्य यह लोग जल्द मिलने वाली <sup>19</sup> को चाहते हैं और अपने पीछे एक बड़े भारी दिन <sup>20</sup> को छोड़ देते हैं।  
**२८** हमने उन्हें पैदा किया और हमने ही उनके जोड़ (एवं बंधन) मज्जूत किए <sup>21</sup> और हम जब चाहें उनके बदले उन जैसे दूसों को बदल लाएं <sup>22</sup> ।  
**२९** अवश्य यह तो एक नसीहत है, तो जो चाहे अपने रब का रास्ता अपनाले।  
**३०** और तुम न चाहोगे मगर यह कि अल्लाह तज़्अला ही चाहे<sup>23</sup> ।

- १** उनके मेवों पर उन्हें पूरी शक्ति प्राप्त होगी, वह खड़े बैठे, लेटे जिस तरह चाहेंगे उसे तोड़ सकें, ऐसा न होगा कि दूरी या कटै के कारण उनके हाथ न पचाँस करें और वापस फिर आएं।  
**२** चाँदी के बत्तों और गिलासों को लिए नौकर फिरें, जब वे पीना चाहेंगे तो उन से लेकर पी लेंगे।  
**३** **فَوَارِيرًا** का अर्थ शीशों के हैं, शीशे दुनिया में रेत के होते हैं, अल्लाह तज़्अला ने उन शीशों की यह खूबी बताई कि वे चाँदी के होंगे जिन में अन्दर की ओर बाहर से दिखेंगी।  
**४** अर्थात उन बत्तों में उनकी चाहत और इच्छा का खास ख्याल होगा, वह उतने अच्छे रूप के होंगे जिन तना वे चाहेंगे, न थोड़ा न अधिक, और एक कैंप के अनुसार उन में शराब ऐसे अनुसार से भरी गई होंगी कि जिस से वे सैराब होंगें, अधिक की चाहत बाकी न रह जाए, और बत्तों में भी बाकी न बचे।  
**५** **پَكْ** बर्न जिस में शराब होगी। **رَبِّيَّلْ** सोंठ, अर्थात उस शराब में मिलावट सोंठ की होगी।  
**६** का अर्थ तेजी से बहात हुवा सफ पानी है, जो कि गले के लिए बहुत ही अच्छा हो।  
**७** अर्थात उनका बचपन और उनकी रैनक हमेश बर्करार रहेगी, वह न वृहे होंगे न उनकी सुन्दरता बदलेगी और न उन्हें मौत आएंगी।  
**८** अपनी सुन्दरता, रंगों में निखारे और बिखरे की रैनक के कारण वह बिखरे हुए मातियों के समान लगेंगे। बिखरे हुए मातियों से उनकी तश्वीह इसलिए दी है कि वह तेजी से सेवा में लगे रहेंगे।  
**९** अर्थात जहाँ भी तुम जन्नत में नज़र उठाकर देखोगे।  
**१०** जिन की खूबियाँ बवान नहीं की जा सकती।  
**११** जिन की महानता का अनुमान नहीं लगाया जा सकता।  
**१२** **سُنُسِ** पलात रेशम।  
**१३** और सुरहुलु कातिर में है : **مُحْلَوْنَ نَهَى مِنْ أَسَاوِرَ** “उस में उन्हें सोने का कंगन पहनाया जाएगा” । अर्थ यह है कि प्रत्येक व्यक्ति अपनी इच्छा अनुसार जो चाहिए वह उसकी प्राप्ति होने वाली है।  
**१४** अब बिलावा और इब्राईम नवहुइ कहते हैं कि उहे खाना दिया जाएगा, और जब वह उसे खा चुके तो पाकीजा शराब दी जाएगी, जिसे वे पिएंगे जो उन के पेट की सारी गंदियों को निकाल कर उन्हें पचका देंगी, और उनकी शरीर से ऐसा पसीना बढ़ाएगी जिस से करतूरी की खुश्बू फूटेंगी।  
**१५** अर्थात अल्लाह अपने सेवक के कर्म की करर करेगा, उसकी इत्ताअत को स्वीकार करेगा, और उस पर उसकी प्रशंसा करेगा।  
**१६** अर्थात उसे एक ही बार उतारने के बाजे ज़रूरत के अनुसार थोड़ा थोड़ा करके विभिन्न समय में उतारा है, और यह तेरा अपना घड़ा हुवा नहीं है जैसा कि मुश्किलेन दावा करते हैं।  
**१७** उनमें से किसी पापी या ना-शूक्रे (कृतधन) का कहना न मान <sup>17</sup> ।  
**२५** और अपने रब के नाम का सवेरे-शाम ज़िक्र (वर्णन) किया कर <sup>18</sup> ।  
**२६** और रात के समय उसके समक्ष सज्जे कर और बहुत रात तक उसकी तस्वीह (महिमागान) किया कर।  
**२७** अवश्य यह लोग जल्द मिलने वाली <sup>19</sup> को चाहते हैं और अपने पीछे एक बड़े भारी दिन <sup>20</sup> को छोड़ देते हैं।  
**२८** हमने उन्हें पैदा किया और हमने ही उनके जोड़ (एवं बंधन) मज्जूत किए <sup>21</sup> और हम जब चाहें उनके बदले उन जैसे दूसों को बदल लाएं <sup>22</sup> ।  
**२९** अवश्य यह तो एक नसीहत है, तो जो चाहे अपने रब का रास्ता अपनाले।  
**३०** और तुम न चाहोगे मगर यह कि अल्लाह तज़्अला ही चाहे<sup>23</sup> ।

- १७** उनमें से किसी पापी या कूक में सीमा पार कर जाने वाले की बात न सुन।  
**१८** और अपने रब के लिए सवेरे-सांझ नमाज़ पढ़ा कर, सवेरे से मुराद फ़ज़ा की नमाज़ और सांझ से अस्स की नमाज़ है। (और एक कौल के अनुसार सवेरे-सांझ से मुराद सारे समय में अल्लाह का ज़िक्र है)।  
**१९** **بُوْمَانَقْبِلَا** जल्दी मिलने वाली अर्थात दुनिया।  
**२०** भारी दिन अर्थात कियामत का दिन, इसे भारी दिन इस की सख्ती और भयानकपन के कारण कहा गया है, और इसे पीछे छोड़ने का अर्थ है कि उस के लिए तयारी नहीं करें, और उस की परवाह नहीं करें।  
**२१** अर्थात हम में उनकी जोड़ों की रोगों और पष्ठों द्वारा जोड़ कर मज्जूत किया।  
**२२** अर्थात हम यह तो उनकी जोड़ों तो उन्हें नष्ट करके उनके बदले ऐसी कौम ले आएं जो उन से अधिक मेरी फ़मावदर हो।  
**२३** अर्थात तुम अपने रब का रास्ता अपनाने की चाहत नहीं कर सकते

وَمِنْ أَلْيَلَ فَاسْجُدْ لَهُ وَسَبِّحْهُ لَيْلًا طَوِيلًا ۖ إِنَّ  
هَؤُلَاءِ يُحِبُّونَ الْعَاجِلَةَ وَيَذْرُونَ وَرَآهُمْ يَوْمًا شَيْلًا ۖ إِنَّ  
حَقْنَهُمْ وَشَدَّدَنَا أَشْرَهُمْ وَإِذَا شَتَّنَا بَذَنَا أَمْنَاهُمْ تَبَدِّلًا ۖ  
إِنَّ هَذِهِ تَذَكِّرَةٌ فَمَنْ شَاءَ أَخْتَدَ إِلَى رَبِّهِ سَيِّلَا ۖ  
وَمَا شَاءَ وَنَالَ آنَ يَشَاءَ اللَّهُ إِنَّ اللَّهَ كَانَ عَلِيمًا حَكِيمًا ۖ  
يُدْخِلُ مَنْ يَشَاءُ فِي رَحْمَتِهِ وَالظَّالِمِينَ أَعْدَلُهُمْ عَدَادًا أَلِيمًا ۖ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ  
سُورَةُ الْمُسْلَاتِ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ  
وَالْمُرْسَلَتُ عَرْفًا ۖ قَالَ الْعَصِيفَتْ عَصِيفًا ۖ وَالنَّيْثَرَتْ نَيْثَرًا ۖ  
فَالْفَرِيقَتْ فَرِيقًا ۖ قَالَ الْمُقْيَتْ ذِكْرًا ۖ عَذَرًا وَنَذَرًا ۖ إِنَّمَا  
تُؤْدَعُونَ لَوْقُعًا ۖ فِي ذَلِكَ الْجَوْمُ طَمَسَتْ ۖ وَإِذَا السَّمَاءُ فُرِجَتْ  
وَلَيْلًا الْمَجَالُ شَفَتْ ۖ وَإِذَا الرَّسُلُ أُفْقَتْ ۖ لَا يَوْمَ لَجَأَتْ  
لِيَوْمِ الْفَصْلِ ۖ وَمَا أَرْدَكَ مَا يَوْمَ الْفَصْلِ ۖ وَلِيَوْمِيَدْ  
لِلْمُكَذِّبِينَ ۖ أَلَمْ تَهْلِكِ الْأَوَّلِيَنَ ۖ لَمْ تَنْعِمُهُمُ الْآخِرِينَ ۖ  
كَذَلِكَ فَنَعْلُمُ بِالْمُجْرِمِينَ ۖ وَلِيَوْمِيَدْ لِلْمُكَذِّبِينَ ۖ

अवश्य अल्लाह तपाला जानने वाला और हिम्मत वाला है।

**31** जिसे चाहे अपनी रहस्य (कृपा) में सम्मिलित कर ले, और जालिमों के लिए उसने दर्दनाक अज़ाब (कष्टदायी यातना) तैयार कर रखा है।

## سُورَةُ الْمُسْلَاتِ - 77

श्रू करता हुँ अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहबूब बहुत रहम करने वाला है।  
कसम है उन फ़रिश्तों की जो वह्य लेकर भेजे जाते हैं।  
फिर उन फ़रिश्तों की कसम जो हवाओं को जोर से हांकते हैं।  
और उन फ़रिश्तों की कसम जो फ़िज़ा में अपने परों को फैलाते हैं।  
फिर उन फ़रिश्तों की जो सत्य-असत्य को अलग-अलग करदेने वाले हैं।  
और उन फ़रिश्तों की जो वह्य (प्रकाशन) लाने वाले हैं ۱ ।  
जो (वह्य) इल्ज़ाम उतारने या आगाह कर देने के लिए होता है ۲ ।

जब तक कि अल्लाह की चाहत न हो, तो इस पर अल्लाह का अधिकार है तुम्हारा नहीं, भलाई और बुराई सब उसी के हाथ में है, तो जब तक अल्लाह न चाहे बदे की चाहत से न तो कोई भलाई प्राप्त हो सकती है, और न ही किसी बुराई को टाला जा सकता है।

**1** وَالْمُرْسَلَتُ عَرْفًا ۖ قَالَ الْعَصِيفَتْ ذِكْرًا ۖ तक, इन आयों में अल्लाह तपाला ने उन फ़रिश्तों की कसम खाली है जिन्हें वह वह्य लेकर अपने नवियों के पास भेजता है, और वह बड़ी तीजी से अपने पर फ़ैलाए उन चीजों को लेकर आते हैं, जो सत्य तथा असत्य, और हलात तथा हराम के बीच फ़र्क करती हैं, यहाँ तक कि वह वह्य नवियों तक पहुँचा दी जाती है।

**2** अर्थात् फ़रिश्ते वह्य लेकर आते हैं ताकि अल्लाह की ओर से हुँजत कायम

जिस चीज़ का तुमसे वादा किया जाता है वह निश्चित समय से होने वाली है।

तो जब तारे बै-नूर (प्रकाशहीन) कर दिए जाएंगे ۳ ।

और जब आकाश तोड़-फोड़ दिया जाएगा ۴ ।

और जब पर्वत दुकड़े-दुकड़े करके उड़ा दिए जाएंगे ۵ ।

और जब रसूलों को मुकर्रर (निर्धारित) समय पर लाया जाए ۶ ।

किस दिन के लिए (उन्हें) टाला गया है ۷ ?

निर्णय के दिन के लिए ۸ ।

और तब क्या पता कि निर्णय का दिन क्या है ۹ ?

उस दिन झुठलाने वालों के लिए ख़राबी है।

क्या हमने पहले के लोगों को नष्ट नहीं किया ۱۰ ?

फिर हम उनके पश्चात पिछलों को लाए ۱۱ ।

हम पापियों के साथ इसी प्रकार करते हैं।

उस दिन झुठलाने वालों के लिए बर्बादी है।

क्या हमने तुम्हें तुच्छ पानी ۱۲ से पैदा नहीं किया ।

फिर हमने उसे मज्बूत स्थान ۱۳ में रखा ।

एक मुकर्रर (निर्धारित) समय तक ۱۴ ।

फिर हमने अनुमान लगाया तो हम क्या अच्छा अनुमान लगाना वाले हैं ۱۵ ।

उस दिन झुठलाने वालों के लिए बर्बादी (विनाश) है।

क्या हमने धरती को समेटने वाली नहीं बनाया?

जिन्दों को भी और मुर्दों को भी ۱۶ ।

और हमने उसमें उच्च (और भारी) पर्वत बना दिए और तुम्हें सींचने वाला मीठा पानी पिलाया ۱۷ ।

उस दिन झुठलाने वालों के लिए विनाश है।

उस नरक की ओर जाओ जिसे तुम झुठला रहे थे ۱۸ ।

हो जाए, और यह बहाना बाकी न रह जाए कि हमारे पास तो कोई अल्लाह का संदेश लेकर आया ही नहीं, उद्देश्य अल्लाह के अज़ाब से उन लोगों को डराना है जो कुफ़ करने वाले होंगे, और एक कौल यह है कि हक़-प्रसरों के लिए शुभ संवाद है और बतिल-परसरों के लिए डराव।

अर्थात् उस की रौशनी ख़त्म कर दी जाएंगी।

अर्थात् खोल और फ़ाड़ दिए जाएंगे।

अर्थात् अपनी जगह से उद्बेद दिए जाएंगे, और दुकड़े-दुकड़े करके फ़ज़ा में विदेश लेकर आये और धरती पर उन की जगह बराबर कर दी जाएंगी।

अर्थात् उनके और उनकी उम्मत के बीच निर्णय के लिए एक समय निर्धारित होगा।

अर्थात् ऐसे अंकर दिन के लिए जिस की हैलेनकी के कारण लोग अच्छे में होंगे, इस समय रसूल इन्हें होंगे अपनी उम्मत के विरुद्ध गवाही देने के लिए।

जिस दिन लोगों के बीच निर्णय किया जाएगा, और उनके कर्म के आधार पर अलग-अलग जन्मत तथा जहन्म मिलेंगी।

और तुम्हें किसने बताया के निर्णय का दिन क्या है? अर्थात् वह बहुत ही अंकर है जिस का अनुमान नहीं लगाया जा सकता।

अर्थात् उन काफिर उम्मतों की जो आदम अलैहिस्सलाम से लेकर मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहिव व सल्लम तक गुज़री है, हमने उन्हें संसार में अज़ाब द्वारा नष्ट कर दिया जा उठायें अपने रसूलों को झुठलाया।

अर्थात् मक्का के काफिर और उनकी मुवाफ़िकत करने वालों को, जिन्होंने मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहिव सल्लम को झुठलाया।

अर्थात् कमज़ोर और हकीकी मरी से।

मज़हूब और सुरक्षित स्थान अर्थात् बच्चादानी में।

अर्थात् गर्भ के तक जो कि ۶ महीना है।

अर्थात् हमने उस के अंगों तथा खुबियों का ठीक ठीक अनुमान लगाया, और उस की सारी चीज़ों को उसी तरह बनाया जैसा हमने चाहा, तो अल्लाह कितना अच्छा अनुमान लगाने वाला है।

अर्थात् तुम सभी को समेट कर सुरक्षित रखने वाली है, जीवितों को अपनी पीठ पर और मृतों को अपने अन्दर।

۱۷ فِي مَيَّا, यह सारी चीज़ें दोबारा जीवित किए जाने से भी अधिक अच्छे में डालने वाली हैं।

۱۸ उन से कहा जाएगा कि जिस अज़ाब को तुम झुठलाते थे उसे चल कर चोय़।

- 30** चलो तीन शाखाओं वाले साए की ओर <sup>1</sup>।  
**31** जो वास्तव में न छाया देने वाला है और न ज्ञाले से बचा सकता है।  
**32** अवश्य (नरक) विंगारियाँ फेंकता है जो महल की तरह हैं <sup>3</sup>।  
**33** जैसे कि वे पीले ऊँट हैं <sup>4</sup>।  
**34** उस दिन झुटलाने वालों की दर्गति है।  
**35** आज (का दिन) वह दिन है कि यह बोल भी न सकेंगे।  
**36** न उहैं बहाना करने की अनुमति दी जाएगी।  
**37** उस दिन झुटलाने वालों के लिए खारबी है।  
**38** यह है निर्णय का दिन, हमने तुहैं और पहले के लोगों को (सब को) इकट्ठा कर लिया है <sup>5</sup>।  
**39** तो यदि तुम मझसे कोई चाल चल सकते हो तो चल लो <sup>6</sup>।  
**40** दुःख है उस दिन झुटलाने वालों के लिए।  
**41** अवश्य परेज़-गार (सदाचारी) लोग साए में हैं और बहते चश्मों (स्रोतों) में।  
**42** और उन फलों में जिनकी वे इच्छा करें।  
**43** (हे जननवालो!) खाओ-पिओ आनन्द से अपने किए हुए कर्मों के बदले।  
**44** अवश्य हम नेकी करने वालों को इसी प्रकार बदला देते हैं।  
**45** उस दिन झुटलाने वालों के लिए दुख (खेद) है।  
**46** (हे झुटलाने वालो!) तुम (संसार में) थोड़ा सा खा-पी लो और लाभ उठा लो, निःसंदेह तुम पापी हो।  
**47** उस दिन झुटलाने वालों के लिए विनाश है।  
**48** उनसे जब कहा जाता है कि रुकूअ़ कर लो तो रुकूअ़ नहीं करते <sup>8</sup>।  
**49** उस दिन झुटलाने वालों का विनाश है।  
**50** अब इस (कुरआन) के बाद किस बात पर ईमान लाएँ? <sup>9</sup>

## सूत्रनु-नबा - 78

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहर्बन बहुत रहम करने वाला है।  
यह लाग किस चीज़ की पूछताछ कर रहे हैं। <sup>10</sup>



उस बड़ी सूचना की? <sup>11</sup>

- 1** नरक के धुएँ की छाया की ओर चलो, जो ऊँचा होकर तीन शाखाओं में फैला होगा।  
**2** अर्थात् यह छाया दुनिया के छाया जैसा ठंडी नहीं होगा, और न ही यह छाया नरक की गर्मी से बचा सकती। हिसाब व किताब से फ़रिग़ हीन तक तुहैं इसी छाया में रहना होगा।  
**3** अर्थात् नरक से उड़ने वाली विंगारियाँ इतनी बड़ी बड़ी होंगी जैसे महल होते हैं।  
**4** डील डोल में इतने बड़े होंगे जैसे पीले ऊँट, पीला का अर्थ यहां पर काला है, अरबावासी काले ऊँट को पीला कहते हैं, और एक कौल के अनुसार चिंगारी जब उड़ेँगी और गिरेंगी तो उस नरक के रंग का जो प्रभाव होगा वह काले ऊँट जैसा होगा।

- 5** अर्थात् उन से कहा जाएगा कि निर्णय का दिन है, जिसमें लोगों के बीच निर्णय हो जाएगे, और सत्य तथा असत्य के बीच अन्तर स्पष्ट किया जाएगा, हमने तुहैं है कुरेश के काफिरों, पिछली उम्मतों के काफिरों के साथ इकट्ठा कर लिया है।  
**6** अल्लाह तज़ाला कहेगा : यदि तुम्हारे पास कोई चाल है जिसे तुम मेरे विरोध में चल सकते हो तो चल कर देख लो।  
**7** अर्थात् उन से यह संसार में कहा जाएगा, और पापी से मुराद मुशिरक और नाफ़रमान हैं।  
**8** अर्थात् जब उहैं नमाज़ का आदेश दिया जाता था तो नमाज़ नहीं पढ़ते थे।  
**9** यदि कुरआन पर ईमान नहीं लाए तो भला इसके सिवा किस चीज़ पर ईमान लाएँगे?

- 10** जब नबी ﷺ की बेसत हूँड़, और आप ने उहैं तौहीद और दोबारा जीवित किए जाने के बारे में बताया, कुरआन की तिलावत की तो वे आपस में एक दूसरे से पूछते लगे। कहने लगे कि मुहम्मद को क्या हो गया, यह क्या लेकर आए हैं? तो अल्लाह तज़ाला ने यह आयत उतारी।

- 11** बड़ी सूचना से मुराद महान कुरआन है, क्योंकि यह किताब अल्लाह की खोज में दौड़ भाग करें।

أَنْخَلَقُوكُمْ مِّنْ مَاؤْمَهِينَ <sup>٢٠</sup> فَجَعَلَهُ فِي قَرَارٍ مَّكِينٍ <sup>٢١</sup> إِلَى قَدَرٍ  
مَعْلُومٍ <sup>٢٢</sup> فَقَدَرَنَا فِيمَا لَمْ كَذِبْنَ <sup>٢٣</sup> وَلَيْوَمِدِّلَّمَكِينٍ  
أَتَتْجَعَلُ الْأَضْضَ كَفَانًا <sup>٢٤</sup> أَحْيَاءً وَأَمْوَاتًا <sup>٢٥</sup> وَجَعَلَنَا فِيهَا رَوْسَى  
شَمِخَتْ وَأَسْقَيْنَاكُمْ مَاءً فَرَأَتَا <sup>٢٦</sup> وَلَيْوَمِدِّلَّمَكِينٍ  
أَنْطَلَقُوا إِلَى مَا كَثُرْ بِهِ تَكَذِّبُونَ <sup>٢٧</sup> اَنْطَلَقُوا إِلَى طَلِّ ذِي ثَلَاثَ  
شَعِيرٍ <sup>٢٨</sup> لَا طَلِيلٍ وَلَا يُعْنِي مِنَ الْهَبِ <sup>٢٩</sup> إِنَّهَا تَرْجِي شَكَرَ  
كَالْقَصَرِ <sup>٣٠</sup> كَانَهُ بِهِ مَهْلَكٌ صَفَرٌ <sup>٣١</sup> وَلَيْوَمِدِّلَّمَكِينٍ  
هَذَا يَوْمٌ لَا يَنْطَقُونَ <sup>٣٢</sup> وَلَا يُؤْذَنُ لَهُمْ فَعِنْدَرُونَ <sup>٣٣</sup> وَلَيْوَمِدِّلَّمَكِينٍ  
لِمَكِينٍ <sup>٣٤</sup> هَذَا يَوْمٌ الْفَصْلُ جَمِنَدُ وَالْأَوْلَى <sup>٣٥</sup> فَإِنْ كَانَ  
لَكُوكِيدٍ فَيَكِيدُونَ <sup>٣٦</sup> وَلَيْوَمِدِّلَّمَكِينٍ <sup>٣٧</sup> إِنَّ الْمُنَفِّي فِي  
ظَلَالٍ وَعُيُونٍ <sup>٣٨</sup> وَفَوْكَهَ مَسَايِشَتُونَ <sup>٣٩</sup> كُلُّوَاشِرُوا هَيْسَعَا  
بِمَا كَثُرْ تَعْمَلُونَ <sup>٤٠</sup> إِنَّا كَذَلِكَ بَنَجَرِي الْمُحَسِّنِينَ <sup>٤١</sup> وَلَيْوَمِدِّلَّمَكِينٍ  
لِلْمَكِينٍ <sup>٤٢</sup> كُلُّوَاشِرُوا هَمَّعَلَلَا إِنَّكَ شَجَرُونَ <sup>٤٣</sup> وَلَيْوَمِدِّلَّمَكِينٍ  
لِلْمَكِينٍ <sup>٤٤</sup> وَإِذَا قِيلَ لَهُمْ أَرْكُمُوا لَا يَرْكَعُونَ <sup>٤٥</sup> وَلَيْلٌ  
يَوْمِدِّلَّمَكِينٍ <sup>٤٦</sup> فَيَأْيِي حَدِيثٌ بَعْدَهُ بُؤْمُونُكَ

- جِسِكَسِكَ بَارِئَ مَمِنْ وَرِيشَتُونَ <sup>٤٧</sup> جِسِكَسِكَ بَارِئَ رَهَنِ <sup>٤٨</sup>  
يَكِينَنَ يَهَ بَارِئَ أَسَبِي نَلِيَنَ <sup>٤٩</sup> فِيَنِ <sup>٤٩</sup> ١٤  
فِيَنِ نِيَشِيَتْ رَلَسِ سِهِنِ عَنْهُنَّ بَهُنَتْ جَلَدَ جَانِكَارِي هُوَ جَاءَنِيَنَ <sup>٥٠</sup>  
كَيَا هَمَنَ دَهَرَتِي كَوَافَرْ نَهَنِيَنَ <sup>٥١</sup> كَيَا هَمَنَ دَهَرَتِي كَيَا هَمَنَ <sup>٥١</sup>  
أَوَرَ پَرَبَرَتِي كَوَافَرْ خَنَهَنَ <sup>٥٢</sup> كَيَا هَمَنَ دَهَرَتِي كَيَا هَمَنَ <sup>٥٢</sup>  
أَوَرَ هَمَنَنَ تُهَمَّنَ جَيَدَنَ <sup>٥٣</sup> كَيَا هَمَنَ دَهَرَتِي كَيَا هَمَنَ <sup>٥٣</sup>  
تَيَا هَمَنَنَ تُهَمَّنَ نِيَشِيَنَ <sup>٥٤</sup> كَيَا هَمَنَ دَهَرَتِي كَيَا هَمَنَ <sup>٥٤</sup> ١٧  
أَوَرَ رَاهَتِي هَمَنَنَ پَرَدَنَ <sup>٥٥</sup> كَيَا هَمَنَ دَهَرَتِي كَيَا هَمَنَ <sup>٥٥</sup>  
أَوَرَ دِينَنَ كَيَا هَمَنَنَ رَاهَنَ رَاهَنَ رَاهَنَ <sup>٥٦</sup> كَيَا هَمَنَ دَهَرَتِي كَيَا هَمَنَ <sup>٥٦</sup>  
سَمَيَنَ بَانَانَ <sup>٥٧</sup> كَيَا هَمَنَ دَهَرَتِي كَيَا هَمَنَ <sup>٥٧</sup> ١٩

- वहदानियत, स्वसूल की सच्चाई और दोबारा उठाए जाने की खबर देती है।  
**12** कुरआन के बारे में उहोने इंकिलाफ़ किया किसी ने उसे जादू कहा, किसी ने शाइरा, किसी ने कहाना तो किसी ने उसे पहले लोगों के अफ़साने का नाम दिया।  
**13** इस में उन के लिए डाँट और फटकार है, कि जल्द ही उहैं जानकारी हो जाएगी कि झुटलाने का अन्जाम क्या होने वाला है।  
**14** यह दोबारा उहैं डाँट पिलाने के लिए है।  
**15** बिछौना और फर्श बनाया, जैसे बच्चों के लिए बिछौना तैयार किया जाता है ताकि उस पर सुलाया जाए।  
**16** अर्थात् हम ने पहाड़ों को धर्ती के लिए खूंटा की तरह बनाया ताकि वह ठहरी रहे और उसमें हिल-डोल न हो।  
**17** बिलाना बद्द हो जाता है ताकि शरीर को आराम मिले।  
**18** अर्थात् हम तुहैं रात का अंधेरा पहना देते हैं बल्कि उस से ढक देते हैं जैसे कपड़े से शरीर ढक दिया जाता है।  
**19** अर्थात् हम दिन को रौशन कर देते हैं, ताकि लोग अपनी रोज़ी की खोज में दौड़ भाग करें।



سُمُّوكُ الْمَنَامٌ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

عَمَّ يَسِّئُ لَوْنٍ ۖ أَعْنَى النَّبِيُّ الْعَظِيمُ ۖ إِلَيْهِ هُرْفَهُ مُخْلِفُونَ ۗ  
كَلَّا سَيَعْلَمُونَ ۖ نُورٌ كَلَّا سَيَعْلَمُونَ ۖ إِنَّمَا تَجْعَلُ لِأَرْضِ مَهْدَى ۗ  
وَالْجَمَالُ أَنْوَادًا ۖ وَنَقْنَقُكُرَّ أَزْوَاجًا ۖ وَجَعَلْنَا تَوْكِنْ سُبَابًا ۗ  
وَجَعَلْنَا أَيْلَلْ بَاسَا ۖ وَجَعَلْنَا الْنَّهَارَ مَعَاشًا ۖ وَبَيْتَنَا  
فَوْقَكُمْ سَبْعًا شَدَادًا ۖ وَجَعَلْنَا سَرَاجًا وَهَاجَا ۖ وَأَنْزَلْنَا  
مِنَ الْمُعْصَرَاتِ مَاءً تَجَاجَا ۖ تَنْخَرَ بِهِ حَبَّا وَبَنَاتَا ۖ وَجَنَّتِ  
أَنْفَافًا ۖ إِنَّ يَوْمَ الْفَصْلِ كَانَ مِيقَنَا ۖ يَوْمٌ يُنَفَّعُ فِي الصُّورِ  
فَنَأْتُونَ أَفَوَاجًا ۖ وَفُتحَتِ السَّمَاءُ فَكَانَتْ أَبْوَابًا ۖ وَسَرِّتَ  
الْبَلَأُ فَكَانَتْ سَرَابًا ۖ إِنَّ جَهَنَّمَ كَانَتْ مَرْصَادًا ۖ لِلْطَّغِينَ  
مَثَابًا ۖ لِلْبَيْتِينَ فِيهَا أَحْقَابًا ۖ لَا يَدْعُونَ فِيهَا بَرَدًا وَلَا شَرَابًا  
إِلَّا حَمِيًّا وَغَسَّاقًا ۖ جَرَازَةً وَفَاقًا ۖ إِلَّهُمْ كَانُوا  
لَا يَرْجُونَ حِسَابًا ۖ وَكَذَبُوا بِآيَتِنَا كَذَابًا ۖ وَكُلَّ شَوْءٍ  
أَخْصَيْنَاهُ كَبَيْنَا ۖ فَذَوْقُوا فَلَنْ تَرِيدُكُمُ الْأَدْعَابًا ۖ

- (12) और तुम्हारे ऊपर हमने सात मञ्जूत आकाश बनाए।  
(13) और एक चमकता हुआ ज्योति दीप (सूरज) पैदा किया।  
(14) और मेंढ़ी से हमने अत्यधिक बहता हुवा पानी बरसाया।  
(15) ताकि उससे अनाज और बनस्पति उगाए।  
(16) और घने बांध भी (उगाए)।  
(17) वेशक निर्णय के दिन का समय मुकर्रर (निर्धारित) है।  
(18) जिस दिन कि सूर (नरसिंह) में फूका जाएगा फिर तुम सब दल के दल बन कर जाओग।  
(19) और आकाश खोल दिया जाएगा, तो उसमें द्वार-द्वार हो जाएं।

- 1 अर्थात् सात मञ्जूत से मुराद सात आकाश हैं, जो कि बहुत ठोस हैं।  
2 इस से मुराद सूरज है, जो उसे कहते हैं जिसमें रौशनी और गर्मी दोनों हो।  
3 वह बदलती है जो पानी से भरी हुई हो तो किन अभी बरसी न हो।  
4 अधिक मात्रा में बहने वाला पानी।  
5 जैसे गेहूं जो और इस तरह के दूसरे अनाज और गल्ले और धान और चारे जिन्हें पशु खाते हैं।  
6 ऐसे बागीचे जिनके पेड़ों की डालियाँ एक दूसरे से मिलती हों।  
7 अर्थात् पहले और पिछले के इकड़ा होने और वादे का समय जिस में वह उस परिणाम को पाएंगे जिसका उनसे वादा किया गया है, और इसे निर्णय का दिन इसलिए कहा गया है कि उस दिन अल्लाह अपनी मञ्जूत के बीच निर्णय करेगा।  
8 नरसिंह जिस में इसराफील कंक मारें।  
9 पेशी की जगह, (अर्थात् मैदान महशर की ओर)  
10 फरिश्तों के उत्तरने के लिए।  
11 अर्थात् उसमें ढेर सारे दर्वजे हो जाएं।

- 12 और पर्वत चलाए जाएंगे तो वे सफेद बालू हो जाएंगे।  
13 निःसंदेह नरक घात में है।  
14 उद्धिङ्गों का स्थान वही है।  
15 उसमें वे युगों-युग पड़े रहेंगे।  
16 न कभी उसमें ठंस का स्वाद चखेंगे न पानी का।  
17 सिवाय गर्म पानी और बहती हुई पीप के।  
18 (उनको) पूरा-पूरा बदला मिलेगा।  
19 उन्हें तो हिसाब की उम्मीद (संभावना) ही न थी।  
20 और दिलेरा से हमारी आयतों को झटलाते थे।  
21 हमने हर-एक बात को लिखकर सुरक्षित रखा है।  
22 अब तुम (अपने किए का) स्वाद चखो, हम तुम्हारा अजाव ही बढ़ाते जाएंगे।  
23 यकीनन् परेज़गारों (सदचारियों) के लिए सफलता है।  
24 बाग़त हैं और अंगूर हैं।  
25 और नवयुवती कुँवारी हम-उम्र औरतें हैं।  
26 और छलकते हुए शराब के व्याले हैं।  
27 वहाँ न तो वे बूरी बातें सुनेंगे और न दूटी बातें सुनेंगे।  
28 (उनके) तेरे रब की आर से (उनके नेक-कर्मों का) यह बदला मिलेगा। जो काफी इआम होगा।  
29 (उस) रब की ओर से मिलेगा जो कि आकाशों का धरती का और जो कुछ उनके बीच है, उनका रब है, और बड़ी बाखिश करने वाला है। किसी को उससे बातचीत करने का अधिकार नहीं होगा।  
30 जिस दिन रुह है और फरिश्ते सर्फ़े बाँध कर खड़े होंगे तो कोई बात न कर सकेगा मगर जिसे रहमान अनुमति देंगे, और वह ठीक बात मुंह से निकालेगा।

12 अर्थात् पहाड़ों को उन की जगहों से जहाँ वे गड़े हुए हैं उखेड़ कर हवा में चला दिया जाएगा, और वे कण-कण होकर बिखर जाएंगे, देखने वाला उहैं "सराब" समझेगा, अर्थात् रेत जो दर से पानी लगता है।

13 नक उनके दारोंग कफिरों के बात में होंगे, कि वे उसमें उहें अजाव दें।

14 दिकाना जिसकी ओर वे लैटेंगे।

15 अर्थात् वे हमेशा जब खत्म होगा हुसर शुरू हो जाएगा, इस प्रकार इस सिलसिला का कभी अन्त न होगा, मतलब यह है कि वह सदा उसमें रहेंगे।

16 जिम्मा गरम पानी। असाफ़ा जहन्मियों की पीप।

17 अर्थात् सजा पाप अनुसार होगी, तो शिर्क से बढ़कर कोई जरूर नहीं और जहन्म से बढ़कर कोई अजाव नहीं, और उनके कटूत चूंकि बुरे थे इसलिए अल्लाह उहें वही देगा जो उन्हें गम्भीर करदे।

18 न उन्हें सवाब की लालच थी और न हिसाब का डर, क्योंकि दोबारा जीतत किए जाने पर उनका इमान ही नहीं था।

19 अर्थात् हम ने तो "लौहे मध्यूत" में लिख रखा है, और एक कौल यह है कि इस से मुराद उनके कर्तृत का वह रिकांड है जिसे निगरां फरिश्तों ने तैयार कर रखा है।

20 सफ़ارा और जहन्म से छुटकारा।

21 अर्थात् उनके लिए ऐसी कुँवारी और नवयुवती औरतें होंगी जिनकी छातियाँ सीधीं पर उठी होंगी, दूटी या ढीली न होंगी।

22 हम-उम्र।

23 जन्म में कोई ख़राब और बैदूबा वात नहीं सुनेंगे, और कोई किसी से झूट नहीं कहेंगा।

25 अर्थात् जो अल्लाह के बादे में उनके लिए वाजिब हुवा होगा उसके अनुसार होगा, उसने एक नेकी पर दस नेकी के सवाब का वादा किया है, और किसी के लिए ऐसे बदले का वादा है जिस की कोई सीधी न होगी।

26 अर्थात् वह इस से बात न कर सकेंगे, जब तक कि वह उहें उसकी अनुमति न दे दे, और न ही बिना उसकी अनुमति के सिफारिश कर सकें।

27 दूर से मुराद फरिश्ता है, और एक कौल के अनुसार जिब्रील मुराद हैं, और एक कौल के अनुसार फरिश्तों के इलावा अल्लाह का कोई लश्कर है।

28 सिफारिश की, या वह मात्र उसी व्यक्ति के हड़क में बात कर सकेंगे

39 यह<sup>२</sup> दिन सत्य है<sup>३</sup>, अब जो चाहे अपने रब के पास (सत्यकर्म करके) स्थान बना ले।<sup>४</sup>  
 40 हमने तुम्हें कीरीब में आने वाले अज़ाब से डरा दिया (और साधान कर दिया)। जिस दिन इन्सान अपने हाथों की कमाई को देख लेगा।<sup>५</sup> और काफिर कहेगा कि काश मैं मिट्टी बन जाता।

## झुतुन् नाज़िआत - 79

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहर्बान बहुत रहम करने वाला है।  
 डूबकर कठोरता से खीचने वालों की कसम।<sup>७</sup>  
 बधन खोलकर छाड़ादेने वालों की कसम।<sup>८</sup>  
 और तैरने फिरने वालों की कसम।<sup>९</sup>  
 फिर दौड़ कर आगे बढ़ने वालों की कसम।<sup>१०</sup>  
 फिर कामों के उपाय करने वालों की कसम।<sup>११</sup>  
 जिस दिन कांपने वाली कोंपेंगी।<sup>१२</sup>  
 उसके बाद एक पीछे आने वाली (पीछे-पीछे) आएंगी।<sup>१३</sup>  
 (बहुत से) दिल उस दिन धड़कते होंगे।<sup>१४</sup>  
 जिनकी निगाहें नीची होंगी।<sup>१५</sup>  
 कहते हैं कि क्या हम पहले जैसी स्थिति में फिर लौटाए जाएंगे?<sup>१६</sup>  
 क्या उस समय जब हम गली दुई हड्डियां हो जाएंगे।<sup>१७</sup>  
 कहते हैं कि यह लौटना फिर तो हानिकारक है।  
 (जानकारी होनी चाहिए)

जिसके लिए रहमान अनुमति दे दे।

1 और यह व्यक्ति उन लोगों में से हो जिसने संसार में दुरुस्त बात कही हो, अर्थात् तौहीद की गवाही ही हो, और तौहीद का स्वीकारी रहा हो।  
 2 अर्थात् रुह और फरिश्तों के इस तरह से खड़े होने का दिन।  
 3 अर्थात् हर हाल में आने वाला है।  
 4 एवं दिकाना, अर्थात् सुकर्म करके अपने रब के पास ठिकाना बना ले।  
 5 जिस दिन आदमी उस नकी या बुराई को देख लेगा जिसे आगे भेजा था।  
 6 अर्थात् जो अजाव अल्लाह ने उसके लिए तैयार कर रखा है उसे देख कर वह यह आरजू करेगा कि काश वह मिट्टी होता।  
 7 अल्लाह ने फरिश्तों की कसम खाइ जो बन्हों की रुहों को उन की शरीरों से पूरी शक्ति से खीचते हैं, जैसे क्रमन खीचने वाला जहां तक बढ़ सकता है पूरी शक्ति से खीच कर बढ़ाता है, ग्रुफ़ा डूब कर, अर्थात् इस तरह सज्जी से कि शरीर के अन्तिम सिरे से उत्तर खीच लेते हैं।  
 8 शृंखला का माना रसीसी से डोल खीचने के हैं, अर्थात् जानों को शरीरों से पूरी शक्ति से खीच कर बाहर निकलते हैं, (और एक कैल यह है कि शृंखला का माना बधन खोलने के हैं, अर्थात् मोमन की जान फ़ारिश्ते आसानी से निकल लेते हैं, जैसे आसानी से आकाश का बंधन खोल दिया जाए।)  
 9 फ़रिश्ते तेज़ी से आकाश से उत्तरते हैं, वह हवा में तैरते हैं जैसे गोता-खोर पानी में तैरता है।  
 10 यह फ़रिश्ते अल्लाह के आदेश कायम करने के लिए दौड़ते हैं, और उन में से कुछ मीमिनों की रुहें लेकर जन्मत की ओर दौड़ते हैं।  
 11 फ़रिश्तों का मामले का उपाय करने का अर्थ : उनका हलाल, हराम और उनकी तफसील को लेकर उत्तराना, और धरती वालों के लिए पानी और हवा व्यारूः का उपाय करना।  
 12 यह पहली फूँक है जिस से सारी मञ्जूलक फ़ना हो जाएगी।  
 13 से रुमाद सुरूरी फूँक है जिस से सब लोग जीवित होकर कब्रों से निकल आएंगे।  
 14 कियामत की हौलनाकी को देख कर वह डरे होंगे और धड़कते होंगे।  
 15 अर्थात् उनकी निगाहों में ज़िल्लत और बेचारगी स्पष्ट होगी, और कियामत की हौलनाकी को देख कर उनकी नज़रें मारे डर के झुकी हुई होंगी, मुराद उन लोगों की नज़रें हैं जो बिना इस्लाम लिए मरे होंगे।  
 16 ऐसा वे कहते हैं जो दोबारा जीवित किए जाने के इच्छारी हैं, जब उन से कहा जाता है कि मरने के पश्चात् तुम दोबारा जीवित किए जाओगे तो आश्वर्य से कहते हैं कि क्या हम अपनी पहली हालत की ओर लौटा दिए जाएंगे, और मर जाने और क्रन्ति के गढ़े में जाने के बाद फिर जीवित किए जाएंगे?  
 17 अर्थात् मरने वाले के लौटाए जाने (योर मुहम्मद ﷺ जो रहे रहे हैं उस से बौचार होने पर तो हम बड़े शारे में होंगे। (यह बात वह मज़ाक उड़ाने के लिए कहते हैं।)

إِنَّ لِلْمُعْتَقِينَ مَفَازٌ حَدَّا يَقُولُونَ وَأَعْتَنَا ۚ ۲۱ دَهَاقًا ۲۲ لَا يَسْمَعُونَ فِيهَا لَعْنًا وَلَا كَذَّا ۚ ۲۳ حَرَاءَ مِنْ رَبِّكَ عَطَاءً ۚ ۲۴ حَسَابًا ۲۵ رَبُّ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَا بِهِمَا الرَّحْمَنُ لَا يَنْكُونُ ۚ ۲۶ مِنْهُ خَطَابًا ۲۷ يَوْمَ يَقُومُ الرُّوحُ وَالْمَلَائِكَةُ صَفَّا لَا يَتَكَلَّمُونَ ۚ ۲۸ إِلَّا مَنْ أَذْنَنَ لَهُ الرَّحْمَنُ وَقَالَ صَوَابًا ۚ ۲۹ ذَلِكَ الْيَوْمُ الْحَقُّ فَمَنْ شَاءَ أَخْنَدَ إِلَى رَبِّهِ مَثَابًا ۚ ۳۰ إِنَّا أَنْذَرْنَاكُمْ عَذَابًا فَرِبَّكَا يَوْمَ يَنْظُرُ الْمَرْءَ مَا قَدَّمَتْ يَدَاهُ وَيَقُولُ الْكَاوِفُ يَلْتَقِي كُنْتُ تَرْبَابًا ۳۱

سُورَةُ التَّارِيخِ ۱۷  
 ۱۷ وَالنَّزَّلَتِ غَرْقًا ۱۸ وَالنَّتَّشَطَتِ نَشَطاً ۱۹ وَالسَّبِحَتِ سَبِحًا ۲۰ فَالسَّقِيقَتِ سَبِقَةً ۲۱ فَالْمُلْبِرَاتِ أَمْرًا ۲۲ يَوْمَ بَرْجَفُ الْأَرْفَفَةَ ۲۳ تَبَعَّهَا الرَّادِفَةُ ۲۴ قُلُوبُ يَوْمَيْدٍ وَاجْفَةٌ ۲۵ أَبْصَرُهَا ۲۶ خَشْعَةً ۲۷ يَقُولُونَ إِنَّا لَمَرْدُودُونَ فِي الْحَافَرَةِ ۲۸ إِذَا دَكَّنَا ۲۹ عَظِيمًا لِنَخْرَةً ۳۰ قَالُوا إِنَّكَ إِذَا كَرَّهَ حَاسِرَةً ۳۱ فَإِنَّا هُمْ بِالسَّاهِرَةِ ۳۲ هَلْ أَنْكَ حَدِيثُ مُوسَى ۳۳ وَجْدَةً ۳۴

13 वह तो केवल एक (भ्यानक) फटकार है<sup>१८</sup> कि (जिसके जाहर होते ही)।  
 14 वह एक-दम मैदान में इकट्ठे हो जाएगे।<sup>१९</sup>  
 15 क्या मूसा (عليه السلام) की कथा भी तुम्हें पहुँची है?<sup>२०</sup>  
 16 जबकि उनके रब ने उन्हें पवित्र मैदान तुवा<sup>२१</sup> में पुकारा।  
 17 कि तुम फिरौन के पास जाओ उसने उद्दृष्टता अपना ली है।  
 18 उससे कहो<sup>२२</sup> कि क्या तू अपना सुधार और इस्लाह चाहता है।<sup>२३</sup>  
 19 और यह कि मैं तुझे तेरे रब का रास्ता दिखाऊँ ताकि तू (उससे) डरने लगे।

18 दूसरी पूँक होगी जिस से सारे लोग कब्रों में जीवित होकर निकल आएंगे, हमारी शक्ति इतनी महान है कि हमें इस के लिए कुछ और नहीं करना पड़ेगा।

19 एक कौतूहल के अनुसार सफ़द धरती होगी जिसे अल्लाह बुजूद में लाएगा और उसी पर सभों का हिसाब लेगा।

20, 21 तुम्हें पहुँच चुकी हैं जिन से उनकी कहानी जानी जा सकती हैं।

21 पाक और बा-बर्कत तुवा, तूरे सीना में एक वादी है, जिसमें अल्लाह तआला ने मूसा (عليه السلام) का पुकारा था (और उन्हें अल्लाह से बात करने का शुभ अवसर प्राप्त हुवा था)।

22 उसके पास पहुँचने के बाद तुम उससे पूछो कि क्या तू शिर्क की गन्दगी से पवित्र होना चाहता है? मूसा (عليه السلام) की आदेश दिया गया था कि जाकर उसे नर्मी से समझाएं।

23 और यह कि तू चाहता है कि मैं तुझ को उस की इबादत और उस की तौहीद का रास्ता दिखाऊँ ताकि तू अपने परिणाम से डैर, और अल्लाह का डर उसी समय पैदा हो सकता है जब वह स्वयं अच्छा और नेक होना चाहता है।

20 तो उसे बड़ी निशानी<sup>1</sup> दिखायी।  
 21 तो उसने झुटलाया और नाफ़र्मानी की<sup>2</sup>  
 22 फिर पलटा दौड़-धूप करते हुए।<sup>3</sup>  
 23 फिर सबको इकट्ठा करके पुकारा।<sup>4</sup>  
 24 कहा कि तुम सबका बड़ा रब मैं ही हूँ।<sup>5</sup>  
 25 तो (सबसे बुलंद और महान) अल्लाह ने भी उसे प्रतीक तथा इस लोक के अज़बों में धेर लिया।<sup>6</sup>  
 26 वे-शक इसमें उस व्यक्ति के लिए शिक्षा है, जो डरे।<sup>7</sup>  
 27 क्या तुम्हारा पैदा करना कठिन है<sup>8</sup> या आकाश का? अल्लाह तआला ने उसे बनाया।  
 28 उसकी ऊँचाई चढ़ायी<sup>9</sup> फिर उसे ठीक ठाक कर दिया।<sup>10</sup>  
 29 और उसकी रात को अंधेरा किया<sup>11</sup> और उसके दिन को निकाला।<sup>12</sup>  
 30 और उसके बाद धरती को (समतल) बिछा दिया।<sup>13</sup>  
 31 उसमें से पानी और चारा निकाला।<sup>14</sup>  
 32 और पर्वतों को (मज्जूत) रूप से गाड़ दिया।<sup>15</sup>  
 33 यह सब तुम्हारे और तुम्हारे जानवरों के लाभ के लिए (है)।<sup>16</sup>  
 34 तो जब वह बड़ी विपीत (कियामत) आ जाएगी।<sup>17</sup>  
 35 जिस दिन कि इन्सान अपने किए हुए कर्मों को याद करेगा।  
 36 और (प्रत्येक) देखने वाले के सामने जहन्नम ज़ाहिर कर दी जाएगी।  
 37 तो जिस (व्यक्ति) ने उद्दण्डता अपनायी (होगी)।<sup>18</sup>  
 38 और सासारिक जीवन को तर्जाह दी (होगी)।<sup>19</sup>

1 बड़ी निशानी से मुराद एक कौल के अनुसार लाठी है, और एक कौल के अनुसार 'ये बैजा' है।

2 अर्थात् इमान से उसने मुंह फेरा।

3 और धरती पर फ़साद के लिए दौड़-धूप करता रहा, और मूसा<sup>20</sup> जो माजिजा लेकर आए थे उस के मुकाबला के लिए प्रयास में रहा।

4 अपने लश्कर को लड़ाई के लिए इकट्ठा किया, या जादूगरों को मूसा<sup>21</sup> से मुकाबला के लिए इकट्ठा किया, या लोगों को मूसा<sup>22</sup> और जादूगरों के बीच होने वाले मुकाबले को देखने के लिए इकट्ठा किया।

5 इस से उस मरुजन की मुराद यह थी कि उस से बड़ा कोई नहीं।

6 तो अल्लाह ने उसे अपनी पकड़ में ले लिया और उसे उस की सजा दी, नकारात्मक नकारात्मक संसार में डुबाने का अज़ाब है। और ताकि जो उस की खबर सुने उससे नरीहत प्राप्त करे।

7 फ़िरौन के कथा और जो उस के साथ किया गया, उस में बड़ी इत्रत और शिक्षा है उन लोगों के लिए जो अल्लाह से डरते और तक़ा रक़ाते पर चलना चाहते हैं।

8 अर्थात् मरने के बाद फिर से तुम्हे पैदा करना और कब्रों से उठाना तुम्हारे अदाज़ में अधिक कठिन है, या उस महान आकाश की जिस में उस की शक्ति और कारिगरी की बहुत सी विचित्रताएँ हैं जो कि देखने वालों से छुपी नहीं हैं।

9 अर्थात् उसे ऊँचाया बनाया जैसे धरती पर ऊँची विलिंग हाँती है।

10 अर्थात् उस की शक्ति और सूरत को समतल और बराबर बनाया, उसमें न तो देखाने हैं और न ही फटन है।

11 अर्थात् उसे अंधेरा, अफ़्लम, अनुष्ठान, अनुष्ठान के मायने में है, अर्थात् उसे अंधेरा किया।

12 अर्थात् उस के मायने में है, (और अंधेरा की जगह) इसलिए<sup>23</sup> ضحاها<sup>24</sup> कहा गया है कि चाशत का समय सब से उत्तम होता है। अर्थ यह है कि दिन को सूरज द्वारा रौशन किया।

13 अर्थात् आकाश को पैदा करने के बाद धरती को बिछाया।

14 धरती से नहरें और वर्षे बहाए, और चारे और पैदे उगाए जिन में पशु चरते हैं।

15 अर्थात् पर्वतों को धरती पर खेंटी की तरह मज्जूत गाढ़ दिया, ताकि जो उनके ऊपर रहते बसते हैं उनके साथ डिले न।

16 जो सारी मुसीबों से बढ़ कर होगी, और वह दूसरी फूंक होगी जो जनन्तियों को जनन और जहन्नमियों को जहन्नम के हवाले कर देगी।

17 अर्थात् इस तरह कर दी जाएगी कि किसी से छुपी नहीं रहेगी।

18 अर्थात् कुफ़ और पाप में सीमा पार किया होगा।

19 अर्थात् संसार को आखिरत पर वरीयता प्रदान किया होगा, और उसी के सब कुछ समझा होगा, और आखिरत के लिए कोई तैयारी नहीं की होगी।

20 اذْنَادِهِ رَبُّهُ بِالْوَادِ الْمَقِيسِ طَوْيٌ اذْهَبَ إِلَى فِرْعَوْنَ إِنَّهُ طَغَى  
 21 فَقُلْ هَلَكَ إِلَيْهِ أَنْ تَرَكَ وَاهِدِكَ إِلَيْ رَبِّكَ فَنَخْشِيَ قَارَبَهُ  
 22 الْأَلْيَةُ الْكُبُرَى فَكَبَ وَعَصَى شَمْ دَبِرَسَعَ فَحَسَرَ  
 23 فَنَادَى أَنَارِكَمُ الْأَعْلَى فَقَالَ أَنَّهُ لَكَ الْمَكَالُ الْآخِرَةُ وَالْأُولَى  
 24 إِنَّ فِي ذَلِكَ لِعْرَةً لَمَنْ يَخْشِيَ إِنَّمَاءَ أَشْدُ خَلَافَأَرَ السَّاءَ بِنَهَا  
 25 رَغَ سَعَكَهَا فَسَوَّهَا وَأَعْطَشَ لَيْلَهَا وَأَتْرَجَ صُهَمَهَا  
 26 وَالْأَرْضَ بَعْدَ ذِلِكَ دَحَنَهَا أَخْرَجَ مِنَهَا وَمَرَعَهَا  
 27 وَالْجَبَالَ أَرْسَهَا مَنَعَ لَكُمُ وَلَا تَعْمَكُ فَإِذَا جَاءَتِ الْأَطَامَةُ  
 28 الْكُبُرَى ۖ يَوْمَ يَذَكَرُ الْإِنْسَنُ مَاسَعَ وَبِرَزَتِ الْحَجِيمُ  
 29 لِمَنْ يَرَى فَمَانَمَ طَغَى وَأَثْرَ الْحَيَاةَ الْدُّنْيَا ۖ فَإِنَّ الْجَحَمَ  
 30 هِيَ الْمَأْوَى ۖ وَمَانَمَ حَافَ مَقَامَ رَبِّهِ وَنَهَى النَّفَسَ عَنِ الْهُوَى  
 31 فَإِنَّ الْجَنَّةَ هِيَ الْمَأْوَى ۖ يَسْتَلُونَكَ عَنِ السَّاعَةِ إِيَّا مَرْسَهَا  
 32 فِيمَ أَنْتَ مِنْ ذَكَرِهَا إِلَى رَبِّكَ مِنْهَا فَإِنَّمَا تَمْنَذِرُ  
 33 مَنْ يَخْشِنَهَا كَمْ يَوْمَ يَرَهَا لَمْ يَلْبِسْهَا إِلَّا عَشَيَّةً وَصَحْنَهَا

سُوْلَةُ عَبِيزَةٍ

34 (उसका) स्थान जहन्नम ही है।<sup>20</sup>  
 35 मगर जो व्यक्ति अपने रब के सामने खड़े<sup>21</sup> होने से डरता रहा तो उस रोग और अपने मन<sup>22</sup> को इच्छाओं से रोका होगा।  
 36 तो उसका स्थान जन्नत ही है।  
 37 लोग आपसे कियामत (प्रलय) के आने का समय पछते हैं।<sup>23</sup>  
 38 आपको उसके बयान करने से क्या सम्बन्ध?<sup>24</sup>  
 39 उसके (ज्ञान का) अंत तो आपके रब की ओर है।<sup>25</sup>  
 40 आप तो केवल उससे डरते रहने वालों को सावधान करने वाले हैं।<sup>26</sup>  
 41 जिस दिन यह उसे देख लेंगे, तो ऐसा लगेगा कि केवल दिन का अन्तिम हिस्सा या पहला हिस्सा ही (संसार में) रहे हैं।<sup>27</sup>

20 अर्थात् वही उस की जगह होगी जिस की ओर वह पनाह पकड़ेगा, उस के सिवाय कोई और शरण-स्थल न होगी जहाँ वह शरण ले सके।

21 अर्था कियामत के दिन अपने रब के सामने खड़े होने से डरता रहा।

22 और मन को उन पापों और गुनाहों से रोकता रहा जिसका इच्छा मन में जगता है।

23 अर्थात् वह कब आएगी और कब कश्ती की तरह लंगर अंदाज़ होगी?

24 उसके ज्ञान और वर्णन से आप का क्या सम्बन्ध है, उसका वास्तविक ज्ञान तो अल्लाह के पास है।

25 अर्थात् उस के ज्ञान की सीमा तेरे रब की ओर है, मात्र वही जानता है दुसरा कोई नहीं जानता।

26 अर्थात् आप मात्र उस व्यक्ति को डाले गाएं हैं जो कियामत आने से डर रहा हो।

27 अर्थात् जिस दिन वे उसे देख लेंगे तुनिया की मौज मस्ती सब कुछ भल जाएंगे, और उन्हें ऐसा लगेगा कि वह संसार में पूरे एक दिन भी नहीं रहे, मात्र दिन के पहले या अन्तिम हिस्सा में दुनिया में रहे हैं।

## سُورٰتُ اَبْسَ - 80

۱۰ کرتا ہੂں۔ اُلّاہ کے نام سے جو بُذَ مُهْبِن بُھُن رُحْم کرنے والा ہے।  
 ۱۱ وہ چِدِی چِدِیا ہُوا اور مُونَہ مُونَہ لی�ا۔<sup>۱</sup>  
 ۱۲ (کے ولے اس لئے) کہ یہ اسکے پاس اک اُنڈا آیا۔<sup>۲</sup>  
 ۱۳ تُبَرے<sup>۳</sup> کیا پتا شاید وہ سُوہر جاتا۔  
 ۱۴ یا نسیہت سُونتا<sup>۴</sup> اور یہ سے نسیہت لے لाभ پہنچاتا۔<sup>۵</sup>  
 ۱۵ (پر نُن) جو لَاپارवाहی کرتا ہے۔<sup>۶</sup>  
 ۱۶ اُسکو اور تو تُر پُراؤ بُحَان دے رہا ہے۔<sup>۷</sup>  
 ۱۷ ہالاکی یہ اسکے ن سُوہر نے سے تیری کوئی ہانی نہیں۔  
 ۱۸ اُور جو یُعْکِت تیرے اور دُوڑھتا ہُوا آتا ہے۔<sup>۸</sup>  
 ۱۹ اُور وہ دُر (بھی) رہا ہے۔  
 ۲۰ تو تُر اس سے بُنے-سُخی (بیمُوختا) بُرَتتا ہے۔<sup>۹</sup>  
 ۲۱ یہ یُعْتِیت نہیں<sup>۱۰</sup> (کُرُّاں نے) نسیہت کی (بیچ) ہے۔<sup>۱۱</sup>  
 ۲۲ جو چاہ یہ اس سے نسیہت لے۔<sup>۱۲</sup>  
 ۲۳ یہ تو سُمَانِیت کیتا ہے۔<sup>۱۳</sup>  
 ۲۴ جو اُنچ،<sup>۱۴</sup> مہان اور پَوِیْر اور شُرُح ہے۔<sup>۱۵</sup>  
 ۲۵ اُسے لیخنے والوں کے ہائی میں ہے۔<sup>۱۶</sup>  
 ۲۶ جو بُجُر<sup>۱۷</sup> اور پَوِیْر ہے۔<sup>۱۸</sup>  
 ۲۷ اُلّاہ کی مارِ انسان پر، کیتنہ نا-شُکر (کُرَاث) ہے۔

۱ نبی<sup>۱</sup> نے تیرہ چَدَای اور اپنا مُونَہ فَرَ لیا۔  
 ۲ اپنے پاس اُنڈا کے اپنے کی وجہ سے، اس سُورت کے ناجیل ہونے کا کارण یہ ہے کہ نبی<sup>۲</sup> کے پاس کوچ کُریش کے شریف لोگ ہیتے ہوئے ہے، جن سے اپاں باتے کر رہے ہے، اپا کی چاہت ہی کہ یہ اُسْلَام سُوہیکار کر لے، اُنہوں میں اُبُولَلَہ<sup>۳</sup> اُنہے اُسے مکتوُم جو کہ اُنہے ہے اور نہ کس ہبھا بھا میں سے ہے آ پہنچے، اور اپا سے بُرَم سُمَانیت باتے پُھنے لے گے، اُلّاہ کے رُسُل کو یہ کتاب کلما میں پر ناگواری ہوئی اور یہ اُن کی اور بُحَان نہیں دیکھا تو یہ ایسے ناجیل ہوئی۔  
 ۴ اے مُحَمَّد<sup>۴</sup>۔  
 ۵ یا نسیہت پ्रاٹ کرتا اور جو نسیہت کی بات یہ سے باتاتے یہ سے لَا بَحْر پہنچتا۔  
 ۶ اُور جو تُر سے بے پارویا بُرَتتا ہے، اُور یہ نبی<sup>۵</sup> سے مُونَہ مُونَہ ہے۔  
 ۷ یہ دِرِ اُسْلَام ن لاتا تو یہ سے تُرہے کیا ہیں پہنچتا، تُرہاری جیسا داری تو ماتر پہنچانے کی ہے، اس لیلے اُسے کافیروں کے مالکوں کو ایک نہیں۔  
 ۸ اُرثاًت وہ (اُبُولَلَہ پُر عُزْم اُنہے مکتوُم) تیرے پاس دُوڑتے ہوئے اپا ہے تاکہ تُر یہ اُنکو لَا بَحْر کا مار یکھائے اور اُلّاہ کی باتوں کی نسیہت کرے۔  
 ۹ تو تُر اس سے بیمُوختا بُرَتتا ہے اور اپنا مُونَہ فَرَ لےتا ہے۔  
 ۱۰ تیرا یہ بُرَتَی ٹیک نہیں، اُسے لوموں کا تو سُمَان کرنا چاہیں، ن کی اُن سے مُونَہ فَرَ نہیں۔  
 ۱۱ اُرثاًت یہ ایسے یا یہ سُورت نسیہت ہے، اُور اس لایک ہے کہ اس سے نسیہت کرے، اُور اسے سُوہیکار اور اس کے تکاژوں کے اُنوسار کرم کرے۔  
 ۱۲ اُرثاًت یہ اسے کیتا ہے کہ جو ہانی اُلّاہ کے کارण اُلّاہ کے پاس بُدھ سُمَانِیت ہے۔  
 ۱۳ اُور اُلّاہ کے پاس بُذَ کدھ و مُنْجِلَت باتیں ہیں۔  
 ۱۴ پَوِیْر ہے کیونکہ یہ پاک لوموں کے اُلّاہ کوئی بُرَتی ہی نہیں، اُور شہزادوں اور کافیروں کی پُھنچ سے سُورکشی ہے، (اس لیلے) اُن میں کوئی ہے رہا فَرَ نہیں۔  
 ۱۵ سفر، سافر<sup>۱۵</sup> کی جماعت ہے، یہ سیفِ رُحْم وہ فَرِیْشتے ہے جو اُلّاہ اور رُسُلوں کے بُیُوچ دُت کے کام کرتے ہیں، اُور اُلّاہ کی بُھی بُھی کوئی تکمیل ہے۔  
 ۱۶ اپنے رُب کے پاس شریف اور سُمَانِیت ہے۔  
 ۱۷ پَرِیْجَار اُور اپنے رُب کے آجیا کا پالن کرنے والے ہیں، اُور اپنے اُنہیں میں سچے ہیں۔  
 ۱۸ یہاں انسان سے کافیر انسان مُرَاد ہے، اُرثاًت اسکی نا-شُکری بے-ہد و بُذَ ہوئی ہے۔

۱۹ عَسْ وَقَوْنَ ۱۱ أَنْ جَاءَهُ الْأَغْنَى ۱۲ وَمَالِدِ رَبَّكَ لَعَلَهُ يَرْتَكِنَ ۱۳ أَوْ  
 ۲۰ يَذْكُرُ فَنْفَعَهُ الْذَّكَرَى ۱۴ أَمَانَ أَسْغَنَى ۱۵ فَانَّ لَهُ تَصْدِيَ ۱۶  
 ۲۱ وَمَاعِلَتِكَ الْأَنْزَكِيَّ ۱۷ وَمَامَانَ جَاءَكَ يَسْعَى ۱۸ وَهُوَ يَحْشِنَ ۱۹ فَانَّ  
 ۲۲ عَنْهُ تَلَهِيَ ۱۰ كَلَّا تَنْهَنَدْكَرَهُ ۱۱ فَنَّ شَاءَ ذَكْرَهُ ۱۲ فِي صُحْفِ مَكْرَمَةٍ  
 ۲۳ مَرْفُوعَ مَطْهَرَمْ ۱۴ بِأَيْدِي سَفَرَةٍ ۱۵ كَرَمَ بِرَوْرَهُ ۱۶ قَنْلَ الْإِنْسَنَ  
 ۲۴ مَالَ الْهَرَهُ ۱۷ مِنْ أَيْ شَيْءٍ خَلَقَهُ ۱۸ مِنْ طَقْلَهُ خَلَقَهُ فَقَدَرَهُ ۱۹ ثُمَّ  
 ۲۵ الْتَّسْبِيلَ يَسَرَهُ ۲۰ شَمَّ أَمَانَهُ فَاقْبَرَهُ ۲۱ شَمَّ إِذَا شَاءَ أَنْشَرَهُ ۲۲ كَلَّا لَمَّا  
 ۲۶ يَقْضَ مَا أَمَرَهُ ۲۳ فَلَيْنُطِلُ الْإِنْسَنَ إِلَى طَعَامِهِ ۲۴ أَنَاصَبَنَا الْمَاءَ صَبَّا  
 ۲۷ مُشَقَّنَا الْأَرْضَ شَقَّا ۲۵ فَأَبْنَنَا فِي هَاجَ ۲۶ وَعَبَنَا وَقَصَباً  
 ۲۸ وَزَيَّنَنَا وَنَخَلَ ۲۹ وَحَدَّأَيَنَ غَلَبَاً ۳۰ وَفَكَهَهُ وَبَأَنَا ۳۱ مَنْعَالَكُ  
 ۳۲ وَلَا نَعِيْكُمْ ۳۲ فَإِذَا جَاءَتِ الْأَصَاحَةُ ۳۳ يَوْمَ يَفْرَلُ الْمَرْءُ مِنْ أَخِيهِ  
 ۳۴ وَأَمِهِ، وَأَبِيهِ ۳۵ وَصَاحِبِيهِ، وَبَنِيهِ ۳۶ لِكُلِّ أَمْرٍ مُمْهِنٍ يَوْمَ يَمْدِ شَانٌ  
 ۳۷ يَعْنِيهِ ۳۷ وَجُوهُ يَوْمَيْدِ مُسْنَرَةَ ۳۸ ضَاجِكَةَ مُسْتَبِشَرَةَ ۳۹ وَجُوْهُ  
 ۴۰ يَوْمَيْدِ عَلَيْهَا غَبَرَةَ ۴۱ تَرَهَقَهَا فَقَرَةَ ۴۲ أَوْلَيَكُمُ الْكَفْرُ الْفَنَجَرَةَ

۴۳ عَسْ اَلْلَاهُ نے کیس چیز سے پے دا کیا?<sup>۱۹</sup>  
 ۴۴ اک مُنی (بیوی) سے پے دا کیا<sup>۲۰</sup> ۲۱ فیر یہ اسکو اُندھا پر رکھا۔  
 ۴۵ فیر یہ اسکے لیا۔ راستا آسانا کیا<sup>۲۲</sup>  
 ۴۶ فیر یہ میت دی فیر کبڑے میں گاڈ دیا<sup>۲۳</sup>  
 ۴۷ فیر جب چاہے یہ سے جنبدار کر دے گا<sup>۲۴</sup>  
 ۴۸ کبھی بھی نہیں، یہ اس نے اب تک اُلّاہ کی آجیا کا پالن نہیں کیا<sup>۲۵</sup>  
 ۴۹ اُنہاں کو چاہیے کہ اپنے خانے کی اور دے دے<sup>۲۶</sup>  
 ۵۰ کی ہم نے خوب پانی بار سا یا۔

۵۱ اُرثاًت اُلّاہ نے اس کافیر کو کیس چیز سے پے دا کیا۔  
 ۵۲ اُرثاًت اس کافیر کے پے دا شکیا یہی سے ہوئی ہے جو پے شا گے کے س्थان سے نیکلائیا ہے، فیر اسے کافیر کے بُمَبَد کیوں کر کے بھاتا ہے جو پے شا گے نیکلائیا کے س्थان سے دی بار نیکلائیا ہے۔  
 ۵۳ اُرثاًت اسے ٹیک تاک بنا یا، اسے دی ہاٹ، دی پیر، دی اُنچ اور دی دُسری بھانے والی چیزیں دی۔  
 ۵۴ بھالاً اور بُراؤ اُسْلَام کرنے کے لیا۔ اس کے لیا۔  
 ۵۵ اُرثاًت مُرَسَنے کے پشانت اسے کبڑے میں دفنا یا کا آدے ش دیا، تاکہ اسکا سُمَان بُرکار رہے، اسے بُرھتی پر پڈا نہیں رہنے دیا کہ پشانت اسے نوچ نوچ کر کے بار یا دیا۔  
 ۵۶ اُرثاًت جس سے سُمَان بُرھا یا اسے دُوچارا جیگیت کرے گا۔  
 ۵۷ اُرثاًت اسے پالن کرنے میں کرم کی، کوچ نے کوچ کر کے اُر کوچ نے نا-فراہمی کر کے، اُر جو یہیں کا اُلّاہ نے آدے ش دیا یا اسے بُرھت کام لوموں نے پورا کیا۔  
 ۵۸ اُرثاًت اسے پیچار کرنا کا رہا چاہیے کہ اُلّاہ نے اس کی روچی جو اس کے یہیں کا کاران ہے کیسے پے دا کی۔

سُوْدَةُ التِّكْوِنَةِ

إِذَا الْسَّمْسُ كُوَرَتْ ١٦١ وَإِذَا الْجَوْمُ أَنْكَرَتْ ١٦٢ وَإِذَا الْجَبَالُ  
سَيَرَتْ ١٦٣ وَإِذَا الْعَشَارُ عُطَلَتْ ١٦٤ وَإِذَا الْوَهْوُ شَحِيرَتْ  
وَإِذَا الْبَحَارُ سُجَرَتْ ١٦٥ وَإِذَا النَّفُوسُ رُوَجَتْ ١٦٦ وَإِذَا  
الْمَوْءُودَةُ دَهَسَيْلَتْ ١٦٧ إِبَايِ ذَنْبٍ قُتَلَتْ ١٦٨ وَإِذَا الصَّحْفُ شَرَتْ  
وَإِذَا الْمَاءُ كُشْطَتْ ١٦٩ وَإِذَا الْجَحِيمُ سُعَرَتْ ١٧٠ وَإِذَا الْجَنَّةُ  
أَزْلَفَتْ ١٧١ عَلِمَتْ نَفْسٌ مَا أَحْضَرَتْ ١٧٢ فَلَا أَقِيمُ بِالْخَسَّ  
الْجَوَارُ الْكَنْسَ ١٧٣ وَأَتَيْلَ إِذَا عَسَسَنْ ١٧٤ وَالصَّبِيجُ إِذَا نَفَسَ  
إِنَّهُ لَقَوْلُ رَسُولِ كَرِيمٍ ١٧٥ دِي قُوَّوْ عَنْ ذِي الْعَرْشِ مِكِينٍ ١٧٦ مَطَاعَ  
كَمْ أَمِينٍ ١٧٧ وَمَا صَاحِبُكَ يَمْجُونٍ ١٧٨ وَلَقَدْ رَاهَ بِالْأَفْقِ الْمُثِينَ  
وَمَا هُوَ عَلَى الْغَيْبِ بِضَيْنٍ ١٧٩ وَمَا هُوَ بِقَوْلِ شَيْطَنٍ تَّجِيْمٍ  
فَإِنَّهُمْ تَذَهَّبُونَ ١٨٠ إِنْ هُوَ إِلَّا ذَكْرٌ لِلْعَانِمِينَ ١٨١ إِنَّمَنْ شَاءَ مِنْكُمْ أَنْ  
يَسْتَقِيمَ ١٨٢ وَمَا نَشَاءُ وَنَإِلَّا أَنْ يَشَاءَ اللَّهُ رَبُّ الْعَالَمِينَ

سورة الانفاطل

- २६ फिर धरती को अच्छी तरह फाड़ा।<sup>1</sup>

२७ फिर उसमें अन्न उपजाए<sup>2</sup>

२८ और अंगूर और तरकारी<sup>3</sup>

२९ और जैन और खट्टूर।

३० और घने बाग।

३१ और मेवा और (धास) चारा<sup>4</sup> (भी उगाया)।

३२ तुम्हारे प्रयोग और लाभ के लिए और तुम्हारे चौपायें के लिए।

३३ फिर जब कान बहरे करने वाली<sup>5</sup> (कियामत) आ जाएगी।

३४ तो आदमी उस दिन अपने भाई से।

३५ अपनी माँ और बाप से।

३६ अपनी पत्नी और संतान से भागे गा<sup>6</sup>

३७ उनमें से प्रत्येक को उस दिन एक ऐसी फिक्र होगी जो

**1** अर्थात् कि वह बीज जैसे कम्ज़ोर स्वतूं से जब वह पहली बार उगता है तो धरती में फट जाता है, अर्थात् उस में यह शक्ति नहीं थी कि वह धरती को फाड़ कर बाहर निकले यह शक्ति हम ने उसे दी है।

**2** जो इन्सान की गोपी है, अर्थात् पौदा बराबर बढ़ता रहता है यहाँ तक कि अनाज और दान में बदल जाता है।

**3 فضیا** एक हरा पौदा मुराद साग और तरकारी जो लटकती है।  
**4 ابیا** वह धास और चारा जो स्वयं उपजे जिसे बोया न जाता हो, जिसे

पशु खाते हैं।

**صاختہ ۵** کی�امات کے دین کی چیخ جو اتنی بھयکر ہوگی کہ کاؤں کو بہارا کر دے گی۔

6 यह सब से खास करीबी लोग हैं और इस लायक है कि उनके साथ नरमी की जाए, तो ऐसे लोगों से उस का भागना बे-हृद भयानकपन के कारण ही हो सकता है।

उसके लिए काफी होगी।

- 38** बहुत से चेहरे उस दिन रौशन<sup>8</sup> होंगे ।  
**39** (जो) हँसते हए प्रसन्न होंगे ।  
**40** और बहुत से चेहरे उस दिन धूल में अटे<sup>9</sup> होंगे ।  
**41** जिन पर कालिक चढ़ी होगी ।<sup>10</sup>  
**42** वे यही कफिर बद-किर्दारा (दुराचारी) लोग होंगे ।<sup>11</sup>

सूत्रत तकवीर - 81

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहबूब बहुत रहम करने वाला है।  
 जब सूरज लपेट लिया जाएगा। 12  
 और जब सितारे झङ्ग कर गिरने लगेंगे। 13  
 और जब पर्वत चलाए जाएंगे। 14  
 और जब हामिला (र्घवती) उंटनियाँ छोड़ दी जाएंगी। 15  
 और जब वस्त्री जनवर (वन प्राणी) इकट्ठे किए जाएंगे। 16  
 और जब सागर भड़काए जाएंगे। 17  
 और जब जाने (जिसमें से) मिला दी जाएंगी। 18  
 और जब जिन्दा गाड़ी गयी लड़कियों से प्रश्न किया जाएगा  
 कि किस पाप के कारण उनकी हत्या की गयी? 19  
 और जब नाम-ए-आमाल (कर्मपत्र) खोल दिए जाएंगे। 20  
 और जब आकाश की खाल खोंच ली जाएंगी। 21  
 और जब जहन्म भड़कायी जाएंगे। 22  
 और जब जन्नत करीब कर दी जाएंगी। 23

**7** जो उहें उन के अपनों से बे-परवाह कर देगी, और उहें देख कर वह इस डर से भागेंगे कि कहीं वह उन से नेकी न मांग बैठें, या इस कारण भागेंगे कि उन का दख़ न देख सकें।

٨ سفرة رौشان ।

۹ غۡل

**10** अर्थात् उस पर कालिक उदासी छाई होगी

**11** अर्थात् धल अटे चेहरे वाले।

**12** अर्थात् जब सूरज गेंद के रूप का कर दिया जाएगा, और लपेट कर फेंक दिया जाएगा।

**13** अर्थात् टूट टूट कर गिरने और बिखरने लगेंगे, और एक कौल यह है कि वे बै-नूर कर दिए जाएंगे।

**16** अर्थात् उन्हें भी जीवित किया जाएगा ताकि एक-दूसरे से अपना बदला ले सकें, और एक कौल यह है कि उन की हत्या उन की मौत है।

**17** अर्थात् वह जला दिए जाएंगे और उनमें आग भड़क उठेगी।

18 अर्थात् मोमिनों की जानें बड़ी बड़ी आँख वाली हूरों से और कफिरों की जानें शैतोनों से मिला दी जाएगी, हसन बसरी कहते हैं कि हर व्यक्ति को उस की

पार्टी और उसके हम ख़्याल लोगों से मिला दिया जाएगा, यहूदी को यहूदियों के साथ, ईसाई को ईसाईयों के साथ, मजूसी को मजूसियों के साथ, मुनाफ़क़ को

<sup>19</sup> मुनाफिकों के साथ, और मोमिन को मोमिनों के साथ मिला दिया जाएगा। अर्थात् अरबों के यहाँ जब कोई लड़की पैदा होती थी तो उसे आर या

भुक्तमरी के डर से जिन्दा दफन कर देते थे, इस प्रकार हत्यारा से प्रश्न करके उस की सरजनिश की जाएगी, क्योंकि वास्तविक मुत्रिम तो वही है, न कि दफन

की जाने वाली लड़की; क्योंकि बिना किसी पाप के उस की हत्या की गयी है। 20 अर्थात् मौत के समय यह कर्म-पत्र लपेट दिए जाते हैं, फिर कियामत के दिन दिन दे दिये दे दिये दे दिये दे दिये।

के दिन हँसाब के लिए खाल दिए जाएं।  
21 अर्थात् जब उधेड़ दिया जाएगा जैसे छत उधेड़ी जाती है।  
22 अर्थात् अचल सा सामान ऐसा हो आदम ने सामान से शरना देसे।

**अर्थात् अल्लाह का गुरुता आर बनू आदम का पाप उस भड़का दग।**  
**अर्थात् परेहजगारों के करीब कर दी जाएगी, यह पूरे १२ हैं, जिन में शूरू के ६ का सम्बंध संसार से है, और अन्तिम ६ का सम्बंध आखिरत से।**

- 14** तो उस दिन प्रत्येक व्यक्ति जान लेगा, जो कुछ लेकर आया होगा।  
**15** मैं कृसम खाता हूँ पीछे हटने वाले<sup>2</sup>  
**16** चलने-फिरने वाले<sup>3</sup> छिपने वाले सितारों की।  
**17** और रात की जब जाने लगे<sup>5</sup>  
**18** और सवेरे की जब चमकने लगे।<sup>6</sup>  
**19** बे-शक यह एक महान रसूल का कहा हुवा है।<sup>7</sup>  
**20** जो शक्तिशाली है<sup>9</sup> अर्थे वाले (अल्लाह) के पास सम्मानित है।  
**21** जिसका वहाँ (आकाशों पर आदेश का) पालन किया जाता है<sup>10</sup> (वह) अमीन है।<sup>11</sup>  
**22** और तुम्हारा साथी दीवाना नहीं है।<sup>12</sup>  
**23** उसने उस (फरिश्ते) को आकाश के खुले किनारे पर देखा भी है।<sup>13</sup>  
**24** और यह<sup>14</sup> गैब (परोक्ष) की बातें बताने में कंजूस भी नहीं है।<sup>15</sup>  
**25** और यह (कुरआन) मदूद शैतान का कहा हुवा नहीं।<sup>16</sup>  
**26** फिर तुम कहाँ जा रहे हो।<sup>17</sup>  
**27** यह तो सारे संसार वालों के लिए नसीहत नामा (शिक्षापत्र) है।  
**28** (विशेषरूप से उसके लिए) जो तुम्हें से सीधे गाते पर चलना चाहे।  
**29** और तुम बिना सारे जहाँ के रब के चाहे, कुछ नहीं चाह सकते।

## सूरतुल इफेतार - 82

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान बहुत रहम करने वाला है।<sup>18</sup>

- 1** जब आकाश फट जाएगा।

- 1** अर्थात जब कर्म-पत्र खोल दिए जाएंगे तो प्रत्येक व्यक्ति को यह पता चल जाएगा कि वह कैसा कर्म कर के संसार से आया है बुराई या भलाई।  
**2** अल्लाह तआला सितारों की कृसम खा रहा है जो दिन को अपने मन्ज़र से पीछे हट जाते हैं, और सुर्य के प्रकाश के कारण दिखाई नहीं देते।  
**3** जो अपने स्थान पर चलते रहते हैं।  
**4** और जो दूरने के समय छुप जाते हैं, और कृस, کناس से है जिस में वहशी जानवर जैसे हिरण वर्णीय छुपते हैं।  
**5** अर्थात जब वह चर्ची गई हो और उसका अंधेरापन खत्म होने लगा हो, और उजाला होने लगा हो।  
**6** अर्थात सवेरे की जब वह भीनी भीनी और सुहानी हवा लेकर आ गई हो।  
**7** अर्थात जिब्रील<sup>19</sup> का; क्योंकि वही कुरआन अल्लाह की ओर रसूलुल्लाह<sup>20</sup> के पास लेकर उतरते थे।  
**8** अर्थात बहुत शक्तिशाली है, जो भी काम उस के हवाले किया जाए उसे पूरी शक्ति के साथ करता है।  
**9** अर्थात अल्लाह के पास बड़े मर्तवा वाला है।  
**10** अर्थात फरिश्तों में उसके आदेश का पालन होता है, वे उसकी ओर आते हैं और उस की बात मानते हैं।  
**11** अर्थात वह्य के बारे में अमीन और भरोसा के काबिल है।  
**12** साथी से मुग्रद मुहम्मद<sup>21</sup> हैं, उन्हें साथी यह कहने के लिए बताया गया है कि वह तुम्हारे वंश और नगर के हैं जिन्हें तुम खब जानते हो, वह लोगों में सब से बड़े बुद्धिमान और पुरुष हैं, (फिर तुम उह दीवाना क्यों कह रहे हो? क्या यह स्वयं तुम्हारे पालपन का सबूत नहीं है?)  
**13** अर्थात मुहम्मद<sup>22</sup> ने जिब्रील<sup>23</sup> को असली रूप में देखा है, उन के ६०० बाजू थे, मुजाहिद कहते हैं कि अल्लाह के रसूल<sup>24</sup> ने उहे अज्ञाद की ओर जो मक्का के पूरब में है, देखा।  
**14** अर्थात मुहम्मद<sup>25</sup>।  
**15** अर्थात आप आकाश की खबरें बताने में बड़ीली नहीं करते, और वह्य की लोगों को अच्छी तरह बता और सिखा देते हैं।  
**16** अर्थात यह कुरआन किसी शैतान की बात नहीं, जो आसमान की कुछ बातें चोरी छूपे सुन लेते हैं, और जिन्हें शिहाबे-साकिब से मार मार कर भगाया जाता है।  
**17** अर्थात किस रास्ते पर जा रहे हो, क्या यह उस रास्ते से जिसे हमने तुम से बयान किया अधिक स्पष्ट है?  
**18** फरिश्तों के उत्तरने के कारण फट जाएगा।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ  
 إِذَا السَّمَاءُ أَنْفَطَرَتْ ١ وَإِذَا الْكَوَافِرُ أَنْتَرَتْ ٢ وَإِذَا الْبَحَارُ  
 فُجِرَتْ ٣ وَإِذَا الْقُبُورُ بُعْرَتْ ٤ عَلِمَتْ نَفْسٌ مَا قَدَّمَتْ  
 وَأَخْرَتْ ٥ يَأْتِيهَا الْإِنْسَنُ مَا غَرَّهُ كِبِيرَ الْكَبِيرِ ٦ الَّذِي  
 خَلَقَكَ فَسُونَكَ فَعَدَلَكَ ٧ فِي أَيِّ صُورَةٍ مَا شَاءَ رَكِبَكَ  
 كَلَّا بَلْ تُكَذِّبُونَ بِاللَّدِينِ ٨ وَإِنَّ عَيْنَكُمْ لَحَفَظَنَ ٩ كِرَاماً  
 كَثِيرَنَ ١٠ يَعْمَلُونَ مَا قَنَعُونَ ١١ إِنَّ الْأَبْرَارَ لَفِي نَعِيمٍ ١٢ وَإِنَّ  
 الْفَجَارَ لَفِي حَيَّمٍ ١٣ يَصْلُوْهَا يَوْمَ الْدِينِ ١٤ وَمَا هُنَّ بِغَایْبَيْنَ  
 مَمَّا أَدْرَكَ مَا يَوْمُ الدِّينِ ١٥ إِنَّمَا أَدْرَكَ مَا يَوْمُ الدِّينِ ١٦  
 يَوْمَ لَا تَمْلِكُ نَفْسٌ لِنَفْسٍ شَيْئًا وَالْأَمْرُ يَوْمَئِذٍ لِلَّهِ ١٧ ١٨

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ  
 سُورَةُ الْمُطَفَّقِينَ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ  
 وَيَلِ الْمُطَفَّقِينَ ١ الَّذِينَ إِذَا أَكَلُوا عَلَى النَّاسِ يَسْمَعُونَ  
 وَإِذَا كَأْوُهُمْ أَوْ زَوْهُمْ يُخْسِرُونَ ٢ أَلَا يَعْلَمُنَ أُولَئِكَ أَهْمَمُ  
 مَبْعُوثُونَ ٣ يَوْمَ يَعْظِمُ النَّاسُ لِرَبِّ الْعَالَمِينَ ٤

- 2** और जब सितारे झड़ जाएंगे।<sup>19</sup>  
**3** और जब सागर बह चलेंगे।<sup>20</sup>  
**4** और जब कब्रें (फाउकर) उखाड़ दी जाएंगी।<sup>21</sup>  
**5** उस समय प्रत्येक व्यक्ति अपने आगे भेजे हए और पीछे छाड़ हए (अर्थात अगले पिछले कर्मों को) जान लेगा।<sup>22</sup>  
**6** है इन्सान! तझे अपने करीम रब से किसने बहकाया?<sup>23</sup>  
**7** जिस (रब ने) तुझे पैदा किया<sup>24</sup> फिर ठीक-ठाक किया<sup>25</sup>  
 फिर (उचित रूप से) बरावर बनाया।<sup>26</sup>  
**8** जिस रूप में तुझे चाहा ढाला।<sup>27</sup>

- 19** अर्थात बिखर-बिखर कर गिरने लगेंगे।  
**20** एक कौल यह है कि आपस में मिल कर सब एक हो जाएंगे, या वह फूट पड़ेंगे जैसे ज्यालामुखी पूटता है, और यह कियामत आने से पहले होगा, (जैसा कि इस से पहली बाली सुरत में गुज़रा है।)  
**21** अर्थात उस की मिट्ठी पलट दी जाएगी और उस के मुद्रे बाहर आ जाएगी।  
**22** अर्थात जो अच्छे और बुरे कर्म उसने आगे भेजा होगा, और जो उसने पीछे छोड़े होंगे उनका ज्ञान कर्म-पत्र के बिखेरे जाने के समय हो जाएगा, उस की कोई अच्छाई और बुराई उस से छुपी नहीं रहेगी।  
**23** अर्थात फिर किस चीज़ ने तुझे थोके में डाल दिया कि तूने अपने रखे करीम का इन्कार किया, और एक कौल यह है कि उस के थोके में रखने से मुराद अल्लाह का उपको माफ़ विए रहना और उसे अपनी पकड़ में लेने में जल्दी न करना है।  
**24** जिस रब ने तुझे मनी से पैदा किया जब कि तू कुछ नहीं था।  
**25** अर्थात ऐसा इन्सान बना दिया जब कि देखता मुनता हो, और अकल रखता हो।  
**26** अर्थात तूने सीधी कामत और अच्छे रूप का बनाया, और तेरे अंगों को फिट-फाट बनाया।  
**27** अर्थात अपनी चाहत के अनुसार उसने तेरी जैसी शक्त चाही बनाई,

किसी चीज़ का अधिकारी न होगा, और सारे आदेश उस दिन अल्लाह के ही होंगे।<sup>7</sup>

## सूरतुल मुताफिकफीन - 83

كَلَّا إِنْ كَتَبَ الْفُجَارُ لَنَفِي سِجِينٌ<sup>٨</sup> وَمَا أَذْرَكَ مَاصِعِينٌ<sup>٩</sup> كَبْرٌ  
مَرْفُومٌ<sup>١٠</sup> وَلِلْيَوْمِ لِلْمُكَبِّينَ<sup>١١</sup> الَّذِينَ يُكَبِّونَ يَوْمَ الدِّينِ<sup>١٢</sup>  
وَمَا يَكْذِبُ بِهِ إِلَّا كُلُّ مُعْتَدِلٌ أَشِيمٌ<sup>١٣</sup> إِذَا نَلَّ عَلَيْهِ الْمُنَافَّالْأَسْطَرُ  
الْأَوَّلِينَ<sup>١٤</sup> كَلَّا بَلْ رَانَ عَلَى قُلُوبِهِمْ مَا كَوَأْنَ كُسُونَ<sup>١٥</sup> كَلَّا إِنَّهُمْ  
عَنْ يَوْمِ الْيَوْمِ لَمْ يَحْمُوُنَ<sup>١٦</sup> كَمْ تَهْمِمُ لَصَالِوْلَالْحَجَّمِ<sup>١٧</sup> كَمْ يَهْمِلُ  
هَذَا الَّذِي كُثُمَ بِهِ تُكَبِّونَ<sup>١٨</sup> كَلَّا إِنْ كَتَبَ الْأَبْرَارُ لَفِي عَلَيْنَ  
وَمَا أَدْرَكَ مَاعِلَّوْنَ<sup>١٩</sup> كَبْرٌ مَرْفُومٌ<sup>٢٠</sup> يَتَهَمَّدُ الْمُغْرِبُونَ<sup>٢١</sup>  
إِنَّ الْأَبْرَارَ لَفِي نَعِيمٍ<sup>٢٢</sup> عَلَى الْأَرَائِكِ يَنْظُرُونَ<sup>٢٣</sup> تَعْرِفُ فِي  
وَجُوهِهِمْ نَصْرَةَ الْعَيْمِ<sup>٢٤</sup> يُسْقَوْنَ مِنْ رَحِيقِ مَخْشُومٍ<sup>٢٥</sup>  
خَتْمَهُ مِسْكٌ<sup>٢٦</sup> وَفِي ذَلِكَ فَيَنَّافِسُ الْمُنَفَّسُونَ<sup>٢٧</sup> وَمِنْ أَجْهَمِ  
مِنْ تَسْبِيمٍ<sup>٢٨</sup> عَيْنَنَا يَتَرَبَّ بِهَا الْمُغْرِبُونَ<sup>٢٩</sup> إِنَّ الَّذِينَ  
أَجْرَمُوا كَانُوا مِنَ الَّذِينَ أَمْنَوْا يَضْحِكُونَ<sup>٣٠</sup> وَإِذَا أَرْسَوْا هُمْ  
يَنْعَمُونَ<sup>٣١</sup> وَإِذَا أَنْقَبُوا إِلَيْهِمْ أَنْقَلَبُوا فَكِهِينَ<sup>٣٢</sup>  
وَإِذَا رَأُوهُمْ قَالُوا إِنَّهُؤُلَاءِ لَضَالُّوْنَ<sup>٣٣</sup> وَمَا أَرْسَلُوا عَلَيْهِمْ  
حَفْظِيْنَ<sup>٣٤</sup> فَالْيَوْمُ الَّذِينَ أَمْنَوْا مِنَ الْكُفَّارِ يَضْحِكُونَ<sup>٣٥</sup>

9 कभी भी नहीं<sup>1</sup>, बल्कि तुम तो दण्ड और बदले के दिन को झटलाते हो।<sup>2</sup>

10 वे-शक तूम पर इज्जत वाले रक्षक।

11 लिखने वाले नियुक्त हैं।

12 जो कुछ तुम करते हो वे जानते हैं।<sup>3</sup>

13 वे-शक नेक लोग (जनत के ऐशो-आराम और) नेमतों में होंगे।

14 और यकीनन कर्कर्मी लोग जहन्नम में होंगे।

15 बदले वाले दिन<sup>4</sup> उसमें जाएंगे।

16 वे उसमें से कभी गायब न हो पाएंगे।<sup>5</sup>

17 तझे कुछ पता भी है कि बदले का दिन क्या है?

18 मैं फिर (कहता हूँ कि) तुझे क्या पता कि बदले (और दण्ड) का दिन क्या है?<sup>6</sup>

19 (वह है) जिस दिन कोई व्यक्ति किसी व्यक्ति के लिए

उस में तेरा कोई अधिकार नहीं रहा।

1 यह डॉट फटकार है अल्लाह की उस नवाजिश से थोका खाने पर और उसे उसके कुक्र का माध्यम बनाने पर।

2 अर्थात बदले के दिन का।

3 अल्लाह फरमा रहा है कि तुम बदले के दिन को झटला रहे हो जब कि अल्लाह के फूरिशे तुम्हारी निगरानी पर नियुक्त हैं और तुम्हारे सारे कर्म लिख रहे हैं, ताकि कियामत के दिन तुम से उस का हिसाब लिया जा सके।

4 अर्थात बदले का दिन जिसे वे झटलाया करते थे, उसी दिन उसकी लपट और शोलों में उड़ने जलाना पड़ेगा।

5 अर्थात कभी उससे अलग नहीं होंगे, बल्कि सदा उसी में रहेंगे।

6 अर्थात सवाब और बदले का दिन।

शुरु करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरान बहुत रहम करने वाला है।<sup>8</sup>

बड़ी बुराई है नाप-तौल में कमी करने वालों के लिए।<sup>9</sup>  
कि जब लोगों से नाप कर लेते हैं, तो पूरा पूरा<sup>10</sup> लेते हैं।  
और जब उन्हें नाप कर या तौल कर देते हैं<sup>11</sup>, तो कम लेते हैं।  
क्या उन्हें अपने मरने के बाद जीवित हो उठने का विश्वास नहीं है।<sup>12</sup>

उस बड़े भारी दिन के लिए।

जिस दिन सभी लोग सारे जात के रब के सामने खड़े होंगे।<sup>13</sup>  
वे-शक कुर्कियों का नाम-ए-आ'माल (कर्म पत्र) सिज्जीन में है।

तुझे क्या पता कि सिज्जीन क्या है?<sup>14</sup>

यह तो लिखी हुई किताब है।

उस दिन झुठलाने वालों की बड़ी दुर्गत है।

जो बदले और दण्ड के दिन की झुठलाते रहे।

उसे केवल वही झुठलाता है, जो सीमा उल्लंघन कर जाते वाला और पापी होता है।<sup>15</sup>

जब उसके सामने हमारी आयतें पढ़ी जाती हैं<sup>16</sup>, तो कह देता है कि यह अगले लोगों की कथाएं हैं।<sup>17</sup>

यूँ नहीं।<sup>18</sup> बल्कि उनके दिलों पर उनके कर्म के कारण मारचा चढ़ गया है।<sup>19</sup>

7 अर्थात उस दिन न कोई फैसला कर सकेगा, और न कोई किसी के लिए कुछ कर सकेगा, किसी को कोई अधिकार प्राप्त न होगा सिवाए रब्बुल आलमीन के, उस दिन अल्लाह किसी को किसी चीज़ का मालिक नहीं बनाए गा जैसा कि उस ने दुनिया में बनाया था, सारे अधिकार उसी के हाथ में होंगे।

8 इन अव्यास से रियात है कि नवी जब मदीना आए तो मदीना वाले नाप-तौल में बहुत बुरे लोग थे, तो अल्लाह तबला ने यह सुरत उतारी, इस के उत्तराने के बाद उन्होंने अपना नाप-तौल ठीक कर लिया, और इस एतेबार से भी वे अच्छे हो गए।

9 जब कोई चीज़ अपने लिए खीदेते हैं तो पूरा पूरा नाप-तौल कर लेते हैं।

10 और जब कोई चीज़ दूसरों को नाप या तौल कर देते हैं तो उस नाप या तौल में कमी करते हैं।

11 अर्थात उन ढंगी मारने वालों को इसका ध्यान नहीं होता कि वे अपनी कबीं से उठाए जाएंगे, और जो कुछ कर रहे हैं उन से उस की पृष्ठ-ताछ होंगी, क्या उन्हें इस का विश्वास नहीं कि वे इस बारे में सोचें और इस के बुरे परिणाम से डर कर इसे छोड़ दें।

12 अर्थात जिस दिन लोग अपने रब के सामने खड़े होंगे, और उसके आदेश तथा न्याय की प्रतीकों और जो कुछ कर रहे हैं उन से उस का इन्तज़ार कर रहे होंगे, इसमें इस बात का प्रमाण है कि कम नापाना बहुत ही भयंकर जरूर है, क्योंकि इसके द्वारा दूसरों का नाहङ्क खाया जाता है।

13 अर्थात कुर्कियों के नाम जिन में कम तौलने वाले भी शामिल हैं जहन्मियों के रजिस्टर में लिखे होंगे, या वे कैद और तंगी में होंगे।

14 अर्थात यह ऐसी किताब है जिसमें उन के नाम होंगे, एक कौल यह है कि सिज्जीन असल में सिज्जील है जो सिजिल से है, जिसके मायने रजिस्टर और किताब के हैं।

15 अर्थात बदकार और पापी जो सीमा पार किया हुवा हो।

16 जो मुहम्मद पर उतारी गई है।

17 अर्थात यह पहले लोगों की कथाएं और उनकी अविश्वासनीय बातें हैं जिन्हें उन लोगों ने अपनी तिताबों में लिख रखा है।

18 यह सीमा पार करने वाले कुर्कियों के लिए डॉट फटकार है, कि वे ऐसी बुरी बात न करें और इसे झुठलाने से बचें।

19 अर्थात उनके पाप इतने अधिक होंगे हैं कि उसने उनके दिलों को धेर

- ١٥** कभी नहीं, ये लोग उस दिन अपने रब के दर्शन से भी आट में रखे जाएंगे।  
**١٦** फिर ये लोग निश्चित रूप से जहनम में झोक दिए जाएंगे<sup>٢</sup>  
**١٧** फिर कह दिया जाएगा यही है वह जिसे तुम झुठलाते रहे।  
**١٨** अवश्य अवश्य नेक लागों का नाम-ए-आमाल इल्लीइन में है<sup>٣</sup>  
**١٩** तुझे क्या पता कि इल्लीइन क्या है?<sup>٤</sup>  
**٢٠** (वह तो) लिखी हुई किताब है<sup>٥</sup>  
**٢١** मुकर्रब फरिश्ते उसके पास उपस्थित होते हैं<sup>٦</sup>  
**٢٢** यकीनन् नेक लोग बहुत सुख में होंगे।  
**٢٣** मसहरीयों पर (बैठे) देख रहे होंगे<sup>٧</sup>  
**٢٤** तू उनके चेहरों से हीं सुखों की सुखदा को पहचान लेगा<sup>٨</sup>  
**٢٥** यह लोग अत्यन्त शुद्ध मुहर लगी शराब<sup>٩</sup> पिलाए जाएंगे।  
**٢٦** जिस पर कस्तूरी की मुहर लगी होगी<sup>١١</sup>, आगे बढ़ने वालों को उसी में आगे बढ़ना चाहिए।<sup>١٢</sup>  
**٢٧** और उसमें तस्नीम की मिलावट होगी।<sup>١٣</sup>  
**٢٨** अर्थात वह जल श्रोत जिसका पानी मुकर्रब लोग पिएंगे।<sup>١٤</sup>

लिया है। तिर्मजी ने अबू हुरैरः<sup>١</sup> से रिवायत की है वह नबी सल्लल्लाहू अलैहि व सल्लम से रिवायत करते हैं कि आप ने फरमाया कि बन्दा जब पाप करता है तो उसके दिल पर एक काला नक्ता पड़ जाता है, यदि तोबा कर लेता है तो वह कालक मिटा दी जाती है, और यदि तोबा के बजाए पाप पर पाप किए जाते हैं तो वह कालक बढ़ती रहती है यहाँ तक कि उसके पुरे दिल पर छा जाती है, यही वह ज़ंग है जिसका चर्चा अल्लाह तआला ने कुरआन मजीद में किया है।

**١** अर्थात कियामत के दिन उन्हें उनके बीदार से रोक दिया जाएगा, वे उसे नहीं देख सकेंगे जबकि मोमिन उसे देखेंगे। कफिर जिस प्रकार संसार में उसकी तौहीद स्वीकार करने से महरूम थे उसी प्रकार वे कियामत के दिन उस के बीदार से भी महरूम होंगे।

**٢** अर्थात नरक में डाल दिए जाएंगे जहाँ वे उस की गर्मी खड़ेंगे।

**٣** अर्थात उन के नाम इल्लीइन वालों में लिखे होंगे, और इल्लीइन से मुराद जन्त है या जन्त का ऊपरी भाग है, और अबरार से मुराद नेक लोग हैं।

**٤** अर्थात ऐं मुहम्मद! आप को क्या पता कि इल्लीइन क्या है? यह तरीका इल्लीइन की शान बढ़ाने के लिए अपनाया गया है।

**٥** अर्थात जिस किताब में उनके नाम दर्ज हैं वह एक लिखी हुई किताब है।

**٦** अर्थात उस किताब के पास फरिश्ते उपस्थित रहते हैं, और उसे देखते रहते हैं, और एक कौल यह है कि उसमें जो कुछ दर्ज है कियामत के दिन उस की गवाही देंगे।

**٧** **إِنَّ رَبِّكَ** की जांच है, जिसके अर्थ छपरखाट और ऐसे सिंहासन के हैं जिसे दुर्लभन के लिए तैयार किया जाता है।

**٨** अर्थात उन उपहारों को देख रहे होंगे जो अल्लाह ने उनके लिए तैयार किए हैं, या अल्लाह की बीदार से अपनी औंखों को खुश कर रहे होंगे।

**٩** तुम उन्हें देखते हीं यह जान लोगे कि यह लोग बड़े ही आराम में हैं, क्योंकि उनके चेहरे पुर-नूर, खूबसूरत और सुदर होंगे।

**١٠** साफ सुथरा शराब है, जिसमें किसी खोट की मिलावट न हो, और न कोई ऐसी चीज़ मिली हुई हो जो उसे खराब कर दे।

**١١** अर्थात उसे किसी ने शुद्ध नहीं होगा, यहाँ तक कि जन्मतियों के लिए ही उस की मुहर तोड़ी जाएगी। और उसकी अन्तिम धूंट कस्तूरी होगी, जब पीने वाला पी कर अपना मुंह बर्तन से हटाएगा तो अपनी अन्तिम धूंट से कस्तूरी की खुशबू पाएगा, और एक कौल यह है कि उस शराब के बर्तन पर जो मुहर होगा वह कस्तूरी की होगी।

**١٢** अर्थात उसकी चाहत रखने वालों को उसकी ओर बढ़ाना चाहिए, तनाघस का मायना किसी चीज़ में झगड़ने और उसे अपने लिए चाहने के हैं ताकि दूसरा उसे न पा सके।

**١٣** अर्थात उस में तस्नीम मिली होगी, और तस्नीम ऐसी शराब है जो जन्त के ऊपरी भाग से एक चश्मे से बहती हुई आकर उन पर गिरेगी, और जन्त की सब से अच्छी शराब होगी।

**١٤** अर्थात तस्नीम ऐसा जल-स्रोत है जिस से मुकर्रब लोग पिएंगे। अबरार नेकोकारों के जाम में उस की मिलौनी होगी, जैसे शराब में केवड़ा या

عَلَى الْأَرَابِيكَ يَنْظُرُونَ **٢٥** هَلْ تُوبَ الْكُفَّارُ مَا كَانُوا يَفْعَلُونَ

سُورَةُ الْأَنْتَقِيلِ **٢٤** تَبَّاعَتْ لَهُمَا وَحْشَتْ **١** وَذَاتَ لَهُمَا وَحْشَتْ **٢** وَذَاتَ لَهُمَا وَحْشَتْ **٣** يَكِيْلُهُمْ **٤** وَلَقَتْ مَا فِيهَا وَخَلَتْ **٥** وَذَاتَ لَهُمَا وَحْشَتْ **٦** إِنَّ اَنْسَنَ إِنَّكَ كَادُحُ إِلَى رَبِّكَ كَدَحًا فَمُلْقِيْهِ **٧** فَمَا مَانَ أُوْقَ **٨** كَنْهِهُ بِسِيمِينِهِ **٩** فَسَوْفَ يُحَاسِبُ حَسَابًا بِسِيرَاهُ **١٠** وَيَقْبَلُ **١١** إِلَى أَهْلِهِ مَسْرُورًا **١٢** وَمَانَمَنَ أُوْقَ بِتَبَّاعِهِ وَرَاءَ ظَهَرَهُ **١٣** فَسَوْفَ **١٤** يَدْعُوْبُورًا **١٥** وَيَصْلَى سَعِيرًا **١٦** إِنَّهُ كَانَ فِي أَهْلِهِ مَسْرُورًا **١٧** إِنَّهُ طَنَّ لَنْ يَحْوَرَ **١٨** بَلْ إِنَّ رَبَّهُ كَانَ بِهِ بَصِيرًا **١٩** فَلَا أَقْسِمُ **٢٠** بِالشَّفَقِ **٢١** وَأَيْلَلِ وَمَا وَسَقَ **٢٢** وَالْقَمَرِ إِذَا أَسْقَ **٢٣** لَرَكَبْنَ طَبَقَأَعْنَ طَبِيقَ **٢٤** فَمَا لَهُمْ لَا يُؤْمِنُونَ **٢٥** وَإِذَا فَرِيْئَ عَلَيْهِمُ الْقُرْءَانُ لَا يَسْجُدُونَ **٢٦** بَلِ الْذِينَ كَفَرُوا يُكَذِّبُونَ **٢٧** وَاللَّهُ أَعْلَمُ بِمَا يَعْوُشُونَ **٢٨** فَبَشِّرُهُمْ بِعَذَابٍ أَلِيمٍ **٢٩** إِلَّا الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ هُنَّ أَمْرَغُ غَيْرَ مُمْنَنِ **٣٠**

**٣١** بَلْ-شَكَ پापी लोग इमान वालों की हँसी उड़ाया करते थे।<sup>١٥</sup>

**٣٢** और उनके पास से गुज़रते हुए कन्खियों से उनका अपमान करते थे।<sup>١٦</sup>

**٣٣** और जब अपनों की ओर लौटते तो दिल लगी करते थे।<sup>١٧</sup>

**٣٤** और जब उन्हें देखते तो कहते कि यकीनन यह लोग गमराह हैं।<sup>١٨</sup>

**٣٥** यह उनपर निगराँ बनाकर तो नहीं भेजे गए।<sup>١٩</sup>

**٣٦** तो आज इमान वाले उन काफिरों पर हँसेंग।<sup>٢٠</sup>

**٣٧** सिंहासन पर बैठे देख रहे होंगे।<sup>٢١</sup>

**٣٨** कि अब इंकार करने वालों ने जैसा वे किया करते थे पूरा पूरा उसका बदला पा लिया।<sup>٢٢</sup>

गुलाब का अर्क (रस) मिलाकर दिया जाता है।

**٣٩** अर्थात काफिर मोमिनों की हँसी उड़ाया करते थे, और उन पर भिक्षियां करते थे।

**٤٠** سے है, जिसका अर्थ है भवों और कन्खियों द्वारा इशारा करना, अथोत उन्हें इस्लाम लाने पर शरम दिलाते थे।

**٤١** अर्थात जब यह काफिर इन सभाओं से अपने घरों की लौटते तो अपनी ह़ालत पर इतरते और खुश होते हुए और इमान वालों से दिल लगी करते हुए लौटते थे।

**٤٢** अर्थात यह काफिर मुसलमानों पर अल्लाह की ओर से निगराँ और पहरेदार बनाकर तो नहीं भेजे गए हैं कि उस ने उन्हें इस बात की जिम्मेदारी दी हो कि वे उनकी ह़ालतों और कर्मों को देखते रहें, और उन पर बोलियाँ कसते रहें।

**٤٣** अर्थात उस दिन ईमान वाले उन काफिरों पर जब उन्हें अपमानित और हारे थके हुए देखेंगे तो हँसेंग जैसे काफिर उन पर संसार में हँसा करते थे।

**٤٤** अर्थात ईमान वाले ऐश-द-आराम में सिंहासन पर बैठे होंगे, अल्लाह के इन दुमनों को देख रहे होंगे जो अज़बे-इलाही में गिरफ़तार होंगे।

## सूरतुल इंशिकाक - 84

श्रू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहबून बहुत रहम करने वाला है।  
 १ जब आकाश फट जाएगा<sup>१</sup>  
 २ और अपने रब के आदेश को सतर्क होकर सुनेगा<sup>२</sup>  
 ३ और उसी के लायक वह है<sup>३</sup>  
 ४ और धरती (खींच कर) फैला दी जाएगी<sup>४</sup>  
 ५ और उसमें जो है उगल देगी और खाली हो जाएगी<sup>५</sup>  
 ६ और अपने रब के आदेश पर कान लगाएगी। और उसी के लायक वह है।  
 ७ ऐ इन्सान! तू अपने रब से मिलने तक यह कोशिश<sup>६</sup> और सारे काम और मेहनतें करके उससे मुलाकात करने वाला है।  
 ८ तो उस समय जिस व्यक्ति के दाहिने हाथ में नाम-ए-आ'माल (कर्मपत्र) दिया जाएगा<sup>८</sup>  
 ९ उसका हिसाब तो बड़ी आसानी से लिया जाएगा<sup>९</sup>  
 १० और वह अपने परिवार वालों की ओर<sup>१०</sup> हँसी खुशी<sup>११</sup> लौट आएगा।  
 ११ मगर जिस व्यक्ति का नाम-ए-आ'माल उसकी पीठ के पाठ से दिया जाएगा।<sup>१२</sup>  
 १२ तो वह मृत्यु को बुलाने लगेगा।<sup>१३</sup>  
 १३ और भड़कती हूँ जहन्नम में<sup>१४</sup> प्रवेश करेगा।  
 १४ यह व्यक्ति अपने परिवार वालों (संसार) में प्रसन्न था।<sup>१५</sup>  
 १५ उसका विचार था कि अल्लाह की ओर लौटकर ही न जाएगा।<sup>१६</sup>  
 १६ यह कैसे हो सकता है।<sup>१७</sup> हालांकि उसका रब उसे अच्छी

तरह देख रहा था।<sup>१८</sup>

१९ मझे साङ्ग की लालिमा की कसम।<sup>१९</sup>  
 २० और रात की, एवं उसकी इकट्ठी की हूँ चीज़ों की कसम।<sup>२०</sup>  
 २१ और पूर्ण चन्द्रमा की कसम।<sup>२१</sup>  
 २२ अवश्य तुम एक स्थिति से दूसरी स्थिति में पहुँचोगे।<sup>२२</sup>  
 २३ उन्हें क्या हो गया है कि ईमान नहीं लाते?<sup>२३</sup>  
 २४ और जब उनके पास कुरआन पढ़ा जाता है तो सजदा नहीं करते।<sup>२४</sup>  
 २५ बल्कि जिन्होंने कुफ किया वह झुठला रहे हैं।<sup>२५</sup>  
 २६ और अल्लाह (तआला) अच्छी तरह जानता है, जो कुछ यह दिलों में रखते हैं।<sup>२६</sup>  
 २७ उन्हें दर्दनाक अज़ाबों (कष्टदायी यातनाओं) की सूचना सुना दो।<sup>२७</sup>  
 २८ मगर ईमान वालों और नेक लोगों को अनिन्त और यत्म न होने वाला बदला दिया जाएगा।<sup>२८</sup>

## सूरतुल बुरुज - 85

श्रू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहबून बहुत रहम करने वाला है।  
 १ बुर्जों वाले<sup>१</sup> आकाश की कसम।  
 २ वायदा किए हुए दिन की कसम।<sup>२०</sup>  
 ३ गवाही देने वाले की<sup>३१</sup> और जिसकी गवाही दी गई है<sup>३२</sup>  
 ४ उसकी कसम।  
 ५ (कि) खाइ वाले मारे गए।<sup>३३</sup>

- १ अर्थात आकाश का फटना कियामत की निशानियों में से है।  
 २ अर्थात उस की बात मानेगा और जो आदेश देगा उसे ध्यान से सुनेगा, और उसके अनुसार कर्म करेगा।  
 ३ वह उसी के लायक भी है कि सुने और इताख्त करे।  
 ४ अर्थात उस पर जो पवरत वरीरा है उन्हें कट कर बराबर कर दिया जाएगा, और वह एक चट्टल मैदान की तरह ही जाएगी।  
 ५ अर्थात उसमें जो मूर्छे दफन थे उन्हें निकाल कर बाहर कर देगी, और उन्हें अल्लाह के हवाल कर देगी, और स्वयं खाली हो जाएगी ताकि उनके बारे में अल्लाह उसका अपना फैलावा जारी करे।  
 ६ **إِنَّمَا يَأْتِي إِلَيْكُم مِّنَ الْإِنْسَانِ مَا يَشَاءُ** से इन्सान की जिस सुराद है, जिन में काफिर और मौसिन सभी शमिल हैं, अर्थात तेरा सम्पूर्ण प्रयास तुझे तेरे रब की ओर ले जारहा है, और तू खींचा उसी की ओर बढ़ता चला जा रहा है।  
 ७ अर्थात् तू अपने अच्छे बुरे कर्मों के साथ अपने रब से जा मिलेगा।  
 ८ यह ईमान वाले होंगे जिन्हें उनका कर्म-पत्र उनके दाहिने हाथ में दिया जाएगा।  
 ९ उनके पाप उन पर पेश किए जाएंगे और अल्लाह तआला बिना किसी प्रश्न के उन्हें माफ कर देगा, बुवाही तथा मुरिल्म में अद्वा<sup>१४</sup> से रिवायत है कि नवी<sup>१५</sup> ने फरमाया : जिस से हिसाब में कुरेद किया गया तो उसे अज़ाब में धर लिया जाएगा, वह कहती है कि मैं तो कहा क्या अल्लाह यह नहीं फरमा रहा है कि उन से आसान हिसाब लिया जाएगा? तो आप ने फरमाया : यह हिसाब नहीं बल्कि हीगा, और जिस से कियामत के दिन हिसाब में खोद कुरेद किया गया था अवश्य अज़ाब में धर लिया जाएगा।  
 १० इस से मुराद उसकी जन्मती विविया और बड़ी आँखों वाली हूँहें हैं।  
 ११ अर्थात् वह अपने सम्मान से खुश होगा।  
 १२ क्योंकि उसका दाहिना हाथ उसकी गर्भन से बंधा हुवा होगा और उसका बायां हाथ उसके पैंछे होगा, और यह काफिर तथा ना-फर्मान लोग होंगे।  
 १३ अर्थात् जब वह अपना कर्म-पत्र पढ़ेगा तो चीखे चिल्लाएगा, शेर मचाएगा कि मैं तो मारा गया, मैं तो हलाक हो गया।  
 १४ अर्थात् जहन्नम की भड़कती हुई आग में जाएगा, और उसकी जलन और गर्मी उसे सहनी पड़ेगी।  
 १५ अर्थात् वह चाहत के साथ अपनी इच्छाओं पर डटा रहता था, और परलेक के भयानकपन की उसे कोई परवाह नहीं थी।  
 १६ अर्थात् वह यह समझ रहा था कि उसे बदले के लिए अल्लाह की ओर पलटना नहीं है।  
 १७ अर्थात् उसे ज़रूर लौटना होगा।

१८ अर्थात् अल्लाह उसे और उसके कर्मों को खूब जानता है, उससे उसकी कोई चीज़ भी छुपी नहीं है, अवश्य वह उसे उसके कुकर्मों की सजा देकर रहेगा।  
 १९ अल्लाह तआला उस लालिमा की कसम खा रहा है जो आकाश के किनारे सुरज झुवने के बाद इशा के समय तक रहती है।  
 २० अर्थात् रात का अधेरापन जिन चीज़ों को इकट्ठा कर लेती और समेट लेती है, क्योंकि दिन में चीज़े फैली और खियरी रहती हैं, रात आते वे सब अपने टिकानों की ओर सिमट आती हैं।  
 २१ जब वह कर्मी (चाँद के) महीने के आधे में पूर्ण होजाता है।  
 २२ अर्थात् एक हालत से दूसरी हालत की ओर जैसे मालदारी और ग्रीष्मी, मौत और जन्म, और जन्म या जहन्नम में जाने वरीरा विभिन्न हालतों की ओर।  
 २३ अर्थात् कुरआन लाने पर ईमान नहीं लाते जबकि ऐसे प्रमाण मौजूद हैं जो उस पर ईमान लाने को वाजिब और लाजिम करार दे रहे हैं।  
 २४ कुरआन की तिलावत के समय सजदा करने और आजिज़ी अपनाने से उन्हें कैन सी चीज़ रोक रही है, और एक कौल यह है कि इससे मुराद सज्ज-ए-तिलावत है, अर्थात् जब उनके सामने सजदे वाली आयत पढ़ी जाती है तो सजदा करने से उन्हें कैन सी चीज़ रोकती है।  
 २५ अर्थात् कुरआन को झुटलाते हैं जिसमें तौहीद, दोबारा जिन्दा किए जाने, सजा और बदला का चर्चा है।  
 २६ अर्थात् अल्लाह उनके झुटलाने को जो वे अपने दिल में छुपाए हुए हैं खूब जानता है।  
 २७ इसे डांट के रूप में खुश-खबरी कहा गया है।  
 २८ अर्थात् कि कभी खत्म या कम न होगा।  
 २९ बुर्जों से सितारों की मजिले मुराद हैं, यह १२ सितारों की अलग अलग १२ मजिले हैं।  
 ३० इससे मुराद कियामत का दिन है जिसका वादा किया गया है।  
 ३१ शाहिद से मुराद वह सारी मञ्जूर हैं जो उस दिन गवाही देंगे।  
 ३२ मञ्जूर से मुराद वह भयानक जराएम हैं जिन्हें इन मुजरिमों ने इन्हीं गवाहों के साथ किया होगा जो उनके खिलाफ गवाहियाँ देंगे, और यह गवाह वे सारे लोग होंगे जो अल्लाह के रास्ते में शहीद किए गए होंगे, जैसा कि अस्त्रावे उखदूद का घटना है जिसका चर्चा आगे आ रहा है।  
 ३३ अर्थात् उन लोगों के लिए हलाक और बर्बादी है जिन्होंने अल्लाह पर ईमान लाने वालों को खद्दों में डाल कर हलाक कर दिया, और यह एक काफिर राजा और उसका लश्कर वे लोग होंगे जो ईमान लाने के जुर्म में गढ़ा खोदवार और उसमें आग का अलाव तैयार करके उसमें डाल दिया था। और राजा और उसके साथी यह मन्त्र देख रहे थे।

वह एक आग थी ईंधन वाली ।  
 जबकि वह लोग उसके आस पास बैठे थे ।  
 और जो मुसलमानों के साथ कर रहे थे कियामत के दिन उसके गवाह होंगे ।  
 यह लोग उन मुसलमानों के किसी अन्य पाप का बदला नहीं ले रहे थे, सिवाय इसके कि वे अल्लाह ग़ालिब, प्रशंसा के लायक की हस्ती पर इमान लाए थे ।  
 जिसके लिए आकाशों और धरती का राज्य है, और अल्लाह (तआला) के सामने हर चीज़ है ।  
 वे-शक जिन लोगों ने मुसलमान मर्दों और औरतों को जलाया, फिर क्षमा भी न मांगी । उनके लिए जहन्नम का अजाब है और जलने की यातना है ।  
 वे-शक ईमान स्वीकार करने वालों और नेक कार्य करने वालों के लिए वे बाग हैं जिनके नीचे नहरे वह रखी हैं। यही बड़ी सफलता है ।  
 यकीनन् तेरे रब की पकड़ अधिक कठोर है ।  
 वही पहली बार पैदा करता है और वही दोबारा जिन्दा करेगा ।  
 वह बड़ा बख्शने वाला । और अत्यधिक प्रेम करने वाला है ।  
 अर्थ का मालिक महान है ।  
 जो चाहे उसे कर देन वाला है ।  
 उझे सेनाओं की खबर भी मिली है ।  
 अर्थात फिरौन और समूद की ।  
 (कुछ नहीं) बल्कि काफिर तो झुटलाने में पड़े हुए हैं ।  
 और अल्लाह (तआला) भी उन्हें प्रत्येक ओर से धेरे हुए हैं ।  
 बल्कि यह कुरआन है ही बड़ी शान वाला ।

1 ईंधन जिसे जलाया जाता है ।  
 2 खन्दक के चारों ओर कुर्सियों पर बैठ कर आग को धेरे में ले रखा था, और ईमान वालों के जलन का तमाशा देख रहे थे ।  
 3 अर्थात वह कियामत के दिन स्वयं अपने ही विरुद्ध अपने किए की गवाही देंगे कि उन्होंने ईमान वालों को उन के धर्म से फ़रने के लिए आग में डाला था, यह गवाही उनके खिलाफ़ स्वयं उनकी जुधान और उनके हाथ पैर देंगे ।  
 4 अर्थात उन मुसलमानों का जुर्म बस इतना ही था कि वह अल्लाह ग़ालिब पर जो प्रत्येक प्रकार की तारिक़ के लायक है ईमान ले आए थे, इसके सिवाय उनके कोई दूसरा जुर्म नहीं था ।  
 5 अर्थात मोमिनों के साथ जो कुछ उन लोगों ने किया है उसकी गवाही अल्लाह भी देगा, क्योंकि उनके साथ उन लोगों ने जो कुछ भी किया है उसमें से कोई भी चीज़ उससे शुष्णी नहीं है, इसमें अस्खबे उखदाद का भयकर धर्मकी है, और उन लोगों के लिए भलाई का बाद है जिन्हे अपने दीन पर जमे रहने के कारण सताया गया ।  
 6 काफिरों ने मोमिनों का आग में डाल दिया, इसके सिवाय उन्हें कोई और अधिकर दिया ही नहीं कि वह अल्लाह के साथ कुफ़ करते, इस तरह उनके धर्म के बारे में उन्हें आज़माया गया, ताकि वह इस से फ़िर जाए ।  
 7 अपनी इस घटायी हरकत और कुफ़ से तौबा भी नहीं की ।  
 8 क्योंकि उन्होंने भी ईमान वालों को आग में जलाया था ।  
 9 अर्थात अत्याचारियों और सरकारों के लिए उस की पकड़ बहुत कठोर है ।  
 10 अर्थात उसने संसार में सारी मरज़ुकात को पैदा किया है और कियामत के दिन भी वही मरने के बाद उन्हें दोबारा जीवित करेगा ।  
 11 अर्थात वह अपने मोमिन बन्दों के पापों को बहुत बख्शने वाला है, वे उन्हें पाप के कारण अपमाणित नहीं करेगा ।  
 12 अर्थात अपने वलियों से जो इसके फ़र्मावदार हैं बहुत प्रेम करने वाला है ।  
 13 अर्थात वही महान अर्थ का मालिक है ।  
 14 अर्थात बहुत ही बिश्यश और करम वाला है ।  
 15 अर्थात ऐसे मुहम्मद! तुम्हारे पास उस काफिर जत्ये की बात पहुँच चुकी है जो अपने नवीयों को झुटलाता था, जिनके पास उन से मुकाबला के लिए कोई जत्या नहीं था, और जत्यों की खबर से मुराद उन के अल्लाह की पकड़ में आने का घटना है, अर्थात तुम्हें इस की जानकारी होगई है कि अल्लाह ने उन्हें किस प्रकार पकड़ा ।  
 16 बल्कि यह अब को मुश्किल भी उनकी तरह जन चीजों को झुटलाने में लगे हुए हैं जिन्हें तुम लेकर आए हो, उनकी बटाऊओं से उन लोगों ने कोई नसीहत नहीं पकड़ी ।  
 17 अर्थात इस बात की शक्ति रखता है कि उन पर भी वही अज़ाब भेज दे जो उन से पहले के काफिरों पर भेजा था ।

سُبْحَانَ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ  
 وَلَلَّهِمَّ اذَاتَ الْأَبْرُوحِ ۖ وَالْيَوْمِ الْمَوْعِدِ ۖ وَشَاهِدِ وَمَسْبُودِ  
 قُلْلَ اَصْحَابُ الْاَخْدُودِ ۖ اَلَّا نَارِدَاتُ الْوَقُوفِ ۖ اِذْ هُمْ عَنِّيْها  
 قَوْدٌ ۖ وَهُمْ عَلَىٰ مَا يَفْعَلُونَ بِالْمُؤْمِنِينَ شَهُودٌ ۖ وَمَا نَقْمُو  
 مِنْهُمْ اَلآنَ يُؤْمِنُوا بِاللَّهِ الْعَزِيزِ الْحَمِيدِ ۖ اَلَّذِي لَهُ مُلْكٌ  
 اَلْسَمَوَاتِ وَالْاَرْضِ ۖ وَاللَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ عَشِيدٌ ۖ اِنَّ الَّذِينَ  
 فَنُونَا الْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَاتُ مُمْتَنَنَاتٍ ۖ لَمْ يَتُوبُوا فَاهُمْ عَذَابُ جَهَنَّمَ وَلَمْ  
 عَذَابُ الْجَنَّةِ ۖ اِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ هُنْ  
 جَنَّتٌ تَجْرِي مِنْ تَحْنِهَا الْأَمْرَأَتُ ۖ اَلَّا نَرَى ۖ اِنَّ بَطْشَ  
 رَبِّكَ لِشَدِيدٍ ۖ اِنَّهُ هُوَ بَدِيءٌ وَبَعِيدٌ ۖ وَمَوْلَى الْغَفُورُ اَلْوَدُودُ  
 دُوَّا لِعَرْشِ الْمَجِيدِ ۖ فَقَالَ لِمَنْ يُرِيدُ ۖ هَلْ اَنْكَ حَدِيثُ الْجَنَوْدِ  
 قِوْعَنَ وَثَمُودٌ ۖ بِلَّا اَلَّذِينَ كَفَرُوا فِي تَكْذِيبٍ ۖ وَاللَّهُ مِنْ  
 وَرَآءِمِ شَحِيطٍ ۖ بَلْ هُوَ قَرْءَانٌ مَحِيدٌ ۖ فِي لَوْحٍ مَحْفُوظٍ  
 سُبْحَانَ الْظَّارِقِ  
 22 लौहे महफूज (सुरक्षित प्रस्तक) में लिखा हुवा है ।

## सुरतुत्तारिक - 86

श्रू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरौन बहुत रहम करने वाला है ।  
 कर्तम है आकाश की और अधेरे में रौशन होने वाले की ।  
 तुझे पता भी है कि वह रात को नमूदार (प्रकट) होनी वालों चीज़ क्या है?  
 वह रौशन सितारा है ।  
 कोई ऐसा नहीं जिस पर निगहवान (फरिश्ते) न हो ।  
 इस्तान को देखना चाहिए कि वह किस चीज़ से बनाया गया है?  
 वह एक उछलते पानी (वीर्य) से पैदा किया गया है ।

18 अर्थात अनगिन्त फ़ज़ल, शरफ और बर्कत वाला है, यह कविता, कहानत और जादू नहीं है जैसा कि यह काफिर कह रहे हैं ।  
 19 अर्थात लौहे महफूज में लिखा हुवा है, और अल्लाह के पास सुरक्षित है, शिरानों की उस तक पहुँच नहीं ।  
 20 अल्लाह तआला आकाश की और रात में प्रकट होने वाले सितारों की क़सम या रहा है, सितारे को तारिक़ इस्लिए कहा गया है कि वह रात में निकलता है, और दिन में गुरु रहता है, और जै चीज़े रात में निकलती हैं उन्हें तारिक़ कहा जाता है ।  
 21 रौशन सितारा, जिसकी रौशनी इतनी तेज़ हो, गोया वह रात के अंधेरे को सख्ती से फ़ाड़ रही हो ।  
 22 यह कर्तम का जयबाल है, अर्थात प्रत्येक व्यक्ति पर अल्लाह की ओर से निगहवान नियुक्त है, और यह वही नियां परिशते हैं, जो इस्तान की नियां पर नियुक्त होते हैं, और उसके प्रत्येक कौल व फ़ेल का रिकाब रखते हैं, और जो भी अच्छाई या बुराई करता है उसे लिख कर सुरक्षित रखते हैं ।  
 23 अर्थात पानी के टाप से, जो तेज़ी से बच्चायानों में जाकर गिरता है, और वह



بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

وَالسَّمَاءِ وَالظَّارِقِ ۖ وَمَا ذَرَكَ مَا الظَّارِقُ ۖ أَنَّهُمُ الظَّاهِقُ ۚ إِنْ كُلُّ نَفْسٍ لَّمَّا عَلَيْهَا حَافِظٌ ۖ فَلَيَنْظُرْ إِلَيْهَا نَسْنَنُ مِمَّ خَلَقَ ۖ خُلُقَ مِنْ مَوْلَأِ دَافِقٍ ۖ يَخْرُجُ مِنْ بَيْنِ الْصَّلْبِ وَالثَّرَابِ ۖ إِنَّهُ عَلَىٰ رَجْمِهِ لَقَادِرٌ ۖ يُومَ تَبْلِي أَسْرَارِ ۖ قَالَ اللَّهُ مِنْ قُوَّةٍ وَلَا نَاصِيرٍ ۖ وَالسَّمَاءِ ذَاتِ الْمَعْجَمِ ۖ وَالْأَرْضِ ذَاتِ الصَّدْعِ ۖ إِنَّهُ لِقَوْلِ فَصْلٍ ۖ وَمَا هُوَ بِالْمُزَنِ ۖ يَكِيدُونَ كَيْدًا ۖ وَكَيْدُ كَيْدًا ۖ فَمَهْلِكُ الْكُفَّارِينَ أَتَهُمْ رُوَيدٌ ۖ

سُورَةُ الْأَعْنَىٰ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

سَيِّحُ أَسْمَرِكَ الْأَعْلَىٰ ۖ الَّذِي حَلَقَ فَسَوَىٰ ۖ وَالَّذِي قَدَرَ فَهَدَىٰ ۖ وَالَّذِي أَخْرَجَ الْمَرْعَىٰ ۖ فَجَعَلَهُمْ ثَمَاءً أَحْوَىٰ ۖ سَفَرَهُ ۖ فَلَا تَسْئَىٰ ۖ إِلَّا مَا شَاءَ اللَّهُ إِنَّهُ يَعْلَمُ بِجُهْرِهِ وَمَا يَنْخْفَىٰ ۖ وَيُسِرِّكَ لِلْيُسْرَىٰ ۖ فَنَكِرُوا إِنْ تَفَعَّتِ الْكُرْكَرَىٰ ۖ سَيِّدُكَرَ مِنْ يَخْتَنِي ۖ وَيَنْجِنُهَا الْأَشْقَىٰ ۖ الَّذِي يَصْلِي النَّارَ الْكُبْرَىٰ ۖ ثُمَّ لَا يَمُوتُ فِيهَا وَلَا يَجِيَ ۖ قَدْ أَفْحَنَ مِنْ تَرَزِّيٰ ۖ وَدَرَأَسْمَرَهُ بَهَرَ ۖ فَصَلَّىٰ

- 1) जो पीठ तथा छाती<sup>1</sup> के बीच से निकलता है।
- 2) वेशक वह उसे फेर लाने पर अवश्य शक्ति रखने वाला है।
- 3) जिस दिन पोशीदा (गुप्त) भेदों की जांच पड़ताल होगी।
- 4) तो न कोई जोर चलेगा उसका और न कोई सहायक होगा।
- 5) वारिश वाले<sup>5</sup> आकाश की कसम।
- 6) और फटने वाली<sup>6</sup> धरती की कसम।
- 7) वेशक यह (कुरआन) अवश्य तो टूक निर्णय करने

वाली<sup>7</sup> कथन है।

- 8) यह हँसी की (और व्यर्थ की) बात नहीं।
- 9) अल्बत्ता वे (काफिर) दाव-धात में हैं।
- 10) और मैं भी एक दाव चल रहा हूँ।
- 11) तृतीय काफिरों को अवसर दे, उन्हें थोड़े दिनों के लिए छोड़ दे।

## सुरहुल आ'ला - 87

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान बहुत रहम करने वाला है।

- 12) अपने बहुत बुलन्द रब के नाम की पाकी बयान कर।
- 13) जिसने पैदा किया और सही और स्वस्थ बनाया।
- 14) और जिसने ठीक-ठाक अनुमान लगाया और फिर रास्ता दिखाया।
- 15) और जिसने ताजा धास पैदा की।
- 16) फिर उसने उसको (सुखा कर) काला कड़ा कर दिया।
- 17) हम तुझे पढ़ाएंगे, फिर तू न भूलेगा।
- 18) मगर जो कुछ अल्लाह चाह, वह ज़ाहिर और छुपा को जानता है।

19) हम आप के लिए आसानी पैदा कर देंगे।

- 20) तो आप नसीहत करते रहें यदि नसीहत कुछ लाभ दे।
- 21) डरने वाला तो नसीहत ले लेगा।
- 22) (मगर) दुर्भाग्य पूर्ण उससे दूर रह जाएगा।
- 23) जो बड़ी आग में जाएगा।

7) अर्थात कुरुआन ऐसा कलाम है जो सत्य और असत्य के बीच फ़र्क करता है, और उसे स्पष्ट कर देता है।

8) अर्थात अल्लाह के रसूल जो दीन लेकर आए हैं उसे विफल करने के प्रयास में हुए हैं।

9) और मैं भी उन्हें इस तरह ढील देता जारहा हूँ कि उन्हें उसका एहसास नहीं, उन की दाव को मैं उन्हें कठोर बदला दूँगा।

10) अर्थात उन पर जल्द अज़ाब कीमत आएगी और उन्हें ढील देदे ताकि अपनी दशमी और सरक़ी में और आगे निकल जाएं।

11) प्रत्येक उस चीज़ से जो उसकी शान के लायक नहीं "سبحان ربِّي" "الْأَعْلَىٰ" कह कर।

12) अर्थात जिसने इन्सान को सीधे डील-डाल का बनाया, और उसने अंगों में बराबरी रखी और उसे समझ बूझ की नेमत आता की। और उसे मुकल्पन होने के काविल बनाया।

13) अर्थात जिसने सारी चीज़ों का अनुमान किया और प्रत्येक व्यक्ति को उस उपरांग के लिए उंचित है।

14) अर्थात उन्हें सुखा जो उन के लिए उंचित है।

15) अर्थात कुरुआन पढ़ाएंगे।

16) अर्थात आप जो पढ़ेंगे उसे भूलेंगे नहीं, जिब्रील ﷺ जब व्यत लेकर आते और अनिम आयत तक पढ़ कर अभी फ़ारिग नहीं होते कि नवी ﷺ इस डर से कि उसे भूल जाएं प्रधान शुरू कर देते, तो यह आयत उतरी ही हम आप को ऐसा पढ़ा दोंगे कि आप भूलेंगे नहीं, इस प्रकार अल्लाह तआला ने कुरुआन हाँ अपां जाने से आप को हिफाजत की।

17) अर्थात उस के जिसकी अल्लाह आप से भूल देना चाहे।

18) अर्थात सारी चीज़ों को जानता है, वह ज़ाहिर हों या गम्।

19) अर्थात जन्त के कर्म को हम आप के लिए आसान कर देंगे।

20) अर्थात ऐ मुहम्मद! आप लोगों की ऊन चीज़ द्वारा नसीहत कीजिए जो हमने आप की ओर व्यत की है, और भलाइ के मार्ग और दीन के अकाम की ओर उनकी राहबरी कीजिए, और यह उस जाह जहां नसीहत लाभदायक हो, रहा वह व्यक्ति जिसे नसीहत कर दी गई और जिसके सामने दूक़ पूरी स्पष्टता के साथ बयान कर दिया गया।

21) अर्थात आप की नसीहत से वह ज़खर लाभ उठाएगा जो अल्लाह से डरता होगा, नसीहत के कारण उस में अल्लाह से डरने और अपनी इस्लाम करने की भवाना अधिक बढ़ जाएगी, और इस से वह व्यक्ति लाभ न उठा सकेगा जो अपने कुफ़्र पर अड़ा रहे, और नसीहत से मुंह मोड़ेगा।

22) अर्थात बड़ी भयानक आग, बड़ी आग से मुराद जहन्म की आग है, और छोटी आग सासारिक आग है।

23) अर्थात इस दिन बेवस होगा, न तो स्वयं उसमें इतनी शक्ति होगी कि अपने आप को अल्लाह के अज़ाब से बचा सके और न ही कोई उसका सहायक होगा जो उसे उसकी मुरीदत से निकाल सके।

24) अर्थात बारिश, रुधि का मायना लौटना और पलट कर आना है, और चूंकि बारिश भी बार बार लौट कर आती है, इसलिए उसे रुधि कहा गया है।

25) अर्थात बारिश, रुधि का मायना लौटना और पलट कर आना है, और चूंकि बारिश भी बार बार लौट कर आती है, इसलिए उसे रुधि कहा गया है।

26) अर्थात ऐसी चीज़ जिस के लिए धरती फट जाती है, अर्थात, पैदे, फल और बृक्ष।

- 13 जहाँ फिर न वह मर सकेगा १ न जिएगा २, (बल्कि प्राण निकलने की अवस्था में पड़ा रहेगा)
- 14 बे-शक उसने सफलता प्राप्त कर ली, जो पाक हो गया ३
- 15 और जिसने अपने रब का नाम याद रखा<sup>4</sup> और नमाज़ पढ़ता रहा ।
- 16 लेकिन तम तो साँसारिक जीवन को तर्जीह (थेष्टा) देते हों।
- 17 और आँखिरत (प्रलोक) अत्यन्त सुखद और स्थाई है।
- 18 यह बातें<sup>6</sup> पहली किताबों में भी हैं।<sup>7</sup>
- 19 (अर्थात्) इब्राहीम और मूसा की किताबों में<sup>8</sup> ।

## सुरुल्ल ग्राणिया - 88

- शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहर्बान बहुत रहम करने वाला है।
- 1 क्या तझे भी छिपा लेने वाली (प्रलय) (कियामत) की सच्चाना पहुँच है।<sup>9</sup>
- 2 उस दिन बहुत से चेहरे जलील (अपमानित) होंगे।<sup>10</sup>
- 3 (और) मेहनत करने वाले<sup>11</sup> थके हुए होंगे।
- 4 वे धक्कती हुई आग में जाएंगे।
- 5 और अत्यन्त गर्म (उबलते हुए स्रोत) चश्में<sup>12</sup> का पानी उनको पिलाया जाएगा।
- 6 उनके लिए मात्र काँटेदार दरख़तों<sup>13</sup> (वृक्षों) के अन्य कष्ठ खाना न होगा।
- 7 जो न मोटा करेगा और न भूख मिटाएगा।
- 8 बहुत से चेहरे उस दिन प्रसन्न और हरे-भरे होंगे।<sup>14</sup>
- 9 अपने कर्मों के कारण खूश होंगे।<sup>15</sup>
- 10 उच्च स्वर्ग में होंगे।
- 11 जहाँ कोइ बेहूदा (अश्लील) बात नहीं सुनेंगे।
- 12 जहाँ बहता हुवा चश्मा होगा।
- 13 (और) उसमें ऊँचे- ऊँचे तख्त (सिंहासन) होंगे।
- 14 और घाले रखे हुए होंगे।
- 15 और एक लाइन में रखे हुए तकिए होंगे।<sup>16</sup>
- 16 और मध्यमती कालीने बिछौं होंगी।

بِلْ تُؤْثِرُونَ الْحَيَاةَ الدُّنْيَا ١٦ وَالْآخِرَةُ خَيْرٌ وَأَبْقَى ١٧  
هَذَا لِفِي الْصُّحْفِ الْأَوَّلِ ١٨ صُحْفُ إِبْرَاهِيمَ وَمُوسَى ١٩

سُورَةُ الْعَنكَبُوتُ ٢٩

## بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

- هُلْ أَتَيْكَ حَدِيثُ الْفَلَشَيْةِ ١١ وَجُوهُ يَوْمَئِنْ حَيْثُ شَاءَ ١٢  
عَالِمَةٌ نَّاصِبَةٌ ١٣ تَصْلِي نَارًا حَمِيمَةً ١٤ لَتَسْقَى مِنْ عَيْنٍ مَّا يَنْتَهِي ١٥  
لَيْسَ لَهُمْ طَعَامٌ لَا مِنْ ضَرِيعٍ ١٦ لَا يُسْمِنُ وَلَا يُغْنِي مِنْ جُوعٍ ١٧  
وَجُوهٌ يَوْمَئِنْ تَأْعِيَةٌ ١٨ لِلْسَّعِيْهَا رَاضِيَةٌ ١٩ فِي جَنَّةٍ عَالِيَّةٍ ٢٠  
لَا تَسْعَ فِيهَا لَغَيْةٌ ٢١ فِيهَا عَيْنٌ جَارِيَّةٌ ٢٢ فِيهَا سُرُورٌ مَّرْفُوَّةٌ ٢٣  
وَأَكْوَابٌ مَّوْضُوَّةٌ ٢٤ وَغَارَقْ مَصْفُوَّةٌ ٢٥ وَزَرَابٌ مَّمْشُوَّةٌ ٢٦  
أَفَلَا يَنْظُرُونَ إِلَى أَبْلِيلٍ كَيْفَ خُلِقَتْ ٢٧ وَإِلَى أَسْنَاءِ كَيْفَ  
رُفِعَتْ ٢٨ وَإِلَى لِبَالٍ كَيْفَ نُصِبَتْ ٢٩ وَإِلَى الْأَرْضِ كَيْفَ  
سُطِحَتْ ٢٩ فَذَكِّرْ إِنَّمَا أَنَّ مَذَكَّرْ ٣٠ لَسْتَ عَلَيْهِمْ  
بِمُصِيْطِرٍ ٣١ إِلَّا مَنْ تَوَلَّ وَكَفَرَ ٣٢ فَيُعَذَّبْهُ اللَّهُ الْعَذَابَ  
أَلَا كَبَرْ ٣٣ إِنْ إِيَّنَا إِيَّا بَمْ ٣٤ شَمْ إِنْ عَيْنَنَا حَسَابَمْ ٣٥

- 17 क्या ये ऊँचों को नहीं देखते<sup>16</sup> कि वे किस तरह पैदा किए गए हैं?<sup>19</sup>
- 18 और आकाशों को, कि किस प्रकार ऊँचा किया गया है?<sup>20</sup>
- 19 और पर्वतों की ओर, कि किस प्रकार गाड़ दिए गए हैं?<sup>20</sup>
- 20 और धरती की ओर, कि किस प्रकार बिछाई गयी है?
- 21 तो आप नसीहत कर दिया करें<sup>21</sup> (क्योंकि) आप केवल नसीहत करने वाले हैं।<sup>22</sup>
- 22 आप कुछ उनपर दारोगा तो नहीं हैं।<sup>23</sup>
- 23 हाँ, जो व्यक्ति पीठ फेरे और कुफ्र करे।<sup>24</sup>
- 24 उसे अल्लाह (तआला) अत्यन्त कठोर अज़ाब देगा।<sup>25</sup>
- 25 बे-शक हमारी और उनको लौटना है।<sup>26</sup>
- 26 फिर बे-शक हमारे जिम्मे हैं उनसे हिसाब लेना।<sup>27</sup>

- 18 वे अपनी पैदाइश के लिहाज से कितने अजीब, और किस प्रकार ताकतवर और शक्तिमान हैं और कैसे अजीब अजीब उनमें गुण हैं।
- 19 अर्थात् धरती पर बिना किसी खम्बे के इस प्रकार खड़ा है कि वह अकल की समझ से बाहर है।
- 20 अर्थात् इस प्रबल धरती पर मृत्यु से गाड़ दिए गए हैं कि वह अपनी जगह से न दिल सकते हैं, न इधर उधर ढुक सकते हैं, और न हट सकते हैं।
- 21 अर्थात् ऐ मुक्कम्द! आप उन्हें नसीहत कीजिए और अल्लाह के अज़ाब से डराइए।
- 22 अर्थात् आप की जिम्मेदारी मात्र इतनी है कि आप उन्हें समझा दें, मानना या न मानना उनका काम है।
- 23 कि आप उन पर इमान लाने के लिए ज़ोर दें।
- 24 अर्थात् नसीहत से मुंह मोड़ें।
- 25 बड़े अज़ाब से मुराद जहन्नम का हमेशी का अज़ाब है।
- 26 अर्थात् मरने के बाद परते ही ओर पलट कर आएंगे।
- 27 अर्थात् कबीर से उनके उठाए जाने के बाद हम ही उन का हिसाब लेंगे।

- 1 कि जिस अजाब में वह पड़ा है उससे छुटकारा पा जाए।
- 2 अर्थात् ऐसा जीवन जो उस के लिए लाभ-दायक हो।
- 3 अर्थात् जिसने शिर्क से पवित्रता अपनाई, और अल्लाह और उसकी वहदानियत पर ईमान ले आया, और उसके आदेश का पालन करता रहा।
- 4 और अपनी जुबान पर उज्ज्वल नाम का जिक्र जारी रखा।
- 5 और पांचों की नृमाज़ की प्रवानी की।
- 6 अर्थात् उनमें यह वातें चारीच हैं।
- 7 अर्थात् उनमें यह वातें चारीच हैं।
- 8 अर्थात् अल्लाह ने इब्राहीम और मूसा<sup>10</sup> पर जो किताबें उतारी हैं उन में यह वात लिखी हुई थी कि परलोक संसार के मुकाबले बहुत अधिक उनम है।
- 9 के के मायने में है, और अश्लील से सुमाद कियामत है, अर्थात् ऐ मुहम्मद!
- 10 आप के पास कियामत की बात आ चुकी है, उसे छिपा लेना वाली इसलाएं कहा गया है कि उसकी कठोरता और श्वर्यपन सारी मासूलक को ढाप लेंगी।
- 11 लोग कियामत के दिन दो दलों में बटे हुए होंगे, एक दल वालों के चेहरे द्वारे हुए अपनामित होंगे, उस अजाब के कारण जिसमें वहाले जाने वाले होंगे।
- 12 वह पूजा में अधिक मेहनत करते थे और अपने आप को थका देते थे, लेकिन वह सब बेकार हो जाएगा और उहें उन पर कोई पुण्य नहीं मिलेगा, क्योंकि वे जिसका कुक्कु और गुमाही में पड़े थे, उस पर डटे हुए थे।
- 13 अर्थात् ऐसे स्रोत से जिसका पानी वहुत गरम होगा।
- 14 यह एक काँटेदार झाइ की किस्म है, जब वह धरा रहे तो जरूरी कहते हैं।
- 15 अर्थात् हर प्रबल की नेमतों से प्रसन्न और हरे भर, और वह दूसरे दल के चेहरे होंगे जो अपने मामले के अच्छे परिणाम को देखकर खुशी से खिले होंगे।
- 16 अपने उस कर्म के कारण जो दुनिया में उन्होंने किया था ख़श होंगे क्योंकि उहें उसका इतना सचाव मिलेगा जो उहें प्रसन्न कर देगा।
- 17 अर्थात् लाइन में एक दूसरे से लगे हुए तकिए होंगे।
- 18 और कलीने होंगे, जिनके ज्ञान परते प्रकर के होंगे, जो सभाओं में चारों ओर जगह जगह फैली होंगी और जननी जहाँ आराम करना चाहेंगे कर सकेंगे।

سُورَةُ الْفَجْرِ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

وَالْفَجْرِ ۖ وَيَأْلِيلَ عَشِيرٍ ۗ وَالشَّعْقَ وَالْمَوْرِ ۗ وَأَلَيْلَ إِذَا سَرَ

هَلْ فِي ذَلِكَ قَسْمٌ لِّذِي حِجْرٍ ۗ أَتَمْ تَرْكِيفَ فَعْلِ رِبِّكَ بِعَادٍ

إِدَمْ ذَاتَ الْعِمَادِ ۗ أَلَيْتَ لَمْ يُخْلِقْ مِثْلَهَا فِي الْبَلْدَةِ

وَتَمُودَ الَّذِينَ جَابُوا الصَّحْرَ بِالْمَوْا ۗ وَفَرْعَوْنُ ذِي الْأَوْنَادِ

الَّذِينَ طَغَوْا فِي الْبَلْدَةِ ۗ فَأَكْثَرُهُمْ فِي الْفَسَادِ

عَلَيْهِمْ رِبُّكَ سَوْطَ عَذَابٍ ۗ إِنَّ رِبَّكَ لِيَأْمُرَصَادَ

أَلِّإِنْسَنَ إِذَا مَا أَبْنَلَهُ رَبِّهِ، فَأَكْرَمَهُ، وَنَعْمَهُ، فَيَقُولُ رَبِّيْتَ أَكْرَمَنِ

وَأَمَّا إِذَا مَا أَبْنَلَهُ فَقَدَرَ عَلَيْهِ رُزْفَهُ، فَيَقُولُ رَبِّيْتَ أَهْنَنِ

كَلَّا بَلْ لَا تُكْرُمُونَ الْيَتَمَ ۗ وَلَا تَحْسُنُونَ عَلَى طَعَامِ

الْمُسْكِنِينَ ۗ وَنَأْكُلُونَ الْرَّثَاثَ أَكَلَّا لَمَّا

وَتَشْبُهُنَّ الْمَالَ حِجَاجًا ۗ كَلَّا إِذَا دَكَّتْ أَلْأَرْضَ دَكَّا

وَجَاءَ رِبُّكَ وَالْمَلَكُ صَفَاصَفًا ۗ وَجَاهَيْهِ يَوْمَئِنْ

بِكَهْمَ يَوْمَيْنَ دَكَّرَ أَلْإِنْسَنَ وَأَنَّ لَهُ الْذِكْرَ

## سُورَتُنْتَوْ فَضْ - 89

श्रृंग करता हु अल्लाह के नाम से जो बड़ा महबून बहुत रहम करने वाला है।  
कसम है फज्र की।  
और दस रातों की।  
और जोड़े और ताक़ (सम और विषम) की।  
और रात की जब वह चलने लगे।  
व्या उनमें बुद्धिमानों के लिए काफी कसम है।  
व्या आप नें नहीं देखा कि आपके रब ने आदियों के साथ क्या किया?  
स्तर्भों वाले इरम के साथ।  
जिनके जैसे लोग (अन्य किसी) देशों में पैदा नहीं किए गए।

और उनके कर्मों का उन्हें बदला देंगे।

- 1 अल्लाह ताला ने फज्र की कसम खाई है इसलिए कि यह दिन से अधेरापन के छठने का समय है, मुजाहिद कहते हैं इस से मुगाद दस जुलाहिज्ञा की फज्र है।
- 2 यह जुलाहिज्ञा के शुरू की दस रात है।
- 3 शफ़अु के मायने हर चाँच के जोड़े, और वित्र के मायने बेजोड़ के हैं, और एक कील यह है कि शफ़अु से मुराद ۹۱ और ۹۲ जुलाहिज्ञा है, और वित्र से मुराद ۹۳ जुलाहिज्ञा है।
- 4 अर्थात् जब वह आए, जारी रहे, फिर चली जाए।
- 5 जुलाहिज्ञा के मायना अक्ल है, अर्थात् बुद्धिमान को इसकी जानकारी है कि अल्लाह जै जिन चीजों की कसम खाई है वह, इस लायक है कि उनकी कसम खाई जाए।
- 6 इरम आदें ऊला का दूसरा नाम है, और एक कौल यह है कि यह आद कौम के बावा का नाम है, और एक तीसरा कौल यह है कि यह उस जगह का नाम है जहाँ यह आबाद थे, यह दिमश्क है या अहकाफ का जोई नगर जिसकी बिल्डिंगें पर्यटकों के तराश करके लम्बे लम्बे खंडों पर बनाई गई थीं।

9 और समदियों के साथ जिन्होंने घाटियों में बड़े-बड़े पत्थर काटे थे? 8

10 और फिर्झेन के साथ जो खूँटों वाला था? 9

11 उन सभों ने नगरों में सिर उठा रखा था। 10

12 और बहुत उपद्रव मचा रखा था। 11

13 अन्त में बहुत रब ने उन सब पर अज़ाब का कोड़ा बरसाया। 12

14 अवश्य तेरा रब धात में है। 13

15 इन्सान (का यह हाल है) कि जब उसका रब उसे आजमाता है और इज्जत और नेमत देता है, तो वह कहने लगता है कि मेरे रब ने मेरा सम्मान किया। 15

16 और जब वह उसकी परीक्षा लेते हुए 16 उसकी रोजी को कम कर देता है, तो वह कहने लगता है कि मेरे रब ने मेरा अपमान किया। 17

17 ऐसा कभी भी नहीं, बल्कि (बात यह है कि) तुम (ही) लाश यतीमों (अनाथों) का आदर नहीं करते। 18

18 और निर्धानों को खिलाने की एक-दूसरे को तर्गीब (प्रश्नणा) नहीं देते। 19

19 और (मृतकों की) मीरास समेट-समेट कर खाते हो। 20

20 और धन से जी भरकर प्रेम करते हो।

21 अवश्य जिस समय धरती कूट-कूट कर बिल्कुल (बराबर) समतल कर दी जाएगी। 22

22 और तेरा रब (स्वयं) आ जाएगा 23 और फरिश्ते सफे बांधकर (पंकितबद्ध होकर) आ जाएगे। 24

23 और जिस दिन जहन्नम भी लाई जाएगी 25, उस दिन

7 अर्थात् अपनी इमारतों की मज़बूती में इस जैसा कोई और नगर किसी देश में बसाया ही नहीं गया।

8 जो पहाड़ों को तराशते थे, और उन्हें काट कर घर बनाते थे, और उसमें रहते थे, और उनकी बाबी का नाम हिज़ या वादिलुकुरा था जो मदीना से शाम के रस्ते में पड़ता है।

9 औताद से मुगाद अहरामे मिस्र है, जिन्हें फिरआनियों ने बनवाया था, ताकि उनमें उनको कंबड़ हो, और एक कोल यह है कि اندुड़ यूँ से मुगाद ऐसे देश में बसाया वाला है जिसके पास अनगिन खेमे थे, जिन्हें वे खूँटों से बांधते थे।

10 यह आद, समूद्र और फिरआन की सिफत है, अर्थात् उनमें से प्रत्येक ने अपने अपने नगरों में उपद्रव मचा रखा था।

11 अर्थात् कुफ़ और पाप करके और अल्लाह के बन्दो पर अत्याचार करके।

12 अर्थात् उन पर आक्रमण से अपना अज़ाब उतार उन्हें हलाक कर दिया।

13 अर्थात् प्रत्येक व्यक्ति के कर्म की निगारी कर रहा है, और उसकी ताक में है ताकि उसकी अच्छाइयों का उसे अच्छा बदला दे, और पाप पर उसे सज़ा दे, हमन बसीरी कहते हैं कि बन्दों का रासत इसी से होकर

आगे बढ़ता है कि कोई बच बच कर नहीं जासकता।

14 अर्थात् उसे धन देता है और उस की जीविका बढ़ा देता है।

15 अर्थात् जो धन सम्पत्ति उसे मिली है उससे प्रसन्न होकर उसी को असल सम्मान समझने लगता है।

16 अर्थात् तंगी में डाल कर उसे आजमाता है।

17 यह काफ़िर की सिफत है, रहा मोमिन तो उसके पास असल सम्मान यह है कि अल्लाह उसे अपनी इत्ताअत और परामर्श के लिए कर्म करने की तौफीक से महसूल रखे।

18 अल्लाह ताला के दिए हुए इस धन द्वारा यदि तुम उनका आदर करते तो इसके कारण अल्लाह के पास तुम्हारा आदर होता।

19 अर्थात् न तो तुम स्वयं उसकी ओर गशिय हो, और न आपस में एक दूसरे को उसकी प्रेरणा और अदेश देते हो, और उसकी गह दिखाते हो, इस प्रकार निर्धन तुम्हारे बीच लाचर पड़ा रहता है, कोई उसकी सहायता करने वाल नहीं होता।

20 अर्थात् अनाथों, विधाओं और कमज़ोरों के मालों को समेट समेट कर खब खा रहे हो।

21 अर्थात् तुम्हारा यह व्यवहार बिल्कुल उचित नहीं।

22 अर्थात् झंझोड़ दी जाएगी और बराबर हिलाई जाएगी, या उसके पर्वतों को कूट-कूट कर बराबर कर दिया जाएगा।

23 अपने बन्दों के बीच निर्णय करने के लिए तेरा रब स्वयं आएगा।

24 इस प्रकार कि हर हर आकाश के फरिश्तों की सफे अलग अलग होंगी।

25 इस अवस्था में कि वह (७० हज़ार) लगामों से हुई होंगी और (हर लगाम के साथ ७० हज़ार) फरिश्ते उसे खींच रहे होंगे।

इन्सान को समझ आएगी, मगर आज समझने का लाभ कहाँ?

24 वह कहेगा कि काश कि मैंने इस जीवन के लिए, कुछ (नेको का काम) पहले से किया होता।

25 तो आज (अल्लाह) के अज़ाब जैसा अज़ाब किसी का न होगा।<sup>1</sup>

26 न उसके बन्धन के जैसा किसी का बन्धन होगा।<sup>2</sup>

27 ऐ इतमीनान बाली रुह (आत्मा)<sup>3</sup>

28 तू अपने प्रभु की ओर लौट चल, इस तरह कि तू उससे प्रसन्न और वह तुझ से खुश।<sup>4</sup>

29 तू मेरे खास बन्दों में सम्प्रिलित हो जा।<sup>5</sup>

30 और मेरी जन्त में चली जा।<sup>6</sup>

## सूरतुल बलद - 90

शुरु करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़ा महबूब बहुत रहम करने वाला है।  
मैं इस नगर की कसम खाता हूँ।<sup>7</sup>  
और आप इस नगर में मुकीम (ठहरे हुए) हैं।<sup>8</sup>  
और कसम है इन्सानी बाप और सन्तान की।<sup>9</sup>  
यकीन हम ने इन्सान को (बड़ी मशक्त) परिश्रम में पैदा किया है।<sup>10</sup>  
क्या यह विचार करता है कि यह किसी के बस में ही नहीं?<sup>11</sup>  
कहला (फिरता) है कि मैंने तो अत्यधिक माल खर्च कर डाला।<sup>12</sup>  
क्या (इस तरह) समझता है कि किसी ने उसे देखा (ही) नहीं?<sup>13</sup>  
क्या हम ने उसकी दो आँखें नहीं बनायीं?  
और एक जीभ और दो होठ (नहीं बनायें)?  
ओर उसको दोनों रास्ते दिखा दिए।<sup>15</sup>  
तू तो उससे न हो सका कि घाटी में प्रवेश करता।<sup>16</sup>

1 अर्थात् जिस प्रकार अल्लाह काफिरों को अज़ाब देगा कोई और नहीं दे सकता।  
2 और जिस प्रकार वह ज़ंजीरों और वेठियों से ज़कड़ेगा कोई और नहीं ज़कड़ सकता, क्योंकि उस दिन सारे अधिकार मात्र उसी के पास होंगे, किसी को उसके सामने पर मारने की हिम्मत न होगी।  
3 अर्थात् ऐसा नपस जो अल्लाह पर और उसकी वहदनियत पर ऐसा विश्वास रखने वाला था, जिसमें किंव बारावर भी शका न था।  
4 अर्थात् उस सवाब से जो तेर रवे ने तुझे दिया है।  
5 और तू उसके पास पसंदीदा है।  
6 अर्थात् मेरे लिए बन्दों के दल में सम्मिलित होजा।  
7 उनके साथ (और यह ऐसा सम्मान है जिस से बढ़कर कोई सम्मान नहीं)।  
8 अर्थात् मैं इस दुर्मत वाले नगर की कसम खाता हूँ, यह कसम अल्लाह के पास मक्का की महानता को स्पष्ट करने के लिए है, क्योंकि इस नगर में काव्या है, और इस्माईल<sup>17</sup> और हमारे नवी<sup>18</sup> का शहर है, और इसी शहर में हज़ार कर्म पूरे किए जाते हैं।  
9 अर्थ यह है कि मैं इस नगर की कसम जिसमें आप हैं आप की बड़ई और आप के रुचे को स्पष्ट करने के लिए खा रहा हूँ। क्योंकि आप के कियाम के कारण यह नगर महान बन गया है।  
10 अल्लाह ताला बाप और उसकी औलाद की कसम खा रहा है, जैसे आदम की ओर उनकी नसल से जो सन्तान दुइ उसकी, इसी प्रकार जननरों में से प्रत्येक बप और उसके औलाद की, यह कसम नसल की अहमियत और अल्लाह की शक्ति, और उसके जान पर उसकी तम्ही और आगाही के लिए है।  
11 अर्थात् वह पैदा होने के समय से लेकर बारावर संसार की कठिनाईयों में उलझ रहता है, और उसे बदलता नहीं ले सकता, चाहे वह कितनी भी बुराईयाँ वर्णी न करे, यहाँ तक कि उसका खालिक और पालनहार भी।  
12 अल्लाह का अर्थ है बहुत अधिक धन। अर्थ यह कि संसारिक कर्मों में विल खोल कर पैसा खर्च करता है और फिर लोगों से उसका चर्चा करता फिरता है।  
13 अर्थात् क्या वह यह समझता है कि अल्लाह उसे देख नहीं रहा है, और वह उससे उसके धन के बारे में पूछेगा नहीं कि उसने उसे कहाँ से कमाया और कहाँ खर्च किया।  
14 मतलब यह है कि क्या हमने उसे भलाई और बुराई दोनों के रास्ते नहीं बतला दिए हैं, और उन्हें इस प्रकार स्पष्ट नहीं कर दिए हैं जैसे दो ऊंचे मार्ग स्पष्ट होते हैं?

يَقُولُ بِلِلَّهِ فَدَمْتُ لِيَقَاتِي ١٥ فَيَوْمَ إِذَا لَا يُعَذَّبُ عَذَابَهُ أَحَدٌ  
وَلَا يُؤْثَقُ وَثَاقَهُ أَحَدٌ ١٦ يَأْتِيهِ النَّفْسُ الظُّمِنَةُ ١٧ أَرْجِعِي  
إِلَى رَبِّكَ رَاضِيَةً مَرْهِيَّةً ١٨ فَادْعُلِي فِي عِبْدِي ١٩ وَادْخُلِي جَنَّتِي ٢٠

سُورَةُ الْبَلَدِ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ  
لَا أَقِيمُ هَذَا الْبَلَدَ ١ وَأَنْتَ حِلٌّ بِهَذَا الْبَلَدِ ٢ وَوَالِدٌ وَمَوْلَدٌ  
لَقَدْ خَلَقْنَا إِنْسَنًا فِي كَيْدِ ٣ يَحْسَبُ أَنَّ لَنْ يَقْدِرَ عَلَيْهِ  
أَحَدٌ ٤ يَقُولُ أَهْلَكْتُ مَا لَأَبْدَأَ ٥ يَحْسَبُ أَنَّمِيرَهُ أَحَدٌ ٦  
أَلَمْ تَعْلَمْ لَهُ عَيْنَيْنِ ٧ وَلِسَانًا وَشَفَّيْنِ ٨ وَهَدَيْتَنِي ٩  
النَّجَدَيْنِ ١٠ فَلَا أَقْنِمُ الْعَقْبَةَ ١١ وَمَا أَدْرِنِكَ مَا الْعَقْبَةُ ١٢  
فَكَرْبَيْهَ ١٣ أَوْ إِطْعَمَهُ فِي يَوْمَ ذِي مَسْفَةٍ ١٤ يَتَسَمَّا دَاءَ مَقْرَبَةَ  
شَدَّكَانَ مِنَ الْدِينِ ١٥ أَمْنَوْا وَقَوَاصُوا ١٦ بِالصَّبَرِ وَتَوَاصُوا إِلَيْلَرَةَ ١٧ وَأُزْلِكَ أَصْبَحَ الْمَيْمَنَةَ ١٨ وَالْمَدْنَانَ ١٩  
كَفَرُوا إِنَّا لَنَا هُمْ أَصْحَبُ الْمَشْعَمَةَ ٢٠ عَلَيْهِمْ نَارٌ مَوْضَدَةٌ ٢١

سُورَةُ الشَّفَّيْنِ

22 और तू क्या समझता कि घाटी है क्या?  
23 किसी गर्दन (दास-दासी) को आज़ाद (स्वतन्त्र) करना।  
24 या भूख वाले दिन खाना खिलाना।  
25 किसी रिश्तेदार यतीम<sup>18</sup> को।  
26 या भूमि पर पड़े गरीब<sup>19</sup> को।  
27 फिर उन लोगों में से हो जाता जो ईमान लाते और एक दूसरे को सब की<sup>20</sup> और दया करने की<sup>21</sup> वसीयत करते हैं।  
28 यही लोग हैं दाएं हाथ वाले।<sup>22</sup>  
29 और जिन लोगों ने हमारी आयतों के साथ कुफ किया, वही लोग हैं बाएं हाथ वाले।<sup>23</sup>

16 अर्थात् वह क्यों तैयार नहीं रहा, और उसने अपने और अल्लाह की फर्मांबदारी के बीच नपस के बहकावे और शैतान की पैरवी जैसी रुकावें क्यों दूर नहीं की।

17 अर्थात् किसी अनाथ को, जिसके बचपने में उसके पिता का निधन होगा हो, खाना खिलाना। और वह अनाथ उसके रिश्तेदारों में से हो।

18 अर्थात् ऐसा गरीब जिसके पास कुछ भी न हो, गोया कि वह अपनी मुहताजी के कारण मिट्टी से चिपका हुआ है। मुजाहिद कहते हैं कि जिसके पास पहनने के कपड़े भी न हों जिसके द्वारा वह मिट्टी से बच सके।

20 अर्थात् अल्लाह की इताउत करने और उसके पाप से बचने और इस मार्ग में आने वाली मुसीबतों और कठिनाईयों पर सब्र की।

21 अर्थात् अल्लाह के बन्दों पर रहम करने की।

22 अर्थात् जिनके दाएं हाथ में कर्मपत्र मिलेगा।

23 अर्थात् जिनके बाएं हाथ में कर्मपत्र मिलेगा।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

وَالشَّمَسِ وَجْهُهَا ۚ وَالقَمَرِ إِذَا لَهَا ۖ وَالنَّهَارِ إِذَا جَلَّهَا ۚ  
 وَالْأَيْلَلِ إِذَا يَعْنِسُهَا ۖ وَالسَّمَاءِ وَمَا بِهَا ۖ وَالْأَرْضِ وَمَا عَلَّهَا ۚ  
 وَنَفْسٍ وَمَا سَوَّهَا ۖ فَأَلْهَمَهَا بُورَهَا وَنَفَوْهَا ۚ  
 أَفْلَحَ مَنْ زَكَّهَا ۖ وَقَدْخَابَ مَنْ دَسَّهَا ۖ كَذَبَتْ تَمُودُ  
 بِطَغْوَنَهَا ۖ إِذَا أَنْبَعَتْ أَشْقَانَهَا ۖ فَقَالَ لَهُمْ رَسُولُ اللَّهِ  
 نَافَقَةُ اللَّهِ وَسَقِيَهَا ۖ فَكَذَبُوهُ فَعَفَرُوهَا فَدَمِدَمَ  
 عَلَيْهِمْ رَبُّهُمْ بِدَنَّهُمْ فَسَوَّهَا ۖ وَلَا يَخَافُ عَقْبَهَا ۖ

سُورَةُ الْمَيَاءِ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

وَالْأَيْلَلِ إِذَا يَغْنَى ۖ وَالنَّهَارِ إِذَا جَلَّ ۖ وَمَا خَلَقَ اللَّهُرُ وَالْأَئْنَى ۖ  
 إِنَّ سَعِيَكُمْ لَشَقِّي ۖ فَآتَمَّنْ أَعْطَى ۖ وَلَقَنَى ۖ وَصَدَقَ بِالْحُسْنَى ۖ  
 فَسَنِسِرُهُ لِلْيُسْرَى ۖ رَأَمَّا مِنْ بَحْلٍ وَأَسْعَنَى ۖ وَكَذَبَ بِالْحُسْنَى ۖ  
 سَنِسِرُهُ لِلْمُعْسَرَى ۖ وَمَا يُغْنِي عَنْهُمُ اللَّهُرُ إِذَا أَرَدَى ۖ إِنْ عَيَّنَا  
 لِلْهُدَى ۖ وَلَنَّ لِلْآخِرَةِ وَالْأُولَى ۖ فَلَنْدَرْكُنَارَنَاطَلَى ۖ

(20) उन्हीं पर आग होगी जो चारों ओर से घेरे हुए होगी।

सूरतुश शम्स - 91

शुल कता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहबून बहुत रहम करने वाला है।  
 कसम है सूरज की ओर उसकी धूप की  
 कसम है चौद की जब उसके पीछे आए<sup>1</sup>  
 कसम है दिन की जब सूरज को जाहिर करे<sup>2</sup>  
 कसम है रात की जब उसे ढाँक लै।  
 कसम है आकाश की ओर उसके बनाने की।  
 कसम है धरती की ओर उसे हम्यार (समतल) करने की<sup>5</sup>  
 कसम है नफस (आत्मा) की ओर उसके सुधार करने की<sup>6</sup>  
 किर समझ दी उसको पाप की और उससे बचने की<sup>7</sup>  
 जिसने उसे पाप किया वह सफल हो गया<sup>8</sup>

- अर्थात वह आग चारों ओर से बन्द होगी ताकि कोई उससे बाहर न निकल सके।
- सूरज निकलने के बाद उसके ऊपर चढ़ आने का समय, जब उसकी रोशनी पूरी हो जाती है।
- अर्थात सूरज डूबने के बाद जब चाँद निकला।
- सूरज जैसे जैसे फैलता जाता है दिन पूरी तरह स्पष्ट होता चला जाता है।
- जिसने उसे चारों ओर बिछाया और फैलाया।
- जिसने उसे पैदा किया और आत्मा से उसे जोड़ा, और उसे अनगिन्त शक्तियों और सलाहियों और अनेक प्रकार के अनुभवों से ज्ञात किया, और उसे सीधे डील-डाल का ओर फित्रत के बर्मीजिब बनाया, जैसा कि हीरीस में है कि : हर बच्चा फित्रत पर पैदा होता है, फिर उसके माता पिता उसे यहूदी या नामानी या मज़सी बना देते हैं।
- अर्थात इन दोनों के हालात से ज्ञात कर दिया, और इन दोनों की अच्छाई और बुराई को बता दिया।

१० और जिसने उसे मिट्ठी में मिला दिया वह असफल हुवा<sup>9</sup>  
 ११ समदियों ने अपनी उद्दण्डता के कारण झुटलाया<sup>10</sup>  
 १२ जब उनमें का बड़ा बद-बख्त (उभग्यशति) उठ खड़ा हुवा<sup>11</sup>  
 १३ उहें अल्लाह के रसूल ने<sup>12</sup> कह दिया था कि अल्लाह (तज़ाला) को ऊँटनी<sup>13</sup> और उसके पीने की बारी की (सुरक्षा करो)<sup>14</sup>  
 १४ उन लोगों ने अपने संदेष्य को झूटा समझ कर उस ऊँटनी की कूचें काट दीं, तो उनके रब ने उनके पाप के कारण उन पर हलाकत (विनाश) डाल दिया<sup>15</sup>, और फिर विनाश को आम (आम लोगों के लिए) कर दिया, और उस वस्ती को बराबर कर दिया।  
 १६ वह निर्भय है इस प्रक्रीय के परिणाम से<sup>17</sup>

सूरतुल लैल - 92

शुल कता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहबून बहुत रहम करने वाला है।  
 कसम है रात की जब छा जाए।  
 और कसम है दिन की जब रोशन हो जाए।  
 और कसम है उस (शक्ति) की जिसने नर-मादा<sup>18</sup> पैदा किया।  
 अवश्य तुम्हारी कोशिश विभिन्न प्रकार की है।  
 तो जो व्यक्ति देता रहा और डरता रहा<sup>20</sup>  
 और नेक बातों की तस्वीक (पुष्टि) करता रहा<sup>21</sup>  
 तो हम भी उसके लिए सरल रास्ते की आसानी कर देंगे।  
 मगर जिसने कंजुसी की और लापवाही बर्ती।  
 और नेक बातों को झुटलाया।  
 तो हम भी उस पर तंगी और कठिनाई का साधन उपलब्ध करा देंगे।<sup>23</sup>

८ अर्थात जिसने अपने को साफ सुधारा किया, उसे बढ़ाया और तक्वा द्वारा उसे ऊँचा किया तो वह अपने हर उद्देश्य में सफल और अपनी प्रयेक मन-प्रसंद चीज़ को पाने में कामयाब रहा।

९ अर्थात वह घाटे में रहा जिसने उसे गुप्राह किया, और सीधे रास्ते से बटकाया, और अल्लाह के पास उसे गमनाम कर दिया और उसे तात्त्व और अमले-सालोह के द्वारा शोहरत नहीं दी।

१० अर्थात कौमे समूद को झुटलाने पर उनकी उद्दण्डता ने उभारा।

११ अर्थात काम से समूद का या सुर्पी का सब से बद-बख्त व्यक्ति खड़ा हुवा, उसका नाम विदार बिन सालोक था, उसने जाकर ऊँटनी की कूचें काट दीं, बन्धु का अर्थ है उस काम के लिए अपने आप को आगे बढ़ाया और उसे कर डाला।

१२ अल्लाह के रसूल से मुराद उनके नवी सालिह<sup>24</sup> है।

१३ अर्थात अल्लाह की ऊँटनी को छोड़ दो, उससे छेड़-छाड़ न करो, और उसे कोई नक्सान न पहुँचाओ, उहें उससे उहें डराया।

१४ और उसके पानी के पीने का ख़्याल रखना, और उसकी बारी के दिन उसने कोई छेड़-छाड़ न करना।

१५ अर्थात उहें हलाक कर दिया और उन पर कठोर अजाव नजिल किया।

१६ एक बर्ती उन पर बराबर कर दी और उहें मिट्ठी के नीचे गाढ़ दिया।

१७ अर्थात उन पर कठोर देने के कारण अल्लाह को किसी का डर नहीं है।

१८ अल्लाह ने अपनी मज़कूर में से दोनों जिन्नों नर और मादा की कसम खाई है, चाहे वह नर और मादा इन्हाँनों में से हो या दूसरे मज़कूरकत में से।

१९ अर्थात तुम्हारे कर्म अलग अलग हैं कोई जनन्त के लिए कर्म कर रहा है तो कोई जहन्नम के लिए।

२० अर्थात जिसने नेकी के कामों में अपना धन खर्च किया और अल्लाह ने जिन जीवों से रोका उन से बचा।

२१ अर्थात अल्लाह की ओर से मिलने वाले अच्छे की पुष्टि की ओर उसके रास्ते में खर्च करने पर जिस सवाह का उसने बादा किया है उसे सब जाना।

२२ तो हम उसके लिए पुष्ट के रास्ते में खर्च करने को, और अल्लाह के लिए अनुकरण को आसान कर देंगे, यह आयों अबू बक्र सिद्दीक के बारे में उतरी है, जिन्हें ६ मोमिन गुलाम आजाद किए, जो मक्का के कफिरों की गुलामी में थे और वे उहें कठीर यातना पहुँचा रहे थे।

२३ बुराई के काम को अर्थात कुफ्र, गुनाह और नाफ़र्खानी के काम को हम उसके लिए आसान कर देंगे, यहाँ तक कि नेकी के द्वारा उसके लिए कठिन होजाएंगे, और अच्छे कामों के करने की तौफीक से वह महरूम रहेगा, और कुफ्र और पाप में बढ़ता चला जाएगा जो उसे जहन्नम में पहुँचा देंगे।

११ और उसका माल<sup>१</sup> उसके (मुख के बल औंधा) गिरते समय कोई काम न आएगा।  
 १२ वे-शक रास्ता दिखा देना हमारे जिम्मे है।  
 १३ और हमारे ही हाथ में आखिरत (परलोक) और संसार है।  
 १४ मैंने तो तुम्हें शोले मारती हूँ आग से डरा दिया है।  
 १५ जिसमें केवल वही बद-बहुत (दुर्भाग्यशाली)<sup>६</sup> जाएगा।  
 १६ जिसने झुटलाया और (उसके अनुकरण से) मुहु केरे लिया।  
 १७ और उससे ऐसा व्यक्ति दूर रखा जाएगा जो परहेजार होगा।  
 १८ जो पाकी हासिल करने के लिए अपना माल देता है।  
 १९ किसी का उस पर कोई एहसान नहीं कि जिसका बदला दिया जा रहा हो।  
 २० बहिल केवल अपने महान और बर्तर रब की प्रसन्नता प्राप्त करने के लिए।  
 २१ यकीनन् वह (अल्लाह भी) जल्द ही राजी हो जाएगा।

## سُورَتُ الدُّخْلَهُ - 93

शुल करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहबून बहुत रहम करने वाला है।  
 कसम है चाश्त (सूर्य के ऊचे हो जाने) के समय की।  
 और कसम है रात की जब छा जाए।  
 न तो तेरे रब ने तुझे छोड़ा है,  
 अवश्य तेरे लिए अन्जाम आयाज (अन्त आरम्भ) से बेहतर है।  
 तुझे तेरा रब बहुत जल्द (पुरस्कार) देगा और तू खूश हो जाएगा।  
 क्या उसने तुझे यतीम (अनाथ) पाकर जगह नहीं दी? और तुझे रास्ता भूला पाकर हिदायत नहीं दी?

१ अर्थात् उसका धन जिसे उसने अल्लाह के रास्ते में खर्च करने में बख्ती की थी उसके कुछ भी काम न आएगा।  
 २ अर्थात् उसके हलाक होने और जहन्नम में मुंह के बल गिरने के समय।  
 ३ अर्थात् हिदायत के रास्ते पर गुमाही की रास्ते से स्पष्ट करना हमारे जिम्मे है। फर्क कहते हैं जो हिदायत के रास्ते पर चलेगा तो हिदायत के रास्ते पर चलाना अल्लाह के जिम्मे है।  
 ४ लोक और परलोक की सारी चीजें हमारी हैं, हम जिस तरह चाहते हैं उनमें फेर-बदल करते हैं।  
 ५ शोले भड़काती हूँ आग।  
 ६ अंति में सुराएँ करिष्ठ हैं, अर्थात् जहन्नम की गर्मी कफिर के लिए ही होगी।  
 ७ जिसने उस सत्य को झुटलाया जिसे नबी तथा रसूल लेकर आए, और इमान के रास्ते से मुंह माड़ा।  
 ८ कुक से डरने वाला व्यक्ति उससे दूर रखा जाएगा। वाहिदी कहते हैं कि सारे मुकासिरीन का कहना है कि अंति से सुराद अबू बक्र सिद्दीकी है। अर्थात् यह आतंत जल्दी बारे में उतरी है, और इसका हम आम है।  
 ९ अर्थात् वह उसे भलाई के कामों में खर्च करता है और इससे वह अल्लाह के पास पाक होना चाहता है।  
 १० अर्थात् वह अपने धन का सदका इसलिए नहीं करता कि किसी के किए हुए एहसान का बदला चुकाए।  
 ११ अर्थात् इस महान बदले से जिस से हम उसे जल्द नवाजेंगे।  
 १२ एक बार नबी ﷺ बीमार हो गए, वो तीन रात कियाम नहीं कर सके, तो एक औरत अपे के पास आई और कहन लगी ऐ मुहम्मद! लगता है कि तेरे शैतान ने तुझे छोड़ दिया है, मैं देख रही हूँ कि दो तीन रातों से वह तेरे पास नहीं आया, जिस पर अल्लाह तज़ाला ने वह सूत नाजिल कराया।

१३ सुरज के ऊपर चढ़ आने के समय का नाम है।  
 १४ असमी॑ कहते हैं कि जो सुराएँ سجोली॒ का अर्थ है रात का दिन को ढांप लेना जैसे कपड़े से अदामी को ढांप दिया जाता है।  
 १५ उसने तुझे से अपना नाता नहीं तोड़ा है, जैसे छोड़ कर घले जाने वाला करता है, और न उसने तुझे पर वद्य भेजनी ही बद्द की है।  
 १६ और न ही तू उसके पास ना-प्रसंदीदा है, बल्कि तू उसे बहुत अधिक महबूब है।  
 १७ अर्थात् जन्मत तेरे लिए संसार से उत्तम है, और यह बावजूद उस नुबुवत के शर्फ के जिससे आप को नवाजा गया है।  
 १८ अर्थात् थर्म का गल्वा, सवाब, छोंज़ कौसर और उम्मीद के लिए शिकायत इत्यादि चीज़ें अल्लाह आप की देगा।  
 १९ अर्थात् तुझे अनाथ और बे-सहाया पाया, बाप के प्रेम से भी तू महरूम था, तो उसने तुझे शरण दिया, जहाँ तू पनाह ले सके।  
 २० अर्थात् न कुरआन के बारे में जानता था, न शरीअत के बारे में, तो

لَا يَصِلُّهَا إِلَّا لِأَشْقَى १५ الَّذِي كَذَبَ وَتَوَلَّ وَسِرِّجَبَهَا  
 الْأَنْقَى १७ الَّذِي يُؤْفَى مَالَهُ يَتَرَكَ १८ وَمَا لِأَحَدٍ عِنْدُهُ مِنْ  
 تَعْلَمَةٍ بَخْرَى १९ إِلَّا بِنُغَاءٍ وَجَهْرَهُ أَلَّا يَعْلَمُ २० وَلَسْوَفَ بَرَضَى

## سُورَةُ الظَّهْرَى - 94

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ  
 وَالصَّحَّى १ وَاللَّيلِ إِذَا سَجَنَ २ مَا وَدَعَكَ رَبُّكَ وَمَا قَنَ  
 وَلِلآخِرَةِ خَيْرُكَ مِنَ الْأَوَّلَى ३ وَسَوْفَ يُعَطِّيكَ رَبُّكَ  
 فَرَضَى ४ الَّمْ يَعْدُكَ يَتَسَمَّا فَأَوَى ५ وَوَجَدَكَ صَنَالَا  
 فَهَدَى ७ وَوَجَدَكَ عَابِلًا فَأَغَى ८ فَلَمَّا مَيَّنَهُ قَلَّ نَفَرَ ९  
 وَمَآمَ السَّاِلَ فَلَانَهُ १० وَمَآمَ بِنَعْمَةِ رَبِّكَ فَحَدَثَ ११

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ  
 الْمَنْشَحَ لَكَ صَدَرَكَ १ وَوَضَعَنَا عَنْكَ وَزَرَكَ २ الَّذِي  
 أَنْقَضَ ظَهَرَكَ ३ وَرَفَعْنَاكَ ذَرَكَ ४ فَإِنْ مَعَ الْعُسْرِ سِرَّاً ५ إِنَّ  
 مَعَ الْعُسْرِ سِرَّاً ६ فَإِذَا فَرَغْتَ فَاقْنَبْ ७ كَمَّا رَبِّكَ فَأَرْغَبَ ८

और तुझे गुरीब पाकर अमीर नहीं बना दिया।  
 तो यतीम पर तू भी कठोरता न किया कर।  
 और तू माँगने वाले को डॉट-डपट।

(१) और अपने रब की नेमतों (उपकरणों) को बयान करता रह।  
 سُورَتُ الشَّاهَدَ - 94

शुल करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहबून बहुत रहम करने वाला है।  
 क्या हम ने तेरे लिए तेरा सीना नहीं खोल दिया?  
 और तुझे पर से तेरा बोझ उतार दिया।  
 जिसने तेरी पीठ तोड़ दी थी।

उसने तुझे उनका मार्ग दिखाया।

२१ अर्थात् उसने तुझे गरीब और बाल-बच्चों वाला पाया, तेरे पास धन नहीं था तो उसने तुझे धन और रोजी देकर बेनियाज कर दिया।

२२ अर्थात् उन्हें कमज़ोर और असहाय पाकर उन से कठोरता से न पेश आ, और उन पर अल्याचर न कर, और अपनी यतीमी याद करके उन्हें उनका हक दे दिया कर।

२३ अर्थात् माँगने वाले को डॉट-डपट न किया कर, क्योंकि तू भी गरीब था, तो या तो तू उसे दे दिया कर या नरमी से उसे लोटा दिया कर।

२४ इसमें आदेश है कि जो नेमतों अल्लाह तज़ाला ने तुझे दी है उन्हें बयान करते और बताते रहा कर, अल्लाह की नेमतों का बयान यह कि उस पर उसका शक्तियां किया जाए, और एक कौल के अनुसार नेमत से मुराद कराया है तो उसे पढ़ने और उसे बयान करने का आदेश दिया गया है।

२५ अर्थ यह है कि ऐ मुहम्मद हम ने तेरा सीना नुबुवत कबूल करने के लिए खोल दिया, चूंकि उसी समय से तू वाली जिम्मेदारीया अन्जाम दे रहा है, और नुबुवत के उठाने और वह व्यक्ति को सुरक्षित रखने पर शक्ति वाला हो गया है।

२६ अर्थात् नुबुवत से पहले के तेरे ४० वर्षीय जीवन में जो कभी हुई हमने उहें माफ कर दिया।



## سُورَةُ التَّيْمَنْ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

وَأَلَيْنَ وَالرَّتْمَنْ ۖ وَطُورُ سَيْنَ ۖ وَهَذَا الْبَلْدَ الْأَمَمِينَ ۗ  
لَقَدْ حَلَقَنَا إِلَيْنَسْنَ فِي أَحْسَنِ تَقْوِيمٍ ۖ ثُمَّ رَدَدْنَاهُ أَسْقَلَ سَفَلِنَ ۗ  
إِلَى الْأَلَيْنَ مَامَنُوا وَعَلَمُوا الصَّلِيْحَتْ فَلَهُمْ أَجْرٌ عِنْدُ مَنْنَ ۗ  
فَمَا يَكْدُ بَكَ بَعْدَ بِالْأَلَيْنَ ۖ أَلَيْسَ اللَّهُ بِأَحْكَمِ الْحَكِيمَينَ ۗ

## سُورَةُ الْعَالَمَنْ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

أَفْرَا يَاسِرِيْكَ الَّذِي حَلَقَ ۖ حَلَقَ إِلَيْنَسْنَ مِنْ عَاقِ ۖ أَفْرَا وَرِبَكَ  
الْأَكْرَمُ ۖ الَّذِي عَلَمَ بِالْقَلْمَ ۖ عَلَمَ إِلَيْنَسْنَ مَالَعِيْمَ ۖ كَلَّا إِنَّ  
إِلَيْنَسْنَ يَطْعَنُ ۖ أَنَّ رَءَاهُ أَسْتَعْنَ ۖ إِنَّ إِلَيْرِكَ الرَّجْعَىَ ۖ أَرَدَيْتَ  
الَّذِي يَنْهَى ۖ عَبْدَ إِذَا صَلَحَ ۖ أَرَعَيْتَ إِنْ كَانَ عَلَى الْمُهْدَىِ ۖ أَوْ أَمَرَ  
بِالْقَوْىَ ۖ أَرَعَيْتَ إِنْ كَدَبَ وَتَوَلَّ ۖ لَعِيْمَ بِأَنَّ اللَّهَ يَرِيْ ۖ كَلَّا إِنَّ  
لَيْبَتَهُ لَسْتَعْنَا بِأَنَّا صَيَّةَ ۖ نَاصِيَهُ كَدَبَةَ حَاطِئَهُ ۖ فَلَيْعَ نَادِيْهُ ۖ  
سَنْعَ ازْبَانِيَةَ ۖ كَلَّا لَأَنْطَعَهُ وَاسْجُدَ وَاقْبِرَ ۖ

ओर हमने तेरा चचों बुलंद कर दिया ।  
तो यकीनन् कठिनाई के साथ आसानी है ।  
यकीनन् कठिनाई के साथ आसानी है ।  
तो जब तू खाली हो । तो (इबादत में) मेहनत (परिश्रम) कर ।  
और अपने रब की ओर दिल लगा ।

## سُورَةُ الْعَالَمَنْ - 95

शूल करता हूँ अल्लाह के नाम से जा बड़ा महबून बहुत रहम कर वाला है।  
कसम है इंजीर की और जैतून की ।  
और सीनीन के तूर (पर्वत) की ।

<sup>1</sup> अर्थात् वह बोझ यदि तेरी पीठ पर लदा रहता तो यह बात सुनी गई होती कि उसने तेरी पीठ तोड़ दी ।

<sup>2</sup> अर्थात् लोक एवं परलोक दोनों जगहों पर तेरे चर्चे को बुलंद किय, कुछ चीजों का आश्रय देकर जिनमें से एक बात यह है कि जब वह **اَشْهَدُ اللَّهُ** कहते हैं तो **اَشْهَدُ** भी कहते, इसी तरह अज्ञान में आप का नाम बुलन्द करने की विद्यायत फ़रमाई, और लागों को आप पर बहुत अधिक दर्द भैजने का आदेश दिया ।

<sup>3</sup> अर्थात् उस कठिनाई के साथ जिसका अभी चर्चा हुआ एक और आसानी भी है और यह दोनों आसानियां अल्लाह की ओर से हैं ।

<sup>4</sup> अर्थात् अपनी नमाज से या तक्षीण से या जिहाद से खाली हो ।

<sup>5</sup> दुआ करने में और अल्लाह से मांगने में लग जा, या इबादत में अपने आप को थका दे ।

<sup>6</sup> अर्थात् जहनम से डरते हुए और जनन की चाहत रखते हुए उसकी ओर दिल लगा ।

<sup>7</sup> अल्लाह तआला इन्जीर की जिसे लग खाते हैं और और जैतून की जिस से तेल जैड़त हैं कसम खा रहा है, इन दोनों चीजों से इन्जीर और जैतून वाली धरती है ।

<sup>8</sup> तूरे सीनीन से वह पर्वत मुराद है जिस पर अल्लाह तआला ने मूसा से

और इस शान्ति वाले नगर की ।  
यकीनन् हमने इन्सान को बेहतरीन रूप <sup>10</sup> में पैदा किया ।  
फिर उसे नाचों से नीचा कर दिया ।<sup>11</sup>  
लेकिन जो लोग इमान लाये और फिर नेकी के कर्म किये<sup>12</sup>,  
तो उनके लिए ऐसा बदला है। जो कभी समान न होगा ।<sup>13</sup>  
तो तुझ अब बदले के दिन को झुठलाने पर कौन-सी  
बात आमादा (उत्साहित) करती है ।<sup>14</sup>  
क्या अल्लाह (तआला) सरे हाकिमों का हाकिम नहीं है? <sup>15</sup>

## سُورَةُ الْمُرْتَلُ - 96

शूल करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़ा महबून बहुत रहम करने वाला है।  
अपने रब का नाम लेकर पढ़ <sup>16</sup> जिसने पैदा किया है।  
जिसने इन्सान को खून के लोथड़े से पैदा किया ।<sup>17</sup>  
तू पढ़ता रह तेरा रब बड़ा करम वाला (उदार) है ।<sup>18</sup>  
जिसने कलम के द्वारा (इल्म) सिखाया ।<sup>19</sup>  
जिसने इन्सान को वह सिखाया जिसे वह नहीं जानता था ।<sup>20</sup>  
वास्तव में इन्सान तो आपे से बाहर हो जाता है ।<sup>21</sup>  
इसलिए कि वह अपने आप को बे-पर्वा (निश्चिन्त या धन्यवान) समझता है।  
अंवश्य लौटना तेरे रब की ओर है ।<sup>22</sup>

बात की थी, अर्थात् तूरे सैना ।

<sup>9</sup> अर्थात् मक्का की, इसे बलदे अमीन कहा गया; क्योंकि वह शान्ति वाला है, इसमें इन्सान ही नहीं, पश्च तथा पशि भी शान्ति प्राप्त हैं, गोया कि अल्लाह तआला इन तीनों चीजों की समस्या रहा रहा है इसलिए कि यह प्रारम्भ से ही वर्ष के स्थान हैं, मसा तथा ईस्त और मुहम्मद <sup>23</sup> पर वर्ष इन्हीं स्थानों में नजिल हुए, और तीनों आसमानी वितावें तौरत, इन्जील तथा कुरआन इन्हीं जगहों में उतरी, और हिदायत का प्रकाश यहीं से निकला ।

<sup>10</sup> अर्थात् हम ने उसे लम्बा और सीधा बनाया जो अपनी रोज़ी को अपने हाथ में ले सकता है, और उसे ज्ञान दिया, बोलने, उपाय करने और समझने बूझने की शक्ति भी, और उसे ज्ञान दिया करने के क्षमिता बनाया ।

<sup>11</sup> अर्थात् हम ने उसे उम्र की अनिम्न सीमा को पहुँचा दिया जिसमें जबानी और शक्ति के बाद बुद्धिया और कमज़ोरी होजाती है, और एक कौल के अनुसार इन्सान जिसे अल्लाह तआला भेंत रखता है कि वह पशुओं से भी अधिक गणा-गुजरा होजाता है, और उस की हालत सुख्तुक से बुरी हो जाती है, और नरक के सब से निचले दरजे में डाल दिया जाता है ।

<sup>12</sup> अर्थात् वह नरक में नहीं लौटा जाते, बल्कि अल्लाह की कुशादा जन्नत इर्लाइन की ओर लौटा जाते हैं ।

<sup>13</sup> अर्थात् उनकी नेकी का उत्तें ऐसा सवाब मिलता है जिसका सिलसिला सदा जारी रहेगा, कभी बद्द नहीं होगा ।

<sup>14</sup> अर्थात् ऐं इन्सान । जब तूने यह जान लिए कि अल्लाह ने तुम्हे भले रूप में पैदा किया और तुम्हे नरक में भी लौटा सकता है, तो किर तुम्हे दोबारा लौटाए न जाने और ज़ज़ा व सज़ा को झुट्टाने पर कौन सी चीज़ उभार रही है? और तु क्यों उनका इनकार करते हैं?

<sup>15</sup> अर्थात् न्यायपूर्ण न्याय करने के हिसाब से; क्योंकि उस ने इन्सान को अच्छे रूप का बनाया, फिर जिसने उसके साथ कुक किया उसे औद्य मुंह नरक में डाल दिया, और ज़ज़ा व सज़ा को झुट्टाने के हिसाब से लिखा दिया जाता है ।

<sup>16</sup> यह सब से पहली वर्ष है जो नवी <sup>24</sup> पर उतरी, अर्थात् ऐं मुहम्मद <sup>25</sup> अपने रब के नाम से सहाया चाहते हुए पढ़िए ।

<sup>17</sup> जो पहले गतीज़ पानी के रूप में होता है फिर अल्लाह की कुदरत से खून में बदल जाता है जैसे वह जमे हुए खून का कोई टुकड़ा हो ।

<sup>18</sup> यह उस के करम का ही फल है कि उस ने तुम्हे पढ़ने की शक्ति दी बाबनूद इस के कि तुम अनपढ़ हो ।

<sup>19</sup> अर्थात् जिस रब ने इन्सान को कलम द्वारा लिखना सिखाया, अल्लाह तआला इस्त की बात का आरम्भ पढ़ने और लिखने की बात और उस की ओर दिल लगाने से की; क्योंकि यह दोनों चीज़ों बहुत ही लाभ-दायक हैं ।

<sup>20</sup> अर्थात् उस ने इन्सान को कलम द्वारा ऐसी चीज़ीं सीधाई जिन्हें वह नहीं जानता था ।

<sup>21</sup> अर्थात् अपने घन और अपनी शक्ति के कारण अपने आप को निस्पृह समझ कर उद्धर्णा करता है ।

<sup>22</sup> न कि किसी दूसरी की ओर ।

- (भला) उसे भी तूने देखा, जो (एक बन्दे को) रोकता है? <sup>1</sup>  
 10 जबकि वह बन्दा नमाज अदा करता है?  
 11 भला बताओ तो यदि वह सीधे मार्ग पर हो? <sup>2</sup>  
 12 या परहेजारी का हुक्म देता हो? <sup>3</sup>  
 13 भला देखो तो यदि यह झुटलाता हो और मुँह फेरता हो? <sup>4</sup> तो  
 14 क्या यह नहीं जानता कि अल्लाह (तज़्अला) उसे खूब  
देख रहा है? <sup>5</sup>  
 15 अवश्य यदि ये नहीं रुका तो हम उसकी पेशानी  
(ललाट) के बाल पकड़कर घर्साटेंगे। <sup>6</sup>  
 16 ऐसी पेशानी जो झूठी और पापी है? <sup>7</sup>  
 17 यह अपने सभा वालों को बुला ले? <sup>8</sup>  
 18 हम भी नरक के रक्षकों को बुला लेंगे। <sup>9</sup>  
 19 सावधान! उसका कहना कभी भी न मानना और सजदा  
कर <sup>10</sup> और करीब होजा <sup>11</sup>

## سُرُّتُلُّ كَدْ - 97

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहबून बहुत रहम करने वाला है।  
 यकीन हमने उसे <sup>12</sup> कद्र की (शुभ) रात में उतारा।  
 तू क्या समझा कि कद्र की (शुभ) रात क्या है? <sup>13</sup>  
 कद्र की रात एक हजार महीनों से बेहतर (श्रेष्ठ) है। <sup>14</sup>  
 इसमें (प्रत्येक कार्य को पूरा करने के लिए) <sup>15</sup> अपने रब  
के हुक्म से फरिश्ते और रुह <sup>16</sup> (जिब्रील) उत्तरते हैं। <sup>17</sup>  
 यह रात सरासर शान्ति की होती है <sup>18</sup>, और फज्र के

- <sup>1</sup> जो बन्दे को रोकता है उससे मुराद अबू जहल है, और बन्दे से मुराद मुहम्मद <sup>ﷺ</sup> है।  
<sup>2</sup> अर्थात मुहम्मद <sup>ﷺ</sup> अगरचे सीधे मार्ग पर हों और और और अपने मानने वालों को सीधे मार्ग पर ले जारहे हों।  
<sup>3</sup> या उसे परहेजारी अर्थात इस्लाम, तौहीद और नेकी का आदेश दे रहा हो जिस से नरक से बचा जा सकता हो।  
<sup>4</sup> अर्थात अबू जहल जो रसूल की लाई हूँई चीजों को झुटलाता है और और ईमान से मुहर फैता है।  
<sup>5</sup> कि अल्लाह उस की सारी बातों को जानता है, और उसे उस के किए की सज्जा देगा, फिर उसे इस की जुर्जत कैसे हूँई?  
<sup>6</sup> यह उस के लिए डॉट और फटकार है, अर्थात यदि वह अपनी इस धिनवानी र्हक्ति से नहीं स्कूल तो हम उस की पेशानी पकड़ कर घर्साट कर उसे नरक में डाल देंगे।  
<sup>7</sup> झूठी और पापी पेशानी से मुराद पेशानी वाले का झूठा और पापी होना है।  
<sup>8</sup> नदायी का अर्थ सभा है, जिस में लोग बैठते हों, अर्थात अपने सभा वालों को बुला ले, और एक कौल यह है कि अबू जहल ने अल्लाह के रसूल <sup>ﷺ</sup> को कहा था कि मुहम्मद! तुम मुझे धमको दे रहे हो जबकि इस वादी में मेरे हिमायती, और मेरे सभा वाले सब से अधिक हैं, तो यह आयत उतरी।  
<sup>9</sup> अर्थात फ़रिश्तों को जो बहुत कठोर दिल वाले हैं, वह उसे पकड़ कर नरक में डाल देंगे।  
<sup>10</sup> अर्थात तुम्हें जो वह नमाज से रोक रहा है तो तुम उस की यह बात कदापि न मानना, और उसके रोकने की परवाह किए बिना मात्र अल्लाह की खुशी के लिए नमाज पढ़ते रहना।  
<sup>11</sup> और इताउत तथा इबादत द्वारा अपने रब की नजदीकी चाहते रहना।  
<sup>12</sup> अर्थात कुरुआन की जो शुभ रात्री में लौहे महफूज से बैतुल हज़rat में जो कि पहले आक्राश पर है एक ही बार पूरा जार दिया गया, और वर्ती से ज़स्तर के अनुसार नवी <sup>ﷺ</sup> पर पूरे २३ वर्ष उत्तरता रहा, शबे कद्र रमजान की अन्तिम ९० रातों में से कोई एक रात है, जिस में कुरुआन उतारा गया।  
<sup>13</sup> कद्र का अर्थ अदाजा और फैसला करने के हैं, इसे कद्र की रात इसलिए कहा गया है कि इसमें अल्लाह पूरे साल के काम के अन्वज़ और फैसले करता है, और एक कौल के अनुसार कद्र का अर्थ महानता और शर्फ है, और इसे कद्र वाली रात इसलिए कहा गया है कि यह कद्र व मन्जिलत और शर्फ वाली रात है।  
<sup>14</sup> अर्थात उस में एक रात की इबादत हजार महीनों (८३ वर्ष ४ महीने) की इबादत से उत्तम है।  
<sup>15</sup> सारे कामों को पूरा करने के लिए।  
<sup>16</sup> रुह से मुराइ जिब्रील <sup>ﷺ</sup> है।  
<sup>17</sup> अर्थात आक्राश से धरती पर उत्तरते हैं।  
<sup>18</sup> अर्थात यह पूरी रात शान्ति और भलाई वाली है, इस में कोई दुराई नहीं इसमें शैतान न कोई गलत काम कर सकता है और न किसी को दुख दे

سُورَةُ الْقَبْلَةِ

## سُورَةُ الْقَبْلَةِ

إِنَّا أَنْزَلْنَاهُ فِي لَيْلَةِ الْقَدْرِ ١ وَمَا أَدْرِكَ مَا لَيْلَةُ الْقَدْرِ  
 لَيْلَةُ الْقَدْرِ خَيْرٌ مِّنْ أَلْفِ شَهْرٍ ٢ نَزَّلَ الْمَلِكُ كَهْ وَالرُّوحُ  
 فِيهَا يُادِنُ رَبِّهِمْ مِّنْ كُلِّ أَمْرٍ ٣ سَلَّمَ هِيَ حَنْوَ مَطْلَعُ الْفَجْرِ ٤

سُورَةُ الْبَيْتِ الْحَرَامِ

## سُورَةُ الْبَيْتِ الْحَرَامِ

لَئِنْ كُنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ أَهْلِ الْكِتَابِ وَالْمُشْرِكِينَ مُنْفَكِينَ  
 حَتَّىٰ تَأْتِيَهُمُ الْبَيْتُنَةُ ١ رَسُولُ اللَّهِ يَتَوَلَّ صُحْفًا مَطْهَرَةً  
 فِيهَا كُتُبٌ قِيمَةٌ ٢ وَمَا فَرَقَ اللَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ إِلَّا مِنْ  
 بَعْدِ مَا جَاءَهُمُ الْبَيْتُنَةُ ٣ وَمَا أَمْرَوْا إِلَّا لِيَعْبُدُوا أَهْلَهُ مُحَاجِصِينَ  
 لِهِ الَّذِينَ حَنَفَاءٌ وَيَقِيمُوا الصَّلَاةَ وَيَنْوِونَ أَزْكَرَةً وَدَلِكَ دِينُ  
 الْقِيمَةِ ٤ إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ أَهْلِ الْكِتَابِ وَالْمُشْرِكِينَ  
 فِي كَارِجَهُنَّمَ خَلَدِينَ فِيهَا أُولَئِكَ هُمُ شَرُّ الْبَرِيَّةِ ٥ إِنَّ  
 الَّذِينَ أَمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ أُولَئِكَ هُمُ خَيْرُ الْبَرِيَّةِ ٦

तुलुअ् (उदय) होने तक (होती है)।

## سُرُّتُلُّ بَيْنِيْنَ - 98

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहबून बहुत रहम करने वाला है।  
 1 अहले किताब के काफिर <sup>19</sup> और मूरीत्पूजक लोग <sup>20</sup>, जब तक कि उनके पास स्पष्ट निशानी न आ जाए, रुकने वाले न थे <sup>21</sup> (वह निशानी यह थी कि)।  
 2 अल्लाह (तज़्अला) का एक रसूल <sup>ﷺ</sup>, जो पाक किताबों <sup>23</sup> पढ़े।  
 3 जिसमें ठीक और उचित आदेश हों। <sup>24</sup>  
 4 अहले किताब अपने पास जाहिर निशानी आ जाने के

सकता, और यह सिलसिला फ़ज़र के उदय होने तक रहता है, फ़रिश्तों का दल के दल आकाश से उतरना फ़ज़र तक बन्द नहीं होता।

5 अर्थात यहूद और नसराय।  
 6 अर्थात अरब के मुश्किलों जो मर्तियों के पूजारी थे।  
 7 अर्थात अपने कुकुल से रुकने वाले नहीं थे, स्पष्ट निशानी से मुराद मुहम्मद  
और कुरुआन में जीव द्वारा आप <sup>ﷺ</sup> आए और आप ने उन की ग़माही को उन पर स्पष्ट किया, और उन्हें ईमान की दावत दी।

8 अर्थात मुहम्मद <sup>ﷺ</sup>।  
 9 जो हैं-फेर और रद व बदल से सुरक्षित हो और वाकई अल्लाह का कलाम हो।

10 इस से पुरा का पूरा हिदायत और हिक्मत हो, जैसा कि अल्लाह तज़्अला का फ़रमान है (الحمد لله الذي انزل على عبده الكتاب ولم يجعل له عوجا) :  
 "सम्पूर्ण प्रशंसा उस अल्लाह के लिए है जिसने अपने बन्द पर किताब उतारी,  
और उस में कोई गलत काम कर सकता है और उसे बिल्कुल ठीक-ठाक रखा, जो भी इसमें शैतान न कोई गलत काम कर सकता है और न किसी को दुख दे

جَرَأُوهُمْ عَنْ رَبِّهِمْ حَنَّتْ عَدْنَ تَجْرِي مِنْ تَحْنَاهَا الْأَنْهَرُ خَلْدِينَ  
فِيهَا أَبْدًا رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمْ وَرَضُوا عَنْهُ ذَلِكَ لِمَنْ خَشِيَ رَبُّهُ  
ۖ

سُورَةُ الْجَنَّةِ

سُورَةُ الْجَنَّةِ

إِذَا زُرْتَ الْأَرْضَ زُلْزَلَهَا ۚ وَأَخْرَجَتِ الْأَرْضُ أَنْقَافَهَا  
وَقَالَ إِلَيْنَسْنُ مَا لَهَا ۚ يَوْمَئِذٍ تُحَدِّثُ أَخْبَارَهَا ۚ  
يَأْنَ رَبَّكَ أَوْحَى لَهَا ۚ يَوْمَئِذٍ يَصْدُرُ النَّاسُ أَشْنَانًا  
لَيَرَوْا أَعْمَلَهُمْ ۚ فَمَنْ يَعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ حَيْرًا  
يَرَهُ ۖ وَمَنْ يَعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ شَرَرًا يَرَهُ ۖ

سُورَةُ الْعَدَيْنِ

سُورَةُ الْعَدَيْنِ

وَالْعَدَيْنَ صَبَحًا ۚ فَالْمُورِبَتْ قَدْحًا ۚ فَالْمُغَيْرَتْ صُبْحًا  
فَأَنْزَنَ يَوْمَ نَقْعَدًا ۚ فَوْسَطْنَ يَوْمَ جَمِيعًا ۚ إِنَّ إِلَيْنَسْنَ  
لَرَبِّهِ لَكَوْدُ ۚ وَإِنَّهُ عَلَى ذَلِكَ أَشْهِيدُ ۚ وَإِنَّهُ لِحَبْ  
الْخَيْرِ لَشَدِيدُ ۚ أَفَلَا يَعْلَمُ إِذَا بَعْثَرَ مَا فِي الْقُبُورِ ۖ

वाह ही (मतभेद में पड़कर) मुतफरिक (विभाजित) हो गए।  
उहे इसके सिवा कोई आदेश नहीं दिया गया कि केवल अल्लाह की इबादत करें, उसी के लिए धर्म को खालिस (शुद्ध) कर रखें। इबाहीम हनीफ (एकेश्वरवादी) के धर्म पर<sup>4</sup> और नमाज़ को कायम रखें, और ज़कात देते रहें,<sup>5</sup> यही है दीन सीधी मिल्लत का।

वे-शक जो लोग अहले किंतु बाहर में से काफिर हुए और मातृपूजक, वे जहन्नम की आग (में जाएंगे) जहाँ वे हमेशा रहेंगे, ये लोग बदू-तरीन (तुच्छ) मरुद्वारक हैं।  
वे-शक जो लोग इमान लाये और नेक कार्य किये, ये लोग वेहतरीन (सर्वोच्च श्रेणी) की मरुद्वारक हैं।

<sup>1</sup> अर्थात् उन के बीच इश्किलाफ़ इस कारण नहीं हुवा कि उन पर हक्क स्पष्ट नहीं था, बल्कि हक्क को पहचान कर कुछ लोग ईमान ले आए, और कुछ लोगों ने इन्हार किया, हालांकि उन पर एक ही मार्ग को अपनाना लाजिम था।

<sup>2</sup> अर्थात् उन किलावों में जो उन पर उत्तरी थीं और कुरूआन मजीद में थीं।

<sup>3</sup> कि वह अल्लाह की इबादत को लाजिम पकड़ उस के साथ किनी को साझी न बनाएं, और इबादत को उसी के लिए शुद्ध रखें।

<sup>4</sup> अर्थात् सारे धर्मों से अपना नाता रोड़ कर मात्र इस्लाम धर्म की ओर माइल होजाएं।

<sup>5</sup> नमाजों को ठीक रूप से अपने समय पर पढ़ें जिस प्रकार अल्लाह को मतलूब है।

<sup>6</sup> और जब उन पर ज़कात वाजिब हो तो ज़कात दें।

<sup>7</sup> अर्थात् यही इस मिल्लत का धर्म है जो सीधा है इसलिए इससे इश्किलाफ़ मनासिरन नहीं।

<sup>8</sup> क्योंकि मात्र हसद के कारण उन्होंने हक्क को दुकराया, और रसूल पर मात्र इस कारण ईमान नहीं लाए कि वह इस्माइल की ओलाद में पैदा हुए, इसलिए अंजाम के हिसाब से मरुद्वारक में सब से बुरे लोग हैं।

उनका बदला<sup>9</sup> उनके रब के पास हमेशगी वाली जन्तु है जिनके नीचे<sup>10</sup> नहरें बह रही है जिनमें वे हमेशा-हमेश रहेंगे।<sup>11</sup> अल्लाह (तज़ाला) उनसे खूब हुआ और ये उससे। ये है उसके लिये जो अपने रब से डरे।

## सूरतु़िज्ज़ल्लाल - 99

इस कला हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहबून बहुत रहम करने वाला है।

जब धरती पूरी तरह झंझोड़ दी जाएगी<sup>12</sup>  
और अपने बोझ बाहर निकाल फेंकेगी।<sup>13</sup>

और इन्सान कहने लगेगा कि उसे क्या होगा?<sup>14</sup>

उस दिन धरती अपनी सारी खड़वें बयान कर देगी।<sup>15</sup>

इसलिए कि तेरे रब ने उसे आदेश दिया होगा।<sup>16</sup>

उस दिन लोग विभिन्न दलों में होकर (वापस) लौटेंगे।<sup>17</sup>

ताकि उन्हें उनके कर्म दिखा दिए जाएं।<sup>18</sup>

तो जिसने कण के बराबर भी नेकी की होगी वह उसे देख लेगा।<sup>19</sup>

और जिसने कण के बराबर भी पाप किया होगा, वह उस देख लेगा।<sup>20</sup>

## सूरतु़ आदियात-100

इस कला हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहबून बहुत रहम करने वाला है।

हाँपते हुए दौड़ने वाले घोड़ों की कसम।<sup>21</sup>

फिर टाप मारकर आग झाड़ने वालों की कसम।<sup>22</sup>

फिर सवरे धावा बोलने वालों की कसम।<sup>23</sup>

तो उस समय धूल उड़ाते हैं।<sup>24</sup>

फिर उसी के साथ सेनाओं के बीच धुस जाते हैं।<sup>25</sup>

अर्थात् वह जो ईमान लाए और नेक कर्म किए उनका बदला।

अर्थात् जिन के पेड़ों और महलों के नीचे।

अर्थात् उस से न वह निकाले जाएगी और न स्वयं छोड़ कर कहीं जाएगी, और न ही उन्हें मौत आएगी।

अर्थात् पूरी कठिनता के साथ दिला दी जाएगी, और इस तरह धरथराने लगेगी कि जो बीज भी उस पर होंगी सब टूट फूट जाएगी, और यह पहली फूंक के समय होगा।

अर्थात् जिन ने घुरे और खुलाने उस में दफन हैं सब को निकाल बाहर करेगी, और सारे लोग जिन्हा बोकर उठ खड़े होंगे, और यह दूसरी फूंक के समय होगा।

अर्थात् वह इसके मामला में हैरान परीशन और भयभीत होकर कहेगा : यह क्यों हिलारा जा रही है और अपने बोझ निकाल कर फेंक रही है?

अर्थात् वह अपनी खबरें बयान करेगी और जो भी पुण्य तथा पाप उस पर किया गए हैं उसे बताएंगे, अल्लाह उसे बोलने की शक्ति दे देगा ताकि वह बदलों के खिलाफ गवाही दे।

अर्थात् वह अपनी कठोरों की ओर से उसे आदेश मिला होगा कि वह उहें बयान करे, और लोगों के खिलाफ गवाही दे।

अर्थात् अपनी कठोरों से लोग मदरास की ओर अनेक दलों में पत्तेंगे, कुछ लोग दाई और से अपांगे और कुछ बाई और से, इसी प्रकार उन के धर्म मजहब और कर्म भी विभिन्न होंगे।

अर्थात् अल्लाह उन्हें उक्ते कर्म दिखाए जो उन पर पेश होंगे, और एक कौल वह है कि उन के कर्म का बदला दिखाए।

तो जिसने संसार में कण बराबर भी नेकी की होगी वह उसे कियामत के दिन अपने नाम-आमाल पाकर खुश होगा, या उस नेकी को अपनी आँख से देखेगा।

इसी प्रकार संसार में कोई बुराई की होगी उसे कियामत के दिन अपने नाम-आमाल में पाकर दुःखी होगा, कण उस गर्द व गुबार को कहते हैं जो सुरज की रौशनी में दिखाए देता है।

इस से मुशर वह बोड़ है जो अल्लाह के साथ रहे और दौड़ते हैं, जो अल्लाह और उस के स्फूल से दुश्मनी रखते वाले हैं।

मूरियाँ, ईराम देख से हैं, सुबूत के समय घोड़े की सांस से निकलने वाली आवाज।

दूध के मूरियाँ, ईराम देख से हैं, सुबूत के समय घोड़े दूशमन के चेहरों पर उड़ाते हैं।

जो दौड़ कर दूशमनों के बीच धुस जाते हैं।

अवश्य इन्सान अपने रब का बड़ा ना-शुक्रा है।<sup>1</sup>  
 और निश्चित रूप से वह खुद भी उस पर गवाह है।<sup>2</sup>  
 और यह खैर<sup>3</sup> के प्रेम में भी बड़ा कठोर है।  
 क्या उसे समय की जानकारी नहीं, जब कत्रों में जो कष्ट है निकाल दिए जाएं।<sup>4</sup>  
 और सीनों में छिपी बातों को जाहिर कर दिया जाएगा।<sup>5</sup>  
 वे-शक उनका रब उस दिन उनके हाल से पूरी तरह से बा-ख्वर (परिचित) होगा।<sup>6</sup>

## सूरतुल कारिया: - 101

श्रूत करता हूं अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहबून बहुत रहम करने वाला है।  
 खड़खड़ा देने वाली।<sup>1</sup>  
 क्या है वह खड़खड़ा देने वाली?  
 तज़े क्या पता कि वह खड़खड़ा देने वाली क्या है?<sup>2</sup>  
 जिस दिन इन्सान बिखरे हुए पतिंगों जैसे हो जाएंगे।<sup>3</sup>  
 और पर्वत धूने हुए रंगीन ऊन जैसे हो जाएंगे।<sup>4</sup>  
 फिर जिसके पलड़ भारी होंगे।<sup>10</sup>  
 वह तो दिल पसंद आराम की जिन्दगी में होगा।<sup>11</sup>  
 और जिसके पलड़ हल्के होंगे।  
 उसका टिकाना 'हाविया' है।<sup>12</sup>  
 तज़े क्या पता कि वह क्या है?<sup>13</sup>  
 वह बहुत तेज भड़कती हई आग है।<sup>14</sup>

## सूरतुल तकासुर - 102

وَحُصِّلَ مَا فِي الصُّدُورِ إِنَّ رَبَّهُمْ يَوْمَئِذٍ لَخَيْرٌ

سُورَةُ الْقَارَعَةِ

سُبْحَانَ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ  
 الْقَارَعَةُ ۱ مَا الْقَارَعَةُ ۲ وَمَا أَدْرِنَاكَ مَا الْقَارَعَةُ  
 ۳ يَوْمَ يَكُونُ النَّاسُ كَأَفْرَادٍ مُبْشِّرٌ  
 وَتَكُونُ الْجِبَالُ كَالْمَهِنِ الْمَنْفُوشِ ۴ فَإِمَّا  
 مَنْ ثَقَلَتْ مَوَازِينُهُ ۱ فَهُوَ فِي عِيشَةٍ رَاضِيَةٍ  
 وَإِمَّا مَنْ حَفَّتْ مَوَازِينُهُ ۲ فَإِمَّا هُوَ كَاوِيَةٍ  
 ۳ وَمَا أَدْرِنَاكَ مَا هِيَةٌ ۴ نَارِ حَمِيمَةٍ  
 ۵

سُورَةُ الشَّجَاعَةِ

سُبْحَانَ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ  
 الْهَمْكُمُ الْتَّكَثُرُ ۱ حَتَّىٰ زُرْمُ الْمَقَابِرِ ۲ كَلَّا سَوْفَ  
 تَعْلَمُونَ ۳ ثُمَّ كَلَّا سَوْفَ تَعْلَمُونَ ۴ كَلَّا لَوْ تَعْلَمُونَ  
 عِلْمَ الْيَقِينِ ۵ لَرَوْتَ الْجَحِيدَ ۶ ثُمَّ لَرَوْتُهَا  
 عَيْنَ الْيَقِينِ ۷ ثُمَّ لَسْلَسْلَنَ يَوْمَئِذٍ عَنِ الْعَيْنِ

१ कहु, कफूर के मायने में है, अर्थात् इन्सान बड़ा ना-शुक्रा है, वह अल्लाह के उपर्योगों की कदर नहीं करता, और न उनका हक आदा करता।  
 २ अर्थात् वह अपने परिवर्थ में स्वयं गवाही देता है कि वह बड़ा ना-शुक्रा है; क्योंकि उस के ना-शुक्रे होने का छाप उस पर स्पष्ट होता है।  
 ३ खैर से मुराद धन है, अर्थात् वह धन से बहुत ही अधिक प्रेम करने वाला, उसका तलब और खोज में दौड़-भाग करने वाला है, और उस के लिए मर मिट्टने वाला है।  
 ४ अर्थात् कब्रों में जो मुर्दे हैं निकाल कर बाहर फेंक दिए जाएं।  
 ५ तथा यहाँ तक कि याएं जो मायने में हैं, अर्थात् सीनों में छुए भेदों को स्पष्ट कर दिया जाएगा, और खोल दिया जाएगा।  
 ६ अर्थात् जो रब उहै उनकी कब्री से निकालेगा, और उके सीनों के भेदों को स्पष्ट करेगा, उस के बारे में हर व्यक्ति जान सकता है कि वह कितन खुबर खेने वाला है, उस पर कोई भी चीज़ छुप नहीं सकती, और न ही उस दिन और उसके अलावा दूसरे दिनों में उस से कोई चीज़ छुपी रह सकती है, वह उस दिन हर एक को उस कर्म के अनुसार बलत देगा, तो जब उहै अपने रब के शुक्र और उसकी इबादत से और कियामत के दिन के लिए कर्म करने से उहै फेर दें।  
 ७ कियामत के नामों में से एक नाम है, इसे कारिअह इसलिए कहा गया है कि यह दिलों को अपनी हौलनाकियों से खड़खड़ा देगी, या अल्लाह के दशमनों को अजाब से खड़खड़ा देगा।  
 ८ المبْشِرُ फَرَسٌ पर्वतों, जो रौशनी के चारों ओर मंडलाते हैं।  
 अर्थात् कियामत वाले दिन मारे दर के लोग बिखरे हुए पतिंगों की तरह इधर उधर भगते फिरें, यहाँ तक कि वह मैदान महशर में इकट्ठा कर दिए जाएं।  
 ९ अर्थात् धूने हुए ऊन की तरह जो विभिन्न रंग के हों, यह ढालत ऊन की इसलिए होगा कि वह कण-कण होकर उड़ रहे होंगे, इसके बाद फिर अल्लाह तआला ने मैदान महशर में हिसाब-किताब के समय लोगों की स्तिथि और उन के दो बलों में बटे होने का इजाजाली रूप से चर्चा किया है।  
 १० मوازنिन की जमअू है, इस से मुराद नेक कर्म है, और एक कौता अनुसार यह मيزان की जमअू है, तराजू के मानसे में जिसमें कर्म तैले जाएंगे, अर्थात् नोकर्यों के पलड़ बुराइयों के पलड़ों से झुके हुए होंगे।  
 ११ अर्थात् परमदीद जिसे आदमी पसंद करता हो।  
 १२ अर्थात् उसका टिकाना नरक होगा, उसे कहा गया है क्योंकि उसी की ओर शरण लेंगे जैसे दूढ़ पोंता बच्चा मां की गोद में शरण लेता है।  
 १३ उसकी भक्तरपन और कठोर अजाब को बताने के लिए है, कि वह इन्सान की सोच से ऊपर है, वह उसकी वास्तविकता तक नहीं पहुँच सकता।  
 १४ अर्थात् उसकी गमी अपनी अन्तिम सीमा को और तेज़ी अपनी इन्तिहा को पहुँची होगी।

۹۲ اर्थात् धन और संतान की अधिकता की चाहत में लगे रहने, उनकी अधिकता पर आपस में फ़खर (गर्व) करने, और एक दूसरे पर गालिव आने, और उहै अधिक से अधिक प्राप्त करने की चाहत ने तुम्हें अल्लाह  
 की इत्तात और परलोक के लिए कर्म करने से अवृत्त कर दिया है।

۹۳ यहाँ तक कि तुम्हे मौत ने आ लिया और तुम उसी गफ़लत में पड़े रहे।

۹۴ इसमें उनके लिए अधिकता की चाहत में पड़े रहने पर डांट और इस बात की वारंगें हैं कि वह जल्द कियामत के दिन उसके परिणाम से अवृत्त होजाएंगे।

۹۵ अर्थात् तुम जिस गफ़लत में पड़े हुए हो उसके परिणाम को वास्तविक रूप से जन लो जैसे तुम उन दीर्घों को जानते हो जो संसार में वास्तविक रूप में तुम्हारे पास हैं तो यह तुम्हें अधिकता की चाहत और आपस में फ़खर करने से व्यस्त कर देगा और इस अहम और संगीन मामले में तुम गफ़लत और लापर्वाही से काम नहीं लोगे।

۹۶ अर्थात् तुम परलोक में नरक को अपनी आँखों से देखो गे।

۹۷ अर्थात् तुम नरक को देखो गे, इसी की विश्वास की आँख कहा गया है, और इससे जहन्म को देखना मुराद है।

۹۸ अर्थात् संसार की नेमतों के बारे में जिसने तुम्हें आखिरत के लिए कर्म करने से अचेत कर रखा था, उदाहरण खपरूप अल्लाह ने तुम्हें जो स्वास्थ्य,



### بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

وَالْعَصْرِ ۖ إِنَّ الْإِنْسَنَ لَفِي خُسْرٍ ۖ إِلَّا الَّذِينَ أَمْتَنُوا  
وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ وَتَوَاصَوْا بِالْحَقِّ وَتَوَاصَوْا بِالصَّيْرِ



### بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

وَلَلَّهِ كُلُّ هُمَزَةٍ لَمَرْأَةٍ ۖ الَّذِي جَمَعَ مَا لَا وَعَدَدُهُ  
يَحْسَبُ أَنَّ مَا لَهُ أَخْلَدَهُ ۖ كَلَّا لِيُبَدِّنَ فِي الْخَطْمَةِ  
وَمَا أَدْرِكَ مَا الْخَطْمَةُ ۖ نَارُ اللَّهِ الْمُوْقَدَةُ ۖ الَّتِي تَطْلِعُ  
عَلَى الْأَفْغَدَةِ ۖ إِلَيْهَا عَلَيْهِمْ مُّوْصَدَةٌ ۖ فِي عَمَدٍ مُّمَدَّدَةٍ



### بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

أَلَمْ تَرَ كَيْفَ فَعَلَ رَبُّكَ بِأَحَبِّ الْفَلِيلِ ۖ لَمَّا بَجَعَلَ كَيْمَهُ  
فِي تَضْلِيلٍ ۖ وَأَرْسَلَ عَلَيْهِمْ طِيرًا أَبَابِيلَ ۖ تَرْمِيمِهِمْ  
بِحِجَارَةٍ مِّنْ سِجَيلٍ ۖ فَعَلَاهُمْ كَعْصَفٌ مَّا كُوْلِ



## سُورَةُ الْأَسْمَاءِ - 103

शुरु करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़ा महबून बहुत रहम करने वाला है।  
जमाने की कसम ।  
वास्तव में सारे इन्सान सर्वथा धारे में है ।  
उनके सिवाय जो इमान लाए और नेक कार्य किए और (जिन्होंने) आपस में सत्य की वसीयत की और एक-दूसरे को सब्र की नसीहत की।



## سُورَةُ الْهُمَاجِ - 104

शुरु करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़ा महबून बहुत रहम करने वाला है।

खाली समय, और खाने पीने की जाइकादार चीजें दी हैं, यास बुझाने के लिए टड़ा पानी दिया है, धूप और गर्मी से बचने के लिए घरों का छाया और दूसरी नमतें दी हैं उनके बारे में तुम से पूछा जाएगा।

1 अल्लाह तात्त्वाने ने अर्थात् जमाने की कसम खाई है, क्योंकि रात व दिन के चक्र और रीढ़नी और अधेर के अदल बदल कर आने जाने में बहुत सी इक्रात और नसीहत की बातें छुपी हैं, इसी से जीवन में सीधापन है और इससे जिन्दे की बहुत सी मसलहाँ जुड़ी हैं, और इस में अल्लाह तात्त्वानी की तौहीद (एकश्वरवाद) पर स्पष्ट और खुला प्रमाण मौजूद है।

मङ्गातिल का कहना है कि अस्म से मराद अस्म की नमाज है।

2 ख्सर के माने दिवालिया होजाने और असल धन के बर्बाद हो जाने के हैं।

3 अर्थात् एक दूसरे को हड़क की वसीयत की जिसकी अदाएणी जरूरी है, और वह है अल्लाह पर और उसकी बहवानियत पर इमान लाना, तौहीद और उसकी श्रीरात अनुसार करना और जिन चीजों से रोका गया है उन से रुकना।

4 अर्थात् पाप से बचने पर सब, उसके अदेश और फ़राएज निभाने पर सब, और जन दुर्खें और मुसावितों पर सब जो उसकी तरहीर में लिया जा चुकी है।

5 बड़ी खराबी है उस व्यक्ति की जो त्रुटियाँ टोलने वाला चम्पली करने वाला हो।  
6 जो माल को इकट्ठा करता जाए और गिनता जाए।  
7 वह समझता है कि उसका माल उसके पास हमेशा रहेगा।  
8 कभी भी नहीं यह तो अवश्य तोड़-फोड़ देने वाली आग में फ़ेक दिया जाएगा।

9 और तुझे क्या पता कि ऐसी आग क्या कुछ होगी?  
वह अल्लाह (तआला) की सुलगायी हुई आग होगी।  
जो दिलों पर चढ़ती चली जाएगी।  
10 और उन पर बड़े बड़े खम्बों में, हर ओर से बंद की हड्डी होगी।

## सूरतुल फ़ाल - 105

शुरु करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़ा महबून बहुत रहम करने वाला है।  
क्या तू ने नहीं देखा कि तेरे रब ने हाथी वालों<sup>12</sup> के साथ क्या किया?

क्या उसने उनके मक्क (दृप्रयोजन) को अकारथ नहीं कर दिया।  
और उन पक्षियों के झुरमट भेज दिए।

जो उन्हें मिट्टी और पथर की कंकरियाँ<sup>15</sup> मार रहे थे।  
तो उन्हें खाये हुए भूसे की तरह कर दिया।

5 विल का अर्था रुसवाई (अपमान), या अजाब, यर बर्बादी है, यस व्यक्ति को कहते जो लोगों के मुंह पर उनकी बुराई करता है, लम्ज़ा यह उस व्यक्ति को कहते हैं जो पीठ पांछे लोगों की बूराई करता है।

6 इसमें गीतव करने का कारण बताया गया है, अर्थात् इकट्ठा किए गए धन के कारण वह स्वयं को सब से उत्तम समझने लगा है, और दूसरे उसे बैने दिखते हैं।

7 अर्थात् वह समझता है कि अपने धन के कारण हमेशा हमेश जीवित रहेगा कभी मरे गा ही नहीं; क्योंकि वह अपने इकट्ठा किए हुए धन के कारण सख्त विस्तर की खुद पसंदी में पड़ गया है, और उसका ध्यान इस ओर जाता ही नहीं है कि वह मरने के बाद मेरी की बूरी सोच सके।

8 अर्थात् वह मरना ऐसा ही जैसा वह समझ रहा है बल्कि वह और उपनाधन ऐसी आग में फ़ेक दिए जाएंगे जो हर उस चीज़ की जो उसमें डाली जाएगी तोड़ फोड़ डालेगी।

9 अर्थात् उसकी गर्मी दिलों को पुँच जाएगी, और पूरे दिल को ढक लेगी, क्योंकि दिल में ही नापाक दूरादे, दूरे चरिं और ह्रस्यद पाया जाता है।

10 अर्थात् वे लच्छे खब्बों में बांध दिए गए हैं, मुकातिल कहते हैं : उन पर दरवाज़े बनने के लिए उन्हें फिर उन्हें लोहे के खब्बों से बांध दिया जाएगा, फिर न केवल दरवाज़ा खुलेगा जैसा कि वह उससे निकल नहीं सकेंगे।

11 अर्थात् उसके सारे दरवाज़े उन पर बदल होंगे, वह उससे निकल नहीं सकेंगे।

12 यह हब्शा के कुछ नसरानी थे जो यमन पर हूक्मत कर रहे थे, फिर वे कांवा को गिराने के इरादे से निकले, और मक्का पहुँच गए, तो अल्लाह ने उन पक्षियों को भेजा जिनका चर्चा इस सूरत में है, उन पक्षियों ने उहे दरवाज़ के दिया, यह एक चिन्ह था, और यह नवी<sup>16</sup> की बेस्त से ४० साल पहले की बात है, और लोगों ने इस घटने को अपनी आँखों से देखा था उन से बहुत से लोग अपनी की बेस्त के समय भी जीवित थे।

13 अर्थात् वह अल्लाह ने उनके मक्क और कांवा को गिराने की प्रयास का अवारत नहीं कर दिया, और उस स्वयं उनकी बर्बादी का कारण नहीं बना दिया?

14 अर्थात् उन पर पक्षियों के झुन्ड भेज दिए, यह पक्षियों काले रंग की थीं, जो समुद्र की ओर से दल के दल आई थीं, हर पक्षि के साथ तीन तीन कंकरियाँ थीं, दो उनके दोनों पैरों में और एक उनकी चोच में, जिसे भी यह देखती रही थीं, दो उनके दोनों पैरों में और एक उनकी चोच में, जिसे भी यह देखती रही थीं।

15 लोगों का कहना है कि यह ऐसी कंकरियाँ थीं जो नरक की आग में पकाई गई थीं, और जिन लोगों को यह लगती थीं उस पर उनका नाम लिखा होता था, जो चरने की तरह मसूर से कुछ बड़ी थीं।

16 तो वह उहें खाए हुए भूसे की तूरह कर देती थीं, जैसे पश्च पत्तियाँ खाकर पाखाने के रसें से निकलता है, और एक कौल यह है कि वह डन्टल बाकी रह गया हो।





सुरत्तलू इख्लास - 112

अल्लाह करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़ा महबूबन बहुत रहम करने वाला है।  
 (आप) कह दीजिये कि वह अल्लाह है एक (ही) है।<sup>1</sup>  
 अल्लाह (तआला) वे-नियाज़ है<sup>2</sup> (किसी के अधीन नहीं  
 सभी) उसके अधीन हैं।<sup>3</sup>  
 न उससे कोई पैदा हुवा और न वह किसी से पैदा हुवा।<sup>3</sup>  
 और न कोई उसका हमसर (समकक्ष) है।<sup>4</sup>

सुरत्तल फलक - 113

अप तकता हूं अल्लाह के नाम से जो बड़ा महबूब बहुत रहम करने वाला है  
 आप कह दीजिये कि मैं सवेरे के रख की शरण में आता हूं<sup>6</sup>  
 प्रत्येक उस चीज़ की बुराई से जो उसने पैदा की है<sup>7</sup>  
 और अधेरी रात की बुराई से, जब उसका अंधकार पैल जाए<sup>8</sup>  
 और गाँठ (लगा कर उन) में फूँकन वालियों की बुराई से (भी)<sup>9</sup>  
 और हसद करने वाले की बुराई से भी जब वह हसद करे<sup>9</sup>

सुरतनास - 114

ब्रह्म करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़ा महबूब बहुत रहम करने वाला है<sup>1</sup>  
आप कह दीजिये कि मैं लोगों के खब की शरण में आता हूँ।<sup>1</sup>  
लोगों के मालिक की।<sup>11</sup> (और)।

**१ उत्तर** बिन कअब से रिवायत है कि मुशिकों ने नवी से कहा : तुम अपने रब का नसब बयान करा, तो यह सूरत नाजिल हुई। इसने नुजूल की रोशनी में इसका अर्थ यह हुआ कि यदि तुम उसके नसब के स्पष्टता द्याते हो तो जान लो कि वह अकर्ता है जिसका काइ सदी नहीं।  
**२ उत्तर** ऐसी हस्ती को करते हैं जिसकी ओर हाजर लेकर काया जाए व्याकौं वह उसे पूरी करने की शक्ति रखता है। इन अव्याप्त कहते हैं कि समद वह सरदार है जो अपनी सरदारी में पूरा हो, और वह शरीफ है जो अपनी बड़ी में पूरा हो, और वह बुदेवार है जो अपनी बुदेवारी में पूरा हो, और वह बैन-नियाज है जो अपनी बैन-नियाजी में पूरा हो, और वह जानी और जानने का वह है, और वह हीरमै है जो अपनी दिक्षित में पूरा हो, और ऐसी हस्ती मात्र अल्लाह की हस्ती है, और समीकृत ऐसा गुण है जो अल्लाह के सिवाय किसी और को शोभा नहीं देता।

<sup>3</sup> अर्थात् उसकी कोई संतान नहीं है और न वह स्वयं किसी का संतान है। इसलिए कि कोई उसका हम-जिंस नहीं, और इसलिए भी कि उसकी ओर पहले और बाद दोनों की निष्कृत मुहाल है, क्योंकि यदि वह पैदा हुआ तो इसका अर्थ है कि वह पैदा होने से पहले नहीं था, किंतु कहते हैं कि अर्थ के मुश्किल कहते थे कि परिश्रेय अल्लाह की वेचियाँ हैं, और वहाँ से तो यह अंग्रेज उत्तर अल्लाह की वेटे हैं, और इंसान कहते थे कि इसा अल्लाह की वेटे हैं तो अल्लाह तात्त्वाने इस नकारा, और कहा यह नहीं है कि किसी को जना है और न वह जना गया है।

<sup>4</sup> अर्थात् उसकी बराबरी कोई नहीं कर सकता, और उसके गुणों में कोना भी विवरण नहीं है।

उत्तर का साजा नहीं है।  
उत्तर का अर्थ सवारा है इसलिए कि वह रात को फाड़ कर निकलता है, और एक कौले के अनुसार इससे मुश्केल वह सारी सूटि है जो किसी चीज़ को फाड़ कर निकलती है। और एक कौले यह भी है कि इस से इशारा इस बात की ओर है कि जो हरी इस पूरी दुनिया से रात के अधकार को खत्म करने की शक्ति रखती है वह इसी तरह इस बात की भी शक्ति रखती है कि पिनाह में आने वाली किसी से भी मारी जाए तब उसे दिया जाएगा ताकि वह दूर हो।

व्याप्ति से वे सारा चांगू दर्क द कड़े जिस को उस डंडे ह।  
 ६ अथवा मैं अल्लाह के प्रश्न में आता हूँ इसकी सूची में से प्रत्येक उस चीज़ वीर बुरासे से जिस उसने पैदा किया है, वह आम है, इसमें शैतान उसकी सूची, जहनन इत्तावि प्रत्येक वह वसु सम्पत्ति है जिससे इस्मान को हानि हो सकती है।

जनरार, अपन बिला स आर मुझम लगा अपन नापक मसा का लक निकलते हैं। इन शब्दों द्वारा इन सारी चीजों से परहां मारी गई है।

अर्थात् मैं जावड़ की खाना में आता हूँ जावड़नियों की बुराई से, उत्तराः इसलिए कहा गया है, क्योंकि वह जावड़ करते समय धोंगे के गाठ पर कफ्तारी थीं (इससे जावड़ का काला करत करने वाले मई और औरत दोनों मुरद हैं)।

अल्लाह तआला ने जिस पर इन्हाम किया है उससे नेमत के छिन जानी की तमन्ना करना हसद कहलाता है, और यह एक महान पाप है जो नेकियों को खालित है।

<sup>10</sup> लोगों का रब वही है जिसने उन्हें पैदा किया, और जो उनवें समस्याओं को सलझाता है।

<sup>11</sup> लोगों के हँकोकी बादशाह के शरण में जिसकी पूरे संसार पर राज है।

the following year, he was appointed to the faculty of the University of Michigan.

# سُورَةُ الْأَخْلَاصِ

# سُورَةُ الْفَاتِقْ

سُوْدَةُ النَّاسِ  
١١٤

سُبْلَةُ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ  
قُلْ أَعُوذُ بِرَبِّ النَّاسِ ۖ مَلِكِ النَّاسِ ۖ إِلَهِ  
النَّاسِ ۗ مِنْ شَرِّ الْوَسْوَاسِ الْخَنَّاسِ ۗ  
يُوْسُوْفُ فِي صُدُورِ النَّاسِ ۖ مِنْ أَعْجَمَةِ وَأَنْتَ كَارِسٌ

लोगों के माबूद की (शरण में) <sup>12</sup>  
 शंका डालने वाले <sup>13</sup> पीछे हट जाने वाले <sup>14</sup> की बुराई से।  
 जो लोगों के सिने में <sup>15</sup> श्रका डालता है। <sup>16</sup>  
 (चाहे) वह जिन्न में से हो या इन्सान में से। <sup>17</sup>

<sup>12</sup> क्योंकि बादशाह कभी पूजनीय होता है कभी नहीं होता, **الناس** कह कर  
यह स्पष्ट कर दिया गया कि ٤١ “मातृदू” शब्द उसी हकीकी बादशाह के साथ  
खास है जिस की पेरे संसार पर गज है जिसमें उसका कोई भी समीक्षा नहीं।

**13** खास है जित का पूरा तत्त्वार पर रोग है, जिसमें उत्तमका भाइ ना लाजा गया। छपी आवाज़ को कहते हैं, **وسواس وسوسۃ** से मुराद शैतान है, क्योंकि वह बहुत ही छपै तरीके से इन्सान के दिल में बरी बातें डाल देता है।

<sup>14</sup> **خناس** کا اर्थ خیسک جانے والा ہے، یہ شیطان کا گون ہے، جب اعلیٰ ہم کا جیک کیا جاتا ہے تو خیسک جاتا ہے، اور جب اعلیٰ ہم

उत्तराखण्ड की विभिन्न जगहों पर यह लोकगीत जाता है, जो उन उत्तराखण्ड के ज़िक्र से गाफिल होजाया जाए तो फैल कर दिल पर छा जाता है, और वसवसा डालता है।

**१५** शैतान का वसवसा उसका ऐसी धीमी आवाज़ में अपने अनुकरण की ओर बुलाना है जो दिल तक पहुंच जाए, पर कान से सुनी न जासके।

<sup>16</sup> आगे अल्लाह तात्त्वाला ने इस बात को स्पष्ट कर दिया है कि वसवासे डालने वाले शैतान दो प्रकार के हैं, एक जिन में से और दूसरा इन्सान में से।

<sup>17</sup> जिन्हीं शैतान लोगों के दिलों में वस्त्रसा डालता है, जैसा कि ऊपर इसका चर्चा किया गया, और इन्सानी शैतान भी लोगों के दिलों में वस्त्रसा डालता है।

डालते हैं पर वे उन्हें खैरखाह दिखाइ देते हैं। जबकि वह जिन्नी शैतानों की सुझाई हुई बातों को बड़े ही अच्छे अन्दाज़ में उनके दिलों में डालते हैं।

अंग, और एक कॉल यह है कि इब्लास इन्सानों के दिलों में वस्त्र से डालता है, इब्ने अब्बास से रिवायत है कि जो बच्चा भी पैदा होता है उस पर

शतान मुसल्लत कर लिया जाता है, जब वह अल्लाह का ज़िक्र करता है तो वह खिसक कर पृष्ठे आनंदित है, और जब वह ज़िक्र से गफित हो जाता है तो उसके द्वारा दिल में जो अनेक प्रकार के वसरों से डालता है। उसकी चाहों से और वसरों से हम अल्लाह की पनाह चाहते हैं।

## मुसलमान के जीवन के महत्वपूर्ण प्रश्न

**1-** मुसलमान अपने अकीदे के बारे में जानकारी कहाँ से प्राप्त करे? वह अपने अकीदे के बारे में जानकारी अल्लाह तआला की किताब और उसके उस नबी ﷺ की सही ह हडीस से प्राप्त करे जो अपनी ओर से कोई बात नहीं कहता ﴿إِنَّهُ مُؤْمِنٌ لَا وَحْيَ إِلَّا مَا أَنْذَرْتُكُمْ﴾ “वह तो मात्र वर्त्य है जो उतारी जाती है”। और यह जानकारी सहाबए किराम ﷺ और सलफ सालिहीन की समझ के अनुसार होनी चाहिए।

**2-** यदि हमारे बीच इख्�तिलाफ होजाए तो उसका हल कहाँ है? उसके हल के लिए हम शरीअत की ओर लौटें, इस बारे में हुक्म (फैसला) अल्लाह की किताब और उस के रसूल ﷺ की सुन्नतों में है, अल्लाह तआला का फरमान है : ﴿فَإِنْ نَزَّعْنَاهُ فِي شَيْءٍ فَرَدُوهُ إِلَى اللَّهِ وَأَرْسَلْنَاكُمْ﴾ “फिर यदि किसी बात में इख्तिलाफ करो तो उसे अल्लाह और रसूल की ओर लौटाओ”। और नबी ने फरमाया: “मैं तुम्हारे बीच दो चीज़ें छोड़े जाता हूँ जब तक तुम इन्हें मञ्चूती से थामे रहोगे गुम्राह नहीं होगे : एक अल्लाह की किताब है और दूसरी चीज़ है उसके रसूल की सुन्नत”। (हाकिम)

**3-** कियामत के दिन नजात पाने वाली जमाअत कौन सी है? नबी ﷺ ने फरमाया : “ मेरी उम्मत 73 फिर्कों में बट जाएगी, सारे फिर्के जहन्नम में जाएंगे सिवाए एक के, सहाबए किराम ने पूछा : ऐ अल्लाह के रसूल! वह कौन सी जमाअत होगी? तो आप ﷺ ने फरमाया: यह वह जमाअत होगी जो मेरे और मेरे सहाबए किराम के तरीके पर होगी। ” (अहमद और तिर्मिज़ी) अतः हक उस चीज़ में है, जिस पर आप और आप के सहाबए किराम थे, इसलिए यदि तुम नजात और आमाल की कुबूलियत चाहते हो तो उनकी पैरवी करो और बिद्अतों से बचो।

**4-** नेक कर्म के स्वीकार होने की क्या शर्तें हैं? इसकी तीन शर्तें हैं : ① अल्लाह और उसकी तौहीद पर ईमान लाना; अतः मुश्किल का कर्म स्वीकार नहीं होता। ② इख्लास, अर्थात् कर्म द्वारा मात्र अल्लाह की मर्जी चाही जाए। ③ नबी ﷺ की मुताबअत, वह इस तरह की आप की सुन्नत के अनुसार कर्म किया जाए। अतः आप के बताए हुए तरीके मुताबिक ही अल्लाह की इबादत की जाए। और यदि इनमें से कोई भी एक शर्त नहीं पाई गई तो उसका कर्म रद्द कर दिया जाएगा, अल्लाह तआला का फरमान है : ﴿وَقَدْمَتِإِلَى مَاعِلْمُوا مِنْ عَمَلٍ فَجَعَلْنَاهُ هَبَاءً مَّنْثُرًا﴾ “और उन्होंने जो जो कर्म किए थे हमने उनकी ओर बढ़कर उन्हें कर्णों (ज़र्रों) की तरह तहस-नहस कर दिया”।

**5-** इस्लाम धर्म के कितने मर्तबे हैं? तीन हैं : इस्लाम, ईमान और एहसान।

**6-** इस्लाम का अर्थ क्या है, और इसके कितने अर्कान हैं? तौहीद को स्वीकारते हुए अपने आप को अल्लाह के सपुर्द कर देने, उस की इताअत (आज्ञा पालन) करने, और शिर्क और मुश्किलों से बराअत (संपर्क न रखने) का नाम इस्लाम है। इसके पाँच अर्कान हैं, जिन्हें नबी ﷺ ने अपनी हडीस में ज़िक्र किए हैं : “ इस्लाम की बुनियाद पाँच चीज़ों पर कायम है; इस बात की गवाही देना कि अल्लाह के सिवाय कोई सत्य उपाय नहीं, और यह कि मुहम्मद ﷺ अल्लाह के रसूल हैं, नमाज़ कायम करना, ज़कात देना, बैतुल्लाह (अल्लाह के घर काबा) का हज्ज करना, और रमज़ान का रोज़ा रखना ”। (बुखारी और मुस्लिम)

**7-** ईमान का अर्थ क्या है और इसके कितने अर्कान हैं? दिल से एतिकाद, जुबान से इकार और अंगों से अमल करने का नाम ईमान है जो नेकी करने से बढ़ता है, और पाप करने से घटता है, अल्लाह तआला का फरमान है : ﴿لِيزَدَادُوا إِيمَانًا مَّعَ إِيمَانِهِمْ﴾ “ताकि वे अपने ईमान के साथ और भी ईमान में बढ़ जाएं”। और नबी ﷺ ने फरमाया : “ ईमान की सत्तर से अधिक शाखाएं हैं, इनमें सब से बुलन्द ‘ला-इलाहा इल्लल्लाह’ कहना है, और सब से कमतर रास्ते से कष्ट-दायक चीज़ को हटा देना है, और शर्म व हया ईमान का एक हिस्सा है। ”

(मुस्लिम) इस बात की ताकीद इस से भी होती है कि नेकियों के मौसम में एक मुसलमान अपने मन में नेकी के कामों में चुस्ती महसूस करता है जब्कि पाप करने के कारण बुझा बुझा सा रहता है। अल्लाह तआला का फ़रमान है : ﴿إِنَّ الْحَسَنَاتِ يُدْبَرُونَ إِلَيْهِنَّ الْسَّيِّئَاتُ﴾ “अवश्य नेकियाँ बुराइयों को दूर कर देती हैं”। और ईमान के 6 अर्कान हैं जैसा कि आप ﷺ ने फ़रमाया कि : “ तुम अल्लाह पर, उसके फ़रिश्तों पर, उसकी किताबों पर, उसके रसूलों पर, आखिरत के दिन पर, और अच्छी और बुरी किस्मत पर ईमान ले आओ ”। (बुखारी और मुस्लिम)

**8- ला-इलाहा इल्लाह का क्या अर्थ है?** गैरुल्लाह के इबादत का हक़दार होने का इन्कार करना और मात्र अल्लाह तआला के लिए इबादत को सावित करना।

**9- क्या अल्लाह हमारे साथ है?** हाँ, अल्लाह तआला अपने इल्म द्वारा हमारे साथ है, वह हमारी बातों को सुनता है, हमें देखता है, हमारी रक्षा करता है, हमें धेरे हुए है, वह हम पर कादिर है, हमारे अन्दर उसकी मशीयत (चाहत) चलती है। लेकिन उसकी ज़ात मख्लूकों (सृष्टि) के अन्दर मिली हुई नहीं है, और न ही कोई मख्लूक उसे धेरे में ले सकती है।

**10 क्या अल्लाह तआला को आँखों द्वारा देखा जा सकता है?** मुसलमानों का इस बात पर इत्तिफ़ाक़ है कि संसार में अल्लाह तआला को नहीं देखा जा सकता है, पर मोमिन बन्दे परलोक में मैदाने महशर में और जन्नत में अल्लाह तआला को देखेंगे, अल्लाह तआला का फ़रमान है : ﴿وَمُجْوِهٌ يَوْمَئِنْ تَأْسِرُهُ إِلَى رَبِّهَا نَاطِرٌ﴾ “उस दिन बहुत से चेहरे रौनक वाले होंगे, जो अपने रब की ओर देखते होंगे”।

**11 अल्लाह तआला के नाम और गुण जानने से क्या लाभ होगा?** अल्लाह तआला ने बन्दे पर सब से पहले अपने बारे में जानकारी प्राप्त करने को फ़र्ज़ किया है, तो जब लोग अपने रब के बारे में जान लेंगे तो कमा हक्कुहू (यथायथ) उसकी इबादत करेंगे, उसका फ़रमान है : ﴿فَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ إِلَّا اللَّهُ وَلَا سَعْفَرِ لِذِلْكِ﴾ “आप जान लें कि अल्लाह के सिवाय कोई सत्य उपास्य नहीं, और अपने पापों की बर्खिश शामिंग करें”। चुनाँचे अल्लाह का उसकी विस्तार रूप्तों के साथ ज़िक्र करना उससे उम्मीद रखने का कारण है, और उसकी कठोर सज़ाओं का चर्चा उससे खोफ़ को वाजिब करता है, और अकेले उसके मुऩ्हिम (एहसान करने वाला) होने का चर्चा उसके शुक्र को लाज़िम करता है।

और अल्लाह तआला के नामों और उसके गुणों द्वारा उसकी इबादत करने का अर्थ यह है कि : सेवक को इन चीज़ों की जानकारी हो, उनके अर्थ की समझ हो, और उनके अनुसार उसका अमल हो, अल्लाह तआला के कुछ नाम और गुण ऐसे हैं कि जिन्हें अपनाना बन्दे के लिए प्रशंसा का पात्र है, जैसे : इल्म, दया और इंसाफ़, और कुछ ऐसे हैं जिन को अपनाने से बन्दे की मज़म्मत होती है, जैसे : उलूहियत (इबादत की योग्यता) तजब्बुर (ग़ल्बे वाला होना) तकब्बुर (बड़ाई वाला होना), और बन्दों के कुछ गुण ऐसे हैं जिन पर उनकी प्रशंसा होती है, और जिनका उन्हें आदेश दिया जाता है, जैसे : बन्दगी, फ़कीरी, मुहताजी, आजिज़ी, सवाल इत्यादि। लेकिन यह गुण अल्लाह तआला के नहीं हो सकते, और अल्लाह तआला के पास सबसे अधिक महबूब (पसन्दीदा) व्यक्ति वह है जो ऐसे गुण अपनाए जिन्हें अल्लाह तआला पसन्द करता है, और मबूज (ना-पसन्दीदा) व्यक्ति वह है जो ऐसे गुण अपनाए जिन्हें अल्लाह तआला ना-पसन्द करता है।

**12 अल्लाह तआला के अच्छे अच्छे नामों का अर्थ क्या है? :** अल्लाह ﷺ का फ़र्मान है : ﴿وَلَلَّهِ الْأَسْمَاءُ الْحُسْنَى فَادْعُوهُ بِهَا﴾ “और अच्छे अच्छे नाम अल्लाह ही के हैं, सो इन नामों से

उसी को पुकारा करो”। और नबी ﷺ से साबित है कि आप ने फर्माया : “**अल्लाह तआला के ۶۶ नाम हैं, ۹۰۰ में ۹ कम, जिसने उन्का इह्सा किया वह जन्नत में दाखिल होगया**”। बुखारी और मुस्लिम। इह्सा का अर्थ है : ① उस के शब्द तथा संख्या की गिन्ती करना। ② उस के अर्थ को समझना और उस पर ईमान लाना। चुनान्चि जब बन्दा (अल्-हकीम) कहता तो अपनी सारी चीज़ें अल्लाह के हवाले कर देता है; क्योंकि सारी चीज़ें उसी की हिक्मत के आधार पर होती हैं। और जब (अल्-कुदूस) कहता है तो उस के ध्यान में यह चीज़ आती है कि वह हर प्रकार की कमी से पवित्र है। ③ इन नामों द्वारा अल्लाह तआला से दुआ करना। दुआएं दो प्रकार की होती हैं। ① जिसमें प्रशंसा और इबादत हो, ② जिसमें तलब और मांग हो। और कुर्अन व सुन्नत का तत्त्वु’अ (अनुसन्धान) करने वाला इन नामों को इन प्रकार पाएगा :

नाम	अर्थ
अल्लाह :	उपास्य, जो सारी सृष्टि की इबादत का हकदार है, चुनान्चि वही वह सत्य उपास्य और माँबूद है जिस के लिए झूका जाता, रुकूअू और सज्जा किया जाता, और हर तरह की इबादत उसी के लिए खास की जाती है।
अर्रह्मान :	अल्लाह तआला के इस नाम में यह अर्थ पाया जाता है कि वह सारी सृष्टि पर दयावान है, और यह नाम मात्र अल्लाह तआला के लिए खास है, दूसरे के लिए इस का प्रयोग सहीह नहीं है।
अर्रहीम :	लोक तथा प्रलोक में मोमिनों पर मेहर्बान है, उस ने संसार में उन्हें अपनी इबादत की राह दिखाई और आखिरत में जन्नत अंता करके उनका सम्मान करेगा।
अल्-गफूर :	जो अपने बन्दे के गुनाहों पर पर्दा डाल देता है, और उन्हें रुसवा नहीं करता, न उन के पाप पर उन्हें सज़ा देता है।
अल्-गफ़ार :	क्षमा चाहने वाले बन्दे के गुनाहों को बहुत अधिक माफ करने वाला।
अर्रज़फ :	यह रा�’फ़त से है जिसका अर्थ होता है हद दर्जा मेहर्बान, यह दया संसार में सारी सृष्टि के लिए आम है, और आखिरत में मो’मिन औलिया के लिए खास है।
अल्-हलीम :	शक्ति के बावजूद जो सज़ा देने में जल्दी नहीं करता, बल्कि यदि वह माफी चाहें तो उन्हें माफ कर देता है।
अत्तौवाब :	जो अपने बन्दों में से जिसे चाहे तौबा की तौफ़ीक देता है, और उन्के तौबा को कबूल करता है।
अस्सित्तीर :	जो अपने बन्दे के गुनाहों पर पर्दा डालता है, और उन्हें सरे आम रुसवा नहीं करता, और वह यह पसन्द भी करता है कि बन्दा स्वयं अपने और दूसरे के ऐब को पर्दे में रखें, और अपनी ग्रूप्टाइ की रक्षा करे।
अल्-ग़नी :	जो अपने परिणुर्ण विशेषज्ञाओं के कारण किसी का मुहताज नहीं है, जिक्कि सारी मख़लूक उस की मुहताज है, और उसके उपहार और दया के जस्तरतमन्द हैं।
अल्-करीम :	बहुत अधिक भलाई वाला और अंता करने वाला, जो अपने बन्दों में से जिसे चाहता है, जो चाहता है, जैसे चाहता है सवाल या बिना सवाल किए देता है, इसी तरह गुनाहों को माफ करता है, और लोगों के ऐब पर पर्दा डालता है।
अल्-अक्रम :	जो बेइन्तिहा करम वाला है, जिसमें उस की कोई बराबरी करने वाला नहीं, चुनान्चि सारी भलाई उसी की ओर से है, और वही मोमिनों को अपने फ़ज्ल से बदला देता है, और मुंह मोड़ने वाले का हिसाब अपनी अद्वल की बुन्याद पर करता है।
अल्-वह्वाब :	बहुत अधिक देना वाला, जो बिना किसी बदले और मक्सद के देता है, और बिना सवाल किए इन्अम करता है।
अल्-जौवाद :	जो अपनी सम्पुर्ण सृष्टि को बहुत अधिक देने वाला और उन पर फ़ज्ल करने वाला है, और उस के जूद-व-करम का एक बड़ा हिस्सा मोमिनों के नसीब में है।

<b>अस्सुब्बूहः :</b>	अपने वलियों से मुहब्बत करता है, उन्हे माफ़ करता है, अपनी नेमतों को उन पर निछावर करते हुए उन से खुश होता है, उनके कर्मों को स्वीकार करता है, और दुनिया वालों के दिलों में उनकी मुहब्बत डाल देता है।
<b>अल्-मु'अत्ती :</b>	अपने बन्दों में से जिसे चाहता है अपने ख़ज़ाने से अंता करता है, और उस में से उस के वलियों का एक बड़ा हिस्सा है, और वही है जिसने हर चीज़ को पैदा किया और उन की सूरत बनाई।
<b>अल्-वासि'अ् :</b>	महान सिफ़तों वाला है, कमा हक्कह कोई उस की तारीफ़ नहीं कर सकता, वह बड़ाई वाला, महान सलतनत वाला है, बहुत अधिक माफ़ करने वाला दयावान है, और बहुत ही अधिक फ़ज़्ल और इह्सान करने वाला है।
<b>अल्-मुहिस्सन् :</b>	जो अपने नाम, सिफ़त, कर्म और व्यक्तित्व में सब से सुन्दर है, और जिसने हर चीज़ सुन्दर बनाई, और उन पर इह्सान किया।
<b>अर्राजिक् :</b>	जो सारी मख्लूक को रोज़ी देता है, जिसने उन्हें पैदा करने के पहले ही उनकी रोज़ी मुकद्दर दी, जो उन्हें हर हाल में मिल कर रहेगी।
<b>अर्राज़ज़ाक :</b>	जो बहुत अधिक मात्रा में सृष्टि को जिविका प्रदान करता है, चूनान्वि प्रश्न करने से पहले वह उन्हें रोज़ी देता है, बल्कि नाफर्मानी के बावजूद वह उन्हें रोज़ी देता है।
<b>अल्लातीफ़ :</b>	जिसे हर छोटी बड़ी चीज़ की जानकारी है, चूनान्वि कोई भी चीज़ उस से छूपी हुई नहीं है, वह ख़ेर-व-भलाई को बन्दे तक ऐसे छिपे रास्ते से पह़चाता है कि उन्हें उसका ग्रामान तक नहीं होता।
<b>अल्-ख़बीर :</b>	वह छुपी हुई और बातिनी चीज़ों को भी जानता है जैसा कि उसे ज़ाहिरी चीज़ों की जानकारी है।
<b>अल्-फताह :</b>	जो अपनी हिक्मत और ज्ञान स्वरूप जितना चाहता है अपनी सल्तनत, रहमत और रोज़ी के ख़ज़ाने को खोलता है।
<b>अल्-अलीम :</b>	जिसे ज़ाहिरी और बातिनी, ढकी और छुपी, और गुजरी हुई, मौजूदा और भविष्य की जानकारी है, चूनान्वि उस से कोई भी चीज़ पोशीदा नहीं है।
<b>अल्-बर्र :</b>	जो अपनी मख्लूक पर बहुत अधिक इह्सान करने वाला है, इस कदर अंता करता है कि कोई उन्हें शुमार नहीं कर सकता, वह अपने बन्दे में सच्चा है, बन्दों के गनाहों से दरग़ज़र करता, उनकी मदद करता और उनकी सहायता करता है, थोड़ी चीज़ों को भी स्वीकार करके उनमें बर्कत देता है।
<b>अल्-हकीम :</b>	जो सारी चीज़ों को उचित स्थान देता है, और उसके निज़ाम में किसी प्रकार की कमी कोटाही नहीं होती।
<b>अल्-हक्म :</b>	जो न्याय के साथ मख्लूक के बीच फैसला करता है, और किसी पर अन्याय नहीं करता, और उसी ने अपनी गालिब किताब कुर्अन नाजिल फ़र्माई ताकि लोगों के बीच फैसला करने वाला हो।
<b>अश्शाकिर :</b>	जो अपने इत्ताअत-गुजारों की प्रशंसा करता है, और कर्म चाहे थोड़ा ही क्यों न हो उस पर उन्हें बदला देता है, जो उस की नेमतों पर शुक्र बजा लाते हैं उन्हें दुनिया में अधिक देता है और आखिरत में बदला उत्तम बदला देता है।
<b>अश्शकूर :</b>	जिस के पास बन्दे का थोड़ा कर्म भी बढ़ जाता है और उस पर उन्हें कई ग्रन्ना बढ़ाकर बदला देता है, चूनान्वि अल्लाह का बन्दे के लिए शूक्र अदा करने का मतलब है बन्दे की शूक्रगुजारी पर सवाब देना और उनकी इत्ताअत क़बूल करना।
<b>अल्-जमील :</b>	जिसकी व्यक्तित्व, नाम, सिफ़त और कर्म खूबसूरत तर हैं, और सृष्टि की सारी सुन्दरता उसी द्वारा है।
<b>अल्-मजीद :</b>	जिस के लिए आकाश तथा धर्ती में फ़ख़, करम, प्रतिष्ठता और बुलन्दी है।
<b>अल्-वली :</b>	जो अपनी सलतनत का निज़ाम चलाने वाला कारसाज़ है, और अपने वलियों का मददगार और सहायक है।
<b>अल्-इमीद :</b>	जिसके नाम, विशेष्ज्ञा और कर्म पर उसकी तारीफ़ होती है, और उसी की व्यक्तित्व है जो ख़ुशी ग़मी, सख्ती और नर्मा के हर अवसर में प्रशंसा योग्य है, क्योंकि वह अपनी विशेष्ज्ञाओं में परिपूर्ण है।

<b>अलू-मौला :</b>	वही रब है, मलिक है, सैयद है और अपने बलियों का सहायक और मददगार है।
<b>अन्नसीर :</b>	वह अपनी मदद से जिसकी चाहे सहायता करता है, चुनान्चि जिस की उसने सहायता की कोई उस पर ग़ालिब नहीं होसकता, और जिसे उसने रुस्वा कर दिया कोई उसका सहायक नहीं होसकता।
<b>अस्समीअ् :</b>	जो कि हर भेद और कानाफूसी को, ज़ाहिर और खुले को, बल्कि सारी धीमी और तेज़ आवाज़ को सुनता है, और वही है जो दुआ करने वाले की सुनता है।
<b>अलू-बसीर :</b>	वही है जिसकी निगाह ने लोक और प्रलोक की सारी चीज़ों को वह चाहे जितनी ख़ुली या छिपी हों, छोटी या बड़ी हों अपने घेरे में ले रख्खी है।
<b>अशश्हीद :</b>	जो कि निगहबान है अपनी सृष्टि पर, जिस ने अपने लिए वह्दानियत और इन्साफ के साथ कायम रहने की गवाही दी है, और मुमिन यदि उसकी वह्दानियत बयान करते हैं तो उनकी सच्चाई पर गवाह है, और अपने रसूलों और फरिश्तों के लिए भी गवाह है।
<b>अर्रकीब :</b>	जिसे अपनी सृष्टि की परी जानकारी है, उनके कर्मों को एक-एक करके गिन रख्खा है, लिहाज़ा कोई चीज़ उस से फौत नहीं होसकती।
<b>अर्रफीक :</b>	जो अपने कर्मों में नर्मी बरतता है, और थोड़ा थोड़ा करके पैदा करता और आदेश देता है, और अपने बन्दों से नर्मी का मुआमला करता है, उन पर ऐसी चीज़ें फर्ज़ नहीं करता जिस के करने की उन्हें ताक़त न हो। और वह अपने बन्दों में से नर्मी करने वालों को पसन्द करता है।
<b>अलू-करीब :</b>	जो अपने ज्ञान और शक्ति द्वारा अपनी आम सृष्टि से करीब है, और नर्मी और सहायता द्वारा मोमिनों से करीब है, जबकि वह अर्श पर है, और किसी मख़्लूक के अन्दर नहीं है।
<b>अलू-मुजीब :</b>	वही है जो अपने इल्म और हिक्मत के आधार पर दुआ करने वाले की दुआ और मांगने वाले की मांग को परी करता है।
<b>अलू-मुकीत :</b>	वही है जिसने रोज़ी पैदा करके मख़्लूक तक उसे पहुंचाने की जिम्मादारी ले रख्खी है। और वही है उस का और बन्दों के कर्मों का बिना कमी किए रक्षा करने वाला।
<b>अलू-ह़सीब :</b>	वही है जो अपने बन्दों के लिए दीन और दुनिया के सारे गमों की ओर से काफ़ी होता है, और ख़ास कर मुमिनों के लिए, और वही है जो उनके कर्मों के आधार पर उनका मुहासबा करेगा।
<b>अलू-मुअम्मिन :</b>	अपने रसूलों और उनके पैरोकारों की तस्तीक करने वाला उनकी सच्चाई की गवाही देकर, और उन्हें मो'अज़ज़ा अ़ता करके, चुनान्चि दुनिया और आखिरत में हर प्रकार की शान्ति कायम करने वाला वही है, और जो उस पर ईमान लाता है वह उसकी ओर से अत्याचार, अज़ाब और कियामत के दिन की घब्राहट से सुरक्षित रहता है।
<b>अलू-मन्नानु :</b>	बहुत अधिक देने वाला, महान इन्आम करने वाला, और वाफिर मात्रा में इह्सान करने वाला।
<b>अत्तैयिब् :</b>	वह हर प्रकार के ऐब और कमी से पवित्र तथा परिपूर्ण है, उसी के लिए सुन्दरता है, और वह अपने बन्दे को बहुत अधिक मात्रा में भलाई से नवाज़ता है, और वही कर्म तथा सदूका स्वीकार करता है जो पवित्र तथा सुध हो।
<b>अश्शाफी :</b>	जो दिल तथा शरीर को हर प्रकार की बीमारी से निरोग करता है, लोगों के पास मात्र दबाएँ हैं जबकि शिफ़ा अल्लाह के होथ में है।
<b>अलू-हफीज़ :</b>	जो अपने फ़ज़्ल द्वारा अपने मु'मिन बन्दों और उनके कर्मों का रक्षा करता है, और अपनी शक्ति द्वारा सम्पूर्ण सृष्टि की हेर चाह करता है।
<b>अलू-मुतवक्तिलु :</b>	जिसने अपने ज़िम्मे संसार को बनाने और उसके इन्तिज़ाम की ज़िम्मेदारी ले रख्खी है, चुनान्चि उसी ने इसे बनाया और संवारा है, और वह मु'मिनों का कारसाज़ है जिसने करने से पहले उसके ज़िम्मे अपने काम सौंप दिए, और करते समय उस से मदद चाही, तौफ़ीक मिलने पर उसका श्रूतिया अदा किया, और आज़माइश पर रिज़ामन्दी ज़ाहिर की।
<b>अलू-ख़ल्लाक :</b>	अल्लाह तआला के लिए अन्वित पैदा करने का माना इस नाम में पाया जाता है, चुनान्चि अल्लाह तआला हमेशा से पैदा कर रहा है, और अभी भी उसकी यह महान सिफ़त है।
<b>अलू-ख़ालिक :</b>	जिसने सारी सृष्टि बिना किसी उदाहरण के अनोखी बनाई।
<b>अलू-बारिअ :</b>	जिसने निर्धारित सृष्टि को पैदा किया और उन्हें वृजूद में लाया।
<b>अलू-मुसौविरु :</b>	जिस ने अपने बन्दों को अपनी पसन्दीदा सूरत पर पैदा किया

<b>अर्ब्ब :</b>	जो अपनी नेमतों द्वारा अपनी मख्लूक की तर्बियत करता है, उन्हें पर्वान चढ़ाता है, और अपने बलियों की ऐसी तर्बियत करता है, जिस से उनके दिलों इस्लाह होजाए, और वही मस्टा, मालिक और सैयद है।
<b>अल्-अज़ीम् :</b>	जो अपनी व्यक्तित्व, नाम और सिफात में महान है, इसी लिए सृष्टि पर उसकी महानता और बड़ाई करना वाजिब है, और यह भी कि उसके आदेश का पालन करें।
<b>अल्-काहिर :</b>	जो अपने बन्दों को अपने अधिन में रखता है, उन्हें अपना दास बनाता है, और वह उन से उच्चतर है, वह ग़ालिब है जिस के लिए गर्दने झ़क गई, और चेहरे ताबेदार होगई, और काहिर से मुबालगा का सेगा है।
<b>अल्-मूहैमिन् :</b>	सारी चीजों पर कायम, उनका निगरान, उन पर गवाह और उन्हें अपने धेरे में रखने वाला।
<b>अल्-अज़ीज़ :</b>	उस के लिए सम्पूर्ण प्रकार की अभिमानता है, वह शक्तिशाली है, कोई उस पर गालिब नहीं होसकता, वह किसी का मुहस्ताज नहीं, सभों को उस की ज़खरत है, और वही है क़हर ढाने वाला प्रभुत्व जिस की अनुमति के बिना कोई चीज़ हिल नहीं सकती।
<b>अल्-जब्बार :</b>	जिसकी इच्छा परी होती है, जिस की अधिनता में सारी मख्लूक है, जिस की महानता के आगे झुकी हुई है, और जिस के आदेशों का पालन करती है, और वही है जो कमी पूरी करता है, फ़कीर को धनी बनाता है, कठिन को सहज बनाता है, और रोगी को निरोग करता है।
<b>अल्-मूतक्बिर :</b>	महान, हर प्रकार की बीमारी और कमी से उच्च, बन्दों पर अत्याचार करने से पवित्र, तानाशाहों को निचे करने वाला, जिस के लिए बड़ाई की सिफत है, और जो उसे प्राप्त करना चाहता है उसे तोड़ देता और सज़ा देता है।
<b>अल्-कबीर :</b>	जो अपनी व्यक्तित्व, सिफात और नाम में महान है, और कोई भी चीज़ उस से बड़ी नहीं है, बल्कि उस के सिवाय सारी चीजें उस की महानता के आगे निच्च हैं।
<b>अल्-ह़यीस्य :</b>	वह ह़या और शर्म करता है जैसा कि उस के पूरे नूर चेहरे और महान सल्तनत के लायक है, अल्लाह की करम, नेकी, उदार और महिमा की ह़या है।
<b>अल्-हैस्य :</b>	जिस के लिए परिपूर्ण स्थायी जीवन है, और ऐसी अस्तित्व है जिसकी न तो कोई शुरूआत है और न अंत। और हर जिवित वस्तु को उसी ने जीवन प्रदान की है।
<b>अल्-कैस्यूम :</b>	जो खुद से कायम है, अपनी सृष्टि से बेनियाज़ है, आकाश और पृथ्वी में बसने वाले सभों को थामने वाला है, और सब उसके ज़खरतमंद हैं।
<b>अल्-वारिस :</b>	सृष्टि के फ़ना होजाने के बाद भी जो बाकी रहेगा, और सारी चीजें फ़ना होकर उसी की ओर पलट कर जाने वाली हैं, और जो भी चीज़ हमारे पास है वह अमानत है जो एक न एक दिन अपने मालिक के ओर पलट कर चली जाएगी।
<b>अहैस्यान :</b>	सारी चीजें जिसके अधिन में हैं, और जो अपने बन्दों को कर्म पर बदला देता है, यदि कर्म नेक हो तो बढ़ा कर देता है, और यदि बुरा हो तो उस पर सज़ा देता है या माफ़ कर देता है।
<b>अल्-मलिक :</b>	जो आदेश देता है, मना करता है, और ग़ालिब है, वही है जिस के आदेश सृष्टि पर लागू होते हैं, वह स्वयं अपनी सलतनत का देख रेख करता है, उस पर किसी की इह्सान नहीं है।
<b>अल्-मालिक :</b>	जो शूरू से ही मालिक है और उसका ह़क्कदार है, जब से उसने संसार का निर्माण किया मालिक है, उसमें कोई उसका साझी नहीं, और उस समय भी वही मालिक होगा जब कि इसका अंत होगा।
<b>अल्-मलीक :</b>	इस नाम के अन्दर उसके मुतलक मालिक होने का अर्थ पाया जाता है, जो कि मलिक से बढ़कर है।
<b>अस्सूब्बह :</b>	जो कि हर ऐब और कमी से पवित्र है, क्योंकि उसकी सिफते सुन्दर तथा परिपूर्ण हैं।
<b>अल्-कुदूस :</b>	जो कि किसी भी तरह की कमी और ऐब से पवित्र और पाक है; क्योंकि वही तने तन्हा परिपूर्ण सिफतों मुत्तसिफ है, लिहाजा उस के लिए मिसाल नहीं दी जासकती।
<b>अस्सलाम :</b>	जो सम्पूर्ण प्रकार की ऐब और कमी से सालिम है, अपनी व्यक्तित्व में, नाम में, सिफात में और कर्म में, और दूनिया तथा आखिरत में हर प्रकार की सलामती उसी की ओर से है।
<b>अल्-ह़क :</b>	जिस के बारे में किसी प्रकार का शंका नहीं है, न तो उस के नाम में, न सिफात में, न बन्दगी में, वही सच्चा माबूद है, जिसके सिवाय कोई पूजा के योग्य नहीं।

<b>अल्-मुबीन् :</b>	वह्दानियत, हिक्मत तथा रहमत में जिसका मामला स्पष्ट है, और जो अपने बन्दों के लिए भलाई का मार्ग स्पष्ट करता है ताकि उसकी ताबेदारी करें, और बूराई का मार्ग भी ताकि उस से बचें।
<b>अल्-कवी :</b>	जो कि परिपूर्ण इच्छा के साथ शक्तिमान है।
<b>अल्-मतीन् :</b>	जो कि अपनी ताकत और शक्ति में ठोस है, और जिसे अपने कर्म में किसी प्रकार की कठिनाई, परीशानी और थकन नहीं होता।
<b>अल्-कादिर् :</b>	जिस की शक्ति तले हर चीज़ है, आकाश और पृथिवी में कोई भी चीज़ उसे मग़लूब नहीं कर सकती, और वही हर चीज़ को निर्धारित करने वाला।
<b>अल्-कदीर :</b>	यह भी अल्-कादिर के अर्थ में है, मगर इसमें अल्लाह त़आला के लिए प्रशंसा का मात्रा अधिक पाया जाता है।
<b>अल्-मुक़तदिर :</b>	अपने ज्ञान अनुसार तकदीर लागू करने तथा पैदा करने पर अल्लाह त़आला के अधिक शक्तिशाली होने का अर्थ इस नाम में पाया जाता है।
<b>अल्-अली :</b>	जो अपनी शान, कहर, और जात में उच्च तथा महान है, सारी चीजें उस की सलतनत के अधिन में हैं, और कोई भी चीज़ उस से बालातर नहीं है।
<b>अल्-आ'ला :</b>	जिसकी बुलन्दी के आगी सारी चीजें झुकी हुई हैं, और कोई भी चीज उस के ऊपर नहीं है, बल्कि हर चीज़ उसके नीचे, और उस की सलतनत के अधिन में है।
<b>अल्-मुतआल :</b>	जो वस्तुओं को आगे बढ़ाता है, और अपनी चाहत तथा हिक्मत अनुसार सारी चीजें को उसके समान जगह देता है, और अपने इल्म और फज़ल के अनुसार किसी सृष्टि को दूसरे पर बढ़ावा देता है।
<b>अल्-मुअ़िख्वर :</b>	जो प्रत्येक वस्तु को उचित स्थान देता है, और अपनी हिक्मत से जिसे चाहे आगे पीछे करता है, और जो अजाब को टाले रखता है ताकि बन्दे तौबा करके के उसकी ओर पलट आएं।
<b>अल्-मुसअर्रहर :</b>	जो सामान का मोल, उसका सम्मान और प्रभाव बढ़ाता है, या कम करता है, चुनाच्चि उसकी हिक्मत और इल्म के आधार पर चीजें सस्ती और महंगी होती हैं।
<b>अल्-काबिज् :</b>	जो रुह कब्ज़ करता है, और अपनी हिक्मत और शक्ति के आधार पर जिस की चाहे रोज़ी तंग कर देता है, ता कि उन्हें आज़माए।
<b>अल्-बासित् :</b>	जो अपनी सखावत और रहमत के कारण जिस की चाहे रोज़ी बढ़ा देता, और अपनी हिक्मत से इस द्वारा भी उस की आज़माइश करता है, और कुर्कमियों के लिए तौबे के साथ दोनों हाथों का भैलाता है।
<b>अल्-अव्वल :</b>	जिस से पहले कोई चीज़ नहीं थी, बल्कि सम्पुर्ण सृष्टि उस द्वारा रचना में आई, और स्वयं उस की शुरूआत की कोई सीमा नहीं है।
<b>अल्-आखिर :</b>	जिस के बाद कोई चीज़ नहीं होगी, वह सदा बाकी रहने वाला है, और संसार में जो भी है वह फना होजाने वाला है, फिर उसी की ओर उसे पलट कर जाना है, और उस के वृजूद की कोई अंत नहीं है।
<b>अज्ज़ाहिर :</b>	जो कि हर चीज़ के ऊपर है, और कोई भी चीज़ उस से ऊपर नहीं है, जो कि हर चीज़ को अपने अधिन में रख्खे हुए है, और उन्हें धेरे हुए है।
<b>अल्-बातिन् :</b>	जिस के बरे कोई चीज़ नहीं है, वह सब से करीब है, उन्हें धेरे में लिए हुए है, और संसार में मख्लुक की निगाहों से ओझल है।
<b>अल्-वित्र :</b>	वह अकेला है जिसका कोई साझी नहीं है, तन्हा है जिस जैसा कोई नहीं है।
<b>अस्सैइद् :</b>	जिसे अपनी सृष्टि पर पूरी सरदारी प्राप्त है, वह उनका मालिक और प्रभू है, और वे उसके बन्दे और दास हैं।
<b>अस्समद् :</b>	ऐसा सरदार जो अपनी सरदारी में कामिल है, सारी मख्लूक सख्त मुह्ताजी के कारण जिस की ओर अपनी ज़खरत पूरी होने के लिए ध्यान लगाती हैं। वही हैं जो खिलाता है और खिलाया नहीं जाता।
<b>अल्-वाहिद् :</b>	जो अपनी सारी ख़बियों में यकता है, उन्हें उसका कोई साझी नहीं है, और न ही कोई
<b>अल्-अहद् :</b>	उस जैसा है, और यह ख़बी यह लज़िम करती है कि इबादत के लायक मात्र वह अकेले है, जिसमें कोई उस का साझी नहीं है।
<b>अल्-इलाह :</b>	सच्चा मा'अबूदू, दूसरों के सिवाय तन्हा इबादत के लायक।

**13** अल्लाह के नाम और उसके गुण में क्या फ़र्क हैं? पनाह लेने और क़सम खाने में दोनों में कोई फ़र्क नहीं है, लेकिन कुछ चीज़ें ऐसी हैं जिन में दोनों में फ़र्क है, जिन में से महत्वपूर्ण यह हैं : ① अल्लाह तआला के नामों के द्वारा दुआ करना, और उसके नामों के आगे अब्द बढ़ाकर नाम रखना जायज़ है, किन्तु उसके गुणों के द्वारा जायज़ नहीं, जैसे (अब्दुल करीम) नाम रखना जायज़ है, लेकिन (अब्दुल करम) नाम रखना जायज़ नहीं है, और (या करीम) कह कर दुआ करना जायज़ है, लेकिन (या करमल्लाह) कह कर दुआ करना जायज़ नहीं है। ② अल्लाह के नामों द्वारा उसके गुण साबित होते हैं जैसे उसके नाम (अर्रह्मान) द्वारा उसकी सिफ़त (रह्मत) साबित हुई। लेकिन उसकी सिफ़तों द्वारा उसके ऐसे नाम साबित नहीं किए जा सकते जिनका चर्चा कुरुआन और हडीस में न हुवा हो, जैसे उसकी सिफ़त (अल्मुस्तवी) द्वारा उसके लिए (अल्मुस्तवी) नाम नहीं रखा जा सकता।

③ अल्लाह तआला के कामों के द्वारा उसके ऐसे नाम साबित नहीं किए जासकते जिनका चर्चा कुरुआन और हडीस में न हुवा हो, अल्लाह तआला के कामों में से (अल्ग़ज़ब) गुस्सा होना है, लेकिन यह नहीं कहा जाएगा कि अल्लाह तआला के नामों में से एक (अल्ग़ज़ब) है, अलबत्ता उसके कामों से उसकी सिफ़त साबित होगी, तो उसके लिए हम (ग़ज़ब) गुस्सा होने की सिफ़त साबित करेंगे, इसलिए कि गुस्सा होना भी उसके कामों में से है।

**14** फ़रिश्तों पर ईमान लाने का अर्थ क्या है? उन पर ईमान लाने का अर्थ यह है कि उनके अस्तित्व को स्वीकार किया जाए, और इस बात को भी कि अल्लाह तआला ने उनको अपनी इबादत और अपने आदेश-पालन के लिए पैदा किया है,

﴿لَا يَسْقُونَهُ بِالْمُكْرَمَاتِ وَهُمْ بِأَمْرِهِ يَعْمَلُونَ﴾ عَبَادٌ مُّكَرَّمُونَ  
“उसके सम्मानित बन्दे हैं, किसी बात में अल्लाह पर पहल नहीं करते, बल्कि उसके आदेश पर कारबन्द हैं”। और उन पर ईमान लाना चार चीज़ों को शामिल है : ① उनके अस्तित्व पर ईमान लाना।

② उन में से जिनके नाम को जानते हैं उन पर (उनके नामों के साथ) ईमान लाना, जैसे जिब्रील। ③ उनके जिन गुणों को जानते हैं उन गुणों पर ईमान लाना, जैसे उनकी महान खिल्क़त। ④ उनके जिन ख़ास कामों को जानते हैं उन पर ईमान लाना। जैसे मलकुल मौत पर ईमान लाना कि उनका काम रुह क़ब्ज़ करना है।

**15** कुरुआन क्या है? कुरुआन अल्लाह तआला का कलाम है, जिसकी तिलावत इबादत है, उसी से आरम्भ हुवा है, और उसी की ओर पलट जाएगा, हकीक़त (वास्तव) में अक्षर और आवाज़ के साथ अल्लाह तआला ने उसे बोला है, जिब्रील ﷺ ने अल्लाह तआला से उसे सुना फिर उसे मुहम्मद ﷺ तक पहुँचाया, और सारी आसमानी किताबें अल्लाह तआला का कलाम हैं।

**16** क्या हम कुरुआन को लेकर नबी ﷺ की सुन्नत (हडीसों) से बेनियाज़ हो सकते हैं? यह जायज़ नहीं, बल्कि सुन्नत के अनुसार अमल करना ज़रूरी है, अल्लाह तआला ने इसका आदेश देते हुए फरमाया : ﴿وَمَا أَنْهَاكُمُ الْأَرْسُولُ فَحُذُّرُوهُ وَمَا أَنْهَاكُمْ عَنْهُ فَانْهُوا﴾ “और तुम्हें जो कुछ रसूल दे उसे ले लो, और जिससे रोके रुक जाओ”। और सुन्नत, कुरुआन की तफसीर है, दीन की तफसील जैसे नमाज़ के बारे में इस के बिना नहीं जाना जा सकता, नबी ﷺ ने फरमाया : “सुन लो! मुझे किताब दी गई है, और उसके साथ उसी जैसी (सुन्नत), सुन लो! करीब है कि कोई आसूदा आदमी अपनी मसनद पर टेक लगाए हुए कहे : तुम मात्र इस कुरुआन को लाज़िम पकड़ो, और इसमें जो चीज़ें हलाल हैं उन्हें हलाल जानो, और जो हराम हैं उन्हें हराम जानो”। (अबू वाऊद)

**17** रसूलों पर ईमान लाने का क्या अर्थ है? रसूलों पर ईमान लाने का अर्थ यह है कि यह विश्वास रखा जाए कि अल्लाह तआला ने हर समुदाय में उन्हीं में से एक रसूल मात्र अपनी

इबादत की ओर दावत देने, और गैरों की इबादत को नकारने के लिए भेजे हैं, और वे सब सच्चे, भले, इज्जत वाले, नेक, मुत्तकी, अमीन, हिदायत याप्ता, और मार्ग-दर्शक हैं, उन्होंने हम तक धर्म को पहुँचाया, वे अल्लाह के सब से अफ़ज़ल मख्लूक हैं, और वे पैदाइश से लेकर मौत तक अल्लाह के साथ शिर्क करने से पाक हैं।

**18 कियामत के दिन शफ़ाअत की कितनी किस्में होगी?** शफ़ाअत कई प्रकार की होगी, इनमें सब से बड़ी शफ़ाअत ① (शफ़ाअते उज्मा) होगी, जो कि हश्श के मैदान में होगी, बाद इसके कि लोग पचास हज़ार साल तक ठहरे रहेंगे, अपने बीच फैसले के इन्तज़ार में होंगे, उस समय मुहम्मद ﷺ अपने रब के पास शफ़ाअत करेंगे कि लोगों के बीच फैसला कर दिया जाए, और यह शफ़ाअत हमारे नबी मुहम्मद ﷺ के लिए खास है, और यही मकामे मह्मूद है जिसका उनसे वादा किया गया है। ② दूसरी शफ़ाअत होगी जन्नत का दर्वज़ा खोलवाने के लिए, और सब से पहले हमारे नबी मुहम्मद ﷺ जन्नत का दर्वज़ा खोलवाएंगे, और सारी उम्मतों में सब से पहले उन्हीं की उम्मत जन्नत में जाएगी। ③ कुछ तौहीद परस्तों के बारे में शफ़ाअत जिनके जहन्नम में जाने का आदेश होगया होगा, कि उन्हें जहन्नम में न भेजा जाए। ④ तौहीद परस्तों में से अपने गुनाहों के कारण जो जहन्नम में डाले गए होंगे, उन्हें जहन्नम से निकालने की शफ़ाअत। ⑤ कुछ जन्नतियों के दर्जे बुलन्द करने के लिए शफ़ाअत। आखिरी तीन हमारे नबी के लिए खास नहीं है, लेकिन वह दूसरों पर मुकद्दम होंगे, और इस सफ़ में आप के बाद दूसरे नबी, फ़रिश्ते, नेक लोग और शहीद लोग होंगे। ⑥ कुछ लोगों को बिना हिसाब लिए जन्नत में दाखिल किए जाने की शफ़ाअत। ⑦ कुछ काफिरों के अज़ाब में कमी करने के लिए शफ़ाअत, और यह हमारे नबी के लिए खास होगी वह अपने चचा अबू तालिब के अज़ाब में कमी के लिए शफ़ाअत करेंगे। फिर अल्लाह तआला अपनी रहमत से बिना किसी की शफ़ाअत के जहन्नम से ऐसे लोगों को निकाल देगा, जिनकी मृत्यु तौहीद पर हुई थी, और उन्हें अपनी रहमत से जन्नत में दाखिल करेगा। ऐसे लोगों की संख्या केवल अल्लाह ही जानता है।

**19 क्या ज़िन्दा लोगों से सहायता मांगना या शफ़ाअत चाहना जायज़ है?** हाँ, ज़िन्दा लोगों से सहायता मांगना जायज़ है, बल्कि शरीअत ने एक दूसरे की मदद करने पर उभारा है, अल्लाह तआला का फ़रमान है : ﴿وَتَعَاوُنُوا عَلَى الْمِلْكِ وَالْمُنْفَوْقِ﴾ “नेकी और तक़्वा के कामों में एक दूसरे का सहयोग करो।” और नबी ﷺ ने फ़रमाया : “अल्लाह तआला अपने बन्दे की मदद में होता है जब तक बन्दा अपने भाई की मदद में लगा रहता है।” (मुस्लिम) और शफ़ाअत की बहुत बड़ी फ़ज़ीलत है, इसका अर्थ है किसी के लिए माध्यम बनना। अल्लाह तआला का फ़रमान है: ﴿مَنْ يَسْقُطْ شَفَاعَةً حَسَنَةً يَكُنْ لَهُ تَصْيِيدٌ مَّنْهَا﴾ “और जो व्यक्ति किसी सवाब और भले काम करने की सिफ़ारिश करे उसे भी उसका कुछ हिस्सा मिलेगा” और नबी ﷺ ने फ़रमाया: “शफ़ाअत करो अब्र पाओगे।” (बुखारी) और इसके जायज़ होने के लिए कुछ शर्तें हैं: ① मदद या शफ़ाअत ज़िन्दा व्यक्ति से तलब की जाए; क्योंकि मुर्दा से उसका तलब करना दुआ (पुकार) कहलाता है और मुर्दा उसकी दुआ (पुकार) में से कुछ भी सुन नहीं सकता। अल्लाह तआला ने फ़रमाया: ﴿إِنَّدُعُوكُمْ لَا يَسْمَعُونَ دُعَاءَكُمْ وَلَا يَسْعَوْمَا إِسْتَجَابُوا لَكُمْ﴾ अर्थातः “अगर तुम उन्हें पुकारो तो वह तुम्हारी पुकार सुनते ही नहीं, और अगर (मान लिया कि) सुन भी ले तो फ़र्याद रसी नहीं करेंगे।” पस कैसे मैयत से मदद या शफ़ाअत तलब की जाएगी, हालाँकि वह खुद ही ज़िंदों की दुआओं के मुहताज है, और उसका अमल उसके मौत से मुनक्फिर (खत्म) हो गया है मगर दुआ वगैरा के माध्यम से जो उसको पहुँचे। नबी ﷺ ने फ़रमाया: ‘जब आदम की औलाद मर

जाता है तो उसका अमल मुनक्फिरतिअू (खत्म) हो जाता है सिवाय तीन के: सदका जारिया, वह इत्म जिससे नफा उठाया जाए या नेक संतान जो उसके लिए दुआ करे।' (मुस्लिम) ② वह जो बात कह रहा हो समझ में आ रही हो। ③ जिस व्यक्ति से शफ़ाअत तलब की जा रही है, वह हाजिर हो। ④ शफ़ाअत ऐसी चीज़ के बारे में हो जो आदमी के बस में हो। ⑤ सांसारिक चीज़ों के बारे में शफ़ाअत हो। ⑥ जायज़ काम के लिए शफ़ाअत हो जिस में कोई हानी न हो।

**20 वसीले कितने प्रकार के होते हैं?** दो प्रकार के होते हैं : ① अल्लाह के नामों और उसके गुणों द्वारा वसीला पकड़ना। ② बन्दे का अपने नेक अमल द्वारा वसीला पकड़ना, जैसे ग़ार वाले तीनों व्यक्तियों ने किया। ③ किसी उपस्थित ज़िन्दा नेक मुस्लिम व्यक्ती की दुआ द्वारा वसीला पकड़ना जिसकी दुआ के स्वीकार होने की आशा हो। **2- हराम वसीला :** और यह दो प्रकार के होते हैं : ① अल्लाह तआला से नबी ﷺ या किसी वली के जाह-व-जलाल के माध्यम से सवाल करना, जैसे यह कहना कि ऐ अल्लाह! मैं तेरे नबी के जाह-व-जलाल के वसीले, या हुसैन के जाह-व-जलाल के वसीले से तुझ से सवाल करता हूँ। यह बात अपनी जगह दुरुस्त है कि नबी ﷺ और नेक लोगों के जाह-व-जलाल अल्लाह तआला के नज़्दीक महान हैं, लेकिन सहाबए किराम ﷺ ने जो कि हर भलाई के काम में आगे आगे रहते थे कहत-साली (अकाल) पड़ जाने के अवसर पर नबी ﷺ के जाह-व-जलाल का वसीला नहीं पकड़ा जब्कि आप की कब्र उनके पास मौजूद थी। बल्कि उन्होंने आप ﷺ के चचा अब्बास ﷺ की दुआ से वसीला पकड़ा। ② नबी ﷺ की या किसी वली की क़सम खाकर अल्लाह तआला से अपनी हाजत को मांगना। जैसे यह कहना ऐ अल्लाह! मैं तेरे फ़लाँ वली के वसीले से, या तेरे फ़लाँ नबी के हक के वसीले से तुझ से सवाल करता हूँ। और यह हराम इसलिए है कि मख्लूक की मख्लूक पर क़सम खाना हराम है, तो अल्लाह को किसी मख्लूक की क़सम देना और अधिक वर्जित है। और दूसरी बात यह है कि मात्र अल्लाह की इताअत कर लेने से बन्दे का अल्लाह पर कोई हक वाजिब नहीं हो जाता।

**21 आखिरत के दिन पर ईमान लाने का क्या अर्थ है?** इस बात पर पुख़ता यकीन रखा जाए कि कियामत क़ायम होगी, और साथ ही मौत पर, मौत के बाद कब्र की परीक्षा (आज़माइश), कब्र के अज़ाब और उसकी नेमत, सूर में फूँक मारा जाना, लोगों का अपने रब के सामने खड़ा होना, नामए आमाल को फैलाया जाना, मीज़ान (तराजू) और पुल-सिरात का क़ायम होना, हैज़े कौसर और शफ़ाअत, फिर उसके बाद जन्नत या जहन्नम की ओर जाने पर ईमान रखना।

**22 क़्यामत की बड़ी निशानियाँ क्या क्या हैं?** नबी ने फ़रमाया: "क़्यामत उस समय तक क़ायम नहीं होगी जब तक कि उससे पहले तुम दस निशानियाँ न देख लो, और इन का चर्चा करते हुए फ़रमाया: धुआं, दज्जाल, जानवर, पश्चिम से सूरज का निकलना, ईसा बिन मर्याम का नाज़िल होना, याजूज माजूज का निकलना, तीन जगहों पर ज़मीन का धंसना, पश्चिम, पूरब और ज़ज़ीरतुल-अरब में, और अन्तिम निशानी के रूप में यमन से आग निकलेगी जो लोगों को महशर में इकट्ठा करेगी"। (मुस्लिम) इन्हे उमर की हदीस के अनुसार इनमें सब से पहली निशानी पश्चिम से सूरज का निकलना है। और इसके अलावा दूसरी बातें भी कही गई हैं।

**23 लोगों के लिए सब से बड़ा फ़िला कौनसा होगा?** नबी ﷺ ने फ़रमाया: "आदम की पैदाइश से लेकर क़्यामत क़ायम होने तक दज्जाल से बड़ा कोई फ़िला नहीं है"। (मुस्लिम) दज्जाल आदम की औलाद में से है, जो कि अन्तिम ज़माने में निकलेगा, उसकी दोनों आँखों के बीच (فَك) लिखा होगा, जिसे हर मोमिन पढ़ लेगा, वह दाहिनी आँख का काना होगा, गोया कि अंगूर की तरह उभरी हुई हो, वह जब निकलेगा तो शुरू में सुधार का दावा करेगा, फिर नुबुव्वत और अल्लाह

होने का दावा करेगा, लोगों के पास आएगा और उन्हें अपनी ओर बुलाएगा, लोग उसे झुठला देंगे, वह उनके पास से वापस होगा तो उनके माल भी उसके पीछे पीछे हो लेंगे, और वे खाली हाथ हो जाएंगे। फिर दूसरे लोगों के पास आएगा और उन्हें अपनी ओर बुलाएगा, वे उसकी बात मान लेंगे और उसकी पुष्टि करेंगे, वह आकाश को आदेश देगा तो बरसात होगी, ज़मीन को आदेश देगा तो अनाज निकालेंगी। वह लोगों के पास पानी और आग के साथ आएगा, उसकी आग ठन्डी होगी और उसका पानी गरम होगा। मोमिन के लिए मुनासिब यह कि हर नमाज़ के अन्त में उसके फिल्में से अल्लाह की पनाह मांगे। और यदि उसे पा लै तो उस पर सूरतु-लू-कट्फ़ की शुरू की आयतें पढ़े। और उससे मुठ-भेड़ करने से बचे ताकि कहीं फिल्में में न पड़ जाए, नबी ﷺ का फ़रमान है: “जो दज्जाल के बारे में सुने वह उससे दूर रहे, इसलिए कि अल्लाह कि कसम व्यक्ति उसके पास आएगा और वह अपने आप को मोमिन समझ रहा होगा, लेकिन उसके साथ जो शुबहात होंगे उन के कारण उसकी पैरवी करने लगेगा”। (अबू दाऊद) वह संसार में 40 दिन तक रहेगा, पहला दिन एक वर्ष के बराबर होगा, दूसरा दिन एक महीने के बराबर, तीसरा दिन एक सप्ताह के बराबर और बाकी दिन साधारण दिनों के तरह होंगे। और मक्का और मदीना के सिवाय बाकी सारे शहर और देश में जाएगा, फिर ईसा ﷺ आकाश से उतरेंगे और उसकी हत्या करेंगे।

**24 क्या जन्त और जहन्नम मौजूद हैं?** हाँ दोनों के दोनों मौजूद हैं। अल्लाह ने इन्हें लोगों को पैदा करने से पहले पैदा किया, और यह दोनों न तो फ़ना होंगे न मिटेंगे, अल्लाह तआला ने अपने फ़ज्ल से कुछ लोगों को जन्त के लिए पैदा किया है, और अपने न्याय और अद्वल से कुछ लोगों को जहन्नम के लिए पैदा किया है, और हर किसी के लिए वह चीज़ आसान कर दी गई है जिस के लिए वह पैदा किया गया है।

**25 तक़दीर पर ईमान लाने का क्या अर्थ है?** इस बात पर पुख्ता विश्वास करना कि हर भलाई और बुराई अल्लाह तआला के फैसले और उसकी लिखी हुई तक़दीर के अनुसार होती है, और वह जो चाहता है करता है, नबी ﷺ ने फ़रमाया : “ यदि अल्लाह तआला आकाश वालों, और धरती वालों को अज़ाब दे, तो वह उन्हें अज़ाब देने में जालिम नहीं होगा, और यदि उन पर रहम करे तो उसकी रहमत उनके कर्मों से बेहतर होगी, और यदि तूने अल्लाह के रास्ते में उहुद पहाड़ के बराबर सोना भी ख़र्च किया तो अल्लाह तआला उसे स्वीकार नहीं करेगा यहाँ तक कि तू तक़दीर पर ईमान ले आ और यह जान ले कि जो चीज़ें तुझे मिली हैं वे तुझ से दूर होने वाली नहीं थीं, और जो चीज़ें तुझ से दूर हो गई वे तुझे मिलने वाली नहीं थीं। और यदि इसके सिवा (दूसरे अकीदे) पर तुम्हारी मौत होई तो तू अवश्य जहन्नम में जाएगा”। (अहमद और अबू दाऊद) और तक़दीर पर ईमान लाना 4 चीज़ों को शामिल है : ① इस बात पर ईमान लाना कि अल्लाह तआला को सारी वस्तुओं की स्पष्ट जानकारी है। ② इस बात पर ईमान लाना कि अल्लाह तआला ने उन्हें लौहे मस्फूज़ में लिख रखा है। नबी ﷺ ने फ़रमाया: “अल्लाह तआला ने आकाश और धरती को पैदा करने के 50 हज़ार वर्ष पहले मख्लूकों की तक़दीर लिख दी है”। (मुस्लिम) ③ अल्लाह तआला की लागू होने वाली मशीयत (चाहत) पर ईमान लाना जिसे कोई चीज़ रोक नहीं सकती और उसकी शक्ति पर ईमान लाना जिसे कोई चीज़ बेबस नहीं कर सकती, वह जो चाहता है, होता है, और जो नहीं चाहता, नहीं होता। ④ इस बात पर ईमान लाना कि अल्लाह तआला ही ख़ालिक (पैदा करने वाला) है और सारी चीज़ों को बुजूद में लाने वाला है, और उसके सिवाय सारी चीज़ें उसकी मख्लूक हैं।

**26- क्या मख्लूक के पास भी वास्तविक शक्ति, चाहत और इच्छा है?** हाँ, इन्सान के पास भी वास्तविक चाहत, इच्छा और मर्ज़ी है, लेकिन यह अल्लाह की चाहत के दायरे के अन्दर है।

अल्लाह तआला ने फ़रमाया: ﴿وَمَا نَشَاءُونَ إِلَّا أَن يَشَاءُ اللَّهُ أَن يَشَاءُونَ﴾ “तुम अल्लाह तआला के चाहे बिना कुछ भी नहीं चाह सकते”। और नबी ﷺ ने फ़रमाया: “कर्म करो; इसलिए कि हर व्यक्ति पर वह कर्म आसान कर दिया गया है जिस के लिए वह पैदा किया गया है”। (बुखारी और मुस्लिम) और अल्लाह तआला ने हमें शुद्ध और अशुद्ध में फ़र्क करने के लिए बुद्धि, आँख और कान दिए हैं, तो क्या कोई ऐसा बुद्धिमान भी है जो चोरी करने के बाद कहे कि अल्लाह ने हम पर चोरी लिख दी है?! और यदि वह ऐसी बात कहेगा भी तो लोग उसके इस उज्ज्वल को स्वीकार नहीं करेंगे। बल्कि उसे सज़ा देंगे और कहेंगे : अल्लाह तआला ने तुम पर सज़ा भी लिखी है, तो तक़दीर को हुज्जत और बहाना बनाना जायज़ नहीं है बल्कि वास्तव में यह तक़दीर को झुठलाना है। अल्लाह तआला का फ़रमान है :

﴿سَيَقُولُ الَّذِينَ أَشْرَكُوا إِلَهًا مَعَ إِلَهٍ كَذَبٍ كَذَبَ الَّذِينَ مَنْ شَاءُوا كَذَبَ وَلَا حَرَمَ مِنْ شَاءُوا كَذَبَ وَلَا مَأْبَأً لَّا كَذَبَ وَلَا حَرَمَ مِنْ شَاءُوا كَذَبَ كَذَبَ الَّذِينَ مَنْ قَبَلُوهُمْ﴾  
“मुशिरक कहेंगे कि यदि अल्लाह चाहता तो हम और हमारे बुजुर्ग शिर्क नहीं करते, न किसी चीज़ को ह्राम बनाते, इसी तरह इनके पहले के लोग झुठलाएं”।

**27 एह्सान क्या है?** नबी ﷺ ने जिब्रील ﷺ के प्रश्न का उत्तर देते हुए फ़रमाया: “तुम अल्लाह की इबादत इस तरह से करो गोया कि तुम उसे देख रहे हो, और यदि तुम नहीं देख रहे हो तो वह तुम्हें देख रहा है”। (बुखारी और मुस्लिम और यह लफ़्ज़ मुस्लिम का है)। और दीन के तीनों मर्तबों में यह सब से ऊँचा मर्तबा है।

**28 तौहीद की कितनी किस्में हैं?** तीन किस्में हैं : ① तौहीदुर्खूबियः अल्लाह तआला को उसके कर्मों में अकेला मानना, जैसे : पैदा करना, रोज़ी देना और जीवन देना इत्यादि। नबी ﷺ के आने से पहले भी काफ़िर तौहीद की इस किस्म का इकार करते थे। ② तौहीदुल्लू उल्हौयः इबादतों के द्वारा अल्लाह तआला को अकेला मानना। जैसे : नमाज़, नज़र और नियाज़ और सद् के इत्यादि। रसूलों को इसी कारण भेजा गया कि मात्र अल्लाह तआला की इबादत की जाए। और इसी कारण किताबें भी उतारी गईं। ③ तौहीदुल्लू अस्मा वस्सिफ़ात : बिना तहरीफ़, तातील, तर्क़ीफ़ और तम्सील के अल्लाह तआला के लिए उसके अच्छे नामों और ऊँचे गुणों को जिस तरह स्वयं अल्लाह ने और उसके रसूल ने साबित किए हैं साबित करना।

**29 वली कौन है?** नेक और परहेज़गार मोमिन जो अल्लाह से डरता हो वही वली है। अल्लाह तआला का फ़रमान है : ﴿إِنَّ أُولَئِكَ الَّذِينَ لَا خُوفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ﴾  
“याद रखो अल्लाह के मित्रों पर न कोई डर है न वे दुखी होते हैं, ये वे लोग हैं जो ईमान लाए और गुनाह से परहेज़ करते हैं”। और नबी ﷺ ने फ़रमाया: “मेरा वली अल्लाह है और नेक मोमिन है”। (बुखारी और मुस्लिम)

**30 सहाबए किराम ﷺ का हमारे ऊपर क्या हक़ है?** हमारे ऊपर वाजिब है कि हम उनसे महब्बत करें, उनके नामों के साथ ﷺ कहें, अपने दिलों और जुबानों को उनके बारे में साफ़ सुथरा रखें। उनकी प्रतिष्ठाओं को आम करें, उनकी गलतियों और उनके बीच होने वाले इख्तिलाफ़ पर चुप रहें, वे गलतियों से मासूम नहीं हैं, लेकिन उन्होंने इज्ञिहाद किया, तो उन में से जो हक़ को पहुँचा उसे दो सवाब मिलेगा, और जिन से गलती हुई उन्हें उनके इज्ञिहाद पर एक अज्ञ मिलेगा। और उनकी गलतियाँ माफ़ हैं, और यदि उनसे गलतियाँ हुई भी तो उनकी नेकियाँ उनके गुनाहों को मिटा देंगी। और वे आपस में एक दूसरे पर फ़ज़ीलत रखते हैं : उन में सब से अफ़्ज़ल दस सहाबए किराम हैं : अबू बक्र, फिर उमर, फिर उसमान, फिर अळी, फिर तल्हा, जुबैर, अब्दुर्रह्मान बिन औफ़, साद बिन अबी वक्कास, सईद बिन जैद और अबू उबैदा बिन

जर्राह, फिर बाकी मुहाजिरीन, फिर मुहाजिरीन और अन्सार में से जो बदर में शरीक हुए, फिर बक़ीया अन्सार, फिर बाकी सारे सहाबए कराम। नबी ﷺ ने फ़रमाया: “तुम मेरे سहाबए किराम को गालियाँ मत दो, क़सम है उस हस्ती की जिसके हाथ में मेरी जान है यदि तुम में से कोई उहुद के बराबर भी सोना खर्च करे तो उनके खर्च किए हुए मुद या आधे मुद के बराबर भी नहीं पहुंच सकता”। (बुखारी और मुस्लिम) और आप ने यह भी फ़रमाया: “जिस ने मेरे सहाबा को गाली दी उस पर अल्लाह उस के फ़रिश्ते और सारे लोगों की लानत हो”। तबानी।

**31 क्या अल्लाह के रसूल की तारीफ में मुबालग़ा करना जायज़ है?** इसमें कोई शक नहीं है कि हमारे नबी मुहम्मद ﷺ मख्लूक में सबसे उत्तम और श्रेष्ठ हैं, लेकिन फिर भी उनकी तारीफ में सीमा को छलांगना जायज़ नहीं जैसा कि नसारा ने ईसा ﷺ की तारीफ में छलांगा था; क्योंकि नबी ﷺ ने हमें इस से रोका है, आप ﷺ ने फ़रमाया: “तुम मेरी तारीफ में हदें उस तरह पार न करना जैसाकि नसारा ने इन्हें मर्यम की तारीफ में किया, मैं अल्लाह का बन्दा हूँ; इसलिए मुझे अब्दुल्लाह और रसूलुल्लाह कहो”। (बुखारी)

**32 क्या अह्ले किताब (यहूदी और ईसाई) मोमिन हैं?** नबी ﷺ की बेस्त के बाद इस्लाम धर्म के अतिरिक्त दूसरे धर्मों को मानने वाले चाहे वे यहूदी और ईसाई हों या कुछ और सब के सब काफिर हैं, अल्लाह तआला का फ़रमान है :

﴿وَمَن يَبْتَغِ عِزَّاً إِلَّا سَلَمَ دِيَّا فَلَن يُقْبَلَ مِنْهُ وَهُوَ فِي الْآخِرَةِ مِنَ الْخَسِيرِينَ﴾ “और जो व्यक्ति इस्लाम के सिवाय किसी दूसरे धर्म को अपनाए, तो उसका धर्म स्वीकार नहीं होगा और वह आखिरत में घाटा उठाने वालों में से होगा”। और यदि कोई मुस्लिम व्यक्ति उनके काफिर होने का अकीदा न रखे या उनके धर्म के बातिल होने के बारे में शक करे तो वह काफिर है; इसलिए कि उसने अपने कुफ्र के कारण अल्लाह और उसके रसूल के हुक्म का विरोध किया। और अल्लाह तआला का फ़रमान है : ﴿وَمَن يَكْفُرُ بِهِ مِنَ الْأَخْرَابِ فَأَنَّا رَبُّهُمْ مَوْعِدُهُ﴾ “और सभी गुटों में से जो भी इसका इन्कारी हो तो उसके अन्तिम वादे की जगह नरक है”। और नबी ﷺ का फ़रमान है : “उस हस्ती की कसम जिसके हाथ में मेरी जान है, इस उम्मत का कोई भी व्यक्ति वह चाहे यहूदी या ईसाई हो मेरे बारे में सुनने के बाद मुझ पर ईमान नहीं लाया तो वह जहन्नम में जाएगा”। (मुस्लिम)

**33 क्या काफिरों पर अन्याय करना जायज़ है?** अन्याय करना हराम है क्योंकि हड्डीसे कुदसी में अल्लाह तआला का कथन है : “मैं ने अपने आप पर अत्याचार हराम कर लिया है, और इसे तुम्हारे ऊपर भी हराम किया है इसलिए तुम अत्याचार न करो”। (मुस्लिम) काफिरों के साथ व्यवहार किए जाने के लिहाज से उन की दो किस्में हैं : ① जिनके साथ मुआहदा (समझौता) हो, और इनकी तीन किस्में हैं : 1- ज़िम्मी : यह वे लोग हैं जो मुस्लिम मुल्क में रहने के लिए जिज्या (टैक्स) दिया करते हैं, और इन्होंने यह मुआहदा किया हो कि इन पर इस्लामी आदेश लागू होगा। तो इन्हें हमेशा के लिए पनाह दी जाएगी। 2- मुआहद : जिन्होंने मुसलमानों के साथ उनके देश में बाकी रहने के लिए सुलह कर लिया हो। तो इन पर इस्लामी आदेश तो लागू नहीं होंगे, लेकिन इन्हें मुसलमानों से लड़ाई करने से बचना होगा। जैसा कि यहूद नबी ﷺ के ज़माने में थे। 3- मुस्ता'मन : जो किसी काम के लिए मुसलमानों के देश में आए हों, रहने की इच्छा न हो, जैसे एलची, व्यापारी, सैयाह, पर्यटक, पनाह चाहने वाले और इन जैसे लोग। तो इन्हें क़तूल नहीं किया जासकता, और न ही इन से जिज्या लिया जाएगा, पनाह चाहने वाले को इस्लाम की दावत दी जाएगी यदि वह स्वीकार कर लिया तो अच्छा है, और यदि वह अपनी शान्ति-भवन को पहुंचना चाहता है तो उसे वहाँ

पहुँचा दिया जाएगा। **२ हर्बी काफिर** : जिनका मुसलमानों से न तो कोई मुआहदा हो, और न ही जिन्हें शान्ति प्रदान की गई हो, बल्कि वे मुसलमानों से लड़ रहे हों, या इस्लाम और मुसलमानों के विरोध में लड़ाई का एलान कर चुके हों, या इस्लाम और मुसलमानों के दुश्मनों की मदद करते हों, तो इन से लड़ाई की जाएगी और इन्हें मारा जाएगा।

**३४ बिद्रअत का अर्थ क्या है?** इब्ने रजब कहते हैं : “बिद्रअत हर उस चीज़ का नाम है जिसे धर्म के अन्दर बे-बुनियाद जन्म दिया गया हो, और यदि शरीअत में उसकी बुनियाद मौजूद है तो फिर वह बिद्रअत नहीं है। चाहे उसे लुगत में बिद्रअत कहा जाता हो”।

**३५ क्या धर्म में अच्छी और बुरी बिद्रअत भी पाई जाती है?** आयतों और हड्डीसों में बिद्रअत की निंदा की गई है। नबी ﷺ का फरमान है : “जिसने कोई ऐसा कर्म किया जो हमारे आदेश के विरुद्ध हो तो वह अस्वीकृत है”। (बुखारी और मुस्लिम) और आप ﷺ ने फरमाया : “धर्म में हर नयी ईजाद की जाने वाली चीज़ बिद्रअत है, और हर बिद्रअत गुमाही है”। (अबू दाऊद) और इमाम मालिक बिद्रअत के बारे में कहते हैं कि “जिस ने धर्म में बिद्रअत ईजाद की और उसे उसने अच्छा समझा, तो अवश्य उसने ऐसा सोचा कि मुहम्मद ﷺ ने रिसालत में ख़ियानत की; क्योंकि अल्लाह ﷺ का फरमान है : ﴿أَلَيْهِمْ أَكْمَلُ لِكُمْ دِينُكُمْ وَأَنْتُمْ عَلَيْكُمْ بَعْدَهُ﴾ “आज मैं ने तुम्हारे लिये तुम्हारे दीन को पूरा कर दिया, और तुम पर अपनी नेमतें पूरी कर दी”।

और कुछ हड्डीसें ऐसी आई हैं जिनमें लुगवारी मायने के लिहाज़ से बिद्रअत की प्रशंसा की गई है, और वास्तव में यह हड्डीसें उन चीज़ों के बारे में हैं जिनकी बुनियाद शरीअत में मौजूद है, लेकिन बाद में वह भुला दी गई हों तो नबी ﷺ ने उन्हें फिर से ज़िन्दा करने पर ज़ोर दिया है, जैसा कि आप ﷺ ने फरमाया : “जिसने इस्लाम में किसी अच्छी सुन्नत को ज़िन्दा किया तो उसे उसका सवाब मिलेगा, और उसके बाद उसके आधार पर कर्म करने वालों का सवाब भी मिलेगा, और उनके सवाबों में कोई कमी न होगी”। (मुस्लिम) और इसी मायने में जमाअत के साथ तरावीह की नमाज़ पढ़ने के बारे में उमर ﷺ का फरमान है : “यह क्या ही अच्छी बात है”। क्योंकि ऐसा करना शरीअत द्वारा साबित था, और नबी ﷺ ने तीन रातों में जमाअत के साथ तरावीह पढ़ी भी थी, लेकिन इस डर से कि वह फर्ज़ न कर दी जाए आप ने जमाअत के साथ पढ़ना छोड़ दिया था, तो उमर ﷺ ने अपने दौर में लोगों को इस सुन्नत पर इकट्ठा किया।

**३६ निफाक की कितनी किस्में हैं?** दो किस्में हैं : **१ निफाके एतिकादी** : इसका अर्थ यह है कि व्यक्ति ज़ाहिर तो ईमान करे लेकिन कुफ़ को छुपाए हो, और यह चीज़ धर्म से बाहर निकाल देती है, और यदि इसी अवस्था में व्यक्ति की मृत्यु हो गई तो उसकी मृत्यु कुफ़ पर हुई, अल्लाह तआला का फरमान है : ﴿إِنَّ الظَّفَّارِيَ الْأَسْفَلُ مِنَ الْأَنْجَارِ﴾ “मुनाफिकीन् तो अवश्य नरक की सब से निचली तह में जायेंगे”。 और इनकी पहचान यह है कि यह अल्लाह और मोमिनों को धोका देते हैं, मोमिनों का मज़ाक उड़ाते हैं, उन पर काफिरों की सहायता करते हैं, और अपने नेक कर्मों के द्वारा सांसारिक लाभ चाहते हैं। **२ निफाके अमली** : ऐसा व्यक्ति धर्म से बाहर तो नहीं निकलता, लेकिन यदि तौबा न करे तो बड़े निफाक से जा मिलने का डर होता है। और ऐसे व्यक्ति की पहचान यह है कि जब बात करता है तो झूट बोलता है, वादा करता है तो पूरा नहीं करता, लड़ाई करता है तो गाली बकता है, और मुआहदा (प्रतिज्ञा) करता है तो धोका देता है, और जब उसके पास अमानत रखी जाती है तो उस में ख़ियानत करता है। तो भाईयो! अपने आप को इस तरह की चीज़ों से बचाओ और अपने नफ्स का हिसाब करो।

**क्या मुसलमान पर निफाक से डरना वाजिब है?** हाँ, सहाबए किराम ﷺ भी कर्मों में निफाक से डरा करते थे। इब्ने मुलैका ﷺ कहते हैं : मेरी मुलाक़ात 30 सहाबए किराम से हुई वे सब

अपने ऊपर निफाक से डरते थे। और इब्राहीम तैमी ﷺ कहते हैं : मैं ने जब भी अपने कथन को अपने कर्मों के ऊपर नापा तो मुझे अपने झूठे होने का डर हुआ। हसन बसरी ﷺ कहते हैं : निफाक से मोमिन ही डरता है, और मुनाफ़िक ही निडर रहता है। और उमर ﷺ ने हुजैफा ﷺ से पूछा : मैं तुझे अल्लाह का वास्ता देता हूँ क्या नबी ﷺ ने मुझे भी मुनाफ़िकों में शुमार किया है? तो हुजैफा ने कहा : नहीं, और आप के बाद मैं किसी की भी सफाई नहीं दूँगा।

**37 अल्लाह तआला के यहाँ सब से बड़ा पाप क्या है?** अल्लाह तआला के साथ साझी बनाना सब से बड़ा पाप है, अल्लाह तआला का फरमान है : ﴿إِنَّ أَشَدَّكُ أَطْلُمْ عَظِيمٌ﴾ “अवश्य शिर्क सब से बड़ा पाप है”। और जब आप ﷺ से पूछा गया कि कौनसा पाप सब से बड़ा है? तो आप ने फरमाया: “तू अल्लाह के साथ दूसरे को साझी बनाए, जबकि उसने तुझे पैदा किया है”। (बुखारी और मुस्लिम)

**38 शिर्क की कितनी किस्में हैं?** दो किस्में हैं : ① **शिर्क अक्बर** : इतना बड़ा पाप है कि यह शिर्क करने वाले व्यक्ति को इस्लाम धर्म के दायरे से बाहर निकाल देता है। और ऐसे मुश्किल व्यक्ति की मृत्यु यदि शिर्क से बिना तौबा किए हो गई तो उसकी कभी भी माफी नहीं होगी। अल्लाह तआला का फरमान है: ﴿إِنَّ اللَّهَ لَا يَعْفُرُ أَنْ يُشْرِكَ بِهِ، وَيَعْفُرُ مَا دُونَ ذَلِكَ لِمَنْ يَشَاءُ﴾ “निःसन्देह अल्लाह तआला अपने साथ शिर्क किए जाने को नहीं क्षमा करता, और इस के अतिरिक्त पाप जिसके चाहे क्षमा कर देता है।” और इसकी चार किस्में हैं : 1. दुआ में शिर्क करना। 2. नियत, इरादे और इच्छा में शिर्क करना। जैसे गैरुल्लाह के लिए नेक कर्म करना। 3. पैरवी में शिर्क करना। जैसे अल्लाह तआला ने जिन चीजों को हळाल किया है, उन्हें हराम ठहराने में या जिन्हें हराम किया है उन्हें हळाल ठहराने में आलिमों की बातें मानना। 4. महब्बत में शिर्क करना, अर्थात् अल्लाह तआला जैसी महब्बत दूसरे से करना।

② **शिर्क अस़ार** : यह पाप शिर्क करने वाले व्यक्ति को धर्म के दायरे से बाहर नहीं निकालता। और यह दो प्रकार के होते हैं : ① **ज़ाहिर** : चाहे उस का सम्बंध कथन से हो जैसे गैरुल्लाह की क़सम खाना, या यह कहना : जो अल्लाह चाहे और आप चाहें, या यह कहना : अल्लाह न होता और आप न होते। या उस का सम्बंध कर्म से हो जैसे मुसीबत टालने या दूर करने के कड़ा और छल्ला पहन्ना, या धागा बांधना, या नज़र से बचने के लिए तावीज लटकाना, या चरा, नाम, शब्द और जगह से बद्रफ़ाली लेना। ② और छुपे हुए : औश यह नियत, मक्सद और इरादे में शिर्क करना, जैसे रिया।

**39 शिर्क अक्बर और शिर्क अस़ार में क्या फ़र्क है?** दोनों में अन्तर यह है कि शिर्क अक्बर करने वाले व्यक्ति को संसार में धर्म के दायरे से बाहर माना जाएगा, और आखिरत में वह सदा के लिए जहन्नम में जलेगा। लेकिन शिर्क अस़ार करने वाले व्यक्ति को संसार में धर्म के दायरे से बाहर नहीं माना जाएगा, और न ही आखिरत में वह सदा के लिए जहन्नम में जलेगा। इसी तरह शिर्क अक्बर सारे कर्मों को नष्ट कर देता है, लेकिन शिर्क अस़ार मात्र उसी कर्म को नष्ट करता है जिसमें वह शामिल हो। लेकिन एक बात में मतभेद है कि क्या शिर्क अस़ार से माफी के लिए तौबा ज़रूरी है? या वह भी दूसरे बड़े गुनाहों की तरह अल्लाह की मशीयत तले है? बहरहाल दोनों सूरतों में मुआमला ख़तरनाक है।

**40 क्या छोटा शिर्क होने से पहले इससे बचाव का कोई रास्ता या हो जाने के बाद इसका कोई कफ़ारा है?** इससे बचाव का रास्ता यह है कि अल्लाह की खुशी प्राप्त करने के लिए कर्म करे, और यदि थोड़ा सा हो तो दुआ द्वारा इससे पनाह तलब करे, नबी ﷺ ने फरमाया: “लोगो! इस शिर्क से बचो जो चीटी की चाल से अधिक छिपा हुआ है, तो लोगों ने

पूछा : ऐ अल्लाह के रसूल! जब यह चीटी की चाल से भी अधिक छिपा है तो हम इससे कैसे बचें? तो आप ﷺ ने फरमाया: यह दुआ किया करो शिना! اللَّهُمَّ إِنَّا نَعُوذُ بِكَ مِنْ أَنْ شَرُكَ بِكَ شَيْئًا ॥ «إِنَّا نَعُوذُ بِكَ مِنْ أَنْ تَعْلَمُنَا» “ऐ अल्लाह! हम जान बूझ कर तेरे साथ शिर्क करने से तेरी पनाह में आते हैं, और जो नहीं जानते हैं उससे तेरी माफ़ी चाहते हैं”। (अहमद) और गैरुल्लाह की क़सम खाने का कफ़्कारा यह है कि اللَّهُ أَلْأَعْلَمُ ॥ कहे जैसा कि नबी ﷺ ने फरमाया: “जिस ने लात और उज्ज़ा की क़सम खाई तो वह اللَّهُ أَلْأَعْلَمُ कहे”। (बुखारी और मुस्लिम) और बदू-फ़ाली के कफ़्कारे के बारे में नबी ﷺ का फरमान है: “जिसे बदू-फ़ाली ने अपनी ज़रूरत पूरी करने से रोक दिया, तो उसने यकीनन् शिर्क किया”। लोगों ने पूछा : तो इसका कफ़्कारा क्या है? आप ने फर्माया : यह दुआ पढ़े: «أَنْ تَقُولَ اللَّهُمَّ لَا حَيْرَ لِإِلَٰهٍ مِّثْلِكَ، وَلَا طَيْرٌ لِإِلَٰهٍ مِّثْلِكَ، وَلَا مُحْمَدٌ لِإِلَٰهٍ مِّثْلِكَ» “ऐ अल्लाह! सारी भलाइयाँ तुझ ही से हैं, और तेरी फाल के अतिरिक्त कोई फाल नहीं, और तेरे सिवाय कोई इबादत के लायक नहीं”। (अहमद)

**41 कुफ़ की कितनी किस्में हैं?** दो किस्में हैं। ① बड़ा कुफ़ जो कि व्यक्ति को इस्लाम के दायरे से बाहर निकाल देता है। और इसकी पाँच किस्में हैं : 1- झूठलाने का कुफ़। 2- तस्दीक के साथ घमण्ड करने का कुफ़। 3- शक का कुफ़। 4- मुंह फेरने का कुफ़ 5- निफाक के द्वारा कुफ़ करना। ② छोटा कुफ़, और इसे कुफ़े ने'मत भी कहते हैं। और यह पाप है लेकिन इससे व्यक्ति इस्लाम के दायरे से बाहर नहीं निकलता। जैसे किसी मुस्लिम व्यक्ति की हत्या करना।

**42 नज़्र का क्या हुक्म है?** नबी ﷺ ने नज़्र को नापसन्द करते हुए फरमाया : “इससे कोई भलाई नहीं आती”। (बुखारी) यह बात उस अवस्था की है जब कि नज़्र मात्र अल्लाह के लिए मानी गई हो, यदि किसी क़ब्र या वली के लिए नज़्र मानी जाए तो फिर नज़्र मानना हराम है जो पूरी नहीं की जाएगी।

**43 काहिन या ज्योतिशी के पास जाने का क्या हुक्म है?** हराम है, यदि उनके पास लाभ की उम्मीद से गया और उनकी बातों को सच नहीं माना तो उसकी 40 दिन की नमाज़ें स्वीकार नहीं होंगी, नबी ﷺ का फरमान है : “जिसने ज्योतिशी के पास आकर उससे कुछ पूछा तो उसकी 40 रात की नमाज़ें नहीं स्वीकार होंगी”। (मुस्लिम) और यदि उसने उनके ग़ैबी इल्म के दावे को सत्य मान लिया तो उसने मुहम्मद ﷺ के धर्म के साथ कुफ़ किया, नबी ﷺ का फरमान है : “जो व्यक्ति ज्योतिशी या काहिन के पास आया और उस की बात को सच मान लिया तो उसने मुहम्मद पर उतारे गए धर्म के साथ कुफ़ किया”। (अबू-दाऊद)

**44 नक्षत्रों (तारों) से बारिश तलब करना बड़ा शिर्क कब होगा और छोटा शिर्क कब होगा?** जिसकी यह आस्था हो की वर्षा बरसाने में अल्लाह तआला की चाहत के बिना नक्षत्रों की अपनी तासीर होती है, वही पानी बरसाते हैं तो यह बड़ा शिर्क है। पर जो यह आस्था रखे कि अल्लाह तआला की चाहत से नक्षत्रों का प्रभाव होता है, वर्षा बरसाने के लिए अल्लाह तआला ने उन्हें माध्यम बनाया है, जब वह नक्षत्र होता है तभी पानी पड़ता है तो यह छोटा शिर्क है। इसलिए कि उसने शरीअत की दलील के बिना उसे सबब बनाया। अलबत्ता मौसम और वर्षा के समय की जानकारी के लिए इसके द्वारा अनुमान लगाना जायज़ है।

**45 मुस्लिम हुक्मरान (शासक) के तई क्या वाजिब है?** खुशी और ग़मी हर अवस्था में उनकी बातों को सुनना और मानना वाजिब है, यदि वे अत्याचार भी करें तब भी उनके विरोध बगावत करना हराम है, उन्हें शरापना जायज़ है और न ही उनकी इताअत से मुंह मोड़ना जायज़ है, बल्कि हम उनकी भलाई और दुरुस्तगी के लिए दुआ करेंगे, और जब तक वे हमें बुराई का आदेश न दें उनकी इताअत को हम अल्लाह तआला की इताअत का हिस्सा समझते

हैं, और यदि उन्होंने बुराई का आदेश दिया तो उसमें उनकी इताअत नहीं की जाएगी बाकी इताअत की चीज़ों में भलाई के साथ उनकी इताअत की जाएगी। नबी ﷺ ने फ़रमाया: “हाकिम की बात सुनो और उसकी इताअत करो, अगरचे तुम्हें मारा जाए और तुम्हारा माल छीन लिया जाए तो भी सुनो और इताअत करो”। (मुस्लिम)

**46 क्या अप्र और नव्य (करने या न करने के आदेशों) के बारे में अल्लाह की हिक्मत का प्रश्न करना जायज़ है?** हाँ जायज़ है, लेकिन इस शर्त के साथ कि हिक्मत की जानकारी पर ईमान लाना या कर्म करना निर्भर न हो। बल्कि यह जानकारी इस लिए हो कि मोमिन व्यक्ति हक़ पर और पुख्ता होजाए। लेकिन प्रश्न किए बिना स्वीकार कर लेना पूरी बन्दगी, अल्लाह और उसकी कामिल हिक्मत पर ईमान की दलील है। जैसा कि सहाब-ए-कराम ﷺ का हाल था।

**47 अल्लाह तआला के इस फ़रमान ﷺ** “तुझे जो भलाई मिलती है वह अल्लाह तआला की ओर से है, और जो बुराई पहुँचती है वह तेरे अपने खुद की ओर से है” का क्या मतलब है? आयत में ﴿ حَسْنَةٌ ﴾ से मुराद ने’मत और ﴿ سَيِّئَةٌ ﴾ से मुराद बुराई है, और यह सारी चीज़ें अल्लाह तआला की ओर से मुक़द्र हैं, पर ने’मत की निस्बत अल्लाह तआला की ओर की गई है इस्लिए की इनआमर्कता वही है, लेकिन बुराई को भी अल्लाह तआला ने ही ख़ास हिक्मत के कारण पैदा किया है, और बुराई को इस नज़रिया से देखा जाए तो वह अल्लाह तआला की ओर से एहसान है, इसलिए कि वह कभी बुराई करता ही नहीं, बल्कि उस के सारे काम अच्छे हैं, जैसा कि नबी ﷺ ने फ़रमाया: “हर प्रकार की भलाई तेरे दोनों हाथों में है, और बुराई की निस्बत तेरी तरफ़ नहीं की जासकती”। (मुस्लिम) बन्दों के कर्मों का पैदा करने वाला अल्लाह तआला ही है, और साथ ही साथ स्वयं बन्दे की अपनी कमाई भी है। जैसा कि अल्लाह तआला ने फ़रमाया :

﴿ فَإِمَّا مَنْ أَعْطَنَا وَلَنْقَى ① وَصَدَقَ بِالْحُسْنَى ② فَسَنِسِيرُهُ لِلْسَّرَى ③ ﴾ “तो जो व्यक्ति देता रहा और डरता रहा, और अच्छी बातों की पृष्ठि करता रहा, तो हम भी उसके लिए आसानी पैदा कर देंगे”।

**48 क्या यह कहना जायज़ है कि फ़लाँ व्यक्ति शहीद है?** किसी ख़ास व्यक्ति को शहीद कहना वैसे ही है जैसे उसे जन्ती कहा जाए, और इस सम्बंध में अह्ले सुन्नत-वलू-जमाअत का मज़हब यह है कि जिनके बारे में नबी ﷺ ने जन्ती या जहन्नमी होने की ख़बर दी है उनके सिवाय किसी भी मुस्लिम को जन्ती या जहन्नमी न कहा जाए, क्योंकि हक़ीकत पोशीदा है, और किस स्थिथि में उस व्यक्ति की मौत हुई इसकी जानकारी हमें नहीं है, और अन्तिम कर्मों का ही एतेबार होगा, और नियत की जानकारी मात्र अल्लाह तआला को है, लेकिन नेकी करने वाले के लिए सवाब की उम्मीद करते हैं, और पापी पर सजा से डरते हैं।

**49 क्या किसी ख़ास मुस्लिम व्यक्ति को काफिर कह सकते हैं?** किसी ख़ास मुस्लिम व्यक्ति पर कुफ़, शिर्क या निफ़ाक का हुक्म लगाना जायज़ नहीं है, यदि उससे इस तरह का कोई कर्म ज़ाहिर न हो। और उसकी भैंद को हम अल्लाह के हवाले कर देंगे।

**50 क्या का'बा के अलावा दूसरी जगहों का तवाफ़ करना जायज़ है?** का'बा के अलावा दूसरी किसी भी जगह का तवाफ़ करना जायज़ नहीं है, और न ही किसी भी जगह की बराबरी उससे करना जायज़ है चाहे उस जगह की फ़ज़ीलत कितनी भी अधिक क्यों न हो। और जिसने का'बा के अलावा किसी जगह का उसकी ताज़ीम करते हुए तवाफ़ किया तो उसने अल्लाह की नाफरमानी की।

## दिलों के कर्म

अल्लाह तभाला ने दिल को पैदाकरके उसे सारे अंगों का बादशाह बनाया, और अंगों को उसका लश्कर, यदि दिल भला हो तो सारे लश्कर भले रहते हैं, नबी ﷺ ने फर्माया :

«وَإِنَّ فِي الْجَسَدِ مُضْعَفَةٌ إِذَا صَلَحَتْ صَلَحَ الْجَسَدُ كُلُّهُ، وَإِذَا فَسَدَتْ فَسَدَ الْجَسَدُ كُلُّهُ أَلَا وَهِيَ الْقُلُبُ»  
 “यक़ीनन् दिल में एक टूकड़ा है, यदि वह ठीक होजाए तो पूरा बदन ठीक रहता है, और यदि वह ख़राब होजाए तो पूरा जिस्म ख़राब होजाता है, और यह दिल है।” (बुखारी तथा मुस्लिम) तो दिल या तो ईमान और तक्वा की जगह है, या कुफ्र, निफाक और शिर्क की। नबी ﷺ का फर्मान है : “तक्वा यहां है, और आप ﷺ ने तीन बार अपने सीने की ओर इशारा किया”। (मुस्लिम)

\* आस्था, बचन तथा कर्म का नाम ईमान है, अर्थात् दिल से आस्था रखना, जुबान से इकार करना और दिल तथा अंगों द्वारा कर्म करना। चुनांचि दिल ईमान लाता है और तस्दीक करता है, जिसके नतीजे में जुबान कल्मए-शहादतैन की गवाही देता है, फिर दिल में जो मुहब्बत, डर और उम्मीद जगती है उसके नतीजे में जुबान जिक्र करने लगता है, कुर्�आन की तिलावत करता है, और अल्लाह ﷺ की नजदीकी प्राप्त करने के लिए शरीर में मौजूद बाकी दूसरे अंग रुकुअ़, सज्दा और नेकी करने में व्यस्त होजाते हैं; चुनांचि शरीर दिल का गुलाम है, इसी लिए दिल में जो बात भी घर कर जाती है किसी न किसी तरह से उसका असर अंगों द्वारा प्रकट होजाता है।

\* दिल के आमाल से मुराद ऐसे कर्म हैं जिन की जगह दिल है, उन कर्मों का दिल से गहरा नाता है, और इनमें सब से महान कर्म अल्लाह तभाला पर ईमान लाना है; क्योंकि ईमान की जगह दिल है, इसी प्रकार इकार करना और ऐसी तस्दीक करना जो शरीअत का पाबन्द बनाए दिल के महान कर्मों में से है, साथ ही साथ इन्सान के दिल में अल्लाह ﷺ के लिए पैदा होने वाले यह सारे कर्म भी हैं, जैसे मुहब्बत, डर, भय, उम्मीद, उस की ओर वापसी, उस पर भरोसा, सब्र, विश्वास और खुशूअ़ खुजुअ़ इत्यादि।

\* दिल के हर कर्म के मुकाबले में दिल की बीमारी भी है, जैसे खुलूस इसकी ज़िद्द दिखलावा है, यक़ीन के बरखिलाफ़ शंका है और मुहब्बत के बरअक्स नफ़रत इत्यादि, लिहाज़ा यदि हम अपने दिलों को सुधारने से चूक गए तो उस पर गुनाहों का तह लगते चले जाएंगे, जो उसे बर्बाद करदेंगे। जैसा कि नबी ﷺ का फर्मान है :

«إِنَّ الْعَبْدَ إِذَا أَخْطَأَ حَاطِيْنَهُ نُكِتَ فِي قَلْبِهِ نُكْتَهُهُ فَإِنْ هُوَ نَرَعٌ وَاسْتَغْفَرَ وَتَابَ صِيقْلَتْ فَإِنْ عَادَ زِيدَ فِيهَا وَإِنْ عَادَ رَبْلَ رَبَّنَ عَلَى قُلُوبِهِمْ مَا كَلُوْنَ يَكْسِبُونَ»  
 “بन्दा जब पाप करता है तो उस के दिल पर एक काला नुक्ता पड़ जाता है, यदि तौबा इस्तिग़फ़ार कर लेता है तो वह कालक मिटा दी जाती है, पर यदि वह फिर गुनाह पर गुनाह करता जाता है, तो वह कालक बढ़ती जाती है, यहां तक कि उस के पूरे दिल पर छा जाती है, और यही वह रैन है जिस का चर्चा अल्लाह तभाला ने कुर्�आन में किया है : 『كَلَّا بَلْ رَبَّنَ عَلَى قُلُوبِهِمْ مَا كَلُوْنَ يَكْسِبُونَ』 युँ नहीं, बल्कि उन के दिलों पर उन के कर्म के कारण मोर्चा चढ़ गया है” तिमए़ज़ी।

और नबी ﷺ ने यह भी फर्माया कि : “फ़िले दिलों से इस प्रकार चिमटते चले जाएंगे जैसे चटाई बुन्ने में एक एक करके सींक पिरोई जाती है, तो जिस दिल में बुराई घर कर लेती है उस में एक काला नुक्ता पड़ जाता है, और जो दिल भी उसे नकार देता है उस पर एक सफेद नुक्ता पड़ जाता है, यहां तक के दिल दो प्रकार के हो जाते हैं, एक सफेद पथर की तरह जिस पर आकाश और धर्ती के रहने समय तक फ़िले का असर न होगा, और दूसरा गदले

काले की तरह होजाता जैसे झुका हुआ कूजा हो जिसे अपनी नफ़सानी खाहिश के सिवा न तो भलाई की पहचान होती है और न ही बुराई की” मुस्लिम।

\* और अंगों से जुड़ी इबादतों के मुकाबले में, दिल से जुड़ी हुई इबादतों की जानकारी अधिक अहम है; क्योंकि यह बुनियाद हैं, और अंगों वाली इबादतें इनकी शाखें हैं, इन से दिली इबादतें पूरी होती हैं, और यह उन्हीं के फल स्वरूप हैं। चुनान्वित दिल ज्ञान और फ़िक्र कि जगह है, और इसीनिए अल्लाह के पास लोगों में से बेहतर वह है जिस के दिल में ईमान, विश्वास और इख़्लास इत्यादि ने घर कर लिया हो। हसन बसरी ने क़र्माया है : “अल्लाह की क़सम अबू बक्र ने नमाज़ अथवा रोज़े के द्वारा सहबए कराम पर सबक़त नहीं प्राप्त किया बल्कि उस ईमान द्वारा किया जो उनके दिल में बस चुका था”।

### **दिल के कर्मों का अंगों के कर्मों पर महानता के कई कारण हैं :**

1- दिल की इबादतों में गड़बड़ी के कारण अंगों की इबादतें बर्बाद हो जाती है, जैसे दिखलावे के लिए कर्म करना। 2- दिल की इबादतें असल हैं, लिहाज़ा दिल के इरादे के बिना यदि मुंह से कोई शब्द निकल आए या शरीर द्वारा कोई अश्लिल हक्कत होजाए तो उस पर कोई पकड़ नहीं होती। 3- इनके द्वारा जन्नत में बुलन्द मुकाम प्राप्त होते हैं, जैसे जुहू और तक्वा। 4- यह अंगों वाले कर्मों से अधिक कठिन हैं, इन्हें मुन्कदिर कहते हैं कि : “मैं 40 साल तक अपने दिल का इलाज किया फिर जाकर वह मेरा ताबेदार बना”। 5- इनके बड़े सुन्दर प्रभाव होते हैं, जैसे अल्लाह के लिए प्रेम करना। 6- इन पर बहुत अधिक सवाब मिलते हैं, अबुद्दरदा ﷺ कहते हैं कि : “कुछ समय ध्यान लगाना रात भर कियाम करने से उत्तम है”। 7- इनके द्वारा अंगे हरकत में आती हैं। 8- यह अंगों के कर्मों के महान होने का कारण बनते हैं या उन्हें घटान और बर्बाद करने का, जैसा कि खुशुअ के साथ नमाज़ पढ़ना। 9- यह कभी कभार अंगों के कर्मों के बदले का सबब बनते हैं, जैसे धन न होने के बावजूद भी सदके की नियत करना। 10- इन पर मिलने वाले सवाब की कोई सीमा नहीं है, जैसे सब्र के कारण मिलने वाले सवाब। 11- यदि अंग करना बन्द करदे तो भी इनका सवाब जारी रहता है। 12- अंगों द्वारा कर्म करने से पहले और कर्म के दौरान भी यह पाए जाते हैं।

अंगों के कर्म करने से पहले दिल कई एक अवस्था से गुज़रता है, ① किसी भी कर्म के लिए दिल में सोंच पैदा होती है। ② फिर उस के लिए जगह बनती है। ③ फिर वह उसे करने या छोड़ने के बारे में मङ्गधार में रहता है। ④ फिर करने का इरादा ग़ालिब होता है। ⑤ फिर उसे करने के लिए इरादे में पुख्ता आती है। चुनान्वित पहले के तीनों अवस्था में न तो नेकी के कर्म पर उसे सवाब मिलता है और न ही कुकर्म पर गुनाह। अलबत्ता इरादे के कारण नेकी के इरादे पर उसे एक सवाब मिलता है, और बुराई के इरादे पर गुनाह नहीं मिलता। लेकिन इरादा यदि पुख्ता हो जाए तो नेकी के कर्म का पुख्ता इरादा करने पर उसे सवाब मिलता है, और इसी तरह पाप के करने का पुख्ता इरादा करने पर गुनाह मिलता अगणच पाप न कर पाये। क्योंकि शक्ति के साथ किसी कर्म के करने का इरादा करने से उस कर्म का होना लाज़िम आता है। अल्लाह ﷺ का फ़र्मान है :

**إِنَّ الَّذِينَ يُحِبُّونَ أَنْ تَشْيَعَ الْفَتَحَشَةُ** **فِي الَّذِينَ كَانُوا لَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ** “जो लोग मुसलमानों में बे-हर्याई फैलाने के आर्जू में रहते उनके लिए कष्ट-दायक अज़ाब हैं”। और अल्लाह के रसूल ﷺ ने फ़र्माया : “यदि दो मुसमान तलवार लेकर आमने सामने होगए तो क़तिल और मक़तूल दोनों जहन्नमी हैं”, सहाबी कहते हैं

: मैंने कहा : ऐ अल्लाह के रसूल! यह तो भला क़ातिल है पर मक़तूल का क्या जुर्म है? तो आप  ने कहा : “वह भी अपने साथी की हत्या करना चाहता था”। बुख़ारी।

**यदि पुख्ता इरादा कर लेने के बाद भी पाप नहीं करता तो वास्तव में इसके 4 प्रकार हैं:**

- ① या तो उसे अल्लाह के डर से छोड़ा हो, फिर तो उसे सवाब मिलेगा।
- ② या लोगों के डर से छोड़ा हो, तो ऐसा व्यक्ति पापी क़रार पाएगा; क्योंकि पाप न करना इबादत है, जिसे अल्लाह के लिए होना लाज़िम है।
- ③ निर्बस होने के कारण उसे न कर पाया हो, और उसे करने के लिए जो अस्बाब दरकार थे उनका भी प्रयोग न किया हो तो ऐसा व्यक्ति भी अपने पुख्ता इरादे के कारण पापी क़रार पाएगा।
- ④ पाप करने के लिए जो अस्बाब दरकार थे उनका प्रयोग तो किया हो लेकिन बेबसी के कारण उसकी इच्छा पूरी न हो पाई तो ऐसे व्यक्ति पर पाप करने वाले के बराबर पूरा पूरा गुनाह लिख्वा जाएगा; जैसा कि पिछली ह़दीस द्वारा स्पष्ट है। और जब कभी भी बन्दे के अन्दर किसी बुराई के करने का इरादा हो तो उसकी उस पर पकड़ होगी, चाहे उस ने बुराई पहले किया हो या बाद में, चुनान्वि जिस व्यक्ति ने कभी ह़राम काम किया हो, और शक्ति होने के साथ ही दोबारा उसे करना चाहता हो, तो गोया कि वह अपने पाप पर मुसिर है; लिहाज़ा वह अपनी इस नियत के कारण पापी क़रार पाएगा; अगणच वह इसे दोबारा न कर पाए।

### \* दिल के कुछ कर्म :

**\* नियत :** नियत का अर्थ है इरादा और इच्छा करना, नियत के बिना कोई कर्म स्वीकार नहीं होता, जैसा कि नबी  का कहाँना है : “**कर्मों के सवाब का दारोमदार नियत पर है, और हर व्यक्ति को वही चीज़ प्राप्त होती है जिसकी वह इच्छा करता है**”。 इन्हे मुबारक  फ़मति है : “बहुत से छोटे कर्म नियत के कारण महान होजाते हैं, और बहुत से महान कर्म नियत के कारण तुच्छ होजाते हैं”। और फुज़ैल रहे ने कहा : “अल्लाह तआला तुझ से मात्र तुम्हारी नियत और इरादा चाहता है, चुनान्वि कर्म यदि अल्लाह तआला के लिए हो तो उस का नाम इख्लास है, और इख्लास यह कि किसी भी कर्म अल्लाह तआला के सिवाय किसी दूसरे की हिस्सेदारी न हो, और यदि गैरुल्लाह के लिए कर्म किया गया हो तो इसका नाम रिया, या निफ़ाक़ आदि है।

**फ़ाइद़ :** ज्ञानी लोगों के इलावा बाक़ी सारे लोग बर्बाद होने वाले हैं, और सारे के सारे ज्ञानी बर्बाद होने वाले हैं सिवाय कर्म करने वालों के, और सारे के सारे कर्म करने वाले हलाक होने वाले हैं सिवाय मुख्लिसों के। चुनान्वि जिस बन्दे के अन्दर कर्म करने का इच्छा हो उसके लिए सब से पहले नियत के बारे में ज्ञान लेने की आवश्यकता है, फिर सच्चाई और इख्लास की वास्तविकता को समझ कर नियत को कर्म द्वारा सुधारे, क्योंकि बिना नियत के कर्म करने से मात्र थकान हासिल होता है, और नियत के अन्दर यदि इख्लास न हो तो फिर वह रिया और दिखलावा है, और ईमान के बिना इख्लास भूस जैसा है।

**कर्म तीन प्रकार के होते हैं :** ① कुरुकर्म : अच्छी नियत गुनाह के कामों को नेकी में नहीं बदल देती, बल्कि बूरी नियत के कारण गुनाह अधिक बढ़ जाता है। ② मुबाह़ात : जायज़ और मुबाह कर्म जिसे कई प्रकार की नियत से किया जासकता है, जो उसे नेकी में भी बदल देती है। ③ सुकर्म : नेकी के कामों के सही होने तथा उन पर सवाब मिलने का आधार

नियत है<sup>1</sup>, यदि नेक कर्म द्वारा दिखलावा मक्सूद हो फिर तो यह पाप, और छोटा शिर्क है, जो बड़ा शिर्क भी हो सकता है। और इसकी 3 स्थिती हो सकती है : ① इबादत शुरू ही की हो दिखलावे के लिए तो यह शिर्क है और ऐसी इबादत बातिल है। ② इबादत अल्लाह के लिए शुरू की हो, फिर बीच में दिखलावे की नियत पैदा होजाए, तो यदि इबादत का अन्तिम हिस्सा पहले हिस्से पर निर्धारित न हो जैसे सदका, तो इसका पहला भाग सही है और अन्तिम भाग बर्बाद है, और यदि पहला भाग अन्तिम भाग से मिला हुआ हो जैसे नमाज़, तो इसकी दो हालत है : क : रिया को दूर करने का प्रयास करे, तो इबादत पर इसका प्रभाव नहीं पड़ेगा। ख : रिया के साथ ही इबादत पूरी करे तो पूरी इबादत बातिल होजाएगी। ③ इबादत से फ़ारिग़ होने के बाद रिया की नियत पैदा है, तौ यह वास्तव में शैतानी वस्वसा है, जिसका इबादत और आबिद पर कोई असर नहीं होता। इनके इलावा भी रिया के चौर दरवाज़े हैं जिनकी जानकारी प्राप्त करना और उन से बचना ज़रूरी है।

**अल्बत्ता यदि नेक कर्म द्वारा मक्सूद संसार प्राप्त करना हो तो बन्दे की नियत के आधार पर उसे सवाब या गुनाह मिलेगा।** जिस की तीन हालतें हैं : ① नेकी का मक्सूद मात्र दुनिया प्राप्त करना हो; जैसे कोई व्यक्ति नमाज़ में इमामत मात्र पैसा हासिल करने के लिए करता हो तो ऐसा व्यक्ति गुनहगार करार पाएगा। नबी ﷺ ने फर्माया : “जिस ने ऐसा इल्म जिस से अल्लाह ﷺ की खुशी प्राप्त होती है मात्र दुनिया कमाने के लिए हासिल किया तो कियामत के दिन उसे जन्नत की हवा तक नसीब न होगी”। अबू दाऊद। ② नेकी का मक्सूद अल्लाह की खुशी हासिल करने के साथ-साथ दुनिया प्राप्त करना भी हो; जैसे कोई व्यक्ति हज्ज और व्यापार दोनों की नियत से हज्ज करे; तो वास्तव में ऐसे व्यक्ति में ईमान और इख्लास की कमी है; लिहाज़ा उसे उसके इख्लास के बराबर सवाब मिलेगा। ③ नेकी का मक्सूद मात्र

<sup>1</sup> नबी ﷺ ने फर्माया : “जिस व्यक्ति ने नेकी का इरादा किया पर उसे कर न सका तो अल्लाह तझाला उस के लिए पूरी एक नेकी लिख देता है, और यदि इरादे के बाद उसने नेकी कर भी ली तो अल्लाह तझाला उस के लिए दस नेकियों से लेकर सात सौ गुने तक नेकियां लिख देता है और इस से भी कितने गुने अधिक। और जिस व्यक्ति ने बूराई का इरादा किया पर उसे नहीं किया तो अल्लाह तझाला उस के लिए पूरी एक नेकी लिख देता है, और यदि इरादे के बाद उस ने बूराई कर भी ली तो उस पर एक गुनाह लिखता है”। बुखारी तथा मुस्लिम। और आप ﷺ ने यह भी फर्माया कि : “इस उम्मत की मिसाल चार किसिम के लोगों की तरह है, एक वह व्यक्ति जिसे अल्लाह ﷺ ने माल और इल्म से नवाज़ा, तो वह इल्म की रौशनी में अमल करते हुए अपने माल को मुनासिब जगहों में खर्च करता है, और दूसरा व्यक्ति वह जिसे अल्लाह ﷺ ने इल्म से नवाज़ा पर उसे माल अत़ा न किया, तो वह तमन्ना करते हुए कहता है : यदि मेरे पास भी इस व्यक्ति जैसा धन होता तो मैं भी इसी की तरह उसे अल्लाह के रासते में खर्च करता, रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : इन दोनों को बराबर सवाब मिलेगा। और तीसरा व्यक्ति वह जिसे अल्लाह ﷺ ने माल से नवाज़ा पर उसे इल्म अत़ा नहीं किया, तो वह अपने माल का हक अदा नहीं करता और उसे गलत जगहों में खर्च करता है, और चौथा व्यक्ति वह जिसे अल्लाह ﷺ ने न तो इल्म दिया न धन दिया, तो वह तमन्ना करते हुए कहता है : यदि मेरे पास भी धन होता तो मैं भी इसी की तरह बूराई की जगहों में खर्च करता। नबी ﷺ ने फर्माया : इन दोनों को बराबर गुनाह मिलेगा”। तिणमज़ी। इस हड्डीस से पता चला कि दूसरे और चौथे किसीम के लोगों को उनकी नियत का बदला मिला, जिस की तमन्ना करते हुए उन्होंने कहा था : “यदि मेरे पास भी धन होता तो मैं भी इसी की तरह कर्म करता”। चुनान्चि उन में से हर कोई अपनी नियत के बदले सवाब या गुनाह में अपने साथी का साझी होगा। इब्ने रजब रहे कहते हैं कि हड्डीस के इस जुम्ले : “वह दोनों सवाब में बराबर होंगे” का अर्थ यह है कि वे नेकी के असली सवाब में बराबर होंगे, न कि इज़ाफ़ी सवाब में; क्योंकि नियत करने वाले के बजाय मात्र कर्म करने वाले के सवाब में इज़ाफ़ा होगा। और यदि हर लिहाज़ से दोनों को बराबर माना जाए तो इस से लाज़िम आएगा कि कर्म करने वाले की तरह नियत करने वाले को भी दस गुना सवाब मिले, जो कि दलीलों के खिलाफ़ है।

अल्लाह ﷺ की खुशी हासिल करना हो, पर तन्हाह भी लेता हो ताकि नेकी पर कायम रहे; तो इसे बिना किसी कमी के पूरा सवाब मिलेगा। नबी ﷺ का फर्मान है : “तुम जिस चीज़ पर उज्रत लेते हो उनमें सब से अधिक उज्रत लेने के लायक अल्लाह तआला की किताब है”। बुखारी।

**और यह जान रख्खो कि मुस्लिम लोगों के भी कई एक दरजे हैं :** ① कमतर दरजा उनका है जो सवाब की उम्मीद से या अज़ाब से बचने की खातिर नेकी करें। ② बिचला दर्जा उनका है जो अल्लाह का शुक्रिया अदा करते हुए और उसके आदेश का पालन करते हुए नेकी करें। ③ सब से बुलन्द दर्जा उनका है जो अल्लाह ﷺ से मुहब्बत, उस की बड़ाई, उसकी महानता और उस से डरते हुए नेकी करें। और सिद्दीकों का दरजा है।<sup>9</sup>

► **तौबा :** इन्सान पर हमेशा तौबा करते रहना वाजिब है। और इस से गलती का होजाना कोई बड़ी बात नहीं, नबी ﷺ ने फर्माया : “आदम की हर औलाद पापी है, पर उनमें बेहतर वे हैं जो बहुत अधिक तौबा करते रहते हैं”। तिर्मीजी। और नबी ﷺ ने यह भी फर्माया : “यदि तुम पाप न करोगे तो अल्लाह तुम्हें मिटा देगा और ऐसी कौम ले आएगा जो गुनाह करेगी, फिर उससे माफ़ी मांगेगी तो अल्लाह उन्हें माफ़ कर देगा”। मुस्लिम। तौबा करने में देरी करना, और गुनाह पर गुनाह करते जाना ग़लतत है। और शैतान की चाहत होती है कि इन्सान को सात बड़े जालों में से किसी एक जाल में फ़ंसाए, यदि वह पहले में सफ़ल नहीं हो पाता है तो दूसरे के लिए प्रयास करता है, ① उसका पहला जाल होता है उसे शिक्ष और कुक़ में फ़ंसाना, यदि उसमें सफ़ल न हो पाया तो ② एतिकादी बिदूअत में फ़ंसाना, और उसे नबी ﷺ और सहाब-ए-किराम ﷺ की इक्वितदा से वंचित कर देना, ③ यदि यह भी सम्भव न हो सका तो उसे बड़े पाप में, ④ नहीं तो छोटे पाप में फ़ंसाना, ⑤ नहीं तो अधिक मात्रा में मुबाह काम करवाना, ⑥ और यदि इनमें भी सफ़ल न होपाया तो अधिक नेकी वाले कर्म को छोड़वाकर कम नेकी वाले कर्म कराना, ⑦ नहीं तो अन्त में इन्सानों और जिन्नातों के शैतानों को उस पर मुसल्लत कर देना।

**पाप दो प्रकार के होते हैं:** ① बड़े पाप : जिसके करने पर संसार में हद लागू किया जाए, या आखिरत में सज़ा की धमकी दी गई हो, या उसके करने वाले पर ग़ज़ब हो या लान्त हो, या उससे ईमान का इन्कार किया गया हो। ② छोटे पाप : जो इनके अलावा हों। लेकिन कुछ कारण ऐसे जिन से छोटे पाप भी बड़े बन जाते हैं? उनमें अहम कारण हैं गुनाहों पर डटे रहना, या उन्हें बार बार करना, या उन्हें हक़ीर समझना, या उनके पाने पर गर्व करना, या उन्हें लोगों के सामने करना।

**और हर प्रकार के गुनाह से तौबा किया जा सकता है,** और पश्चिम से सूरज निकलने तक तौबा करने का समय बाकी है, या जाँकनी (प्राण निकलने की अवस्था) तक उसका समय

<sup>1</sup> अल्लाह तआला का फर्मान है मूसा ﷺ के बारे में : ﴿ وَعَجِلَ إِلَيْكَ رَبِّ لَرْضَى ﴾ “तेरी ओर जलदी इसलिए की कि तू खूश होजाए”। मूसा ﷺ ने मात्र आदेश का पालन करते हुए जलदी नहीं की बल्कि अल्लाह को खुश करने के लिए भी उन्होंने ऐसा किया। और इसी प्रकार मां बाप के साथ अच्छा बर्ताव करने में भी कमतर दर्जा यह है कि नाफर्मानी के डर से उन से अच्छा बर्ताव किया जाए, बीच का दर्जा यह है कि उन की फर्मावर्दारी अल्लाह तआला का अनुकरण करते हुए उन के इहसान का बदला चुकाने के लिए की जाए, क्योंकि उन्होंने ही बचपन में पाला पौष्ट, और दुनिया में आने का सबब बने, और उत्तम दर्जा यह है कि उन की फर्मावर्दारी अल्लाह के आदेश की बड़ाई करते हुए और उस से महब्बत करते हुए की जाए।

बाकी है। और तौबा करने वाला यदि अपने तौबा में सच्चा है तो उसके गुनाहों को नेकियों में बदल दिया जाता है, उसके पाप चाहे आकाश के किनारों तक क्यों न पहुँचे हों।

**और तौबा स्वीकार होने के लिए कुछ शर्तें हैं,** ① गुनाहों को छोड़ देना। ② पिछले गुनाहों पर पछतावा खाना। ③ भविष्य में न करने का पुख्ता इरादा करना। और यदि पाप का सम्बंध लोगों के हुकूक और अधिकार से हो तो उसे उन तक वापस लौटाना ज़रूरी है।<sup>9</sup>

**तौबा करने वाले लोग चार प्रकार के होते हैं :** ① एक वह व्यक्ति जो अपनी अन्तिम जीवन तक तौबा पर कायम रहे, और दोबारा पाप करने के बारे में सोचे तक भी नहीं, सिवाय कुछ लग्ज़िशों के जिस से कि कोई भी व्यक्ति नहीं बच पाता, तो इस का नाम तौबा पर इस्तिकामत है, और ऐसे व्यक्ति को साबिक बिल्-खेरात अर्थात् नेकीयों में तरक्की करने वाला कहा गया है, और इस तौबा का नाम “नसूह” अर्थात् सच्चा और खालिस तौबा है। और इस नफ्स को इत्मीनान वाली आत्मा का नाम दिया गया है। ② दूसरा व्यक्ति वह जो बड़ी नेकियों पर कायम है, लेकिन बिना इरादे के अन्जाने में उस से कुछ गलतियां हो जाती हैं, जिन पर अपने आप को कोसता भी है, और भविष्य में पाप की ओर ले जाने वाले उन असबाब से बचने का पुख्ता इरादा करता है। और इस नफ्स को लौवामा अर्थात् निन्दा करने वाली आत्मा का नाम दिया गया है। ③ तिसरा व्यक्ति वह जो कुछ समय तक अपने तौबा पर कायम रहता है, फिर उस पर ख़ाहिश ग़ालिब आजाती है और कुछ पाप कर बैठता है। लेकिन साथ ही नेकी करना नहीं छोड़ता, बल्कि ख़ाहिश और शक्ति के बावजूद दूसरे गुनाहों से बचता है, और जब कभी एक दो बार पाप कर बैठतो तो उस पर अपने आप को कोसता भी है, और उस से तौबा करना चाहता है, तो इस आत्मा से पूछ-ताछ होगी, बल्कि तौबा करने में देरी के कारण इसका अन्जाम बड़ा खतरनाक होसकता है, क्योंकि तौबा किए बिना भी इस की मौत हो सकती है, जबकि हिसाब के दिन एतिबार अन्तिम कर्मों का ही होगा। ④ चौथा व्यक्ति वह है जो कुछ समय तक अपने तौबा पर कायम रहने के बाद फिर से गुनाहों में लिप्त होजाता है, तौबे के बारे में सोचता तक भी नहीं है, और न ही अपने कर्तृत पर पछतावा खाता है, और यही वह आत्मा है जो बुराई का आदेश देती है। और ऐसे व्यक्ति पर बूरी मौत मरने का डर होता है।

**● सच्चाई :** सच्चाई दिल के सारे कर्मों का जड़ है, 6 मआनी में इस का प्रयोग होता है : ① बात की सच्चाई। ② कस्दे इरादे की सच्चाई अर्थात् (इख्लास)। ③ पुर्खे इरादे की सच्चाई। ④ इरादा पूरा करने की सच्चाई। ⑤ कर्म की सच्चाई। इस प्रकार कि बाहिरी कर्म भित्री कर्म अनुसार हो। ⑥ पुर्ण रूप से धर्म को अपनाने की सच्चाई। और यह सच्चाई का सब से उच्च

<sup>1</sup> रियायत में आता है कि नबी ﷺ ने फ़र्माया : “अल्लाह तआल के पास रजिस्टर तीन प्रकार के होंगे, एक वह जिस की अल्लाह तआला कुछ भी पर्वा नहीं करेगा, दूसरा वह जिस में से अल्लाह तआला कुछ भी नहीं छोड़ेगा, तीसरा वह जिसे कि अल्लाह तआला बिल्कुल मुआफ़ नहीं करेगा, तो वह रजिस्टर जिसे कि अल्लाह तआला मुआफ़ नहीं करेगा शिर्क का रजिस्टर होगा, अल्लाह ﷺ का फ़र्मान है : ﴿إِنَّهُ مَنْ شَرِكَ بِأَللَّهِ فَقَدْ حَرَمَ اللَّهَ عَلَيْهِ الْحَجَةَ وَمَا أَوْلَاهُ أَنَّكَارٌ﴾ “अवश्य जिस ने शिर्क किया अल्लाह के साथ तो अल्लाह ने उस पर जन्मत को हराम कर दिया और उस का ठिकाना जहन्नम है”। और वह रजिस्टर जिस की अल्लाह तआला कुछ भी पर्वा नहीं करेगा, वह है बन्दे का अपने आप पर अन्याय करना जो उस के और उस के रब के बीच हो, तो यदि अल्लाह तआला चाहेगा तो उसे मुआफ़ कर देगा, और वह रजिस्टर जिस में से अल्लाह तआला कुछ भी नहीं छोड़ेगा, वह बन्दे का आपस में एक दूसरे पर अत्याचार करना, तो अल्लाह तआला उन से लाज़ीमी बदला दिलाएगा। इस रियायत को अहमद ने किया और इस में कम्ज़ोरी है।

तथा प्रस्तित स्थान है। जैसा कि डर, उम्मीद, बड़ाई, जुहूद, रिजामन्दी, भरोसा, प्रेम और दिल के सारे कर्म में सच्चाई। तो जिस व्यक्ति में इन सारी चीजों में सच्चाई पाई जाती है, वह सिद्धीक है, इसलिए कि वह सच्चाई की अन्तिम सीमा तक पहुंचा हुवा है। और नबी ﷺ का फ़र्मान है : “तुम सच्चाई को लाजिम पकड़ लो, क्योन्कि सच्चाई भलाई का रास्ता दिखाता है, और भलाई जन्त का रास्ता दिखाता है, और आदमी सदा सच्च बोलता रहता है, और सच्चाई के खोज में रहता है यहां तक कि अल्लाह तआला के पास सिद्धीक लिख दिया जाता है”। बुखारी और मुस्लिम।

और जिस व्यक्ति पर हक के बारे शंका होगया और उस ने नफ़सानी ख़ाहिश के बिना सच्चाई के साथ अल्लाह तआला की ओर से राहनुमाई चाही तो अधिकतर उसे राहनुमाई मिल जाती है। और यदि हक की राहनुमाई न मिल सके तो अल्लाह कहां वह माझूर माना जाता है।

सच्चाई का विपरित झूट है, और जूँही झूट दिल से जुबान की ओर बढ़ता है, उसे बर्बाद कर देता है, और इसी ओर अंगों की ओर बढ़ता है और उसे भी बर्बाद कर देता है जिस प्रकार कि जुबान की बातों को बर्बाद कर दिया था, फिर झूट का क़ब्ज़ा हो जाता है उस की बातों पर, उस के कर्मों पर और सारी अवस्था पर।

**► مُحَبْبَت :** अल्लाह उस के रसूल और मोमिनों की महब्बत द्वारा ईमान का मीठास प्राप्त होता है, नबी ﷺ ने फ़र्माया : “जिस व्यक्ति में तीन आदतें हों तो उस ने उन के द्वारा ईमान का मीठास पालिया : ① पहला यह कि अल्लाह और उस के रसूल उस के पास बाकी सारे लोगों से अधिक प्रिय हों, ② दूसरा यह कि वह लोगों से अल्लाह की ख़ातिर महब्बत करता हो, ③ तीसरा यह कि वह कुफ़ की ओर लौटना जब कि अल्लाह तआला ने उस से उस को बचा लिया है, इसी तरह ना पसन्द करता है जैसा कि आग में डाला जाना नापसन्द करता है”। बुखारी और मुस्लिम। चुनान्वि जब दिल में महब्बद का पौदा गाड़ दिया जाए, और इख्लास तथा नबी ﷺ की पैरवी द्वारा उस की सीचाई हो, तो अनेकों प्रकार के फल आते हैं, और अल्लाह की मर्ज़ी से यह फल सदा आते रहते हैं। **महब्बत की 4 किस्में हैं :** ① अल्लाह की महब्बत, जो कि ईमान की बुनियाद है। ② अल्लाह तआला के लिए महब्बत<sup>1</sup> और यह वाजिब है।

<sup>1</sup> **दोस्ती और दुश्मनी के लिहाज़ से लोगों की तीन किस्में हैं :** ① जिन से ख़ालिस दोस्ती की जाए, ऐसी दोस्ती जिसमें दुश्मनी शामिल न हो, और यह मात्र ख़ालिस मोमिनों से होगी, जैसे अभ्यासी और सिद्धीकीन से, और इनमें हमारे नबी मुहम्मद ﷺ उनकी पत्नियाँ, उनकी बेटियाँ और सहावए, किराम ﷺ सूची में सब से ऊपर हैं। ② जिन से बिलकुल दोस्ती जायज़ नहीं, बल्कि उनसे बराअत की जाएगी। और यह हर प्रकार के काफिर मुशिरिक और मुनाफिक हैं। ③ जिन से उनके गुणों के कारण दोस्ती की जाएगी और अवगुणों के कारण बराअत। और यह पापी मुसलमान हैं, जिनसे इनके ईमान के कारण दोस्ती की जाएगी, और इनके पाप के कारण वैर रखवा जाएगा। **और काफिरों से बराअत** इस प्रकार होगी कि उनसे वैर रखा जाए, उनसे सलाम करने में पहल न किया जाए, उनके सामने न तो झुका जाए और न ही उनसे भयभीत हुवा जाए, और उनके देश से हिजरत की जाए। **और मोमिनों से दोस्ती** इस प्रकार होगी कि यदि शक्ति हो तो मुस्लिम देश की ओर हिजरत की जाए, जान और धन से उनकी सहायता की जाए, उन पर आने वाली मुसीबतों पर दुःखी हुवा जाए, और उनके लिए भलाई पसन्द की जाए। **और काफिरों से दोस्ती की दो किस्में हैं :** ① ऐसी दोस्ती जिसके कारण व्यक्ति इस्लाम के दायरे से निकल जाता है। जैसे उनके धर्म के लिए उन से महब्बत करना। ② ऐसी दोस्ती जो कि बड़े पाप, हराम और मकूह के दायरे में आती है। जैसे संसारिक बुनियाद पर उन से महब्बत करना। लेकिन जिन काफिरों से लड़ाई न हो उनसे अच्छा बताव करने में कोई आपत्ति नहीं है। जैसे उनके क़ज़ेरों के साथ नरी बरतना, तथा कृपा का प्रदर्शन करते हुए, डरते हुए नहीं, उनके साथ नरम बातें करना। तो अल्लाह तआला ने इसका आदेश दिया है **لَا يَنْهَاكُ اللَّهُ عَنِ الْأَيْنَ لَمْ يُقْسِطُ إِلَيْهِمْ فِي الْأَيْنِ وَلَا يُعَذِّبُهُمْ مِنْ بَعْدِ إِذْرَانِهِمْ** ﴿٩﴾ “जिन लोगों ने तुम से धर्म के बारे में युद्ध नहीं किया और तुम्हें देश से नहीं निकाला, उनके साथ अच्छा

**③** अल्लाह तआला जैसी महब्बत : अल्लाह तआला की महब्बत में दूसरों को साझी करना, जैसा कि मुशिरकों का अपने देवताओं से महब्बत करना, तो यही असल शिक्षा है। **④** फिरी महब्बत : जैसे माँ बाप, और बच्चों से महब्बत, खाने इत्यादि से महब्बत। और यह जायज़ है।

**► तवक्कुल :** मक्सद प्राप्त करने के लिए और मक्कूह दूर करने के लिए शरई अस्बाब को अपनाते हुए दिल को अल्लाह की ओर फेर कर उसी पर भरोसा करने का नाम तवक्कुल है। चुनान्वि अस्बाब को न अपनाना अक़ल में कमी है और दिल को अल्लाह की ओर न फेरना यह तौहीद पर हमला है, किसी भी काम को करने से पहले तवक्कुल किया जाता है, जो कि विश्वास और यकीन का फलस्वरूप है। तवक्कुल की तीन किस्में हैं : **① वाजिब :** जिन चीजों के करने की ताकत अल्लाह तआला के सिवा किसी दूसरे को प्राप्त नहीं है, उनके बारे में मात्र अल्लाह पर भरोसा करना, जैसे : निरोग करना। **② हदाय :** इस की दो किस्में हैं। **①** शिर्के अक्बर : सम्पुर्ण रूप से अस्बाब पर भरोसा करलेना कि उन्हीं के कारण हमें नफ़ा या नुकसान होता है। **②** शिर्के अस्ग़र : जैसे रोज़ी के बारे में किसी व्यक्ति पर भरोसा करलेना, सम्पुर्ण रूप से उसके प्रभाव का अकीदा न रखता हो लेकिन उसे सबब से बढ़कर समझता हो। **③** जायज़ : खरीदने और बेचने जैसी चीज़ में जिसकी इन्सान ताकत रखता हो, एक व्यक्ति का दूसरे व्यक्ति के ऊपर भरोसा करना। लेकिन यहां पर यह कहना जायज़ न होगा कि मैं ने अल्लाह पर भरोसा किया फिर आप पर, बल्कि यूँ कहे : मैं ने आप को बकील बनाया।

**► शुक्र :** दिल में ईमान, जुबान पर ता'रीफ़ और अंगों द्वारा कर्म के रूप में बन्दे पर अल्लाह की नेमतों का असर प्रकट होने का नाम शुक्र है। जो कि स्वयं मक्सूद है, जबकि सब्र

सुलूक और एहसान करने, और न्याय वाला बर्ताव करने से अल्लाह तआला तुम्हें नहीं रोकता”। और उनसे दुश्मनी और बैर रखने का भी आदेश दिया है :

﴿كَيْفَ يَأْتِيَ الَّذِينَ إِمَنُوا لَا تَنْجُذُوا عَدُوَّيْ وَعَدُوُّهُمْ أُولَئِكَ الَّذِينَ بِالْمُؤْدَةِ﴾ “हे वे लोग जो ईमान लाये हो! मेरे और अपने दुश्मनों का अपना दोस्त न बनाओ कि तुम दोस्ती से उनकी ओर सदेश भेजो”। तो उनसे कीना और बैर रखने के साथ साथ उनके मामलों में उनके साथ न्याय किया जा सकता है। जैसा कि नबी ﷺ ने मदीना के यहूदियों के साथ किया।

किया अस्बाब अपनाना तवक्कुल के खिलाफ़ है? इस के कई रूप हैं : **①** ऐसे फ़ाइदा की प्राप्ति के लिए प्रयास करना जो कि मौजूद नहीं है : और इस की तीन किस्में हैं : **①** ऐसा सबब जो कि यकीनी है, जैसे बच्चा पाने के लिए निकाह करना, तो बच्चा पाने के लिए इस सबब को न अपनाना तवक्कुल नहीं बल्कि पागलपन है। **②** जो कि यकीनी नहीं है, लेकिन आम तौर पर उन के बिना मक्सूद हासिल नहीं होता, जैसे बिना यात्रा के सामान के सिहरा का सफर करना, तो ऐसा करना तवक्कुल नहीं है, बल्कि सामान लेकर जाने का आदेश आया है, बल्कि नबी ﷺ ने हिज्बत के समय स्वयं रास्ते का सामान लिया और एक गाइड भी साथ में रखा। **③** ऐसे अस्बाब जो मक्सूद तक पहुंचा सकते हैं लेकिन उन पर भरोसा नहीं किया जासकता है, जैसे कोई अनेक रास्ते द्वारा जिविका प्राप्त करने के लिए प्रयास करे, तो यह तवक्कुल के खिलाफ़ नहीं है, उमर ﷺ ने फ़र्माया : “तवक्कुल करने वाला वह है जो बीज को धर्ती में डालता है और अल्लाह पर भरोसा करता है”। **②** जो चीज़ मौजूद उसे सुरक्षित करना : तो जिसे जिविका प्राप्त हो गया हो और वह उसे स्टोर कर रहा हो तो यह तवक्कुल के खिलाफ़ नहीं है, खासकर जब कि वह बाल-बच्चे वाला हो, नबी ﷺ नज़ीर की खजूर से बेचते थे और अपनी फैमिली के लिए साल भर का खाना बचा के रखते थे। बुखारी और मुस्लिम। **③** सबब द्वारा ऐसी मुसीबत को दूर करना जो अभी आई नहीं है, और यह तवक्कुल के खिलाफ़ नहीं है, जैसे जिरः पहनना या ऊंठ को भागने के डर से रस्सी से बाथे रखना, पर भरोसा सबब पर नहीं बल्कि मुसब्बि (अल्लाह) पर करे, और उस के हर फैसले से राज़ी हो। **④** जो मुसीबत आ पड़ी है उसे दूर करने के लिए सबब अपनाना। और इस की तीन किस्में हैं : **①** यकीनी हो, जैसा कि पानी पियास को बुझाता है, लिहाज़ा पानी न पीना तवक्कुल नहीं है। **②** जो कि यकीनी न हो, जैसे पछना लगवाना, तो यह भी तवक्कुल के खिलाफ़ नहीं है, क्योंकि नबी ﷺ ने स्वयं उपचार कराया और उस का आदेश भी दिया। **③** जो कि वही हो, जैसे निरोग अवस्था में रोगी न होने के लिए दगवाना, तो यह परिपुर्ण तवक्कुल के खिलाफ़ है।

दूस्रों के लिए वसीला होता है, और इसका भी सम्पर्क दिल, जुबान और अंगों से होता है, और शुक्र का अर्थ होता है कि नेमतों का प्रयोग अल्लाह तआला की इत्ताअत के लिए की जाए।

**سَبْر :** دُعْيَةٌ وَّأَعْطَانِي أَحَدٌ عَظَاءً خَيْرًا وَأَوْسَعَ مِنَ الصَّبْرِ ﴿١﴾ “سَبْرَ  
كَارَنَّهُ وَالَّذِينَ كَارَنَّهُ إِنَّمَا يُؤْتَى الصَّابِرُونَ أَجْرَهُمْ بِغَيْرِ حِسَابٍ”  
“سَبْرَ  
کارَنَّهُ وَالَّذِينَ کارَنَّهُ إِنَّمَا يُؤْتَى الصَّابِرُونَ أَجْرَهُمْ بِغَيْرِ حِسَابٍ”  
हुए धैर्य करना। अल्लाह तआला का फर्मान है : “سَبْرَ  
کارَنَّهُ وَالَّذِينَ کارَنَّهُ إِنَّمَا يُؤْتَى الصَّابِرُونَ أَجْرَهُمْ بِغَيْرِ حِسَابٍ”  
“سَبْرَ  
کارَنَّهُ وَالَّذِينَ کارَنَّهُ إِنَّمَا يُؤْتَى الصَّابِرُونَ أَجْرَهُمْ بِغَيْرِ حِسَابٍ”

और नवी ﷺ ने फर्माया : “وَمَنْ يَتَصَبَّرْ يُصَبِّرُهُ اللَّهُ وَمَا أَعْطَيْتُ أَحَدًا عَظَاءً خَيْرًا وَأَوْسَعَ مِنَ الصَّبْرِ”  
और जो सब के लिए प्रयास करता है अल्लाह तआला उसे सब्र अता कर देता है, और किसी भी व्यक्ति को सब्र से अफ़ज़ल और बढ़कर कोई चीज़ नहीं दी गई।

और उमर ﷺ का फर्मान है : “मुझ पर जो भी मुसीबत आई उस में अल्लाह तआला की ओर से चार नेमतें थीं; एक तो यह कि वह मेरे दीन में नहीं थी, दूसरी यह कि वह उस से बड़ी नहीं थी, तिसी यह कि उस पर राज़ी होने से मैं महसूम नहीं हुआ, और चौथी यह कि मुझे उस पर सवाब की उम्मीद है।”

**और सब्र के कई एक दर्जे हैं :** कम्तर दर्जा : यह है कि बन्दा दुःख तकलीफ़ को ना-पसन्द करे पर किसी से उसका शिक्वा न करे। बीच का दर्जा : यह है कि अपनी तक़दीर पर राज़ी होते हुए किसी से अपनी तकलीफ़ का शिक्वा न करे। उत्तम दर्जा : यह है कि मुसीबत पर अल्लाह तआला की ता’रीफ़ करे। और यदि मज़्लूम व्यक्ति ने अत्याचारी को श्रापा तो गोया उसने अपनी मदद चाही और अपना हक़ प्राप्त कर लिया और उसने सब्र नहीं किया।

**सब्र की दो किस्में हैं :** ① शरीरिक सब्र : हमें इसके बारे में यहां पर चर्चा नहीं करना है। ② नफ़सानी सब्र : दिल की ख़ाहिशात पर आत्मा द्वारा सब्र करे।<sup>9</sup>

**और इन्सान को दुनिया में जो श्री चीज़ लाहिक होती है उसकी दो किस्में हैं :** ① या तो उसके इच्छा अनुसार हो तो इसमें भी अल्लाह का हक़ अदा करने के लिए सब्र की ज़रूरत है, ताकि उस पर अल्लाह का शुक्र अदा करे और गुनाह के लिए उसका प्रयोग न करे।

② उसकी ख़ाहिश के ख़िलाफ हौ, और इस की तीन किस्में हैं : ① अल्लाह तआला की इत्ताअत पर सब्र करना, जो कि उनमें से फर्ज़ अदा करने वाजिब है और नफ़ल अदा करने के लिए मुस्तहब है। ② अल्लाह तआला की नाफ़र्मानी से दूर रहने के लिए सब्र करना, जो कि उनमें से हराम काम को छोड़ने के लिए वाजिब है, और मक्रूह को छोड़ने के लिए मुस्तहब है। ③ अल्लाह तआला की बनाई हुई तक़दीर पर सब्र करना, और वाजिब है कि जुबान को शिक्वा करने से रोके रखें, दिल को तक़दीर पर एतिराज़ करने तथा नाराज़ होने से रोके, और इसी प्रकार जिन चीज़ों से अल्लाह नाराज़ होता है उन से अंगों को रोके, जैसे मातम करना, कपड़े फाड़ना, चेहरा पीटना इत्यादि। और इस बारे में मुस्तहब यह है कि अल्लाह की बनाई हुई तक़दीर से बन्दा राज़ी हो जाए।

<sup>9</sup> यदि पेट और लिंग सम्बन्धित चीज़ों पर सब्र किया जाए तो इसे : “इफ़क़त” कहते हैं, और यदि युद्ध में सब्र किया जाए तो इसे : “शुज़ाअत” कहते हैं। यदि गुस्सा पी लिया जाए तो इसे : “हिल्म” कहते हैं, यदि किसी चीज़ को छुपाने के लिए सब्र किया जाए तो इसे : “कितमाने सिर” कहा जाता है। यदि जीवन की फालतू सुख छोड़ने के लिए हो तो इसे : “जुहूद” कहते हैं। और यदि मामूली सुख चैन छोड़ने के लिए हो तो इसे : “किनाअत” कहते हैं।

**इन दोनों व्यक्तियों में से कौन सर्वश्रेष्ठ है :** शुक्र करने वाला मालदार, या सब्र करने वाला फ़कीर? यदि धनी व्यक्ति अपने माल को अल्लाह के रास्ते में खर्च करता है, या अल्लाह के रास्ते में खर्च करने के लिए इकट्ठा करता है तो यह फ़कीर से उत्तम है, और यदि वह अधिक खर्च मुबाह चीजों में करता है तो फिर फ़कीर उत्तम है।

► **रिज़ामन्दी :** जो मिल जाए उसी को काफ़ी समझना और उस पर खुश रहना। किसी भी काम के होने के बाद रिज़ामन्दी की बात आती है, और अल्लाह तआला के फैसले से राज़ी रहना यह सेवकों का उच्च मुकाम है, जो कि अल्लाह से महब्बत और उस पर भरोसा रखने का फल है। और यह बात भी स्पष्ट रहे कि अल्लाह तआला से दुःख और मोसीबत को टालने की दुआ करना उस की तक़दीर पर रिज़ामन्दी के खिलाफ़ नहीं है।

► **खुशूअूँ :** आजिज़ी, इन्किसारी और नर्मता का नाम खुशूअूँ है, हुजैफ़ा ﷺ ने कहा कि निफाक वाले खुशूअूँ से बचो। लोगों ने पूछा क्या मतलब? तो उन्होंने जवाब दिया, मतलब यह है कि : शरीर से आजिज़ी प्रकट हो जब कि दिल पर उस का कोई प्रभाव न हो। और हुजैफ़ा ﷺ ने ही कहा कि : तुम अपने धर्म में से सब से पहले खुशूअूँ को खो दोगे। और जिस इबादत के लिए खुशूअूँ अनिवार्य है तो उस इबादत का सवाब खुशूअूँ के आधार पर ही होगा, जैसे नमाज़ : नमाज़ ﷺ ने नमाज़ी के बारे में कहा कि उसे नमाज़ के सवाब का आधा, एक चौथाई, पांचवा हिस्सा, ... दसवां हिस्सा प्राप्त होता है, बल्कि बिल्कुल खुशूअूँ न पाए जाने के कारण वह पूरे सवाब से महसूम होजाता है।

► **रहमत की उम्मीद :** इस का विपरित ना-उम्मीद है, और उम्मीद के सहारे नेकी करना डर के कारण करने से उत्तम है, क्योन्कि उम्मीद द्वारा सेवक अल्लाह के बारा अच्छा गुमान रखता है। और अल्लाह तआला कहता है : “मैं अपने सेवक के गुमान अनुसार रहता हूँ”। मुस्लिम। और इस के दो दर्जे हैं : **उत्तम दर्जा** यह है कि बन्दा नेकी करे और सवाब की उम्मीद रखें। आइशा ﷺ ने पूछा ऐ अल्लाह के रसूल! ﴿وَاللَّهُمَّ يُؤْتُنَ مَا أَتَوْا وَلَا تُؤْخِذْهُمْ وَجْهَةً﴾ “और जो लोग देते हैं जो कुछ देते हैं, और उनके दिल कपकपाते रहते हैं” यह डरने वाले वह हैं जो कि चोरी करते, बलात्कार करते, शराब पीत? तो आप ﷺ ने फर्माया : सिद्धीक की बेटी यह नहीं हैं, बल्कि वह लोग हैं जो कि नमाज़ पढ़ते हैं, रोज़ा रखते हैं, सदका करते हैं, और उन्हें डर होता है कि कहीं स्वीकार न हो। ﴿أُولَئِكَ يُسْدِّعُونَ فِي الْحَيَاتِ﴾ “और यही हैं जो जलदी जलदी भलाइयां प्राप्त कर रहे हैं”। तिर्मीज़ी। और **कम्तर दर्जा** : उस तौबा करने वाले पापी का है जो की रहमत के आस में है। अल्बत्ता ऐसा पापी जो कि पाप पर पाप किए जाता और तौबा के बारे में सोंचता तक भी नहीं और साथ अल्लाह की रहमत के आस में भी है, तो यह वास्तव में तमन्ना करना है, न कि उम्मीद रखना। और यह चीज़ बूरी है, जबकी उम्मीद लगाए रहना प्रशंसा के काबिल है। चुनान्वि मोमिन भलाई करते हुए भी डरता रहा, जब्कि मुनाफ़िक बुराई करता रहा और स्वयं को सुरक्षित समझा।

► **डर :** किसी दुःख या तकलीफ के पहुँचने का सोच कर लाहिक होने वाला ग़म, यदि दुःख का पहुँचना निश्चत हो तो उसे ख़श्यत (डर) कहते हैं, जिसका विपरित शान्ति है, और यह उम्मीद के विपरित नहीं है, क्योन्कि डर, भय के कारण पैदा होता है, जब्कि उम्मीद चाहत के कारण जगती है, और इबादत में महब्बत, डर और उम्मीद का सन्नाम ज़खरी है, इन्हे कैयिम **دُر** कहते हैं : अल्लाह की ओर लगने में दिल का उदाहरण चरा की तरह है, महब्बत उस

का सर है, और डर तथा उम्मीद उस के दोनों पर हैं, यदि दिल में भय अपना स्थान बना ले तो शहतों को जला कर रख देगा, और दुनिया के मोह को उस से दूर कर देगा।

**और वाजिबी डर वह है** जो फ़र्ज़ इबादतों के करने और ह़राम चीज़ों के छोड़ने पर आमादा करे। और **मुस्तहब डर वह है** जो मुस्तहब कामों के करने और मक्रूह कामों के छोड़ने पर आमादा करे, **और इस की कई एक किस्में हैं :** ① **वाजिब** : भिन्नी डर जिस का अल्लाह तआला के लिए होना वाजिब है, और किसी दूसरे इस प्रकार भय करना **बड़ा शिर्क** है, जैसा कि मुशिरकों के माबूदों (उपास्ययों) से डरना कि वे उन्हें किसी प्रकार की हानि न पहुँचा दें। ② **ह़राम** : लोगों के डर से किसी वाजिब काम को छोड़ देना या ह़राम काम करना।

③ **जायज़** : फ़िन्नी डर जैसे भेड़िए इत्यादि से डरना।

► **जुहूद** : अपने आत्मा की चाहत को तुच्छ इच्छा के बजाए भलाई की ओर फेरना जुहूद कहलाता है। और दुनिया की मोह से अपने आप को दूर रखना दिल तथा शरीर के लिए आराम-दायक है, और इस की चाहत में खोजाना सोंच तथा फ़िक्र को बढ़ावा देता है, दुनिया की चाहत हर बूराई की जड़ है, और उसे तुच्छ जानना हर नेकी का सबब है, और दुनिया के बारे में जुहूद यह है कि आप उसे अपने दिल से निकाल बाहर करें, न कि अंगों द्वारा दूरी प्रकट करें और दिल में उसी की महब्बत बसी हो, यह जाहिलों का जुहूद है, नबी ﷺ ने फ़र्माया : “अच्छे व्यक्ति के लिए अच्छा माल क्या ही सुन्दर है”। अहमद। **फ़कीर व्यक्ति का माल के साथ पाँच अवस्था है :** ① माल को ना-पसन्द करते हुए और उस की परिशानियों में उलझने से बचते हुए उसे अपनाने से दूर भागे, और ऐसा व्यक्ति ज़ाहिद कहलाता है।

② माल प्राप्त होने पर खुश न होता हो, और नहीं उसे इतना ना-पसंद करता कि उस के कारण उसे तकलीफ़ हो ऐसा व्यक्ति राज़ी कहलाता है। ③ माल का होना न होने से अधिक महबूब हो, और उसे पसन्द भी करे, पर ऐसा नहीं कि उसे पाने के लिए मेहनत करता हो, बल्कि यदि मिल गया तो अपना ले, और उस पर खुश भी हो, और यदि पाने के परिश्रम करना पड़े तो उस से दूर रहे, और ऐसा व्यक्ति क़ानिअू कहलाता है। ④ निर्बस होने के कारण वह माल पाने की प्रयास न करता हो, वर्ना उस के भिन्न माल पाने की चाहत मौजूद हो, और यदि परिश्रम द्वारा भी उसे पा सकता हो तो उस के लिए प्रयास करना न छोड़े। और ऐसा व्यक्ति हरीस कहलाता है। ⑤ जिस माल को प्राप्त करने की प्रयास कर रहा हो उसे पाने के लिए मुज़्जर्र हो जैसे भूका और नंगा व्यक्ति, जिस के पास न तो खाना हो न कपड़ा। और ऐसा व्यक्ति मुज़्जर्र कहलाता है।

## एक गंभीर बात-चीत

नीचे की यह बात-चीत ऐसे दो व्यक्तियों के बीच हुई है जिन में से एक का नाम **अब्दुल्लाह** और दूसरे का नाम **अब्दुन्बी** है, **अब्दुल्लाह** की भैंट जब पहली बार **अब्दुन्बी** से हुई तो इस नाम से उसे कुछ अचंभा सा हुवा, और वह अपने दिल में सोचने लगा कि क्या ऐसा भी हो सकता है कि कोई अल्लाह के सिवाय दूसरे की इबादत करे, चुनाँचे आश्चर्य करते हुए उसने **अब्दुन्बी** से यह पूछा कि : क्या आप अल्लाह के सिवाय किसी और की पूजा करते हैं?

**अब्दुन्बी** : कदापि नहीं, मैं तो ख़ालिस मुसलमान हूँ, मात्र अल्लाह की इबादत करता हूँ।

**अब्दुल्लाह** : फिर आप का यह कैसा नाम है? यह तो ईसाइयों जैसा नाम है, जो अपने नाम अब्दुल् मसीह रखते हैं, और उनके लिए यह कोई आश्चर्य की बात नहीं; क्योंकि वे ईसा ﷺ को अपना उपास्य मानते हैं, और उनकी पूजा करते हैं।

आपका यह नाम जो भी सुनेगा उसके दिमाग में यही बात आएगी कि आप नबी के बन्दे हैं, और मुसलमान का आस्था अपने नबी ﷺ के बारे ऐसा कदापि नहीं है, बल्कि हर मुसलमान के लिए ज़रूरी है कि वह यह अकीदा रखे कि नबी ﷺ अल्लाह के बन्दे और उसके रसूल हैं।

**अब्दुन्बी** : लेकिन हमारे नबी ﷺ सब से उत्तम व्यक्ति हैं, और सारे रसूलों के सरदार हैं, हम अपना यह नाम तबरुक के लिए रखते हैं, और नबी की उस मर्यादे से जो अल्लाह के पास उन्हें प्राप्त है अल्लाह की नज़ादीकी चाहते हैं, यही कारण है कि हम नबी ﷺ से उनके उसी मर्यादे के कारण जो उनके रब के पास उन्हें प्राप्त है शफ़ाअत चाहते हैं, और इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं, मेरा एक भाई है उसका नाम **अब्दुल्-हुसैन** है, और मेरे पिता का नाम **अब्दुर्रसूल** है, इस तरह के नाम पुर्खों से चले आरहे हैं, और यह लोगों में प्रसिद्ध है, हमने अपने पुर्खों को इसी अकीदे और आस्थे पर पाया है, इसलिए आप को इस मामले में सख्ती से काम नहीं लेना चाहिए क्योंकि धर्म आसान है।

**अब्दुल्लाह** : यह तो पहले से भी अधिक भयानक और भयंकर ग़लती है कि आप गैरुल्लाह से ऐसी चीज़ मांगे जिसे देने पर अल्लाह के सिवाय किसी दूसरे को शक्ति प्राप्त न हो, चाहे जिससे यह चीज़ मांगी गई हो वह नबी हों, या उनसे कम दर्जे का बुजुर्ग या वली, जैसे हुसैन, या कोई और ही क्यों न हो। यह तौहीद और “**إِلَهٌ إِلَّا هُوَ**” के विरुद्ध है।

मैं आप से कुछ प्रश्न करुंगा ताकि आप पर भयानकपन और इस तरह के नाम रखने के बुरे परिणाम स्पष्ट होजाएं, इससे मेरा उद्देश्य मात्र सत्य की पैरवी और उसकी इत्तेबा’अू है, असत्य की स्पष्टता और उससे दूरी है, और भलाई का आदेश देना और बुराई से रोकना है, इसके सिवाय मेरा कोई और उद्देश्य नहीं। **وَاللَّهُ الْمُسْتَعَنُ وَعَلَيْهِ الشُّكْلَانُ، وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللَّهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيمِ**

मैं आपके सामने अल्लाह तआला का यह फ़रमान पेश करता हूँ :

﴿إِنَّمَا كَانَ قَوْلَ الْمُؤْمِنِينَ إِذَا دُعُوا إِلَى اللَّهِ وَرَسُولِهِ لِيَحْكُمُ بَيْنَهُمْ أَن يَقُولُوا سَمِعْنَا وَلَطَعْنَا﴾  
यह होता है : जब उन्हें अल्लाह और उसके रसूल की ओर इसलिए बुलाया जाता है कि अल्लाह और उसका रसूल उनमें फैसला करदे तो वे कहते हैं हम ने सुना और मान लिया।”

﴿فَإِن تَنَزَّلَ عَنْمٌ فِي شَيْءٍ فَرَدُودٌ إِلَى اللَّهِ وَالرَّسُولِ إِن كُنْتُمْ تُؤْمِنُ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ﴾  
और उसने यह भी फ़रमाया :

“फिर यदि तुम किसी चीज़ में मतभेद कर बैठो तो उसे अल्लाह और उसके रसूल की ओर लौटाओ यदि तुम अल्लाह और आखिरत के दिन पर ईमान रखते हो।”

**अब्दुल्लाह :** अभी आप ने कहा है कि आप अल्लाह को एक मानते और इस बात की गवाही देते हैं कि उसके सिवाय कोई सत्य उपास्य नहीं, तो क्या आप हम से यह स्पष्ट करेंगे कि उसका मतलब क्या है?

**अब्दुन्नबी :** तौहीद यह है कि आप इस बात पर ईमान रखें कि अल्लाह आकाश और धरती का सप्ता है, वही जीवित रखता है और मृत्यु देता है, वही पृथ्वी का मुदब्बिर और व्यवस्थापक है, और पूरी सृष्टि को वही जीविका प्रदान करता है।

**अब्दुल्लाह :** यदि यही तौहीद की तारीफ है तो इस तारीफ की रू से फिरअौन और अबू जहल इत्यादि सभी तौहीद परस्त होंगे; क्योंकि उनमें से कोई भी इन चीज़ों का जिन्हें आप ने अभी ज़िक्र किया है इन्कार नहीं करता था। फिरअौन जिसने अपने रब होने का दावा किया था, वह भी अल्लाह के अस्तित्व को मानता था, और यह भी स्वीकार करता था कि पृथ्वी का व्यवस्थापक अल्लाह ही है। इसका प्रमाण अल्लाह तआला का यह फ़रमान है : ﴿وَجَهَدُواْ بِهَا وَأَسْتَيْقَنُتُهَا أَنْفُسُهُمْ طَلَّمَا وَعَلَوْ﴾ “उन्होंने इसका इच्छार किया हालांकि उनके दिल विश्वास कर चुके थे, मात्र उद्देश्य और घमंड के कारण।”

इसका यह एतराफ़ उस समय खुल कर सामने आगया जब वह डूबने लगा था।

तौहीद यह नहीं है, बल्कि वास्तव में वह तौहीद जिसकी वजह से रसूल भेजे गए, किताबें उतारी गई और कुरैश से लड़ाई की गई वह इबादत और पूजा में अल्लाह को एक मानना है, इबादत एक ऐसा शब्द है जो अपने अर्थ में सारे ज़ाहिरी और बातिनी कथन और कर्म को इकट्ठा किए हुए है जिन्हें अल्लाह पसन्द करता है और जिन से खुश होता है। ﷺ में ﷺ के माझे ऐसे उपास्य के हैं, जिसके सिवाय किसी और की इबादत ठीक नहीं।

**अब्दुल्लाह :** क्या आपको इसकी जानकारी है कि धरती पर रसूलों को क्यों भेजा गया, जिन में सब से पहले रसूल नूह ﷺ हैं?

**अब्दुन्नबी :** हाँ, रसूलों को इसलिए भेजा गया ताकि वे शिर्क करने वालों को मात्र अल्लाह की इबादत करने और गैरुल्लाह (जिन्हें वे अल्लाह की इबादत में साझी बनाते थे उन) की इबादत छोड़ देने की ओर बुलाएं।

**अब्दुल्लाह :** अच्छा आप यह बता सकते हैं कि नूह ﷺ के समुदाय के शिर्क का कारण क्या था?

**अब्दुन्नबी :** मैं नहीं जानता कि इसका क्या कारण था।

**अब्दुल्लाह :** अल्लाह ने नूह ﷺ को उनके समुदाय की ओर इसलिए भेजा कि उनके समुदाय ने अपने बुजुर्ग और नेक व्यक्ति : वद्द, सुवा'अू, यगूस, यऊक और नस्त के बारे में गुलू और सीमा पार किया था।

**अब्दुन्नबी :** क्या आपकी मुराद यह है कि वद्द, सुवा'अू, यगूस, यऊक और नस्त उनके समुदाय के बुजुर्ग और नेक लोगों के नाम हैं, सरकश काफिरों के नाम नहीं?

**अब्दुल्लाह :** हाँ, यह उनके उपास्यों के नाम हैं जिनकी वह लोग इबादत करते थे, और उन्हीं की आज्ञाकारी अरब-बासी भी कर रहे थे, यह वास्तव में उनकी कौम के नेक और परहेज़गार व्यक्तियों के नाम हैं, इसका प्रमाण उस हडीस में है जिसे इमाम बुख़ारी رضى اللہ عنہ ने इन्हे अब्बास رضى اللہ عنہ से रिवायत किया है कि : यह नूह ﷺ के समुदाय के नेक व्यक्ति थे, जब यह मर गए तो शैतान ने इनकी कौम के दिलों में यह बात डाल दी कि तुम उनके मूर्ती बनाकर अपनी बैठकों में जिनमें तुम बैठते हो रख लो, और उन मूर्तीयों के भी वही नाम रख लो जो उन नेक व्यक्तियों के थे, तो उन्होंने ने ऐसा ही किया, पर उन्होंने ने ऐसा उनकी पूजा करने के लिए

नहीं किया था, बल्कि मात्र इसलिए किया था कि इससे उनकी याद ताज़ा रहेगी, फिर जब यह लोग मर गए और ज्ञान भुला दिया गया तो उन मूर्तियों की पूजा होने लगी।

**अब्दुन्नबी** : यह तो अचंभे वाली बात है।

**अब्दुल्लाह** : क्या मैं इससे भी आश्चर्य-जनक बात न बताऊँ? आप यह भी जान लीजिए कि अन्तिम नबी मुहम्मद ﷺ को अल्लाह ने एक ऐसी कौम की ओर रसूल बनाकर भेजा, जो इबादत करते थे, हज्ज करते थे, दान-दक्षिणा देते थे, लेकिन साथ-साथ अल्लाह की मख्लुकात को अपने और अल्लाह के बीच वसीला और वास्ता बनाते थे, और कहते थे कि हम उनके द्वारा नज़्दीकी चाहते हैं, अल्लाह के यहाँ हम फ़रिश्तों की, ईसा ﷺ की, और उनके अलावा दूसरे नेक व्यक्तियों की सिफारिश चाहते हैं, तो अल्लाह ने मुहम्मद ﷺ को नबी बनाकर भेजा, ताकि आप उनके लिए उनके पिता इब्राहीम ﷺ के धर्म को दोबारा से जीवित करें, और उन्हें यह बताएं कि इस तरह का तकरूब और आस्था मात्र अल्लाह का हक है, इसमें से गैरुल्लाह के लिए कोई भी चीज़ जायज़ नहीं, अल्लाह ही अकेला पैदा करने वाला है, उसमें उसका कोई साझी नहीं, मात्र वही जीविका प्रदान करता है, उसमें भी उसके साथ कोई और शरीक नहीं।

और सातों आकाश और धरती और जो भी इनमें हैं सब उसके बन्दे, सेवक और दास हैं, सारी चीज़ें उसके अधीन हैं और वही उनका उपायकर्ता है, यहाँ तक कि वे सारे उपास्य भी जिन की वे पूजा करते थे वे भी यही स्वीकारते थे कि वे उसी की उपाय के अधीन हैं।

**अब्दुन्नबी** : यह तो बड़ी महत्व की बात है, इसका कोई प्रमाण भी है?

**अब्दुल्लाह** : हाँ, बहुत से प्रमाण हैं, उन्हीं में से अल्लाह का यह फ़रमान है :

﴿ قُلْ مَنْ يَرْزُقُكُمْ مِّنَ السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ أَمْنَ يَمْلِكُ السَّمَاءَ وَالْأَبْصَرَ وَمَنْ يُخْرِجُ الْحَيَّ مِنَ الْمَيْتِ وَمَنْ يُخْرِجُ الْمَيْتَ مِنَ الْحَيِّ وَمَنْ يُدِيرُ الْأَئْمَرَ فَسِيقُولُونَ اللَّهُ فَقُلْ أَفَلَا يَشْكُونَ ﴾

“आप कहिए कि कौन है जो तुम्हें आकाश और धरती से रोज़ी पहुँचाता है? या वह कौन है जो कानों और आँखों पर पूरा अधिकार रखता है? और कौन है जो ज़िन्दा को मरे हुए से निकालता है? और मरे हुए को ज़िन्दा से निकालता है? और कौन है जो सारे कामों की तद्रीबीर करता है? तो वे ज़ुखर यही कहेंगे कि अल्लाह। तो उनसे कहिए फिर तुम क्यों नहीं डरते?” और यह भी फ़मार्या:

﴿ قُلْ لِمَنِ الْأَرْضُ وَمَنْ فِيهَا إِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ﴿٤٤﴾ سَيَقُولُونَ اللَّهُ قُلْ أَفَلَا تَذَكَّرُوْنَ ﴿٤٥﴾ قُلْ مَنْ رَبُّ الْسَّمَوَاتِ الْكَثِيعِ وَرَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيمِ ﴿٤٦﴾ سَيَقُولُوْنَ اللَّهُ قُلْ أَفَلَا يَنْقُوْنَ ﴿٤٧﴾ قُلْ مَنْ بَيْدِيْهِ مَلَكُوتُ كُلِّ شَيْءٍ وَهُوَ يُحِيدُ وَلَا يُجَاهِرُ عَلَيْهِ إِنْ كُنْتُمْ تَعَمَّلُوْنَ ﴿٤٨﴾ سَيَقُولُوْنَ اللَّهُ قُلْ فَإِنَّمَا تُسْحَرُوْنَ ﴿٤٩﴾

“पूछिए तो सही कि धरती और उसकी सारी चीज़ें किसकी हैं, बताओ यदि तुम जानते हो? तुरन्त जवाब देंगे कि अल्लाह की, कह दीजिए कि फिर तुम नसीहत क्यों नहीं लेते? पूछिए कि सातों आकाशों का और बड़े अर्श का रब कौन है? वह लोग जवाब देंगे अल्लाह ही है, कह दीजिए कि फिर तुम क्यों नहीं डरते? पूछिए कि सारी चीज़ों का अधिकार किस के हाथ में है? जो शरण देता और जिसके मुकाबले में कोई शरण नहीं दिया जाता यदि तुम जानते हो तो बतलादो? यही जवाब देंगे कि अल्लाह ही है, कह दीजिए फिर तुम किधर से जादू कर दिए जाते हो?”

मुश्ऱिकीन हज्ज के तल्बिया में यह कहते थे: **أَتَيْنَكَ اللَّهُمَّ لَيَكَ، أَتَيْنَكَ لَا شَرِيكَ لَكَ، إِلَّا شَرِيكًا هُوَ لَكَ تَعْلِمُكُمْ وَمَا مَلَكَ** हाजिर हूँ, हे अल्लाह हाजिर हूँ, तेरा कोई साझी नहीं सिवाय एक साझी के, जो तेरे ही लिए है तू ही उसका मालिक है, और उन चीज़ों का भी जिसका वह मालिक है।

इस इकार ने कि अल्लाह संसार में फेर-बदल करने वाला है कुरैश के मुशिरकीन को इस्लाम में प्रवेश न करा सका, बल्कि उनके खून और धन को मात्र इस चीज़ ने हलाल कर दिया कि वे अपने लिए फ़रिश्तों, नवियों और वलियों की सिफारिश चाहते थे।

इसलिए हर तरह की दुआ, नज़र और कुर्बानी मात्र अल्लाह के लिए करना और मात्र अल्लाह ही से सहायता चाहना, और प्रत्येक किस्म की इबादत को मात्र उसी के लिए ख़ालिस करना ज़रूरी है।

**अब्दुन्नबी :** “अल्लाह के होने का इकार करना, और इस बात का इकार करना कि वही संसार में फेर-बदल करने वाला है”, आपके गुमान के अनुसार यदि यह तौहीद नहीं है, तो फिर तौहीद है क्या?

**अब्दुल्लाह :** जिस तौहीद के कारण रसूलों को भेजा गया, और जिसका मुशिरकों ने इन्कार किया, वह तौहीद मात्र एक अल्लाह तआला की इबादत करना है; तो किसी भी तरह की इबादत चाहे वह दुआ हो, या नज़र हो, या ज़ब्द करना, फ़र्याद करना, और सहायता मांगना वग़ैरह हो अल्लाह के सिवाय दूसरों के लिए नहीं की जासकती। और यही वह तौहीद है जिसका इकार आप ﷺ के द्वारा करते हैं; क्योंकि कुरैश के मुशिरकीन के नज़दीक ﷺ वह है जिसका इन इबादतों द्वारा क़स्द किया जाए, चाहे वह फ़रिश्ता हो, या नबी हो, या वली हो, या पेड़ हो, या कब्र हो, या जिन्न हो, और उन्होंने ﷺ का अर्थ पैदा करने वाला, रोज़ी देने वाला, या बन्दोबस्त करने वाला नहीं समझा, इसलिए कि वह यह जानते थे कि यह सारी चीज़ें मात्र अल्लाह की हैं, जैसा कि पीछे गुज़र चुका। और नबी ﷺ उनके पास कल्मए तौहीद ﷺ की दावत देने और उसके अर्थ को अपनी जीवन पर लागू करने के लिए आए थे न कि मात्र इसलिए कि जुबान से इस कल्मे को कह लें।

**अब्दुन्नबी :** गोया कि आप यह कहना चाहते हैं कि कुरैश के मुशिरकीन ﷺ के अर्थ को हमारे इस ज़माने के बहुत से मुसलमानों से अधिक जानते थे?

**अब्दुल्लाह :** हाँ, यह दुःख-दायक वास्तविक्ता है, और बड़े अफ़सोस की बात है कि जाहिल काफिर यह जानते थे कि इस कल्मे से नबी ﷺ की मुराद : इबादत को मात्र अल्लाह के लिए ख़ालिस करना है, और अल्लाह के सिवाय जिन जिन चीज़ों की पूजा की जाती है उन सब का इन्कार करना और उनसे अपनी बरात ज़ाहिर करना है; क्योंकि जब आप ﷺ ने उनसे यह कहा कि तुम ﷺ कहो, तो उन्होंने जवाब में कहा : ﴿أَجْعَلُ الْأَنْهَى إِلَهًا وَحْدَانَ هَذَا أَنْتَ مُعْجَبٌ﴾ क्या इसने इतने सारे माँबूदों (उपास्यों) का एक ही माँबूद (उपास्य) कर दिया, वास्तव में यह बहुत ही अजीब बात है।

जबकि वह यह ईमान भी रखते थे कि अल्लाह संसार में फेर-बदल करने वाला है, तो तअज्जुब है इस्लाम के उन दावेदारों पर जिन्हें इस कल्मे का उतना भी अर्थ मालूम नहीं जितना कि जाहिल काफिरों को था। बल्कि वह समझता है कि इन हर्फों को मात्र जुबान से इनके अर्थ का दिल में विश्वास रखे बिना अदा कर लेना ही काफ़ी है, और उनमें जो अपने आप को होश्यार जानते हैं वह इसका अर्थ यह समझते हैं कि अल्लाह के सिवाय कोई दूसरा पैदा नहीं करता, रोज़ी नहीं देता, और न ही बन्दोबस्त करता है, तो इस्लाम के ऐसे दावेदारों में कोई भलाई नहीं है जिन के मुकाबले में जाहिल काफिर ﷺ के अर्थ को अधिक बेहतर जानते हों।

**अब्दुन्नबी :** लेकिन मैं अल्लाह के साथ शिर्क नहीं करता, मैं इस बात की गवाही देता हूँ कि अल्लाह ही पैदा करता वही रोज़ी देता वही अकेले लाभ और हानि पहुँचाता इनमें उसका कोई साझी नहीं है, और यह कि स्वयं मुहम्मद ﷺ भी अपने लिए लाभ और हानि की शक्ति

नहीं रखते, और न ही अली ﷺ हूसैन ﷺ और अब्दुल कादिर ﷺ वगैरा, लेकिन मैं पापी हूँ, और इन नेक लोगों का अल्लाह के पास ऊँचा मकाम है और उन्हीं के द्वारा मैं अल्लाह के पास उनकी सिफारिश चाहता हूँ।

**अब्दुल्लाह :** इसके जवाब में मैं आप से वही कहूँगा जो इस से पहले कह चुका हूँ, कि नबी ﷺ ने जिन लोगों से लड़ाई की वे भी इन सारी चीज़ों को मानते थे, और यह भी मानते थे कि उन की मूर्तियाँ संसार में कोई हेर फेर नहीं करती हैं, वे मात्र उनसे सिफारिश चाहते थे, जैसा कि हम कुरुआनी प्रमाण द्वारा इस से पहले बता चुके हैं।

**अब्दुन्बी :** लेकिन वे आयतें तो उनके बारे में उतरी हैं जो मूर्तियों की पूजा करते थे, तो आप नबियों और नेक लोगों को मूर्तियों के जैसे कैसे बना सकते हैं?

**अब्दुल्लाह :** इस बात पर पहले इतिफाक होचुका है कि कुछ मूर्तियों के नाम नेक लोगों के नाम पर रखे गए थे, जैसा कि नूह ﷺ के ज़माने में हुवा, और काफिरों ने उनके द्वारा अल्लाह के नज़दीक मात्र सिफारिश ही चाही, क्योंकि अल्लाह के नज़दीक उनका ऊँचा मकाम है, इसके प्रमाण में अल्लाह तआला का यह फ़रमान है :

﴿وَالَّذِينَ أَخْنَدُوا مِنْ دُونِهِ أُولَئِكَ مَا نَعْبُدُهُمْ إِلَّا يُقْرِبُونَا إِلَى اللَّهِ رُلْقَةً﴾  
और जिन लोगों ने अल्ला के सिवाय औलिया बना रखे हैं (और कहते हैं) कि हम उन की इबादत मात्र इसलिए करते हैं कि यह हमें अल्लाह से करीब करदें।

आप का यह कहना कि तुम वलियों और नबियों को बुत कैसे कह रहे हो? तो हम इस बारे में आप को यह बता देना चाहते हैं कि जिन काफिरों के पास अल्लाह के नबी भेजे गए उनमें ऐसे भी लोग थे जो वलियों को पुकारते थे जिनके बारे में अल्लाह तआला ने फ़रमाया:

﴿أُولَئِكَ الَّذِينَ يَدْعُونَكَ يَنْتَهُونَ إِلَى رَبِّهِمُ الْوَسِيلَةُ إِلَيْهِمْ أَقْرَبُ وَمَنْ حَنَّتْ عَذَابَ رَبِّكَ كَانَ مَحْذُوذًا﴾  
“जिन्हें यह लोग पुकारते हैं स्वयं वे अपने रब की कुर्बत की तलाश में रहते हैं कि उनमें कोई अधिक करीब होजाए, वह स्वयं उसकी रहमत की आशा रखते हैं, और उसके अज़ाब से डरे हुए हैं।”

और उनमें से कुछ ईसा ﷺ और उनकी माँ को पूकारते थे, अल्लाह तआला का फ़रमान है :  
﴿وَإِذْ قَالَ اللَّهُ يَعْصِيَ ابْنَ مَرِيمٍ أَنْتَ قُلْتَ لِلنَّاسِ أَخْنَدُونِي وَأَنِّي إِلَهٌ مِّنْ دُونِ اللَّهِ﴾  
“और वह समय भी याद करने के काबिल है जबकि अल्लाह फ़रमाए गा कि ऐ ईसा बिन मर्यम क्या तुम ने लोगों से कह दिया था कि मुझे और मेरी माँ को अल्लाह के सिवाय मां'बूद (उपास्य) बना लो?”

और इसी तरह उनमें से कुछ फ़रिश्तों को पुकारते थे, अल्लाह तआला का फ़रमान है :

﴿وَيَوْمَ يَحْشِرُهُمْ جِيَعًا ثُمَّ يُقُولُ لِلْمُلْكِ كَمْ أَهْمَلْتَ إِلَيَّا كُمْ كَأَوْيَابُدُونَ﴾  
“और जिस दिन अल्लाह तआला सभों को इकट्ठा करके फ़रिश्तों से पूछेंगा कि क्या यह लोग तुम्हारी इबादत किया करते थे?”

इन आयतों पर ज़रा ध्यान दीजिए अल्लाह तआला ने उन्हें काफिर करार दिया जो मूर्तियों से मांगते थे, और इसी प्रकार बिना कोई फ़र्क किए उन्हें भी काफिर करार दिया जो नेक लोगों को पुकारा करते थे चाहे वे पुकारे जाने वाले अम्बिया हों, या फ़रिश्ते या औलिया। और नबी ﷺ ने इसी कारण उन से जिहाद किया और इस बारे उनमें फ़र्क नहीं किया।

**अब्दुन्बी :** लेकिन हमारे और काफिरों में तो फ़र्क है, काफिर उन्हीं से फ़ाइदा चाहते हैं, जबकि मैं तो यह गवाही देता हूँ कि फ़ाइदा पहुँचाने वाला, नुकसान पहुँचाने वाला और इन्तज़ाम करने वाला मात्र अल्लाह तआला है, और हम यह चीज़ें मात्र उसी से चाहते हैं,

नेक लोगों को कुछ भी अधिकार प्राप्त नहीं है, हम तो उनसे मात्र यह चाहते हैं कि वे हमारे लिए अल्लाह से सिफारिश कर दें।

**अब्दुल्लाह :** आप की यह बात ठीक काफिरों की बात जैसी है, दोनों में कुछ भी फ़र्क नहीं है, दलील के लिए अल्लाह तआला का यह फ़रमान है :

﴿وَيَعْبُدُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ مَا لَا يَضْرُبُهُمْ وَلَا يَنْعَمُهُمْ وَيَقُولُونَ هَؤُلَاءِ شُعْكُرُوْنَ أَعْنَدَ اللَّهُ مُحَمَّداً﴾ और यह लोग अल्लाह के सिवाय ऐसी चीजों की इबादत करते हैं जो न उन्हें नुक्सान पहुँचा सके और न लाभ, और कहते हैं कि अल्लाह के पास यह हमारे सिफारिशी हैं।

**अब्दुन्नबी :** लेकिन मैं तो इनकी इबादत नहीं करता हूँ, मैं तो मात्र अल्लाह की इबादत करता हूँ, रहा उनसे फ़र्याद करना और उन्हें पुकारना तो यह इबादत तो नहीं है।

**अब्दुल्लाह :** मेरा आप से एक प्रश्न है, क्या आप इसे स्वीकार करते हैं कि अल्लाह ने मात्र अपनी इबादत आप पर फ़र्ज की है? और यह उसका आप पर हक है जैसा कि उसने फ़रमाया: ﴿وَمَا أُمِرْتُ إِلَّا لِتَعْبُدُوا اللَّهَ مُخْلِصِينَ لِمَ الَّذِينَ حُفَّافُونَ﴾ “उन्हें इसके सिवाय कोई आदेश नहीं दिया गया कि मात्र अल्लाह की इबादत करें, उसी के लिए धर्म को ख़ालिस रखें इब्राहीम हनीफ के दीन पर।”

**अब्दुन्नबी :** हाँ, उसने इसे मुझ पर फ़र्ज किया है।

**अब्दुल्लाह :** अल्लाह ने आप पर इख्लास के साथ जो इबादत फ़र्ज की है उसे आप ज़रा स्पष्ट कर दें।

**अब्दुन्नबी :** मुझे आप की बात समझ में नहीं आई, फिर से स्पष्ट करें।

**अब्दुल्लाह :** मैं आप को बताता हूँ ध्यान दे कर सुनें, अल्लाह ﷺ का फ़रमान है :

﴿أَدْعُوكُمْ تَضْرِعًا وَخُفْقَيْةً إِنَّهُ لَا يُحِبُّ الْمُعْتَدِلِينَ﴾ “तुम लोग अपने रब को पुकारो गिड़गिड़ा कर भी और चुपके चुपके भी, वह (अल्लाह तआला) अवश्य उन लोगों को पसन्द नहीं करता जो सीमा पार कर जाएं।”

**तो क्या दुआ करना अल्लाह की इबादत है या नहीं?**

**अब्दुन्नबी :** क्यों नहीं, बल्कि यही इबादत का म़ज़्� है, जैसा कि हडीस में आया है :

(الدُّعَاءُ هُوَ الْعِبَادَةُ) “दुआ ही इबादत है।”

**अब्दुल्लाह :** जब आप ने यह स्वीकार कर लिया कि दुआ अल्लाह की इबादत है, और किसी ज़रूरत के लिए अल्लाह से डरते हुए और आशा रखते हुए आप ने दिन और रात में उसे ही पुकारा, और उसी ज़रूरत के लिए आप ने नबी, या फ़रिशता, या किसी नेक व्यक्ति को पुकारा जो अपनी क़ब्र में है, तो क्या आप ने इस इबादत में शिर्क नहीं किया?

**अब्दुन्नबी :** हाँ, यह तो मुझ से शिर्क हुवा। आप की यह बात तो बहुत स्पष्ट है।

**अब्दुल्लाह :** मैं आप को एक दूसरा उदाहरण देता हूँ : जब आप को अल्लाह तआला के इस कौल : ﴿فَصَلَّ لِرَبِّكَ وَأَنْهَرْ﴾ “आप अपने रब के लिए नमाज़ पढ़िए और उसी के लिए कुर्बानी किजिए।” के बारे में जानकारी होगई, और आप ने उस के आदेश का पालन किया और उसी के लिए कुर्बानी की, तो क्या आप की यह ज़बह और कुर्बानी अल्लाह ﷺ की इबादत मानी जाएगी?

**अब्दुन्नबी :** हाँ, यह तो इबादत है।

**अब्दुल्लाह :** तो यदि आपने अल्लाह के साथ किसी मख्लूक के लिए भी ज़बह किया चाहे वह मख्लूक नबी हो, या जिन्न, या कोइ और, तो क्या आप ने इस इबादत में गैरुल्लाह को साझी नहीं बना लिया?

**अब्दुन्नबी :** निःसन्देह यह तो शिर्क है।

**अब्दुल्लाह :** मैं ने मात्र दुआ और ज़बह का उदाहरण दिया है, इसलिए कि जुबानी इबादतों में दुआ और बदनी इबादतों में ज़बह सबसे महत्वपूर्ण हैं, और मात्र इन्हीं दो चीज़ों का नाम इबादत नहीं है बल्कि नज़र, कसम, पनाह मांगना और सहायता चाहना वगैरा भी इबादत हैं, और यह बताएं कि मुश्ऱिरकीन जिनके बारे में कुर्रान उत्तरा क्या वे फ़रिश्ते, नेक लोगों और लात वगैरा की इबादत करते थे?

**अब्दुन्नबी :** हाँ, वे तो उनकी इबादत किया करते थे।

**अब्दुल्लाह :** मुश्ऱिरकीन जो उनकी इबादत किया करते थे, यह इबादत तो दुआ, ज़बह, इस्तिआजा (पनाह मांगना), इस्तिआना (मदद चाहना), और इल्लिजा के द्वारा ही तो थी, नहीं तो वे तो यह स्वीकार कर रहे थे कि वे अल्लाह के दास हैं, उस के अधीन हैं, और वही सारी चीज़ों का बन्दोबस्त करने वाला है, लेकिन सिफ़ारिश और जाह के लिए उन्होंने गैरुल्लाह को पुकारा, और यह चीज़ बिल्कुल स्पष्ट है।

**अब्दुन्नबी :** अच्छा अब्दुल्लाह साहब हमें यह बताएं कि क्या आप अल्लाह के रसूल की सिफ़ारिश का इन्कार करते और उससे बराअत करते हैं?

**अब्दुल्लाह :** नहीं भाई, बात ऐसी नहीं है, मैं न तो उसका इन्कार करता और न ही उस से बराअत करता हूँ, बल्कि उन पर मेरे मां बाप कुर्बान हों, वह तो महशर में सिफ़ारिश करेंगे और उनकी सिफ़ारिश स्वीकार होगी, और हम उन की सिफ़ारिश की उम्मीद लगाए बैठे हैं, लेकिन शफ़ाअत मात्र अल्लाह के लिए है, जैसा कि उसका फ़रमान है : ﴿قُلْ لِلَّهِ أَكْفَأُ﴾ “कह दीजिए कि शफ़ाअत सभी अल्लाह के लिए है।”

नबी ﷺ की शफ़ाअत उस समय होगी जब अल्लाह इसकी अनुमति देगा, जैसा कि उसने फ़रमाया: ﴿مَنْ ذَا الَّذِي يَشْفَعُ عِنْدَهُ إِلَّا بِإِذْنِهِ﴾ “कौन है जो उसकी अनुमति के बिना उसके सामने सिफ़ारिश कर सके?”

किसी के लिए भी उस समय तक शफ़ाअत नहीं की जाएगी जब तक कि अल्लाह उस व्यक्ति के बारे में शफ़ाअत की अनुमति न दे दे, जैसा कि उसने फ़रमाया: ﴿وَلَا يَشْفَعُونَ إِلَّا لِمَنْ أَرَضَى﴾ “वे किसी की भी सिफ़ारिश नहीं करते मगर जिस से अल्लाह खुश हो।”

और अल्लाह मात्र तौहीद ही से खुश होगा, जैसा कि उसने इर्शाद फ़रमाया:

﴿وَمَنْ يَتَبَعَ عَبْرَ الْإِسْلَامِ دِينًا فَلَمَّا يُقْبَلُ مِنْهُ وَهُوَ فِي الْآخِرَةِ مِنَ الْخَسِيرِينَ﴾ “और जो व्यक्ति इस्लाम के सिवाय कोई और धर्म चाहेगा तो अल्लाह उससे उसे स्वीकार नहीं करेगा, और वह आखिरत में घाटा पाने वालों में से होगा।”

तो जब सारी की सारी शफ़ाअत का हक मात्र अल्लाह ही को है, और मात्र उसकी अनुमति के बाद ही शफ़ाअत की जाएगी, और नबी या कोइ भी किसी के लिए शफ़ाअत उस समय तक नहीं करेंगे जब तक कि उस के लिए शफ़ाअत की अनुमति न दे दीजाए, और अल्लाह तआला मात्र तौहीद परस्तों के लिए ही अनुमति देगा, तो जब यह बात स्पष्ट होगई कि सारी की सारी शफ़ाअत मात्र अल्लाह तआला के लिए है तो मैं उसी से तलब करता हूँ, और यह दुआ कर रहा हूँ : ऐ अल्लाह! तू मुझे उनकी शफ़ाअत से महरूम न करना, ऐ अल्लाह! तू अपने रसूल को मेरा सिफ़ारिशी बनाना। और इस जैसी दूसरी दुआएं।

**अब्दुन्नबी :** हमारा इस बात पर इत्तिफ़ाक़ है कि किसी व्यक्ति से ऐसी चीज़ मांगना जायज़ नहीं है जिसका वह मालिक न हो, और जबकि अल्लाह तआला ने नबी ﷺ को शफ़ाअत अता किया है, तो आप उसके मालिक होगए, इसलिए मेरे लिए आप से शफ़ाअत तलब करना जायज़ हो गया क्योंकि आप उसके मालिक हैं, और यह शिर्क न होगा।

**अब्दुल्लाह :** हाँ, आप की यह बात उस समय दुरुस्त होती जब अल्लाह ने इससे रोका न होता, लेकिन अल्लाह ﷺ ने फरमाया: ﴿فَلَا تُدْعُوا مَعَ اللَّهِ أَحَدًا﴾ “तो अल्लाह के साथ किसी को न पुकारो।” और शफ़ाअत तलब करना दुआ है, और नबी ﷺ को जिसने शफ़ाअत अता की वह अल्लाह है, और उसी अल्लाह ने तुम्हें गैरों से किसी भी तरह की चीज़ तलब करने से रोका है, और एक दूसरी चीज़ यह भी है कि नबी के सिवाय दूसरों को भी शफ़ाअत अता की गई है, चुनांचे फ़रिश्ते भी शफ़ाअत करेंगे, बालिग़ होने से पहले जौ बच्चे मर गए वे भी शफ़ाअत करेंगे, औलिया भी शफ़ाअत करेंगे, तो क्या अब आप यह कहेंगे कि अल्लाह ने इन सभों को शफ़ाअत अता की है इसलिए मैं इन सभों से शफ़ाअत तलब करूंगा? यदि आप का जवाब हाँ में है, तो गोया आप नेक लोगों की इबादत की ओर पलट गए जिसका चर्चा अल्लाह तआला ने अपनी किताब में की है, और यदि जवाब इन्कार में है, तो आप का यह कहना कि : - अल्लाह ने उन्हें ﷺ शफ़ाअत अता की है, और हम आप ﷺ से वही चीज़ मांग रहे हैं जो आप को दी गई है - बातिल है।

**अब्दुन्नबी :** लेकिन मैं अल्लाह के साथ शिर्क नहीं करता; क्योंकि सालेहीन से इल्लिजा करना शिर्क नहीं है।

**अब्दुल्लाह :** क्या आप इसे स्वीकार करते हैं कि अल्लाह ने शिर्क को ह़राम क़रार दिया है, इसे माफ़ नहीं करेगा, और इसकी हुर्मत ज़िना से भी बढ़कर है?

**अब्दुन्नबी :** हाँ, मैं इसे मानता हूँ और यह अल्लाह के कलाम में स्पष्ट है।

**अब्दुल्लाह :** अभी आप ने अपने आप से उस शिर्क का इन्कार किया है जिसे अल्लाह ने ह़राम ठहराया है, तो अल्लाह के वास्ते ज़रा आप मुझे बताएं तो सही कि वह कौनसा शिर्क है जिसे आप नहीं करते, और अपने आप से उसका इन्कार करते हैं?

**अब्दुन्नबी :** यह शिर्क मूर्तियों की पूजा है, उनकी ओर जाना, उन से मांगना और डरना है।

**अब्दुल्लाह :** मूर्ति पूजा का अर्थ क्या है? क्या आप ऐसा गुमान रखते हैं कि कुरैश के काफिरों का यह अकीदा था कि यह लकड़ीयाँ, और पत्थर पैदा करते हैं, रोज़ी देते हैं, और जो उन्हें पुकारते हैं वे उनके कामों का इन्तिज़ाम कर देते हैं?! वे कदापि ऐसा अकीदा नहीं रखते थे।

**अब्दुन्नबी :** और मेरा भी अकीदा इस तरह का नहीं है, बल्कि मैं तो यह अकीदा रखता हूँ कि जिसने लकड़ी, या पत्थर, या कब्र पर बनी इमारत की ओर दुआ करने या ज़बह करने के लिए गया, और यह कहा कि यह हमें अल्लाह से क़रीब कर देंगे, और इनकी बर्कत से अल्लाह हमारी परेशानी दूर कर देगा, तो यही चीज़ें वास्तव में मूर्ति पूजा हैं।

**अब्दुल्लाह :** आप ने बिल्कुल ठीक कहाँ लेकिन यही सब कुछ आप कब्रों, उनकी जालियों और उन पर बनी इमारतों के पास करते हैं। और क्या आप ऐसा अकीदा रखते हैं कि शिर्क मात्र मूर्तियों के साथ खास है, और सालेहीन से दुआ करना और उन पर भरोसा करना शिर्क न होगा?

**अब्दुन्नबी :** हाँ, मेरा मक्सद यही है।

**अब्दुल्लाह :** फिर आप उन बहुत सारी आयतों के बारे में क्या कहेंगे जिन में अल्लाह ने नवियों, नेक लोगों और फ़रिश्तों का सहारा लेने को हराम ठहराया है, और ऐसा करने वालों को काफ़िर कहा है? जैसा कि स्पष्ट रूप से पहले मैंने इसका चर्चा किया है।

**अब्दुन्बी :** लेकिन जो लोग फ़रिश्तों और नवियों को पुकारते हैं, उन्हें इस पुकारने के कारण काफ़िर नहीं कहा गया, बल्कि उन्हें फ़रिश्तों को अल्लाह की बेटियाँ, और इसा ﷺ को अल्लाह का बेटा कहने के कारण काफ़िर कहा गया है, और हम यह नहीं कहते हैं कि अब्दुल्लाह क़ादिर अल्लाह के बेटे हैं और न ही यह कहते हैं कि ज़ैनब अल्लाह की बेटी हैं।

**अब्दुल्लाह :** अल्लाह की ओर संतान की निस्बत करना मुस्तकिल कुफ़ है, जैसा कि उसने फ़रमाया: ﴿فَلْهُوَ اللَّهُ أَحَدٌ ۖ لَمْ يَكُنْ لِّهُ شَرِيكٌ ۖ ۚ﴾ “ऐ नबी ﷺ कह दीजिए कि वह अल्लाह एक है। अल्लाह बेनियाज़ है, उसने न तो किसी को जन्म दिया है, और न ही किसी से जन्म लिया है।”<sup>1</sup> तो जिसने इन आयतों का इन्कार किया चाहे वह अन्तिम आयत का इन्कार करे या न करे तो उसने कुफ़ किया। और अल्लाह तआला ने यह भी फ़रमाया: ﴿مَا أَنْجَنَ اللَّهُ مِنْ وَلَيْلٍ ۖ وَمَا كَانَ مَعَهُ ۖ مِنْ إِلَهٍ إِذَا دَهَبَ كُلُّ إِلَهٍ بِمَا حَلَقَ ۖ وَلَمَّا بَعْضُهُمْ عَلَى بَعْضٍ ۖ ۚ﴾ “न तो अल्लाह ने किसी को बेटा बनाया, और न उसके साथ और कोई माँबूद (उपास्य) है, नहीं तो हर माँबूद अपनी अपनी मख्लूक को लिए फ़िरता, और हर एक दूसरे पर चढ़ दौड़ता।”

तो अल्लाह तआला ने दोनों कुफ़ों के बीच फ़र्क़ किया। और इसकी दलील यह भी है कि जिन लोगों ने लात जैसे नेक व्यक्ति से दुआ करके कुफ़ किया उन्होंने लात को अल्लाह का बेटा नहीं माना था, और जिन्होंने जिन्नों की इबादत के द्वारा कुफ़ किया उन्होंने भी जिन्नों को बेटा नहीं कहा था, और इसी तरह चारों मजहब में मुर्तद के हुक्म में यह चर्चा करते हैं कि जिसने अल्लाह के लिए बेटा माना वह मुरतद है, और जिसने अल्लाह के साथ शिर्क किया उसने कुफ़ किया, तो फुक़हा भी इन दोनों किस्मों में फ़र्क़ करते हैं।

**अब्दुन्बी :** लेकिन अल्लाह तआला फ़रमाता है: ﴿أَلَا إِنَّ أَوْيَاءَ اللَّهِ لَا حَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْرُونَ ۚ﴾ “याद रखो! अल्लाह के दोस्तों पर न कोई डर है और न ही वह ग़मीन होते हैं।”

**अब्दुल्लाह :** हम भी यही कहते हैं और यही सत्य है, लेकिन उन की इबादत नहीं की जासकती, और हम मात्र अल्लाह के साथ उनकी इबादत करने और उन्हें साझी बनाने का इन्कार करते हैं, नहीं तो उन से महब्बत करना, उनकी पैरवी करना और उनकी करामतों को स्वीकारना सब पर वाजिब है, और उनकी करामतों का वही लोग इन्कार करते हैं जो बिद्अती हैं, अल्लाह का दीन कभी बेशी से पवित्र है, वह ऐसी हिदायत है जो दो गुम्बाहियों के बीच है, और ऐसा हळ है जो दो बातिलों के बीच है।

**अब्दुन्बी :** जिन लोगों के बारे में कुरुआन उत्तरा वे ﷺ की गवाही नहीं देते थे, अल्लाह के रसूल को झुठलाते थे, दोबारा ज़िन्दा किए जाने का इन्कार करते थे, कुरुआन को झुठलाते थे, और उसे जादू कहा करते थे, और हम यह गवाही देते हैं कि अल्लाह के सिवाय कोई इबादत के लायक नहीं, और मुहम्मद ﷺ अल्लाह के रसूल हैं, कुरुआन को सच्च मानते हैं, दोबारा ज़िन्दा किए जाने पर ईमान रखते हैं, नमाज़ पढ़ते हैं, रोज़ा रखते हैं, तो फिर हमें आप उन जैसे कैसे ठहराते हैं?

<sup>1</sup> अहंद वह हस्ती है जिसका कोई साझी नहीं, और हर ज़रूरत के लिए जिस की ओर जाया जाए उसे समद कहते हैं।

**अब्दुल्लाह :** लेकिन उलमा के बीच इस बारे में कोई दो राय नहीं है कि यदि किसी व्यक्ति ने कुछ चीज़ों में अल्लाह के रसूल की तस्वीक की और कुछ चीज़ों में उन्हें झुठलाया तो वह काफिर है, वह अब तक इस्लाम में प्रवेश नहीं किया, और इसी तरह यदि किसी ने कुरूआन के कुछ हिस्से पर ईमान रखा और कुछ का इन्कार किया तो वह भी काफिर है, जैसे किसी ने तौहीद को तो स्वीकारा लेकिन नमाज़ का इन्कार किया, या तौहीद और नमाज़ को तो स्वीकारा लेकिन ज़कात वाजिब होने का इन्कार किया, या इन सारी चीज़ों को तो स्वीकारा लेकिन रोज़ा का इन्कार किया, या इन सारी चीज़ों को तो स्वीकारा लेकिन हज्ज का इन्कार किया, और नबी ﷺ के ज़माने में जब कुछ लोग हज्ज के लिए नहीं निकले तो उनके बारे में यह आयत उतरी : ﴿وَلِلَّهِ عَلَى النَّاسِ حُجُّ الْبَيْتِ مَنْ أَسْتَطَعَ إِلَيْهِ سَبِيلًا وَمَنْ كَفَرَ فَإِنَّ اللَّهَ عَنِ الْمُكَافِرِ بَغِيٌ عَنِ الْعَالَمِينَ﴾ “अल्लाह तआला ने लोगों पर जो उस की ओर रास्ता पा सकते हों इस घर का हज्ज फ़र्ज़ कर दिया है, और जो कोई कुफ़ करे तो अल्लाह तआला (उससे बल्कि) सारी दुनिया से बे-परवाह है।”

और यदि दोबारा जिन्दा किए जाने का इन्कार करे तो इस बात पर इज्मा'अ् (एकमत) है कि उसने कुफ़ किया, और इसीलिए अल्लाह तआला ने अपनी किताब में इसे स्पष्ट कर दिया है कि जिसने कुछ चीज़ों पर ईमान रखा और कुछ चीज़ों का कुफ़ किया वह निःसन्देह काफिर है, अल्लाह तआला का आदेश है कि पूरे इस्लाम को अपनाया जाए, और जिसने कुछ चीज़ों को अपनाया और कुछ को छोड़ दिया तो उसने कुफ़ किया, तो क्या आप इस बात को मानते हैं कि जिसने कुछ को अपनाया और कुछ को छोड़ा उसने कुफ़ किया?

**अब्दुन्बी :** हाँ, हम इसे मानते हैं, और यह तो कुरूआन में स्पष्ट है।

**अब्दुल्लाह :** तो जब आप इस बात को स्वीकार करते हैं कि जिसने किसी चीज़ में रसूल की तस्वीक की, और नमाज़ के वाजिब होने का इन्कार किया, या सारी चीज़ों को स्वीकार किया लेकिन दोबारा उठाए जाने का इन्कार किया तो वह काफिर है, उसकी जान और माल हळाल है, सारे मतों (मस्लकों) का इस पर इतिफ़ाक है, और कुर्�আন ने इसे स्पष्ट भी कर दिया है जैसा कि ऊपर इसका चर्चा हो चुका, तो आप यह जान लीजिए कि नबी जो शरीअत लेकर आए उसमें तौहीद सब से बड़ा फ़रीज़ा है, और यह नमाज़, ज़कात और हज्ज से भी बढ़ कर है, तो भला यह कैसे हो सकता है कि इन्सान इन चीज़ों में से यदि किसी चीज़ का इन्कार करे तो वह काफिर हो जाए, और तौहीद जो कि सारे रसूलों का धर्म है उसे इन्कार करे तो काफिर न हो?! सुव्वानल्लाह! यह कितनी बड़ी जिहालत और नादानी है।

और सहाबए किराम ﷺ के बारे में ध्यान दे कर सोचो कि उन्होंने यमामा में बनू हनीफ़ के लोगों से जिहाद किया, जबकि वे नबी ﷺ के ज़माने में इस्लाम ले आए थे, कल्मए ﴿إِنَّ اللَّهَ لَا يَعْلَمُ مُحَمَّدًا رَسُولًا﴾ को स्वीकार करते थे, नमाज़ पढ़ते थे और अज़ान देते थे।

**अब्दुन्बी :** लेकिन वे मुसलमा को नबी मानते थे, और हम यह कहते हैं कि मुहम्मद ﷺ के बाद कोई नबी नहीं है।

**अब्दुल्लाह :** लेकिन आप लोग अली ﷺ या अब्दुल कादिर जीलानी ﷺ या नबियों या फरिश्तों के रूत्बे को धरती और आकाश के जब्बार के रूत्बे के बराबर पहुँचा देते हैं, जब्कि यदि किसी ने किसी व्यक्ति के रूत्बे को नबी के बराबर कर दिया तो वह काफिर होगया, उसकी जान और माल हळाल होगए, कल्मा और नमाज़ उसे फायदा नहीं देंगे, तो जो उन्हे अल्लाह तआला के रूत्बे तक पहुँचाए वह तो अवश्य काफिर होगया। और इसीलिए अली ﷺ

ने उन्हें आग में जला दिया था जबकि वे इस्लाम का दावा करते थे, और वे अली ﷺ के साथियों में से थे, सहाबए किराम से उन्होंने शिक्षा लिया था, लेकिन उन्होंने अली ﷺ के बारे में वही अकीदा रखा जो आप लोग अब्दुल् कादिर वगैरा के बारे में रखते हैं, फिर सारे सहाबए किराम ﷺ ने उन के कल्प और उनके काफिर होने पर कैसे इत्तिफाक कर लिया? क्या आप यह समझते हैं कि सहाबए किराम ﷺ मुसलमानों को काफिर कहा करते थे?! या आप इस भ्रम में हैं कि सैयद अब्दुल् कादिर जीलानी और इन जैसे लोगों के बारे में ऐसा अकीदा रखना हानिकारक नहीं, और अली ﷺ के बारे में ऐसा अकीदा रखना कुफ्र है?

और यह बात भी कही जा सकती है कि पहले के लोग इसलिए काफिर ठहरे कि उन्होंने शिर्क के साथ-साथ, रसूल ﷺ और कुरुआन को झुठलाया, दोबारा ज़िन्दा उठाए जाने वगैरा का इन्कार किया, तो फिर उस बात का क्या अर्थ है जिसे हर मस्लिक के उलमा ने अपनी किताबों में बांधा है: (بَاب حُكْمُ الْمُرْتَدِ) “मुर्तद के हुक्म का बयान”? मुर्तद वह मुस्लिम व्यक्ति है जो इस्लाम लाने के बाद फिर काफिर हो जाए, और उस बाब में बहुत सारी चीज़ों का चर्चा किया गया है जिन में से किसी भी एक को करना बन्दे को काफिर बना देता, और उसके खून और माल को हलाल कर देता है, यहाँ तक कि उन्होंने छोटी चीज़ों का भी चर्चा किया है, जैसा कि अल्लाह की नाराज़ी की बात को मुंह से निकालना, चाहे वह उसका अकीदा न रखता हो, या मज़ाक में उनका चर्चा करना, और इसी तरह से वे लोग भी हैं जिनके बारे में अल्लाह तआला ने चर्चा करते हुए फ़रमाया:

**﴿فُلَأْيَالِهِ وَرَأْيَنِهِ وَرَسُولِهِ كُنْتُمْ تَسْتَهْزِئُونَ لَا تَعْنِذُرُوا فَكُلُّ هُنْكُمْ بَعْدَ إِيمَانِكُمْ﴾** ٦٧ “कह दीजिए कि अल्लाह, उसकी निशानियां और उसके रसूल ही तुम्हारे हंसी मज़ाक के लिए रह गए हैं? अब तुम बहाना न बनाओ इसलिए कि ईमान लाने के बाद अवश्य तुम काफिर होगए।”

तो यह लोग जिनके बारे में अल्लाह तआला ने यह स्पष्ट कर दिया कि यह ईमान के बाद काफिर होगए, यह अल्लाह के रसूल के साथ ग़ज्वए तबूक में थे, और उन्होंने एक ऐसी बात कही जिसके बारे में वे कहते रहे कि हंसी मज़ाक में वे कहे थे।

और यहाँ उसका भी चर्चा कर देना अच्छा होगा जिसका चर्चा अल्लाह तआला ने बनू इस्माईल के बारे में किया है कि उन्होंने अपने इस्लाम, ज्ञान और तक्वा के होते हुए भी मूसा ﷺ से कहा : ﴿أَجْعَلْ لِيَنَّا إِلَّاهًا﴾ “हमारे लिए भी एक ऐसा ही मा’बूद (उपास्य) बना दीजिए।”

और कुछ सहाबए किराम ﷺ ने कहा : “हमारे लिए जाते अन्वात बना दीजिए” तो नबी ﷺ ने कसम खाकर कहा कि यह तो ठीक वही बात है जो बनू इस्माईल ने कही थी :

**﴿أَجْعَلْ لِيَنَّا إِلَّاهًا كَمْ لَمْ أَجْعَلْ لِيَنَّا إِلَّاهًا﴾** “हमारे लिए भी एक मा’बूद (उपास्य) ऐसा ही बना दीजिए, जैसे उनके यह मा’बूद हैं।”

**अब्दुन्बी** : लेकिन बनू इस्माईल और इसी तरह वह लोग जिन्होंने अल्लाह के रसूल ﷺ से ज़ाते अन्वात बनाने को कहा था इसके कारण काफिर नहीं हुए।

**अब्दुल्लाह** : इसका उत्तर यह है कि बनू इस्माईल और इस तरह जिन्होंने नबी ﷺ से ज़ाते अन्वात बनाने का मुतालबा किया था उन्होंने ऐसा किया नहीं, और यदि ऐसा कर लिए होते तो काफिर हो जाते, और इसी तरह अल्लाह के रसूल ने जिन्हें ज़ाते अन्वात बनाने से रोका, यदि वे आप की बात न मानते और ज़ाते अन्वात बना लेते तो काफिर हो जाते।

**अब्दुन्बी** : लेकिन मेरे पास एक प्रश्न है, और वह है उसामा बिन ज़ैद का किस्सा कि जब उन्होंने एक **لَهْلَهَ** कहने वाले व्यक्ति को कल्प कर दिया तो नबी ﷺ उन पर नाराज़ हुए

और कहा कि : क्या उसके لَّا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ كहने के बाद भी तुम ने उसे क़त्ल कर दिया? और इसी तरह आप ﷺ का यह फरमान : (أَمْرُتُ أَنْ أَقْاتِلَ النَّاسَ حَتَّىٰ يَقُولُواٰ : لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ) “मुझे हुक्म दिया गया है कि मैं लोगों से जिहाद करूँ यहाँ तक कि वे لَّا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ कहने लेंगे।”

तो जो बात आप ने कही है और जो इन दोनों हड्डीसों में है, आप थोड़ी मेरी राहनुमाई करें कि दोनों को मैं इकट्ठा कैसे कर सकता हूँ?

**अब्दुल्लाह :** इस बात की जानकारी सब को है कि अल्लाह के रसूल ﷺ ने यहूदियों से जिहाद किया और उन्हें कैदी बनाया हालांकि वे لَّا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ का इकार करते थे, और सहाबए किराम ﷺ ने बनू हनीफा से जिहाद किया और वे भी لَّا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ مُحَمَّدُ رَسُولُ اللَّهِ की गवाही दे रहे थे, और नमाज पढ़ रहे थे, यही हाल उनका भी था जिन्हें अली ﷺ ने जलाया था, और आप स्वयं इस बात को स्वीकार करते हैं कि जिसने لَّا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ कहने के बाद भी दोबारा ज़िन्दा किए जाने का इन्कार किया उसने कुफ्र किया और उसे क़त्ल करना जायज़ होगया। और यह भी स्वीकार करते हैं कि जिसने لَّا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ कहने के बाद भी इस्लाम के किसी रुक्न का इन्कार किया तो उसने कुफ्र किया और उसे क़त्ल किया जाएगा। तो ज़रा सोचिए किसी फरई मस्अले का इन्कार करता है तो لَّا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ उसे लाभ नहीं पहुँचा सकता, तो भला जब किसी बुनियादी मस्अले का इन्कार करेगा तो लَّا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ उसे कैसे फ़ाइदा देगा?! और शायद आप ने इन हड्डीसों का मतलब नहीं समझा।

उसामा की हड्डीस का अर्थ यह है कि उन्होंने एक ऐसे व्यक्ति को क़त्ल कर दिया जिसने इस्लाम का दावा किया यह समझ कर कि वह अपनी जान और माल की रक्षा की खातिर ऐसा कर रहा है, जबकि इस्लामी आदेश अनुसार किसी भी व्यक्ति को जो इस्लाम का दावा कर रहा है उसे क़त्ल करना हराम है यहाँ तक कि उसके खिलाफ़ कोई चीज़ स्पष्ट होजाए जैसा कि अल्लाह तआला का फ़रमान है : ﴿يَأَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذَا ضَرَبْتُمْ فَتَبَيَّنُوا﴾

“ऐ ईमान वालो! जब तुम अल्लाह के रास्ते में जा रहे हो तो छान बीन कर लिया करो।” तो आयत में यह प्रमाण है कि ऐसे लोगों से हाथ रोक लेना और उनकी छान बीन करना वाजिब है, और छान बीन करने के बाद यदि इस्लाम के खिलाफ़ किसी चीज़ का पता चले तो उसे अल्लाह तआला के कौल ﴿فَتَبَيَّنُوا﴾ की रौशनी में क़त्ल किया जाएगा, और यदि उसे क़त्ल करना जायज़ न होता तो छान बीन करने का कोई फ़ाइदा ही न होता।

और इसी तरह दूसरी हड्डीस का अर्थ भी यही है कि जिसने तौहीद और इस्लाम को ज़ाहिर किया उसे क़त्ल नहीं किया जाएगा, लेकिन जब उससे इस्लाम के विरुद्ध कोई चीज़ ज़ाहिर होजाए तो उसका खून हळाल होजाएगा। और इसकी दलील यह है कि जिस रसूल ﷺ ने यह बात कही : ﴿لَّا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ أَنْ قَاتَلَهُ بَعْدَ مَا قَالَ﴾ यानी ‘उसामा! तुमने उसे ला इलाह इल्लल्लाह कहने के बाद भी क़त्ल कर दिया?’ और यह कही : (أَمْرُتُ أَنْ أَقْاتِلَ النَّاسَ حَتَّىٰ يَقُولُواٰ : لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ) “मुझे लोगों से लड़ाई करने का हुक्म दिया गया है यहाँ तक कि वह कह दें: ला इलाह इल्लल्लाह।” उसी रसूल ﷺ का ख़वारिज के बारे में यह भी कहना है : ﴿فَأَيْنَمَا لَقِيتُمُوهُمْ فَاقْتُلُوهُمْ﴾ “जहाँ भी तुम उन्हें पाओ उन्हें क़त्ल कर दो।”

जबकि यह ख़वारिज लोगों में सब से अधिक इबादत और तस्बीह करने वाले थे, यहाँ तक कि सहाबए किराम इन की इबादतों के सामने अपनी इबादत को हेच समझते थे, और इन्होंने सहाबए किराम से ही इत्म सीखा था, लेकिन इसके बावजूद जब उनसे शरीअत की मुख्यालफ़त

ज़ाहिर हूई तो उन्हें **اَلْأَمْرُ لِلَّهِ** के कहने, अधिक इबादत करने और इस्लाम का दावा करने ने कोई फाइदा नहीं पहुँचाया।

**अब्दुन्बी** : क्यामत के दिन फर्याद के बारे में नबी करीम ﷺ से जो हडीस साबित है कि लोग आदम के पास आएंगे, फिर नूह के पास, फिर मूसा, फिर ईसा ﷺ के पास और वे लोग माज़रत कर देंगे, तो अन्त में नबी ﷺ के पास आएंगे, तो इससे पता यह चला कि गैरुल्लाह से इस्तिग़ासा (फर्याद) करना शिर्क नहीं है।

**अब्दुल्लाह** : मस्तला आप पर गडमड होगया है, जिन्दा और मौजुद व्यक्ति से ऐसी चीज़ का फर्याद करना जिसकी वह शक्ति रखता हो हम इसका इन्कार नहीं करते यह तो कुर्�आन में साबित है : ﴿فَاسْتَغْفِرَةُ اللَّهِ مِنْ شَيْءٍ﴾ “उसकी कौम वाले ने उससे फर्याद की उसके खिलाफ जो उसके दुश्मनों में से था।”

और जैसा कि इन्सान लड़ाई वैरा में अपने साथियों से ऐसी चीज़ें मांगता है जिसकी वह शक्ति रखते हैं, हमने उस फर्याद का इन्कार किया है जो तुम इबादत के तौर पर औलिया के कब्रों पर या उनकी गैर हाज़िरी में करते हो, और उनसे ऐसी चीज़ें मांगते हो जिन्हें देने की शक्ति मात्र अल्लाह तआला ही को है, और लोग क्यामत के दिन नवियों से जो फर्याद करेंगे, इसलिए करेंगे ताकि जल्द हिसाब होने के लिए वे अल्लाह से दुआ करें, ताकि जन्नती मौकिफ़ की परेशानियों से छुटकारा पा लें, और यह तो दुनिया और आखिरत दोनों जगह जायज़ है कि आप किसी नेक व्यक्ति के पास आएं जो आप के साथ उठता बैठता हो, और उससे अपने लिए अल्लाह से दुआ करने की दर्खास्त करें, जैसा कि सहाबए किराम नबी ﷺ की जीवन में किया करते थे, लेकिन मौत के बाद उन्होंने हर्गिज़ (कदापि) ऐसा नहीं किया, उन्होंने आप के कब्र के पास जाकर आप से सवाल नहीं किया, बल्कि सलफ़ सालिहीन ने कब्र के पास अल्लाह से दुआ करने से भी रोका है।

**अब्दुन्बी** : आप इब्राहीम ﷺ के किस्से के बारे में क्या कहेंगे जब वह आग में डाले गए तो फ़ज़ा में जिब्रील ﷺ उनके पास आए, और पूछा क्या आप को मेरी कोई ज़रूरत है? तो इब्राहीम ﷺ ने कहा : हमें आप की ज़रूरत नहीं है। तो यदि किसी से फर्याद करना शिर्क होता तो जिब्रील ﷺ मदद के लिए अपने आप को कभी भी पेश न करते।

**अब्दुल्लाह** : यह सन्देह भी पहले वाले सन्देह की तरह ही है, और इस बारे में जिब्रील के जिस असर का आपने उदाहरण दिया वह सहीह नहीं है, और यदि उसे सहीह भी मान लिया जाए तो वास्तव में जिब्रील ﷺ ने उनके सामने एक ऐसी बात रखी थी जिस की उन्हें शक्ति थी, क्योंकि अल्लाह तआला का उनके बारे में फरमान है : ﴿عَمَدَ شَدِيدُ الْقُوَى﴾ “उसे पूरी शक्ति वाले फरिश्ते ने सिखाया है।”

तो यदि अल्लाह तआला उन्हें यह आदेश दे देता कि वह इब्राहीम ﷺ की आग और उसके आस पास की धरती और पर्वत को पूरब या पश्चिम में कहीं लेजाकर फेंक दें तो वह ऐसा करने पर बेबस नहीं थे, और इसका उदाहरण उस धनी व्यक्ति जैसे है जो किसी ग़रीब को उसकी ज़रूरत पूरी करने के लिए कर्ज़ देने की पेशकश करे, तो वह अपनी ग़रीबी पर सब्र करे और माल लेने से इन्कार करदे यहाँ तक कि अल्लाह तआला उसे अपने फ़ज़्ल से रोज़ी अंता करदे, जिसमें किसी का थोड़ा सा भी एहसान न हो। तो आप इस की बराबरी इबादत में फर्याद और शिर्क के साथ कैसे कर सकते हैं?!

और मेरे भाई आप इस चीज़ को अच्छी तरह समझ लीजिए कि पहले ज़माने के वे मुशिरकीन जिनकी ओर नबी ﷺ को भेजा गया तीन कारणों से उनका शिर्क हमारे ज़माने के मुशिरकीन से कम्तर था :

**१** पहले के मुशिरकीन मात्र सुख के समय शिर्क किया करते थे, और दुःख के समय मात्र अल्लाह की इबादत किया करते थे, प्रमाण स्वरूप अल्लाह तआला का फरमान है :

﴿فَإِذَا رَكِبُوا فِي الْفُلُكِ دَعَوْا اللَّهَ مُحْلِصِينَ لَهُ الَّذِينَ فَلَمَّا نَجَّبُوهُمْ إِلَى الْبَرِّ إِذَا هُمْ شُرَكُونَ﴾ “तो यह लोग जब नौकों पर चढ़ते हैं तो अल्लाह तआला ही को पुकारते हैं, उसी के लिए इबादत को खालिस करके, फिर वह जब उन्हें भूमी पर बचा लाता है तो उसी समय शिर्क करने लगते हैं। और दूसरी जगह फरमाया : ﴿وَإِذَا غَشِّيْهِمْ مَوْجٌ كَالْأَطْلَلِ دَعَوْا اللَّهَ مُحْلِصِينَ لَهُ الَّذِينَ فَلَمَّا نَجَّبُوهُمْ إِلَى الْبَرِّ فَإِنَّهُمْ مُفْنِصُدُونَ وَمَا يَحْمَدُ بِغَايَتِنَا إِلَّا كُلُّ خَتَارٍ كُفُورٌ﴾

“और जब उन पर मौजे सायबानों की तरह छा जाती हैं, तो वह खुलूस के साथ आस्था रख कर अल्लाह ही को पुकारते हैं, फिर वह जब उन्हें खुश्की की ओर बचा लाता है, तो कुछ उनमें से अपने वादे पर जमे रहते हैं, और हमारी आयतों का इन्कार मात्र वही करते हैं जो वादे तोड़ने वाले और नाशुके हों।”

तो मक्का के मुशिरकीन जिन से नबी ﷺ ने जिहाद किया, सुख के समय में अल्लाह को पुकारते थे, और उसके साथ दूसरों को भी शरीक करते थे, पर तंगी में मात्र अल्लाह को पुकारते थे, और अपने सरदारों को भूल जाते थे, लेकिन हमारे ज़माने के मुशिरकीन सुख और दुःख दोनों समय में गैरुल्लाह को पुकारते हैं, और जब वह अधिक तंगी में होते हैं तो या रसूलल्लाह और या हुसैन इत्यादि के द्वारा दुआएं करते हैं। लेकिन कौन है जो इस वास्तविकता को समझे?

**२** पहले के लोग अल्लाह के साथ ऐसे लोगों को पुकारते थे जो अल्लाह के मुकर्बीन में से होते, या तो नबी होते, या वली, या फ़रिश्ता, या पथर और पेड़ जो अल्लाह की नाफ़रमानी नहीं करते बल्कि उसकी फ़र्मावर्दारी ही करते, और हमारे ज़माने के लोग ऐसे लोगों को भी पुकारते हैं जो सबसे बड़े पापी होते।

और जो नेक लोगों को अल्लाह के साथ साझी करने का आस्था रखे, या ऐसी चीज़ों को साझी करने का आस्था रखे जो नाफ़रमानी न करती हों, तो उसका शिर्क अवश्य उनके शिर्क से कम दरजे का होगा जो अल्लाह के साथ ऐसे लोगों को साझी करने का आस्था रखे स्पष्ट रूप से पापी हो।

**३** नबी ﷺ के ज़माने के सारे मुशिरकीन का शिर्क मात्र तौहीदे उलूहीयत (इबादत) में था, वे तौहीदे रूबूबीयत में शिर्क नहीं करते थे, बरखिलाफ़ हमारे ज़माने के मुशिरकीन के यह जिस तरह तौहीदे उलूहीयत में शिर्क करते हैं उसी तरह अधिकतर तौहीदे रूबूबीयत में भी शिर्क करते हैं, तो वह काएनात में तबीअत (NATURE) को ही मारने और जिलाने का व्यवस्थापक समझते हैं।

और शायद मैं अपनी बात को एक महत्वपूर्ण मस्त्रले का चर्चा करके जो ऊपर की बातों से आसानी के साथ समझा जासकता है ख़त्म करदूँ, और वह यह है कि इस बात में कोई मतभेद नहीं है कि तौहीद का आस्था दिल में होना ज़रूरी है, और बन्दा जुबान से उसे स्वीकार करे और अंगों के द्वारा उसके अनुसार अमल करे। और यदि इनमें से कोई भी एक चीज़ नहीं पाई गई तो इन्सान मुसलमान नहीं रह जाता, यदि उसने तौहीद को जान लिया लेकिन उसके अनुसार अमल नहीं किया तो वह फ़िरअौन और इब्लीस जैसे धर्म का दुश्मन और काफ़िर है। और इस बारे में अधिकतर लोग गलती करते हैं, वे सत्य को स्वीकार करते हैं लेकिन कहते हैं कि हम इसके अनुसार अमल करने की शक्ति नहीं रखते, या कहते हैं कि हमारे देश या नगर

में ऐसा करना जायज़ नहीं, और उनकी बुराई से बचने के लिए उनकी मुवाफ़कत ज़खरी है। लेकिन बेचारे को पता नहीं कि अधिकतर कुफ्र के अगुवाओं को सत्य का ज्ञान था, लेकिन कोई न कोई उज्ज़्वल पैदा करके उसे छोड़ा दियां, जैसा कि अल्लाह तआला ने फरमाया:

﴿أَشْرَوْا بِعَيْنَتِ اللَّهِ شَكَّلُوا عَنْ سَبِيلِهِ إِنَّمَا مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ﴾ “उन्होंने अल्लाह की आयतों को बहुत कम दाम पर बेच दिया, और उसके रास्ते से रोका, बहुत बुरा है जो यह कर रहे हैं।”

और जिसने देखावे के लिए तौहीद के अनुसार अमल किया लेकिन वह उसे समझता नहीं और न ही उस को दिल से मानता है तो वह मुनाफ़िक है। और वह काफिर से भी बुरा है, इसलिए कि उसके बारे में अल्लाह तआला फरमाता है : ﴿إِنَّ الْمُنَفِّقِينَ فِي الدُّرُكِ الْأَسْفَلِ مِنَ الْأَنَارِ﴾

“मुनाफ़िक तो अवश्य जहन्नम के सब से नीचे के दर्जे में जाएंगे”

और जब लोगों की बातों पर ध्यान देंगे तो उस समय यह मस्तका स्पष्ट होजाएगा, आप उन में से कुछ को पाएंगे कि सत्य जानते हुए भी संसार में घाटे, मर्यादा तथा राज्य के कारण उसके अनुसार अमल नहीं करते जैसे कि कारून, हामान और फिरऔन ने किया।

और कुछ को आप ऐसा भी पाएंगे कि मात्र दिखावे के लिए अमल करते हैं, अपने अकीदा (आस्था) के बारे में उन्हें कुछ भी जानकारी नहीं।

**अब आप के लिए ज़रूरी है कि आप कुरआन की दो आयतों को ध्यान देकर समझें :**

**पहली आयत :** वही है जिसका चर्चा ऊपर हो चुका है : ﴿لَا تَعْنِدُ رُوافَدَ كَفَرْتُمْ بَعْدَ إِيمَانِكُمْ﴾

“तुम बहाने न बनाओ, अवश्य तुम अपने ईमान के बाद काफिर हो गए।”

आप ने जब यह जान लिया कि जिन लोगों ने अल्लाह के रसूल के साथ मिलकर रुमियों से जिहाद किया, उनमें से कुछ एक कल्मा कहने के कारण काफिर क़रार पाए, जिसे उन्होंने हँसी मज़ाक में कहा था, तो इस के द्वारा आप पर यह बात स्पष्ट हो गई कि जो व्यक्ति मान मर्यादा और धन सम्पत्ति में कमी होने के डर से या किसी का लिहाज़ करते हुए कुफ्र का शब्द मुख से निकालता है, या उसके अनुसार कर्म करता है, तो उसका पाप उस व्यक्ति के पाप से बढ़कर है जो कोई शब्द हँसी मज़ाक में बोल देता, क्योंकि ऐसा व्यक्ति आम तौर से दिल में उन शब्दों पर आस्था नहीं रखता है जिसे वह लोगों को हँसाने के लिए कहता है। रहा वह व्यक्ति जो किसी डर या किसी चीज़ की लालच में कुफ्र के शब्द मुंह से निकालता है तो गोया कि उसने शैतान के वायदे : ﴿الشَّيْطَنُ يَعْدُكُمُ الْفَقْرَ وَيَأْمُرُكُمْ بِالْفَحْشَاءِ﴾ “शैतान तुम्हें गरीबी से डराता है, और बेहयाई का आदेश देता है।”

को सत्य कर दिखाया। और उसके धमकावे : ﴿إِنَّمَا ذَلِكُمُ الشَّيْطَنُ يُحَوِّلُ أُولَئِكَأَهْ﴾ “और यह शैतान है जो अपने दोस्तों से डराता है।”

से डरा। और रहमान के वायदे : ﴿وَاللَّهُ يَعْدُكُمْ مَغْفِرَةً مِنْهُ وَفَضْلًا﴾ “और अल्लाह तुम से अपनी माफी और मेहरानी का वायदा करता है।”

की तस्दीक नहीं की। और जब्बार की सज़ा : ﴿فَلَا تَخَافُوهُمْ وَخَافُونِ إِنْ كُنْتُمْ مُؤْمِنِينَ﴾ “तो तुम उनसे न डरो मुझ से डरो यदि तुम मोमिन हो।”

से नहीं डरा। तो आप स्वयं निर्णय करें ऐसा व्यक्ति रहमान के औलिया में से होने का हळ्दार है, या शैतान के औलिया में से होने का?

दूसरी आयत यह है : ﴿مَنْ كَفَرَ بِاللَّهِ مِنْ بَعْدِ إِيمَانِهِ إِلَّا مَنْ أُكَثَرَهُ وَقْبَلَهُ مُظْمِنٌ بِإِلَيْمَنَ وَلَكِنْ مَنْ شَرَحَ بِالْكُفْرِ صَدَرَ فَعَلَيْهِمْ غَضَبٌ مِنَ اللَّهِ وَهُمْ عَذَابٌ عَظِيمٌ﴾

“जो व्यक्ति अपने ईमान के बाद अल्लाह से कुफ्र करे, सिवाय उसके जिसे मज्�बूर किया जाए और उसका दिल ईमान से मुत्मङ्ग (संतुष्ट) हो, मगर जो लोग दिल से कुफ्र करें तो उन पर अल्लाह का ग़ज़ब है, और उन्हीं के लिए बहुत बड़ा अज़ाब है।”

अल्लाह तआला ने उन्हें लाचार नहीं जाना, सिवाय उन लोगों के जिन्हें विवश कर दिया गया हो, और उनका दिल ईमान से संतुष्ट हो, रहे उनके अतिरिक्त लोग तो वे अपने ईमान के बाद काफिर होंगए, चाहे उन्होंने उसे किसी डर या लालच से किया हो या किसी का लिहाज़ रखते हुए, या अपने देश, बाल बच्चे, खानदान, या धन से मोह के कारण किया हो, या हँसी मज़ाक में किया हो, या कोई और उद्देश्य रहा हो, सिवाय उस व्यक्ति के जिसे विवश कर दिया गया हो, लेकिन उसका दिल संतुष्ट हो इसलिए कि दिल के अकीदा पर किसी को विवश नहीं किया जासकता है। और इस आयत में ﴿ذَلِكَ بِأَنَّهُمْ أَسْتَحْبُّو الْحَيَاةَ الدُّنْيَا عَلَى الْآخِرَةِ وَأَنَّ اللَّهَ لَا يَهْدِي إِلَّا قَوْمًا لَّا كَفَرُوا﴾ “यह इसलिए कि उन्होंने दनियावी जीवन से आखिरत से अधिक प्रेम किया, अवश्य अल्लाह तआला काफिर लोगों को सीधा मार्ग नहीं दिखाता”

अल्लाह तआला ने यह स्पष्ट कर दिया है कि अज़ाब उनके अकीदा, या धर्म से अज्ञानता के कारण नहीं, बल्कि इस कारण होगा कि उन्होंने सांसारिक चीज़ों को धार्मिक चीज़ों पर तर्जीह (प्रधानता) दी।

अल्लाह आप को हिदायत दे, क्या इन सारे प्रमाणों को सुनने के बाद भी वह समय नहीं आया कि आप अपने पापों से तौबा करें, अल्लाह की ओर पलटें, और इन खुराफ़ात को छोड़ दें, क्योंकि जैसा कि आपने सुना मामला अधिक खतरनाक है, और इसका परिणाम बहुत ही भयंकर है।

**अब्दुन्नबी :** मैं अल्लाह की माफ़ी चाहता हूँ, उसकी ओर पलटता हूँ, और यह गवाही दे रहा हूँ कि अल्लाह के सिवाय कोई भी इबादत के लायक नहीं है, और मुहम्मद ﷺ अल्लाह के रसूल हैं। और अल्लाह के सिवाय मैं जितनी चीज़ों की इबादत करता था उन सभों का इन्कार कर रहा हूँ, और अल्लाह से दुआ कर रहा हूँ कि वह मेरे पिछ्ले पाप को माफ़ करदे, मेरे साथ नरमी, क्षमा और रहमत का मामला करे, और अपने से मिलने तक मुझे तौहीद और सत्य अकीदा पर साबित रखे। और उससे यह दुआ करता हूँ कि इस नसीहत पर आप को सवाब और पुण्य दे; क्योंकि धर्म नसीहत का नाम है, और आप ने मेरे नाम का जो इन्कार किया उस पर भी आप को सवाब मिले, और अब मैंने अपना नाम **अब्दुन्नबी** से बदल कर अब्दुर्रह्मान रख लिया। और मेरे अन्दर की पोशीदा बुराई पर जो आपने इन्कार किया उस पर भी आप को सवाब दे; क्योंकि यह ऐसा भ्रष्ट अकीदा था कि यदि उस पर मेरी मौत होजाती तो मैं कभी सफल नहीं हो पाता।

लेकिन अन्त में मेरी आप से एक मांग है कि आप मुझे ऐसी बुराईयों से अवगत कराएं जिनके बारे में लोग गलतियों में पड़े हुए हैं।

**अब्दुल्लाह :** कोई बात नहीं। आप ध्यान से सुनिए।

\* किताब और सुन्नत के जिन प्रमाणों में इख्तिलाफ़ हुआ है उनमें फित्ना और तावील की ख़ातिर इख्तिलाफ़ी चीज़ों की पैरवी से बचो, और वास्तव में उनकी जानकारी तो मात्र अल्लाह तआला ही को है। और उनके बारे में तुम्हारी भूमिका मज्�बूत इत्म वालों के भूमिका की तरह हो जो इन मुतशाबिह प्रमाणों के बारे में कहते हैं : ﴿إِنَّمَا يَعْلَمُ مَنْ مَنْ عَنْ دِينِنَا﴾ “हम तो उन पर ईमान ला चुके यह सब हमारे रब की ओर से है”। और इख्तिलाफ़ी प्रमाणों के बारे में नबी

﴿كَمَنْ﴾ का फ़रमान है : “जिनके बारे में शक हो उन्हें छोड़ कर वह कर्म करो जिनके बारे में शक न हो”। (अहमद और तिर्मजी) और आप ﴿كَمَنْ﴾ ने फ़रमाया: “जो शक वाली चीज़ों से बचा उसने अपने धर्म और इज़्ज़त की हिफ़ाज़त की और जो शक वाली चीज़ों में पड़ा वह हराम में पड़ गया”। (बुख़ारी और मुस्लिम) और आप ﴿كَمَنْ﴾ ने यह भी फ़रमाया: “पाप वह है जो तुम्हारे सीने में खटके, और तू नापसन्द करे कि लोगों को इसकी जानकारी हो”। (मुस्लिम) और आप ﴿كَمَنْ﴾ ने यह भी फ़रमाया: “अपने दिल से पूछो, अपने नफस से पूछो –तीन बार आप ﴿كَمَنْ﴾ ने कहा- नेकी वह है जिस पर दिल संतुष्ट हो, और पाप वह है जो दिल में लगे और सीने में खटके, अगरचे लोग तुम्हें फ़त्वा दें और फ़त्वा दें”।

\* ख़ाहीशात की पैरवी से बचो; क्योंकि अल्लाह तआला ने इससे डराते हुए फ़रमाया: ﴿أَرَيْتَ مِنْ أَنْخَذَ إِلَهَهُ هَوَنَةً﴾ “क्या आप ने उसे भी देखा जो अपनी ख़ाहीशात को अपना देवता बनाये हुए है”।

\* लोगों की राय और बाप-दादा के आस्थाओं पर तअस्सुब करने से बचो; क्योंकि यह इन्सान और हक़ के बीच रुकावट है। बल्कि हक़ तो मोमिन का खोया हुआ सामान है, जहाँ भी पा ले वह उसका अधिक हक्कदार है। अल्लाह तआला का फ़रमान है : ﴿إِنَّا قَبْلَ هُنَّمَا تَبَعُوا بَلْ نَسْعَ مَا أَفْيَنَا عَلَيْهِ أَبَاءَنَا أَوْ لَوْكَاتٍ أَبَاؤُهُمْ لَا يَعْقُلُونَ﴾ “और उन से जब कभी कहा जाता है कि अल्लाह तआला की उत्तारी हुई किताब पर अमल करो तो जवाब देते हैं कि हम तो उस रास्ते का पालन करेंगे जिस पर हम ने अपने बुजुर्गों (बाप-दादा) को पाया, अगरचे उनके बुजुर्ग बेवकूफ़ और भटके हुए हों”।

\* काफिरों का रूप अपनाने से बचो, इसलिए कि यह हर मुसीबत की ज़ड़ है, नबी ﴿كَمَنْ﴾ ने फ़रमाया: “जिसने किसी कौम का रूप अपनाया वह उनमें से है”। (अबू-दाऊद)

\* गैरुल्लाह पर भरोसा करने से बचो; क्योंकि अल्लाह तआला का फ़रमान है : ﴿وَمَنْ يَوْكَلْ عَلَى﴾ ﴿أَللَّهُ فَهُوَ حَسْبُهُ﴾ “और जो व्यक्ति अल्लाह पर भरोसा करेगा अल्लाह उसके लिए काफ़ी होगा”।

\* अल्लाह तआला की ना-फ़रमानी के लिए किसी भी व्यक्ति की बात न मानो, नबी ﴿كَمَنْ﴾ का फ़रमान है : “अल्लाह तआला की ना-फ़रमानी में किसी मख़्लुक की पैरवी जायज़ नहीं”।

\* अल्लाह तआला के बारे में बुरा सोचने से बचो; क्योंकि ह़दीसे कुद्रसी में अल्लाह तआला का फ़रमान है : “मैं अपने बन्दों के गुमान के पास होता हूँ”। (बुख़ारी और मुस्लिम)

\* मुसीबत टालने या दूर करने के लिए कड़ा, छल्ला और धागा इत्यादि पहनने से बचो।

\* बुरी नज़र से बचने के लिए तावीज़ लटकाने से बचो; क्योंकि यह शिर्क है, जैसा कि नबी ﴿كَمَنْ﴾ ने फ़रमाया: “जिसने कोई चीज़ लटकाई वह उसके सिपुर्द कर दिया गया”। (अहमद और तिर्मजी)

\* पेड़, पथर, निशान और प्रासादों से तबरुक लेने से बचो; क्योंकि यह शिर्क है।

\* किसी भी चीज़ से बद्र-फ़ाली लेने से बचो; क्योंकि यह शिर्क है। नबी ﴿كَمَنْ﴾ ने फ़रमाया: “बद्र-फ़ाली लेना शिर्क है, बद्र-फ़ाली लेना शिर्क है”। (अहमद और अबू दाऊद)

\* जादूगरों और ज्योतिशियों की पुष्टि करने से बचो जो कि इल्मे-ग़ैब का दावा करते हैं, और राशिफ़ल ज़ाहिर करते हैं, लोगों के लिए भलाई या बुराई की बातें करते हैं, इन बातों में उनकी पुष्टि करना शिर्क है; क्योंकि अल्लाह तआला के अलावा कोई भी ग़ैब नहीं जानता।

\* बरसात बरसने की निस्बत नक्षत्रों की ओर करने से बचो; क्योंकि यह शिर्क है, बल्कि उसकी निस्बत अल्लाह तआला की ओर करो।

- \* गैरुल्लाह की क़सम खाने से बचो, जिसकी क़सम खाई जा रही हो वह व्यक्ति चाहे कितना ही महान क्यों न हो; क्योंकि यह शिर्क है। हड्डीस शरीफ में आया है : “जिसने गैरुल्लाह की क़सम खाई उसने कुफ्र किया या शिर्क किया”। (अहमद और अबू दाऊद) जैसे कि नबी ﷺ की क़सम खाना, या अमानत, या इज़ज़त, या जीवन इत्यादि की क़सम खाना।
- \* ज़माने को, हवा को, या सूरज को, या ठंडी को, या गर्मी को गाली देने से बचो; क्योंकि यह वास्तव में अल्लाह तआला को गाली देना है जिसने उन्हें बनाया है।
- \* दुःखी होने पर अगर मगर कहने से बचो; क्योंकि यह शैतान के दर्वाज़े को खोलता है, और अल्लाह की बनाई हूई तक़दीर पर आपत्ति जताने के बराबर भी है, लेकिन यह कहा करो, अल्लाह ने इसे मुक़द्र किया और उसे जो मन्जूर था उसने किया।
- \* कब्रों को मस्जिद बनाने से बचो; क्योंकि उस मस्जिद में नमाज़ नहीं पढ़ी जा सकती जिसमें कब्र हो, बुख़ारी और मुस्लिम में आइशा ؓ से रिवायत है, वह फ़रमाती हैं : अवश्य अल्लाह के रसूल ﷺ ने ज़ौकनी की अवस्था में फ़रमाया: “अल्लाह यहूदियों और ईसाइयों पर लानत करे जिन्होंने अपने नबियों की कब्रों को मस्जिद बनाली। आप ﷺ उनके कर्तृत से डरा रहे थे”। आइशा ؓ फ़रमाती हैं कि यदि इसका डर न होता तो आप ﷺ की कब्र भी उभारी जाती। और आप ﷺ ने फ़रमाया: “तुम से पहले जो लोग थे अपने नबियों और नेक लोगों की कब्रों को मस्जिद बना लेते थे, सौ तुम कब्रों को मस्जिदें न बनाना, मैं तुम्हें इस से रोकता हूँ”। (अबू-अवाना)
- \* आप ﷺ से और नेक लोगों से वसीला पकड़ने के बारे में उन रिवायतों की पुष्टि करने से बचो जिनकी निस्बत झूठे लोग नबी ﷺ की ओर करते हैं; क्योंकि यह सारी रिवायतें गढ़ी हुई हैं, इन्हीं में से यह रिवायतें भी हैं : “मेरे जाह-व-जलाल के माध्यम से वसीला पकड़ो; क्योंकि अल्लाह तआला के पास मेरा मर्यादा महान है”। और यह रिवायत : “जब तुम परीशानी में पड़ो तो कब्र वालों का सहारा लो”। और यह रिवायत कि : “अल्लाह तआला हर वली की कब्र के पास एक फ़रिश्ता नियुक्त कर देता है जो लोगों की हाजतें पूरी करता है”। और यह रिवायत भी कि : “यदि तुम पथर के बारे में भला सोचो तो वह तुम्हें लाभ देगा”। इनके इलावा भी बहुत सी गढ़ी हूई झूटी रिवायतें हैं।
- \* मीलादुन्नबी ﷺ, इसरा और मेराज और शबे-बरात इत्यादि के जश्न मनाने से बचो; क्योंकि यह सारी चीजें बाद की बनावटी हैं, जिनके करने की रसूलुल्लाह ﷺ से कोई दलील है, और न ही सहाब-ए-किराम ने किया है, जो कि हम से अधिक अल्लाह के रसूल से महब्बत करने वाले थे, और भलाई के कामों के लिए हम से ज़्यादा हरीस थे, और यदि इन्हें करना भी भलाई का काम होता तो वे हम से पहले कर गुज़रे होते।

## ला-इलाहा इल्लल्लाह की गवाही

**۱۰۷۴** इस कलिमा के दो रुक्न हैं, 1-अस्वीकृती : गैरुल्लाह की इबादत का इनकार करना।

2- स्वीकृती : वास्तविक इबादत को मात्र अल्लाह ﷺ के लिए साबित करना। अल्लाह ﷺ का फर्मान है:

وَلَمْ فَالْيَرَاهِيمُ لِأَيِّهِ وَقَوْمُهُ إِنَّمَا تَعْبُدُونَ ﴿٦﴾ (الْتَّكَوِينُ) और जब इब्राहीम (ص) ने अपने पीता और अपनी कौम से कहा कि मैं इन बातों से अलग हूँ जिनकी तुम इबादत करते हो। सिवाय उस ताक़त के जिस ने मुझे पैदा किया है और वही मेरी हिदायत भी करेगा। चुनान्वि मात्र इबादत करना काफ़ी नहीं है बल्कि ज़रूरी है कि इबादत अल्लाह ﷺ के लिए ख़ालिस हो, और तौहीद उस समय तक लाभ-दायक नहीं हो सकता जब तक कि मात्र एक अल्लाह ﷺ की इबादत करने के साथ साथ शिर्क और मुश्कियों से अलग न हुआ जाए।

और असर में आता है कि ला-इलाहा इल्लल्लाह जन्नत की कुंजी है, लेकिन क्या हर ला-इलाहा इल्लल्लाह कहने वाला व्यक्ति इसका हक्कदार है कि उस के लिए जन्नत खोल दिया जाए? वह्व बिन मुनब्बिह से पूछा गया : क्या ला-इलाहा इल्लल्लाह जन्नत की कुंजी नहीं है? तो उन्होंने जवाब दिया क्यों नहीं, लेकिन हर चाबी के दांत होते हैं, यदि दांत वाली चाबी लेकर आओगे तो तुम्हारे लिए ताला खुलेगा, नहीं तो नहीं।

और नबी ﷺ ने अनिन्त हड्डीसों में इस चाबी के दांत बयान किए हैं; आप ﷺ ने फरमाया: “जिस व्यक्ति ने इख्लास के साथ ला-इलाहा इल्लल्लाह कहा”, “दिल में विश्वास रखते हुए कहा”, “अपने दिल से हक़ जानते हुए कहा”, तो इन हड्डीसों में और इसी तरह की दूसरी हड्डीसों में जन्नत में जाने के लिए यह शर्त लगाई गई कि ला-इलाहा इल्लल्लाह कहने वाला व्यक्ति उसका अर्थ जानता हो, मरने तक उस पर साबित रहा हो, और उसके अनुसार अपना जीवन बिताया हो।

दलीलों की रौशनी में उलमा ने ला-इलाहा इल्लल्लाह के कुछ शर्त बयान किए हैं, हर व्यक्ति में जिनका पाया जाना और उनके विरोधी चीज़ों से दूर रहना ज़रूरी है, ताकि यह कल्पा जन्नत की कुंजी बने, अपने कहने वाले को लाभ दे, और यह शर्तें ही इसके दांत हैं, जिनकी संख्या सात है:

**१ इल्म (ज्ञान):** प्रत्येक शब्द का एक अलग अर्थ होता है, इसी लिए ला-इलाहा इल्लल्लाह का अर्थ इस तौर पर जानना ज़रूरी है कि इन्सान से जहालत दूर होजाए, यह कल्पा गैरुल्लाह की इबादत को नकारता है, और इबादत को मात्र अल्लाह तआला के लिए साबित करता है, इसका अर्थ है : अल्लाह के सिवाय कोई भी सत्य मांबूद (उपास्य) नहीं, अल्लाह तआला का फरमान है: إِلَّا مَنْ شَهَدَ بِالْحَقِّ وَهُمْ يَعْلَمُونَ (سिफारिश के लायक वे हैं) जो सच बात को स्वीकार करें और उन्हें जानकारी भी हो। और नबी ﷺ ने फरमाया: “जिस की मौत इस ह़ालत में हुई कि वह जानता हो कि अल्लाह के सिवाय कोई इबादत के लायक नहीं तो वह जन्नत में दाखिल होगया”। (मुस्लिम)

**२ यकीन (विश्वास) :** आप को उसके अर्थ पर यकीन हो; क्योंकि शक, गुमान, दुष्प्रिया और शक की इसमें कोई गुन्जाइश नहीं है, बल्कि पुखता यकीन ज़रूरी है। अल्लाह तआला ने मोमिनों की सिफ़त बयान करते हुए फरमाया: إِنَّمَا الْمُؤْمِنُونَ الَّذِينَ آمَنُوا بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ ثُمَّ لَمْ يَرْتَأُوا “ईमान वाले तो वे हैं जो अल्लाह पर और उसके रसूल पर ईमान लायें, फिर शक न करें, और अपने माल से और अपनी जान से अल्लाह के रास्ते में जिहाद करते रहें, (अपने ईमान के दावे में) यही सच्चे हैं”।

चुनांचि केवल जुबान से इक़ार करना काफी नहीं है, बल्कि दिल से विश्वास करना ज़रूरी है, यदि दिल में यकीन न हो तो यही निफाक है, नबी करीम ﷺ ने फ़रमाया: “**كَلَمٌ إِنَّمَا يُحِبُّهُ الظَّاهِرُونَ**” (कलम ए शहादतैन के साथ जो व्यक्ति भी अल्लाह से मुलाक़ात करेगा, और उसे इस में शक न हो तो वह जन्नत में दाखिल होगा)।

**③ क़बूल :** जब आप को इसके माने की जानकारी हो गई और उस पर यकीन भी हो गया, तो ज़रूरी है कि आप पर उसका छाप भी दिखाई दे, और वह इस तरह से कि इसके मुतालबे दिल और जुबान से आप को क़बूल हों, तो जिस ने तौहीद की दावत का इन्कार किया और उसे स्वीकार नहीं किया तो वह काफिर हो गया, चाहे उसका यह इन्कार घमण्ड, दुश्मनी और हङ्सद के कारण ही क्यों न हो, और अल्लाह तआला ने उन काफिरों के बारे में जिन्होंने घमण्ड करते हुए इसका इन्कार कर दिया फ़रमाया: ﴿كَافُوا إِذَا قِيلَ لَهُمْ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ يَسْتَكْبِرُونَ﴾ “ये वे लोग हैं कि जब उन से कहा जाता है कि अल्लाह के सिवाय कोई माँबूद नहीं, तो यह घमण्ड करते हैं”।

**④ इन्क़ियाद :** तौहीद के लिए पूरी ताबेदारी हो, और यही वास्तव में हक्कीकी मज़बूती और ईमान की अमली नुमाइश है, जो कि अल्लाह तआला की शरीअत के अनुसार अमल करने और उसकी रोकी हुई चीज़ों से दूर रहने से पूरी होती है, जैसा कि अल्लाह तआला ने फ़रमाया: ﴿وَمَنْ يُسْلِمْ وَجْهَهُ إِلَى اللَّهِ وَهُوَ مُحِسِّنٌ فَقَدِ اسْتَمْسَكَ بِالْعُرُوفِ وَإِلَى اللَّهِ عَاقِبَةُ الْأُمُورِ﴾ “और जो व्यक्ति अपने आप को अल्लाह के ताबे करदे और वह है भी परहेज़गार, तो यकीनन उसने मज़बूत कड़ा थाम लिया, सभी कर्म का नतीजा अल्लाह की ओर है”। और यही कामिल ताबेदारी है।

**⑤ सच्चाई :** ला-इलाहा इल्लाह कहने वाला व्यक्ति अपनी बात में सच्चा हो, यदि किसी ने मात्र जुबान से कहा हो और उसका दिल इस्कारी हो तो वह मुनाफ़िक है, और इसकी दलील मुनाफ़िकीन की मज़म्मत में अल्लाह तआला का यह फ़रमान है : ﴿يَقُولُونَ بِالْسِتْهَمَ مَا لَيْسَ فِي قُلُوبِهِمْ﴾ “यह लोग अपनी जुबानों से वह बाते कहते हैं जो उनके दिलों में नहीं है”।

**⑥ महब्बत :** मोमिन व्यक्ति इस कलमा से महब्बत करे, इसके मांग अनुसार अमल करना पसंद करे, और जो लोग इसके अनुसार अमल करते हैं उनसे महब्बत करे, बन्दे का अपने रब से महब्बत करने की निशानी यह है कि जो चीज़ें अल्लाह तआला को पसन्द हैं उन्हें वह महत्व दे चाहे वे उसकी चाहत के खिलाफ़ ही क्यों न हों, और जो अल्लाह और उसके रसूल से दोस्ती रखते हैं उन से दोस्ती करे, और जो अल्लाह और उसके रसूल से दुश्मनी करते हैं उन से दुश्मनी करे, और अल्लाह के रसूल की पैरवी करे, उनके नक्शे क़दम को क़बूल करे, और उनका मार्ग-दर्शन स्वीकार करे।

**⑦ इख्लास :** इस कलमा के इक़ार द्वारा उसकी चाहत मात्र अल्लाह तआला की खूशनूदी हो, अल्लाह तआला का फ़रमान है : ﴿وَمَا أُمُرْؤًا إِلَّا يَعْبُدُوا اللَّهُ مُخْلِصِينَ لِهِ الَّذِينَ حَنَفُوا﴾ “उन्हें इसके सिवाय कोई हुक्म नहीं दिया गया कि केवल अल्लाह की इबादत करें उसी के लिए धर्म को शुद्ध कर रखें इब्राहीम हनीफ के दीन पर।” और नबी ﷺ ने फ़रमाया: “अल्लाह तआला ने उस व्यक्ति को जहन्नम पर हराम कर दिया जिसने ला-इलाहा इल्लाह कहा और इसके द्वारा अल्लाह की खुशनूदी चाहता हो”।

## मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह की गवाही

कब्र में मैयत का इन्तिहान होगा और उससे तीन प्रश्न किए जाएंगे, यदि उसने उनका उत्तर दे दिया तो सफल होगया नहीं तो हलाक होगया, और उनमें से एक प्रश्न यह होगा : **مَنْ بَيْكُ** तेरा नबी कौन है? इस प्रश्न का उत्तर वही व्यक्ति दे सकेगा जिसे अल्लाह ने संसार में इसके शराएत पूरी करने की तौफीक दी होगी, मरते समय दीन पर साबित रखवा होगा, और कब्र में इल्हाम किया होगा, तो आखिरत में भी यह उसके लिए लाभदायक होगा, जिस दिन माल और संतान लाभ न देंगे। यह हैं इसकी चार शर्तें :

**① जिन चीजों का आपने आदेश दिया है, उनमें आपकी इताअत करना :** क्योंकि अल्लाह तआला ने हमें आपकी फर्माबदारी का हुक्म दिया है, फ़रमाया: ﴿مَنْ يُطِعْ رَسُولَ فَقَدْ أَطَاعَ اللَّهَ﴾ “उस रसूल की जो फर्माबदारी करे उसी ने अल्लाह की फर्माबदारी की”। और फ़रमाया: ﴿كَلْ إِنْ كُنْتُرْ تَجْنُونَ اللَّهَ فَاتَّبِعُونِي يُحِبِّبُكُمْ اللَّهُ﴾ “कह दीजिए यदि तुम अल्लाह से महब्बत रखते हो तो मेरी ताबेदारी करो स्वयं अल्लाह तुम से महब्बत करेगा”। और जन्नत में दाखिला आप ﴿كَلْ إِنْ كُنْتُرْ تَجْنُونَ اللَّهَ فَاتَّبِعُونِي يُحِبِّبُكُمْ اللَّهُ﴾ की इताअत पर निर्भर है, आप ﴿كَلْ إِنْ كُنْتُرْ تَجْنُونَ اللَّهَ فَاتَّبِعُونِي يُحِبِّبُكُمْ اللَّهُ﴾ ने फ़रमाया: “मेरी उम्मत का हर कोई जन्नत में जाएगा सिवाय उसके जिसने जाने से इन्कार कर दिया, लोगों ने कहा : ऐ अल्लाह के रसूल! जन्नत में जाने से कौन इन्कार करेगा? तो आप ﴿كَلْ إِنْ كُنْتُرْ تَجْنُونَ اللَّهَ فَاتَّبِعُونِي يُحِبِّبُكُمْ اللَّهُ﴾ ने फ़रमाया: जिसने मेरी इताअत की वह जन्नत में जाएगा, और जिसने मेरी नाफ़रमानी की उसने (जन्नत में जाने से) इन्कार किया”। (बुखारी) और जिसे आप ﴿كَلْ إِنْ كُنْتُرْ تَجْنُونَ اللَّهَ فَاتَّبِعُونِي يُحِبِّبُكُمْ اللَّهُ﴾ से महब्बत है, वह ज़रूर आप की फर्माबदारी करेगा, इसलिए कि इताअत महब्बत का फल है, और यदि कोई आप ﴿كَلْ إِنْ كُنْتُرْ تَجْنُونَ اللَّهَ فَاتَّبِعُونِي يُحِبِّبُكُमْ اللَّهُ﴾ की ताबेदारी के बिना आप से महब्बत का दावा करता है तो वह अपने दावे में झूटा है।

**② जिन चीजों की आपने ख़बर दी है उनमें आप की तस्दीक करना :** जिस व्यक्ति ने अपनी ख़ाहिश या हवस की बुन्याद पर आप ﴿كَلْ إِنْ كُنْتُرْ تَجْنُونَ اللَّهَ فَاتَّبِعُونِي يُحِبِّبُكُمْ اللَّهُ﴾ से साबित चीजों को झुटलाया तो उसने अल्लाह और उसके रसूल को झुटलाया, क्योंकि आप ﴿كَلْ إِنْ كُنْتُرْ تَجْنُونَ اللَّهَ فَاتَّبِعُونِي يُحِبِّبُكُمْ اللَّहُ﴾ गलती और झूट से मासूम हैं, अल्लाह तआला का फ़रमान है : ﴿وَمَا يَنْطِقُ عَنِ الْمُؤْمِنِ﴾ “और न वह अपनी ख़ाहिश से कोई बात कहते हैं”।

**③ जिन चीजों से आप ने रोका है उन से दूर रहना :** कबीर: गुनाह शिर्क और दूसरे बड़े और हलाक करने वाले गुनाहों से बचते हुए छोटे गुनाहों और मकरूह चीजों से बचना, चुनांचि अपने नबी ﴿كَلْ إِنْ كُنْتُرْ تَجْنُونَ اللَّهَ فَاتَّبِعُونِي يُحِبِّبُكُمْ اللَّهُ﴾ से मुस्लिम व्यक्ति की महब्बत जिस क़दर अधिक होगी उसी के बराबर उसका ईमान भी अधिक होगा, और जब उसका ईमान ज्यादा होगा तो अल्लाह तआला नेकियों को उसके दिल में महबूब कर देगा, और कुफ़, फ़िस्क और गुनाह के कामों से घृणा पैदा कर देगा।

**④ और अल्लाह की इबादत उसी तरह हो जिस तरह खुद अल्लाह तआला ने अपने नबी की जुबानी मशरू'अ (शरीयत सम्मत) की है :** क्योंकि इबादत में अस्ल प्रतिबंध है, इसलिए अल्लाह के रसूल से जो चीज़े साबित हैं उनके बजाए अल्लाह की इबादत करना जायज़ नहीं है, आप ﴿كَلْ إِنْ كُنْتُرْ تَجْنُونَ اللَّهَ فَاتَّبِعُونِي يُحِبِّبُكُمْ اللَّهُ﴾ ने फ़रमाया: “जिस व्यक्ति ने कोई ऐसा काम किया जिसका हमने आदेश नहीं दिया है तो वह मर्दूद है”।

**फ़ाइदा :** यह जान लो कि नबी ﴿كَلْ إِنْ كُنْتُرْ تَجْنُونَ اللَّهَ فَاتَّبِعُونِي يُحِبِّبُكُمْ اللَّهُ﴾ की महब्बत वाजिब है, और मात्र महब्बत काफ़ी नहीं है, बल्कि ज़रूरी है कि वह तुम्हारी सारी चीजों से अधिक महबूब हों यहाँ तक कि तुम्हारी जान से भी; क्योंकि जो इन्सान किसी चीज़ से महब्बत करता है तो वह उसे और उसकी मुवाफ़कत को तर्ज़ीह देता है, और आप की महब्बत में सच्चा वह व्यक्ति है जिस से महब्बत

की निशानी ज़ाहिर हो, वह आपका ताबेदार हो, कर्म में आपकी सुन्नत का पाबन्द हो, आपके आज्ञा का पालन करता हो, प्रतिबधित चीज़ों से बचता हो, कठिनाई और आसानी में खूशी और ग़मी में आप के स्वभावों को अपनाता हो, इसलिए कि इताअत और ताबेदारी महब्बत का फल है, और इसके बिना महब्बत सच्ची नहीं हो सकती।

**नबी ﷺ की महब्बत की बहुत सी निशानियाँ हैं**, उन निशानियों में से एक यह है कि अधिक से अधिक आपको याद किया जाए, आप पर दुर्लभ भेजा जाए, क्योंकि हबीब अपने महबूब का अधिक चर्चा किया करता है। एक निशानी यह भी है कि आप से भेट करने का शैक़ हो, क्योंकि हबीब को अपने महबूब से मुलाकात की चाहत होती है। एक निशानी यह भी है कि जब आप का चर्चा हो तो आप की बड़ाई (ताज़ीम) और इज्जत की जाए। इस्हाकَ ﷺ कहते हैं : (आप ﷺ के बाद सहाबए करामَ ﷺ जब भी आप का चर्चा करते तो उन पर रिक्कत तारी होजाती, उनके रौंगटे खड़े होजाते, और वे रोने लगते)। एक निशानी यह भी है कि आप से कीना रखने वालों से बुग़ज़ किया जाए, आप के दुश्मनों से दुश्मनी की जाए, और बिद्रअतियों और मुनाफ़िकों से जो आप की सुन्नत की मुख़ालफ़त करते हैं उन से दूर रहा जाए। एक निशानी यह भी है कि आप ﷺ ने जिन लोगों से महब्बत की है उन से महब्बत की जाए वह चाहे अह्ले बैत हों, या आप की नेक पत्नियाँ हों, या मुहाजिर और अन्सार सहाबए कराम हों, और जो इन से दुश्मनी करे उस से दुश्मनी की जाए, इन्हें गाली देने वालों से बुग़ज़ रखवा जाए। और एक निशानी यह भी है कि आप के सुन्दर अख़लाक की पैरवी की जाए, क्योंकि आप सारे लोगों से सुन्दर स्वभाव के मालिक थे, यहाँ तक कि आइशा ﷺ ने कहा कि : आप कुर्�आन के अमली नमूना थे। वही काम करते थे जिसका कुर्�आन ने आप को आदेश दिया था।

**नबी ﷺ के गुण :** आप सब से बहादुर थे, खास कर लड़ाई के मैदान में, आप करम नवाज़ थे, सब से बड़े दानी थे, खासकर रमज़ान के महीने में, लोगों के सब से बड़े ख़ैर-ख़ाह थे, रहम दिल थे, अपने लिए किसी से बदला नहीं लेते थे, लेकिन अल्लाह तआला के बारे में थोड़ी सी भी मुरौवत नहीं बरतते (सब से ज़्यादा सख्त) थे, सन्जीदा मिज़ाज बा-वक़ार थे, कन्या से भी अधिक शरम करने वाले थे, अपने घर वालों के लिए सब से बेहतर थे, लोगों के लिए दयालु और मेहर्बान थे, --- और भी आप के बहुत से गुण थे। ऐ अल्लाह तू हमारे नबी, उनके आल, उनकी पत्नियों, उनके साथियों और कियामत के दिन तक उनकी पैरवी करने वालों पर रहमतें और सलामतियाँ नाज़िल कर।

## तहारत

<sup>1</sup>नमाज़ इस्लाम का दूसरा रुक्न है, जो तहारत के बिना स्वीकार नहीं होती, और तहारत पानी या मिट्टी से हासिल होती है।

**पानी की क्रिटमें :** ① ताहिर (पवित्र) : जो कि स्वयं पाक हो और पाक करने वाला हो, यह पवित्र पानी नापाकी को दूर करता है, और गन्दगी को मिटा देता है।

② नजिस (अपवित्र) : थोड़ा पानी जिसमें नापाकी गिर गई हो, और यदि अधिक मात्रा में हो तो नापाकी पड़ने के कारण उसके औसाफ़ में से मज़ा या रंग या बूंद बदल गई हो।

**ब्लेट :** पानी यदि अधिक मात्रा में हो तो नापाकी पड़ने से जब तक उसके तीनों औसाफ़ (मज़ा, रंग और बूंद) में से कोई वस्फ़ न बदल जाए नापाक नहीं होता है, लेकिन यदि पानी थोड़े मात्रा में हो तो मात्र नापाकी पड़ने से ही नापाक होजाता है, और पानी को अधिक उस समय माना जाएगा जब वह लगभग 210 लीटर से ज्यादा हो।

**बर्तन :** सोना और चाँदी के बर्तन के सिवाय हर पवित्र बर्तन को प्रयोग में लाना जायज़ है, और यदि सोना और चाँदी के बर्तन में पानी रख कर तहारत हासिल की गई तो तहारत तो होजाएगी लेकिन साथ में उन्हें प्रयोग करने का गुनाह भी होगा, और काफिरों के पाक कपड़ों और बर्तनों को प्रयोग में लाना मुबाह (जायज़) है।

**मुर्दे का चमड़ा :** बिल्कुल अपवित्र है, और मुर्दे दो तरह के होते हैं : ① जिनका खाना हराम हो। ② जिन्हें खाया जाता हो लेकिन वह ज़बह न किए गए हों, तो जिन जानवरों को खाया जाता हो और उन्हें ज़बह न किया गया हो उनके चमड़ों को दबाग़त देने के बाद उन्हें गीली चीजों के बजाए सूखी चीजों में प्रयोग करना जायज़ है।

**इस्तिन्ज़ा :** पेशाब और पाखाने के रास्ते से निकलने वाली गन्दगी को दूर करना, यदि पानी से दूर किया जाए तो इसे इस्तिन्ज़ा कहते हैं, और यदि पथर और टिशु-पेपर इत्यादि से दूर किया जाए तो इसे इस्तिज्मार कहते हैं, अल्बत्ता इस्तिज्मार के लिए शर्त यह है कि वह पाक हो, मुबाह हो, सफाई करने वाला हो, और उसे खाया न जाता हो, और तीन या उस से अधिक पथरों द्वारा हो। इस्तिन्ज़ा या इस्तिज्मार हर निकलने वाली गन्दगी को दूर करने के लिए ज़रूरी है।

**क़ज़ाए हाज़त** करने वाले व्यक्ति पर समय से अधिक अपवित्रता की स्थिती में रहना हराम है, इसी तरह पानी के घाट, आम रास्ते, साए के नीचे, फ़ल्दार पेड़ के नीचे और ख़ाली जगहों में और फ़ज़ा में काबा की ओर चेहरा करके हाज़त पूरी करना हराम है।

**और यह मकरूह** है कि शौचालय में ऐसी चीज़ लेकर प्रवेश करे जिसमें अल्लाह का ज़िक्र हो, और इसी तरह हाज़त पूरी करते समय बात करना, सूराख इत्यादि में पेशाब करना, दाहने हाथ से शराम-गाह छूना, और शौचालय के अन्दर काबा की ओर चेहरा करके हाज़त पूरी करना **मकरूह** है। और ज़रूरत के समय यह चीजें जायज़ हैं।

**और क़ज़ाए हाज़त** करने वाले व्यक्ति के लिए यह मुस्तहब्ब है कि पानी या पथर ताक़ (अद्वितीय) ले, और यह भी मुस्तहब्ब है कि पहले सफाई करे फिर पानी इस्तेमाल करे।

**मिस्वाक :** पीलू इत्यादि की नरम लकड़ी से मिस्वाक करना मुस्तहब्ब है, जो कि नमाज़ से पहले, कुरुआन पढ़ने और बुजू करते समय कुल्ली से पहले, सो कर उठने के बाद, मस्जिद या घर में प्रवेश करते समय, और मुंह का मज़ा बदल जाने के समय सुन्नते मुअक्कदा है।

<sup>1</sup>तहारत, सलात, ज़कात, सियाम और हज़ज़ सम्बन्धित जो अह़काम ज़िक्र किए गए हैं यह इज्तिहाद की बुन्याद पर हैं, जिन्हें जमअ करने वाले ने अपने इस्लाम की रौशनी में राजिह समझा है, इस से इख्लालाफ़ भी किया जा सकता है, बहर हाल मुरिलम व्यक्ति के लिए धर्म सम्बन्धित मसाइल में मशहूर उलमाएं दीन जैसे अबू हृषीकेश, मालिक, शाफ़ी और अहमद की इतिहास करनी चाहिए।

मिस्वाक करने और तहारत के समय दाएं ओर से शुरू करना मुस्तहब है, और यह भी मुस्तहब है कि गन्दगी को दूर करने के लिए बाएं हाथ का प्रयोग किया जाए।

**वुजूः वुजू के अर्कान :** ① चेहरे को धुलना, कुल्ली करना और नाक में पानी डालना इस में शामिल है, ② दोनों हाथों को उँगलियों के किनारे से लेकर दोनों केहनियों तक धुलना। ③ दोनों कानों समेत पूरे सर का मसह करना। ④ दोनों पैरों को टख्नों समेत धुलना। ⑤ तर्तीब के साथ वुजू करना। ⑥ मुवालात अर्थात लगातार वुजू करना, इस तरह कि एक अंग को धोने के बाद दूसरे अंग को धोने में इतनी देर न की जाए कि पहला अंग सुख जाए।

**वुजू के वाजिबात :** वुजू से पहले बिस्मिल्लाह कहना, रात की नींद से सोकर उठने वालों के लिए पानी में हाथ डालने से पहले तीन बार उसे धो लेना।

**वुजू की सुन्नतें :** मिस्वाक करना। शुरू में दोनों हथेलियों को धुलना, चेहरा धुलने से पहले कुल्ली करना और नाक में पानी खींचना, जो व्यक्ति रोज़े से न हो उसके लिए कुल्ली करते और नाक में पानी खींचते समय मुबालगा करना, घनी दाढ़ीयों का खिलाल करना, उँगलियों का खिलाल करना, दाईं ओर से शुरू करना, अंगों को दुसरी और तीसरी बार धुलना, दाएं हाथ से नाक में पानी खींचना और बाएं हाथ से झाड़ना, अंगों को रगड़ना, वुजू पूरा करना, और सुन्नत से जो दुआ साबित है उसे पढ़ना।

**वुजू के अन्दर मकरुह चीज़ें :** ठंडे या गरम पानी से वुजू करना, एक अंग को तीन बार से अधिक धोना, अंगों से पानी छिड़कना, आँख का अन्दरूनी हिस्सा धुलना, अल्बत्ता वुजू के बाद तौलिया इस्तेमाल करना जायज़ है।

**नोट :** कुल्ली करने में पानी को मुंह के अन्दर धुमाना ज़रूरी है। और नाक में पानी डालते समय पानी को सांस के द्वारा खींचना ज़रूरी है, मात्र हाथ से डालना काफ़ी नहीं है, इसी तरह झाड़ते समय सांस के द्वारा झाड़ना ज़रूरी है।

**वुजू का तरीक़ा :** वजू का तरीक़ा यह है कि : दिल से नियत करे, फिर “बिस्मिल्लाह” कहे, और अपने दोनों हाथों को कलाई तक तीन बार धोए, फिर तीन बार कुल्ली करे, और एक चुल्लू से तीन बार नाक में पानी चढ़ाए, फिर पूरे चेहरे को (सर के बाल उगने की जगह से लेकर दोनों दाढ़ों और ठुङ्गी के निचले हिस्से तक लम्बाई में, और एक कान की जड़ से लेकर दूसरे कान की जड़ तक चौड़ाई में) तीन बार धोए, और दाढ़ी घनी हो तो उसका खिलाल करे, और यदि हल्की हो तो धोना ज़रूरी है, फिर दोनों हाथों को दोनों केहनियों तक तीन बार धोए, फिर सर का दोनों कानों समेत इस तरह मसह करे कि दोनों हाथों को सर के अगले हिस्से से गुजारते हुए गुद्धी तक लेजाए, फिर उन्हें सर के अगले हिस्से तक वापस ले आए, शहादत की दोनों उँगलियों को कान में डाल ले और अंगूठे से जाहिरी हिस्से का मसह करे, फिर दोनों पैरों को टखनों समेत तीन बार धोए। फिर दुआ पढ़े।

**नोट :** दाढ़ी यदि हल्की हो तो उस के नीचे का चम्ड़ा धुलना ज़रूरी है, और यदि घनी हो तो मात्र ज़ाहिरी हिस्से को धोले।

**मोज़ों पर मसह करना :** मोजे चाहे चमड़े के हों या धागा इत्यादि के, यदि वे ऊन के हैं तो उन्हें जौरब कहा जाता है, और मात्र छोटी नापाकी से तहारत के लिए ही इन पर मसह करना दुरुस्त है। जिस के लिए कुछ शर्तें हैं : ① मुकम्मल तहारत के बाद मोजे पहने हों।

② पानी से तहारत हासिल की हो। ③ मोज़ा टखने के ऊपर तक हो। ④ दोनों मोज़े मुबाह (जायज़) हों। ⑤ और वह पाक चीज़ से बनाए गए हों।

**इमामा (फण्डी)** : कुछ शर्तों के साथ इमामा पर मसह करना जायज़ है : ① इमामा बांधने वाला व्यक्ति नर हो। ② आम तौर पर सर का जितना हिस्सा ढका जाता है उसे ढके हुए हो।

③ मसह छोटी नापाकी से तहारत के लिए कर रहा हो। ④ पानी से तहारत हासिल किया हो।

**दुपट्टा** : कुछ शर्तों के साथ दुपट्टे पर मसह करना जायज़ है : ① दुपट्टा औरत के सर पर हो। ② हल्क़ के नीचे से उसे धुमाया गया हो। ③ मसह छोटी नापाकी से तहारत के लिए हो। ④ पानी से तहारत हासिल की हो। ⑤ आम तौर पर सर का जितना हिस्सा ढका जाता है उसे ढके हुए हो।

**मसह की मुद्दत (अवधि)** : मुकीम के लिए एक दिन और एक रात, और मुसाफिर (यात्री) के लिए यदि उसकी यात्रा में नमाज़ क़स्त करना जायज़ हो (अर्थात् 85 किमी का सफर हो) तो तीन दिन और तीन रात।

**मसह की शुरूआत** : पहनने के बाद पहली नापाकी के समय से यह मुद्दत शुरू होगी। मुकीम के लिए अगले 24 घंटे तक के लिए, और मुसाफिर के लिए 72 घंटे तक के लिए।

**फ़ाइदा** : जिसने यात्रा के दौरान मसह किया फिर मुकीम हो गया, या इकामत (अवस्थान) के दौरान मसह किया फिर मुसाफिर होगया, या उसे मसह की शुरूआत के बारे में शक होगया तो वह मुकीम की तरह मसह करेगा।

**प्लास्टर** : हड्डियों के उपचार के लिए जो प्लास्टर बांधे जाते हैं उन पर मसह करने की कुछ शर्तें हैं : ① प्लास्टर की उसे ज़खरत हो। ② ज़खरत से अधिक जगह पर प्लास्टर न लगा हो। ③ मसह करने और बाकी अंगों को धुलने में मुवालात हो। प्लास्टर या पट्टी ज़खरत से अधिक हिस्से पर लगी है तो उसे हटा देना ज़खरी है, लेकिन यदि नुकसान का डर हो तो मसह करना काफ़ी होगा।

**मोज़ों पर मसह करने की मिक्दार** : पैर की उँगलियों से लेकर पिंडली तक मसह किया जाएगा। सारी उँगलियाँ खुली हों, और दाएं हाथ की उँगलियों से दाएं पैर का और बाएं हाथ की उँगलियों से बाएं पैर का मसह किया जाएगा।

**फ़ाइदे** : अफ़ज़ल यह है कि दोनों पैरों का मसह एक साथ किया जाए। मोज़े के नीचे या पीछे मसह करना सुन्नत के खिलाफ़ है, और मात्र उसी (निचले या पिछले हिस्से) पर मसह करना काफ़ी नहीं है। मसह करने के बजाए पैरों को धुलना और एक बार से अधिक मसह करना मक्रूह है। इमामा और दुपट्टा के अधिक हिस्से पर मसह करना वाजिब है।

**वुजू तोड़ने वाली चीज़ें** : ① पेशाब और पाखाने के रास्ते किसी चीज़ का निकलना चाहे वह पाक हो जैसे हवा और मनी या नापाक हो जैसे पेशाब और मज़ी। ② नींद और बेहोशी के कारण अक़ल का न होना, थोड़ी सी ऊँघ के अतिरिक्त जो बैठे बैठे अथवा खड़े खड़े आजाए, क्योंकि इस से वुजू नहीं टूटता। ③ पेशाब और पाखाने का अपने रास्ते के इलावः से निकलना। ④ पेशाब और पाखाने के सिवाय शरीर से किसी दूसरी नापाकी का अधिक मात्रा में निकलना, जैसे अधिक मात्रा में खून निकलना। ⑤ ऊँट का गोश्त खाना। ⑥ बिना कपड़े वगैरः के हाथ से शरमगाह (इन्द्रिय) छूना। ⑦ मर्द और औरत का शहवत के साथ बिना कपड़े के एक दूसरे को छूना। ⑧ इस्लाम से फिर जाना। और जिसे पाक होने का विश्वास हो और नापाकी के बारे में शक हो, अथवा नापाकी के बारे में विश्वास हो और पाकी के बारे में शक हो तो वह विश्वास के अनुसार अमल करे, यही चीज़ बेहतर है।

**गुरुले जन्मबत्त** : 6 चीजों के कारण गुरुले वाजिब होता है : ① सोने या जगने के अवस्था में मनी का निकलना पर पर जगने के अवस्था में लज्ज़त के साथ निकलना शर्त है। ② पुरुष

के लिंग का हशफा (खतने में कटा हुआ हिस्सा) स्त्री के इंद्रिय में घुसना, चाहे मनी निकले या न निकले, ③ कफिर का इस्लाम लाना। ④ हैज़ (माहवारी) के खून ⑤ और निफास (बच्चा जन्ने के बाद आने वाला खून) के खून से पाक होना। ⑥ मुस्लिम की मौत।

**गुरुल के फ़रीज़े :** नहाने की नीयत से पूरे बदन पर पानी बहाना और मुंह और नाक में पानी डालना काफ़ी है। और 9 चीज़ों के द्वारा गुरुल कामिल होता है : ① जनाबत से स्नान की नियत करे। ② बिस्मिल्लाह कहे। ③ अपने दोनों हाथों को बर्तन में डालने से पहले तीन बार धोए। ④ संभोग के बाद की शरमगाह पर लगी गंदगी को धोए। ⑤ वुजू करे। ⑥ अपने सर पर तीन लप पानी डाले, और उन से बालों की जड़ों को भिगोए और बालों का खिलाल करे। ⑦ और पूरे शरीर पर पानी बहाए। ⑧ अपने दोनों हाथों से पूरे शरीर को मले। ⑨ और दाहिनी तरफ से शुरू करे।

और किसी भी व्यक्ति को जब छोटी नापाकी होजाए तो उस के लिए तीन चीजें हराम होजाती हैं : ① किसी आड़ के बिना मुसहफ को छुना। ② वुजू से रोकने वाले किसी उज्र के बिना फ़र्ज या नफ़्ल नमाज़ पढ़ना। ③ काँबा का तवाफ़ करना।

और यदि बड़ी नापाकी हो तो उपर्युक्त चीजों के साथ नीचे दर्ज की हुई चीजें भी हराम हो जाती हैं : ④ कुर्अन पढ़ना। ⑤ और वुजू किए बिना मस्जिद में रुकना।

और वुजू किए बिना नापाकी के अवस्था में सोना मक्रूह है। और इसी तरह गुरुल करने में अधिक पानी बहाना भी मक्रूह है।

**तयम्मुम :** तयम्मुम की शर्तें : ① पानी का न मिलना। ② तयम्मुम मुबाह और पाक मिट्टी द्वारा ही जिसके गर्द हों, और जो जला हुआ न हो।

**तयम्मुम के अर्कान :** पुरे चेहरे का मसह करना, और दोनों कलाईयों तक दोनों हाथों का मसह करना, सिलसिलावार करना और बिना देरी किए करना।

**तयम्मुम तोड़ देने वाली चीजें :** ① हर वह चीज़ जो कि वुजू को तोड़ने वाली हो। ② यदि तयम्मुम पानी न मिलने के कारण किया हो तो पानी का मिल जाना। ③ तयम्मुम को मुबाह करने वाली चीज़ का ख़त्तम होजाना। जैसे रोग के कारण तयम्मुम करने वाले का निराग होजाना।

**तयम्मुम की सुन्ततें :** ① बड़ी नापाकी से तयम्मुम करते समय तर्तीब और मुवालात कायम रखना। ② अन्तिम समय तक के लिए देरी करना। ③ तयम्मुम के बाद वुजू की दुआएं पढ़ना।

**तयम्मुम में मक्रूह चीज़ :** एक बार से अधिक मिट्टी पर मारना।

**तयम्मुम करने का तरीक़ा :** नियत करे फिर बिस्मिल्लाह कहे, और मिट्टी पर अपने दोनों हाथों से एक बार मारे, फिर हथेली के भीतरी हिस्से को अपने चेहरे और दाढ़ी पर फेरे, फिर अपने दोनों हथेलियों का मसह करे, दाईं के बाहरी हिस्से पर बाईं के भित्री हिस्से को फेरे, फिर बाईं के बाहरी हिस्से पर दाईं के भीतरी हिस्से को फेरे।

**नापाकी को दूर करना :** नापाकी दो तरह की होती है : ① ऐनी नापाकी : जिसे पाक करना सम्भव नहीं जैसे सूवर; उसे जितना भी नहलाया जाए वह पाक नहीं हो सकता। ② हुक्मी नापाकी : कपड़े और धर्ती इत्यादि जो कि असल में पाक हैं इन पर नापाकी का लग जाना।

आयान (सजीव तथा निर्जीव वस्तु) तीन तरह के होते हैं		हुक्म
	नापाक	जैसे कुत्ता, सूवर, और इनकी शरीर से निकलने वाली चीजें। और वे सभी परिन्दे और पशु जिनके गोश्त न खाए जाते हों और वे बिल्ली से बड़े हों। और इस तरह के मवेशी के पेशाब, गोबर, थूक, पसीना, मनी, दूध, रीट और कै सभी नापाक हैं।
जान्वर :	पाक	1) आदमी, इसका मनी, पसीना, थूक, दूध, रीट, बल्नम, और स्त्री के शरमगाह की तरी, और इसी तरह इसके सभी अंग और सभी निकलने वाली चीजें सिवाय पेशाब पाखाना, मज़ी, वदी और खून के पाक हैं। 2) हर वह जानवर जिसका गोश्त खाया जाता है, उसका पेशाब, गोबर, मनी, दूध, पसीना, थूक, रीट, कै, मज़ी और वदी पाक है। 3) जिससे बच पाना कठिन हो, जैसे गधा, बिल्ली और चूहा, तो इनके मात्र थूक और पसीना पाक हैं।
	मुर्दे	सभी मुर्दे नापाक हैं सिवाए आदमी की मैयत के, और मछली, टिण्डी, और उन जानवरों के जिन की शरीर से खून न बहता हो, जैसे : बिछू, चीज़ूंटी, और मच्छर।
	बे-जान चीज़ें	तो यह पाक हैं, जैसे धरती, पथर, पहाड़ इत्यादि। पर पिछली बेजान चीज़ें इस में शामिल नहीं हैं।
<b>फाएदे :</b> * खून और पीप नापाक हैं, लेकिन नमाज़ इत्यादि के अवस्था में पाक जानवर का थोड़ा सा खून और पीप माफ़ है। * दो चीज़ों के खून पाक हैं : मछली का खून, और जबह किए हुए जानवर के गोश्त और नलियों में बाकी रह जाने वाला खून। * ज़िन्दा जानवर से काटा हुवा गोश्त, और खून और गोश्त का लोथड़ा नापाक है। * गन्दगी दूर करने के लिए नियत शर्त नहीं है, तो यदि वह वर्षा से धुल जाए तो पाक हो जाएगा। * गन्दगी के छू लेने से या उस पर चलने से वुजू नहीं टूटता, हाँ शरीर और कपड़े में जिस जगह गन्दगी लगी है उस जगह को धुलना ज़रूरी है। * गन्दगी की पाकी के लिए कुछ शर्तें हैं : ① उसे पाक पानी से धुला जाए। ② यदि वह निचोड़ा जा सकता हो तो पानी के बाहर उसे निचोड़ा जाए। ③ यदि गन्दगी मात्र धुलने से ख़त्म न होती हो तो उसे खुर्चा जाए। ④ यदि कुत्ते की नापाकी हो तो सात बार धुला जाए और एक बार मिट्टी लगाकर।		
<b>नोट :</b> *धरती पर की नापाकी यदि बहने वाली हो तो उस पर मात्र पानी बहा देना काफ़ी होगा यहाँ तक कि गन्दगी दूर हो जाए, और उसकी बदबू और रंग मिट जाए। और यदि पाखाना इत्यादि हो तो उसे और उसकी निशानी को दूर करना ज़रूरी है। * यदि पानी के बिना गन्दगी दूर न हो सकती हो तो पानी द्वारा उसे दूर करना ज़रूरी है। * यदि नापाकी की जगह की जानकारी न हो तो उसे धुला जाएगा यहाँ तक कि उसके धुल जाने का विश्वास होजाए। * जिस व्यक्ति ने नफ़ल नमाज़ पढ़ने के लिए वुजू किया हो तो वह उससे फ़र्ज़ नमाज़ पढ़ सकता है। * सोने वाले व्यक्ति पर या जिसकी हवा निकल गई हो उस पर इस्तिन्जा करना वाजिब नहीं है; क्योंकि हवा पाक है, हाँ, यदि वह नमाज़ पढ़ना चाहता है तो उस पर वुजू करना फ़र्ज़ है।		

## हैज़ और इस्तिहाज़ा के मस्ताएल

मसाइल	हुक्म
हैज़ आने की उम्र (आयु)	हैज़ आने कि कम से कम उम्र 9 वर्ष है, और अधिक की कोई सीमा नहीं है। औरे यदि 9 वर्ष से पहले खून आए तो वह इस्तिहाज़ा है। <sup>1</sup>
कम से कम हैज़ आने की मुदत (अवधि)	एक दिन और एक रात (24 घंटे) है, यदि इससे कम हो तो वह इस्तिहाज़ा है।
हैज़ आने की सर्वाधिक अवधि	15 दिन हैं, यदि 15 दिन से अधिक खून आए तो वह इस्तिहाज़ा है।
दो हैज़ के बीच पाकी की मुदत	13 दिन हैं, यदि 13 दिन पूरे होने से पहले खून आजाए तो वह इस्तिहाज़ा है।
अधिकतर औरतों के खून आने की मुदत	6 दिन या 7 दिन हैं।
अधिकतर औरतों के पाक रहने की मुदत	23 दिन या 24 दिन हैं।
क्या हमल (गर्भ) के बीच आने वाला खून हैज़ का खून है?	हामिला औरत को आने वाला खून, या <sup>2</sup> मट्यालापन या <sup>3</sup> पीलापन इस्तिहाज़ा का खून है।
औरत को पाकी की जानकारी कब होती है?	औरतें दो तरह की होती हैं : ① यदि वह सफेद लैसदार <sup>4</sup> चीज़ देखती हो तो उसके देखने के बाद। ② और यदि वह उसे नहीं देखती है तो शरमगाह का खून, मट्यालापन और पीलापन से सूख जाने के बाद वह पाक होजाती है।
पाकी की अवस्था में औरत की शरमगाह से निकलने वाली तरी का क्या हुक्म है?	यदि यह पतला या सफेद लैसदार हो तो पाक है, और यदि यह खून हो या उसमें मट्यालापन या पीलापन हो तो यह नापाक है और इन सब से वृजू टूट जाता है, और यदि यह निकलता रहे तो इस्तिहाज़ा है।
मट्यालापन या पीलापन का क्या हुक्म है?	यदि हैज़ के खून के साथ मिला हूवा हो चाहे पहले हो या बाद में तो यह हैज़ है, और यदि मिला न हो तो इस्तिहाज़ा है।
हैज़ के दिन पूरे होने से पहले पाक होजाने का क्या हुक्म है?	यदि खून आना बन्द होजाए और औरत पवित्रता देखले तो वह पाक मानी जाएगी, चाहे उसके दिन पूरे न हुए हों।
हैज़ का समय से पहले आजाने या देर से आने का क्या हुक्म है?	यदि उसमें हैज़ की निशानियां पाई जाती हों तो यह हैज़ का खून है, इस शर्त के साथ कि दो हैज़ों के बीच 13 दिन का असा हो। नहीं तो इसे इस्तिहाज़ा माना जाएगा।
हैज़ की मुदत में कमी या बेशी होजाए तो इसका क्या हुक्म है?	15 दिन तक उसे हैज़ माना जाएगा।
औरत को महीने भर या उससे भी अधिक खून आए तो इसका क्या हुक्म है?	इसकी 3 स्थियां हैं : ① जिसे खून आने के दिन और तारीख की जानकारी हो, लेकिन उसका खून एक ही तरह का हो। तो वह समय और दिन का एतिबार करेगी। ② जिसे तारीख की जानकारी हो लेकिन दिनों की जानकारी न हो, तो वह तारीख के हिसाब से 6 या 7 दिन तक हैज़ शुमार करेगी। ③ जिसे दिनों के बारे में जानकारी हो लेकिन तारीख की जानकारी न हो, तो वह हर हिस्ती महीने के शुरू के दिनों में से जितने दिन उसे आते थे हैज़ का दिन शुमार करेगी।

**1 हैज़ :** बिना किसी बीमारी या बच्चे की पैदाइश के तन्त्रस्ती के साथ हर महीने औरत से आने वाले खून का नाम हैज़ है। **इस्तिहाज़ा :** यह बीमारी का खून है जो बच्चे-दानी के नीचे की रग से निकलता है, हैज़ और इस्तिहाज़ा में फर्क यह है कि :

① हैज़ का खून लाल सियाही माएल होता है, और इस्तिहाज़ा का खून गहरा लाल होता है, गोया कि वह नक्सीर का खून हो। ② हैज़ का खून गाढ़ा होता है, कभी-कभार उसके टुकड़े भी होते हैं, और इस्तिहाज़ा का खून पतला होता है गोया कि वह घाव से बह रहा हो। ③ अधिकतर हैज़ के खून में बदवू होती है, लेकिन इस्तिहाज़ा का खून आम खून की तरह होता है। और हुक्म के लिहाज़ से हैज़ के कारण यह सारी चीजें हराम होती हैं : सुहबत करना, इस अवस्था में तलाक़ देना, नमाज़ पढ़ना, रोज़ा रखना, त्वाफ़ करना, कुर्अन पढ़ना, या उसे छूना और मस्जिद में बैठना इत्यादि।

**2 कुद्र :** यह बहता हुवा गदले रंग का खून है जोकि औरत की शरमगाह से निकलता है।

**3 सुफ़ :** यह बहता हुवा पीला माएल खून है जोकि औरत की शरमगाह से निकलता है।

**4 कस्तुलू बैज़’अ :** यह बहती सफेद चीज़ है जो कि पवित्रता के समय औरत की शरमगाह से निकलती है। और यह कस्सा पवित्र है लेकिन इस से वृजू टूट जाता है।

## निफास के मस्ताएल

मसाइल	हूक्म
बच्चा जनने के बाद खून का न आना।	ऐसी औरत पर निफास वाली औरत का हूक्म लागू नहीं होगा। उस पर स्नान करना भी वाजिब न होगा, और न ही उसका रोज़ा टूटेगा।
स्त्री का बच्चा जन्म होने की निशानी देखना।	यदि उसे जन्म से काफी समय पहले दर्द के साथ खून और पानी आए तो ऐसे खून को निफास नहीं बल्कि इस्तिहाज़ा का खून माना जाएगा।
जन्म के समय निकलने वाले खून का हूक्म।	इसे निफास का खून माना जाएगा, चाहे बच्चा आधा जन्मा हो, या जन्मा ही न हो, और उस पर इस बीच आने वाली नमाज़ की क़ज़ा नहीं है।
निफास के दिन का शुमार कब से होगा?	मां के पेट से पूरे तौर पर बच्चे के निकल जाने के बाद से निफास के दिन का शुमार होगा।
निफास की कम से कम मुद्दत (अवधि) क्या है?	कम से कम की कोई मुद्दत नहीं है, इसी लिए यदि बच्चा जन्म होने के बाद से ही उसे खून न आए तो औरत पर स्नान करके नमाज़ पढ़ना वाजिब होगा, और वह 40 दिन पूरा होने का इन्तिज़ार नहीं करेगी।
निफास की अधिक से अधिक मुद्दत क्या है?	अधिक से अधिक मुद्दत 40 दिन है, यदि 40 दिन से अधिक तक खून आए तो उसे निफास नहीं माना जाएगा, बल्कि उस औरत पर स्नान करके नमाज़ पढ़ना फर्ज़ होगा, हाँ यदि वह समय उसके हैंज़ आने का हो तो उसे हैंज़ का खून माना जाएगा।
जिसने 2 या 2 से अधिक बच्चे जन्म दिए हैं?	पहले बच्चे के जन्म के बाद से दिन शुमार किया जाएगा।
इस्काते हृमल बाद आने वाला खून?	यदि 80 दिन या उससे कम का गर्भ हो तो उसके बाद आने वाला खून, इस्तिहाज़ा का खून माना जाएगा, और 90 दिन के बाद गर्भ-पात हुवा हो तो उसके बाद आने वाला खून, निफास का खून माना जाएगा। और यदि 80 और 90 दिन के बीच का गर्भ हो तो उसका ढांचा देखा जाएगा, यदि इन्सानी ढांचा तैयार होगया हो तो आने वाले खून को निफास का खून माना जाएगा, नहीं तो इस्तिहाज़ा का खून माना जाएगा।
40 दिन से पहले पाक होजाए खून आना शुरू होजाए?	40 दिन के भीतर की पाकी को पाकी मानेगी और इस बीच स्नान लेकिन दोबारा 40 दिन के अन्दर करके नमाज़ पढ़ेगी, और यदि फिर दोबारा खून आजाए तो नमाज़ छोड़ देगी, यहाँ तक कि 40 दिन बीत जाए।

**नोट :** ★ हैंज़ और निफास वाली स्त्री पर वह सारी चीज़ें हराम होंगी जो बड़ी नापाकी वालों पर हराम होती हैं। ★ इस्तिहाज़ा वाली औरत पर नमाज़ पढ़ना वाजिब है। और वह हर नमाज़ के लिए वुजू किया करेगी। ★ यदि कोई औरत सूरज डूबने से पहले हैंज़ या निफास के खून से पाक होजाए तो उसे उस दिन की जुह और अस्त्र की नमाज़ पढ़नी होगी। और यदि फज्ज होने से पहले पाक होजाए तो उसे उस रात की मग्निब और इशा की नमाज़ पढ़नी होगी। ★ नमाज़ का समय होजाने के बाद यदि किसी औरत को हैंज़ आए तो उस पर उस नमाज़ की क़ज़ा नहीं है।

★ हैंज़ या निफास से पाकी के लिए स्नान करते समय वालों के जूँड़ों को खोलना लाज़िम है, लेकिन जनाबत के गुस्से के लिए खोलना वाजिब नहीं है।

★ इस्तिहाज़ा वाली औरत से सुहबत करना **मकरुह** है, लेकिन ज़रूरत के समय जायज़ है।

★ हैंज़ का स्नान कर लेने के बाद इस्तिहाज़ा वाली औरत का हर नमाज़ के लिए वुजू करना वाजिब है, यहाँ तक कि खून आना रुक जाए।

★ हज्ज और उम्रः के अर्कान पूरे करने के लिए, या रमज़ान के रोज़े पूरे करने के लिए औरत कोई ऐसी दवा प्रयोग कर सकती है जिस से कुछ समय के लिए हैंज़ का खून न आए, लेकिन शर्त यह है कि उसे प्रयोग करने में कोई हानि न हो।

## इस्लाम में औरतों का मुकाबला

ईमान और कर्म के आधार पर औरत और मर्द दोनों के दोनों अल्लाह तआला के पास सवाब और फ़ज़ीलत में बराबर हैं। नबी ﷺ का फ़र्मान है : «إِنَّمَا النِّسَاءُ شَقَائِقُ الرِّجَالِ» “अवश्य औरतें मर्दों जैसी हैं”। अबूदाउद। औरतें अपने हक़ के लिए मांग कर सकती हैं, इसी प्रकार अन्याय के विरोध में आवाज़ भी उठा सकती हैं, क्योंकि शरीअत में औरतों और मर्दों को एक साथ ही खिताब किया गया है, हाँ कुछ चीज़ों में दोनों में फ़र्क है जो कि बहुत थोड़े हैं, और यह फ़र्क भी इन के जिसमानी ढाँचे और शक्ति का एतिबार करते हुए किया गया है, अल्लाह ﷺ का फ़र्मान है : ﴿أَلَا يَعْلَمُ مَنْ خَلَقَ وَهُوَ الظِّلِّيْفُ الْخَيْرُ﴾ “क्या वही न जाने जिस ने पैदा किया? फिर वह बारीक देखने और जानने वाला भी है” चुनान्वि औरतों का अलग मजाल है और मर्दों का मजाल अलग है।

बल्कि घर में रहते हुए भी औरतों को मर्दों के बराबर सवाब दिया गया है, अस्मा बिन्ति यज़ीद से रिवायत है कि वह नबी ﷺ के पास आई, उस समय नबी ﷺ सहाबा ﷺ के साथ थे, उन्होंने कहा मेरे मां-बाप आप पर कुर्बान हों, मैं औरतों की ओर से सफ़ीर हूं, और मेरी जान भी आप पर कुर्बान हो, पुरब और पश्चिम में रहने वाली कोई भी ऐसी औरत नहीं है जो मेरे इस निकलने के बारे में सुनी हो या सुने मगर उस का विचार मेरी ही तरह का होगा, अल्लाह ने आप को मर्दों और औरतों की ओर हक़ के साथ भेजा है, सो हम ने आप पर और आप के माँ-बूद पर जिस ने आप को भेजा है ईमान लाया, पर हम औरतें धिरी हुई हैं, आप मर्दों के घरों में बैठी हुई हैं, आप की खाहीशे पूरी करती हैं, आप के बच्चों का गर्भ उठाती हैं, और आप सारे मर्द जुम्झ़ा, जमाअत, बीमारों की झायादत, हज्ज पर हज्ज करके, बल्कि इस से भी बढ़कर यह कि अल्लाह के रास्ते में जिहाद द्वारा हम पर फ़ज़ीलत दिए गए हैं, जब्कि आप मर्द हज़्ज़ात जब हज्ज, उम्रा या जिहाद के लिए जाते हैं, तो हम ही आप के माल की हिफाज़त करते हैं, आप के कपड़े सिलते हैं, आप के बच्चों को पालते हैं, तो ऐ अल्लाह के रसूल! क्या हम अज्ञो-सवाब में आप के साझी नहीं हो सकते? रावी कहते हैं कि नबी ﷺ ने सहाबए कराम की ओ अपना चिह्ना किया और उन से पूछा : “क्या तुम ने धर्म सम्बन्ध में इस से उत्तम प्रश्न किसी औरत से कभी सुना है?” तो उन्होंने जवाब दिया ऐ अल्लाह के रसूल हमें ऐसा नहीं लगता था कि कोई औरत भी इस तरह का प्रश्न कर सकती है। फिर नबी ﷺ ने उस ख़ातून की ओर अपना चेहरा किया और फ़र्माया : “ऐ ख़ातून! लौट जा, और अपने पीछे वालियों को बता दे कि तुम्हारा अपने पति के साथ उत्तम बर्ताव करना, उनकी खाहिशें पूरी कर देना, और उन की बातें मान लेना इन सभों के बराबर है”। रावी कहते हैं कि वह ख़ातून खूशी के मारे तकबीर और तहलील करते हुए वापस लौटी। बैहकी। और इसी तरह कुछ औरतों ने आकर नबी ﷺ से पूछा कि ऐ अल्लाह के रसूल मर्द हज़्ज़ात तो अल्लाह के रास्ते में जिहाद द्वारा फ़ज़ीलत में हम से कभी आगे बढ़ गए तो क्या हमारे लिए कोई ऐसा कर्म नहीं है जिस के द्वारा हम मुजाहिदों जैसा सवाब प्राप्त कर सकें? तो अल्लाह के रसूल ﷺ ने फ़र्माया : “अपने घर के काम काज द्वारा तुम्हें मुजाहिदों जैसा सवाब प्राप्त होता है”। बैहकी। बल्कि किसी करीबी औरत पर इहसान का शरीअत में बहुत महत्व है, नबी ﷺ का फ़र्मान है : “जिस ने अपनी दो बेटियों, या दो बहनों, या दो करीबी औरतों पर खर्च किया यहाँ तक कि अल्लाह ने उन के लिए बन्दोबस्त कर दिया या उन्हें मालदार कर दिया, और इस खर्च द्वारा उस ने सवाब की उम्मीद रखी हो तो यह दोनों उस के लिए जहन्नम से पर्दा होंगी”। अहमद और तब्रानी।

## औरतों से संबंधित कुछ आदेश

\* किसी गैर महरम<sup>1</sup> मर्द का किसी अजनबी औरत के साथ तन्हाई में मिलना ह्राम है। नबी ﷺ ने फ़र्माया : “महरम के बिना कोई मर्द किसी अजनबी और के साथ अकेला न हो”। बुखारी और मुस्लिम।

\* औरत के लिए मस्जिद में नमाज़ पढ़ना मुबाह है, पर यदि फितने का डर है तो मकूह है, आइशा रजियल्लाहु अन्हा फ़र्माती हैं : “औरतों ने जो कुछ कर रख्खा है, यदि नबी ﷺ ने इसे देखा होता तो मस्जिद आने से रोक देता, जिस प्रकार बनू इस्माईल की औरतें रोक दी गई थीं”। बुखारी और मुस्लिम। और जिस प्रकार मर्दों को मस्जिद में नमाज़ पढ़ने पर अधिक सवाब मिलता है उसी प्रकार औरतों को घर में नमाज़ पढ़ने पर अधिक सवाब मिलता है। एक खातून नबी ﷺ के पास आई और कहने लगी ऐ अल्लाह के रसूल! मैं आप के साथ नमाज़ पढ़ना पसन्द करती हूं। तो आप ﷺ ने फ़र्माया : “मैंने जान लिया कि तुम मेरे साथ नमाज़ पढ़ना पसन्द करती हो, पर तेरा अपने घर के भित्री रूम में नमाज़ पढ़ना बाहर के रूम में नमाज़ पढ़ने से बेहतर है, और बाहर के रूम में नमाज़ पढ़ना घर की चहार दीवारी में नमाज़ पढ़ने से बेहतर है, और घर की चहार दीवारी में नमाज़ पढ़ना अपने मुहल्ले की मस्जिद में नमाज़ पढ़ने से बेहतर है, और अपने मुहल्ले की मस्जिद में नमाज़ पढ़ना मेरी मस्जिद में नमाज़ पढ़ने से बेहतर है”। अहमद। और आप ﷺ ने फ़र्माया : “औरतों की बेहतर मस्जिद उनका घर है”।

\* यदि साथ में सफर करने वाला महरम न हो तो औरतों पर हृज्ज या उप्रा वाजिब नहीं है। और महरम के बिना उन के लिए यात्रा करना भी जायज़ नहीं है; नबी ﷺ का फ़र्मान है : “महरम के बिना कोई औरत तीन रात से अधिक का सफर न करे”। बुखारी और मुस्लिम।

\* औरतों के लिए कब्र की ज़ियारत करना और जनाज़ा के साथ चलना ह्राम है, नबी ﷺ का फ़र्मान है : “कब्र की ज़ियारत करने वालियों पर अल्लाह ने लानत भेजी है”। और उम्मे अ़्तीया रिवायत करती हैं कि : “हमें जनाज़ा के पीछे चलने से रोक दिया गया। पर सखती नहीं की गई”। बुखारी और मुस्लिम।

\* औरत के लिए काले के सिवाय किसी भी कलर का बाल डाई करना जायज़ है, इस शर्त के साथ कि उस में निकाह का पैग़ाम देने वाले के लिए धोका न हो।

\* औरतों को मीरास में से हिस्सा देना वाजिब है, और उन्से मीरास रोक लेना ह्राम है, नबी ﷺ से मर्वा है कि आप ने फ़र्माया : “जिस ने अपने वारिस का मीरास रोक लिया, अल्लाह क़ियामत के दिन जन्नत में उस का मीरास रोक लेगा”। इन्हे माजा।

\* पति पर भलाई के साथ पत्नि के खाने पीने, पहन्ने और घर का खर्च उठाना वाजिब है। अल्लाह ﷺ का फ़र्मान है : “हैसियत वाले को अपनी हैसियत से खर्च करना चाहिए और जिस पर उस की रोज़ी की तंगी की गई हो उसे चाहिए कि जो कुछ अल्लाह ने उसे दे रख्खा है उसी में से अपनी हैसियत अनुसार दे” पर यदि वह पति वाली न हो तो उस के बाप या भाई या बेटे पर उस का खर्च उठाना वाजिब है। पर यदि उस का कोई क़रीबी मर्द नातेदार न हो सारे लोगों पर उस का खर्च उठाना मुस्तहब है; नबी ﷺ का फ़र्मान है : “बेवा

<sup>1</sup> औरत के लिए महरम वह व्यक्ति है जिस से जीवन में कभी भी शादी करना जायज़ नहीं है, जैसे : बाप, दादा पर्दादा वगैरह, बेटे, पोते, परपेते वगैरह, भाई, भतीजे, भान्जे, चच्चा, मामू, ससुर, सौतेले बेटे, रिजाई बाप, बेटा और भाई, दामाद और मां का शौहर।

औरतों और गरीब लोगों पर खर्च करने वाले का सवाब अल्लाह के रास्ते में जिहाद करने वाले की तरह है, या उस व्यक्ति के सवाब की तरह जो रात में कियाम करता है और दिन में रोज़ा रखता है”। बुखारी और मुस्लिम।

\* औरत अपने छोटे बच्चे के पालण-पोषण करने का हक्कदार जब तक कि वह किसी दूसरे मर्द से शादी नहीं कर लेती। और जब तक बच्चा मां के पास है उस के पिता पर खर्च उठाना लाज़िम होगा।

\* औरत से सलाम करने में पहल करना मुस्तहब नहीं है खासकर यदि वह जवान हो, या बुराई का डर हो।

\* प्रत्येक सप्ताह बग़ल का बाल उखाड़ना, नाभी के नीचे का बाल मुंडना, और नाखुन काटना मुस्तहब है, और चालीस दिन से अधिक तक छोड़े रखना मकूह है।

\* चेहरे और भौं के बाल को उखाड़ना हराम है। नबी ﷺ का फर्मान है : “अल्लाह ने लानत भेजी भौं बनाने वाली और बनूवाने वालियों पर”। अबू-दाऊद।

\* सोग मन्दाना : औरत पर शौहर के अलावा किसी दूसरे के लिए 3 दिन से अधिक सोग मनाना हराम है, नबी ﷺ का फर्मान है : “किसी औरत के लिए जो अल्लाह और आखिरत के दिन पर ईमान रखती हो यह जायज़ नहीं कि पति कि सिवाय किसी दूसरे मैयत पर 3 दिन से अधिक सोग मनाए”। चुनान्चि शौहर पर 4 महीने 10 दिन सोग मनाना वाजिब है। सोग के दिनों में श्रंगार करना, खुशबू जैसे ज़ाफ़रान लगाना, ज़ेवर पहनना, चाहे अंगूठी ही क्यों न हो, डिज़ाइन वाले रंगीन लाल, पीले कपड़े पहनना, मँहदी लगाना, मेक-अप करना, काला सुर्मा लगाना, या खुशबूदार तेल लगाना हराम है। सोग के दिनों में नाखुन काटना, बाल उखाड़ना, और नहाना जायज़ है। ऐसी औरत पर किसी ख़ास रंग का जैसे काला कपड़ा पहनना वाजिब नहीं है। इद्दत के दिनों में इसका उसी घर में रहना वाजिब है, जिस में शौहर की मृत्यु के समय थी। बिना ज़रूरत के उस के लिए जगह बदलना हराम है। और इसी प्रकार बिना ज़रूरत के दिन में घर से बाहर भी न निकले।

\* बिना ज़रूरत औरत के लिए अपने सर का बाल मुंडवाना हराम है, काटना जायज़ है पर उस में मर्दों की नक़ली न हो, क्योन्कि हड्डीस में नबी ﷺ ने उन औरतों पर लानत भेजी है जो मर्दों का रूप धारती हैं। तिर्मिज़ी। और इसी प्रकार इस कटिंग में काफ़िर औरतों की भी नक़ली न हो; क्योंकि हड्डीस में है : जिसने दूसरी कौम का रूप धारा तो उस की गिन्ती उसी में होगी। अबू-दाऊद।

\* औरत का घर से निकलते समय अपनी शरीर को ऐसी चादर से ढकना अनिवार्य है जिसमें निम्न शर्तें पाई जाती हों। ① पूरे शरीर को ढांपे हो। ② उसमें नक़शो-निगार न हो। ③ इतनी मोटी हो कि शरीर न दिखे। ④ तंग न हो। ⑤ उसमें खुशबू न लगी हो। ⑥ मर्दों के कपड़ों जैसा न हो। ⑦ काफ़िर औरतों के कपड़े की तरह न हो। ⑧ जिस के पहन्ने में शोहरत न हो। और ऐसा कपड़ा जिसमें इन्सान या जानवर का पिक्वर हो उसे पहन्ना, या उसे लटकाना या उसे दीवार इत्यादि का पर्दा बनाना या उसे बेचना जायज़ नहीं है।

\* दूसरों के सामने औरतों की शरीर का प्रदा तीन प्रकार का है : ① उस का शौहर उस के पूरे जिस्म को देख सकता है। ② औरतें और उस के महरम के लिए उस के जिरूम का मात्र उतना ही हिस्सा देखना जायज़ है जो साधारण तौर पर खुला रहता है। जैसे : चेहरा,

बाल, गर्दन, हाथ, बाजू और पैर इत्यादि। ③ अजनबी मर्दों के लिए उस के जिसम के किसी भी हिस्से का देखना सिवाय ज़रूरत के जायज़ नहीं है, जैसे निकाह के ख़ितबे या इलाज इत्यादि के लिए। इस लिए कि औरत का असल फ़ितना उस के चेहरे में है, और फ़तिमा बिन्ति मुन्ज़िर फ़र्माती हैं : “हम मर्दों से अपने चेहरे को छुपाया करती थीं”। हाकिम। और आइशा फ़र्माती हैं : “हम अल्लाह के रसूल के साथ इहराम की ह़ालत में थीं जब हमारे सामने से काफ़ले वाले गुज़रा करते थे, वह जब हमारे बराबरी में होते तो हम औरतें अपने हुपड़े अपने सर से अपने चेहरे पर डाल लिया करती थीं, और जब वे आगे निकल जाते तो अपने चेहरे खोल लिया करती थीं”। अबू-दाऊद।

\* **इदृत** : कई प्रकार की होती है। ① हामिला के लिए तलाक और शौहर की वफ़ात की इदृत है बच्चा जन्म देना। ② जिस के शौहर की वफ़ात हो गई हो उस की इदृत 4 महीने 10 दिन है। ③ जिस औरत को हैज़ आता हो उसकी तलाक की इदृत तीन हैज़ है जो कि तीसरे हैज़ से पाक होने के साथ पूरी होजाती है। ④ जिसे हैज़ न आता हो उसकी इदृत 3 महीने है। रजई तलाक की इदृत गुज़ारने वाली औरत पर शौहर के घर ही में रह कर इदृत पूरी करना वाजिब है, इस बीच शौहर के लिए उसके किसी भी अंग को देखना और अकेले में उसके साथ रहना जायज़ है, हो सकता है अल्लाह तआला उन दोनों के बीच सुलह करादे।

शौहर के यह कहने से कि मैं ने तुझे वापस लौटाया, या सुहबत करने से बीवी निकाह में लौट आती है, रजई तलाक हो तो लौटाने के लिए बीवी की रिज़ामन्दी ज़रूरी नहीं है।

\* औरत स्वयं अपनी शादी नहीं कर सकती है। नबी ﷺ का फ़र्मान है : “जिस औरत ने भी वली की मर्जी के बिना शादी की तो उस का निकाह बातिल है”। अबू-दाऊद।

\* औरतों पर अपने बालों के साथ दूसरे बालों को जोड़ना, या जिस्म पर गोदाई गोदना ह़राम है, बल्कि यह बड़े गुनाहों में से है, नबी ﷺ का फ़र्मान है : “अल्लाह की लानत है बालों को जोड़ने और जोड़वाने वाली पर, और गोदना गोदने और गोदवाने वाली पर”। बुख़ारी और मुस्लिम।

\* औरतों पर अपने शौहर से बिना किसी सबब के तलाक मांगना ह़राम है, नबी ﷺ का फ़र्मान है : “जिस किसी औरत ने भी बिना किसी कारण के अपने पति से तलाक मांगा तो उस पर जन्नत की खुशबू ह़राम है”। अबू-दाऊद।

\* औरतों पर भलाई के साथ अपने पति की बात मानना वाजिब है, और खास कर बिछौना पर जाने के लिए। नबी ﷺ का फ़र्मान है : “पति ने अपनी पत्नी को यदि बिस्तर पर बुलाया और वह आने से इन्कार कर दी, फिर पति ने गुस्से में रात गुज़ारी तो सवेरे तक फ़रिश्ते पत्नी पर लानत भेजते रहते हैं”। बुख़ारी और मुस्लिम।

\* औरतों पर यदि रास्ते में अजनबी मर्दों से मिलने की जानकारी हो तो उन पर खुशबू लगाना भी ह़राम है। नबी ﷺ का फ़र्मान है : “यदि औरत खुशबू लगाकर लोगों के बीच उसे सुंधाने के लिए गई तो वह इस प्रकार की है, अर्थात् वेश्या है”। अबू-दाऊद।

## नमाज़

**अज्ञान और इकामत :** हज़र (मुकीम होने की हालत) में अज्ञान देना और इकामत कहना मर्दों पर फर्ज़ किया गया है, पर यात्री और अकेले नमाज़ी के लिए सुन्नत है, और औरतों के लिए **मकरूह** है, और समय से पहले अज्ञान देना जायज़ नहीं है, मात्र फ़ज़्र की पहली अज्ञान आधी रात के बाद दे सकते हैं।

**नमाज़ की शर्तें :** 9 हैं : 1. इस्लाम, 2. अकल, 3. तर्झज़ (पहचान), 4. शक्ति हो तो पाकी हासिल करना, 5. नमाज़ का समय होना, **जुह का समय** सूरज ढलने के बाद से हर चीज़ का साया उसके बराबर होने तक रहता है, **फिर अस्त का समय** शुरू होजाता है, और इसका इख्तियारी समय हर चीज़ का साया उसके दुगना होने तक रहता है, फिर सूरज डूबने तक ज़रूरत का समय बाकी रहता है, **फिर मग़िब का समय** शुरू होजाता है आसमान की लाली गायब होने तक, **फिर इशा का समय** शुरू होजाता है, और इस का इख्तियारी समय आधी रात तक होता है, फिर फ़ज़्र उदय होने तक ज़रूरत का समय बाकी रहता है। और इसके बाद से **फ़ज़्र का समय** सूरज निकलने तक रहता है। 6. शरमगाह को छुपाना<sup>1</sup> 7. शक्ति भर शरीर, कपड़े और जा-ए-नमाज़ से नापाकी दूर करना। 8. शक्ति भर का'बा की ओर चेहरा करना। 9. दिल से नियत करना।

**नमाज़ के अर्कान :** 14 हैं : 1. ताक़त हो तो फर्ज़ नमाज़ों में खड़ा होना। 2. तक्बीरतुल् इहाम कहना। 3. सुरतुल् फ़ातिहा पढ़ना। 4. हर रक़अत में रुकुअूँ करना। 5. रुकुअूँ से उठना। 6. रुकुअूँ के बाद खड़े होकर एतिदाल करना। 7. सात अंगों पर सज्दा करना। 8. दोनों सज्दों के बीच बैठना। 9. अन्तिम तशह्वुद पढ़ना। 10. अन्तिम तशह्वुद के लिए बैठना। 11. अन्तिम तशह्वुद में नबी ﷺ पर दस्त भेजना। 12. पहला सलाम। 13. इन सभी अर्कान को इत्मीनान से करना। 14. और इन्हें सिलसिलावार करना।

इन अर्कान को किए बिना नमाज़ सही ही नहीं होगी। और इन में से किसी भी एक रुक्न को छोड़ देने या भूल से उस के छूट जाने के कारण नमाज़ बातिल होजाती है।

**नमाज़ के वाजिबात :** 8 हैं : 1. तक्बीरतुल् इहाम के सिवाय बाकी सभी तक्बीरें। 2. इमाम और अकेले नमाज़ी का “समिअल्लाहु लिमन् हमिदह” कहना। 3. रुकुअूँ से उठने के बाद “रब्बना व लकलू हम्द” कहना। 4. रुकुअूँ में एक बार “सुब्हान रब्बियल् अज़ीम” कहना। 5. सज्दा में एक बार “सुब्हान रब्बियल् आ’ला” कहना। 6. दोनों सज्दों के बीच “रब्बिग़फ़र्ली” कहना। 7. पहला तशह्वुद। 8. पहले तशह्वुद के लिए बैठना। इन वाजिबात को यदि जान बूझ कर छोड़ दिया हो तो नमाज़ बातिल हो जाएगी। और यदि भूल से छुट गए हों तो सज्द-ए-सत्व करना होगा।

**नमाज़ की सुन्नतें :** नमाज़ में पढ़े और किए जाने वाले बाकी कर्म हैं, जिन्हें जान बूझ कर भी छोड़ देने से नमाज़ बातिल नहीं होती। पढ़ी जाने वाली सुन्नतों का चर्चा नीचे किया जारहा है : दुआ-ए-सना, अऊजु बिल्लाह और बिस्मिल्लाह पढ़ना। आमीन कहना, और इसे जही नमाज़ों में ऊँची आवाज़ से कहना। सुरतु-लू-फ़ातिहा के बाद दूसरी सुरतें मिलाना, जही नमाज़ों में इमाम का ऊँची आवाज़ से पढ़ना, मुक्तदी ऊँची आवाज़ से नहीं पढ़ सकता, पर

<sup>1</sup> इन्सान की शरमगाह और वह चीज़ जिस से उसे ह़या आए। सात साल के बच्चे पर दोनों शरमगाह का पर्दा है, और 10 के हो जाने पर नाफ़ से घुटने के बीच का पर्दा वाजिब है। और बालिगा आज़ाद औरत पर मुकम्मल पर्दा है सिवाय उसके चेहरे, दोनों हथेली और दोनों पैर के, इन्हें नमाज़ में ढाँपना मकरूह, परन्तु अजनबी मर्दों की मौजूदगी में इन्हें ढाँपना ज़रूरी है। अतः यदि नमाज़ या त्वाफ़ में उस के बाजू खुले हों तो उस की नमाज़ बातिल है, जो कि कबूल नहीं होगी। और नमाज़ के अलावा भी दोनों शरमगाहों का पर्दा सखती के साथ ज़रूरी है। तन्हाई और अन्धेरे में भी बिना ज़रूरत उहें खोलना मकरूह है।

अकेले पढ़ने वाले व्यक्ति को इस्तियार है। “रब्बना व लक-लू-हम्दू” के बाद “हम्दन् कसीरन् तैइबन् मुबारकन् फ़ीहि मिल्अ-सु-समावाति व मिल्अ-लू-अर्जि ...” अन्तिम तक पढ़ना। और रुकुअू और सज्जे में एक बार से अधिक तस्बीह पढ़ना, इसी तरह “रब्बिगिफर्लि” एक बार से अधिक पढ़ना, और सलाम से पहले दुआएं पढ़ना। और की जाने वाली सुन्नतें यह हैं : तकबीरतु-लू-इहाम के समय, रुकुअू करते समय, रुकुअू से उठते समय और पहले तशह्वुद से खड़ा होने के समय रफउ-लू-यदैन करना, और कियाम के समय दाएं हाथ को बाएं हाथ पर रख कर छाती पर बांधना, दोनों पैरों के बीच दूरी रखना, सज्जे की जगह पर देखना, सज्जा करते समय धरती पर पहले दोनों घुटनों को फिर दोनों हाथों को, फिर पेशानी और नाक को रखना, और दोनों बाजूओं को पहलू से, और पेट को अपने दोनों जांघों से, और जांघों को दोनों पिन्डिलियों से दूर रखना, और दोनों घुटनों के बीच दूरी रखना, दोनों पैरों को खड़ा रखना, उँगिलियों को काबे की ओर किए रखना, और दोनों हाथों को मोढे की बराबरी में रखना, उँगिलियां समेटे रखना, पैरों के बल, दोनों हाथों से दोनों घुटनों पर सहारा लेते हुए खड़ा होना। दोनों सज्जों के बीच और पहले तशह्वुद में बायां पैर बिछाकर उस पर बैठना और दायां पैर खड़ा रखना, और अन्तिम तशह्वुद में बाएं पैर को दाएं पैर के नीचे से निकालना और ज़मीन पर बैठना। और दोनों सज्जों के बीच और इसी प्रकार तशह्वुद में दोनों हाथों को फैलाकर दोनों जांघों पर रखना, उँगिलियां मिलाए रखना। पर दाएं हाथ के किनारे वाली दोनों उँगिलियों को समेटे रखें, और अंगूठे से बीच वाली उँगली के साथ गोल धेरा बनाए और शहादत की उँगली से अल्लाह की वह्दानियत का इशारा करता रहे, और सलाम फेरते समय दाएं और बाएं और धूमे, पहले दाईं ओर से शुरू करे।

**सज्ज-ए-सह्व :** यदि किसी मशरूअू ज़िक्र को भूल कर दूसरी जगह पढ़ दिया जैसे सज्जे में कुरआन पढ़ने लगा तो ऐसी स्थिथि में सज्ज-ए-सह्व करना मस्नून है, और यदि किसी सुन्नत को छोड़ दिया तो सज्ज-ए-सह्व करना मुबाह है, और यदि रुकुअू या सज्जा, या कियाम, या का’दा अधिक कर दिया या नमाज़ पूरी होने से पहले सलाम फेर दिया, या ऐसी गलती कर बैठा जिस से मतलब बदल जाए, या वाजिब छोड़ दिया, या नमाज़ के बीच ही उसे अधिक पढ़ लेने का शक हुवा तो उस पर सज्ज-ए-सह्व करना वाजिब है, और जान बूझ कर वाजिब सज्ज-ए-सह्व छोड़ देने से नमाज़ बातिल हो जाती है। और यदि चाहे तो सलाम से पहले या तो सलाम के बाद सज्ज-ए-सह्व करे, और यदि सज्ज-ए-सह्व करना भूल गया और समय भी अधिक हो गया तो फिर करने की ज़रूरत नहीं।

**नमाज़ का तरीका :** जब नमाज़ के लिए खड़ा हो तो किल्ले की ओर चेहरा करे, और “**अल्लाहु अक्बर**” कहे, यदि इमाम हो तो मुक्तदी को सुनाने के लिए ऊँची आवाज़ में तकबीर कहे, तकबीर कहते समय अपने दोनों हाथों को दोनों कधों तक उठाए, फिर दाईं हथेली से बाईं हथेली पकड़े और उसे अपने सीने पर बांध ले, और नज़र सज्जे की जगह पर गड़ाए रहे, पस्त आवाज़ में कोई एक दुआ-ए-सना पढ़े, जैसे : “**सुब्जानकल्लाहुम्म व बिहम्दिक व तबारकस्मुक व तआला जहुक व लाइलाह गैरुक**” फिर अऊजु बिल्लाह पढ़े, फिर बिस्मिल्लाह पढ़े, फिर सूरतु-लू-फ़तिहा पढ़े, जहीं नमाज़ों में इमाम के सक्तों में पढ़ना मुस्तहब है, फिर कोई और सूरत मिलाए, सवेरे की नमाज़ में तिवाले मुफ़स्सल पढ़ना, मग्निब में किसारे मुफ़स्सल और बाकी नमाज़ों में अवसाते मुफ़स्सल पढ़ना मुस्तहब है। तिवाले मुफ़स्सल सूरते “**काफ़**” से लेकर सूरते “**अम्म**” तक है, और अवसाते मुफ़स्सल “**सूरतुज्जुहा**” तक है, और “**अन्नास**” तक किसारे मुफ़स्सल है। फ़ज्र की नमाज़ में और मग्निब और इशा की पहली दोनों रकअतों में इमाम ऊँची

आवाज में किराअत करे, और बाकी नमाजों में आवाज पस्त रखे। फिर “अल्लाहु अक्बर” कहे, तकबीरतुल-इह्राम में रफउ-लू-यदैन करने की तरह रफउ-लू-यदैन करे, और रुकुअ् में जाए, दोनों हाथों को दोनों घुटनों पर रखें, उँगियों को फैलाए रहे, पीठ को फैलाए और उसी की बराबरी में सर रखें, फिर 3 बार “सुब्जान रब्बिय-लू-अज़ीम” कहे, फिर “समिअल्लाहु लिमन् हमिदह” कहते हुए सर उठाए, तकबीरतु-लू-इह्राम में रफउ-लू-यदैन करने की तरह रफउ-लू-यदैन करे, जब सीधा खड़ा होजाए तो “रब्बना व लक-लू-हम्दु हम्दन् कसीरन् तैयेबन् मुबारकन् फीहि मिल्अ-सु-समावाति व मिल्अ-लू-अर्जि व मिल्अ माबैनहुमा व मिल्अ मा शिअूत मिन शैइ-मू-बा’द” पढ़े। फिर “अल्लाहु अक्बर कहते हुए सज्दे में जाए, और अपने दोनों बाजूओं को पहलू से, और पेट को दोनों रानों से हटाए रखें, और दोनों हाथों को कंधों की बराबरी में रखें, दोनों पैरों के किनारों को धरती से लगाए रखें, उँगियों को काबे की ओर करे, और सज्दे में 3 बार “सुब्जान रब्बिय-लू-आअला” कहे, और चाहे तो दूसरी दुआएं भी मिलाए, फिर “अल्लाहु अक्बर” कहते हुए सर उठाए, और बायां पैर बिछा कर उस पर बैठे, और दायां पैर खड़ा रखें, और उँगियों को काबे की ओर मोड़ ले, या दोनों पैरों को गाड़ ले और उँगियां काबा की ओर मोड़ ले, और ऐड़ी पर बैठे, और 3 बार “रब्बिगिफर्ली” कहे, और चाहे तो यह दुआएं भी मिलाए, “वर्हम्नी, वज्ञुर्नी, वर्फअर्नी, वर्जुकनी, वन्सुर्नी, वह्दिनी, व आफिनी, वअफु अन्नी”, फिर पहले सज्दे की तरह दूसरा सज्दा करे, फिर “अल्लाहु अक्बर” कहते हुए सर उठाए, और दोनों पंजों पर सहारा लेते हुए खड़ा होजाए, और पहली रकअत की तरह दूसरी रकअत पढ़े, दूसरी रकअत पढ़ कर तशह्वुद के लिए बैठे जिस तरह दोनों सज्दों के बीच में बैठा था, और अपने बाएं हाथ को बाएं जांघ पर रखें, और दाएं को दाएं जांघ पर, किनारे की दोनों उँगियों को मोड़ले, और अंगूठे और बीच वाली उँगली का गोल धेरा बनाले, और शहादत की उँगली से इशारा करता रहे, और तहीयात पढ़े : “अन्तहियातु लिल्लाहि वस्सलवातु वत्तैइबातु अस्सलामु अलैक ऐयुहन्वियु व रह्मतुल्लाहि व बरकातुह, अस्सलामु अ़लैना व अ़ला इबादिल्लाहिस्सालिहीन्, अशहदु अल्ला इलाह इल्लल्लाहु व अशहदु अन्न मुहम्मदन् अ़बुहू व रसूलुह”। फिर “अल्लाहु अक्बर” कहते हुए तीसरी रकअत के लिए उठे, और रफउ-लू-यदैन करे, और चौथी रकअत के लिए उठते हुए रफउ-लू-यदैन न करे, पहली रकअत ही की तरह तीसरी और चौथी रकअत भी पढ़े, लेकिन इनमें दूसरी सूरतें न मिलाए, और न ही आवाज उँची करे, फिर अन्तिम तशह्वुद के लिए तवरुक करके बैठे, बायां पैर बिछाकर उसे दाएं पैर के नीचे से निकाल ले, दाएं पैर को गाड़े रखें, और धरती पर बैठे, मात्र अन्तिम तशह्वुद में तवरुक करना सुन्नत है, फिर तहीयात पढ़े, फिर सलात पढ़े : “अल्लाहुम्म सल्लि अ़ला मुहम्मदिं-व्व-अ़ला आलि मुहम्मद्, कमा सल्लैत अ़ला इब्राहीम व अ़ला आलि इब्राहीम इन्नक हमीदुम्मजीद्, अल्लाहुम्म बारिक अ़ला मुहम्मदिं-व्व-अ़ला आलि मुहम्मद्, कमा बारकत अ़ला इब्राहीम व अ़ला आलि इब्राहीम इन्नक हमीदुम्मजीद्,” और “अल्लाहुम्म इन्नी अ़ज़ुजु बिक मिन् अ़ज़ाबिल्कब्रि व अ़ज़ाबिन्नारि व फिल्ति-लू-मह्या वल्ममाति व शर्ि-लू-मसीहिद्दज्जालि” और दूसरी दुआएं भी पढ़ना सुन्नत है, फिर दोनों ओर सलाम फेरे, दाएं और चेहरे को करते हुए “अस्सलामु अ़लैकुम व रह्मतुल्लाह” कहे और इसी तरह बाएं और करते हुए भी। और सलाम के बाद यह दुआएं पढ़े।<sup>1</sup>

<sup>1</sup> तीन बार “अस्तिगिफरुल्लाह” कहे, फिर पढ़े : “अल्लाहुम्म अन्तस्सलामु व मिन्कस्सलामु तबाक्त या ज़ल्जलालि व-लू-इक्राम् लाइलाह इल्लल्लाहु वह्दहू ला शरीक लहू लहु-लू-मुल्कु व लहु-लू-हम्दु व हुव अला कुल्ल शैइन् कदीर्, ला हैल व ला कूवत

**रोगी की नमाज़ :** यदि रोगी को खड़े होकर नमाज़ पढ़ने से बीमारी बढ़ जाने का डर हो, या वह खड़े होकर नमाज़ पढ़ने की शक्ति न रखता हो, तो बैठ कर नमाज़ पढ़े, यदि इस की भी शक्ति न रखता हो पहलू के बल नमाज़ पढ़े, और यदि यह भी सम्भव न हो तो पीठ के बल लेट कर नमाज़ पढ़े।

और यदि रुकु'अू और सज्दा करने की शक्ति न हो तो इशारा से रुकु'अू और सज्दा करे, और ज़स्ती है कि छूटी हूई नमाजों की कज़ा करे। और यदि बीमारी के कारण नमाजों को अपने अपने समय पर पढ़ने की शक्ति न रखता हो तो जुह और अस्त्र की नमाज़ इकट्ठा कर के जुह या अस्त्र के वक्त में और इसी तरह मग्रिब और इशा की नमाज़ इकट्ठा कर के मग्रिब या इशा के समय में पढ़ सकता है।

**मुसाफिर की नमाज़ :** यदि मुसाफिर की यात्रा की दूरी लगभग 80 किमी से अधिक हो, और उस का सफर मुबाह हो तो उस के लिए अफ़ज़ल यह है कि 4 रक'अत वाली नमाजों को कस्त कर के 2 रक'अत पढ़े, वैसे 4 रक'अत भी पढ़ना जायज़ है। और यदि वह यात्रा के बीच किसी जगह 4 दिन (20 नमाज़) से अधिक ठहरना चाहता हो तो वहाँ पहुँच कर कस्त किए बिना नमाजें पूरी पढ़े। और यदि उस ने मुकीम की इमामत में नमाज़ पढ़ी, या जाएकियाम (निवासस्थान) की भूली हूई नमाज़ उसे यात्रा के बीच याद आई या इस के बराब्रिलाफ तो इन सभी अवस्थाएँ उस नमाज़ पूरी पढ़नी होंगी।

**जुम्मा की नमाज़ :** जुम्मा की नमाज़ जुह की नमाज़ से अफ़ज़ल है, जो कि जुह के अलावा मुस्तकिल एक नमाज़ है, न कि जुह की कस्त नमाज़ है, इसलिए इसे 4 रक'अत पढ़ना जायज़ नहीं, और न ही जुह की नियत से पढ़ने से यह नमाज़ होती है, इसी तरह इसे अस्त्र की नमाज़ के साथ इकट्ठा करके पढ़ना भी जायज़ नहीं है, चाहे इकट्ठा करने का सबब मौजूद ही क्यों न हो।

**वित्र की नमाज़ :** वित्र की नमाज़ सुन्नत है, जिसका समय इशा से लेकर फ़जर उदय होने तक रहता है, इस की कम से कम सर्व्या 1 रक'अत है, और अधिक 11 रक'अत है, प्रत्येक 2 रक'अत के बाद सलाम फेरना अफ़ज़ल है, 2 सलाम के साथ 3 रक'अत पढ़ना यह अदना (न्यूनतम) कमाल है, इन्में पहली रकअत में सुरतुल् आ'ला, दूसरी में सुरतुल् काफिरून, और तीसरी में सुरतुल् इख्लास पढ़ना मस्नुन है। रुकुअू के बाद हाथ उठाकर कुनूत पढ़ना मुस्तहब है, औश्र ऊँची आवाज़ में दुआ करे चाहे अकेले ही क्यों नमाज़ न पढ़ रहा हो।

**जनाज़: की नमाज़ :** मुरिलम मैयत को नहलाना, उसे कफ़न देना, उस पर जनाज़: की नमाज पढ़ना, उसे कंधा देना, और उसे दफ़न करना फर्ज़े किफ़ायः है, पर जंग में शहीद होने वाले मैयत को नहलाया नहीं जाएगा, और न ही उसे दूसरे कपड़ों में कफ़न दिया जाएगा, बल्कि उसे खून में ही लत-पत दफ़न कर दिया जाएगा, हाँ उसकी नमाज़े जनाज़: पढ़ना जायज़ है। मर्द को 3 सफेद चादरों का कफ़न दिया जाएगा, और औरतों को 5 सफेद चादरों का, एक तहबंद होगा, दूसरा दुपट्टा, तीसरी कमीज़ होगी और बाकी दो चादरों में उसे लपेटा जाएगा।

इल्ला विल्लाह, लाइलाह इल्लल्लाहु व ला ना'अबुदू इल्ला इय्याहु लहु-न-ने'मतु व लहु-ल-फ़ज्जु व लहु-स-सनाउ-ल-हसनु लाइलाह इल्लल्लाहु मुरिख्तसीन लहुद्दीन व लौ करिह-ल-काफिरून, अल्लाहुम्म ला मानिअ़ लिमा आ'अतैत व ला मु'अतिअ़ लिमा मन'अत व ला यन्फउ ज-ल-जद्दि मिनक-ल-जद्द” फ़ज्र और मग्रिब की नमाज़ के बाद इन दुआओं के साथ 10 बार “लाइलाह इल्लल्लाहु वह्वहू ला शरीक लहू लहु-ल-मुल्कु व लहु-ल-हम्दु युट्यी व युमीतु व हुव अला कुल्ल शैइन् कवीर्” कहे, फिर 33 बार सुझानल्लाह, 33 बार अल्लाहु अक्बर और एक बार, “लाइलाह इल्लल्लाहु वह्वहू ला शरीक लहू लहु-ल-मुल्कु व लहु-ल-हम्दु व हुव अला कुल्ल शैइन् कवीर्” कहे। फिर आयतु-ल-कुर्सी पढ़े, फिर قُلْ أَعُوذُ بِرَبِّ الْكَوَافِرِ، قُلْ هُوَ اللَّهُ أَكْبَرُ، और قُلْ أَعُوذُ بِرَبِّ النَّاسِ، को तीन तीन बार दोहराए।

**नमाज़े जनाज़:** के लिए इमाम का मर्द के सीने के सामने और औरत के शरीर के बीच हिस्से में खड़ा होना सुन्नत है, जनाज़ की नमाज़ में 4 तक्बीर कहे, प्रत्येक तक्बीर के साथ रफ़उ-लू-यदैन करे, पहली तक्बीर के बाद अऊजु बिल्लाह और बिस्मिल्लाह पढ़ कर पस्त आवाज़ में सूरतु-लू-फ़ातिहा पढ़े, फिर दूसी तक्बीर कहे और दस्त पढ़े, फिर तीसी तक्बीर कहे और मैयत के लिए दुआएं करे, फिर चौथी तक्बीर के बाद थोड़ी देर रुके और सलाम फेरे। कब्र को एक वित्त से ऊँची करना, उसे गच करना, उसे चूमना, धूई देना, उस पर लिखना बैठना या चलना सब कुछ हराम है। इसी तरह कब्रों पर चिरागों करना, उसका त्वाफ़ करना, उस पर मस्जिद बनाना, या मस्जिद में दफ़न करना हराम है। और कब्रों पर बने कुब्बों को ढा देना वाजिब है।

\* शब्दों द्वारा ता'ज़ियत करना मना नहीं है, बल्कि इस तरह के शब्दों द्वारा ता'ज़ियत करना जायज़ है : “आ’अूज़मल्लाहु अज्ञक व अह्सन अ़ज़ाअक व ग़फ़र लिमैयितिक”। और काफ़िर की ता'ज़ियत में कहे : “आ’अूज़मल्लाहु अज्ञक व अह्सन अ़ज़ाअक”।

\* जिसे यह जानकारी हो कि मरने के बाद उसके घर वाले उस पर नौहा करेंगे उस के लिए वाजिब है कि नौहा न करने की वसीयत करे, नहीं तो उनके रोने धोने के कारण उसे अज़ाब दिया जाएगा।

\* इमाम शाफ़ई رض फ़रमाते हैं : ता'ज़ियत के लिए बैठना मकरूह है, चुनान्चि मैयत के घर वालों का ता'ज़ियत के लिए आने वालों की खातिर किसी जगह बैठने के बजाए अपनी अपनी ज़खरतों के लिए चले जाना उत्तम है, चाहे वे मर्द हों या औरतें हों।

\* मैयत के घर वालों के लिए खाना बनाना सुन्नत है, और मैयत के घर वालों के यहाँ खाना खाना मक्रूह है, और यह भी मक्रूह है कि उनके पास इकट्ठा होने वालों के लिए खाना बनाया जाए।

\* यात्रा किए बिना मुस्लिम व्यक्ति की कब्र की ज़ियारत मस्नून है, काफ़िर की कब्र की ज़ियारत मुबाह है, और काफ़िर को भी मुस्लिम की कब्र की ज़ियारत से नहीं रोका जाएगा।

\* कविस्तान में आने वालों के लिए यह कहना सुन्नत है : “अस्सलामु अलैकुम दार कौमिम्मोमिनीन, - या कहे : अह्लाद्वियारि मिनल्मोमिनीन - व इन्ना इन शा-अल्लाहु बिकुम ल लाहिकून, यर्हमुल्लाहुल मुस्तक्खिमीन मिन्ना वल् मुस्ता’खिरीन, नस्अलुल्लाहु लना व लकुमुल्लाफ़ियः; अल्लाहुम्म ला तहिम्ना अज्ञहुम, व ला तप्फितन्ना बा’दहुम, वग्फ़िर लना व लहुम”। मुमिनों की जमाअत तुम पर शान्ति हो, और इन्शाअल्लाह अवश्य हम भी तुम से मिलने वाले हैं, अल्लाह हमारे पहले और पिछलों पर रहम करे, अल्लाह तआला से हम अपने लिए और तुम्हारे लिए माफ़ी चाहते हैं, ऐ अल्लाह उनके अज्ञ से हमें महूम न करना, और उनके बाद हमें परीक्षा में न डालना, और हमें और उन्हें क्षमा कर दे।

**ईदैन की नमाज़ :** ईदैन की नमाज़ फ़र्ज़े किफ़ायः है, और इसे अदा करने का समय चाश्त की नमाज़ का समय है, यदि इसकी जानकारी सूरज ढलने के बाद हुई हो तो दूसे दिन सवेरे इस की क़जा करेंगे, और इसकी भी अदा करने की शर्तें जुम्मा की तरह हैं सिवाए दोनों खुल्तों के, ईदगाह में ईद की नमाज़ से पहले या बाद में नफ़ल पढ़ना मकरूह है। ईद की नमाज़ पढ़ने का तरीका यह है कि दो रक्त अत नमाज़ पढ़ी जाए, इमाम पहली रक्त अत में तक्बीरतुल्झाम के बाद अऊजुबिल्लाह पढ़ने से पहले 6 अधिक तक्बीरें कहे, और दूसरी रक्त अत में सूरतुल्फ़ातिहा पढ़ने से पहले 5 अधिक तक्बीरें कहे, हर तक्बीर के साथ रफ़उल्लू यदैन करे फिर अऊजुबिल्लाह पढ़े, फिर ऊँची आवाज़ में सूरतुल्फ़ातिहा पढ़े, पहली रक्त अत में

सूरतुल्फातिहा के बाद सब्बिहिस्म रब्बिकलआ'ला और दूस्री रक्त अत में सूरतुल्लाशियः पढ़े। सलाम फेरने के बाद जुम्मा की तरह दो खुत्बा दे, लेकिन इन दोनों खुत्बों के बीच अधिकतर तक्बीर कहना मस्नून है, ईद की नमाज़ नफ़्ल नमाज़ की तरह पढ़ना भी सही है; इसलिए कि अधिक तक्बीरें कहना और उनके बीच ज़िक्र करना सुन्नत है।

**कुसूफ़ की नमाज़ :** सूरज या चाँद गहन की नमाज़ पढ़ना सुन्नत है, इसका समय गहन लगने से लेकर समाप्त होने तक रहता है, यदि गहन ख़त्म होजाए तो इसकी क़ज़ा नहीं की जाएगी। यह नमाज़ 2 रक्त अत पढ़ी जाएगी, इमाम पहली रक्त अत में ऊँची स्वर में सुरतुल्फातिहा और दूसरी लम्बी सूरत पढ़े, फिर लम्बा रुकु'अ् करे, फिर समिअल्लाह कहते हुए खड़ा होजाए, रब्बना व लकलू हम्द पढ़ने के बाद सज्दा न करे बल्कि फिर सुरतुल्फातिहा और दूसरी लम्बी सूरत पढ़े, फिर लम्बा रुकु'अ् करे, फिर रुकु'अ् से उठे, फिर दो लम्बे सज्दे करे, फिर दूसरी रक्त अत पहली रक्त अत की तरह पढ़े, फिर तशह्वहूद पढ़े और सलाम फेरे, और यदि मुक्तदी पहले रुकु'अ् के बाद आकर मिला हो तो उसकी वह रक्त अत नहीं होगी।

**इस्तिस्क़ा की नमाज़ :** जब अकाल पड़ जाए, और वर्षा न बरसे तो उस समय वर्षा के लिए इस्तिस्क़ा की नमाज़ पढ़ना सुन्नत है, इस नमाज़ को पढ़ने का समय, इसका तरीका और इसके अह्काम ईद की नमाज़ की तरह हैं, फ़र्क़ इतना है कि नमाज़ के बाद मात्र एक खुत्बा है, जिसमें स्तिथि बदल जाने के लिए नेक फ़ाल लेते हुए चादर पलटना सुन्नत है।

\* **नफ़्ल नमाज़ों :** यह सावित है कि नबी ﷺ हर दिन फ़र्ज़ नमाज़ के अतिरिक्त 92 रक़अत नफ़्ल नमाज़ों पढ़ा करते थे। जो इस प्रकार थीं : फ़ज्र से पहले 2 रक़अत, जुहर से पहले 4 रक़अत, और बाद में 2 रक़अत, मध्यिव के बाद 2 रक़अत, और इशा के बाद 2 रक़अत।

\* **निषिद्ध समय :** कुछ ऐसे समय हैं जिन में नमाज़ पढ़ना या सज्दा इत्यादि करना मना है : ① फ़ज्र से सूरज निकलने तक और उसे निकल कर एक नेज़ा बराबर ऊँचा होने तक। ② जब सूरज बीच आकाश में आजाए यहाँ तक कि वह ढल जाए। ③ अस्त्र की नमाज़ के बाद से सूरज ढूबने तक। पर ऐसे समय में सबब वाली नमाज़ों पढ़ना जायज़ है। जैसे तहीयतुल मस्जिद, तवाफ़ की 2 रक़अत, फ़ज्र की 2 सुन्नत, जनाज़ा की नमाज़, वुजू की 2 रक़अत, और सज्दए तिलावत एवं शुक्र।

\* **मस्तिज्दों के अह्काम :** ज़खरत के हिसाब से मस्तिज्दें बनाना वाजिब है, अल्लाह तआला के यहाँ मस्तिज्दें सब से महबूब जगहें हैं, इनमें गाना, ताली बजाना, ढोल बजाना, हराम कविता पढ़ना, मर्दों का औरतों के साथ गड़मड होना, सुहबत करना, ख़रीदना और बेचना हराम है और ऐसे व्यक्ति (खरीदने-बेचने वोल) के बारे में यह कहना जायज़ है : अल्लाह तुम्हारे सौदे में फायदा न दे, इसी तरह किसी खोई चीज़ को तलाश करना हराम है, और ऐसे व्यक्ति के बारे में यह कहना जायज़ है, अल्लाह तुम्हारी वह चीज़ न लौटाए। इसमें ऐसे बच्चों को शिक्षा देना जो हानिकारक न हो मुबाह है, इसी तरह निकाह पढ़ाना, फैसला करना, मुबाह कविता पढ़ना, इतिकाफ़ करने वाले व्यक्ति के लिए और दूसरों के लिए भी सोना, मेहमान और रोगी व्यक्ति के लिए रात बिताना मुबाह है। इन्हें शोर-शराबे, लडाई झगड़े, फुजूल बातें, बूरी बात करने और बिना ज़खरत रास्ता बनाने से बचाना मस्नून है। और इनमें सांसारिक फुजूल बातें करना मकरह है, इनके कारपेट, झूमर या लाइट इत्यादि को शादी विवाह या ताज़ियत की मजिलस में प्रयोग नहीं किया जा सकता।

## ज़कात

**ज़कात के माल :** चार तरह के मालों में ज़कात फ़र्ज़ है : ① चरने वाले चौपायों और पशुओं में। ② ज़मीन की उपज में। ③ नगदी में (सोना चाँदी और करेन्सी नोट में)। ④ व्यापारिक सामान में।

**ज़कात व्याजिक होने की शर्तें :** जब तक 5 शर्तें न पाई जाएं ज़कात फ़र्ज़ नहीं होगी : ① इस्लाम। ② आज़ादी। ③ (माल का) निसाब को पहुँचना। ④ पूरी तरह से माल का मालिक होना। ⑤ एक साल बीतना सिवाए ज़मीन की उपज के।

**चौपायों और पशुओं की ज़कात :** मवेशियों और पशुओं की तीन किस्में हैं 1- ऊँट। 2- गाय-बैल। 3- और बकरी।

**इनमें ज़कात फ़र्ज़ होने की दो शर्तें हैं :** 1- वह पूरे साल या साल के अधिकतर दिनों में चर कर अपना पेट भरते हों। 2- वह दूध और नस्ल की बढ़ोतरी के लिए हों, निजी काम (जैसे: खेती-बाड़ी अथवा बोझ ढोने) के लिए न हों। यदि वे व्यापार के लिए हैं तो व्यापारिक सामान की तरह उनकी ज़कात निकाली जाएगी।

**ऊँट की ज़कात इस प्रकार है :**

संख्या	1 - 4	5 - 9	10 - 14	15 - 19	20 - 24	25 - 35	36 - 45	46 - 60	61 - 75	76 - 90	91 - 120
उसकी ज़कात कोई ज़कात नहीं	1 बकरी	2 बकरियां	3 बकरियां	4 बकरियां	1 बिन्ते मखाज़	1 बिन्ते लबून	1 हिक्का	1 ज़ज़आ	2 हिक्का	1 ज़ज़आ	2 ज़ज़आ

जब ऊँट 120 से अधिक हो जाएं तो हर 50 पर 1 हिक्का, और हर 40 पर 1 बिन्ते लबून देने होंगे।

**बिन्ते मखाज़ :** एक साला ऊँटनी को कहते हैं। **बिन्ते लबून :** दो साला ऊँटनी को।

**हिक्का :** तीन साला ऊँटनी को। और **ज़ज़आ :** चार साला ऊँटनी को कहते हैं।

**गाय की ज़कात इस प्रकार है :**

संख्या	1-29	30 - 39	40 - 59
ज़कात	कोई ज़कात नहीं	1 तबी'अ्‍य या तबी'आ	1 मुसिन्न या मुसिन्ना

जब गायें 60 या उस से अधिक होजाएं तो हर 30 पर 1 तबी'अ्‍य, और हर 40 पर 1 मुसिन्ना देने होंगे।

**तबी'अ्‍य :** एक साला बछड़ा को कहते हैं। **तबी'आ :** एक साला बछिया को। **मुसिन्न :** दो साला बछड़ा को। **मुसिन्ना :** दो साला बछिया को कहते हैं।

**बकरी की ज़कात इस तरह से है :**

संख्या	1 - 39	40 - 120	121 - 200	201 - 399
ज़कात	कोई ज़कात नहीं	1 बकरी	2 बकरियां	3 बकरियां

जब भेड़ और बकरी 400 या उस से अधिक होजाएं तो हर 100 पर एक बकरी है। और ज़कात में न अन्दू लिया जाए, न बूझा जानवर लिया जाए, न ऐब वाला और न वह जो बच्चा पोस रही हो और न गाभिन और न कीमती ली जाएगी। ज़ज़आ उस भेड़ के बच्चे को कहते हैं जो 6 महीने पूरे कर चुका हो। और सनी उस बकरी को कहते हैं जो एक साल पूरा कर चुकी हो।

**ज़मीन की उपज में ज़कात :** ज़मीन से उपजने वाले सभी अनाजों और फलों में तीन शर्तों के साथ ज़कात वाजिब है : ① पहली शर्त यह है कि वह मापी और तौली जा सकती हो, और जमा करके रखी जा सकती हो, जैसे अनाज में से गेहूँ और जौ इत्यादि, और फल में से अंगूर और खजूर इत्यादि। रही ज़मीन से उपजने वाली वह चीज़ें जो मापी न जाती हों और न जमा करके रखी जा सकती हों, जैसे साग और सब्ज़ी और इस तरह की दूसरी चीज़ें तो इसमें ज़कात नहीं है। ② दूसरी शर्त यह है कि वह निसाब को पहुँच रही हों, अर्थात् 653 किलो ग्राम हों या इस से अधिक। ③ तीसरी शर्त यह है कि वह ज़कात के फर्ज़ होने के समय उस की मिलकियत हो। ज़कात फलों में वाजिब उस समय होती है जब वह पक कर लाल या पीले होगए हों, और अनाजों में उस समय जब दाने सख्त होगए हों।

और ज़मीन की उन उपज में जिनकी सिंचाई बिना मेहनत और परेशानी उठाए हुई हो, वर्षा और नहर के पानी इत्यादि द्वारा तो उस में (10%) दसवां हिस्सा ज़कात है, रही वह ज़मीनें जो मेहनत और परेशानी से सैराब की गई हों रहट, गधों या ऊँटों द्वारा तो उनमें (5%) बीसवां हिस्सा वाजिब है। रही वह जमीनें जिसकी सिंचाई में कुछ दिन मेहनत करनी पड़ी हो और कुछ दिन बिना मेहनत किए हुई हो तो उसी के हिसाब से अनाज की ज़कात निकालेंगे।

**कीमती धन्तुओं की ज़कात :** जो कि दो तरह की हैं : नगदी की ज़कात की दो किस्में हैं : ① सोना। यदि यह 85 ग्राम से कम हो तो इसमें ज़कात नहीं है। ② चाँदी। यदि यह 595 ग्राम से कम हो तो इसमें ज़कात नहीं है। और नगदी रूपये पैसों में भी उस समय तक ज़कात वाजिब नहीं है जब तक कि वह इन दोनों में से किसी एक की कीमत तक न पहुँच जाए। और इनकी ज़कात की मिक्दार (2.5%) चालीसवां हिस्सा है।

और जो ज़ेवर औरत के प्रयोग में हो उस में ज़कात नहीं है, पर जो किराए के लिए हो या उन्हें पूँजी के तौर पर सुरक्षित किया गया तो उन में ज़कात है।

औरतों के लिए सोने और चाँदी के वह सभी ज़ेवर जायज़ और मुबाह हैं जो आम तौर से पहने जाते हों। बर्तन में थोड़ी सी चाँदी का प्रयोग भी मुबाह है, और उसका थोड़ा सा प्रयोग अंगूठी या चश्मा इत्यादि के रूप मर्दों के लिए भी मुबाह है। पर बर्तन में सोना लगाना हराम है, पर कपड़े के बटन और दाँत की सिलाई के लिए इसका थोड़ा सा प्रयोग मर्दों के लिए जायज़ है इस शर्त के साथ कि इस में औरतों की मुशाबहत न हो।

और जिस व्यक्ति के पास माल घटता बढ़ता रहता हो, और प्रत्येक माल की ज़कात साल पूरे होने पर निकालना कठिन हो तो ऐसा व्यक्ति साल में एक दिन नियुक्त कर ले, और उस दिन जितने धन का मालिक हो 2.5 उसकी ज़कात निकाले, अगरचे कुछ माल पर साल न बीते हों, और जिसकी फिक्स तन्हाह हो या उसने घर वगैरः किराए पर दिए हों लेकिन इससे कुछ बचता न हो तो उसमें ज़कात नहीं है चाहे कितने ही अधिक क्यों न हों। और यदि कुछ बचता हो तो साल पूरे होजाने पर उस की ज़कात निकाले। नहीं तो साल में एक दिन ख़ास करले और उस दिन अपने माल की ज़कात निकाले।

**कर्ज का हुक्म :** जिस व्यक्ति का किसी मालदार के जिम्मे कर्ज हो, या ऐसा माल हो जिसे छुड़ा लेना सम्भव हो, तो जब इन्हें अपने कब्जे में करले तो इन पर पिछले सभी सालों की ज़कात फर्ज़ होगी, चाहे कितने ही साल क्यों न बीत गए हों, और यदि अपने कब्जे में लेना उसके लिए सम्भव न हो, जैसे कर्ज़ किसी ऐसे व्यक्ति के जिम्मे हो जिसका दीवालिया हो गया

हो, तो जब तक वह उसे पा न ले, उस पर ज़कात नहीं, और जब पा ले तो मात्र उसी साल की ज़कात होगी, पिछले सालों की नहीं, चाहे जितने साल ही क्यों न बीत चुके हों।

**तिजारती सामान की ज़कात :** तिजारती सामान में ज़कात नहीं जब तक कि उसमें 4 शर्तें न पूरी हो जाएँ : ① पहली यह कि सामान उसके क़ब्जे में हो। ② दूसरी यह कि मिलकीयत व्यापार की नियत से हो। ③ तीसरी यह कि उस सामान का दाम निसाब के बराबर हो, अर्थात् 20 मिसकाल सोने या 200 दिर्हम चाँदी के बराबर हो। ④ चौथी यह कि उस पर पूरा एक साल बीत चुका हो। तिजारती सामान में जब यह चारों शर्तें पाई जाएँ तो उनकी कीमत में ज़कात निकाली जाएगी, और यदि उसके पास तिजारती सामान में सोना और चाँदी दोनों हों तो सामान की कीमत के साथ सोना और चाँदी दोनों की कीमतें जोड़ी जाएंगी, और निसाब पूरा करने में दोनों का लिहाज़ किया जाएगा। जब तिजारती सामान को स्वयं प्रयोग करने की नियत करले जैसे कपड़े हों या घर इत्यादि जिन्हें स्वयं प्रयोग करने की नियत करले तो उनमें ज़कात नहीं है, और यदि उसके बाद उनमें फिर व्यापार की नियत करले तो नियत के फिरने के दिन से साल पूरा करे फिर ज़कात दे।<sup>1</sup>

**सद्क़ए फित्र :** सद्क़ए फित्र हर मुसलमान व्यक्ति पर वाजिब है, बशर्तेकि वह ईद के दिन अपने और अपने बाल बच्चों के खाने पीने से अधिक माल का मालिक हो, सद्क़ए फित्र की मात्रा एक व्यक्ति की तरफ से चाहे वह मर्द हो या औरत 2.25 किलो है, जिसे उस खाने की चीज़ों में से दिया जाएगा जिसे आम तौर पर शहर में खाया जाता हो, और जिस व्यक्ति पर अपना सद्क़ए फित्र लाज़िम है उस पर हर उस व्यक्ति की ओर से भी सद्क़ए फित्र लाज़िम है जिसकी ईद के दिन उस पर ज़िम्मादारी है बशर्तेकि वह उतने माल का मालिक हो जिसे वह उसकी ओर से दे सके। और सद्क़ए फित्र का ईद के दिन नमाज़ से पहले निकालना मुस्तहब है, और ईद की नमाज़ से देर करना जायज़ नहीं है, और ईद से एक या दो दिन पहले निकालना भी जायज़ है, और कई लोगों का सद्क़ए फित्र एक व्यक्ति को देना जायज़ है, इसी तरह एक व्यक्ति का सद्क़ए फित्र भी कई एक लोगों को देना जायज़ है।

**ज़कात निकालने का समय :** ज़कात निकालने की यदि शक्ति हो तो उसके वाजिब होने के समय से निकालने में देरी करना जायज़ नहीं है, और छोटे बच्चे और पागल व्यक्ति की ओर से उस का बली ज़कात निकालेगा। लोगों को दिखा कर ज़कात निकालना और स्वयं उसे बांटना मस्नून है, ज़कात निकालने के लिए नियत शर्त है, आम सद्क़ा की नियत से बांटा गया माल ज़कात की ओर से काफ़ी नहीं है, चाहे पूरा ही माल सद्क़ा में क्यों न बांट दिया हो, और उत्तम यह है कि देश के ही फ़क़ीरों में उस की तक़सीम हो। और किसी कारण बस देश से बाहर भेजना भी जायज़ है, धन यदि निसाब के बराबर हो तो अगले साल की ओर से भी ज़कात निकालना जायज़ है।

**ज़कात के हक़्कदार :** ज़कात के हक़्कदार 8 हैं : ① फुक़रा ② मसाकीन। ③ आमिलीन : इससे मुराद हुकुमत के वह कर्मचारी हैं जिनकी हुकुमत को ज़कात की वसूली और तक़सीम में ज़खरत पड़ती हो। ④ मुवल्लफ़तुल् कुलूब : यह वह लोग हैं जो अपने कबीलों के सरदार

<sup>1</sup> तिजारती सामान का निसाब 85 ग्राम सोने की कीमत है, या 595 ग्राम चाँदी की कीमत है। और ज़कात निकालते समय इनमें से कम का एतिबार करेगा।

और अमीर हों, जिन्हें देने से उनकी बुराई से बचना, या उनकी ईमान की मज़बूती, या मुसलमानों से उन्हें दूर करना मक्कुला हो, या ज़कात न देने वालों से ज़कात की वसूली में उनसे सहायता की उम्मीद की जाती हो। **५** रिकाब : इससे मुराद मुकातिबीन (ऐसे दास जो अपने मालिकों से तय किया हुवा माल देकर आज़ादी के लिए समझौता कर चुके हों) और खरीद कर आज़ाद किए जाने वाले गुलाम हैं। **६** ग़ारिमीन : अर्थात् : कर्जदार (ऋणी)। **७** फ़ी सबीलिल्लाह, अल्लाह के रास्ते में **८** इब्नु-स्सबील, हाजतमंद यात्री। ज़खरत के अनुसार इन सारे लोगों में ज़कात तक्सीम की जाएगी, पर कर्मचारी को उसके काम की उज्ज्रत के बराबर दिया जाएगा चाहे वह धनी ही क्यों न हो। हाकिम ने यदि रिज़ामन्दी से या जबरदस्ती ज़कात ली तो वह काफ़ी है, ज़कात लेने में उस ने चाहे न्याय किया हो या अन्याय। यदि ज़कात का माल काफ़िर, दास, धनी, और जिसका ख़र्च उस पर लाज़िम है, और बनू हाशिम को देता है तो काफ़ी नहीं होगा। इसी तरह अज्ञानता में यदि किसी ऐसे व्यक्ति को ज़कात दे जो कि उस का हक़्कदार नहीं फिर उसे जानकारी हो जाए तो यह भी काफ़ी नहीं है, पर यदि किसी को फ़कीर समझ कर दिया और वह धनी निकला तो यह काफ़ी होजाएगी।

**नफ़ल सद्क़ा :** अल्लाह के रसूल ﷺ ने फ़रमाया : “मृत्यु के बाद इन्सान को जो कर्म और नेकी पहुँचती है, यह वह शिक्षा है जिस की उसने तालीम दी और फैलाया, या नेक संतान है जिन्हें उसने छोड़ा, या मुस्हफ़ है जिसका उसने वारिस बनाया, या मस्जिद है जो उसने बनाई, या घर है जिसे उसने यात्रीयों के लिए बनाया, या नहर है जिसकी उसने खोदाई कराई, या सद्क़ा है जिसे उसने अपने जीवन में स्वस्थ अवस्था में निकाला, तो मौत के बाद यह चीज़ें उसे पहुँचेंगी”। (इब्ने माजा)

## रोज़ा

रमज़ान के रोज़े हर अकलूमंद और बालिग मुसलमान पर जो रोज़ा रखने की शक्ति रखता हो फ़र्ज़ है, सिवाय ऐसी औरत के जिसे माहवारी या निफ़ास का खून आरहा हो। बच्चा यदि रोज़ा रख सकता है तो उसे भी रोज़ा रखने का हुक्म दिया जाएगा ताकि उसे उसकी आदत पढ़ सके। रमज़ान के आने की जानकारी के 2 तरीके हैं : ① रमज़ान का चाँद दिखाई देना। जिसके लिए एक भरोसेमंद मुस्लिम व्यक्ति की गवाही काफ़ी है जो कि शरीअत का मुकल्लफ़ हो। ② शाबान के महीने का पूरे 30 दिन का होजाना। यह बात स्पष्ट रहे कि हर दिन सुब्हे सादिक निकलने से लेकर सूरज ढूबने तक रोज़ा वाजिब रहता है, और फ़र्ज़ रोज़ों के लिए फ़ज्र से पहले ही नियत करना ज़रूरी है।

**रोज़े को फ़ासिद कर देने वाली चीज़ें :** ① पत्नि से सम्भोग करना : इससे रोज़े की क़ज़ा और कफ़्फारः दोनों लाज़िम आता है। कफ़्फारः : एक गुलाम (दास) आज़ाद करना है, जिसके पास गुलाम न हो तो लगातार दो महीने रोज़े रख्बे, और जो रोज़े रखने की शक्ति न रखता हो वह 60 ग़रीबों को खाना खिलाए, और जो उसकी भी शक्ति न रखता हो तो उस पर कुछ नहीं। ② औरत को चुम्मा लेने, छूने, या बार बार देखने से मनी का निकलना, या ग़लत तरीके से वीर्य-पात करना। ③ जानबूझ कर खा पी लेना, यदि भूल कर खाया पिया हो तो रोज़ा सहीह है। ④ शरीर से खून निकालना : चाहे सिंगी के कारण हो, या किसी बीमार की सहायता करने के लिए खून दान करने के कारण। परन्तु थोड़ा खून जो जांच के लिए निकाला गया हो, या ऐसा खून जो बिना इरादे के निकल आया हो जैसे नक्सीर इत्यादि तो इससे रोज़ा फ़ासिद नहीं होता। ⑤ जानबूझ कर उल्टी करना।

यदि गले में गर्द चला जाए, या कुल्ली करते और नाक में पानी खींचते हुए गले में पानी पहुंच जाए, या सोंचने के कारण या सोते समय मनी निकल आए, या बिना इरादे के खून निकल आए या उल्टी होजाए तो इससे रोज़ा नहीं टूटता।

और जो व्यक्ति रात समझ कर खा-पी ले फिर दिन निकल आए तो उस पर रोज़े की क़ज़ा है, और जिसे सुब्हे सादिक के होने में शक हो और खा-पी ले तो उसका रोज़ा फ़ासिद नहीं होगा। और यदि सूरज ढूबने में शक हो और खा-पी ले तो उस पर उस रोज़े की क़ज़ा लाज़िम होगी।

**मुफ्तिईन (रोज़ा न रखने वालों) के अह्काम :** बिना किसी उज़्ज के रमज़ान के रोज़े न रखना हराम है, पर हैज़, और निफ़ास वाली औरतों पर रोज़ा तोड़ना वाजिब है, और उस व्यक्ति पर जिसे किसी को बचाने के लिए रोज़ा तोड़ने की ज़खरत हो। और मुबाह यात्रा की अवस्था में यदि रोज़ा रखना कष्ट-दायक हो तो ऐसे मुसाफ़िर के लिए रोज़ा तोड़ देना मस्नून है। और ऐसे मुकीम के लिए भी रोज़ा तोड़ना मुबाह है जिसने दिन में सफ़र किया हो। इसी तरह गर्भवती और दूध पिलाने वाली औरत को अपने या अपने शिशू के बारे में डर हो तो उस के लिए भी रोज़ा न रखना मुबाह है। और इन सभीं पर मात्र छूटे हुए रोज़ों की क़ज़ा है, पर गर्भवती और दूध पिलाने वाली स्त्री ने यदि मात्र शिशू पर डर के कारण रोज़ा तोड़ा हो तो वे हर दिन के बदले रोज़े की क़ज़ा के साथ साथ एक मिस्कीन को खाना भी खिलाएंगी।

और जो बूढ़ापे या ऐसी बीमारी के कारण जिस से निरोग होने की आशा न हो रोज़ा न रखता हो वह हर दिन के बदले एक ग़रीब को खाना खिलाए, और इन पर रोज़ों की क़ज़ा नहीं है।

और जो किसी उज़्ज के कारण क़ज़ा में देरी करे यहाँ तक कि दुसरा रमज़ान आजाए तो उस पर मात्र क़ज़ा है, और यदि बिना किसी उज़्ज के उसने क़ज़ा करने में कोताही की यहाँ तक कि

दूसरा रमजान आगया तो क़ज़ा के साथ साथ हर दिन के बदले एक ग़रीब को खाना भी खिलाए। और यदि किसी उज्ज़ के कारण उसने क़ज़ा करने में देरी की यहाँ तक उसकी मृत्यु हो गई तो उस पर कुछ भी नहीं है, और यदि बिना उज्ज़ के न रखा तो उस की ओर से हर दिन के बदले एक ग़रीब को खाना खिलाया जाएगा, परन्तु यदि वह रोज़े नज़र के हों, या रमजान के छूटे हुए रोज़े हो जिनकी क़ज़ा में कोताही हुई हो तो उसकी ओर से उसके करीबी लोगों के लिए यह रोज़े रखना सुन्नत है। और हर नज़र पूरी करना उस की ओर से नेकी है।

और यदि किसी ने किसी उज्ज़ के कारण रोज़ा नहीं रखवा और अभी दिन में कुछ समय बाकी ही था कि उसका उज्ज़ ख़त्म होगया तो ऐसे व्यक्ति पर लाज़िम होगा कि दिन के बाकी समय में खाने, पीने, और सम्भोग करने से रुके रहे, और यदि दिन में काफिर इस्लाम ले आए, या हैज़ वाली औरत हैज़ से पवित्र हो जाए, या रोगी निरोग होजाए, या यात्री वापस आजाए, या बच्चा बालिग होजाए, या पागल ठीक होजाए और यह रोज़े की हालत में न हों तो इन पर रोजों की क़ज़ा लाज़िम है चाहे बचे हुए समय को रोज़ा रख कर ही क्यों न बिताए हों। और रमजान में जिस के लिए रोज़ा तोड़ देना मुबाह हो वह नफ़ली रोज़ा रमजान में नहीं रख सकता।

**नफ़ली रोज़े :** सब से अफ़ज़ल एक दिन रोज़ा रखना और एक दिन इफ़तार करना है, फिर सोमवार और जुम्रात के दिन का रोज़ा है, फिर हर महीने 3 दिन का रोज़ा है, और इसमें अफ़ज़ल ऐयामे बीज़ अर्थात् चाँद के हिसाब से 13,14 और 15 तारीख़ का रोज़ा है। और मुहर्रम और शाबान महीने के अधिकतर दिनों का रोज़ा रखना, आशूरा (अर्थात् 10 मुहर्रम) का रोज़ा, अरफ़ा का रोज़ा और शवाल के 6 रोज़े रखना मस्नून् है। पर मात्र रजब का रोज़ा रखना, या मात्र जुम्मा या सनीचर का रोज़ा रखना, या शक के दिन रोज़ा रखना जैसे 30 शाबान का रोज़ा जिस दिन चाँद निकलने के बारे में शक हो, तो यह सारे रोज़े मक्रूह हैं। और ईद और बकरीद के दिन और इसी तरह अय्यामे तशीक अर्थात् 11,12, और 13 जिल्हिज्जा को रोज़ा रखना ह़राम है, पर जो हज़े तमत्तु'अ् या किरान के कुर्बानी के बदले रोज़ा रख रहा है तो उस के लिए अय्यामे तशीक में रोज़ा रखना मुबाह है।

### ज़रूरी बातें :

\* जिसे बड़ी नापाकी लगी हो, जैसे जुन्बी, और हैज़ और निफास वाली औरत जब वे फ़ज़ से पहले पाक हो जाएं तो उनके लिए फ़ज़ की अज़ान के बाद नहाना और नहाने से पहले सहरी खा लेना जायज़ है, और इनका रोज़ा सहीह है।

\* रमजान में औरत के लिए नेकी के कामों में मुसलमानों के साथ साझी रहने के इरादे से ऐसी दवा लेना जिस से उसकी माहवारी कुछ दिनों के लिए रुक जाए जायज़ है, परन्तु शर्त यह है कि वह उसके लिए हानिकारक न हो।

\* रोज़ेदार के लिए थूक या ख़कार यदि मुंह के अन्दर हो तो उसे निगल जाना जायज़ है।

\* नबी ﷺ का फ़रमान है : “मेरी उम्मत के लोग बराबर भलाई में रहेंगे जब तक वह इफ़तार में जलदी करेंगे, और सहरी में देर करेंगे”। अहमद। और आप ﷺ ने यह भी फ़रमाया: “धर्म उस समय तक ग़ालिब रहेगा जब तक लोग इफ़तार करने में जलदी करेंगे; क्योंकि यहूदी और नसरानी देरी करते हैं” (अबू दाऊद)

\* इफ़तार के समय दुआ करना मुस्तहब है, नबी ﷺ का फ़रमान है : “रोज़ा खोलने के समय रोज़ेदार की दुआ लौटाई नहीं जाती”। और इफ़तार के समय जो दुआएं साबित हैं उनमें

से एक दुआ यह है : “ज़हबज़मउ वब्तल्लतिल् उरुकु व सबतल् अज्रु इन्शाअल्लाह” “पियास बुझ गई, रगें तर हो गई, और यदि अल्लाह ने चाहा तो सवाब साबित हो गया”।

\* सुन्नत यह है कि इफ्तार रोतब खुजूर से हो, यदि रोतब खजूर न मिल सके तो सुखी खजूर ही काफी है, और यदि वह भी न मिले तो पानी से इफ्तार करें।

\* रोज़ेदार के लिए मुनासिब यह है कि रोज़े की हालत में सुरमा लगाने और आँख या कान में डरॉप्स डालने से बचे, विरोध से निकलने के लिए इससे बचना बेहतर है। और यदि दवा डालना ज़रूरी हो तो ऐसा कर लेने में कोई आपत्ति नहीं, चाहे दवा का मज़ा उसकी हळक तक पहुंच जाए फिर भी उसका रोज़ा सही होगा।

\* सही ह कौल की रु से रोज़े की अवस्था में किसी भी समय मिस्वाक करना सुन्नत है।

\* रोज़ेदार के लिए मुनासिब यह है कि वह गीबत, चुगलखोरी, और झूट जैसी बूरी आदतों से बचे और यदि कोई उसे गाली दे या बुरा भला कहे तो उससे कह दे कि मैं रोज़े से हूँ। और वह अपनी जुबान और दूसरे अंगों को बुराई से बचाकर ही अपने रोज़े की सुरक्षा कर सकता है। इस बारे में नबी ﷺ की हडीस है : “जिस ने झूटी बात कहना, और उसके बमोजिब कर्म करना न छोड़ा तो अल्लाह तआला को उसके भूके और व्यासे रहने की कोई ज़रूरत नहीं है”।

\* जिसे खाने पर दावत दी गई हो और वह रोज़े से हो तो दावत देने वाले के लिए दुआ करें, और यदि रोज़े से न हो तो उस के साथ खाए।

\* शबे क़द्र साल भर की रातों में सब से महत्वपूर्ण रात है। जिसे रमज़ान की अन्तिम दस रातों में प्राप्त किया जा सकता है, 27 की रात में इसे प्राप्त करने की सम्भावना अधिक होती है। इस एक रात्री में कर्म करना एक हजार महीने में कर्म करने से बेहतर है, इस की कुछ निशानियां हैं : इसके सवेरे सूरज सफेद निकलता है जिस में अधिक चमक नहीं होती। कभी ऐसा भी होता कि मुस्लिम व्यक्ति को इसकी जानकारी नहीं हो पाती है, ताकि वह रमज़ान में अधिक इबादत करने की प्रयास करे, खासकर अन्तिम दस रातों में, और किसी भी रात को कियाम किए बिना बीतने न दे, और यदि जमाअत के साथ तरावीह पढ़ी हो तो मुकम्मल तरावीह समाप्त होने से पहले न निकले ताकि उसके लिए पूरी रात का कियाम लिख दिया जाए।

\* नफ़्ल रोज़े की नियत करने के बाद उसे पूरा करना वाजिब नहीं मस्नून है। और यदि जानबूझ कर भी उसे तोड़ दे तब भी कोई आपत्ति नहीं है, और इस की क़ज़ा भी नहीं है।

\* इबादत की खातिर अकल्मंद, मुसलमान व्यक्ति का मस्जिद को लाजिम पकड़ लेना एतिकाफ कहलाता है। इस के लिए शर्त यह है कि मु'अतकिफ (एतिकाफ करने वाला) बड़ी नापाकी से पाक हो, और मस्जिद से मात्र ज़रूरी हाजरों के लिए ही बाहर निकले, जैसे खाने के लिए, शौचालय जाने के लिए, या वाजिबी स्नान के लिए आदि। बिना ज़रूरत के निकलने से, या बिवी से सम्भोग करने से एतिकाफ बातिल होजाता है। साल में किसी भी समय एतिकाफ करना मस्नून है, रमज़ान में एतिकाफ करने पर अधिक ज़ोर दिया गया है, खासकर अन्तिम दस दिनों में। एतिकाफ कम से कम एक घंटे का होना चाहिए। मुस्तहब यह कि 24 घंटे से कम का न हो। औरत अपने पति की अनुमति के बिना एतिकाफ न करे, मुतकिफ इबादत और ताअत में अपने आप को व्यस्त रखे। अधिक मुबाह चीज़ें करने से बचे, इसी तरह बिना ज़रूरत की चीज़ों से दूर रहे।

## हज्ज तथा उम्रा

हज्ज और उम्रा जीवन में एक बार फर्ज है, इनके फर्ज होने की शर्तें नीचे लिखी गई हैं :

**१** इस्लाम। **२** अक्ल (बुद्धि)। **३** बुलूगत। **४** आज़ादी। **५** का'बा तक पहुँचने की इस्तिता'अत : इस्तिता'अत का अर्थ यह है कि रास्ते का खर्च और सवारी उसके पास हो। **और** जिसने इस फरीज़ा को अदा करने में कोताही की यहाँ तक की उसकी मौत होगई तो उसके माल से इतनी रक्म निकाल ली जाएगी जिस से हज्ज और उम्रा अदा हो सके। काफिर और पागल का हज्ज और उम्रा सहीह नहीं होगा, और बच्चे और गुलाम का हज्ज और उम्रा करना सहीह है पर यह उनके लिए काफी नहीं होगा अर्थात् बच्चे को बालिग होने और गुलाम को आज़ाद होने के बाद दोबारा हज्ज और उम्रा करना पड़ेगा, तभी उनसे इस फरीज़े की अदाएगी होगी, और जो व्यक्ति हज्ज करने की शक्ति न रखता हो उसका भी हज्ज करना सहीह है, और जो किसी दूसरे की ओर से हज्ज करे और स्वयं अपनी ओर से उसने हज्ज न किया हो तो उसका हज्ज दूसरे की ओर से न होगा बल्कि उस के फरीज़े की अदाएगी होगी।

**इहराम :** इहराम बांधने का इरादा करने वाले व्यक्ति के लिए मुस्तहब है कि वह नहाए, और खुशबू लगाए, और सिले हुए कपडे उतार कर लुंगी और चादर पहन ले, जो सफेद और साफ-सुधरे हों, यदि मात्र उम्रा की नियत हो तो “लब्बैक अल्लाहुम्म उम्रतन्” कहे, या मात्र हज्ज की नियत हो तो “लब्बैक अल्लाहुम्म हज्जन्” कहे, और यदि हज्ज और उम्रा दोनों की नियत हो तो “लब्बैक अल्लाहुम्म हज्जन् व उम्रतन्” कहे, और यदि उसे डर हो कि रास्ते में उसे रोक लिया जाएगा, तो यह कहकर शर्त लगाए “फ़इन हबसनी हाविसुन फ़महिल्ली हैसु हबसतनी”। कि यदि मुझे कोई रोकावट पेश आई तो जहाँ मुझे यह रोकावट आएगी वहाँ हलाल होजाऊंगा। और उसे इसका अधिकार है कि हज्ज की तीनों किस्मों तमतु'अू, इफ्राद और किरान में से जो चाहे करे, **पर सब से अफ़ज़ल हज्जे तमतु'अू** है, और उसका विवरण इस प्रकार है कि हज्ज के महीने में उम्रा का इहराम बांधे, और उम्रा करके इहराम खोल दे, और हलाल होजाए, फिर उसी साल के हज्ज का इहराम बांधे, और हज्जे इफ्राद यह है कि मात्र हज्ज का इहराम बांधे, और **किरान** यह है कि हज्ज और उम्रा दोनों का इहराम एक साथ बांधे, या उम्रा का इहराम बांधे फिर तवाफ़ करने से पहले उसमें हज्ज को भी शामिल करले, और जब वह अपनी सवारी पर सीधा बैठ जाए तो तल्बिया पूकारे और कहे : “लब्बैक अल्लाहुम्म लब्बैक, लब्बैक ला शरीक लक लब्बैक, इन्नलू हम्द वर्ने अमत लक वलमुल्क ला शरीका लक “हाजिर हूँ ऐ अल्लाह! मैं हाजिर हूँ, हाजिर हूँ तेरा कोई साझी नहीं, हाजिर हूँ, तारीफ़, प्रशंसा और ने'मत और बादशाहत तेरी ही है, तेरा कोई साझी नहीं।” और इसे बहुत ज्यादा और ऊँची आवाज़ से पढ़ना मुस्तहब है, पर औरतें आहिस्ता पढ़ें।

**हज्ज की अवस्था में मम्बू'अू (निषिद्ध) चीज़े :** यह पूरे नौ हैं : **१** बाल काटना। **२** नाखुन काटना। **३** मर्द के लिए सिला हुवा कपड़ा पहनना, परन्तु उसके पास लुंगी न हो तो पाजामा पहन सकता है, और यदि जूते न हों तो मोज़े पहन सकता है पर उसे काट दे ताकि टखने से नीचे होजाए। और उसके कारण उसे कोई फ़िद्या नहीं देना होगा। **४** मर्द के लिए सर ढांपना, और चुंकि दोनों कान भी सर ही का हिस्सा हैं इसलिए उन्हें भी खुला रखना ज़रूरी है। **५** अपने जिस्म और कपड़े में खुशबू लगाना। **६** जंगल के ऐसे पशुओं का शिकार करना जिनका गोश्त खाना जायज़ है। **७** निकाह करना (निकाह करना हराम है पर इसमें कोई फ़िद्या नहीं)। **८** सेक्स (खाहिंश) के साथ बीवी के बदन को छूना और इसका फ़िद्या यह है कि उस पर एक बक्री की कुर्बानी लाजिम होगी, या 3 दिन का रोज़ा रखना या 6 मिस्कीन को खाना खिलाना। और उसका हज्ज सहीह होगा। **९** सम्बोग करना, यदि यह तहल्लुले अव्वल से पहले

हो (अर्थात् दस तारीख के चार कामों में से किसी भी दो काम को करने से पहले हो) तो उसका हज्ज फ़ासिद हो जाएगा, पर इस फ़ासिद हज्ज को पूरा करना उसके लिए वाजिब होगा, और आने वाले साल उसकी कज़ा उस पर लाज़िम होगी, और एक ऊँट ज़बह करके उसे मक्का के गरीबों में बांटना होगा, और यदि तहल्लुले अवल के बाद हो तो उसे एक ऊँट ज़बह करना होगा, और तन्हीम से इह्राम बांध कर फिर से मोहरिम होकर मक्का आकर तवाफ़ करना पड़ेगा, और यदि उसने उम्रा में सम्भोग किया है तो उसका उम्रा फ़ासिद हो जाएगा, और उसे दम के रूप में बक्री ज़बह करनी होगी, और उस उम्रे की कज़ा करनी होगी। हज्ज और उम्रा को सम्भोग के अतिरिक्त कोई और चीज़ फ़ासिद नहीं करती।

और औरत मर्द ही की तरह है सिवाय इसके कि उसका इह्राम उसके चेहरे में भी होगा, और वह सिला हुवा कपड़ा भी पहनेगी, पर वह बुर्क'अू, निकाब और दस्ताने नहीं पहन सकती है।

**फ़िद्या :** फ़िद्ये दो प्रकार के हैं : ① एक वह है जिसमें उसे अधिकार प्राप्त है : यह बाल मुंडाने, या खुशबू लगाने, या नाखुन काटने, या सिर ढांपने, या सिला हुवा कपड़ा पहनने का फ़िद्या है, इस स्थिती में उसे अधिकार प्राप्त है कि वह या तो 3 दिन का रोज़ा रख्बे, या 6 ग़रीबों को खाना खिलाए हर एक को आधा सा'अू अर्थात् 1.5 किलो दे, या एक बक्री ज़बह करे। और शिकार का फ़िद्या उसी तरह का पशु है जिस तरह के पशु का उसने शिकार किया है। ② दूसरी सिलासिलावार है : और यह हज्जे तमतु'अू और किरान करने वाले का फ़िद्या है, उस पर (कुर्बानी के तौर पर) एक बक्री लाज़िम होती है, यदि बक्रि न मिल सके तो हज्ज के दिनों में वह 3 दिनों का रोज़ा रख्बेगा और 7 दिन के रोज़े हज्ज से लौटने के बाद रख्बेगा। और सम्भोग करने का फ़िद्या एक ऊँट है यदि न कर सके तो उसपर हज्जे तमतु'अू करने वाले की तरह रोज़े हैं। और जो भी फ़िद्या होगा वह हरम के फ़कीरों और ग़रीबों के लिए होगा, या जो खाना खिलाए जाएंगे, वह मात्र हरम के फ़कीरों और गरीबों को खिलाए जाएंगे।

**मक्का में दाखिला (प्रवेश) :** हाजी जब खानए का'बा में प्रवेश करे तो जो ज़िक्र मस्जिदों में प्रवेश करते समय की जाती है करे, फिर यदि वह हज्जे तमतु'अू का इह्राम बांधे हो तो उम्रा का तवाफ़ करे, और यदि मुक्रिद या क़ारिन हो तो तवाफ़ कुदूम करे, और अपनी चादर से इज्तिबा'अू करे, इस तरह से कि चादर के बीच के हिस्से को अपने दाएं कन्धे के नीचे करे और उसके दोनों कोनों को बाएं कन्धे पर डाल ले, और शुरू हज्जे अस्वद से करे, और **بِسْمِ اللَّهِ وَأَكْبَرُ** बिस्मिल्लाह वल्लाहु अक्बर कह कर उसे छूए या चूमे ले, या उसकी ओर इशारा करे, और ऐसा हर फेरे में करे लेकिन मात्र **أَكْبَرُ اللَّهُ أَكْبَرُ** अल्लाहु अक्बर कहे, फिर खानए का'बा को अपनी बाईं तरफ़ करके उसके सात फेरे लगाए, और पहले तीन फेरों में हज्जे अस्वद से हज्जे अस्वद तक रमल करे और बाकी चार फेरों में आम चाल चले, और जब रुक्ने यमानी के सामने हो तो उसे छूए उसे न तो चूमे और न ही उसकी ओर इशारा करे, और रुक्ने यमानी और हज्जे अस्वद के बीच **رَبَّنَا إِنَّكَ فِي الدُّنْيَا كَحَسْنَةٍ وَفِي الْآخِرَةِ حَسْنَةٌ وَقَنَا عَذَابَ النَّارِ** “हे हमारे रब हमें दुनिया में भलाई दे, और आखिरत में भलाई दे और हमें जहन्नम की आग से बचा” पढ़े, और इन सारे फेरों में जो चाहे दुआ करे, फिर मकामे इब्राहीम के पीछे जाकर 2 रक'अत नमाज़ पढ़े, इन दोनों रक'अतों में सूरतुल फ़तिहा पढ़ने के बाद पहली रक'अत में सूरतुल काफिरून और दूसरी रक'अत में सूरतुल इख्लास पढ़े, फिर ज़म्मू का पानी पीए और उसे अपने सर पर भी डाले, फिर हज्जे अस्वद के पास वापस आकर यदि आसानी से छू सकता हो तो उसे छूए, फिर मुल्तज़म के पास जो हज्जे अस्वद और का'बा के दरवाज़े के बीच हैं दु'आ करे, फिर सफा की ओर जाए और सफा पहाड़ी पर चढ़े, और कहे : “अब्दु बिमा बदअल्लाहु बिह” और यह आयत पढ़े : **إِنَّ الصَّافَا وَالْمَرْوَةَ مِنْ شَعَّابِ اللَّهِ فَمَنْ حَجَّ أَبْيَهُ مَأْتَى بِهِمْ كَبِيرٌ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْهِ أَنْ يَطْوِفَ كَبِيرًا إِنَّ اللَّهَ سَرِّ عَلِيمٌ**

तकबीर और तहलील करे, और का'बा की ओर चेहरा करके दोनों हाथ उठाकर दु'आ करे, फिर उतरे और ग्रीन (हरी) लाइट आने तक आम चाल चले, फिर वहाँ से दूसरी ग्रीन लाइट आने तक दौड़े, फिर आम चाल चले यहाँ तक कि मर्वः आजाए, और मर्वः पर भी वैसे ही करे जैसे स़फ़ा पर किया था, पर आयत न पढ़े, फिर मर्वः से उतरे और चलने की जगह में चले और दौड़ने की जगह में दौड़े, इस तरह वह सात फेरे पूरे करे, (स़फ़ा से मर्वः जाना एक फेरा हुवा और मर्वः से स़फ़ा आना दूसरा फेरा)। फिर अपने बाल कटवाए या मुंडवाए, मुंडवाना अफ़ज़ल है, लेकिन हज्जे तमतु'अू करने वाले व्यक्ति के लिए बाल कटाना अफ़ज़ल है ताकि बाकी बाल को हज्ज के बाद मुंडवाए। पर हज्जे किरान और इफ़्राद करने वाले सई करने के बाद हलाल नहीं होंगे, बल्कि वह ईद के जमर-ए-क़बा की रम्य करने के बाद हलाल होंगे। और औरत के अस्काम मर्द ही की तरह हैं, पर वह तवाफ़ और सई में रमल नहीं करेगी।

**हज्ज का तरीक़ा :** और जब यौमतर्विया अर्थात् आठवीं जिल्हज्जा आए तो जिसने अपना इहराम खोल दिया हो वह मक्का में अपने डेरे से ही फिर से इहराम बांधे, और मिना में नौर्मी की रात बिताने के लिए मिना जाए, नौर्मी तारीख को जब सूरज निकल आए तो चाश्त के समय अरफ़ा के लिए निकल पढ़े, और जब सूरज ढल जाए तो जुह और अस्म की नमाज़ एक साथ कम्म करके पढ़े, अरफ़ा के अन्दर कर्णी भी ठहर सकता है सिवाय वादिए उरना के, और अरफ़ा में ज्यादा से ज्यादा यह दुआ करे : "لَهُ الْحُمْدُ وَهُوَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ"

"लाइलाह इल्लाल्लाहु वह्दहू ला शरीक लह, लहुल्मुकु व लहुल्हम्दु व हुव अला कुल्लि शैइन् कदीर"। सूरज डूबने तक बराबर दुआ करता रहे, तौबा करे, और अल्लाह से अपना नाता जोड़े, फिर सूरज डूबने के बाद मुज्दलिफ़ा के लिए निकले, आराम और शान्ति के साथ चले, बराबर तल्बिया पढ़ता रहे, और अल्लाह का ज़िक्र करता रहे, और जब मुज्दलिफ़ा पहुंच जाए तो मशीब और इशा कम्म करके दोनों एक साथ पढ़े, मुज्दलिफ़ा में रात बिताए, और फ़ज़्र की नमाज़ फ़ज़्र निकलते ही गलस में पढ़े, और मुज्दलिफ़ा ही में रह कर दु'आ करता रहे, यहाँ तक कि जब ख़ब उजाला होजाए, तो सूरज निकलने से पहले ही मिना के लिए निकल पढ़े, और जब वादिए मीहसिर में पहुंचे तो यदि होसके तो उसे तेज़ी से पार करे, यहाँ तक कि मिना आकर सबसे पहले जम्रए अ़क़बा की रम्य करे, सात छोटी छोटी कंकरियाँ अंगूठे और शहादत की उंगली के किनारे में रखकर (एक एक करके) मारे और हर कंकरी के साथ अल्लाहु अक्बर कहे, औश्र रम्य करते समय हाथ उठाए। स्पष्ट रहे कि मात्र वही कंकरी शुमार की जाएगी जो हौज़ में गिरेगी चाहे वह उठे हुए खम्बे को लगे या न लगे, और रम्य शुरू करने के साथ ही तल्बिया पुकारना बन्द करदे, फिर अपने हद्दय के जानवर की कुर्बानी करे, फिर अपना सर मुंडवाए या सर के बाल कटवाए पर मुंडवाना अफ़ज़ल है, और रम्य और हल्क करने के साथ ही वे सारी चीजें उसके लिए हलाल हो जाएंगी जो इहराम के कारण हराम होगई थीं, सिवाय औरतों के, और इसे तहल्लुले अव्वल कहा जाता है, फिर हाजी मक्का आए और तवाफ़े इफ़ाज़ा करे, यह वह फ़र्ज़ तवाफ़ है जिससे हज्ज पूरा होता है, फिर यदि वह हज्जे तमतु'अू कर रहा है या यदि उसने किरा और इफ़्राद करने की सूरत में तवाफे कुदूम के साथ सई न की हो तो स़फ़ा और मर्वः की सई करे, और इस तवाफ के साथ सारी चीजें उसके लिए हलाल हो जाएंगी यहाँ तक कि औरत भी हलाल हो जाएंगी, और इसे तहल्लुले सारी कहा जाता है, फिर वह लौट कर मिना जाए और अय्यामे तभीक (11,12 और 13) की रातें वाजिबी तौर पर मिना में बिताए, और इसके दिनों में सूरज ढलने के बाद जमरात को कंकरी मारे, हर जम्रे को सात कंकरियाँ मारे, आरम्भ जम्रए ऊला से करे, और ख़ान-ए-क़ा'बा को सामने करके कंकरियाँ मारे, फिर आगे बढ़े और वहाँ रुक कर अल्लाह से दुआ करे, फिर बीच वाले जम्रा के पास आए, और उसे भी उसी तरह कंकरियाँ

मारे, और रुक कर दुआ करे, फिर जप्राए अक्बा को कंकरियां मारे और वहाँ से चल पड़े उसके पास दुआ करने के लिए न रुके, फिर दूस्रे दिन भी इसी तरह कंकरियां मारे, फिर यदि वह पहले दो ही दिन में मिना से जाना चाहे तो सूरज डूबने से पहले निकल जाए, और यदि बारहवीं तारीख का सूरज डूब जाए और वह मिना ही मैं है तो मिना में 13 की रात बीताना ज़रूरी होगा, और तेरहवीं को भी जमरात को कंकरियां मारे, यदि उसने निकलने का इरादा कर लिया हो लेकिन रास्ते में भीड़ के कारण मिना के सीमा से बाहर न निकल सका हो तो निकलने में कोई हरज नहीं, चाहे वह सूरज डूबने के बाद ही क्यों न निकले, हज्जे किरान करने वाले को भी वही सब कुछ करना पड़ेगा जो हज्जे इफाद करने वाला करता है, अलग से कोई काम उस पर नहीं है, सिवाय इसके कि मुफ्तिद पर हद्दय नहीं है और कारिन और मुतमति'अू पर हद्दय का जानवर ज़बह करना है, और जब वापस घर जाना चाहे तो खान-ए-काबा का तवाफ़ किए बिना न जाए, ताकि उसका अन्तिम काम काबा का तवाफ़ हो, और यदि तवाफ़े विदा'अू के बाद किसी व्यापार में लग जाए तो वापसी के समय फिर से तवाफ़े विदा'अू करे, और जो बिना तवाफ़े विदा'अू किए निकल गया हो तो यदि वह करीब हो तो वापस लौट कर तवाफ़ करे, फिर वापस लौटे, और यदि दूर निकल गया हो तो उस पर दम लाज़िम होगा, पर हैज़ और निफास वाली औरत पर तवाफ़े विदा'अू नहीं है, वह बिना तवाफ़े विदा'अू किए वापस जा सकती हैं।

**हज्ज के 4 रुक्न हैं :** ① इहराम (हज्ज में दाखिले की नियत करना) ② अर्फ़ा में ठहरना। ③ तवाफ़े जियारत करना, इसे तवाफ़े इफाज़ा भी कहते हैं। ④ हज्ज की सई करना।

**और हज्ज के 7 वाजिबात हैं :** ① मीक़त से इहराम बांधना। ② अर्फ़ा में सूरज डूबने तक ठहरना। ③ मुज्दलिफ़ा में रात बिताना, यह वुजूब आधी रात के बाद तक है। ④ मिना में अय्यामे तशीक (11.12 और 13 जिल्हिज्जा) की रातें बिताना। ⑤ जमताजवात को कंकरियां मारना। ⑥ बाल मुंडवाना या कटवाना। ⑦ तवाफ़े विदा'अू करना। ⑧ और मुतमति'अू तथा कारिन के कुर्बानी करना।

**उम्रा के 3 रुक्न हैं :** ① इहराम (उम्रा में दाखिले की नियत करना) ② उम्रा का तवाफ़ करना। ③ उम्रा की सई करना।

**और इसके 2 वाजिबात हैं :** ① मीक़त से इहराम बांधना। ② बाल कटवाना या मुंडवाना। जिसने किसी रुक्न को छोड़ दिया तो जब तक उसे अदा न करले उसका हज्ज पूरा नहीं होगा, और जिसने किसी वाजिब को छोड़ दिया तो दम द्वारा उसकी तलाफ़ी होजाएगी, और जिसने किसी सुन्नत को छोड़ दिया तो उस पर कोई तावान नहीं है।

**त़वाफ़ सहीह होने की 13 शर्तें हैं :** 1- इस्लाम। 2- अक्ल। 3- खास नियत। 4- तवाफ़ का समय होना। 5- जिसे शक्ति हो उस के लिए शरमगाह को ढांपना। 6- पवित्र होना, बच्चों के लिए पवित्रता शर्त नहीं है। 7- पूर्ण विश्वास के साथ 7 चक्र पूरा करना। 8- काबा को बाई ओर करके त़वाफ़ करना, और जिन चक्रों में भूल होगई उन्हें फिर से दोहराना। 9- पीठ पीछे की ओर न लौटना। 10- ताक़त रखने वाले के लिए चलना। 11- लगातार चक्र लगाना। 12- मस्जिदे-हराम के भीतर से त़वाफ़ करे। 13- हजरे अस्वद से तवाफ़ शुरू करना।

**त़वाफ़ की सुन्नतें :** हजरे अस्वद को छूना और उसे चूमना। छूते समय तकबीर कहना, रुक्ने यमानी को छूना, दाएं कन्धे के नीचे से चादर निकालना, तवाफ़ के समय दुआ और ज़िक्र करना, काबा से करीब होना, तवाफ़ के बाद मकामे इब्राहीम के पीछे 2 रक़अत नमाज़ पढ़ना।

**सई की 9 शर्तें हैं :** ① इस्लाम। ② अक्ल। ③ नियत। ④ लगातार करना। ⑤ ताक़त रखने वाले के लिए चलना। ⑥ सात चक्र पूरे करना। ⑦ पूरे सफ़ा और मर्वा के बीच चक्र लगाना। ⑧ सहीह तवाफ़ के बाद सई करना। ⑨ पहला चक्र सफ़ा से शुरू करना और सातवां चक्र मर्वा पर ख़त्म करना।

**सई की सुन्नतें :** छोटी और बड़ी नापाकी से पवित्र होना, शरमगाह का पर्दा करना, सई के बीच जिक्र और दुआ करना, चलने की जगह पर चलना और दौड़ने की जगह पर दौड़ना, सफा और मर्वा पर चढ़ना, तवाफ़ के तुरन्त बाद सई करना।

**ज्ञोट :** उसी दिन रम्य करना अफ़ज़ल है, यदि अगले दिन तक के लिए लेट कर दिया, या हर दिन की रम्य को अन्तिम दिन के लिए लेट कर दिया तो भी रम्य हो जाएगी।

**कुर्बानी :** कुर्बानी करना मुवक्कदा सुन्नत है, कुर्बानी करने वाले व्यक्ति पर ज़िल्हिज्जा का महीना शुरू होने से लेकर कुर्बानी करने तक बाल, नाखुन, या चमड़ा में से कुछ काटना हराम है।

**अङ्कीक़ा :** अङ्कीक़ा करना सुन्नत है, जन्म के सातवें दिन लड़के की ओर से दौ बक्रियां ज़बह की जाएंगी और लड़की की ओर से एक। सातवें दिन बच्चे का बाल काटना और उसके बराबर चाँदी सदक़ा करना मस्नून है। और उसी समय उसका नाम भी रखवा जाएगा। अल्लाह तआला के यहाँ सब से पसन्दीदा नाम अब्दुल्लाह और अब्दुर्रह्मान है, अल्लाह के अतिरिक्त दूसरों के नामों के शुरू में अब्द जोड़ कर नाम रखना जैसे : **अब्दुन्नबी**, अब्दुर्रसूल आदि हराम हैं। यदि एक ही समय अङ्कीक़ा और कुर्बानी पड़ जाए तो एक दूसरे की ओर से काफ़ी होगा।

**हज्ज के कर्मों का खुलासा इस प्रकार है :**

क्रियान्	तम्हाँ अः	हृज	इस्लाम और तल्बिया की शुरूआत		फ़िर		फ़िर		8 तरीख के जुँ से पहले		9 तरीख के सुरज निकलने के बाद		कुर्बानी के दिन 10 तारीख को फ़ज़ के बाद से इश्काक से पहले तक			
			तवाफ़ करना	कुर्दम करना	तवाफ़ की सई करना	इस्लाम की हालाम में रहना	इस्लाम की हालाम में रहना	मिना जाना	मिना जाना	अर्फ़ा जाना और वहाँ जुँ और अस की मध्य इक़ही करके जुँ के समय में पढ़ना फ़िर दुआ के लिए फ़ारिग़ होना	अर्फ़ा जाना और वहाँ पहुँचते ही मशीब और इशा की मुऱ्डलिफ़ा लौटना और वहाँ पहुँचते ही मशीब और इशा की मध्य फ़हना, अर्थात तक रहना, और फ़ज़ के बाद तक रुक़ना मस्नून है	-	कुर्बानी करना	कुर्बानी करना	बाल करवाना या मुठवाना, फ़िर तवाफ़ करना, रम्य, हल्क़ और तवाफ़ में से विनीं दो को करने से पहला तहल्लल हासिल होनाता है और तीनों को करने से दूसरा तहल्लल	11, 12 के दिन, तथा 13 का दिन लेट करने वाले के लिए
इस्माई	लब्बैक इज्जन्	तवाफ़ कुर्दम करना	तवाफ़ कुर्दम करना	तवाफ़ की सई करना	इस्लाम की हालाम में रहना	इस्लाम की हालाम में रहना	मिना जाना	मिना जाना	अर्फ़ा जाना और वहाँ जुँ और अस की मध्य इक़ही करके जुँ के समय में पढ़ना फ़िर दुआ के लिए फ़ारिग़ होना	अर्फ़ा जाना और वहाँ पहुँचते ही मशीब और इशा की मुऱ्डलिफ़ा लौटना और वहाँ पहुँचते ही मशीब और इशा की मध्य फ़हना, अर्थात तक रहना, और फ़ज़ के बाद तक रुक़ना मस्नून है	-	कुर्बानी करना	कुर्बानी करना	बाल करवाना या मुठवाना, फ़िर तवाफ़ करना, रम्य, हल्क़ और तवाफ़ में से विनीं दो को करने से पहला तहल्लल हासिल होनाता है और तीनों को करने से दूसरा तहल्लल	11, 12 के दिन, तथा 13 का दिन लेट करने वाले के लिए	वापसी के समय

\* **फ़ाइदा :** मस्जिदे नबीवी में प्रवेश करने वाला व्यक्ति पहले 2 रक़अ़त तहीयतुल मस्जिद पढ़े फिर आप **काबी** की मबारक क़ब्र के पास आए, आप के चेहरए मुबारक की ओर अपना चेहरा करे पीठ का'बा की ओर हो, और दिल आप की अ़ज़मत से भरा हुवा हो गोया कि वह आप **काबी** को देख रहा हो : फिर इन शब्दों में सलाम कहे : “अस्सलामु अ़लैक या रसूलल्लाह” यदि अधिक बढ़ाए तो बेहतर है। फिर दाई और एक हाथ जितना बढ़े, और कहें : “अस्सलामु अ़लैक या अबा बक्रिस्सदीक” “अस्सलामु अ़लैक या उमरल फ़ारूक, अल्लाहुम्मज्जिहिमा अन नबीएहिमा व अनिल इस्लामि खैरन्” फिर का'बा की ओर चेहरा कर ले और हुज्जा उस की बाई ओर हो और दुआ करे।

## विभिन्न लाभदायक बातें

**\* गुनाह :** अनेक चीजों के द्वारा गुनाह मिटाए जाते हैं, जैसे सच्ची तौबा, बख्खिश की तलब, नेक काम, परेशानियों द्वारा परीक्षा, सदका, दूसरे व्यक्ति की दुआ, फिर भी यदि कुछ पाप बाकी रह गए, और अल्लाह तअ़ाला ने उन्हें माफ़ न किए तो कब्र में, या कियामत के दिन या जहन्नम की आग में पापी को सज़ा दी जाएगी यहाँ तक कि वह गुनाहों से पवित्र होजाए, फिर वह जन्नत में जाएगा यदि उस की मौत तौहीद पर हुई हो, और यदि कुफ़्र, शिर्क या निफ़ाक पर मौत हुई हो तो जहन्नम उसका दाइमी ठिकाना होगा। **इन्सान पर गुनाहों के प्रभाव कई एक रूप में पड़ते हैं :** दिल पर उस का प्रभाव यह होता है कि वह दिल में बेचैनी और अंधेरापन का कारण बनता है, वह उसे रुसवा करता, रोगी बना देता, और अल्लाह तअ़ाला से दूर कर देता है। दीन पर भी इस का प्रभाव पड़ता है और इन चीजों के साथ साथ उसे इत्ताअत से महरूम कर देता, और नबी, फ़रिश्ते और मोमिनों की दुआ से उसे वंचित कर देता है। जीविका भी प्रभावित होती है, व्यक्ति को वह रोज़ी से महरूम कर देता, उस से नेमत का ख़ातिमा कर देता, और धन दौलत की बर्कत को मिटा देता है। व्यक्तिगत प्रभाव यह पड़ता है कि व्यक्ति की उम्र की बर्कत को मिटा देता, कठोर जीवन का वारिस बनाता, और मामले को कठिन बना देता है। कर्मों को स्वीकार होने से रोक देता, सूसाइटी की अम्न व शान्ति को ख़त्म कर देता, महंगाई लाता है, हाकिमों और शत्रुओं को मुसल्लित कर देता है, और आसमान से वर्षा को रोक देता है इत्यादि।

**\* ग़म :** दिल की राहत और खुशी और उस से ग़मों का दूर होना हर व्यक्ति की चाहत होती है, और इसी द्वारा उसे उत्तम जीवन प्राप्त होता है, इसे हासिल करने के लिए कई एक धार्मिक, फ़ित्री और व्यवहारिक कारण हैं, जो मात्र मोमिनों के लिए एकत्रित हो सकते हैं, इनमें से कुछ का चर्चा किया जारहा है : **①** अल्लाह तअ़ाला पर ईमान लाना। **②** उसके आदेशों को बजा लाना, और **निषिद्ध वस्तुओं** से बचना। **③** व्यवहार, कर्म और नेकी द्वारा मख्तूक पर एहसान करना।

**④** काम काज करते रहना या धार्मिक अथवा सांसारिक ज्ञान की प्राप्ति में व्यस्त रहना। **⑤** भविष्य या अतीत के बारे में चिन्ता न करना, बल्कि अपने रोज़ाना के कामों में व्यस्त रहना। **⑥** अधिक मात्रा में अल्लाह का ज़िक्र करना। **⑦** अल्लाह की ज़ाहिरी और बातिनी नेमतों का चर्चा करना। **⑧** अपने से कम्तर व्यक्ति की ओर देखना, सांसारिक जीवन में जो हम से बेहतर है उन पर ध्यान न देना। **⑨** ग़म के अस्वाब को दूर करने के लिए प्रयास करना, और खुशी के अस्वाब को प्राप्त करना। **⑩** ग़म दूर करने के लिए नबी ﷺ जो दुआएं करते थे उनके द्वारा अल्लाह की पनाह चाहना। **\* फ़ाइदा :** इब्राहीम अल्ख़व्वास कहते हैं : ५ चीजें दिल के लिए इलाज हैं : **ध्यान** देकर कुर्�আন पढ़ना, पेट का ख़ाली होना, कियामुल्लैल करना (तहज्जुद की नमाज़ पढ़ना), रात के अन्तिम पहर में रोना गिड़गिड़ाना, और नेक लोगों के साथ बैठना।

**\* जब कोई व्यक्ति किसी परीशानी का शिकार हो और अपने दु : ख को हल्का करना चाहता हो तो उसे बड़ा समझ कर उसके सवाब के बारे में सोचे, और उससे भी बड़ी परीशानी में पड़ने का गुमान करे।**

**\* ज़िक्राह :** ऐसा व्यक्ति जिस की ख़्वाहिश नामल हो जिस से उसे ज़िना का डर न हो तो उसके लिए शादी करना मस्नून है, और जिसके भीतर ख़्वाहिश ही न हो उसके लिए शादी करना मुबाह है। पर जिसे ज़िना में पड़ जाने का डर हो तो उसके हङ्क में शादी करना वाजिब है, जिसे वाजिबी हङ्ज पर भी तर्ज़ह दी जाएगी। औरतों को देखना हराम है, इसी तरह शहवत भरी नज़र से बड़ी उम्र की औरत और **अम्रद** को भी देखना हराम है।

**निकाह की शर्तें :** ① शौहर और बीवी की ताईन। अतः यदि किसी के पास एक से अधिक बेटियां हों तो उसका यह कहना सहीह नहीं होगा कि मैंने तुम्हारा निकाह अपनी एक बेटी से कर दिया। ② अङ्कल्मन्द बालिग शौहर की रिज़ामन्दी, और इसी तरह आज़ाद बालिग़ा लड़की की रिज़ामन्दी। ③ वली का होना, अतः औरत का स्वयं अपनी शादी कर लेना सहीह नहीं है। और न ही वली के अलावा किसी दूसरे मर्द को उसकी शादी कराने का इख्तियार है। हाँ उस सूरत में जबकि वली किसी कुफव मर्द से शादी करने में बाधा ढाले (तो जायज़ है)। वली की तरीब इस प्रकार है : बाप, फिर दादा, फिर उससे ऊपर की पीढ़ी, फिर बेटा, फिर पोता, फिर उससे नीचे की पीढ़ी, फिर सगा भाई फिर अल्लाती भाई, फिर सगा भतीजा ... इत्यादि। ④ शहादत, दो नेक, अङ्कल्मन्द और बालिग मर्द की गवाही ज़रूरी है। ⑤ शौहर और बीवी के निकाह में किसी बाधा दायक कारण का न पाया जाना। जैसे दूध, या नसब या शादी का रिश्ता जो इस निकाह के ह्राम होने के कारण हों।

**निकाह ह्राम ठहराने वाली चीज़ें :** ① जिन के कारण हमेशा के लिए निकाह करना ह्राम होता। और ये कई प्रकार के हैं : ① नसब के कारण ह्राम होने वाली औरतें : मां, दादी और उनके ऊपर की पीढ़ी। बेटी, पोती और इनके नीचे की पीढ़ी। और सारी बहनें उनकी बेटियां, पोतियां और नवासियां। और सारी भतीजियां, उनकी बेटियां, पोतियां और नवासियां और उन से नीचे की पीढ़ी। और फूफी और मौसी और उन की ऊपर की पीढ़ी। ② दूध के कारण ह्राम होने वाली औरतें। जो औरतें नसब के कारण ह्राम होती हैं वह सारी दूध पीने के कारण भी ह्राम ठहरती हैं, यहाँ तक की शादी के रिश्ते में भी इसका एतिवार होता है। ③ शादी के रिश्ते के कारण ह्राम होने वाली औरतें : सास, बीवी की दादी और नानी .... और बीवी की बेटी और उस से नीचे की पीढ़ी। ④ जिन के कारण एक सीमित सीमा तक निकाह करना ह्राम होता है। और ये दो प्रकार के हैं : ① निकाह में एक ही समय में दो को इकट्ठा करना, जैसे एक ही समय में दो बहनों से निकाह करना। या उसकी फूफी अथवा मौसी से निकाह करना। ② किसी खत्म होजाने वाली आरिज़ी चीज़ के कारण, जैसे किसी की बीवी से शादी करना।

\* **फ़ाइदा :** मां बाप को यह हक् हासिल नहीं है कि लड़के को किसी ऐसी लड़की के साथ शादी के लिए मज्बूर करें जिसे वह चाहता न हो। इस मामले में लड़के पर उनकी फ़र्माबदारी भी ज़रूरी नहीं है, और न ही इस के कारण वह नाफरमान माना जाएगा।

\* **त़लाक़ :** हैज़, या निफास या ऐसी पाकी की अवस्था में जिसमें बीवी से संभोग किया हो त़लाक़ देना ह्राम है, पर दे देने की सूरत में त़लाक़ हो जाएगी। बिना कारण के त़लाक़ देना मकरह है। और कारण बस मुबाह है। और जिसे निकाह के कारण हानि पहुँच रहा हो उस के लिए मस्नून है। त़लाक़ के मामले में वालिदैन की फ़र्माबदारी वाजिब नहीं है। और जो व्यक्ति त़लाक़ देना चाहता हो उस पर एक से अधिक त़लाक़ देना ह्राम है, और यह भी वाजिब है कि ऐसी पाकी में त़लाक़ दे जिसमें उसने संभोग न किया हो। एक त़लाक़ देकर छोड़ दे यहाँ तक कि इद्दत पूरी होजाए। जिस औरत की त़लाक़ रज़इ हो (अर्थात् जिस त़लाक़ के बाद लौटाना सम्भव हो) उस पर इद्दत पूरी होने से पहले शौहर के घर से निकलना या शौहर का घर से निकालना ह्राम है। मात्र नियत करने से त़लाक़ नहीं होती बल्कि उसे शब्दों द्वारा बोलना वाजिब है।

\* **कस्म :** कस्म पर कफ़ारा वाजिब होने के लिए 4 शर्तें हैं : ① कस्म का इरादा किया हो, यदि बिना इरादे के कस्म खाई हो तो वह कस्म नहीं है। बल्कि उसे लग्वे यमीन कहते हैं : जैसे बात करते समय (कस्म से, अल्लाह कस्म आदि) कहना। ② कस्म भविष्य के किसी

ऐसी चीज़ के बारे में खाई गई हो जिस का होना संभव हो। अतः यदि **अतीत** के बारे में अज्ञानता में क़सम खाई हो, या स्वयं को सही समझ कर खाई हो, या जानबूझकर झूटी क़सम खाई हो (इसे यमीने गमूस कहते हैं जो कि बड़ा पाप है)। या भविष्य के बारे में स्वयं को सही समझ कर क़सम खाई हो परन्तु मामला उलटा हो जाए तो इन सभौं का शुमार क़सम में नहीं होता। **③** अपनी मर्जी से क़सम खाई हो, क़सम खाने के लिए उसे मज्हूर न किया गया हो।

**④** क़सम में हानिस होजाए, अर्थात् जिस चीज़ के न करने की क़सम खाई थी उसे कर ले, या करने की क़सम खाई थी परन्तु उसे न करे। और जिस व्यक्ति ने क़सम खाई हो और साथ ही साथ इन-शाअल्लाह भी कहा हो तो 2 शर्तों की बिना पर उस पर कफ़ारा वाजिब नहीं होता : **①** क़सम के साथ ही इन-शाअल्लाह कहा हो। **②** इन-शाअल्लाह द्वारा क़सम की **तालीक़ मक्सूद** हो, जैसे कहे : अल्लाह की क़सम इन-शाअल्लाह।

जिस व्यक्ति ने किसी चीज़ की क़सम ली हो लेकिन भलाई उस के विपरीत में हो तो सुन्नत यह है कि क़सम का कफ़ारा दे और भलाई वाला कर्म करे।

**क़सम का कफ़ारा :** क़सम का कफ़ारा है 10 ग्रीब को खाना खिलाना, हर ग्रीब को आधा सा'अू अर्थात् 1.5 किलो अनाज देना। या 10 ग्रीब को कपड़ा पहनाना। या एक गर्दन आज़ाद करना। यदि इनमें से किसी की भी शक्ति न हो तो लगातार 3 दिन के रोज़े रखना। और जिसने खाना खिलाने या कपड़ा पहनाने की ताक़त रखने के बावजूद रोज़े रखे हों तो उसका ज़िम्मा बरी नहीं होगा। हानिस होने से पहले या बाद में कफ़ारा देना जायज़ है। और जिसने किसी एक चीज़ पर एक बार से अधिक क़सम खाई हो तो उनकी ओर से मात्र एक कफ़ारा दे देना काफ़ी है। यदि **मामला** अलग अलग हो तो उनका कफ़ारा भी अलग अलग होगा।

\* **नज़र** : नज़र की किस्में : **①** मुल्क नज़र : जैसे यह कहे : यदि मैं निरोग हो गया तो अल्लाह के लिए नज़र दूँगा। फिर चुप होजाए और किसी ख़ास चीज़ की नज़र न माने तो निरोग होजाने पर क़सम का कफ़ारा देना होगा। **②** गुस्सा और लिजाज की नज़र : नज़र को मश्तूत करना किसी चीज़ से रोकने या उसके करने पर, जैसे यह कहना : यदि मैं ने तुझ से बात की तो मेरे ऊपर पूरे साल का रोज़ा है। इसका हुक्म यह है कि : उसे उस काम के करने, या बोलने पर क़सम का कफ़ारा देने का इस्तियार है। **③** मुबाह नज़र : जैसे यह कहे : मेरे ऊपर अल्लाह के लिए कपड़ा पहनना है। इसका हुक्म यह है कि उसे कपड़ा पहनने या क़सम का कफ़ारा देने का इस्तियार है। **④** मक्ख नज़र : जैसे यह कहे : मेरे ऊपर अल्लाह के लिए अपनी बीवी को तलाक़ देना है। इसका हुक्म यह है कि इस काम को न करे और क़सम का कफ़ारा दे दे, यदि कर दे तो कफ़ारा नहीं है। **⑤** गुनाह वाली नज़र : जैसे यह कहे : मेरे ऊपर अल्लाह के लिए चोरी कना है। इसका हुक्म यह है कि ऐसे काम को करना हराम है, इसलिए क़सम का कफ़ारा दे। यदि कर दिया तो पापी है और उस पर कफ़ारः नहीं है।

**⑥** नेकी करने की नज़र : जैसे अल्लाह की नज़दीकी प्राप्त करने के मक्सद से यह कहे : मेरे ऊपर अल्लाह के लिए यह नमाज़ पढ़ना है। यदि किसी चीज़ के साथ उसे मश्तूत किया हो जैसे रोगी का निरोग होना, तो यदि शर्त प्राप्त होजाए तो उस कर्म को करना वाजिब है, और यदि किसी चीज़ के साथ मश्तूत न किया हो तो हर अवस्था में उसे करना वाजिब है।

\* **रिज़ाअत** : दूध पिलाने के सबब वह सारे रिश्ते हराम हो जाते हैं जो नसब के कारण होते हैं। पर 3 शर्तों के साथ : **①** बच्चा जन्म होने के कारण दूध आरहा हो, न कि किसी दूसरी वजह से। **②** बच्चे ने पैदाइश से 2 साल के भित्र दूध पिया हो। **③** विश्वासनिय रूप से उस ने 5 रज़अत या उस से अधिक दूध पिया हो। रज़अत का अर्थ यह कि बच्चा

छाती को मुंह में लगाकर दूध पिए और अपने से छोड़ दे। रिज़ाअत के कारण ख़र्चा देना या विरासत साबित नहीं होती।

\* **वसीयत** : जिस पर दूसरे का ऐसा हक़ हो जिसका कोई प्रमाण न हो तो मृत्यु के पश्चात उसकी अदायगी की वसीयत करना वाजिब है। और जिस के पास अधिक धन हो उस पर पाँचवा हिस्सा धन सद्का करने की वसीयत करना मुस्तहब है। चुनांचि गरीब नातेदार के लिए वसीयत करे जो कि वारिस न हो। नहीं तो आम गरीब, आलिम और नेक व्यक्ति के लिए वसीयत करे। और फ़कीर व्यक्ति का जिसके वारिस मौजूद हों वसीयत करना मकूह है, हाँ यदि वे धनी हों तो फिर मुबाह है। और किसी अजनबी व्यक्ति के लिए एक तिहाई से अधिक की वसीयत करना हराम है। इसी तरह वारिस की खातिर थोड़े से धन की भी वसीयत करना हराम है, यदि मौत के बाद बाकी वरसा अनुमति दे दें तो वसीयत नाफिज़ की जा सकती है। वसीयत करने वाले व्यक्ति द्वारा इन शब्दों के कहने से वसीयत बातिल होजाती है : मैं ने अपनी वसीयत लौटाली, या उसे बातिल कर दिया। या उसे बदल दिया या इसी तरह के दूसरे शब्द।

**वसीयत के आरम्भ में ये लिखना मुस्तहब है :** बिस्मिल्लाहिररह्मानिरहीम हाज़ा मा औसा बिही फुलानुन् अन्नहु यशहदु अल्लाइलाह इल्लल्लाहु वह्दहू ला शरीक लहू, व अन्न मुहम्मदन् अबुहू व रसूलुहू, व अन्नल् जन्नत हक्कू, व अन्नन्नार हक्कू, व अन्नस्साअःत आतियल्लारैब फ़ीहा, व अन्नल्लाह यबउसु मन् फिल्कुबूर, व ऊसी मन् तरक्तु मिन् अह्ली अँय्यतकुल्लाह व युस्लिहू ज़ात बैनिहिम्, व युतीउल्लाह व रसूलहू इन् कानू मुअ़्रमिनीन्, व ऊसीहिम बिमा औसा बिही इब्राहीमु बनीहि व याअ़कूब : ﴿يَبْيَعِ إِنَّ اللَّهَ أَصْطَقَ لَكُمُ الَّذِينَ فَلَا تَمُوْنُ إِلَّا وَأَنْتُمْ مُسْلِمُونَ﴾

\* नबी ﷺ पर दख्ल भेजते समय, एक के बजाए दख्ल और सलाम दोनों भेजना मुस्तहब है, केवल नबी के अलावा पर दख्ल नहीं भेजा जाएगा, इसलिए अबू बक्र सल्लल्लाहु अलौहि व सल्लम या अलौहिस्सलाम नहीं कहा जाएगा, और ऐसा करना मकरूह तन्जीही है, पर नबियों के साथ में उन पर दख्ल भेजना जायज़ है, जैसा कि इन शब्दों में दख्ल भेजना : अल्लाहुम्म सल्लि अ़ला मुहम्मद् व अ़ला आलि मुहम्मद् व अस्हाबिही, व अज्वाजिही व जुर्रीयतिहू। और सहाबा, ताबिईन, उन के बाद आने वाले आलिमों, आविदों और सारे नेक लोगों के लिए रज़ियल्लाहु अन्हु, या राहिमहुल्लाह कहना मुस्तहब है। चुनांचि अबू हनीफ़ा, मालिक, शाफ़ी और अहमद रज़ियल्लाहु अन्हुम्, या राहिमहुमुल्लाहु कहा जाएगा।

\* **ज़बह** : जानवर का गोश्त खाने के लिए उन्हें ज़बह करना वाजिब है। जानवर में इन 3 शर्तों का पाया जाना ज़रूरी है : ① जिसका गोश्त खाना मुबाह हो। ② जो इन्सान के बस में हो। ③ खुशकी में रहने वाला जानवर हो। और ज़बह की 4 शर्तें हैं : ① जबह करने वाला अकलमन्द हो। ② छूरी तेज़ हो, जो कि हड्डी और दांत की न हो, क्योंकि इन दोनों से ज़बह करना जायज़ नहीं है। ③ गला, और दोनों में से किसी एक रग का कटना। ④ ज़बह के लिए हाथ हिलते समय बिस्मिल्लाह कहना। यदि बिस्मिल्लाह कहना भूल जाए तो कोई आपत्ति की बात नहीं है। बिस्मिल्लाह के साथ अल्लाहु अक्बर भी कहना मस्नून है।

\* **शिकार** : जिस जानवर का शिकार किया जाना हो उसके लिए 3 शर्तें हैं : ① उसका गोश्त खाना हलाल हो। ② बिदकना उसकी फित्रत हो। ③ और जो बस में न आए। और 4 शर्तों के साथ शिकार करना जायज़ है : ① शिकारी व्यक्ति में ज़बह करने की अहलियत हो। ② शिकार करने का आला ऐसा हो जिससे ज़बह करना जायज़ हो। और वह तेज़ धारदार बर्छा या तीर या इस तरह का कोई दूसरा आला हो। और यदि शिकारी जानवर जैसे बाज़ या कुत्ता द्वारा शिकार कर रहा हो तो उस जानवर का शिक्षित होना ज़रूरी है। ③ शिकार करने के

इरादे से तीर वगैरा फेंकी गई हो। यदि बिना इरादे के शिकार होजाए तो उसे खाना हलाल नहीं है। ④ तीर वगैरा फेंकते हुए या शिकारी जानवर दौड़ाते हुए बिस्मिल्लाह कहना वाजिब है। इसमें भूल माफ़ नहीं है; इसलिए बिस्मिल्लाह किए बिना जिस जानवर का शिकार किया गया हो उसका गोश्त खाना हराम है।

\* **खाना** : इससे मुराद हर खाई और पी जाने वाली चीज़ है। यदि इन में 3 शर्तें पाई जाती हों तो इनका खाना हलाल है : ① खाना पाक हो। ② खाना में कोई नुक्सान न हो।

③ और वह गन्दा न हो।

हर नापाक खाना जैसे खून और मुर्दार हराम है, और जिसमें हानि हो जैसे ज़हर, और गन्दी चीजें जैसे : गोबर, मूत, ढील, पिस्सू, और भूमि स्थल के जानवरों में से गधा, और फाड़ खाने वाले जानवर जैसे शेर, चीता, भैंडिया, तेंदुवा, कुत्ता, सूवर, बन्दर, बिल्ली, और लौमड़ी सिवाय बिज्जू के, और पंजा द्वारा आक्रमण करने वाले पक्षी जैसे उकाब (गरुड़), बाज़, सक्र, बाशिक, शाहीन, चील, उल्लू, और गन्दगी खाने वाले पक्षी जैसे गिध, रखम, सारस, और हर वह पक्षी जिसे अरब वासी नापसंद करते हों जैसे चमादड़, चूहा, बिर्नी, मक्खी, पतिंगा, हुद्दुहुद़, साही और सांप यह सब के सब हराम हैं। और प्रत्येक प्रकार के कीड़े मकूड़े, चूहा, गुब्रैला, छिपकिली। और हर वह चीज़ जिसे मारने का शरीअत ने आदेश दिया है जैसे बिछू या उसे मारने से रोका है जैसे चिंवटी। या जो दो जानवरों से जन्म लिए हों जिसमें एक का खाना हलाल है और दूसरे का खाना हराम है जैसे सिम्म अर्थात् भेड़िया से बिज्जू का जन्म लेने वाला बच्चा तो यह भी हराम है। पर यदि दो ऐसे जानवरों से जन्म लिया हो जिन्हें खाना मुबाह है जैसे नील-गाय और घोड़े से जन्म लेने वाला खच्चर तो यह हराम नहीं है। और इनके अतिरिक्त जो पशु हैं वह हलाल हैं जैसे भेड़, बक्रा, ऊँट, गाय और घोड़ा, और जंगली जानवर जैसे ज़राफ़ा, ख़र्गेश, वबर (बिल्ली से छोटी ढील का एक जानवर), यर्बूअू (चूहा समान एक जानवर जिस की अगली टांगे छोटी, पिछली बड़ी, और पोंछ लम्बी होती है), गोह और हिरन। और पक्षी यों में शुतुर मुर्ग, मुर्गा मुर्गी, मोर, तोता, कबूतर, गौरैया, बतख, मुर्गाबी और समुन्दर की सम्पूर्ण पक्षियां। और समुन्दरी जानवर सिवाय में डक, शर्प और घड़ियाल के। और जिस खेती या फल पर नापाक पानी पटाया गया हो, या खाद डाला गया हो, तो उस की उपज को खाना जायज़ है यदि उस में गन्दगी या उस की बदबू का प्रभाव न हों। और कोइला, मिट्टी या गारा को खाना मकरूह है, इसी प्रकार बिना पकाए कच्ची पियाज़ और लहसुन खाना मकरूह है, और यदि भूक के कारण मज्जूर होगया तो जान बचाने के लिए कुछ भी खा सकता है।

\* काफिरों के तेहवारों में जाना या उन पर उन्हें मुबारकबादी देना, और सलाम करने में पहल करना हराम है। और यदि वे हमें सलाम करें तो जवाब में “व अलैकुम” कहना वाजिब है। उनकी और इसी तरह बिदूअतियों की स्वागत के लिए खड़ा होना हराम है। उनसे मुसाफ़हा करना मकरूह है, परन्तु उनकी ताजियत करना, या बीमारपुर्सी करना धार्मिक मसलहत की खातिर जायज़ है।

## एरई झाड़-फूक

अल्लाह तआला की सुन्नतों पर ध्यान रखने वाले व्यक्ति को इस बात की जानकारी बहुत अच्छी तरह है कि परीक्षा अल्लाह तआला की कौनी कढ़ी सुन्नत है, उसका फ़रमान है :

﴿وَلَبَّوْتُكُمْ شَيْءٍ مِنَ الْحُرْفَ وَلَجُوعٍ وَلَقُصٍّ مِنَ الْأَمْوَالِ وَالْأَنْفُسِ وَالشَّمَرَةُ وَبَسْرِ الصَّدِيرِ﴾ “और हम किसी न किसी तरह ज़ुखर तुम्हारा परीक्षा लेंगे, शत्रु के डर से, भूक प्यास से, माल तथा जान और फलों की कमी से, और सब्र करने वालों को खुशखबरी दे दीजिए।”। और जो व्यक्ति इस भ्रम में है कि नेक लोगों का परीक्षा नहीं होता तो वह उसकी गलती है, बल्कि परीक्षा तो ईमान की निशानी है। नवी ﷺ से पूछा गया : “वह कौन व्यक्ति है जिसका परीक्षा सब से अधिक होता?” तो आप ﷺ ने फरमाया: “अम्बिया, फिर नेक लोग, फिर अच्छे अच्छे लोग। इन्सान का परीक्षा उसके धर्म (दीन) के आधार पर होता है, यदि उसके धर्म में मज़बूती है तो उसका परीक्षा अधिक होता है, और यदि उसके दीन में कमी है तो उसका परीक्षा हल्का होता है”। और यह बन्दे से अल्लाह तआला की महब्बत की निशानी है, नवी ﷺ का फ़रमान है : “अल्लाह तआला जब किसी कौम से महब्बत करता है तो उनका परीक्षा लेता है”। (अहमद और तिर्मज़ी) इसी तरह यह उसके लिए भलाई चाहने की निशानी है, नवी ﷺ ने फरमाया: “अल्लाह जब अपने बन्दे के लिए भलाई चाहता है तो वह उसे संसार में सज़ा दे देता है, और जब बुराई चाहता है तो उसकी सज़ा को रोके रखता है ताकि कियामत के दिन पूरा बदला ले”। (तिर्मज़ी) और परीक्षा गुनाहों के लिए कफ़्कारा है चाहे थोड़ा ही क्यों न हो, जैसा कि नवी ﷺ ने फरमाया: “जिस मुस्लिम व्यक्ति को भी तकलीफ़ पहुँचती है, चाहे कॉटा चुभे या उस से बड़ी मुसीबत में मुक्तला हो, तो अल्लाह तआला उसके ज़रीए उसके गुनाहों को मिटा देता है, जिस तरह पेढ़ अपने पत्तों को झाड़ देता है”। (बुख़री एवं मुस्लिम) चुनांचि मुसीबत में ग्रस्त व्यक्ति यदि नेक है तो परीक्षा उसके पिछले गुनाहों के लिए कफ़्कारा है, या उसके दर्जे में बुलंदी का कारण है, और यदि पापी है तो यह उसके गुनाहों के लिए कफ़्कारा है और उसके भ्यानकपन को याद दिलाने का जरीआ है। अल्लाह तआला का फरमान है : ﴿طَهَرَ الْفَسَادُ فِي الْبَرِّ وَالْبَحْرِ بِمَا كَسَبَتْ أَيْدِيُ النَّاسِ لِذِيَّهُمْ بَعْضُ الَّذِي عَلَمُوا لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُونَ﴾ “खुश्की और तरी में फसाद फैल गया लोगों के कुर्मों के कारण; इसलिए कि उन्हें उनके कुछ करतूतों का फल अल्लाह तआला उन्हें खाद्य दे, अधिक सम्भव है कि वे रुक जाएं”।

**परीक्षा की किञ्चित्तमें :** भलाई द्वारा परीक्षा, जैसे धन की बढ़ौतरी। बुराई द्वारा परीक्षा, जैसे डर, भय, भूक, धन दौलत की कमी, अल्लाह तआला का फ़रमान है : ﴿وَلَبَّوْتُكُمْ بِالشَّرِّ وَالْخَيْرِ فَتَنَّهُ﴾ “हम परीक्षा के लिए तुम में से प्रत्येक को बुराई तथा भलाई में डालते हैं”। और बीमारी और मौत का शुमार भी इसी में होता है, जिसका बड़ा कारण हःसद के कारण लगने वाली नज़र और जादू है। नवी ﷺ का फ़रमान है : “अल्लाह की क़ज़ा और क़द्र के बाद मेरी उम्मत के अधिक्तर लोगों की मौत नज़र लगने के कारण होगी”। (तयालसी)

**जादू और नज़र से बचाव :** बचाव इलाज से बेहतर है, इसलिए बचाव के कारणों को अपनाना ज़रूरी है, कुछ महत्वपूर्ण कारणों का चर्चा नीचे किया जा रहा है : ★ तौहीद द्वारा नफ्स को शक्ति पहुँचाना, यह ईमान रखते हुए कि संसार में हेर फेर करने वाला मात्र अल्लाह तआला है, और अधिक नेकी के काम करना। ★ अल्लाह तआला के बारे में उत्तम धारणा रखना, और उसी पर भरोसा करना, किसी बदलाव के कारण बीमारी या बूरी नज़र का वहम न करना, क्योंकि वहम स्वयं एक रोग है।<sup>1</sup> ★ जिस व्यक्ति के बारे में जादूगर होना या बूरी नज़र वाला होना मशहूर हो

<sup>1</sup> डाक्टर्स और विशेषक लिखते हैं कि सेक्स सम्बन्धित बिमारियां वहम के कारण होती हैं। वास्तव में बीमारी नहीं होती।

उससे दूर रहना बचाव के तौर पर न कि उससे डर कर। ★ किसी अच्छी भली चीज़ को देख कर अल्लाह का ज़िक्र करना और बर्कत की दुआ करना। नबी ﷺ का फ़रमान है : “**जब तुम में से किसी को अपनी नफ़्स या धन, या अपने भाई की कोई चीज़ पसन्द आजाए, तो वह बक्त की दुआ करे, क्योंकि नज़र सत्य है**”। बर्कत की दुआ यह है : “**बारकल्लाह**” (अल्लाह तआला बर्कत अता करे)। इस जगह “**तबारकल्लाह**” कहना सही है। ★ बचाव के कारणों में से यह भी है कि सवेरे मदीनतुन्नबी ﷺ की सात अज्ञा ख़जूरें खाए। ★ अल्लाह तआला की ओर लौटना, उस पर भरोसा करना, उसके बारे में अच्छी धारणा रखना, नज़र और जादू से उसकी पनाह में आना, और सवेरे शाम अज़्कार और मुअौविज़ात की पाबन्दी करना, <sup>1</sup> अल्लाह तआला के इरादे से 2 चीज़ों के कारण इन अज़्कार के प्रभाव में कमी बेशी होती है : ① इस बात पर ईमान रखना कि यह अज़्कार हक़ और सत्य हैं, और अल्लाह तआला के इरादे से लाभ-दायक हैं। ② जुबान से कहे, कान धरे रहे, और दिल को हाजिर रखें; क्योंकि यह दुआ है और ग़ाफ़िल लापवाह दिल की दुआ स्वीकार नहीं होती। जैसा कि नबी ﷺ से प्रमाणित है।

**अज़्कार और मुअौविज़ात के समय :** सवेरे के अज़्कार फ़ज़्र की नमाज़ के बाद कहे जाएंगे, और शाम के अज़्कार अस्त्र की नमाज़ के बाद, और यदि भूल जाए तो जिस समय याद आजाए ज़िक्र कर ले।

**नज़र इत्यादि लगाने की निशानी :** मेडीकल और शर्ई रुक्या के बीच कोई विरोध नहीं है, चुनांचि कुर्अन जिस्मानी और रूहानी रोगों के लिए शिफ़ा है, और जब इन्सान जिस्मानी बीमारी से निरोग हो, तो उसकी शारीरिक बदलाव आम तौर पर रियाही दर्द के रूप में होता है, चेहरे का पीला पड़ जाना, अधिक मात्रा में पेशाब या पसीना आना, ख़ाहिश कम हो जाना, किनारों में गर्मी ठंडी या चुभन होना, दिल धड़कना, कंधों और पीठ के नीचे दर्द का घूमना, रात में नींद न आना, डर या गुस्सा के कारण गैर फ़ित्री तनाव पैदा होना, बहुत डिकार आना, लम्बी सांस लेना, तन्हाई पसंद करना, सुस्ती होना, सोने की चाहत करना, और दूसरी स्वास्थ से जुड़ी परेशानियां जो किसी बीमारी के कारण न हों। और बीमारी की शक्ति और कमज़ोरी के लिहाज़ से यह सारी निशानियां या इन में से कुछ पाई जाती हैं।

मुस्लिम व्यक्ति का मज्जूत दिल और ईमान वाला होना ज़रूरी है, वह वसवसों से अपने आप को दूर रखें, मात्र इस तरह की किसी बदलाव के कारण स्वयं को रोगी होने के भ्रम में न डाले, क्योंकि भ्रम का इलाज करना सब से कठिन है, और कभी कभार ऐसा भी होता है कि कुछ लोगों के अन्दर इस तरह के बदलाव पाए जाते हैं लेकिन वह निरोग होते हैं, और कभी इस तरह के बदलाव का कारण जिस्मानी रोग होता है, और कभी इसका कारण ईमान की कमज़ोरी होती है, जैसे सीने की तंगी, ग़मी, सुस्ती, तो ऐसे व्यक्ति पर वाजिब है कि अल्लाह तआला से अपना सम्पर्क जोड़े।

**यदि बीमारी नज़र लगाने के कारण हो तो अल्लाह के कृपा से इन दो में से किसी एक के द्वारा उसका इलाज सम्भव है :** <sup>2</sup> ① यदि बुरी नज़र वाले व्यक्ति की जानकारी हो जाए तो उसे स्नान करने का आदेश दो और इस पानी से या जिस पानी को उसने पिया है उस बचे हुए पानी से स्नान करो

<sup>1</sup> देखिए सवेरे-सांझ की दुआएं।

<sup>2</sup> नज़र लगना। जिन की ओर से पहुंचने वाली तक्लीफ है जो अल्लाह तआला की अनुमति से नज़र लगने वालों को पहुंचती है, जब कि शैतान के होते समय उसे देख कर कोई खुश होता है, और नज़र से बचाने वाला कोई सबव भी नहीं होता, जैसे नमाज़ और ज़िक्र इत्यादि। और इस की दलील नबी ﷺ की हवीस है : “**नज़र लगना हक़ है।**”। बुख़ारी। और दूसरी रिवायत में है : “**नज़र के अन्दर शैतान और इन्सान का हसद मौजूद होता है।**”। अहमद। आँख स्वयं तक्लीफ नहीं पहुंचती पर इसे ऐसे (नज़र) इस लिए कहा गया है कि इस के द्वारा सिफ़त व्यान की जाती है, वर्गना अंधे की भी नज़र लग जाती है।

और उसे पीओ। **१ २** और यदि उस व्यक्ति की जानकारी न हो सके तो शिफ़ा के लिए रुक्या, दुआ और पछना का सहारा लो।

**और यदि बीमारी जादू<sup>२</sup> होने के कारण हो तो अल्लाह की कृपा से इनमें से किसी एक के द्वारा उसका इलाज सम्भव है :** **१** जादू के स्थान की उसे जानकारी होजाए, तो मुअौवज़तैन (सूरतु-लू-फ़लक और सुरतु-नू-नास) पढ़ते हुए उसके बंधन को खोल दे, फिर उसे जला दे। **२** कुरूआनी आयतों के द्वारा दम करके खासकर मुअौवज़तैन, सूरतुलू बक़्रः और दूआएं पढ़ कर।

**३** नुश्शः करे, और यह दो प्रकार के हैं, **१** यदि जादू का खात्मा जादू द्वारा किया जाए, और इससे छुटकारे के लिए जादूगर का सहारा लिया जाए तो यह तरीक़ा हराम है। **२** दूसरा नुश्शः जायज़ है, और इसका तरीक़ा यह है कि बैर की ७ पत्ती ले, उसे पीस दे, फिर उस पर तीन तीन बार सूरतु-लू-काफिरून, सुरतु-लू-इख्लास, सूरतु-लू-फ़लक और सुरतु-नू-नास पढ़े, फिर उसे पानी में डाल दे, फिर उसे पीए और उससे स्नान करे, अल्लाह की मर्जी से शिफ़ा मिलने तक इस अमल को बार बार करता रहे।

**४** जादू को निकाल फेंके, यदि जादू पेट में है तो इस्हाल वाली चीजों के द्वारा उसे निकाले, और यदि पेट के अलावा किसी दूसरे स्थान पर है तो पछना<sup>३</sup> द्वारा उसे निकाल बाहर करे।

**रुक्या अर्थात् शरई झाड़-फूक़ :** इसकी शरतें : **१** रुक्या कुरूआनी आयतों और शरई दुआओं के द्वारा किया जाए। **२** रुक्या अरबी भाषा में किया जाए, दूसरी भाषा में दुआ करना जायज़ है। **३** यह आस्था और अकीदा रखा जाए कि स्वंयं रुक्या का प्रभाव नहीं होता, बल्कि अल्लाह तआला शिफ़ा देता है।

और उसके अधिक प्रभाव की खातिर शिफ़ा की नियत से और इन्सान एवं जिन्नात की हिदायत की नियत<sup>४</sup> से कुरूआन पढ़ना चाहिए; क्योंकि कुरूआन हिदायत एवं शिफ़ा के लिए नाज़िल हुआ है। और जिन्न को क़तल करने की नियत से कुरूआन न पढ़े, हाँ यदि इसके बिना उसका निकलना असम्भव हो तो ऐसा कर सकता है।

**राक़ी अर्थात् रुक्या करने वाले व्यक्ति के लिए शर्तें :** **१** मुस्लिम हो, नेक और मुत्तकी हो, और जिस क़दर वह नेक होगा उतना ही अधिक उसके रुक्या का प्रभाव होगा। **२** रुक्या करते समय सच्चाई के साथ अल्लाह तआला की ओर ध्यान लगाए रहे, इस तरह कि दिल जुबान के मुवाफ़िक हो, और उत्तम यह है कि इन्सान स्वंयं अपने को रुक्या करे, क्योंकि दूसरे व्यक्ति का दिल आम तौर पर व्यस्त होता है, और इसलिए भी कि उसकी हाज़ित और परेशानी का अन्दाज़: उसकी तरह दूसरा व्यक्ति नहीं लगा सकता, और अल्लाह तआला ने परेशान हाल व्यक्ति की दुआ स्वीकार करने का वचन दिया है।

<sup>1</sup> जिस की नज़र लगी हो उस की बची हुई कोई भी चीज़ जैसे पानी या खाने का बकाया, या छूई हुई चीज़ का बकाया लें और उसे पानी में डाल कर उस से बीमार व्यक्ति को नहलाएं और कुछ को पिलाएं।

<sup>2</sup> गांठ लगाने, फुकने या भनभनाने का अमल है जिससे मस्हूर के शरीर, दिल या अक़ल पर असर पड़ता है, और यह हक़ है, चुनान्चि कुछ जादू जान ले लेता है, कुछ बीमार कर देता है, कुछ पति को पत्नि से सम्भोग करने से रोक देता है, कुछ दोनों के बीच जुराई करा देता है, और इस में से कुछ शिर्क और कुफ़ होता तो कुछ की गिन्ती कबीरः गुनाह में होता।

<sup>3</sup> नबी ﷺ ने फर्माया : “सब से उत्तम इलाज पछना लगाना है”। और इस द्वारा अल्लाह तआला ने लिंग की कितनी बिमारियों से शिफ़ा दिया, और इसी प्रकार नज़र और जादू के कारण होने वाले केन्सर से भी शिफ़ा बख्शा।

<sup>4</sup> दीन की ओर दावत, भलाई के कर्म करने और बुराई से रुक्ने की नियत से कुर्�आन पढ़ना, और इस नियत से कुर्�आन पढ़ने का असर बहुत ज़्यादा है, अधिकतर बहुत जल्द जिन्न इस से प्रभावित होजाता है और अपनी बुराई रोगी से रोक लेता है, इस के बर खिलाफ यदि क़तल की नियत से पढ़ा जाए तो सरक्शी पर उतर आता है, और रोगी और पढ़ने वाले दोनों को हानी पहुंचाता है। नबी ﷺ का फर्मान है : “अल्लाह तआला नर्म है और नर्मी को पसन्द करता है, और नर्मी पर वह चीज़ अ़ता करता है जो कि कठोरता के कारण नहीं देता”। मुस्लिम।

**मर्की अर्थात् जिस व्यक्ति को रुक्या किया जा रहा है उस के लिए शर्तें :** ① मुस्तहब है कि वह नेक और मोमिन हो, और जिस कदर वह नेक होगा उसी कदर उसे लाभ होगा। अल्लाह तआला का फ़रमान है : ﴿وَنَزَّلَ مِنَ الْقُرْءَانِ مَا هُوَ شَفَاءٌ وَرَحْمَةٌ لِلْمُؤْمِنِينَ وَلَا يَرِيدُ الظَّالِمِينَ إِلَّا خَسَارًا﴾ “यह कुरआन जो हम उतार रहे हैं मोमिनों के लिए तो सरासर शिफ़ा और रहमत है, हाँ अत्याचारीयों को सिवाय हानि के और कोई फ़ायदा नहीं होता” ② शिफ़ा के लिए सच्चे दिल के साथ अल्लाह की ओर ध्यान लगाए रहे। ③ शिफ़ा के लिए जल्दी न करे, क्योंकि रुक्या दुआ है, और यदि उसने जल्दी मचाई तो सम्भव है कि स्वीकार न हो, नबी का फ़रमान है : “तुम में से किसी की दुआ उस समय तक स्वीकार होती है जब तक वह जल्दी न मचाए, यह न कहे मैंने दुआ की परन्तु वह स्वीकार नहीं हुई”। (बुखारी एवं मुस्लिम)

**रुक्या के तरीके :** ① हल्की थुक्थुकाहट के साथ रुक्या करना। ② बिना थुक्थुकाहट के रुक्या करना। ③ उँगली पर थुक लगाना, फिर उसमें मिट्टी मिलाना, और दर्द की जगह को उस से छूना। ④ दर्द की जगह पर हाथ फेरे और रुक्या करे।

**कुछ आयतों और हदीसों जिन से योगी को रुक्या किया जाए :** سُورَتُ-الْفَاتِحَة :

۱) ﴿اللَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ الْحَقُّ الْقِيُومُ لَا تَأْخُذْهُ سَنَةٌ وَلَا نُوْمٌ لَهُ مَا فِي السَّمَاوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ مَنْ دَأَبَ اللَّهُ يَشْفَعُ عِنْدَهُ إِلَّا بِإِذْنِهِ يَعْلَمُ مَا بَيْنَ أَيْدِيهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ وَلَا يُجِيظُونَ بِشَيْءٍ مِّنْ عِلْمِهِ إِلَّا بِمَا شَاءَ وَسَعْكُرْسِيَّهُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ وَلَا يُؤْدِهُ حِفْظَهُمْ وَهُوَ عَلَىٰ الْعَظِيمِ﴾

۲) ﴿إِنَّمَا أَرْسَلْنَا رَسُولًا مِّنْ رَبِّهِ وَالْمُؤْمِنُونَ كُلُّ أَمَانٍ بِاللَّهِ وَمَلِكِكُبَيْهِ وَكُلُّهُ وَرَسُولُهُ لَا تُنَقِّبُ بَيْنَ أَهْدِ مِنْ رَسُولِهِ وَقَاتَلُوا سَيْعَنَا وَأَطْعَنَا عَفْرَانَكَ رَبَّنَا وَإِلَيْنَا الْمَصِيرُ﴾ ۳۱۰) لَا يُكْلِفُ اللَّهُ نَفْسًا إِلَّا وَسَعَهَا لَهَا مَا كَسَبَتْ وَعَلَيْهَا مَا أَكْسَبَتْ رَبَّنَا لَا تُؤَاخِذنَا إِنْ نَسِيَّنَا أَوْ أَخْطَأْنَا أَوْ رَبَّنَا وَلَا تَحْمِلْ عَلَيْنَا إِصْرًا كَمَا حَمَلَتْهُ عَلَى الَّذِينَ مِنْ قَبْلِنَا رَبَّنَا وَلَا تَحْمِلْنَا مَا لَا طَاقَةَ لَنَا يَهُ وَأَعْفُ عَنَّا وَأَغْفِرْنَا وَأَرْحَمْنَا أَنْتَ مَوْلَانَا فَانْصُرْنَا عَلَى الْقَوْمِ الْكَافِرِينَ﴾

۳) ﴿فَسَيَّكُفِيَّكُمْ أَللَّهُ وَهُوَ الْتَّعْمِيُّ الْمَكِيلُ﴾

۴) ﴿يَقُولُ مَنْ أَجْبَيْوْا دَاعِيَ اللَّهِ وَأَمْنَوْا يَهُ يَغْزِرْ لَكُمْ مِنْ دُنْوِيُّكُمْ وَجُنُونِكُمْ مِنْ عَذَابِ أَلِيُّرِ﴾ ۱) ﴿وَنَزَّلَ مِنَ الْقُرْءَانِ مَا هُوَ شَفَاءٌ وَرَحْمَةٌ لِلْمُؤْمِنِينَ وَلَا يَرِيدُ الظَّالِمِينَ إِلَّا خَسَارًا﴾

۱) **आयतु-लू-कुर्सी :** “अल्लाह तआला ही सत्य माबूद है जिसके सिवा कोई माबूद नहीं जो जिंदा और सबका थामने वाला है, जिसे न ऊँध आए न नींद। उसकी मिलकियत में ज़मीन और आस्मान की तमाम चीजें हैं। कौन है जो उसकी इजाज़त के बगैर उसके सामने सिफारिश कर सके, वह जानता है जो उनके सामने है और जो उनके पीछे है, और वह उसके इत्तम में से किसी चीज़ का इहाता (धेरा) नहीं कर सकते मगर जितना वह चाहे। उसकी कुर्सी की वुस्अत (परिधि) ने ज़मीन व आस्मान को धेर रखा है। और अल्लाह तआला उनके हिफ़ाज़त से न थकता और न उकाता है। वह तो बहुत बुलंद और बहुत बड़ा है।” {सूरह अलबकरा: २५५}

۲) **सुरतु-लू-बक़:** की आखिरी दोनों आयतें : “रसूल ईमान लाया उस चीज पर जो उसकी तरफ अल्लाह तआला की ओर से उतरी और मुमिन भी ईमान लाए। यह सब अल्लाह तआला और उसके फ़रिश्तों पर और उसकी किताबों पर और उसके रसूलों पर ईमान लाए, उसके रसूलों में से किसी में हम तफ़्रीक नहीं करते। उन्होंने कह दिया कि हमने सुना और इत्ताअत (अनुकरण) की। हम तेरी बख़्शिश (क्षमा) तलब करते हैं ऐ हमारे रब! और हमें तेरी ही तरफ लौटना है। अल्लाह तआला किसी जान को उसकी ताक़त से ज़्यादा तक्तीफ नहीं देता। जो नेकी वह करे वह उसके लिए और जो बुराई वह करे वह उस पर है। ऐ हमारे रब! अगर हम भूल गए हूँ या ग़लती की हो तो हमें न पकड़ना। ऐ हमारे रब! हम पर वह बोझ न डाल जिसकी हमें ताक़त न हो, और हमसे दरगुज़र फरमा, और हमें बर्खा दे, और हम पर रहम कर, तू ही हमारा मालिक है, हमें काफ़िरों की कौम पर ग़ल्बा प्रदान कर।” {सूरह अलबकरा: २८५-२८६}

۳) “अल्लाह तआला उनसे अङ्गरीब किफ़ायत करेगा, और वह ख़ूब सुनने वाला और जानने वाला है।” {सूरह अलबकरा: १३७}

۴) “ऐ हमारी कौम! अल्लाह के बुलाने वाले का कहा मानो, उस पर ईमान लाओ तो अल्लाह तुम्हारे गुनाह बख़्श देगा और तुम्हें दर्दनाक अङ्गाब से पनाह देगा।” {सूरह अलअहक़फ़: ३७}

وَإِذَا مَرَضْتُ فَهُوَ يَشْفِيْتُ<sup>٣</sup> أَمْ يَحْسُدُونَ النَّاسَ عَلَى مَا أَنْتُمْ أَهْلَهُ مِنْ قَضَائِيْلِهِ<sup>٤</sup>  
 قُلْ هُوَ لِلَّهِ بِأَمْنَوْهُدُّى وَشَفَاءُ<sup>٥</sup> وَيَسْفِيْرُ صَدْرَ قَوْمٍ مُّؤْمِنِيْنَ<sup>٦</sup>  
 فَلَرْجِعُ الْبَصَرَ هَلْ رَأَى مِنْ فُطُورِ<sup>٧</sup> لَوْ أَنْزَلْنَا هَذَا الْقُرْءَانَ عَلَى جَبَلٍ لَرَأَيْتَهُ  
 وَإِنْ يَكُدُّ الَّذِينَ كَفَرُوا لِيُزَلْفُونَكَ بِأَبْصَرِهِ لَمَّا سَمِعُوا الدِّرْكَ وَقُولُونَ إِنَّهُ مُلْجَنُونَ<sup>٨</sup>  
 وَأَوْحَيْنَا إِلَى مُوسَى أَنَّ الْقِعَادَكَ إِذَا هِيَ تَلَقَّفُ مَا يَأْفِيْكُونَ<sup>٩</sup> فَوْقَ الْحَقِّ وَبَطْلَ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ<sup>١٠</sup> فَغَلِبُوا<sup>١١</sup>  
 قَالُوا يَسْوَئِنَا إِمَّا أَنْ تُلْقِيَ وَإِمَّا أَنْ تَكُونَ أَوْلَى مِنَ الْقَنِيْ<sup>١٢</sup> قَالَ بَلْ أَلْقَوْا فَإِذَا حَاجَهُمْ وَعَصَيْهُمْ يَخْلُلُونَهُ مِنْ  
 سِرْخِرِهِمْ أَنَّهَا تَسْعَي<sup>١٣</sup> فَأَوْجَسَ فِي نَفْسِهِ خِيفَةً مُّوسَى<sup>١٤</sup> قَلَّا لَا تَخْفَ إِنَّكَ أَنْتَ الْأَعْلَى<sup>١٥</sup> وَالْقِرْمَافِي  
 يَمِينِكَ نَلَقَفْ مَا صَنَعْنَا إِنَّمَا صَنَعْنَا كِيدَ سَحْرٍ وَلَا يَقْلِمُ السَّاحِرُ حَيْثُ أَتَى<sup>١٦</sup>  
 أَنْزَلَ اللَّهُ سَكِينَتَهُ عَلَى رَسُولِهِ وَعَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ<sup>١٧</sup>  
 فَأَنْزَلَ اللَّهُ سَكِينَتَهُ عَلَيْهِ وَأَيْدِيهِ بِجُنُودِهِ لَمْ تَرُوهُ<sup>١٨</sup>  
 فَأَنْزَلَ اللَّهُ سَكِينَتَهُ عَلَى رَسُولِهِ وَعَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ وَالْأَرْمَهُمْ كَلِمَةَ الْقَوْى<sup>١٩</sup>  
 لَقَدْ رَضِيَ اللَّهُ عَنِ الْمُؤْمِنِيْنَ إِذْ يَأْبِيْعُونَكَ تَحْتَ الشَّجَرَةِ فَلَمْ مَا فُلُوْهُمْ فَأَنْزَلَ السَّكِينَتَهُ عَلَيْهِمْ وَأَنْتُمْ فَتَحَاقِيْبِيَا<sup>٢٠</sup>  
 هُوَ الَّذِي أَنْزَلَ السَّكِينَتَهُ فِي قُلُوبِ الْمُؤْمِنِيْنَ لِيَرْدَادُوا إِيمَانَنَا مَعَ إِيمَانِهِمْ<sup>٢١</sup>

١ “यह कुरूआन जो हम उतार रहे हैं मोमिनों के लिए तो सरासर शिफा और रहमत है, हाँ अत्याचारियों को सिवाय हानि के और कोई फायदा नहीं होता।” [सूरतु बनी इम्राइल: ८२]

2 “या यह लोगों से हसद करते हैं उस पर जो अल्लाह तआला ने अपने फ़ज्ल से उन्हें दिया है।” [सूरतु निसा: ५४]

3 “और जब मैं बीमार पड़ जाऊं तो मुझे शिफा अ़ता फरमाता है।” [सूरतु शुशुअ़ा: ८०]

4 “और मुसलमानों के कलाजे ठंडे करेगा।” [सूरतु तौबा: ९४]

5 “आप कह दीजिए कि यह तो ईमान वालों के लिए हिदायत व शिफा है।” [सूरतु फुस्सिलत: ४४]

6 “अगर हम इस कुरूआन को किसी पहाड़ पर उतारते तो तू देखता कि अल्लाह के डर से वह पस्त होकर टुकड़े टुकड़े हो जाता।” [सूरह अलूहश्र: २९]

7 “दोवारा (नज़े़े डाल कर) देख ले क्या कोई शिगाफ (चीर) भी नज़र आ रहा है?” [सूरह अल्मुल्क: ३]

8 “और करीब है कि काफिर अपनी तेज़ निगाहों से आपको फुसला दें, जब कभी कुरूआन सुनते हैं और कह देते हैं यह तो जरूर दीवाना है।” [सूरह अल्कलम: ५१]

9 “और हमने मूसा (صلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ) को हुक्म दिया कि अपनी लाठी डाल दीजिए! सो लाठी का डालना था कि उसने उसके सारे बने बनाए खेल को निगलना शुरू किया। पस हक्क ज़ाहिर हो गया और उन्होंने जो कुछ बनाया था सब जाता रहा। पस वह लोग इस मौके पर हार गए और ख़बूब ज़लील होकर फिरे।” [सूरह अलूआराक़: ९९-९९]

10 “कहने लगे कि ऐ मूसा! या तो तू पहले डाल या हम पहले डालने वाले बन जायें। जवाब दिया कि नहीं तुम ही पहले डालो। अब तो मूसा (صلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ) को यह ख्याल गुज़रने लगा कि उनकी रसियाँ और लकड़ियाँ उनके जादू के ज़ोर से दौड़ भाग रही हैं। पस मूसा (صلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ) ने अपने दिल ही दिल में डर महसूस किया। हमने फरमाया: कुछ डर न कर, यकीनन तू ही ग़ालिब और बरूर (बढ़ कर) रहेगा। और तेरे दायें हाथ में जो कुछ है उसे डाल दे कि उनकी तमाम कारिगरी को निगल जाए, उन्होंने जो कुछ बनाया है यह सिर्फ जादूगरों के करतब हैं, और जादूगर कहीं से भी आए कामियाब नहीं होता।” [सूरतु ताहा: ६५-६६]

11 “फिर अल्लाह ने अपनी तरफ से तस्कीन (शांति) अपने नबी पर और मुमिनों पर उतारी।” [सूरतु तौबा: २६]

12 “पस अल्लाह तआला ने अपनी तरफ से तस्कीन (शांति) उस पर नाज़िल फरमा कर उन लश्करों से उसकी मदद की जिन्हें तुमने देखा ही नहीं।” [सूरतु तौबा: ४०]

13 “सो अल्लाह तआला ने अपने रसूल पर और मुमिनों पर अपनी तरफ से तस्कीन (शांति) नाज़िल फरमाई, और अल्लाह तआला ने मुसलमानों को तक्बे (संयम) की बात पर जमाए रखा।” [सूरह अलफ़तः: २६]

14 “यकीनन अल्लाह तआला मुमिनों से खुश हो गया जबकि वह दरख़त (वृक्ष) तले तुझसे बैअत कर रहे थे, उनके दिलों में जो था उसे उसने मालूम कर लिया और उन पर सुकून व इत्मीनान नाज़िल फरमाया और उन्हें करीब की फतह इनायत फरमाई।” [सूरह अलफ़तः: १८]

15 “वही है जिसने मुसलमानों के दिलों में सुकून डाल दिया, ताकि अपने ईमान के साथ ही साथ और भी ईमान में बढ़ जायें।” [सूरह अलफ़तः: ४]

سُورٰتُ-لُّو-کا فِرِن سُورٰتُ-لُّو-إِخْلَاس سُورٰتُ-لُّو-فَلَك سُورٰتُ-نُّ-نَّا س اُور یہ آیاتے  
اوہر یہ ہڈیں :

أَسْأَلُ اللَّهَ الْعَظِيمَ رَبَّ الْعَرْشِ الْعَظِيمِ أَنْ يَشْفِيَكَ  
رَبَّ الْأَرْضِ-لُّو-أَجْزِيَم، إِنْ يَشْفِيْكَ” 7 بار ।

”أُعِيدُك بِكَلِمَاتِ اللَّهِ التَّامَةِ مِنْ كُلِّ شَيْطَانٍ وَهَامَةٍ وَمِنْ كُلِّ عَيْنٍ لَامَةٍ  
بِكَلِمَاتِ اللَّهِ التَّامَةِ مِنْ كُلِّ شَيْطَانٍ وَهَامَةٍ وَمِنْ كُلِّ عَيْنٍ لَامَةٍ  
بِكَلِمَاتِ اللَّهِ التَّامَةِ مِنْ كُلِّ شَيْطَانٍ وَهَامَةٍ وَمِنْ كُلِّ عَيْنٍ لَامَةٍ  
اللَّهُمَّ رَبَّ النَّاسِ أَذْهِبِ الْبَأْسَ وَأَسْفِ أَنْتَ الشَّافِي لَا شَفَاءَ إِلَّا شَفَاؤُكَ شَفَاءً لَا يُغَادِرُ سَقَمًا  
”اَللّٰهُمَّ اُحْمِمْ رَبْنَانَا سِ اَجْنِبِلْبَّا سَ وَشَفِ اَنْتَ شَفَاءُ اَنْتَ شَفَاءُ لَا يُغَادِرُ سَقَمًا  
”اَللّٰهُمَّ رَبَّ النَّاسِ اَذْهِبِ الْبَأْسَ وَأَسْفِ أَنْتَ الشَّافِي لَا شَفَاءَ إِلَّا شَفَاؤُكَ شَفَاءً لَا يُغَادِرُ سَقَمًا । 3 بار ।

”اَللّٰهُمَّ اُحْمِمْ رَبْنَانَا سِ اَجْنِبِلْبَّا سَ وَشَفِ اَنْتَ شَفَاءُ اَنْتَ شَفَاءُ لَا يُغَادِرُ سَقَمًا  
”اَللّٰهُمَّ اُحْمِمْ رَبْنَانَا سِ اَجْنِبِلْبَّا سَ وَشَفِ اَنْتَ شَفَاءُ اَنْتَ شَفَاءُ لَا يُغَادِرُ سَقَمًا  
”اَللّٰهُمَّ اُحْمِمْ رَبْنَانَا سِ اَجْنِبِلْبَّا سَ وَشَفِ اَنْتَ شَفَاءُ اَنْتَ شَفَاءُ لَا يُغَادِرُ سَقَمًا । 1 بار ।

”اَللّٰهُمَّ اُحْمِمْ رَبْنَانَا سِ اَجْنِبِلْبَّا سَ وَشَفِ اَنْتَ شَفَاءُ اَنْتَ شَفَاءُ لَا يُغَادِرُ سَقَمًا  
”اَللّٰهُمَّ اُحْمِمْ رَبْنَانَا سِ اَجْنِبِلْبَّا سَ وَشَفِ اَنْتَ شَفَاءُ اَنْتَ شَفَاءُ لَا يُغَادِرُ سَقَمًا  
”اَللّٰهُمَّ اُحْمِمْ رَبْنَانَا سِ اَجْنِبِلْبَّا سَ وَشَفِ اَنْتَ شَفَاءُ اَنْتَ شَفَاءُ لَا يُغَادِرُ سَقَمًا । 7 بار ।

”بِسْمِ اللَّهِ أَرْقِيْكَ مِنْ كُلِّ دَاءٍ يُؤْذِيْكَ وَمِنْ شَرِّ كُلِّ نَعْصِيْ أَوْ عَيْنٍ حَاسِدٍ، اللَّهُ يَشْفِيْكَ بِسْمِ اللَّهِ أَرْقِيْكَ  
”بِسْمِ اللَّهِ أَرْقِيْكَ مِنْ كُلِّ دَاءٍ يُؤْذِيْكَ وَمِنْ شَرِّ كُلِّ نَعْصِيْ أَوْ عَيْنٍ حَاسِدٍ، اللَّهُ يَشْفِيْكَ بِسْمِ اللَّهِ أَرْقِيْكَ  
”بِسْمِ اللَّهِ أَرْقِيْكَ مِنْ كُلِّ دَاءٍ يُؤْذِيْكَ وَمِنْ شَرِّ كُلِّ نَعْصِيْ أَوْ عَيْنٍ حَاسِدٍ، اللَّهُ يَشْفِيْكَ بِسْمِ اللَّهِ أَرْقِيْكَ । 3 بار ।

”دُو:خ دُو:خ کی جگہ تُوم اپنے ہادھ کو رکھو اور 3 بار ”بِسْمِ اللَّهِ“ ہے۔ کہہ اور  
7 بار یہ دُو:خ پڑھو : ”أَعُوذُ بِعَزَّةِ اللَّهِ وَقُدْرَتِهِ مِنْ شَرِّ مَا أَجِدُ وَأَحَادِرُ : ”اَنْتُجُو بِسْمِ اللَّهِ أَرْقِيْكَ  
”اَنْتُجُو بِسْمِ اللَّهِ أَرْقِيْكَ مِنْ كُلِّ دَاءٍ يُؤْذِيْكَ وَمِنْ شَرِّ کُلِّ نَعْصِيْ أَوْ عَيْنٍ حَاسِدٍ ।“ 3 بار ।

### نُٹ :

① بُوری نجّار والے کے بارے مें پ्रसिद्ध خुराफ़ات کी پुष्टि کرنا جایوج़ نہیں ہے । جैسا کि  
उس کا پेशाब پینا یا یہ کہنا کि یادی یہ کہنا جانکاری ہو جائے تو اسکا پ्रभाव نہیں ہوگا ।

② کیسی و्यक्तی کو بُوری نجّار سے بچانے کے لیए چمडے کی تا'वीज़ پہنانا، یا یہ کہان  
یا ڈو:رے وغیر: کا ہار پہنانا جایوج़ نہیں ہے । نبی ﷺ کا فرمان ہے : ”جیس نے کوئی  
چیز لٹکایا تو وہ یہ کہانے کے ہو جائے ہے“ । (تیرمیذ) اور یادی کو رآنی تا'వیج़  
ہو تو اسکے بارے مें متابہد ہے، پرانے اس سے دُو:ر رہنا ہی بہتر ہے ।

③ بُوری نجّار سے بچانے کے لیए ماسا اَللّٰهُمَّ، تَبَارَكَ اللَّهُ أَكْبَرُ، لیخنے، یا تلواہ، یا چूری، یا  
اُنچ وغیر: کا فوتے بنانے، یا گاڈی مें کو رآن رکھنے، یا گھر مें کو رآنی آیاتو: کا  
کوئی لٹکانے کا کوئی فایدا نہیں ہے، اس سے بُوری نجّار تالی نہیں جا سکتی بلکہ اس  
کرنا ہرام تا'వیج़ کے چپے مें بھی آ سکتا ہے ।

④ روگی پر واجیب ہے کि رُکْبَا سَمَّیْکار ہونے پر ویشواس رکھو، اور شِفَاء کے لیए جلدی  
ن مچاۓ، یادی یہ کہانے سے یہ بات کہہ گئی ہوئی کि نیروگ ہونے کے لیए جیوان بھر دوا خانا  
ہے تو یہ کہانے کے لیए جلدی کوئی کوئی ہی دینو: کے رُکْبَا سے وہ یکتا جاتا ہے، ہالانکی  
ہر ہُر کی تیلابت کے بدلے یہ کہانے کے لیए نیکی میلتی ہے، اور نیکی بھی دس گُناہ جُنہا شِفَاء کے  
ساتھ، لیہا جا وہ دُو:خ کرے، اَللّٰهُمَّ سے مافی مانگو، اور اधیک سدکا کرے؛ کیونکی اس  
کیوں سے بھی شِفَاء پُراست کی جاتی ہے ।

⑤ اِنجِتما: رُسَم مें پڑھنا سُونت کے خیلाफ ہے، اسکے بارے مें آئی ہوئی ریوایت جِریف ہے، اور  
یہ ترہ رُکْبَا کی خاتم ماتر کے سے دُو:ر تیلابت سُونت بھی سہی ہے، کیونکی اس میں نیت  
نہیں ہے پاتی ہے؛ جبکہ راکی کے لیए نیت شرط ہے । اور نیروگ ہونے تک باربار رُکْبَا کرنا

मस्नून है, परन्तु परेशानी होती हो तो कम मात्रा में करे ताकि उकताहट न हो। और यह बात भी ध्यान में रहे कि किसी आयत या दुआ को बिना प्रमाण के खास संख्या में पढ़ना जायज़ नहीं है।

**⑥** कुछ निशानियां ऐसी होती हैं जिन से रुक्या की खातिर राकी का कुरआन के बजाए जादू से सहारा लेने की पुष्टि होती है; लिहाज़ा ऐसे व्यक्ति की जाहिरी दीनदारी से धोके में न आना, वह रुक्या को कुरआन द्वारा आरम्भ तो करता है लेकिन बीच में ही पटरी बदल लेता है, वह लोगों को धोके में रखने के लिए मस्जिद भी जाया करता है, उनके सामने अधिकतर ज़िक्र भी करता है, मगर यह मात्र दिखलावा होता है; लिहाज़ा ऐसे लोगों से होश्यार रहना।

**जादूणराँ और नज़्रबाज़ों की बिशानियां :** ★ रोगी से उसका नाम या उसकी मां का नाम पूछना; क्योंकि नाम की जानकारी का प्रभाव इलाज पर नहीं पड़ता है। ★ रोगी का कपड़ा मांगना, जैसे उसकी बनियान या कुर्ता आदि। ★ कभी वह रोगी से किसी ख़ास प्रकार का जानवर जिन के लिए ज़बह करने की मांग करता है। और कभी कभार उसी जानवर के खून को रोगी के शरीर पर लगाता है। ★ ऐसे तलासिम लिखना या पढ़ना जो समझ में न आएं और न ही उनका कोई अर्थ हो। ★ रोगी को ऐसी तावीज़ देना जिसमें खानों के अन्दर ह़र्फ़ और नम्बर लिखवे गए हों, जिसे हिजाब कहा जाता है। ★ रोगी को कुछ समय के लिए अंधेरे रुम में अकेले रहने का आदेश देना, और इसे ह़ज्बा बोलते हैं। ★ रोगी को कुछ समय के लिए पानी छूने से रोक देना। ★ दफ़न करने के लिए रोगी को कोई चीज़ देना, या जलाकर धूई लेने के लिए काग़ज़ देना। ★ रोगी की कुछ ऐसी निजी बातें बताना जिसके बारे में रोगी के सिवा कोई दूसरा न जानता हो, या उसके कछ कहने से पहले उसके नाम गाँव और बीमारी के बारे में बताना। ★ मात्र रोगी के आने, या उस से टेलीफ़ोन द्वारा बात करने, या उस की चिट्ठी पढ़ने से रोगी की ह़ालत का अन्दाज़़ लगाना।

**⑦** अहले सुन्नत का मज़हब यह है कि जिन्नात इन्सान पर सवार हो जाते हैं, जैसा कि उसका चर्चा कुर्अन की इस आयत में है :

﴿أَلَّذِينَ يَأْكُلُونَ أَرْبَوَا لَا يَقُومُونَ إِلَّا كَمَا يَقُومُ الْدَّاعِيَ بِتَخْبِطَهُ الشَّيْطَنُ مِنَ الْمَسِ﴾ “सूद खाने वाले लोग उसी तरह खड़े होंगे जिस तरह शैतान का छूया हुवा मद्होश व्यक्ति खड़ा होता है।” इस आयत के बारे में मुफ़रिसरीन का इज्मा’अू है कि आयत में मस्स से मुराद शैतानी दीवानापन है जो इन्सान पर शैतान के सवार होने के कारण तारी होता है।

**जादू :** जादू मौजूद है, और कुरआन और हडीस द्वारा इसका प्रभाव साबित है, यह हराम है, और बड़े गुनाहों में इसका शुमार है, नबी ﷺ का फ़रमान है : “ सात हलाक कर देने वाले गुनाहों से बचो, लोगों ने पूछा : यह गुनाह कौन से हैं? तो आप ने फ़रमाया: “अल्लाह के साथ शिर्क करना, और जादू ... ”। बुख़री और मुस्लिम। और अल्लाह तआला का फ़रमान है : **﴿وَلَقَدْ عَلِمُوا لَمَنْ أَشَرَّهُمْ مَالَهُ فِي الْآخِرَةِ مِنْ خَلْقِهِ﴾** और वे अवश्य यह जानते हैं कि उसे अपनाने वाले का आखिरत में कोई हिस्सा नहीं। और इस की दो किस्में हैं : गांठ लगा कर और पूँक कर जादूगर का मस्हूर (जिसे जादू किया गया हो) को तकलीफ़ पहुंचाने के लिए शैतान को प्रयोग करना। ऐसी दवाएं जो मस्हूर के शरीर, अक़ल, इरादे और मैलान को प्रभावित करे, और इसे सर्फ़ और अ़त्फ़ कहाजाता है, चुनान्चि इस के कारण मस्हूर को ऐसा लगने लगता कि यह चीज़ पलट गई, या हिल रही है, या चल रही है इत्यादि। तो पहली किस्म शिर्क है इसलिए कि शैतान उस समय तक जादूकर की नहीं मानता जब तक कि वह शिर्क न करे, और दूसरी किस्म हलाकत में डालने वाला बड़ा गुनाह है, और यह सारी चीज़ें अल्लाह तआला की अनुमती से होती है।

## दुआः

सारी मख्लूक अल्लाह की और उन नेमतों और कृपाओं का मुहत्ताज है जो अल्लाह के पास हैं, और अल्लाह सब से बेनियाज़ है, वह किसी का भी मुहत्ताज नहीं, उसने अपने बन्दों पर दुआ वाजिब किया है। उसका फरमान है : “मुझे को पुकारो मैं तुम्हारी दुआ स्वीकार करूंगा, बेशक जो लोग मेरी इबादत से (अर्थात् मुझे पुकारने से) सरक्षी करेंगे वह जल्द ही अपमानित होकर जहन्नम में पहुंच जाएंगे”। और नबी ﷺ ने फरमाया : “जो व्यक्ति अल्लाह से नहीं मांगता है तो अल्लाह उससे नाराज़ हो जाता है”। इसके साथ यह भी जान लीजिए कि अल्लाह तआला अपने बन्दों के सवाल से खुश होता है, और आजिज़ी और मिन्नत करने वालों को पसन्द करता और उन्हें अपने करीब कर लेता है, सहाबए किराम इस वास्तविकता को अच्छी तरह जानते थे, इसी लिए वह छोटी से छोटी चीज़ भी अल्लाह तआला से मांगते थे। और किसी मख्लूक के सामने मांगने के लिए हाथ नहीं फैलाते थे, और ऐसा मात्र इस कारण था कि उनका सम्बन्ध अपने रब से था, वह उसके करीबी थे, और वह उनका करीबी था, और जब बात ऐसी थी तो क्योंकर ऐसा न होता, अल्लाह तआला का फरमान है : “ऐ नबी! जब मेरे बन्दे मेरे बारे में पूछें, तो मैं करीब हूँ”।

अल्लाह तआला के नज़दीक दुआ की बहुत अहमियत है, दुआ अल्लाह के नज़दीक सर्वाधिक सम्मानित है, दुआ कभी कभी क़ज़ा को भी फेर देती है, और मुसलमान की दुआ ज़खर स्वीकार की जाती है, बशर्तेकि दुआ क़बूल किए जाने के अस्बाब पाए जाएं और कोई चीज़ उसे क़बूल होने से न रोके, और उसे तीन बातों में से कोई न कोई एक चीज़ ज़खर दी जाती है, जैसा कि तिर्मिजी और अहमद की रिवायत है : “जो भी मुस्लिम व्यक्ति ऐसी दुआ करता है जिसमें गुनाह और रिश्ते तोड़ने की बात न हो तो अल्लाह तआला उसे तीन में से एक चीज़ अंता करता है : या तो उसकी मांगी हूँ चीज़ उसे दुनिया ही में दे दी जाती है। या आखिरत में ज़खीरा के तौर पर उसके लिए इकट्ठा कर देता है। या उसी की तरह कोई मुसीबत उस से टाल देता है” सहाबए किराम ने कहा : फिर तो हम अधिक से अधिक दुआ किया करें, तो नबी ﷺ ने फरमाया : “अल्लाह उस से भी अधिक देने वाला है”।

**दुआ की किस्में :** दुआ की दो किस्में हैं : ① दुआए इबादत, जैसे नमाज़, रोज़ा। ② दुआए हाजत और त़लब।

**आम्ल की आपस में एक दूसरे पर फ़ज़ीलत (श्रेष्ठता)** : क्या कुरआन पढ़ना अफ़ज़ल (श्रेष्ठ) है या ज़िक्र व अ़ज़कार या दुआ? उत्तर : कर्मों में सब से उत्तम कर्म कुरआन मजीद की तिलावत है, फिर ज़िक्र व अ़ज़कार, फिर दुआ, यह एक इज्माली जवाब है, और कभी-कभार कम-तर चीज़ कुछ साधनों के कारण अपने से श्रेष्ठ से भी उत्तम होजाती है, जैसे अरफ़ा के दिन की दुआ कुरआन की तिलावत से उत्तम है, और फ़र्ज़ नमाज़ों के बाद हड़ीसों में आए हुए ज़िक्र व अ़ज़कार करना कुरआन की तिलावत से उत्तम है।

**दुआ स्वीकार होने के अस्त्वाब** : दुआ क़बूल होने के दो साधन हैं :

① **ज़ाहिरी अस्त्वाब** : जैसे दुआ से पहले सद्क़ा, वुजू और नमाज़ जैसी कोई नेक काम करना, या किल्ला की तरफ चेहरा करके दुआ करना, या दोनों हाथों को उठाकर दुआ करना, या दुआ से पहले अल्लाह तआला की ऐसी तारीफ करना जिसका वह ह़क्कदार है, या उसके अस्माए हुस्ना व सिफाते उला (ऐसे नामों और गुणों) से दुआ करना जो दुआ की जाने वाली चीज़ के मुनासिब हों, जैसे जन्नत मांगने की दुआ हो तो गिड़गिड़ा कर उसकी रहमत और कृपा के माध्यम से दुआ करे, और किसी अपराधी पर बद्र-दुआ हो तो उसके नामों में रहमान और रहीम के बजाए जब्बार, क़ह्वार, और अज़ीज़ इत्यादि नामों से दुआ करे। इसी तरह इन ज़ाहिरी साधनों में से यह भी है : दुआ के आरम्भ, बीच और अन्त में नबी पर दख्ल भेजना,

गुनाहों को स्वीकारना, अल्लाह की नेमतों पर उसका शुक्रिया अदा करना, फुज़ीलत के प्रमाणित समय को गूनीमत जानना, जो कि बहुत है, जिन में से कुछ का चर्चा यहाँ किया जा रहा है।

\* **रात और दिन में :** रात में पिछले पहर की दुआ जिस समय अल्लाह तआला संसार वाले आकाश पर उतरता है। इसी तरह अज़ान और इकामत के बीच की दुआ, बुजू के बाद, सज्दे में, नमाज़ में सलाम से पहले और सलाम के बाद, कुर्अन ख़त्म करते समय, मुर्ग के बांग के समय, यात्रा के समय की दुआ, मज्जूम तथा परीशान हाल की दुआ, वालिदैन की अपनी औलाद के लिए दुआ, मुस्लिम व्यक्ति का अपने भाई के लिए दिल की गहराई से की जाने वाली दुआ, और युद्ध में से लड़ते समय की दुआ। \* **सप्ताह में :** जुम्मा के दिन की दुआ, और खास कर ऑन्टिम पल में की जाने वले दुआ। \* **महीने में** रम्ज़ान में सहरी और इफ्तार के समय की दुआ, शबे कद्र की दुआ, अरफा के दिन की दुआ। \* **पवित्र स्थान पर** की जाने वाली दुआ : मस्जिदों में की जाने वाली दुआ, काबा, और खासकर मुल्तज़म और मकामे इब्राहीम के पास की दुआ, सफा और मर्वा पर, और हज्ज के दिनों में अरफ़ात, मुज्दलिफ़ा, और मिना की दुआ, और ज़म़्ज़म पीते समय की दुआ .... इत्यादि।

② **अन्दरूनी (भीत्री) अस्तबाब :** जैसे दुआ से पहले सच्चे दिल से सच्ची तौबा करना, किसी की नाहक ली हूई चीज़ लौटा देना, खाने, पीने, पहनने, और रिहाइश इत्यादि में पवित्रता का ध्यान देना, और इनके लिए हळाल कर्माई प्रयोग करना, अधिकतर नेकी और फर्माबदारी के काम करना, हराम चीज़ों से बचना, और शक और शहवत वाली चीज़ों से दूर रहना। **और दुआ करते समय :** दिल हाजिर करके अल्लाह की ओर ध्यान देना, अल्लाह पर भरोसा करना, उससे आशा करना, और उसी की ओर पनाह पकड़ना, उसके सामने गिड़गिड़ाना, मिन्नत करना, अपने सारे काम उसी के हवाले करना, और दूसरों की ओर से ध्यान हटाकर उसी की तरफ ध्यान स्थिर करना, और दुआ कबूल होने का विश्वास रखना।

**दुआ के कबूल होने से दोकने वाली चीज़ें :** कभी-कभार इन्सान दुआ करता है परन्तु उसकी दुआ कबूल नहीं होती, या देरी से कबूल होती है, इसके भी बहुत से कारण हैं जिन्में से कुछ का चर्चा यहाँ किया जा रहा है : \* दुआ में अल्लाह के साथ किसी दूसरे को साझी करना। \* बिला वजह की तफ़सील करना, जैसे जहन्नम की गर्मी, उसकी तंगी, और उसके अन्धेरों से पनाह मांगना, जब्कि मात्र जहन्नम से पनाह मांगना काफी है। \* मुसलमान का अपने ऊपर या नाहक किसी दूसरे को शाप देना। \* पाप और नातेदारी तोड़ने की दुआ करना। \* दुआ को चाहत पर छोड़ना, जैसे यूँ कहना : ऐ अल्लाह यदि तेरी चाहत हो तो मुझे माफ़ कर। या इस तरह के शब्दों द्वारा दुआ करना। \* दुआ स्वीकार होने में जल्दी करना, जैसे यह कहना कि मैंने दुआ की लेकिन मेरी दुआ कबूल नहीं हूई। \* थक और उक्ता कर दुआ करना छोड़ देना। \* बिना मन के लापर्वाही के साथ दुआ करना। \* जल्दबाज़ी और अल्लाह के सामने बे-अद्वीती के साथ दुआ करना, नबी करीम ﷺ ने एक व्यक्ति को नमाज़ में दुआ करते सुना, उसने न तो अल्लाह का प्रशंसा किया और न ही नबी ﷺ पर दर्शद भेजा, तो आप ﷺ ने फ़रमाया: उसने जल्दबाज़ी से काम लिया, फिर आप ﷺ ने उसे बुलाया और उससे फ़रमाया : “जब तुम में से कोई नमाज़ पढ़े तो पहले अल्लाह की तारीफ और सना करे, फिर नबी ﷺ पर दर्शद भेजे, फिर जो चाहे दुआ करे”। (अबू दाऊद और तिर्मिज़ी) \* किसी ऐसी चीज़ की दुआ करना जिसका फैसला होचुका है : जैसे हमेशा दुनिया में रहने की दुआ करना। \* इसी तरह दुआ में काफ़ियादार मुसज्ज़अू इबारत का कष्ट करना : अल्लाह तआला का फ़रमान है : “तुम अपने रब से दुआ किया करो गिड़गिड़ाकर भी और चुपके चुपके

भी वास्तवमें अल्लाह तआला ऐसे लोगों को नापसन्द करता है जो सीमा पार कर जाएं। और इन्हे अब्बास ﷺ ने फरमाया : “सजअू और क़ाफिया बन्दी देखो तो उससे बचो, क्योंकि मैंने अल्लाह के रसूल ﷺ और आपके साथियों ﷺ को उससे बचते हुए ही पाया है”। (बुखारी) ★ और बहुत ऊँची और बहुत धीमी आवाज़ में दुआ करना। अल्लाह तआला का फरमान है :

﴿وَلَا يَجِدُهُمْ بِصَلَاتِكَ وَلَا تَخَافُنَّهُمْ﴾ “न तौ तू अपनी नमाज़ बहुत ऊँची आवाज़ से पढ़ और न ही एकदम धीमी। आइशा رضي الله عنها फरमाती हैं कि यह आयत दुआ के बारे में उतरी है।

**मुस्तहब्ब है कि आदमी इस तरतीब के साथ दुआ करें :** ① पहले अल्लाह तआला की तारीफ करें। ② फिर नबी ﷺ पर दस्त भेजें। ③ फिर अपने पाप से तौबा करें, और उन्हें स्वीकार करें। ④ अल्लाह की नेमतों पर उसका शुक्रिया अदा करें। ⑤ फिर जामेअू और नबी ﷺ से प्रमाणि दुआओं द्वारा दुआ करें। ⑥ नबी ﷺ पर दस्त भेज कर दुआ ख़त्म करें।

### कुछ अहम दुआएं

दुआ की मुनासबत		नबी ﷺ की दुआएं :
सोने से पहले और बाद की दुआ		यह दुआ पढ़ कर सोएँ : «بِسْمِ اللَّهِ الْمُكَبِّرِ أَمُوتُ وَأَحْيَا» । <sup>1</sup> और जगने के बाद यह दुआ पढ़ें : «الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي أَحْيَانَا بَعْدَمَا أَمَاتَنَا وَإِلَيْهِ النُّشُورُ» । <sup>2</sup> अल्लाहू लिल्लाहित्तामाति मिन् ग़ज़िबी, व मिन् शर्ि इबादिही, व मिन् हमजातिशशयातीनि व ऐंयद्युरुल्लू । <sup>3</sup>
जो व्यक्ति नींद में घबरा जाए		“أَعُوذُ بِكَلِمَاتِ اللَّهِ التَّامَّاتِ مِنْ عَصَبِيَّةٍ وَعَقَابِيَّةٍ، وَمِنْ شَرِّ عِنَادِيَّةٍ، وَمِنْ هَمَزَاتِ الشَّيَاطِينِ، وَأَنْ يَجْعُضُرُونَ” । <sup>4</sup>
जब सपना देखे		“जब तुम में से कोई व्यक्ति अच्छा सपना देखे तो यह अल्लाह की ओर से है, इसलिए इस पर अल्लाह की तारीफ करें, और लोगों को इसे बताएं, और यदि अप्रिय सपना देखे तो उस की बुराई से पनाह मांगें, और इसे किसी को न बताएं; तो वह उसे हानि नहीं पहंचा सकता”।
घर से बाहर निकलते समय		“بِسْمِ اللَّهِ تَوْكِيدًا عَلَى اللَّهِ لَا حَوْلُ وَلَا قُوَّةُ إِلَّا بِاللَّهِ” <sup>5</sup> «بِسِيمْلَلَاهِ تَوْكِيدًا عَلَى اللَّهِ لَا حَوْلُ وَلَا قُوَّةُ إِلَّا بِاللَّهِ كُوْكْتَبِ اللَّلَّاهُ بِكِلَّاهُ» । <sup>6</sup> «اللَّهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ أَنْ أَضْلَلَ أَوْ أُضْلَلَ، أَوْ أَزِلَّ أَوْ أُزِلَّ، أَوْ أَظْلَمَ أَوْ أُظْلَمَ، أَوْ أَجْهَلَ أَوْ يُجْهَلُ عَلَيَّ» । <sup>7</sup> “अल्लाहुम्म इन्नी अऊजु बिक अन् अजिल्ल औ उज्जल्ल, औ अजिल्ल औ उज्जल्ल, औ अजिल्ल औ उज्जल्ल, औ अज्जल औ युज्जल अलैय्य” । <sup>8</sup>
मस्जिद में प्रवेश करते समय		मस्जिद में प्रवेश करते समय पहले अपना दायां पैर बढ़ाए और कहे : “بِسْمِ اللَّهِ وَالسَّلَامُ عَلَى رَسُولِ اللَّهِ الْمَكْرُورِ أَغْفِرْ لِدُنُوبِي وَأَفْتَحْ لِي أَبْوَابَ رَحْمَتِكَ أَلَّا رَسُولِلَّاهِ أَلَّا رَسُولِلَّاهِ अल्लाहू मिर्फ़िर्ला॒ जुनूबी॑ वफ़्ताह॑ ली॑ अब्बाब॑ रत्मतिक॑” । <sup>9</sup>
मस्जिद से निकलते समय		मस्जिद से निकलते समय पहले अपना बायां पैर निकाले और कहे : “بِسْمِ اللَّهِ وَالسَّلَامُ عَلَى رَسُولِ اللَّهِ الْمَكْرُورِ أَغْفِرْ لِدُنُوبِي وَأَفْتَحْ لِي أَبْوَابَ فَصْلِكَ أَلَّा رَسُولِلَّاهِ اल्लाहू मिर्फ़िर्ला॒ जुनूबी॑ वफ़्ताह॑ ली॑ अब्बाब॑ फ़ज़िलक॑” । <sup>10</sup>

<sup>1</sup> (ऐ अल्लाह मैं तेरी नाम के साथ मरता और जीता हूँ)

<sup>2</sup> (सारी प्रशंसा अल्लाह के लिए है जिस ने हमें माने के बाद जीवित किया और उसी की ओर पलट कर जाना है)

<sup>3</sup> (अल्लाह के परिपूर्ण कलिमात की पनाह में आता हूँ उस के क्रोध से, उस के बन्दों की बुराई से, और शैतान के वस्वसों से और इस बात से कि वे मेरे पास आएं)।

<sup>4</sup> (अल्लाह के नाम के साथ घर से बाहर निकलता हूँ, मैं ने अल्लाह पर भरोसा किया, उस की तौफ़ीक के बिना न तो कुछ करने की शक्ति है और न ही किसी चीज़ से बचने की ताकत है)।

<sup>5</sup> (ऐ अल्लाह मैं तेरी पनाह में आता हूँ इस बात से कि मैं गुम्फ़ा हो जाऊं या मुझे गुम्फ़ा किया जाए, या मैं फिसल जाऊं या मुझे फिसलाया जाए, या मैं अत्याचार करूँ या मुझ पर अत्याचार हो, या मैं जिहालत करूँ या मुझ पर जिहालत को जाए)।

<sup>6</sup> (अल्लाह के नाम के साथ मैं प्रवेश करता हूँ, और सलामी हो अल्लाह के रसूल पर, ऐ अल्लाह मेरे पाप माफ़ कर दे, और मेरे लिए अपनी रहमत के दरवाज़े खोल दे)।

نے ویواہیت کے لیے	”بَارَكَ اللَّهُ لَكَ، وَبَارَكَ عَلَيْكَ، وَجَمِيعَ بَيْتِكَمَا فِي خَيْرٍ“ ۲ ”بारکال्लाहु لک، وَبَارَكَ اَنْلَائِكَ، وَجَمِيعَ“
جیس نے مُر्ग کی بाँਗ یا گधے کی رینگ سُونی	جب تुम گधے کی رینگ سُونو تو شیطان سے اعلیٰ اللہ کی پناہ چاہو کیونکہ اس نے شیطان دेखا ہے، اور جب مُر्ग کی بाँਗ سُونو تو اعلیٰ اللہ سے اس کا فُجُول چاہو؛ کیونکہ اس نے فَرِيشَة دے�ا ہے । ”جب رات میں کوتے کی بُنگ یا گधے کی رینگ سُونو تو اعلیٰ اللہ کی پناہ چاہو ...“ ।
”مैں تُم سے اعلیٰ اللہ کے لیے مُحَبَّت کرتا ہوں“ کے جواب میں	انس ﷺ بیان کرتے ہیں اک وکھنے کے پاس اس کا دوسرے وکھنے سے گُزرا تو اس نے کہا : اے اعلیٰ اللہ کے رسُول میں اَوَّلَیٰ اس سے مُحَبَّت کرتا ہوں، تو نبی ﷺ نے کہا : ”کیا تُم نے اُسے باتا یا ہے؟“ । اس نے کہا نہیں۔ آپ نے فرمایا : ”اُسے باتا دو“ । تو اس کے پیछے گیا اور کہا : ”اِنْنِي عَابِدُ بِكَ“ میں اعلیٰ اللہ کے لیے تُنہی سے مُحَبَّت کرتا ہوں । تو اس نے جواب دیا : ”اَهْبَبَكَ اللَّهُ أَعْلَمُ“ । اعلیٰ اللہ تُنہی سے مُحَبَّت کرے جیس کے لیے تو نے مسٹ سے مُحَبَّت کی ہے ।
کیسی کو جب چیک آئے	”جب تُم میں سے کیسی کو چیک آئے تو کہے : ”اَلْهَمْدُ لِلِّلَّاْهِ“ (ساری پ्रشنسا اعلیٰ اللہ تَعَالَیٰ کے لیے ہے) । اور اس کا بَارِیَہ یا ساٹی ہے اس کے لیے ”يَرْحَمُكَ اللَّاهُ“ (اعلیٰ اللہ تُنہی پر دیا کرے) । اور ”يَرْحَمُكَ اللَّاهُ“ کے جواب میں چیکنے والے وکھنے کے پاس اس کا ”يَرْحَمُكَ مُولَّاَهُ وَ يُرْسِلِنَاهُ بَالْمُرْسَلِينَ“ اعلیٰ اللہ تُنہی ہدیا یات دے اور تیری ہاالت کو بہتر کر دے । اور جب کیسی کا فکر وکھنے کو چیک آئے اور وہ ”اَلْهَمْدُ لِلِّلَّاْهِ“ کہے، تو اس کے جواب : ”يَرْحَمُكَ اللَّاهُ“ نہ کہا بلکہ : ”يَرْحَمُكَ مُولَّاَهُ“ کہے ।
پریشانی کی بडی میں	۱) لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ الرَّبُّ الْعَظِيمُ، لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ رَبُّ السَّمَاوَاتِ وَرَبُّ الْأَرْضِ ”لَاِلَهَا حُلَّةٌ إِلَّا إِلَهٌ“ ۳ ۲) رَبُّ الْأَرْضِ لِلَّهِ الْمُجْنَّبُ، رَبُّ الْأَرْضِ لِلَّهِ الْمُجْنَّبُ، رَبُّ الْأَرْضِ لِلَّهِ الْمُجْنَّبُ ”اَلْلَاهُ اَكْبَرُ“ ۴ ۳) ”يَا حَسْنَى يَا قَيُومُ بِرْحَتَكَ أَسْتَغْفِرُكَ“ ۵ ۴) ”سُبْحَانَ اللَّهِ الْعَظِيمِ“ ۶
دُشمن پر شاپ	”اَللَّهُمَّ مُزِيلُ الْكُفَّارِ وَجْهُي السَّحَابِ سَرِيعُ الْحِسَابِ اَهْزِمُ الْاحْرَابَ، اللَّهُمَّ اهْرِمْهُمْ وَرَزِّرْلَهُمْ“ ۷ ”مُؤْنِيَرُسَّهَابِيِّ سَرِيَّ اَلْهِلِّهِسَابِيِّ اِلْهِنِّيَّمِلِّهِنِّيَّاَبِي“ اعلیٰ اللہ تُنہی میں اس کا جواب ہے । ۸) لَا إِلَهَ إِلَّا شَرِيكُ لَهُ، لَا إِلَهَ إِلَّا مُلْكُ وَلَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ عَلَى كُلِّ ”لَاِلَهَا حُلَّةٌ إِلَّا إِلَهٌ“ ۹ ۹) لَا شَرِيكَ لَهُ، لَهُ الْحُكْمُ وَهُوَ عَلَى كُلِّ ”لَاِلَهَا حُلَّةٌ إِلَّا إِلَهٌ“ ۱۰ ۱۰) فَيْرِ ”اَلْلَاهُ اَكْبَرُ“ کا جواب : ”ہے اعلیٰ اللہ مُسٹے بارخہ دے“ । یا دُعا کرے تو اس کی دُعا کبُول کر لی جاتی ہے । اور یادی کو جڑ کر کے نماز پढے تو اس کی نماز سُوکا کر ہوتی ہے ।

۱) (اعلیٰ اللہ کے نام کے ساتھ میں باہر نیکلتا ہوں، اور سلامتی ہو اعلیٰ اللہ کے رسُول پر، اے اعلیٰ اللہ میرے پاپ ماف کر دے، اور میرے لیے اپنے فکٹن کے دروازے ہوں دے) ।

۲) (اعلیٰ اللہ تیرے لیے وکھنے کے داروازے ہوں دے اور تُنہی پر وکھنے کے داروازے ہوں دے اور اس کو وکھنے کے داروازے ہوں دے) ।

۳) (اعلیٰ اللہ کے سیوا یا کوئی ایسا دوست کے لایک نہیں، مہان ماف کرنے والے ہیں، اعلیٰ اللہ کے سیوا یا کوئی ایسا دوست کے لایک نہیں، مہان ارشاد کا رکب ہے، اعلیٰ اللہ کے سیوا یا کوئی ایسا دوست کے لایک نہیں، آکاشاروں کا، بھرتی کا اور کاریم ارشاد کا رکب ہے) ।

۴) (اعلیٰ اللہ اعلیٰ اللہ میرا رکب ہے میں اس کے ساتھ کیسی چیز کو ساچی نہیں بناتا) ।

۵) (اے جندا اور سبھوں کو ثامنے والے! میں تیری رسمتوں ڈارا فَرْيَاد کرتا ہوں ।)

۶) (مہان اعلیٰ اللہ پر تھیک پ्रکار کے اے و سے پاک ہے) ।

۷) (اے اعلیٰ اللہ! بادل کو چلانے والے، کیتاو کو یتارانے والے، جلد ہیسا ب کرنے والے، جما انتوں کو پراجیت کر، اے اعلیٰ اللہ! تو یعنی پراجیت کر، اور یعنی ہیلا کر رکھ دے) ।

۸) ”اعلیٰ اللہ کے سیوا یا کوئی بھی سچا ایسا دوست کے لایک نہیں، اس کا کوئی ساچی نہیں، اسیکے لیے راج ہے اور اسی کے لیے پروشنسا ہے، اور وہ سبھی چیزوں پر تاکت رکھنے والा ہے، میں اعلیٰ اللہ کی پاکی بیان کرتا ہوں، اعلیٰ اللہ کے سیوا یا کوئی سچا ایسا دوست کے لایک نہیں، اور اعلیٰ اللہ سب سے بड़ا ہے، نہیں ہے کوچ کرنے کی تاکت اور کیسی چیز سے بچنے کی شکنی مگر اعلیٰ اللہ کی تائپنک سے) ।

जब मुआमलः कठिन हो जाए	«اللَّهُمَّ لَا سَهْلٌ إِلَّا مَا جَعَلْتُهُ سَهْلًا وَأَنْتَ تَجْعَلُ الْحَزْنَ إِذَا شِئْتَ سَهْلًا مَا جَعَلْتُ سَهْلًا، وَ اَنْتَ تَجْعَلُ اَسْهَلَّا» <sup>1</sup>
कर्ज़ की अदाइगी के लिए	«اللَّهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ مِنْ الْهَمَّ وَالْخَزْرَ، وَالْعَجْزَ وَالْكَسْلَ، وَالْجُبْنَ وَالْجَلْ، وَضَلَالِ الدِّينِ، وَغَلَبَةِ الرِّجَالِ» “अल्लाहुम्म इन्नी अङ्गूजु विक मिनत् हम्मि वल् हजनि, वल्अजजि वल् कसलि, वल् ज़ुन्नि वल् बुख्लि, व ज़लाइदैनि, व गलबतिरेजालि” <sup>2</sup>
शैचालय जाते समय	जब शैचालय में जाने का इरादा करे तो कहे : «اللَّهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ مِنْ الْجُبْنِ وَالْجَلِّ» <sup>3</sup> “अल्लाहुम्म इन्नी अङ्गूजु विक मिनल्खुबसि वल् ख्वाइसि” और बाहर निकल कर कहे : «غُفرانك» <sup>4</sup>
नमाज़ में वसवास आए तो	“वह एक शेतान है जिस खन्ज़ब कहा जाता, जब तुम्हें इसका इहसास हो तो इससे अल्लाह की पनाह चाहो, और अपनी बाईं ओर 3 बार थूको”।
सज्जद तिलावत	“اللَّهُمَّ اغْفِرْ لِي ذَنْبِي كُلَّهُ دِقَّةً وَجَلْهُ وَأَوْلَهُ وَآخِرَهُ وَعَلَانِيَّتَهُ وَسَرَّهُ” जिल्लहू, व औवलहू व आखिरहू, व अ़लानियतहू व सिर्हहू <sup>5</sup> “سُبْحَانَكَ رَبِّيْ وَبِحَمْدِكَ اللَّهُمَّ اغْفِرْ لِي” <sup>6</sup> “اللَّهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِرِضاكَ مِنْ سَخْطِكَ وَبِعَوَافِتِكَ وَأَعُوذُ بِكَ مِنْكَ لَا أُحْصِي ثَنَاءً عَلَيْكَ أَنْتَ كَمَا أَنْتَ عَلَى تَقْسِيكَ” “अल्लाहुम्म इन्नी अङ्गूजु विरिज़क मिन् सख़तिक, व बिमुआफ़ातिक मिन् उक्बातिक, व अङ्गूजु विक मिन्क, ला उह्सी सनाअनु अलैक अन्त कमा अस्सैत अला नप्सिक” <sup>7</sup>
दुआए सना	«اللَّهُمَّ لَكَ سَجَدْتُ وَبِكَ آمَنْتُ سَجَدَ وَجْهِي لِلنَّبِيِّ خَلْقَهُ وَصَوْرَهُ وَشَقْ سَعْهَ وَبِصَرَهُ تَبَارَكَ اللَّهُ أَحْسَنُ الْخَالِقِينَ» “अल्लाहुम्म लक सज्दत् व विक आमन्त् व लक अस्लम्, सजद वज्हिय लिल्लज़ी खलकहू व सौवरहू व शक सम्झहू व बसरहू तबारकल्लाहु अहसनुल्लालिकीनु” <sup>8</sup>
नमाज़ के अन्त में	«اللَّهُمَّ يَا عَدُّ بَيْنَ حَطَّايَيِّ كَمَا يَأْعَدُتَ بَيْنَ الْمَشْرِقِ وَالْمَغْرِبِ، اللَّهُمَّ نَقِّيِّ مِنْ حَطَّايَيِّ كَمَا يَنْقِيُ الطَّوبَ» अल्लाहुम्म बाइद्र बैनी व बैन ख़तायाय कमा बाअत्त बैनल मर्शिकि वल् मग्निबि, अल्लाहुम्म नक्नी मिन् ख़तायाय कमा युनक्स्सौबुल् अब्युजु मिनदनसि, अल्लाहुम्मिसल्ली बिल्माए वस्सलिज वल् बरद् <sup>9</sup>
नमाज़ के बाद	«اللَّهُمَّ إِنِّي ظلمَتُ نَفْسِي طَلَمًا كَثِيرًا وَلَا يَغْفِرُ الذُّنُوبُ إِلَّا أَنْتَ فَاغْفِرْ لِي مَغْفِرَةً مِنْ عِنْدِكَ وَارْجُمِنِي إِلَكَ أَنْتَ الْعَفُورُ الرَّحِيمُ» “अल्लाहुम्म इन्नी ज़लम्तु नफ़सी ज़ल्मन् कसीरन् व ला यग्फरुज्जनूब इल्ला अन्त फगिफ़र्ली मग्फिरतमिन् इन्दिक, वर्हम्मी इन्क अनतल् गफूररहीम्” <sup>10</sup>
	“اللَّهُمَّ أَعِنِّي عَلَى ذَكْرِكَ وَشُكْرِكَ وَحْسِنْ عِبَادَتِكَ” “اللَّهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ مِنْ الْكُفْرِ وَالْقَفْرِ وَعَذَابِ الْقَبْرِ” “अल्लाहुम्म इन्नो अङ्गूजु विक मिनल्कूफि वल् फक्रि व अ़जाबिल्कब्रि” <sup>2</sup>

<sup>1</sup> (ऐ अल्लाह! वही चीज़ आसान है जिसे तू सहज कर दे, और यदि तू चाहता है तो कठिन को आसान कर देता है)।

<sup>2</sup> (ऐ अल्लाह मैं तेरी पनाह चाहता हूँ फिर और गम से, और आजिज़ हो जाने और सुस्ती से, और डरपोकन और बर्खीली से, और कर्ज़ के चढ़ जाने और लोगों के ग़ालिब हो जाने से)।

<sup>3</sup> ऐ अल्लाह मैं जिन्नों और जिन्नियों से तेरी पनाह में आता हूँ।

<sup>4</sup> (तेरी माफी चाहता हूँ)।

<sup>5</sup> (ऐ अल्लाह मेरे छोटे बड़े, पहले पिछले, और खुले छूपे सारे पाप माफ कर दे)।

<sup>6</sup> (ऐ मेरे रब! तू पाक है और अपनी तारीफ के साथ है, ऐ अल्लाह मुझे माफ कर दे)।

<sup>7</sup> (ऐ अल्लाह! मैं तेरे गुर्से से तेरे राजी होने की पनाह चाहता हूँ, और तेरी सज्जा से तेरी माफी की पनाह चाहता हूँ, और मैं तुझ से तेरी ही पनाह चाहता हूँ, मैं पूरी तरह तेरी तारीफ नहीं कर सकता, तू उसी तरह है जिस तरह तूने स्वयं अपनी तारीफ की)।

<sup>8</sup> (ऐ अल्लाह मैं ने तेरे लिए सज्जा किया, तुझ पर ईमान लाया, तेरा फर्मावर्दार हुवा, मेरे चेहरे ने उस हस्ती के लिए सज्जा किया जिस ने उसे पैदा किया, और उस की सूरत बनाई, और कान तथा आँख के सूराख बनाए, बर्कत वाला है अल्लाह जो सब बनाने वालों से अच्छा है)।

<sup>9</sup> (ऐ अल्लाह! मेरे और मेरे पाप के बीच दूरी कर दे जिस तरह तूने पूरब और पश्चिम के बीच दूरी की है, ऐ अल्लाह! मुझे मेरे पाप से साफ़ सुधार करदे जिस तरह सफेद कपड़ा मैल से साफ़ सुधार किया जाता है, ऐ अल्लाह! मुझे पानी से, बरफ से और ओले से धूल दें)।

<sup>10</sup> (ऐ अल्लाह! मैं ने अपने ऊपर बहुत अधिक अत्यावार किया, और मात्र तू ही है जो गुनाहों को माफ़ करता है, तो तू मूझे अपनी खास माफी से बर्खा दे, और मुझ पर दया कर, अवश्य तू ही बद्धशने वाला दयालू है)।

<sup>1</sup> (ऐ अल्लाह! अपने जिक्र, शक्र और अच्छी इबादत पर मेरी सहायत कर)।

<sup>2</sup> (ऐ अल्लाह! कफ, गरीबी, और कब्र के अजाब से तेरी पनाह चाहता हैं)

<sup>३</sup> (ऐ अल्लाह! लाभ-दायक वर्षा बना)।

४ (अल्लाह के फजल और उस की दया से बारिश हई)। और जो चाहे दआ करें: क्योंकि वर्षा के समय की दआ कबल होती है।

<sup>5</sup> (ऐ अल्लाह! मैं तुझ से सवाल करता हूँ इस की भलाई का, और उस चीज़ की भलाई का जो इस में है, और उस चीज़ की भलाई का जिसके साथ यह भेजी गई है, और तेरी पनाह में आता हूँ इस की बूराई से और उस चीज़ की बूराई से जो इस में है, और उस चीज़ की बूराई से जिस के साथ यह भेजी गई है)।

<sup>6</sup> (ऐ अल्लाह! तू इसे हमारे लिए निकाल शान्ति, ईमान, सलामती और इस्लाम के साथ, भलाई और हिदायत का चाँद, मेरा और तेरा रब अल्लाह हैं।)

<sup>7</sup> (मैं तेरे धर्म, तेरी अमानत, और तेरे कर्मों के खातमे को अल्लाह के हवाले करता हूँ)।

<sup>8</sup> (मैं तुम्हें उस अल्लाह के हवाले करता हूँ जिस के हवाले की गई चीज़ बर्बाद नहीं होती)।

<sup>९</sup> | सम्पूर्ण प्रशंसा अल्लाह के लिए है जिस की नेतृत्व द्वारा नेकियां पूरी होती हैं।

<sup>१०</sup> हर हाल में अल्लाह ही के लिए सम्पुर्ण प्रशंसा है।

<sup>11</sup> (अल्लाह सब से महान है, अल्लाह सब से महान है, अल्लाह सब से महान है, पाक है वह हस्ती जिसने इसे हमारे काबू में किया हालांकि हम इसे काबू में लाने वाले न थे, और हम अपने रब की ओर लौटने वाले हैं, ऐ अल्लाह हम अपनी इस यात्रा में तुझ से नेकी और तक्वा का सवाल करते हैं, और उस कर्म का जिसे तू पसंद करे, ऐ अल्लाह! हमारी यह यात्रा हम पर आसान कर दे, और इस की दूरी हम से तह कर दे, ऐ अल्लाह! तु ही यात्रा में साथी और घर वालों को देख-रेख करने वाला है, ऐ अल्लाह! मैं तेरी पनाह में आता हूँ यात्रा की कठिनाई से, धन और घर वालों में देखने की बुराई से, और नाकाम लौटने की बुराई से)।

<sup>12</sup> (हम वापस लौटने वाले तौबा करने वाले, इवादत करने वाले और अपने रब की हम्मद करने वाले हैं)।

<span style="color: red; font-size: 1.5em;">۱۶۸</span> <span style="color: red; font-size: 1.5em;">۱۶۹</span> <span style="color: red; font-size: 1.5em;">۱۷۰</span> <span style="color: red; font-size: 1.5em;">۱۷۱</span> <span style="color: red; font-size: 1.5em;">۱۷۲</span> <span style="color: red; font-size: 1.5em;">۱۷۳</span> <span style="color: red; font-size: 1.5em;">۱۷۴</span>	<p>«اللَّهُمَّ أَسْلِمْتُ نَفْسِي إِلَيْكَ وَقَوَّضْتُ أَمْرِي إِلَيْكَ وَلَا جَاهَدْتُ إِلَيْكَ مَنْجًا وَلَا مَنْجًا مِنْكَ إِلَيْكَ أَمْنَتْ بِكَتَابِكَ الَّذِي أَنْزَلْتَ وَبِنَبِيِّكَ الَّذِي أَرْسَلْتَ»</p> <p>“الحمدُ لِلَّهِ الَّذِي أَطْعَنَنَا وَسَقَانَا وَكَفَانَا وَأَوْاَنَا فَكَمْ مَنْ لَا كَافِي لَهُ وَلَا مُؤْرِي»<sup>۱</sup> “أَللَّهُمَّ قَنِ عَذَابِكَ يَوْمَ تَبْعَثُ عِبَادَكَ»<sup>۲</sup> “أَللَّهُمَّ كِنْزِي أَنْتَ تَحْبُسُ إِلَيْكَ دَارِكَ»<sup>۳</sup></p> <p>«سُبْحَانَكَ اللَّهُمَّ رَبِّي وَبِكَ وَصَعْدَتْ جَنْبِي وَبِكَ أَرْفَعْتَ إِلَيْكَ قَاعِدِي لَهَا وَإِنْ أَرْسَلْتَنَا فَاحْفَظْنَا بِمَا حَفَظْتَ بِهِ عِبَادَكَ الصَّالِحِينَ»<sup>۴</sup></p> <p>“سُبْحَانَكَ اللَّهُمَّ أَعْطِنِي نُورًا وَاجْعَلْنِي نُورًا، وَفِي عَصْبِي نُورًا، وَفِي قَلْبِي نُورًا، وَفِي سَمْعِي نُورًا، وَفِي بَصَرِي نُورًا، وَمِنْ تَحْقِيقِ نُورًا، وَمِنْ بَعْيِي نُورًا، وَاجْعَلْنِي شَعْرِي نُورًا، وَاجْعَلْنِي أَعْطِيَ نُورًا، وَاجْعَلْنِي فِي عَصْبِي نُورًا، وَفِي قَلْبِي نُورًا، وَفِي سَمْعِي نُورًا، وَفِي بَصَرِي نُورًا، وَعَظِيمُ نُورًا، وَعَظِيمُ الْيُونُورِي نُورًا»<sup>۵</sup></p> <p>“أَللَّهُمَّ أَسْلِمْتُ نَفْسِي إِلَيْكَ وَقَوَّضْتُ أَمْرِي إِلَيْكَ وَلَا جَاهَدْتُ إِلَيْكَ مَنْجًا وَلَا مَنْجًا مِنْكَ إِلَيْكَ أَمْنَتْ بِكَتَابِكَ الَّذِي أَنْزَلْتَ وَبِنَبِيِّكَ الَّذِي أَرْسَلْتَ»<sup>۶</sup></p> <p>جब तुम में से कोई किसी चीज़ का इरादा करे तो फर्ज के सिवाय 2 रकअत नमाज पढ़े फिर यह दुआ पढ़े :</p> <p>«اللَّهُمَّ إِنِّي أَسْتَخِيرُكَ بِعِلْمِكَ، وَأَسْتَقْدِيرُكَ بِقُدْرَتِكَ، وَأَسْأَلُكَ مِنْ فَضْلِكَ، فَإِنَّكَ تَقْيِيرٌ لَا أَقْدِيرُ، وَتَعْلِمُ لَا أَعْلَمُ، وَأَنْتَ عَلَامُ الْغَيْبِ، اللَّهُمَّ فَإِنْ كُنْتَ تَعْلَمُ هَذَا الْأَمْرَ تُمْ سُبِّيهِ بِعَيْنِيٍّ حَبَرًا لِي فِي دِينِي وَمَعَاشِي وَعَاقِبَةِ أُمْرِي - أَوْ قَالَ عَاجِلُ أُمْرِي وَأَجْلِهِ - فَاقْدِرْهُ لِي وَكَسِّرْهُ لِي ثُمَّ بَارِثُهُ لِي فِيهِ، وَإِنْ كُنْتَ تَعْلَمُ أَنَّ هَذَا الْأَمْرَ شَرُّ لِي فِي دِينِي وَمَعَاشِي وَعَاقِبَةِ أُمْرِي - أَوْ قَالَ فِي عَاجِلِ أُمْرِي وَأَجْلِهِ - فَاقْسِرْهُ عَنِّي وَاصْرِفْهُ عَنِّي وَأَقْدِرْهُ لِي الْخَيْرَ حَيْثُ كَانَ تُمَّ رَضِيَّ بِهِ»<sup>۸</sup></p> <p>“أَللَّهُمَّ إِنِّي أَسْتَخِيرُكَ بِعِلْمِكَ، وَأَسْتَقْدِيرُكَ بِقُدْرَتِكَ، وَأَسْأَلُكَ مِنْ فَضْلِكَ، فَإِنَّكَ تَقْيِيرٌ لَا أَقْدِيرُ، وَتَعْلِمُ لَا أَعْلَمُ، وَأَنْتَ عَلَامُ الْغَيْبِ، اللَّهُمَّ فَإِنْ كُنْتَ تَعْلَمُ هَذَا الْأَمْرَ تُمْ سُبِّيهِ بِعَيْنِيٍّ حَبَرًا لِي فِي دِينِي وَمَعَاشِي وَعَاقِبَةِ أُمْرِي - أَوْ قَالَ فِي عَاجِلِ أُمْرِي وَأَجْلِهِ - فَاقْدِرْهُ لِي وَكَسِّرْهُ لِي ثُمَّ بَارِثُهُ لِي فِيهِ، وَإِنْ كُنْتَ تَعْلَمُ أَنَّ هَذَا الْأَمْرَ شَرُّ لِي فِي دِينِي وَمَعَاشِي وَعَاقِبَةِ أُمْرِي - أَوْ قَالَ فِي عَاجِلِ أُمْرِي وَأَجْلِهِ - فَاقْسِرْهُ عَنِّي وَاصْرِفْهُ عَنِّي وَأَقْدِرْهُ لِي الْخَيْرَ حَيْثُ كَانَ تُمَّ رَضِيَّ بِهِ”<sup>۹</sup></p>
<span style="color: red; font-size: 1.5em;">۱۷۵</span>	<p>1 (ऐ अल्लाह मैं ने अपनी जान को तेरा वफादार बनाया, और अपना काम तेरे हँवाले किया, और अपना चेहरा तेरी ओर फेर लिया, तुझ से डरते हुए और तेरी चाहत रखते हुए, न शरण है और न ही तुझ से भागने की जगह मगर तेरी ही ओर, मैं तेरी उतारी हुई किताब और भेजे हुए न वृद्धि पाया)</p> <p>2 (सारी तारीफ़े उस हस्ती के लिए है जिस ने हमें खिलाया और पिलाया, और हमारे लिए काफ़ी हुवा, और हमें ठिकाना दिया, कितने ऐसे हैं जिन के लिए कोई काफ़ी नहीं और न ही कोई ठिकाना देने वाला।)</p> <p>3 (ऐ अल्लाह! जिस दिन तू अपने बन्दों को दोबारा जिन्दा करना मुझे अपने अजाब से बचाना।)</p> <p>4 (ऐ अल्लाह! मेरे दिल में नूर (रौशनी) कर दे, मेरी जुबान में नूर कर दे, मेरी आँखों में नूर कर दे, मेरी ऊँसों में नूर कर दे, मेरे नीचे नूर कर दे, मेरे दाएं ओर नूर कर दे, मेरे बाएं ओर नूर कर दे, मेरे आगे नूर कर दे, मेरे पीछे नूर कर दे, मेरे ऊपर नूर कर दे, मेरे दोनों हाथों में थुक्थुकते और कुत्ता अज़गु बिरबित्त फलक, और कुत्ता अज़गु बिरबिन्नास् पढ़ते, और पूरे शरीर पर हाथ फेरते। इसी तरह हर गत को सोने से पहले अलिफ़ लाम मीम सज्दा, और सूरतुल मुल्क पढ़ कर सोते थे।)</p> <p>5 (ऐ अल्लाह! मेरे दिल में नूर (रौशनी) कर दे, मेरी जुबान में नूर कर दे, मेरी आँखों में नूर कर दे, मेरी ऊँसों में नूर कर दे, मेरे नीचे नूर कर दे, मेरे दाएं ओर नूर कर दे, मेरे बाएं ओर नूर कर दे, मेरे आगे नूर कर दे, मेरे पीछे नूर कर दे, मेरे ऊपर नूर कर दे, मेरे दोनों हाथों में नूर कर दे, मेरे खून में नूर कर दे, मेरे बाल में नूर कर दे, और मेरे चमड़े में नूर कर दे।)</p> <p>6 है अल्लाह! मैं तेरे इहम की बर्कत से तुझ से भलाई चाहता हूँ, और तेरी शक्ति का वास्ता देकर तेरी मदद चाहता हूँ, और तेरे बड़े फ़ज्ल (कृपा) का सवाल करता हूँ, क्योंकि तू शक्तिमान है, मैं शक्तिवाला नहीं, तू (अच्छा और बुरा) सब जानता है, मैं नहीं जानता,</p>

<sup>1</sup> (ऐ अल्लाह मैं ने अपनी जान को तेरा वफादार बनाया, और अपना काम तेरे हँवाले किया, और अपना चेहरा तेरी ओर फेर लिया, तुझ से डरते हुए और तेरी चाहत रखते हुए, न शरण है और न ही तुझ से भागने की जगह मगर तेरी ही ओर, मैं तेरी उतारी हुई किताब और भेजे हुए न वृद्धि पाया)

<sup>2</sup> (सारी तारीफ़े उस हस्ती के लिए है जिस ने हमें खिलाया और पिलाया, और हमारे लिए काफ़ी हुवा, और हमें ठिकाना दिया, कितने ऐसे हैं जिन के लिए कोई काफ़ी नहीं और न ही कोई ठिकाना देने वाला।)

<sup>3</sup> (ऐ अल्लाह! जिस दिन तू अपने बन्दों को दोबारा जिन्दा करना मुझे अपने अजाब से बचाना।)

<sup>4</sup> (ऐ अल्लाह! मेरे दिल में नूर (रौशनी) कर दे, मेरी जुबान में नूर कर दे, मेरी आँखों में नूर कर दे, मेरी ऊँसों में नूर कर दे, मेरे नीचे नूर कर दे, मेरे दाएं ओर नूर कर दे, मेरे बाएं ओर नूर कर दे, मेरे आगे नूर कर दे, मेरे पीछे नूर कर दे, मेरे ऊपर नूर कर दे, मेरे दोनों हाथों में नूर कर दे, मेरे खून में नूर कर दे, मेरे बाल में नूर कर दे, और मेरे चमड़े में नूर कर दे।)

<sup>5</sup> (ऐ अल्लाह! मेरे दिल में नूर (रौशनी) कर दे, मेरी जुबान में नूर कर दे, मेरी आँखों में नूर कर दे, मेरी ऊँसों में नूर कर दे, मेरे नीचे नूर कर दे, मेरे दाएं ओर नूर कर दे, मेरे बाएं ओर नूर कर दे, मेरे आगे नूर कर दे, मेरे पीछे नूर कर दे, मेरे ऊपर नूर कर दे, मेरे दोनों हाथों में नूर कर दे, मेरे खून में नूर कर दे, मेरे बाल में नूर कर दे, और मेरे चमड़े में नूर कर दे।)

<sup>6</sup> है अल्लाह! मैं तेरे इहम की बर्कत से तुझ से भलाई चाहता हूँ, और तेरी शक्ति का वास्ता देकर तेरी मदद चाहता हूँ, और तेरे बड़े फ़ज्ल (कृपा) का सवाल करता हूँ, क्योंकि तू शक्तिमान है, मैं शक्तिवाला नहीं, तू (अच्छा और बुरा) सब जानता है, मैं नहीं जानता,

» اللَّهُمَّ أَغْفِرْ لَهُ وَارْحَمْهُ، وَاغْفِهِ وَاعْفُ عَنْهُ، وَأَكْرِمْ نُزُلَهُ وَوَسْعَ مُدْخَلَهُ، وَاعْسِلْهُ بِالْمَاءِ وَالْقَلْجَ وَالْبَرْدَ وَتَقْهِيْهُ مِنْ الْحَطَابَا كَمَا تَقْهِيْتِ الْحَقُوبَ الْأَبَيْضَ مِنْ الدَّنَسِ، وَأَبْدِلْهُ دَارًا خَيْرًا مِنْ دَارِهِ، وَأَهْلًا خَيْرًا مِنْ أَهْلِهِ وَرَوْجًا خَيْرًا مِنْ رَوْجِهِ، وَأَدْخِلْهُ الْجَنَّةَ، وَأَعْدِهُ مِنْ عَذَابِ الْقَبْرِ وَمِنْ عَذَابِ الشَّارِ«.

अल्लाहुम्माफिर लहू वर्हम्हू, व आफिही व'अफू अनहू, व अक्रिम नुजुलहू, व वसिस'अ मुद्रखलहू, वग्सिलहू बिल्माए वसिसिंज वल्बरद, व नविकही मिनलखताया कमा नवकैतसरीबलभव्यज मिनदननसि, व अब्दिलहू दारन् खेरन् मिन् दारिही, व अहलन् खेरन् मिन् अहिलही, व जौजन् खेरन् मिन् जौजिही, व अदिखलहूल्जन्नः, व अइज्हु मिन् अजाबिल्कब्रि व अजाबिन्नार।<sup>1</sup>

जब भी किसी व्यक्ति ने गम और फिक्र लाहिक होने पर यह कहा :  
»اللَّهُمَّ إِنِّي عَبْدُكَ وَابْنُ عَبْدِكَ وَابْنُ أَمْتَكَ نَاصِيَتِي بِيَدِكَ مَا حَاضَ فِي حُكْمِكَ عَدْلٌ فِي قَضَائِكَ أَسْلَكَ يَكُلُّ اسْمٍ هُوَ لَكَ سَمَيَّتْ بِهِ تَفْسِيلَكَ أَوْ عَلْمَتْهُ أَحَدًا مِنْ خَلْقِكَ أَوْ أَنْزَلْتَهُ فِي كِتَابِكَ أَوْ اسْتَأْتَرْتَ بِهِ فِي عِلْمِ الْغَيْبِ عِنْدَكَ أَنْ تَجْعَلَ الْقُرْآنَ رَبِيعَ قَلْبِيْ وَتُورَ صَدْرِيْ وَجَلَاءَ حُرْبِيْ وَدَهَابَ هَبَّيْ. إِلَّا أَذَهَبَ اللَّهُ هَمَّهُ وَحُرْبَهُ وَأَنْدَلَهُ سَكَاهُ فَرَحًا«.

“अल्लाहुम्मा इन्नी अब्दुक्, वनु अब्दिक्, वनु अमतिक्, नासीयती बियदिक्, माजिन् फिया हुक्मुक्, अद्दलुन् फिया कजाउक्, अस्अलुका विकुलिलस्मिन् हुवा लक्, सम्पैत बिही नप्सक्, औ अल्लम्तहू अहदन् मिन् खल्किक्, औ अन्जलतहू फी किताबिक्, अविस्ताअसर्त बिही फी इल्मलैबि इन्दक्, अन् तज़अलल कुरुर्अना रखीआ कल्बी, व नूरा सद्री, व जिलाआ हुज्जी, व जहाबा हम्मी”।<sup>2</sup>

और तू गैब (छुपी हूई बातों) को खूब जानने वाला है, हे अल्लाह् यदि तू जानता है कि यह काम (फिर जिस काम के लिए इस्तिखारः कर रहा है उसका नाम ले) मेरे लिए मेरे धर्म, मेरी जीविका, और मेरे परिणाम के लिहाज़ से, -या यूं कहा कि : मेरी दुनिया और आखिरत के लिहाज़ से- वेहतर है तो इस काम को मेरे लिए मुकद्दर करदे, और इसे पाना मेरे लिए आसान कर दे, और मुझे इसमें बर्कत दे, और यदि तू जानता है कि यह काम मेरे लिए बुरा है, मेरे धर्म, मेरी जीविका, और मेरे परिणाम के लिहाज़ से, -या यूं कहा कि: मेरी दुन्या और आखिरत के लिहाज़ से- तो इस काम को मुझ से फेर दे, और मुझे इससे बचाले, और भलाई जहाँ भी हो उसे मेरे लिए मुकद्दर करदे, और मुझे उस पर खुश करदे।

<sup>1</sup> (ऐ अल्लाह! इसे बर्था दे, इस पर दया कर, इसे आफियत दे, इसे मुआफ कर दे, और इस की मेहमानी प्रतिष्ठा के साथ कर, और इस के जाने की जगह चौड़ी कर दे, और इसे पानी, वर्फ और औलों के साथ थो दे, और इसे गुनाहों से इस प्रकार साफ कर दे जिस प्रकार तूने सफेद कपड़े को मैल से साफ किया, और इसे इस के घर के बदले उत्तम घर, घरवालों के बदले उत्तम घरवाले, और बीवी के बदले उत्तम बीवी अता कर, और इसे जन्नत में दाखिल कर, और इसे कब्र के अज़ाब और आग के अज़ाब से पनाह दे”

<sup>2</sup> (ऐ अल्लाह! मैं तेरा बन्दा, तेरे बन्दे का बेटा और तेरी बान्दी का बेटा हूं, तेरा आदेश मुझ पर लागू होता है, मेरे बारे में तेरा फैसला इन्साफ़ वाला है, मैं तुझ से तेरे हर उस खास नाम द्वारा सवाल करता हूं जो तूने स्वयं अपना नाम रख्खा है, या उसे अपनी किताब में नाजिल किया है, या उसे अपनी मखतूक में से किसी को सिखाया है, या अपने इल्मुल-गैब में उसे छिपाने को बर्तरी दी है, कि तू कुर्अन को मेरे दिल की बहार, और मेरे सीने का प्रकाश, और मेरे ग़म को दूर करने वाला, और मेरे फ़िक्र को ले जाने वाला बना दे)।

## लाभ-दायक व्यापार

अल्लाह तआला ने हमें अपनी सारी सुष्टि पर फ़ज़ीलत दी है, बोलने जैसी नेमत को हमारे लिए ख़ास किया, जुबान को बोलने का माध्यम बनाया, जो एक ऐसा उपहार है जिसका प्रयोग भलाई और बुराई दोनों में हो सकता है, अतः जो इसका इस्तिमाल भलाई के लिए करेगा तो उसे इस संसार में नेक खखी प्रदान करेगी, और जन्नत में ऊँचे दरजे पर फ़ाइज़ करदेगी और जो बुराइयों में इसे प्रयोग करेगा तो यह उसे दुनिया और आखिरत में तबाही और बरबादी के खड़े में गिरा देगी। और कुरुआन मजीद की तिलावत के बाद सर्व-श्रेष्ठ चीज़ जिससे समय को लाभ-दायक काम में इस्तिमाल किया जा सकता है वह है अल्लाह तआला का ज़िक्र।

**ज़िक्र की फ़ज़ीलत :** ज़िक्र के विषय में बहुत सारी हड्डीसों चर्चित है, इन्हीं में से नबी ﷺ का यह इशाद है : “क्या मैं तुम्हें तुम्हारे बेहतर कर्म की ख़बर न दूँ ... और आप ﷺ ने फरमाया : مَثُلُ الَّذِي يَذْكُرُ رَبَّهُ وَالَّذِي لَا يَذْكُرُ رَبَّهُ مَثُلُ الْحَيٍّ وَالْمَيِّتِ۔” “जो व्यक्ति अपने रब का ज़िक्र करता है और जो ज़िक्र नहीं करता उसकी मिसाल जिन्दा और मुर्दा व्यक्ति जैसी है”। बुखारी और हड्डीसे कुदसी में है कि अल्लाह तआला फर्माता है : اَنَا عِنْدَ ظَرِّ عَبْدِيْ بِيْ وَأَنَا مَعَهُ إِذَا ذَكَرَنِي فِي نَفْسِهِ ذَكَرْتُهُ۔ “मैं अपने बन्दे के गुमान के मुताबिक होता हूँ, और मैं अपने बन्दे के साथ होता हूँ जब वह मुझे याद करता है, यदि वह अपने दिल में मुझे याद करता है तो मैं भी उसे अपने दिल में याद करता हूँ, और यदि वह मुझे किसी सभा में याद करता है तो मैं उसकी सभा से बेहतर सभा में उसे याद करता हूँ, और यदि वह मेरी ओर एक बित्ता करीब होता है, तो मैं उस से एक हाथ करीब होता हूँ”।

(बुखारी) और आप ﷺ ने यह भी इशाद फरमाया:

“مُفَرِّجُ الدُّنْيَا وَالْجَنَّةِ” سَبَقَ الْمُفَرِّدُونَ، قَالُوا: وَمَا الْمُفَرِّدُونَ يَا رَسُولَ اللَّهِ؟ قَالَ: الَّذِكِيرُونَ اللَّهَ كَثِيرًا وَالْمُذَكَّرَاتُ۔ निकल गए, लोगों ने पूछा : हे अल्लाह के रसूल! मुफर्रिदून कौन लोग हैं? आप ने फरमाया: वह मर्द और वह औरतें जो बहुत अधिक अल्लाह का ज़िक्र करते हैं”। (मुस्लिम)

और आप ﷺ ने एक सहाबी को वसीयत करते हुए फरमाया: لَا يَزَالُ لِسَائِنَكَ رَطْبًا مِنْ ذِكْرِ اللَّهِ۔ “तेरी जुबान अल्लाह के ज़िक्र से हमेशा तर रहे”। (तिर्मिज़ी इत्यादि)

**सवाब की बढ़ौतरी :** जिस तरह कुरुआन मजीद की तिलावत के सवाब में बढ़ौतरी होती है उसी तरह नेक कर्मों के सवाब में भी बढ़ौतरी होती है। और ऐसा दो चीज़ों के कारण होता है : ① दिल में मौजूद ईमान, इख़्लास, महब्बत और उसके मातिहत चीज़ों के कारण। ② ज़िक्र के बारे में दिल के व्यस्त रहने और सोचने के कारण, केवल जुबान के द्वारा उच्चारण करके नहीं। और यही कर्म जब कामिल हो तो इसके द्वारा अल्लाह तआला गुनाहों को सिरे से मिटा देता है, और उन पर अमल करने वाले को भरपूर सवाब देता है, और जितना यह कम होता है उसी हिसाब से उसके सवाब में भी कमी आती है।

**ज़िक्र के कुछ फ़ायदे :** शैखुल् इस्लाम अल्लामा इब्ने तैमिया رحمَهُ اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ने फरमाया: दिल के लिए ज़िक्र मछली के लिए पानी के समान है, तो जब मछली को पानी से निकाल दिया जाए तो उसका क्या हाल होगा?

\* ज़िक्र अल्लाह की मुहब्बत, उस से नज़दीकी, उसकी खुशी, उसके मुराक़बे, उससे डरने, और उसकी ओर पलटने का वारिस बनाता है, और उसकी इताह़त पर सहायता करता है।

- ★ ज़िक्र दिल से सोंच फ़िक्र को दूर करता है, खूशी लाता है, दिल को ज़िन्दगी बख़्शता है, और उसे शक्ति और सफ़ई अता करता है।
- ★ दिल में एक रिक्त स्थान होता है जिसे अल्लाह का ज़िक्र ही भरता है, और कठोरपन तथा सख़्ती होती है जिसे ज़िक्र ही पिघलाता और नरम करता है।
- ★ ज़िक्र दिल के लिए शिफ़ा और दवा है, शक्ति और ऐसा स्वाद है जिस जैसी कोई स्वाद नहीं, और लापर्वाही इस की बीमारी है।
- ★ ज़िक्र में कमी निफ़ाक़ की निशानी है, और बढ़ौतरी ईमानी शक्ति और अल्लाह से सच्ची मुह़ब्बत की दलील है; क्योंकि जो जिस से मुह़ब्बत करता उसका अधिक चर्चा किया करता है।
- ★ बन्दा जब खुश-हाली में अल्लाह का ज़िक्र करता है, तो अल्लाह उसे तंगी में याद रखता है, ख़ासकर मौत और उस की परीशानी के समय।
- ★ ज़िक्र सबब है अल्लाह के अ़ज़ाब से नजात का, शन्ति के उतरने, रहमत के ढांपने, और फ़रिश्तों की बख़िशाश का।
- ★ ज़िक्र द्वारा जुबान ग़ीबत, चुग्ली, झूट और दूसरी मकऱूह और ह़राम चीज़ों से सुरक्षित रहती है।
- ★ ज़िक्र आसान इबादत है, सब से श्रेष्ठ और उत्तम है, और वह जन्नत का पौदा है।
- ★ ज़िक्र ज़ाकिर के चेहरे को हैबत, मिठास और ताज़गी का लिबास पहनाता है, और यह संसार, क़ब्र और आयिरत में रौश्नी है।
- ★ ज़िक्र ज़ाकिर पर अल्लाह तआला की रहमत और फ़रिश्तों की दुआ को वाजिब करता है, ज़िक्र करने वालों के द्वारा अल्लाह फ़रिश्तों पर फ़खर करता है।
- ★ सबसे बेहतर कर्म करने वाले वे हैं जो उस कर्म में सब से अधिक ज़िक्र करने वाले हों, चुनान्वि सब से बेहतर रोज़ेदार वह है जो रोज़े की अवस्था में सब से अधिक ज़िक्र करता है।
- ★ ज़िक्र मुश्किल को सहज बनाता है, सख़्त को आसान करता है, परीशानी को हल्का करता है, रोज़ी लाने का सबब बनता है, और शरीर को शक्ति प्रदान करता है।
- ★ ज़िक्र शैतान को भगाता है, उसे रुस्वा और ज़लील करता है।

## स्वेच्छा-सांझ की दुआएं

الله لا إله إلا هو الحي القيوم لا تأخذوه سنة ولا نوم له ما في السموات وما في الأرض من ذا الذي يشفع عنده إلا باذنه يعلم ما بين أيديهم وما خلفهم ولا يحيطون بشيء من علمه إلا بما شاء وسع كرسيه السموات والأرض ولا يتعدده حفظهما وهو أعلى العظيم

أَمَنَ الرَّسُولُ بِمَا أُنْزِلَ إِلَيْهِ مِنْ رَبِّهِ، وَالْمُؤْمِنُونَ كُلُّهُمْ أَمَنَ بِاللَّهِ وَمَلَكِكَهُ، وَكُلُّهُمْ رَسُولُهُ لَا فَرقَ بَيْنَ أَحَدٍ قِبْلَتِهِ وَقَالُوا سَوْمَنَا وَطَعْنَاهُ عَفْرَانَكَ رَبِّنَا وَإِلَيْكَ الْمُصْبِرُ<sup>٢٨٥</sup> لَا يُكْلِفُ اللَّهُ نَفْسًا إِلَّا وَسَعَهَا لَهَا مَا كَسَبَتْ وَعَلَيْهَا مَا أَكْسَبَتْ رَبِّنَا لَا تُؤَاخِذنَا إِنْ نَسِينَا أَوْ أَخْطَأْنَا وَلَا تَعْلِمْ عَلَيْكَنَا إِصْرًا كَمَا حَكَلْتَهُ، عَلَى الَّذِينَ مِنْ قَبْلِنَا بَرَأْنَا وَلَا تَحْمِلْنَا مَا لَا طَاقَةَ لَنَا بَرَأْهُ، وَأَعْفُ عَنَّا إِنْ عَفْنَا لَنَا وَأَحْمَنَا أَنْتَ مَهْلَكَنَا فَانْصُتْ نَاعِمَّا الْقَوْمَ الْكَافِرِ بَرَأْهُ

<sup>3</sup> शूरु अल्लाह के नाम से जिसके नाम के साथ धरती और आकाश में कोई दैश नमस्तान नहीं पहुंचा सकती और वह सन्ते वाला जानने वाल है।

<sup>4</sup> अल्लाह तआला के परिपर्ण कलाम की पञ्चाह में आवा हैं उस दीज की बार्गा से जिन्हें उस ने पैदा किए हैं

<sup>5</sup> मेरे लिए अल्लाह काफी है उसके सिवाय कोई सत्य इब्बदुर्र के लायक नहीं उसी पर मैं ने भगेसा किया और वह महान् अर्थ का गव है।

<sup>6</sup> (मैं अल्लाह पर ग़ज़ी हूँ उस के बाहेर में इलाम पर दीन होने में और महसूस ही पर कही होने में)

<sup>7</sup> (हे अल्लाह! तेरे नाम के साथ हम ने सवेरा किया, और तेरे नाम के साथ संज्ञ किया, और तेरे नाम के साथ हम ज़िन्दा हैं, और तेरे नाम के साथ हम ज़ीरो हैं। और तेरे नाम के साथ हम ज़ीरो हैं।)

<sup>8</sup> (हे अल्लाह! तेरे नाम के साथ हम ने संज्ञा किया, और तेरे नाम के साथ सवेरा किया, और तेरे नाम के साथ हम ज़िन्दा हैं, और तेरे नाम के साथ हम मरेंगे, और तेरी ही ओर लौट कर जाना है)।

<sup>1</sup> (हम ने इस्लामी नेचर, कल्मए इख्लास, अपने नबी मुहम्मद ﷺ के धर्म, और अपने बाप इब्राहीम हनीफ मुस्लिम की मिल्लत पर सवेरा किया, और वह मुश्किलों में से नहीं थे)।

<sup>2</sup> और शाम में “मा अस्वह बी” के बदले “मा अम्सा बी” कहे। (हे अल्लाह मुझ पर या तेरी मख़्लूक में से किसी पर जिस नेमत ने भी सवेरा किया वह मात्र तेरी ओर से है, तू अकेला है तेरा कोई साझी नहीं, अतः तेरे ही लिए प्रशंसा और तेरे ही लिए श्रूक है)।

<sup>3</sup> (हे अल्लाह मैं ने इस हाल में सवेरा किया कि मैं तुझे गवाह बनाता हूँ, और तेरा अर्श उठाने वालों को, तेरे फ़रिश्तों को, तेरे नवियों को और तेरी सारी मख्लूक को गवाह बनाता हूँ कि तू ही सत्य उपास्य है, तेरे सिवाय कोई इबादत के लायक नहीं, और अवश्य महम्मद तेरे बन्दे और तेरे रसल हैं)।

<sup>4</sup> (हे अल्लाह! आकाश और धरती को पैदा करने वाले, छुपी हुई और खुली हुई को जानने वाले, हर चीज़ के प्रभु और मालिक, मैं गवाही देता हूँ के तेरे सिवाय कोई इबादत के लायक नहीं, मैं तेरी पनाह मांगता हूँ अपने नफ़स की बूराई से, और शैतान की बूराई से और उस के शिर्क से, और इस बात से कि मैं अपने नफ़स पर बूराई करूँ, या किसी मुस्लिम से बूराई करूँ।)

<sup>5</sup> (ऐ अल्लाह हैं मैं तेरी पनाह चाहता हूँ फिक्र और ग़ुम से, और तेरी पनाह चाहता हूँ आजिज होजाने और सुस्ती से, और तेरी पनाह चाहता हूँ डरपेक्षन और बखीली से, और तेरी पनाह चाहता हूँ कुर्ज के छढ़ जाने और लोगों के ग़ालिब हो जाने से)।

<p>اللَّهُمَّ أَنْتَ رَبِّي، لَا إِلَهَ إِلَّا أَنْتَ، خَلْقُنِي، وَأَنَا عَبْدُكَ، وَأَنَا عَلَى عَهْدِكَ، مَا اسْتَطَعْتُ، أَعُوذُ بِكَ مِنْ شَرِّ مَا صَنَعْتُ، أَبُوئُكَ بِنِعْمَتِكَ عَلَيَّ، وَأَبُوئُكَ بِذَنْبِي، فَاغْفِرْ لِي؛ فَإِنَّهُ لَا يَغْفِرُ الذُّنُوبُ إِلَّا أَنْتَ.</p>	<p>يह सैयिदुल्ल इस्तिग्फार</p>	<p>जिस ने इस पर विश्वास रखते हुए दिन में कहा और उसी दिन उस की मौत होगई, या रात में कहा और उसी रात उस की मौत होगई तो वह जन्मती है।</p>
<p>١٤ “اللَّهُمَّ أَنْتَ رَبِّي، لَا إِلَهَ إِلَّا أَنْتَ، خَلْقُنِي، وَأَنَا عَبْدُكَ، وَأَنَا عَلَى عَهْدِكَ، مَا اسْتَطَعْتُ، أَعُوذُ بِكَ مِنْ شَرِّ مَا صَنَعْتُ، أَبُوئُكَ بِنِعْمَتِكَ عَلَيَّ، وَأَبُوئُكَ بِذَنْبِي، فَاغْفِرْ لِي؛ فَإِنَّهُ لَا يَغْفِرُ الذُّنُوبُ إِلَّا أَنْتَ.”<sup>1</sup></p>	<p>कहलाता है। सबरे सांझ</p>	<p>उस की मौत होगई, या रात में कहा और उसी रात उस की मौत होगई तो वह जन्मती है।</p>
<p>١٥ يا حي يا قيوم برحمتك أستغيث أصلح لي شأني كله ولا تكلني إلى نفسي طرفة عين</p>	<p>سबरे سांझ</p>	<p>नवी  ने फातिमः को इसकी वसीयत की।</p>
<p>١٦ اللَّهُمَّ عافِي فِي بَدْنِي، اللَّهُمَّ عافِي فِي سَمِيعِي، اللَّهُمَّ عافِي فِي بَصَرِي، اللَّهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ مِنَ الْكُفْرِ وَالْفَقْرِ، اللَّهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ مِنْ عَذَابِ الْقَبْرِ لَا إِلَهَ إِلَّا أَنْتَ “اللَّهُمَّ أَنْتَ رَبِّي، لَا إِلَهَ إِلَّا أَنْتَ، خَلْقُنِي، وَأَنَا عَبْدُكَ، وَأَنَا عَلَى عَهْدِكَ، مَا اسْتَطَعْتُ، أَعُوذُ بِكَ مِنْ شَرِّ مَا صَنَعْتُ، أَبُوئُكَ بِنِعْمَتِكَ عَلَيَّ، وَأَبُوئُكَ بِذَنْبِي، فَاغْفِرْ لِي؛ فَإِنَّهُ لَا يَغْفِرُ الذُّنُوبُ إِلَّا أَنْتَ”<sup>2</sup></p>	<p>3 बार सबरे और 3 बार सांझ को</p>	<p>नवी  ने इन शब्दों द्वारा दुआ किए हैं।</p>
<p>١٧ اللَّهُمَّ إِنِّي أَسْأَلُكَ الْعَافِيَةَ فِي دِينِي وَدُنْيَايَيْ وَأَهْلِي وَمَالِي، اللَّهُمَّ اسْتُرْ عُورَاتِي وَآمِنْ رَوْعَاتِي، اللَّهُمَّ احْفَظْنِي مِنْ بَنِي يَدِي وَمِنْ خَلْفِي وَعَنْ يَمِينِي وَعَنْ شَمَائِيلِي وَمِنْ فُوقِي وَأَعُوذُ بِعَظَمَتِكَ أَنْ أُغْتَالَ مِنْ تُحْكِي</p>	<p>سबरे सांझ</p>	<p>नवी  सबरे सांझ इन शब्दों द्वारा दुआ करना नहीं भूलते</p>
<p>١٨ سبحان الله وبحمده عدد خلقه، ورضنا نفسه، وزنة عرشه، ومداد كلماته “سُبْدَانَلَّهًا هِيَ وَبِهِ مُنْزَلَاتُهُ، أَبَدَدَ خَلْقَنَاهُ، وَرِجَاضَ نَفْسَنَاهُ، وَزَنَجَتَ مِيدَادَ كَلِمَاتَهُ”<sup>3</sup></p>	<p>3 बार सबरे</p>	<p>फ़ज़्र से जुह तक ज़िक्र के लिए बैठे रहने से बेहतर है।</p>

<sup>1</sup> (हे अल्लाह! तू मेरा रब है, तेरे सिवाए कोई सच्चा इबादत के लायक नहीं, तूने मुझे पैदा किया है और मैं तेरा बन्दा हूँ, और मैं अपनी ताकत भर तेरे प्रतिज्ञा और तेरे वादे पर जमा हूँ, और अपने किए हुए अमल की बुराई से तेरी पनाह मांगता हूँ, मैं उन उपहारों को स्वीकार करता हूँ जो तूने मुझ पर की, और मैं अपने गुनाहों को भी स्वीकार करता हूँ, तो तू मुझे माफ़ फरमा दे अवश्य तेरे सिवाए कोई गुनाहों को माफ़ करने वाला नहीं)।

<sup>2</sup> (हे अल्लाह मुझे मेरी शरीर में चैन दे, मेरे कानों में चैन दे, ऐ अल्लाह मुझे मेरी आँखों में चैन दे, हे अल्लाह मैं कुफ़ और फ़क्र से तेरी पनाह चाहता हूँ, और कब्र के अज़ाब से तेरी पनाह चाहता हूँ, तेरे सिवाय कोई इबादत के लायक नहीं)।

<sup>3</sup> (हे अल्लाह मैं तुझ से अपने धर्म अपनी दुन्या, अपने घर वाले और अपने माल में चैन का सवाल करता हूँ, हे अल्लाह! मेरी पर्दा वाली वस्तुओं पर पर्दा डाल, और मेरी घबराहटों को शान्त रख, हे अल्लाह मेरे सामने से, मेरे पीछे से, मेरी दाईं ओर से और बाईं ओर से, और मेरे ऊपर से मेरा सुरक्षा कर, और इस बात से तेरी महानता की पनाह चाहता हूँ कि अचानक अपने नीचे से हलाक किया जाऊँ)।

<sup>4</sup> (हम अल्लाह की पवित्रता उस की तारीफ के साथ करते हैं, उसकी मख्लूक (सृष्टि) की संख्या बराबर, और उसकी नफस की खुशी के अनुसार, और उसके अर्श के वज़न के बराबर, और उसके शब्दों की लिखाई के बराबर)।

## महान सवाब वाले कथन और कर्म

क्र:	श्रेष्ठ कथन और कर्म	صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمाया:
1	لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ، وَحْدَهُ، لَا شَرِيكَ لَهُ، لَهُ الْحُكْمُ، وَهُوَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ کہنے کا سવाब	जो व्यक्ति एक दिन में 100 बार “लाइलाह इल्लल्लाहू वहदहू ला शरीक लहू, लहूल्लुकू व लहूल्लम्दू व हवू अ़ला कूल्ल शैइनू कदीर”। -अल्लाह के सिवाय कोई सत्य उपास्य नहीं, वह अकेला है उसका कोई साझी नहीं, उसी के लिए बादशाहत है, और उसी के लिए प्रशंसा है, और वह हर चीज़ पर शक्ति रखने वाला है- कहेगा उसे दस गुलाम (दास) आज़ाद करने के बराबर सवाब मिलेगा, उसके लिए 100 नेकियां लिखवी जाएंगी, और उसके 100 पाप मिटा दिए जाएंगे, और यह ज़िक्र उसके लिए सांझ तक शैतान से बचने का साधन होगा, और कोई भी व्यक्ति उससे अधिक फज़ीलत वाला कर्म लेकर नहीं आया, सिवाय उस व्यक्ति के जिसने उससे अधिक ज़िक्र किया।
2	سُبْحَانَ اللَّهِ الْعَظِيمِ وَبِحَمْدِهِ کہنے का سवाब	जो “سُوْبَدْ نَلَلَاهِلْبَرْجِيْمَ وَ بِهِمْدِهِ”। -महान अल्लाह पाक है अपनी तारीफों और ख़ुबियों के साथ- कहेगा उसके लिए जन्नत में एक खजूर का पौदा गाड़ा जाएगा।
3	(سُبْحَانَ اللَّهِ وَبِحَمْدِهِ، سُبْحَانَ اللَّهِ الْعَظِيمِ) کہنे का سवाब	जो व्यक्ति सवेरे सांझ 100 बार “سُوْبَدْ نَلَلَاهِلْبَرْجِيْمَ وَ بِهِمْدِهِ”। -अल्लाह हर प्रकार के ऐब से पाक है, अपनी तारीफों और ख़ुबियों के साथ- कहेगा तो उसके पाप माफ़ कर दिए जाएंगे अगर वे समृद्धर की ज्ञान के बराबर हों, और कियामत के दिन कोई उससे अफ़ज़ल अमल लेकर नहीं आएंगा, सिवाय उस व्यक्ति के जिसने उसी के बराबर या उससे अधिक कहा हो। “दो कल्मे हैं, जो ज़्यान पर हलके हैं, तराजू में भारी हैं, और रहमान को बहुत प्यारे हैं, “سُوْبَدْ نَلَلَاهِلْبَرْجِيْمَ وَ بِهِمْدِهِ سُوْبَدْ نَلَلَاهِلْبَرْجِيْمَ”। -अल्लाह पाक है अपनी तारीफों और ख़ुबियों के साथ, अल्लाह पाक है बड़ाइयों वाला-
4	لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللَّهِ کہنे का سवाब	“لَا هَوْلَ وَلَا كُوْفَتَ إِلَّا بِلَلَّهِ”। - अल्लाह की सहायता के बिना न कुछ करने की शक्ति है और न ही किसी चीज़ से बचने के ताक़त- जन्नत के ख़ज़ानों में से एक ख़जाना है।
5	जन्नत का सवाल और जहन्नम से पनाह	“जो व्यक्ति तीन बार अल्लाह से जन्नत का सवाल करता है तो जन्नत कहती है : ऐ अल्लाह इसे जन्नत में दाखिल करदे, और जो व्यक्ति तीन बार जहन्नम से पनाह मांगता है तो जहन्नम कहता है : ऐ अल्लाह इसे जहन्नम में न डालना”।
6	مَجْلِسِ الْكَفَارِ کہنے का سवाब	जो व्यक्ति किसी ऐसी सभा में बैठे जिस में बैकार की बातें अधिक हो गई तो उस मञ्जिस से उठने से पहले “سُوْبَدْ نَكَلَلَاهُمْ وَ بِهِمْدِهِ، اَشْहَدُ اَللَّهَ اِلَّا اَنَّهُ اَنْتَ، اَسْتِغْفِرُكَ وَ اَتُوَبُعُ اِلَيْكَ”। कह ले, “हे अल्लाह तू पाक है अपनी सारी तारीफों के साथ, नहीं है कोई सच्चा इबादत के लायक मगर तू ही, और मैं तुझी से माफ़ी चाहता हूँ, और तेरी ही तरफ़ पलटता हूँ” तो उससे उस सभा में जो भी गलतियां हुई हैं माफ़ कर दी जाएंगी।
7	سُورतُلُّ کہف کी کوچ आयतें याद करने का سवाब	जिसने सुरतुल कहफ से शुरू की 10 आयतें याद की वह दज्जाल से सुरक्षित रहेगा।
8	نَبِيُّ مُصَّدِّقٌ دَرْدَ بَهْجَنَے کہنے का سवाब	जो व्यक्ति मुझ पर एक बार दर्द भेजता है अल्लाह तआला उस पर दस रहमतें उतारता है, और उसके दस गुनाह माफ़ फरमा देता है, और उसके दस दर्जे ऊँचा कर देता है, और एक रिवायत में है उसके लिए दस नेकियां लिख दी जाती हैं।
9	کُرُّاَنَ کَیِّ کوچ سُورَتِ اُور آیات پढ़نے का سवाब	जिस व्यक्ति ने दिन और रात में 50 आयतें पढ़ी तो वह गाफिलों में नहीं लिखा जाएगा, और जिस ने 100 आयत पढ़ी तो वह कानितीन में लिखा जाएगा, और जिस ने 200 आयत पढ़ी तो कियामत के दिन कुरुआन उस से लड़ेगा नहीं, और जिस ने 500 पढ़ी तो उस के सवाबों का ख़ज़ाना लिख दिया जाएगा। “जो व्यक्ति सवेरे-सांझ दस बार قُلْ هُوَ اللَّهُ أَكْبَرُ قُلْ هُوَ اللَّهُ أَكْبَرُ पढ़ेगा तो अल्लाह उसके लिए जन्नत में घर बनाएगा”। “कुलु हुवल्लाहु اَह़دُ اَك्बَرُ एक तिहाई कुरुआन के बराबर है”।
10	مُعَاجِز़ِنَ کَیِّ سवाब	“مُعَاجِز़ِنَ کी आवाज़ को पेड़, ढेला, पथर, जिन्नात और इन्सान जो भी सुनते हैं वे (कियामत के दिन) उसके लिए गवाही देंगे”। “कियामत के दिन मुअज्जिन सब से लच्छी गर्दन वाले होंगे”।

11	अज्ञान के बाद की दुआ और उसका सवाब	जिस व्यक्ति ने अज्ञान सून कर यह दुआ पढ़ी : “अल्लाहम्म रब हाजिहिदा’अवतित्ताम्मति वस्सलातिल् काइमति आति मूहम्मदनिल्वसीलत वल् फ़ज़ीलत वबअस्तु मकाम्मटपूदनिल्लज़ी वअत्तहू”। (ऐ अल्लाह इस कामिल दुआ और हमेशा कायम रहने वाली नमाज के खब! मूहम्मद <small>صلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّمَ</small> को वसीलः (जन्नत के दर्जों में से एक दर्जे का नाम है जो मात्र नबी <small>صلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّمَ</small> के लिए खास है) और फ़ज़ीलत (वह ऊँचा मकाम जो नबी को ख्रूसियत के साथ सारी सृष्टि पर प्राप्त होगा) अता फर्मा, और आप को मकामे महसूद पर फ़ाइज़ कर, जिसका तूने वादा किया है) तो कियामत के दिन उसके लिए मेरी शफाअत हलाल होजाएगी।
12	अच्छी तरह से वुजू करने का सवाब	जिस व्यक्ति ने वुजू किया और अच्छे से वुजू किया तो उसके बदन से गुनाह निकल जाते हैं, यहाँ तक कि उसके नायुनों के नीचे से भी।
13	वुजू के बाद की दुआ।	तुम मैं से जो व्यक्ति भी कामिल वुजू करे, फिर यह दुआ पढ़े : “अशहदु अल्लाइलाह इल्लाहो व अन्य मूहम्मदन् अब्द्द्वल्लाहि व रस्लहू”। (मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के सिवाय कोई सच्चा इबादत के लायक नहीं, वह अकेला है, उसका कोई साझी नहीं, और मैं गवाही देता हूँ कि मूहम्मद <small>صلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّمَ</small> उसके बन्दे और रसूल हैं) तो उसके लिए जन्नत के सभी दरवाजे खाल दिए जाएंगे वह जिससे चाहे प्रवेश करे।
14	वुजू के बाद दो रकअतें पढ़ना	जो भी व्यक्ति वुजू करता है, और अच्छी तरह वुजू करता है, और दिल और चेहरे से ध्यान लगाकर दो रकअतें नमाज पढ़ता है तो उसके लिए जन्नत वाजिब होजाती है।
15	मस्जिद की तरफ ज्यादा चलकर जाने का सवाब	जो जमाअत वाली मस्जिद की तरफ जाए तो आते जाते जितने भी कदम उठाता है, उनमें से एक के बदले एक गुनाह माफ कर दिया जाता है और दूसरे के बदले उसके लिए एक नेकी लिख दी जाती है।
16	जुम्ए की तैयारी और उस के लिए जल्दी जाना	जो व्यक्ति जुम्ए के दिन अपनी पत्नि को नहाने का सबब बने, और नहाए, और सवेरे चल कर मस्जिद जाए, सवारी पर न जाए, और इमाम से करीब बैठे, और ध्यान से खुब्बा सुने, और कोई गलत काम न करे, तो हर कदम के बदले उसे एक साल के रोजे और एक साल के कियाम का सवाब मिलेगा। जो व्यक्ति भी जुम्ए के दिन नहाए, शक्ति भर पाकी हासिल करे, अपने तेल में से तेल लगाए, या अपने घर का खुशबू लगाए, फिर मस्जिद के लिए निकले और दो लोगों के बीच फ़र्क न डाले, फिर जितना लिखा हो नमाज पढ़े, फिर जब इमाम खुब्बा दे तो चुप रहकर सुने, तो उस के इस जुम्झा और अगले जुम्झा के बीच का गुनाह माफ कर दिया जाएगा।
17	40 दिन तक इमाम के साथ तक्बीरे तहरीमा न छूटने का सवाब	जिस व्यक्ति ने अल्लाह तआला के लिए 40 दिन तक जमाअत से नमाज़ पढ़ी इस तरह से कि उस ने इमाम के साथ तक्बीरे तहरीमा पाई तो उसके लिए दो चीजों से आज़ादी लिख दी जाती है, एक जहन्नम से आज़ादी और दूसरी निफाक से आज़ादी।
18	फ़र्ज़ नमाज़ जमाअत के साथ पढ़ने का सवाब	जमाअत के साथ नमाज़ पढ़ना अकेले नमाज़ पढ़ने से 27 दर्जे बेहतर हैं।
19	इशा और फ़ज़्र को जमाअत के साथ पढ़ने का सवाब।	जिस व्यक्ति ने जमाअत के साथ इशा की नमाज़ पढ़ी तो उसने जैसे आधी रात कियाम किया (अल्लाह की इबादत में नमाज़ पढ़ता रहा) और जिसने फ़ज़्र की नमाज़ जमाअत से पढ़ी तो उसने जैसे पूरी रात कियाम किया।
20	नमाज़ में पहली सफ़ में हाजिर रहने की फ़ज़ीलत	यदि लोग उस फ़ज़ीलत को जान लें जो अज्ञान देने और पहली सफ़ में है, तो फिर उसे पाने के लिए वह कुर्�आ-अन्दाज़ी के बिना कोई चारा न पाएं तो अवश्य वह उस पर कुर्�आ-अन्दाज़ी करें।
21	रातिबा सुन्नतों की पाबन्दी का सवाब।	जो व्यक्ति फ़र्ज़ नमाज़ों के अलावः हर दिन 12 रकअत नफ़ल नमाज़ पढ़ता है, तो उसके लिए जन्नत में एक घर बना दिया जाता है : 4 रकअतें ज़ह्र से पहले और 2 रकअतें उसके बाद, 2 रकअतें मशिर्ब के बाद, 2 रकअतें इशा के बाद, और 2 रकअतें फ़ज़्र की नमाज़ से पहले।
22	अधिक नफ़ल नमाज़ पढ़ने और	“अधिक सज्दे करना लाजिम करलो, क्योंकि तुम अल्लाह के लिए जो भी सज्दे करते हो, हर सज्दे के बदले वह तुम्हारा एक दर्जा ऊँचा कर देता है, और तुम्हारा एक गुनाह



34	दुःखी की ताजियत का सवाब	“जिस व्यक्ति ने किसी दुःखी की ताजियत की तो उसे उसी की तरह सवाब मिलेगा”। “जो मोमिन व्यक्ति भी किसी मुसीबत में अपने भाई की ताजियत करता है तो अल्लाह उसे करामत के जोड़ों में से पहनाएगा”।
35	जनाजे की नमाज़ पढ़ने और मैयत दफन करने तक साथ रहने का सवाब	“जो व्यक्ति किसी के जनाजे में मौजूद रहा यहाँ तक कि जनाजे की नमाज़ पढ़ ली गई तो उसके लिए एक कीरति सवाब है, और जो व्यक्ति मैयत दफन किए जाने तक मौजूद रहा, उसके लिए दो कीरति सवाब है, पूछा गया : कीरति क्या है? तो जवाब मिला : दो बड़े पहाड़ों की तरह”। इन्हे उमर <small>عَنْ عَبْدِ اللَّهِ</small> कहते हैं : हम ने बहुत अधिक कीरति खो दिए।
36	अल्लाह के लिए मस्जिद बनाने की फ़ज़ीलत	“जिस ने अल्लाह के लिए मस्जिद बनाई चाहे वह पक्षी के धोंसले ही की तरह क्यों न हो, तो अल्लाह उसके लिए जन्नत में घर बनाएगा”।
37	अल्लाह के रास्ते में ख़र्च करने का सवाब	“कोई ऐसा दिन नहीं है जिस में बन्धा सवेरा करता है मगर उस में दो फ़रिश्ते नाजिल होता है, उनमें से एक कहता है : ऐ अल्लाह तू खर्च करने वाले को अच्छा बदला दे, और दूसरा कहता है : ऐ अल्लाह जिस ने हाथ रोक रखा है उसको बर्बाद कर दे”।
38	सदूक कैसे हुआ?	सदूका किसी माल को घटाता नहीं है, और माफ़ करने के कारण अल्लाह तआला इज़्ज़त और प्रतिष्ठा को बढ़ाता है, और जो व्यक्ति अल्लाह के लिए झुकता है तो अल्लाह उसे उँचाई और बुलन्दी अता करता है। एक दिर्हम लाख पर भारी होगया, लौगों ने पूछा : अल्लाह के रसूल! ऐसा कैसे हुआ? आप <small>عَنْ عَبْدِ اللَّهِ</small> ने फ़रमाया: एक व्यक्ति के पास दो दिर्हम था जिस में से एक दिर्हम सदूका कर दिया, और एक के पास बहुत अधिक धन था वह अपने धन के एक किनारे गया जिस में से एक लाख सदूका किया”। “जो मुस्लिम व्यक्ति भी कोई पौदा गाड़ता है, या खेती करता है, जिस में चरा, इन्सान या जानवर खा लेते हैं तो वह उस के लिए सदूका होजाता है”।
39	बिना किसी फ़ायदे के कर्ज़ देने की फ़ज़ीलत	जो मुसलमान व्यक्ति किसी मुसलमान को दो बार कर्ज़ दे तो यह उसके लिए एक बार सदूका करने के बराबर है।
40	तंगहाल पर सवर करना	जिस व्यक्ति ने किसी कंगाल को मुहलत दी तो कर्ज़ की अदाइगी का समय आने से पहले तक हर दिन के बदले सदूका मिलता है, और समय होजाने के बाद यदि मुहलत दे तो हर दिन के बदले दोगुना सदूका मिलता है”।
41	अल्लाह के रास्ते में एक दिन रोज़ा रखने का सवाब	जो व्यक्ति अल्लाह के रास्ते में एक दिन का रोज़ा रखेगा तो अल्लाह तआला उस एक दिन के बदले उसके चेहरे को जहन्नम से 70 वर्ष (के फ़ासले जितनी) दूरी पर करदेगा।
42	हर महीने में तीन दिन के रोज़े, अरफ़ा का रोज़ा और आशूरा के रोज़े का सवाब	“हर महीने तीन दिन रोज़ा रखना, उम्र भर रोज़ा रखने की तरह है।” और अरफ़ा के दिन के रोज़े के बारे में पूछा गया? तो आप ने फ़रमाया: पिछले और अगले वर्ष के गुनाहों का कफ़ारः होता है, और आशूरा (दस मुहर्रम) के रोज़े के बारे में पूछा गया? तो आप ने फ़रमाया : पिछले वर्ष के गुनाहों का कफ़ारा होता है।”
43	शब्वाल के 6 रोज़ों का सवाब	“जिस व्यक्ति ने रमज़ान के रोज़े रख्खे, उसके बाद शब्वाल के 6 रोज़े रखे तो यह साल भर रोज़ा रखने जैसे है।”
44	इमाम के साथ अन्त तक तरावीह पढ़ने का सवाब	“अवश्य जिस व्यक्ति ने इमाम के साथ नमाज़ पढ़ी यहाँ तक कि वह लौट जाए तो उस के लिए पूरी रात का कियाम शुमार किया जाता है।”
45	रमज़ान में उम्रः करने का सवाब	रमज़ान में उम्रः करने का सवाब हङ्ज के बराबर है, या मेरे साथ हङ्ज करने के बराबर है। “और जिसने काबा का सात चक्र त्वाफ़ किया और त्वाफ़ की दो रक़अत नमाज़ पढ़ी तो उसे गर्दन आज़ाद करने के बराबर सवाब मिलता है।”
46	मक़बूल हङ्ज का सवाब	“जिस व्यक्ति ने हङ्ज किया, और उस ने हङ्ज में गाली नहीं बकै और न कोई गुनाह के काम किए तो वह हङ्ज से वापस होता उस दिन की तरह जिस दिन उस की मां ने उसे जन्म दिया था।” “और स्वीकार्य हङ्ज का सवाब तो जन्नत ही है।”

47	<b>ज़्रुलिह्ज्जा के पहले अश्व में नेकी करने का सवाब</b>	<p>कोई भी ऐसा दिन नहीं जिस में नेकी करना अल्लाह को इन दस दिनों में नेकी करने से ज्यादा पसंदीदा है, सहबा ने पूछा : ऐ अल्लाह के रसूल! अल्लाह के रास्ते में जिहाद करना भी नहीं? तो आप <b>﴿كُلُّهُمْ﴾</b> ने फَرَمَا�ा: अल्लाह के रास्ते में जिहाद करना भी नहीं, मगर हाँ कोई व्यक्ति अपनी जान और माल ले कर निकला और कुछ भी लेकर वापस न आया।"</p>
48	<b>कुर्बानी</b>	<p>"सहबए किराम ने पूछा : ऐ अल्लाह के रसूल! यह कुर्बानी क्या है? तो आप <b>﴿كُلُّهُمْ﴾</b> ने फَرَمَا�ा: यह तुम्हारे पिता इब्राहीम की सुन्नत है, उन्होंने कहा : इस में हमें क्या सवाब मिलेगा? तो आप <b>﴿كُلُّهُمْ﴾</b> ने फَرَمَا�ा: प्रत्येक बाल के बदले एक नेकी मिलेगी, उन्होंने पूछा : ऊन का क्या हुक्म है? तो आप <b>﴿كُلُّهُمْ﴾</b> ने फَरَمَا�ा: प्रत्येक ऊनी बाल के बदले एक नेकी मिलेगी।"</p>
49	<b>आलिम का सवाब और उस की फ़ज़ीलत</b>	<p>"आलिम की फ़ज़ीलत आविद पर उसी तरह है जिस तरह मेरी फ़ज़ीलत तुम में से एक कम्तर व्यक्ति पर है।" फिर अल्लाह के रसूल <b>﴿كُلُّهُمْ﴾</b> ने फَرَمَا�ा: "अवश्य अल्लाह, उस के फ़रिश्ते, आकाश वाले, धरती वाले, यहाँ तक कि चिंवटी अपनी बिल में और मछली भी लोगों को भलाई की शिक्षा देने वाले के लिए रहस्यत की दुआ करते हैं।"</p>
50	<b>सच्चाई के साथ शहादत की मौत मांगने का सवाब</b>	<p>जिस व्यक्ति ने सच्चाई के साथ शहादत की मौत मांगी तो अल्लाह उसे शहीदों के मुकाम पर पहुँचा देगा, चाहे उस की मौत अपने बिछौने पर ही क्यों न हूर्द हो।</p>
51	<b>अल्लाह के डर से रोने और पहरा देने का सवाब</b>	<p>दो तरह की आँखों को जहन्नम की आग नहीं छूएगी, उस आँख को जो अल्लाह के डर से रोई, और उस आँख को जिस ने रात अल्लाह के रास्ते में पहरादारी में गुज़ारी।</p>
52	<b>कुछ काम न करने पर जन्नत में बिना हिसाब-किताब प्रवेश करना</b>	<p>नबी <b>﴿كُلُّهُمْ﴾</b> को सपना में सारी उम्मतें दिखाई गईं, आपने अपनी उम्मत को देखा कि उनमें से 70 हजार ऐसे लोग हैं जो बिना हिसाब-किताब के जन्नत में दाखिल किए जाएंगे, उन्हें कोई अज़ाब नहीं होगा, और यह वह लोग होंगे, जो न दागकर इलाज कराते हैं, न झाड़-फुंक कराते हैं, न बुरा-शगून लेते हैं, और मात्र अपने रब पर भरोसा रखते हैं।</p>
53	<b>जिनके नाबालिग बच्चों की मृत्यु होगई हो</b>	<p>जिस मुसलमान के तीन बच्चों की मृत्यु जवानी से पहले हो जाए, तो अल्लाह तआला इसको इन बच्चों पर अपनी रहमत की बर्कत से जन्नत में ले जाएगा।</p>
54	<b>आँख खोने पर सब्र करने का सवाब</b>	<p>"अवश्य अल्लाह तआला ने फَرَمَا�ा: जब मैं ने अपने बन्दे का परीक्षा उस की दोनों प्रिय चीजों (अर्थात् उस की दोनों आँखें) में लिया, और उस ने उस पर सब्र किया, तो उन्हें बदले में मैं ने उसे जन्नत दी।"</p>
55	<b>अल्लाह तआला से डरते हुए किसी चीज़ को छोड़ देना।</b>	<p>"अवश्य तुम किसी चीज़ को अल्लाह तआला से डरते हुए नहीं छोड़ोगे, मगर अल्लाह तआला तुम्हें उस से उत्तम चीज़ देगा।"</p>
56	<b>शरमगाह और जुबान को सुरक्षित रखने का सवाब</b>	<p>जो व्यक्ति मुझे दोनों जबड़ों के बीच की चीज़ (जुबान) की ओर दोनों पैरों के बीच की चीज़ (शरमगाह) की हिफाज़त की गारन्टी दे दे, तो मैं उसे जन्नत की गारन्टी देता हूँ।</p>
57	<b>घर में धूसते समय और खाते समय ज़िक्र करने का सवाब</b>	<p>"जब आदमी अपने घर में धूसता है, और धूसते समय और खाते समय अल्लाह का ज़िक्र करता है। तो शैतान कहता है : न तो तुम्हारे लिए सोना है और न ही खाना। और जब आदमी घर में धूसता है और धूसते समय अल्लाह का ज़िक्र नहीं करता तो शैतान कहता है : तुम ने सोने का ठिकाना पा लिया, और जब खाने के समय ज़िक्र नहीं करता है तो शैतान कहता है : तुम ने सोने का ठिकाना भी पा लिया और खाना भी।"</p>
58	<b>खाने पीने के बाद कपड़ा पहनने के बाद अल्लाह का</b>	<p>जिस व्यक्ति ने खाना खाया फिर यह दुआ पढ़ी : <b>"أَلْهَمُدُ لِلَّهِ الْحَمْدُ لِلَّهِ الْعَزِيزُ"</b> और नया हाज़ा व रज़कर्नीहि मिन् गैरि हैलिमिन्नी व ला कुव़:"। "सभी तारीफें उस अल्लाह के लिए हैं, जिसने मेरी हरकत और ताक़त के बिना मुझे खिलाया, और मुझे यह रोज़ी दी। और जब नया कपड़ा पहन ले तो कहे : अल्लाह का <b>"أَلْهَمُدُ لِلَّهِ الْحَمْدُ لِلَّهِ الْعَزِيزُ"</b> करानी हाज़ा व रज़कर्नीहि मिन् गैरि हैलिमिन्नी व ला कुव़:"।"</p>

	शुक्र अदा करना	“सभी तारीफे उस अल्लाह के लिए हैं, जिसने मेरी हक्कत और ताक़त के बिना मुझे यह कपड़ा पहनाया, और मुझे यह रोजी दी। तो उस के पिछले पाप माफ़ कर दिए जाते हैं।
59	जो व्यक्ति यह चाहता हो कि अल्लाह उसके काम की कठिनाई को आसान कर दे	फातिमा ﷺ ने नौकर मांगा तो आप ﷺ ने उन्हे और अली को कहा : तुम दोनों मध्य से जो मांगा है क्या मैं इससे बेहतर चीज़ तूम्हें न बता दूँ? जब तूम अपने बिछौने पर जाओ तो 34 बार अल्लाहू अकबर और 33 बार सुब्भानल्लाहू और 33 बार अलहम्दु लिल्लाहू कह लिया करो, यह तूम्हारे लिए नौकर से बेहतर है।
60	सम्भोग करन से पहले की दुआ	यदि तुम में से कोई अपनी पति के पास हम-विस्तरी के लिए आए और यह दुआ पढ़े : “बिस्मिल्लाहि अल्लाहुम्म जन्निब्नशैतान व जन्निबिशैतान मा रज़कूतना”। “हे अल्लाह! हमें शैतान से बचा, और इस सुहृत्व द्वारा जो औलाद हमें दे उसे भी शैतान से बचा, तो उनके बीच जो औलाद भी मुकद्दर होगी उसे शैतान घाटा नहीं पहुँचा सकेगा।
61	पति के अपने पति को खुश रखने की फ़जीलत	जो औरत इस हाल में मरी हो कि उसका पति उससे खुश हो तो वह जन्नत में जाएगी।
62	वालिदैन के साथ नेकी करने और नातेदारी निभाने का सवाब	“अल्लाह की मर्जी वालिद की मर्जी में है”। “जिसे यह बात खुश करती हो कि उस की रोज़ी बढ़ाई जाए, और उस की उम्र बढ़ाई जाए तो वह अपनी नातेदारी को निभाए।”
63	यतीम की किफ़ालत	मैं और यतीम को देख-भाल करने वाला दोनों जन्नत में इस तरह होंगे, और आप ﷺ ने अपनी शहादत की उँगली और बीच वाली उँगली से इशारा किया। और उन दोनों उँगलियों को फैलाया।
64	हुस्ने अख्लाक का सवाब	मोमिन अपने हुस्ने अख्लाक (सु-स्वभाव) के कारण दिन भर रोज़ा रखने वाले और रात में कियाम करने के दर्जे को पालता है, कियामत के दिन मोमिन बन्दे के तराजू में हुस्ने अख्लाक से अधिक भारी कोई चीज़ नहीं होगी।
65	नरमी और शफ़्क़त करने का सवाब	“अल्लाह अपने बन्दों में से रहम करने वालों पर रहम करता है, तूम धरती वालों पर रहम करो आकाश वाला तूम पर रहम करेगा।”
66	मुसलमानों के लिए भलाई चाहने का सवाब	“तुम में से कोई उस समय तक मोमिन नहीं हो सकता जब तक कि वह अपने भाई के लिए भी वही चीज़ पसंद न करे जो अपने लिए पसंद करता है।”
67	लाज शरम	“हया और शरम से मात्र भलाई ही आती है।” “हया ईमान का एक हिस्सा है।” “चार चीज़ें रसूलों की सुन्नत हैं : हया करना, खुशबू लगाना, मिस्वाक करना और निकाह करना।”
68	सलाम से आरम्भ करना	एक व्यक्ति नबी ﷺ की सेवा में हाजिर हुवा, और उसने कहा : “السَّلَامُ عَلَيْكُمْ” आप ﷺ ने उसके सलाम का जवाब दिया फिर वह बैठ गया तो आप ﷺ ने फरमाया: इसके लिए 10 नेकियाँ हैं, फिर एक और व्यक्ति आया, और उसने कहा : “السَّلَامُ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَةُ اللَّهِ وَبَرَكَاتُهُ” आप ﷺ ने उसके सलाम का जवाब दिया फिर वह बैठ गया तो आप ﷺ ने फरमाया: इसके लिए 20 नेकियाँ हैं, फिर एक और व्यक्ति आया, और उसने कहा : “السَّلَامُ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَةُ اللَّهِ وَبَرَكَاتُهُ” आप ﷺ ने उसके सलाम का जवाब दिया फिर वह बैठ गया तो आप ﷺ ने फरमाया: इसके लिए 30 नेकियाँ हैं।
69	मूलाकात के समय मुसाफ़हा करने का सवाब	जो दो मुसलमान व्यक्ति आपस में मूलाकात करें, और मुसाफ़हा करें तो इससे पहले कि वह अलग-अलग हों बर्खा दिए जाते हैं।
70	मुस्लिम व्यक्ति की इज़्ज़त का बचाव करने का सवाब	“जिस ने अपने मुस्लिम भाई की इज़्ज़त का बचाव किया अल्लाह तो अल्लाह तज़्अला कियामत के दिन जहन्नम से उस के चेहरे का बचाव करेगा।”
71	नेक लोगों के साथ मुहब्बत करना और उनके साथ बैठना	“तूम उनके साथ होगे जिस से तूम ने मुहब्बत की।” अनस ﷺ कहते हैं : सहाबे किराम किसी चीज़ से उस क़दर खुश नहीं हुए जिस क़दर इस ह़दीस से खुश हुए।
72	अल्लाह की बड़ाई के लिए मुहब्बत करने वालों का सवाब	“अल्लाह तज़्अला ने फरमाया: मेरी बड़ाई के लिए मुहब्बत करने वालों के लिए नूर के मेंबर होंगे, हाल यह होगा कि उन पर नबी और शहीद भी रक्ष करेंगे।

73	<b>अपने भाई के लिए दुआ करने वाले का सवाब</b>	“अपने भाई के लिए उस की गैर मौजूदगी में दुआ कबूल होती है, उस के सर के पास फरिश्ता नियुक्त होता है, और वह जब जब भी अपने भाई के लिए दुआ करता है तो उस पर नियुक्त फरिश्ता आमीन कहता है, और कहता है तेरे लिए भी इसी के तरह हो।”
74	<b>मोमिन मर्दों और औरतों के इस्तिग्फ़ार करने का सवाब</b>	“जिस ने मोमिन मर्दों और औरतों के लिए इस्तिग्फ़ार किया तो अल्लाह तआला उस के लिए प्रत्येक मोमिन मर्द और औरत के बदले एक नेकी लिखता है।”
75	<b>कष्टदायक चीज़ को रास्ते से हटाने का सवाब</b>	“मैं ने एक आदमी को जन्नत की नेमतों से लाभ उठाते देखा एक गाछ को काटने के कारण जो बीच रास्ते में था और लोगों को तकलीफ़ पहुंचा रहा था।
76	<b>झगड़ा लड़ाई और मज़ाक में भी झूट से बचने और अच्छे स्वभाव वालों का सवाब</b>	मैं उस व्यक्ति के लिए जन्नत के किनारे में एक घर का ज़िम्मेदार हूँ जिसने हक़ पर होते हुए भी झगड़ा छोड़ दिया, और उस व्यक्ति के लिए भी जन्नत के बीच में एक घर का ज़िम्मेदार हूँ जिसने मज़ाक में भी झूट नहीं बोला, और उस व्यक्ति के लिए जन्नत के बालाई दरजे में एक घर का ज़िम्मेदार हूँ जिसके अख़लाक़ अच्छे हों।
77	<b>गूस्सा पी जाने का सवाब</b>	जो व्यक्ति गूस्सा पी जाए और वह उसे कर गूज़रने की शक्ति रखता हो, तो क़ियामत के दिन अल्लाह तआला उसे सारी मख़्लूक के सामने बुलाएगा, और बड़ी बड़ी आँख वाली हूरों में से जिसे चाहे चुन लेने का अधिकार देगा।
78	<b>किसी की भलाई या बुराई की साक्ष्य देना</b>	“जिस के लिए तुम ने भलाई की साक्ष्य दी उस पर जन्नत वाजिब हो गई, और जिस के लिए तुम ने बुराई की साक्ष्य दी उस पर जहन्नम वाजिब हो गई, तुम धरती पर अल्लाह के गवाह हो।”
79	<b>मुसलमान के ऐब को ढकना</b>	“जो व्यक्ति किसी मुसलिम से दुनिया की कठिनाइयों में से किसी एक कठिनाई को दूर करता है तो अल्लाह तआला उस से क़ियामत की कठिनाइयों में से एक कठिनाई दूर करेगा, और जो व्यक्ति किसी तगड़ाल पर आसानी करता है तो अल्लाह दुनिया और आखिरत में उस पर आसानी करेगा, और जिस ने किसी व्यक्ति की बुराई को संसार में छुपाया, तो अल्लाह तआला दुनिया में और क़ियामत के दिन उस पर पर्दा करेगा, और अल्लाह तआला बन्दे की सहायता में होता है जब तक बन्दा अपने भाई की मदद में लगा रहता है।
80	<b>आखिरत को प्रधानता देना</b>	“जिस की फ़िक्र आखिरत की हो तो अल्लाह तआला उस के दिल में बेनियाज़ी (निःसृहता) पैदा कर देता है, और उस की बिखरी हुई चीज़ों को इकट्ठी कर देता है, और दुनिया उस के पास ज़्लील हो कर आती है।”
81	<b>वे अमल जिनसे अल्लाह के अर्श के नीचे साया नसीब होगा, जिस दिन उसके सिवाए कोई साया नहीं होगा।</b>	सात किसिम के व्यक्ति हैं जिन्हें अल्लाह तआला क़ियामत के दिन अपने अर्श के साए के नीचे जगह देगा, उस दिन उस साए के सिवाए कोई और साया नहीं होगा : <b>①</b> आदिल इमाम (न्याय-शील शासक), <b>②</b> वह नौजवान जो अल्लाह तआला की इबादत में पला-बढ़ा हो, <b>③</b> वह व्यक्ति जिसका दिल मस्जिद के साथ लटका हुवा हो (अर्थात मस्जिद की खास महब्बत उसके दिल में हो, एक नमाज़ के बाद दूसरी नमाज़ के इन्तज़ार में वे-करार रहता हो) <b>④</b> वे दो व्यक्ति जो मात्र अल्लाह के लिए महब्बत करते हों, उसी पर वे आपस में इकट्ठे हुए हों, और उसी पर एक दूसरे से बिछड़े हों। <b>⑤</b> वह व्यक्ति जिसे कोई सुन्दरी और ऊँचे खानदान वाली औरत पाप करने के लिए बुलाए, लेकिन वह उसके जवाब में कहे : मैं तो अल्लाह से डरता हूँ। <b>⑥</b> वह व्यक्ति जिसने कोई सदका किया और उसे छिपाया यहाँ तक उसके बाएं हाथ को भी जानकारी नहीं कि उसके दाएं हाथ ने क्या खर्च किया है। <b>⑦</b> वह व्यक्ति जिसने एकान्त में अल्लाह को याद किया और उसके डर से उसकी आँखों से आँसू उमड़ पड़े।
82	<b>मणिफ़रत तलब करना</b>	जिस व्यक्ति ने इस्तिग्फ़ार को लाजिम पकड़ लिया तो अल्लाह तआला उस की हर तंगी को दूर कर देता है, और हर गम और फ़िक्र को ख़त्म कर देता है, और जहाँ से उस के गुमान में भी नहीं होता उसे रोज़ी देता है।

## ऐसे काम जिन्हें करना निषिद्ध है

क्र.	निषिद्ध कर्म	نَبِيٌّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ کا فَرْمَان
1	लोगों की खातिर कर्म करना	“अल्लाह तआला का फर्मान है : मैं साझी बनाने वाले के शिक्ष से बेनियाज (निःस्पृह) हूँ, जिस ने कोई कर्म किया जिस में मेरे साथ किसी दूसरे को साझी बनाया तो मैं उसे और उस के कर्म को उस के मुंह पर मार देता हूँ।”
2	بَاہِرِیٰ اُصْحَارٍ اُور بُتْریٰ بِنگاڈ	“मुझे ऐसी कौम के बारे में अवश्य जानकारी है जो कियामत के दिन तिहामा के सफेद पहाड़ों जैसी नेकियां लेकर आएंगे, जिन्हें अल्लाह तआला खाई हुई भूस की तरह कर देगा।”   सौबान ने कहा : ऐ अल्लाह के रसूल! आप उनकी सिफ़त हमें बता दिजिए, ताकि हम अवज्ञा के कारण उन में से न हो जाएं, तो आप ने फर्माया : “सुन लो! वे तुम्हारी ही चमड़ी वाले तुम्हारी बिरादरी के लोग हैं, और जिस प्रकार तुम रातों में कियाम करते हो वे भी करते हैं, लेकिन वे ऐसे लोग हैं कि जब अकेले में होते हैं तो पाप किया करते हैं।”
3	घमंड	“जन्नत में ऐसा व्यक्ति नहीं जाएगा जिस के दिल में कण बराबर भी घमंड हो” किब्र का अर्थ है : हक् का इन्कार करना और लोगों को हकीर समझना।
4	کپڑا نیچے تک پہننا	पाजामा, कमीज़ और पगड़ी इन सभों में इस्बाल का ऐतिवार होता है, और जिस ने कोई चीज़ घमण्ड करते हुए नीचा करके पहना तो अल्लाह तआला उस की ओर कियामत के दिन नहीं देखेगा।
5	ہساد	“त्रूम हसद से बचो; क्योंकि हसद नेकी इस तरह से मिटा देता है जिस तरह आग लकड़ी को राख बना देती है। या कहा : धास भूस को।”
6	سُود	“نَبِيٌّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ نے سُود लेने वाले और سُود देने वाले पर لَا’नत की है।” “सूद का एक दिर्हम जिसे आदमी जनते हुए खाता है 36 औरतों से बलात्कार करने से बढ़कर है।”
7	شَرَابَیٰ	“हमेशा शराब पीने वाला जन्नत में नहीं जाएगा, और न ही मोमिन व्यक्ति जादू के कारण, और न ही नाता तोड़ने वाले जन्नत में जाएंगे।”
8	झूٹ	“बर्बादी हो उस के लिए जो लोगों को हँसाने के लिए बातें करता है, तो झूट बोलता है, उसका सत्यानास हो, उसका सत्यानास हो।”
9	جَاسُوسِیٰ	“जिस ने लोगों की बातें सुनी जब कि लोग उसे नापसंद करते हों या उस से दूर रहते हों तो क्यामत के दिन उस के कान में पिघलाया हुवा शीशा डाला जाएगा।”
10	فُوटो	“कियामत के दिन सारे लोगों में सब से कठिन अज़ाब फोटोग्राफरों को होगा।” “जिस घर में कृता या फोटो हो उसमें फरिश्ते नहीं जाते।”
11	چुगली	“चुगली करने वाला जन्नत में नहीं जाएगा।” नमीमः का अर्थ है : फूट डालने के लिए लोगों की बातें फैलाना।
12	ڈھ.	“आप صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ने पूछा : जानते हो ग़ीबत क्या है? लोगों ने कहा : अल्लाह और उसके रसूल अधिक बेहतर जानते हैं, तो आप صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ने फरमाया: तुम्हारा अपने भाई का चर्चा ऐसी चीज़ ढारा करना जिसे वह नापसंद करता हो। पूछ गया : यदि मेरे भाई में वह कमी हो तो? आप ने फरमाया: यदि उसमें कमी है तो तूने उसकी ग़ीबत की, नहीं तो उस पर इज़ाام लगाया।”
13	لَا’نات	“मोमिन को लानत करना उसकी हत्या करने जैसे है।” “लَا’नत करने वाले क्यामत के दिन सिफारिशी या गवाह नहीं होंगे।”
14	رَاجٰ فَلَانَا	“कियामत के दिन अल्लाह के यहाँ सब से बूरा वह व्यक्ति होगा जो अपनी बीवी के पास जाए और बीवी उस के पास फिर वह उस की राज़ को फैला दे।”
15	بُرَا کَرْم	“कियामत के दिन अल्लाह के यहाँ सब से बूरा व्यक्ति वह है जिसे लोगों ने उस की बूराई से बचने के लिए छोड़ दिया हो।” और “आदम के सन्तान की अधिकतर गलतियाँ उस की जुबान ढारा होती हैं।”
16	مُرْسِلَمَ وَعْدَتِي पर کُوفَّ کی تுہماں لگانा	“जिस किसी ने भी अपने भाई को कहा : ऐ काफिर! तो वह बात उन में से किसी एक की ओर पलटती है, यदि मुआमलः वैसा नहीं है तो कहने वाले की ओर बात पलट आती है।”

17	<b>दूसरे की ओर निस्बत करना</b>	“जिसने जानबूझकर अपने पिता के बजाय दूसरे की ओर अपनी निस्बत की तो उस पर जन्नत हराम है”। “जिस ने अपने बाप से बेज़ारी की तो यह कुफ्र है”।
18	<b>मुसलमान को डराना</b>	“किसी मुस्लिम के लिए यह जायज़ नहीं कि वह किसी दूसरे मुस्लिम भाई को डराए”। “जिस ने किसी मुस्लिम की ओर धार-दार चीज़ से इशारा किया तो फरिश्ते उस पर लान्त करते रहते हैं यहाँ तक कि उसे छोड़ दे”
19	<b>इस्लामी देश में मुस्तामन की हत्या</b>	“जिस ने मुआहद (गैर मुस्लिम जिस के साथ ऐग्रिमेंट हो) का नाहक हत्या कर दिया तो वह जन्नत की खुश्बू तक नहीं पाएगा जब कि एक साल की दूरी से ही उस की महक पाई जाये गी।”
20	<b>औलिया के साथ दुश्मनी</b>	“अल्लाह तआला कहता है : जिस ने मेरे बली से दुश्मनी की तो मैं उस के साथ जंग का एलान करता हूँ।”
21	<b>मुनाफ़िक और फासिक को सरदार बनाना</b>	“मुनाफ़िक को सरदार न कहो; क्योंकि यदि वह सरदार हो जाए तो तुम ने अपने रब को नाराज़ कर दिया।”
22	<b>प्रजा के साथ धोकाधड़ी</b>	“अल्लाह जिसे भी प्रजा की सुरक्षा की ज़िम्मेदारी देता है, और जिस दिन भी मरता है इस हाल में मरता है कि उसने अपने प्रजा के साथ धोका किया होता है तो अल्लाह उस पर जन्नत को हराम कर देता।”
23	<b>बिना जानकारी के फल्ता देना</b>	“जिसे बिना ज्ञान के फल्ता दिया गया तो गुनाह फल्ता देने वाले के ऊपर होता है।”
24	<b>सुस्ती में जुम्झा या अस्त्र की नमाज़ छोड़ देना</b>	“जिस ने तीन बार लापर्वाई के कारण जुम्झा छोड़ दिए तो अल्लाह उस के दिल पर मोहर लगा देता है।” “जिस ने अस्त्र की नमाज़ छोड़ दी उस के कर्म बर्बाद हो गए।”
25	<b>नमाज़ में कोताही करना</b>	“हमारे और काफिरों के बीच सीमा नमाज़ है; तो जिस ने नमाज़ छोड़ दी वह काफिर हो गया।” “इन्सान और शिर्क के बीच फ़ासला नमाज़ छोड़ना है।”
26	<b>नमाज़ी के सामने से जाना</b>	“नमाज़ी के आगे से गुज़रने वाले को यदि यह पता चल जाए कि उस पर कितना गुनाह है, तो उस के लिए 40 तक बैठे रहना उस के आगे से जाने से बेहतर है।”
27	<b>नमाजियों को तकलीफ देना</b>	“जिस ने पियाज़ लहसुन और कुर्रास खाई वह हमारी मस्जिद के क़रीब न आए क्योंकि फरिश्तों को उन चीज़ों से तकलीफ होती है जिन से आदम की औलाद को तकलीफ होती है।”
28	<b>ज़मीन हड्डप करना</b>	“जिस ने अत्याचारी में एक वित्ता ज़मीन हड्डपा तो अल्लाह तआला क़्यामत के दिन सात तह ज़मीन का तौक उस के ग़ले में डालेगा।”
29	<b>अल्लाह को नाराज़ करने वाली बातें करना</b>	“आदमी अल्लाह की नाराज़गी की बात करता है जिस की वह पर्वा नहीं करता जब कि उस के कारण 70 साल तक जहन्नम में गिरता चला जाता।”
30	<b>बेमतलब की बातें करना</b>	“ऐसी बातें अधिक न करो जो अल्लाह के ज़िक्र से खाली हो, क्योंकि ज़िक्र के सिवाय अधिक बातें दिल की सख्ती का कारण हैं।”
31	<b>बनावटी बातें करना</b>	“अवश्य मेरे पास तुम में से सब से अधिक मबूज़ और मेरी बैठक से दूर वे होंगे जो बनावटी बातें करते हैं, गप हाँकते हैं, और घमंड करते हैं।”
32	<b>अल्लाह तआला के ज़िक्र से ग़ाफ़िल रहना</b>	जो लोग भी किसी सभा में बैठते हैं और उस में अल्लाह का ज़िक्र नहीं करते और अपने नबी ﷺ पर दस्त नहीं भेजते तो यह सभा उन के लिए अफ़सोस का कारण बनता है, यदि अल्लाह तआला चाहे तो उन्हें अज़ाब दे या माफ़ कर दे।
33	<b>किसी मुसलमान अपने मुस्लिम भाई के दँख पर खुश न हो, कि अल्लाह उस पर रहम कर दे और की मूसीबत पर तुम्हे मूसीबत में डाल दे।</b>	“जिसने किसी मुसलमान के दँख पर खुश न हो, कि अल्लाह उस पर रहम कर दे और जिसने अपने मुस्लिम भाई के दँख पर खुश होना। और जो कोई किसी को किसी पाप पर जिस से तौबा कर खुश होना। लिया हो शर्मन्दा करता है तो जब तक उस पाप को न करले उसे मौत नहीं आएगी।
34	<b>मुसलमानों से बातें न करना</b>	किसी मुस्लिम के लिए यह जायज़ नहीं कि अपने मुस्लिम भाई से तीन दिन से अधिक बात न करे, यदि तीन दिन से अधिक बात नहीं करता है और उसी अवस्था में उस की मौत होजाती तो जहन्नम में जाएगा।

35	<b>सरे आम गुनाह करना</b>	मेरी उम्मत के सारे लोग माफ़ कर दिए जाएंगे सिवाय सरे आम पाप करने वाले के।
36	<b>बूरी आदत</b>	बूरी आदत कर्मों को उसी तरह बर्बाद कर देती है, जिस तरह सिर्का शहद को।
37	<b>हृदया देकर वापस लेना</b>	“हृदया देकर वापस लेने वाला व्यक्ति कृते की तरह है जो उल्टी कर के उसे चाट लेता है।” “किसी व्यक्ति के लिए यह जायज़ नहीं कि वह हृदया देकर उसे वापस ले।”
38	<b>पड़ोसी का अत्याचार</b>	किसी व्यक्ति का दस औरतों से बलात्कार करने का पाप अपने पड़ोसी की बीवी से बलात्कार करने से कम है, और किसी व्यक्ति का दस घरों से चोरी करने का पाप अपने पड़ोसी के घर से चोरी करने से कम है।
39	<b>हराम चीज़ें देखना</b>	“आदम की संतान पर ज़िना का हिस्सा लिख दिया गया है जिसे वह हर हाल में पा कर रहेगा, आँखें ज़िना करती हैं और उनका ज़िना देखना है, और कानों का ज़िना सुनना है, और ज़ुबान का ज़िना बोलना है, और हाथ का ज़िना पकड़ना है, और पैर का ज़िना चल कर जाना है, और दिल चाहत करता है और तमन्ना करता है, और शरमगाह उसे सत्य कर दिखाती है या झूटला देती है।”
40	<b>किसी व्यक्ति का अजनबी औरत को छूना</b>	किसी व्यक्ति के सर में सूई को चुभाना उस के लिए इस बात से बेहतर है कि किसी अजनबी औरत को छुए जो कि उस के लिए जायज़ नहीं है।” “मैं औरतों से मुसाफ़हा नहीं किया करता।”
41	<b>निकाह शिगार करना</b>	“नबी ﷺ ने शिगार से रोका है।” शिगार यह है कि आदमी अपनी बेटी की शादी इस शर्त पर करे कि दूसरा व्यक्ति अपनी बेटी की शादी करे और दोनों के बीच महर न रखी जाए।
42	<b>मातम करना</b>	“जिस पर मातम किया जाता है वह क्यामत के दिन अपने ऊपर मातम किए जाने के कारण अङ्गाब दिया जाता है।” “मुर्दा अपनी कब्र में अङ्गाब दिया जाता है अपने ऊपर मातम किए जाने के कारण”
43	<b>गैरुल्लाह की कसम खाना</b>	“जिस ने गैरुल्लाह की कसम खाई उसने कुफ़ किया या शिर्क किया।” “जिसे कसम खानी हो, वह अल्लाह की कसम खाए या खामोश रहे।”
44	<b>झूटी कसम खाना</b>	“जिस ने ऐसी कसम खाई जिस से नाहक मुसलमान व्यक्ति का माल हड्डप करे तो अल्लाह से इस हाल में मिलेगा कि अल्लाह उस पर गुस्सा होगा।”
45	<b>सौदा में कसम खाना</b>	“तुम सौदा में अधिक कसम खाने से बचो; क्योंकि यह सौदे को बेचवाती है, फिर बर्कत मिटा देती है।” “कसम सौदा बेचवाती है, पर बर्कत मिटा देती है।”
46	<b>काफिरों का रूप अपनाने वाला</b>	“जिस ने किसी कौम की रूप अपनाई तो वह उन में से है।” “वह हम में से नहीं जिस ने दूसरों का रूप अपनाया।”
47	<b>कब्र पर तामीर करना</b>	“नबी ﷺ ने कब्रों को चूना लगाने, उस पर बैठने और उस पर इमारत बनाने से रोका।”
48	<b>धोका और ख़्यानत</b>	“अल्लाह तअ़ाला कियामत के दिन जब अगलों और पिछलों को इकट्ठा करेगा, तो हर धोकेबाज़ के लिए एक झंडा गाढ़ा जाएगा, और कहा जाएगा : यह फ़तां बिन फ़लां का धोका है।”
49	<b>कब्र पर बैठना</b>	“यदि तुम में से कोई अंगारे पर बैठे जो उस का कपड़ा जलादे, और उस के चमड़े तक पहुंच जाए, यह उस के लिए बेहतर है कब्र पर बैठने से।”
50	<b>जो अपनी स्वागत में लोगों का खड़ा होना पसन्द करता हो</b>	जो व्यक्ति अपने स्वागत में लोगों का खड़े होना पसन्द करता हो तो अपना स्थान नरक बना ले।
51	<b>बिना ज़खरत के मांगना</b>	“तीन चीज़े ऐसी हैं जिन पर मैं कसम खाता हूँ, और मैं तुम्हें हड्डीस सुनाता हूँ उसे याद करलो ... और न ही किसी बन्दे ने मांगने का दर्वाज़ा खोला मगर अल्लाह उस पर फ़क़ीरी का दर्वाज़ा खोल देता है।”

52	<b>सौदे में दलाली करना</b>	“अल्लाह के रसूल ने इस बात से रोका है कि शहरी देहाती के लिए बेचे, और दलाली मत करो, और न ही कोई अपने भाई के सौदे पर सौदा करे।”
53	<b>खोई ह्रौं चीज़ की तलाश के लिए मस्जिद में एलान करना</b>	“जो मस्जिद में किसी व्यक्ति को खोई ह्रौं चीज़ का एलान करता सुने, तो कहे : अल्लाह उसे तुम्हें वापस न मिलाए; इसलिए कि मस्जिदें इस के लिए नहीं बनाई गई हैं।”
54	<b>क्षृण्व कृत्त्वा न बूलाम</b>	“शैतान को गाली मत और उस की बुराई से पनाह चाहो”। एक सहाबी कहते हैं कि मैं नबी ﷺ के पीछे सवार था, आप की सवारी फिसली तो मैं ने कहा : शैतान हलाक हो, जिस पर नबी ﷺ ने कहा : यह मत कहो कि शैतान हलाक हो; क्योन्कि तुम्हारे यह कहने से वह फूल कर घर जैसा होजाता है, और कहता मेरी शक्ति से ऐसा हुवा, पर यह कहा करो : बिस्मिल्लाह; क्योन्कि तुम्हारे यह कहने से वह अपमान हो कर मक्खी जैसा हो जाता है।
55	<b>बुखार को ग़ाली देना</b>	बुखार को ग़ाली मत दिया करो; क्योन्कि वह इन्सान के पाप को वैसे ही खत्म कर देता है जिस प्रकार भट्टी लोहे की जंग को।
56	<b>गुप्राही की ओर बुलाना</b>	“जिस ने गुप्राही की ओर बुलाया तो उसे उस के अनुसार पाप करने वाले के बराबर गुनाह मिलता है, दोनों के गुनाहों में कृष्ण भी कमी नहीं होती।”
57	<b>पीने में निषिद्ध चीज़ें</b>	“नबी ﷺ ने मशकीज़ : या पानी के बर्तन के मुँह से पानी पीने से रोका है।” “नबी ﷺ ने खड़े होकर पानी पीने से डांटा है।”
58	<b>सोने या चाँदी के बर्तन में पानी पीना</b>	“सोने या चाँदी के बर्तन में पानी न पीओ, और न ही पतले या मोटे रेशम का कपड़ा पहनो, इसलिए कि यह दुनिया में काफिरों के लिए है और आधिकारित में तुम्हारे लिए है।”
59	<b>बायां हाथ से पानी पीना</b>	“हरगिज़ तुम में से कोई बाएं हाथ से खाना न खाए और न पानी पिए; क्योंकि शैतान बायां हाथ से खाता पीता है।”
60	<b>रिश्ते काटना</b>	“नाता तोड़ने वाला जन्नत में नहीं जाएगा।”
61	<b>नबी ﷺ पर दख्ल न भेजना</b>	“उस आदमी की नाक मिट्टी में मिले जिस के पास मेरा चर्चा हुवा पर उस ने मुझ पर दख्ल नहीं भेजी।” “बख़ील व्यक्ति वह है जिस के पास मेरा चर्चा हुवा पर उस ने मुझ पर दख्ल नहीं भेजी।”
62	<b>कुत्ता पालना</b>	“जिस ने कुत्ता पाला सिवाय शिकारी कुत्ता, और जानवर की सुरक्षा करने वाले कुत्ता के तो उस की नेकी में से प्रत्येक दिन दो कीरात की कमी होती है।”
63	<b>जानवरों को सताना</b>	“एक औरत को बिल्ली के कारण अ़ज़ाब हुवा, उस ने उसे कैद किए रख्खा यहाँ तक कि मर गई तो उस के कारण वह अ़ज़ाब दी गई।” “जानदार का निशाना न साधो”
64	<b>जानवरों के गले में धंटी लटकाना</b>	“रहमत के फ़रिश्ते उन लोगों के साथ नहीं होते जिन के साथ कुत्ता या धंटी हो।” “धंटी शैतान की बांसरी है।”
65	<b>कृष्ण कृष्ण कृष्ण कृष्ण</b>	यदि तुम ऐसा देखो कि अल्लाह तआला किसी को उस के पाप पर संसारिक सुविधाएं दिए जा रहा है, तो वास्तव में यह उसे ढील देना है, फिर इस आयत की तिलावत की : ﴿فَلَمَّا نَسُوا مَا ذُكِرَ لَهُمْ فَتَحْنَا عَلَيْهِمْ أَبْوَابَ كُلِّ شَيْءٍ حَتَّى إِذَا فَرَحُوا بِمَا أَوْتُوا أَخْذَنَاهُمْ بِعَتَّةً﴾ “फ़िर जब वह लोग उन चीज़ों को भूले रहे जिन की उन्हें नसीहत की जाती थी तो हम ने उन पर हर चीज़ के दर्वाज़े खोल दिए, यहाँ तक कि जब उन चीज़ों पर जो कि उन को मिली थीं खूब मचल गए तो हम ने उन को अचानक पकड़ लिया, फिर तो वह बिल्कुल मायूस हो गए।”
66	<b>दुनिया को तर्जीह देना</b>	“जिस की फ़िक्र मात्र दुनिया की हो तो अल्लाह तआला उसे लोगों का मुहताज बना देता है, और उस की इकट्ठी चीज़ों को बिखरे देता है, और दुनिया से मात्र उसे उतनी ही चीज़ प्राप्त होती है जो उस की तक़दीर में है।”

## सदा के लिए जन्म या जहन्म की ओर

● ● ● **कब्र :** कब्र परलोक का पहला ठिकाना है, काफिर और मुनाफ़िक के लिए आग के गढ़े के रूप में, और मोमिन के लिए कियारी होगी। कई एक पाप के कारण वहाँ अ़ज़ाब होगा : जैसे पेशाब से न बचना, चुगली करना, ग़नीमत के माल में ख़्यानत करना, झूठ बोलना, नमाज़ के समय सोए रहना, कुरुआन के अनुसार कर्म न करना, बलात्कार करना, बालमैथून करना, सूदी कारोबार करना, कर्ज़ वापस न लौटाना इत्यादि। और कब्र के अ़ज़ाब से निम्न चीज़ें बचा सकती हैं : नेक कर्म जो कि अल्लाह तआला के लिए ख़ालिस हो, कब्र के अ़ज़ाब से शरण चाहना, सूरतुलु मुल्क की तिलावत करना। और इसके अ़ज़ाब से शहीद, जिहाद में पहरा देने वाले, जुम्मा के रोज़ मरने वाले, और पेट की बीमारी में मरने वाले सुरक्षित रखे जायें गे।

● ● ● **सूर में फूंक मारना :** वह एक बड़ा कर्न है, जिसे इस्माफ़ील ने मुंह से लगा रखा है, और इस इन्तिज़ार में हैं कि कब उसमें फूंक मारने का आदेश मिले, घबरा देने वाली फूंक : ﴿وَنُفْخَ فِي الْأَصْوَرِ فَصَعِقَ مَنِ فِي الْأَرْضِ إِلَّا مَنِ فِي أَنْشَاءِ اللَّهِ﴾ “और सूर में फूंक दिया जाएगा तो आकाशों और धरती वाले सब बेहोश होकर गिर पड़ेंगे, परन्तु जिसे अल्लाह चाहे।” जिस के बाद पूरी दुनिया बर्बाद हो जाएगी। और 40 दिन के बाद उठाए जाने के लिए सूर में फूंक मारा जाएगा : ﴿ثُمَّ تُفْخَمَ فِيهِ أُخْرَىٰ هُمْ قِيَامٌ يَنْظُرُونَ﴾ “फिर दोबारा सूर फूंका जाएगा तो वह यकदम खड़े होकर देखने लग जाएंगे।”

● ● ● **दोबारा जीवित किया जाना :** फिर अल्लाह तआला एक तरह की बारिश बर्साएगा जिस से जिस्म हरे भरे होजाएंगे (रीढ़ की हड्डी से)। और एक नई जीवन होगी जिस में मौत नहीं आएगी। सब नंगे पैर होंगे, शरीर पर कपड़ा न होगा, फ़रिश्तों और जिन्नों को देख सकेंगे, और अपने अपने अमल के साथ दोबारा जीवित किए जाएंगे।

● ● ● **एकद्वा किया जाना :** अल्लाह तआला हिसाब किताब के लिए सभों को एक ऐसे बड़े दिन में जो कि 50 हज़ार साल के बराबर होगा इकद्वा करेगा, लोग घबराए हुए और मदहोश होंगे, उन्हें ऐसा लगेगा कि वे संसार में कूछ क्षण ही रहे थे, सूरज एक मील की दूरी पर कर दिया जाएगा, लोग अपने अपने कर्तृत के अनुसार पसीना में डूब जाएंगे। उस दिन कमज़ोर और घमण्डी लोग लड़ेंगे, काफिर अपने साथी, शैतान और उसके एलचियों को अदालत के कटहरे में ला खड़ा करेगा, एक दूसरे को शराप रहे होंगे, अत्याचारी मारे ग़म के अपने हाथों को चबा रहे होंगे। और जहन्म को 70 हज़ार लगाम के साथ खींचा जाएगा, हर लगाम को 70 हज़ार फ़रिश्ते खींच रहे होंगे। काफिर उसे देख कर अपनी जान के बदले छुटकारा की तमन्ना करेगा, या फिर वह मिट्टी हो जाने की आर्ज़ करेगा। और पापी लोगों का हाल यह होगा: ज़कात के इन्कारियों के धन को आग की तख़ती बना दी जाएगी, जिस से उन्हें दागा जाएगा। घमण्डियों को चिंवटियों की तरह इकद्वा किया जाएगा, धोके बाज़, खाइन और ग़ासिब रुस्वा किए जाएंगे। चोर अपनी चोरी के धन को ला हाजिर करेंगे, सारी भेदें ख़ुल जाएंगी। पर नेक लोगों को घब्राहट नहीं होगी। वह दिन उन पर जुह की नमाज़ की तरह बीत जाएगा।

● ● ● **शफ़ाउत :** महान शफ़ाउत नबी ﷺ के लिए ख़ास है, यह शफ़ाउत आप महशर के दिन लोगों से कष्ट दूर करने और उनका हिसाब करने के लिए करेंगे। और साधारण शफ़ाउत दूसरे नबी और सदाचारी व्यक्ति करेंगे जो कि मोमिनों को जहन्म से निकालने और उनके दरजे उच्च करने के लिए होंगे।

● ● ● **हिस्ताब** : लाइन के लाइन लोगों की पेशी उनके रब के सामने होगी, वह उन्हें उनके कर्मों को देखाएगा और इसके बारे में पूछेगा, उन की उम्र, जवानी, धन, ज्ञान, वचन के बारे में सवाल करेगा, और आंख, कान तथा दिल की नेमतों के बारे में प्रश्न करेगा। काफिरों और मुनाफिकों का हिसाब उन्हें डांट पिलाने और उन पर दलील कायम करने के लिए सरे आम लोगों के सामने होगा, और उन के विरोध में लोग, धरती, दिन, रात, धन दौलत, फ़रिशते, और स्वयं उन के साथि देंगे, यहाँ तक कि उन का अपराध प्रमाणित हो जाएगा और वे इकार कर लेंगे। और मोमिनों के साथ अल्लाह तआला अकेले में सोध पूछ करेगा, और उन से इकरार ज़रूर कराएगा, यहाँ तक कि जब वह यह सोचने लगेगा कि बर्बाद हो गया तो अल्लाह तआला कहेगा : “मैं ने संसार में तुम्हारे इन पापों पर परदा डाल दिया था, और आज तुम्हारे लिए इन्हें क्षमा कर देता हूँ। और सब से पहले मुहम्मद ﷺ की उम्तीत का हिसाब होगा, और सब से पहले नमाज़ का हिसाब होगा, फिर खून के बारे में फैसला होगा।

● ● ● **सहीफ़ों का उड़ना** : फिर सहीफे उड़ेंगे, और लोग अपने अपने कर्मपत्र लेंगे, जो कि हर छोटी बड़ी चीज़ को धेरे होंगी। ﴿لَا يَعْدُرُ صَغِيرَةً وَلَا كَبِيرَةً إِلَّا حَصَنَهَا﴾ मोमिन अपने कर्मपत्र को दाएं हाथ से लेगा, जबकि काफिर पीठ पीछे अपने बाएं हाथ में लेंगे।

● ● ● **तराजू** : फिर लोगों को बदला देने के लिए हकीकी तराजू में उनके कर्मों को तौला जाएगा, जो कि बहुत ही बारीकबीं होगा, उसके दो पलड़े होंगे। उन कर्मों को भारी कर देगा जो खालिस अल्लाह के लिए शरीअत के अन्कूल होंगे। जिन कर्मों को वह वजनी करेगा वह हैं : लाइलाह इल्लल्लाह, अच्छे आचरण, और ज़िक्र जैसे : अल्हम्दु लिल्लाह, और सुब्बानल्लाहि व बिहम्दिही सुब्बानल्लाहिल अ़्ज़ीम। और लोगों की अच्छाइयों और बुराइयों का निर्णय करेगा।

● **हैज़** : फिर मोमिन हैज़ के पास आएंगे, जो उस में से एक बार पानी पी लेगा कभी पियासा न होगा, और हर नबी का हैज़ खास होगा, पर उसमें सब से बड़ा हमारे नबी ﷺ का होगा, उस का पानी दूध से उजला होगा, मधु से मीठा होगा, उस की सूगन्थ कस्तूरी से अधिक होगी, उसके बर्तन सोने और चाँदी के होंगे सितारों की संख्या में। उस की लम्बाई जार्डन में ऐला नामक जगह से लेकर अदन से अधिक होगी, और उस का पानी कौसर से आएगा।

● ● **मोमिनों का परीक्षा** : हँशर के अन्तिम दिन काफिर अपने भगवानों के पीछे हो लेंगे जिन्हें उन्होंने पूजा था, तो वे उन्हें झूँड के झूँड जानवरों के गोल की तरह पैरों के बल या चेहरों के बल जहन्नम में पहुंचा देंगे। और मात्र मोमिन और मुनाफिक बच जाएंगे, तो उनके पास अल्लाह तआला आएंगा और पूछेगा : “किसके इन्तिज़ार में हो?” वे कहेंगे : “हम अपने रब का इन्तिज़ार कर रहे हैं”। तो जब वह अपनी पिंडली खोलेगा तो उसे पहचान लेंगे। और सारे सज्जे में गिर पड़ेंगे सिवाय मुनाफिकों के, अल्लाह तआला फर्माता है : ﴿يَوْمَ يُكَشَّفُ عَنْ سَاقِ وَيَدِكُنَّ إِلَى الْسَّجُودِ فَلَا يَسْتَطِعُونَ﴾ “जिस दिन पिंडली खोल दी जाएगी और सज्जे के लिए बोलाए जाएंगे तो सज्जा न कर सकेंगे”। फिर वे अल्लाह के पीछे पीछे चलेंगे, वह सिरात़ (पुल) लगाएगा, और उन्हें नूर देगा, पर मुनाफिकों का नूर बुझ जाएगा।

● **स्तिघ्त (पुल)** : यह पुल है जो कि जहन्नम पर बना होगा, ताकि मोमिन इस से पार करके जन्नत की ओर जाएं, इस की सिफ़त में नबी ﷺ का फ़रमान है : “यह माएल होने और फ़िसलने की जगह है, जिस पर काढ़े और टेढ़े सर वाली लोहे की सलाई होंगे, सादान के कांटे की तरह, जो कि बाल से पतला, और तलवार से तेज़ होगा।” और उस जगह प्रत्येक मोमिन को अपने अपने कर्म के हिसाब से नूर दिया जाएगा, सब से ऊँचा पटाड़ की तरह होगा, और सब से कम इन्सान के अंगूठे के किनारे में होगा। उनके लिए रौशनी होगी तो अपने कर्मों के हिसाब से पार कर ले जाएंगे। कुछ मोमिन पलक झपकते ही पार कर जाएंगे, और कुछ बीजली की तरह, कुछ हवा की तरह, कुछ पक्षी की तरह, कुछ अच्छे घोड़े और सवारी

की तरह, तो कूछ लोग सही ह सालिम बच जाएंगे, और कूछ छोड़ दिए जाएंगे और उन्हें खरोच लगे होंगे और कूछ जहन्नम में गिरे पड़े होंगे। परन्तु मुनाफ़िकों के पास गैशनी न होगी, वह लौटेंगे फिर उनके और मोमिनों के बीच दीवार खड़ी कर दी जाएगी, फिर वे पुल पार करना चाहेंगे तो जहन्नम में गिर जाएंगे।

● **जहन्नम :** इसमें काफिर जाएंगे, फिर कछ पापी मुसलमान, फिर मुनाफ़िक, हर 1000 में से 999 जहन्नम में जाएंगे, उसके 7 दर्वज़े होंगे, संसार की आग से 70 गुना अधिक होगी। अधिक सजा के लिए काफिर की डील बढ़ा दी जाएगी, उसके दोनों मोढ़ों के बीच की दूरी 3 दिन की होगी, और दांत उड़द पहाड़ की तरह, चम्डा मोटा होजाएगा और उसे बदला जाएगा ताकि अजाब चखे, उनके लिए जल गरम पानी होगा, जो अंतड़ियों को काट देगा, और खाना थ्रहड़, पीप और खून होगा, सब से कम सजा वाला व्यक्ति वह होगा जिस के दोनों पैरों के नीचे अंगारे होंगे जिस से उस का दिमाग खौल रहा होगा। उसमें उनके चमड़े पकेंगे, गलेंगे, चेहरे झूलसेंगे, घसेटे जाएंगे, पैरों में बेड़ीयां होंगी, गले में तौक होंगे। उस की गहराई बहुत अधिक होगी यदि उस में कोई बच्चा डाला जाए तो उस की तह तक पहुंचने में 70 साल लगेगा। उसके इंधन काफिर और पथर होंगे, हवा गरम होगी, काले धूंए का साया होगा, पोशाक आग का होगा, वह प्रत्येक वस्तु को खा जाएगा किसी को छोड़ेगा नहीं, वह क्रोध से झिंझलाएगा और चिल्लाएगा, चमड़ों को जला देगा, और हड्डियों और दिलों तक पहुंच जाएगा।

● **कङ्गारः :** आप ﷺ ने फरमाया: “मोमिन जहन्नम से छुटकारा पाएंगे तो जन्नत और जहन्नम के बीच कन्त्रः पर रोक लिए जाएंगे, और उस अत्याचार का तस्किया किया जाएगा जो उन्होंने संसार में किया था, यहाँ तक कि जब अपने सारे पाप से साफ़ सुधरा होजाएंगे तो उन्हें जन्नत में जाने की अनुमति दे दी जाएगी, तो उस हस्ती की कसम जिस के हाथ में मेरी जान है उन में से हर कोई अपने दुनिया के घर से अधिक जन्नत के घर के बारे में जानता होगा।”

● **जन्नत :** मोमिनों का ठिकाना, उसकी ईंट सोने और चाँदी की होगी, और गारा कस्तूरी का, उस की कंकरियां मोती और लाल के होंगे, उस की मिट्टी ज़ा’अफ़रान की होगी। उस के 8 गेट होंगे, प्रत्येक गेट की चौड़ाई 3 दिन की मसाफ़त बराबर होगी, जो कि भीड़ के कारण तंग पड़ जाएंगे। उस में 70 दर्जे होंगे हर 2 दर्जे के बीच की दूरी आकाश और धरती जितनी होगी। फिर्दौस सब से ऊपरी मंजिल होगी, और यहाँ से नहरें बहेंगे, उस की छत रहमान का अर्श होगा, उस की नहरें शहद, दूध, शराब और पानी की होंगी, जो बिना खोदाई के बहेंगी, मोमिन जिस तरफ चाहेगा उसे बहा लेजाएगा। उसके मेवे हमेशगी के लिए हैं, करीब और झूके होंगे। उस का खेमा मोती का होगा, उस की चौड़ाई 60 मील होगी, उस के हर कोने में रहने वाले होंगे, जो सुन्दर होंगे जिन की शरीर और चेहरे पर बाल न होगा, आँख सुर्मई होंगी, न उनकी जवानी ढलेगी न कपड़े पूराने होंगे, उन्हें न तो पेशाब आएगा, न पाखाना न थक और खकार, उनकी कंधी सोने की होगी, और पसीने की महक कस्तूरी जैसी होगी, जन्नती औरते हँसीन कुंवारी कन्या होंगी, जो कि महबूबा और हम उम्र होंगी, सब से पहले नबी ﷺ जाएंगे और सारे नबी। कम्तर दर्जे के जन्नती को उस की खाहिश से दस गुना अधिक दिया जाएगा। उनके नौकर लड़के होंगे जो हमेशा लड़के ही रहेंगे, बिखरे हूए मोतियों की तरह। और जन्नत की सब से महान नेमत होगी अल्लाह तआला को देखना, उस की खूशी और उस में हमेशा रहना।

**बोट :** यह महान घटनाएं जिन से होकर ●मोमिन, ●मुनाफ़िक और ●काफिर गुज़रेंगे, लगातार होंगे यहाँ तक कि हर कोई अपने अन्तिम ठिकाने तक पहुंच जाएगा।

# वुजू का तरीका



वुजू के बिना नमाज़ स्वीकार नहीं की जाती, वुजू के लिए पाक पानी का होना ज़रूरी है, पाक पानी वह जो अपनी असली हालत पर बाकी हो, जैसे समुन्दर का पानी, कुंवा, चश्मा और नहर का पानी।

**नोट:** थोड़ा पानी मात्र नापाकी पढ़ने से ही नापाक हो जाता है, अलबत्ता यद्यापि पानी जो कि 210 लिटर से अधिक हो, तो जब तक नापाकी पढ़ने के कारण उसके रंग, या मज़ा या वृंद में परिवर्तन न आजाए वह नापाक नहीं होता।



बिमिल्लाह कह कर वुजू शुरू करे, वुजू करते समय दोनों हथेलियों का धोना मुस्तहब है, अलबत्ता ऐसे व्यक्ति पर जो रात की नींद से जगे तो उस पर इन्हें 3 बार धोना ज़रूरी हो जाता है।

**नोट :** वुजू के अंगों में से किसी भी अंग को तीन बार से अधिक धोना मकरूह है।



फिर वाजिबी रूप से 1 बार कुल्ली करे, जब्कि 3 बार करना अफ़ज़ल है।

**नोट :** 1- मात्र मुंह में पानी डालने और निकालने से कुल्ली नहीं हो जाती, बल्कि मुंह में पानी को घुमाना ज़रूरी है।

2- कुल्ली करते समय भिस्वाक करना मुस्तहब है।



फिर वाजिबी रूप से 1 बार नाक में पानी डाले। पर 3 बार डालना अफ़ज़ल है।

**नोट :** मात्र नाक में पानी डाल लेना काफ़ी नहीं है, बल्कि ज़रूरी है कि सांस द्वारा पानी खिंचे और सांस द्वारा ही झाड़ कर निकाले। ऐसा 1 बार करना वाजिब है, और 3 बार करना अफ़ज़ल है।



फिर वाजिबी रूप से 1 बार चेहरा धोए, पर 3 बार धोना अफ़ज़ल है। चेहरा धुलने की वाजिबी सीमा यह है : चौड़ाई में एक कान से दूसरे कान तक, और लम्बाई में तुँड़ी से लेकर आम तौर पर सर के बाल निकलने की जगह तक।

**नोट :** धनी दाढ़ी का खिलाल करना मुस्तहब है, और यदि हल्की हो तो वाजिब है।



फिर वाजिबी रूप से 1 बार दोनों हाथों को उँगलियों के किनारे से लेकर कोहनियों तक धोए, पर 3 बार धोना अफ़ज़ल है।

**नोट :** बायां हाथ से पहले दायां हाथ को धुलना मुस्तहब है।



फिर पूरे सर का मसह करे, और शहादत की उगँलियों को दोनों कानों में डाले, और अंगूठे से कान के बाहरी भाग का मसह करे। यह सब कुछ मात्र 1 बार करे।

**नोट :** 1- चेहरे की सीमा से लेकर गुद्दी तक सर का मसह करना वाजिब है। 2- गुद्दी से नीचे के बालों का मसह करना वाजिब नहीं है। 3- सर पर बाल न हों तो चम्दे का मसह करेंगे। 4- दोनों कानों के पीछे की सफेदी का मसह करना वाजिब है।



फिर वाजिबी रूप से 1 बार टज्जे समेत दोनों पैर धोए, पर 3 बार धोना अफ़ज़ल है।

## चेतावनियाँ :

① वुजू के अंग 4 हैं : 1- कुल्ली करना, नाक में पानी डालना और चेहरा धोना। 2- दोनों हाथों को धोना। 3- सर और दोनों कानों का मसह करना। 4- टज्जे समेत दोनों पैरों को धोना। इन अंगों के बीच तरतीब वाजिब है, और इसमें आगे पीछे करने से वुजू बातिल होजाता है।

② लगातार धोना वाजिब है, यदि एक अंग के बाद दूसरा अंग धोने में इतनी देरी होजाए कि पहला अंग सूख जाए तो वुजू बातिल होजाएगा।

③ वुजू के बाद यह दुआ पढ़ना सुन्नत है : अश्हदु अल्लाइलाह इल्लाह ला शरीक लह, व अश्हदु अन्न मुहम्मदन् अब्दुहू व रसूलुह।

# नमाज़ का तरीका



जब तुम में से कोई नमाज़ पढ़ने की इच्छा करे तो सीधे खड़े होकर तक्बीरतुल् एहराम “**अल्लाहु اكْبَر**” कहे, मुक्तदी को सुनाने के लिए इमाम तक्बीरतुल् इहाम और बाकी सारी तक्बीरों को ज़ोर से कहे, और बाकी नमाज़ी धीमी आवाज़ से कहें। तक्बीर कहते हुए दोनों कन्धों तक रफउल् यदैन करे, उंगलियाँ आपस में मिली हुई हों। इमाम के तक्बीर कह लेने के बाद मुक्तदी तक्बीर कहे।

**नोट :** अरकान और वाजिबी अक्वाल को जिस कदर नमाज़ी अपने आप को सुना सके उतनी मिक्दार में जह यानी जोर से कहना वाजिब है, चाहे सिर्फी ही नमाज़ क्यों न हो। और कमतर जह ये है कि दूसरा व्यक्ति सुन ले। और कमतर सिर्फ ये है कि स्वयं सुन ले।



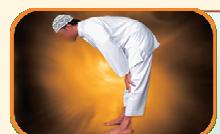
दाहने हाथ द्वारा बायां हाथ की हथेली या कलाई पकड़े, और उसे अपने सीने पर बांध ले, नज़र सज्दे की जगह पर गड़ाए रहे, फिर धीमी आवाज़ में कोई एक दुआ-ए-सना पढ़े, जैसे: **سُبْحَانَكَ اللَّهُمَّ وَبِحَمْدِكَ تَبَارَكَ أَسْمُكَ وَتَعَالَى جَدُّكَ وَلَا إِلَهَ غَيْرُكَ** “**सुब्भानकल्लाहुम्म व बिहम्दिक व तबारकस्मुक व तअ़ाला जहुक व लाइलाह गैरुक**” फिर अऊजु बिल्लाह पढ़े, फिर विस्मिल्लाह पढ़े, फिर सूरतु-लू-फातिहा पढ़े, जहाँ नमाजों में मुक्तदी पर किराअत करना वाजिब नहीं है, पर इमाम के सकतों में, और जिन में जह से किराअत नहीं है उनमें फातिहा पढ़लेना मुस्तहब है, (सहीह हडीस की रु से हर नमाज़ की हर रकअत में फातिहा पढ़ना वाजिब है मुतर्जिम) फिर कोई और सूरत मिलाए, इमाम फ़ज़्र की नमाज़ में और मश्रिब और इशा की पहली दोनों रकअतों में जह से किराअत करें बाकी नमाजों में सिर्फी किराअत करें।

**नोट :** सूरतों को कुर्अन की तर्तीब के मुताबिक पढ़ना मुस्तहब है, जब्कि तर्तीब को उलट देना मेरुह है। और कल्पे की तर्तीब को पलट देना या एक ही सरत की आयतों की तर्तीब को पलट देना हराम है।



फिर “**अल्लाहु اكْبَر**” कहे, तक्बीरतु-लू-इहाम में रफउ-लू-यदैन करने की तरह रफउ-लू-यदैन करे, और रुकुअू में जाए, दोनों हाथों को दोनों घुटनों पर इस तरह रखे गोया कि उन्हें पकड़े हुए है, उंगलियों को फैलाए रहे, पीठ को फैलाए और उसी की बराबरी में सर रखे, फिर 3 बार “**सुब्भान रब्बिय-लू-अ़ज़ीम**” कहे, यह बात ध्यान में रहे कि रुकुअू मिल जाने से रक़अत मिल जाती है।

**नोट :** तक्बीराते इन्तिकाल और तस्मीअ अर्थात : “**अल्लाहु اكْبَر**” और “**समिअल्लाहु لिमन् हमिदह**” कहने का समय एक रुक्न  $\frac{1}{4}$ अवस्था $\frac{1}{2}$  से दूसरे रुक्न  $\frac{1}{4}$ अवस्था $\frac{1}{2}$  के लिए जाने के बीच है न कि उस से पहले या बाद में, और यदि कोई जानबूझकर इन्हें में देरी करे तो उसकी नमाज़ बातिल हो जाएगी।



फिर “**سَمِيمَاللَّهُمَّ لِيمَنْ هَمِيدَه**” कहते हुए सर उठाए, तक्बीरतु-लू-एहराम में रफउ-लू-यदैन करने की तरह रफउ-लू-यदैन करे, जब सीधे खड़ा हो जाए तो “**रब्बना व लक-लू-हम्दु हम्दन् कसीरन् तैइबन् मुबारकन् फीहि मिल्ल-सु-समावाति व मिल्ल-लू-अर्ज़ि व मिल्ल माबैनहुमा व मिल्ल मा शिअूत मिन शैइ-मू-बा'द**” पढ़े।

**नोट :** “**रब्बना व लक-लू-हम्द् ...**” कहने का समय सीधे खड़े होजाने के बाद है न कि रुकुअू से उठने के बीच में।



फिर “**अल्लाहु اكْبَر**” कहते हुए सज्दे में जाए, और अपने दोनों बाजुओं को पहलू से, और पेट को दोनों रानों से हटाए रखे, और दोनों हाथों को कंधों की बराबरी में रखे, दोनों पैरों के किनारों को धरती से लगाए रखे, हाथ और पैर की उँगलियों को काबे की ओर करे, फिर 3 बार “**सुब्भान रब्बिय-लू-आअला**” कहे।

**नोट :** इन सात अंगों पर सज्दा करना वाजिब है : दोनों पैरों के किनारे, दोनों घुटने, दोनों हथेलियाँ और नाक के साथ पेशानी। जानबूझकर बिना उज्ज़ के किसी भी एक अंग पर सज्दा न करने से नमाज़ बातिल होजाती है।



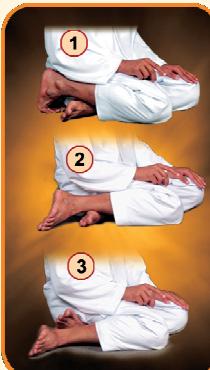
फिर “अल्लाहु अक्बर” कहते हुए सर उठाए, और बैठे, दोनों सज्जों के बीच बैठने का 2 सही ह तरीका है : ① अपना बायां पैर बिछा कर उस पर बैठ जाए, दायां पैर खड़ा रखे, और उँगलियां काबे की ओर मोड़ ले। ② दोनों पैरों को खड़ा ले, उँगलियों को काबा की ओर मोड़ ले, और ऐड़ी पर बैठे, और 3 बार “रब्बिगिर्ला” कहे, और चाहे तो यह दुआएं भी मिलाएं, “वर्हम्नी, वज्ञुर्ना, वर्फ़अन्नी, वर्जुकनी, वन्सुर्ना, वहिदनी, व आफिनी, वअ्रफु अन्नी”, फिर पहले सज्जे की तरह दूसरा सज्जा करे, फिर “अल्लाहु अक्बर” कहते हुए सर उठाए, और दोनों पैरों के पंजों पर सहारा लेते हुए खड़ा होजाएं, और पहली रकअत की तरह दूसरी रकअत पढ़े।

**नोट :** सुरतुल् फातिहा को क्याम में पढ़ा जाएगा, यदि पूरी तरह से खड़ा होने से पहले पढ़ना शुरू कर दिया, तो खड़े होने के बाद उसे दोहराना ज़रूरी है नहीं तो नमाज़ बातिल होजाएगी।



दूसरी रकअत पढ़ कर तशह्वुद के लिए उसी तरह बैठे जिस तरह दोनों सज्जों के बीच बैठा था, और अपने बाएं हाथ को बाएं जांघ पर, और दाएं को दाएं जांघ पर रखे, दाएं की दोनों किनारे वाली उँगलियों को मोड़ले, अंगूठे और बीच वाली उँगली का गोल धेरा बना ले, और शहादत की उँगली से इशारा करता रहे, और तहीयात पढ़े : **الْتَّحِيَّاتُ لِلَّهِ وَالصَّلَوَاتُ وَالطَّبَّابَاتُ السَّلَامُ عَلَيْكَ أَيُّهَا النَّبِيُّ وَرَحْمَةُ اللَّهِ وَرَكَاتُهُ السَّلَامُ عَلَيْنَا وَعَلَى عَبَادِ اللَّهِ الصَّالِحِينَ أَشْهُدُ أَنَّ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَأَشْهُدُ أَنَّ مُحَمَّداً عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ**

“अत्तहियातु लिल्लाहि वस्सलवातु वत्तैइबातु अस्सलामु अलैकै ऐयुहन्बियु व रह्मतुल्लाहि व बरकातुहु, अस्सलामु अलैना व अला इबादिल्लाहिस्सलिहीनु, अशहदु अल्ला इलाह इल्लल्लाहु व अशहदु अन्न मुहम्मदन् अब्दुहु व रसूलुहु”। फिर तीसरी और चौथी रकअत वाली नमाज़ में “अल्लाहु अक्बर” कहते हुए तीसरी रकअत के लिए उठे, और रफउ-ल-यदैन करे, और चौथी रकअत के लिए उठे हुए रफउ-ल-यदैन न करे, पहली रकअत ही की तरह तीसरी और चौथी रकअत भी पढ़े, लेकिन इन्में पस्त आवाज़ से मात्र सरतुल् फातिहा पढ़े।



फिर अन्तिम तशह्वुद के लिए तवरुक करके बैठे, तवरुक के कई एक तरीके हैं जो कि सही हैं : ① बायां पैर बिछाकर उसे दायां पैर के पिंडली के नीचे से निकाल ले, दाएं पैर को खड़ा रखे, और धरती पर बैठे। ② बायां पैर बिछाकर उसे दायां पैर के पिंडली के नीचे से निकाल ले, दाएं पैर को सुलादे, और धरती पर बैठे। ③ बायां पैर बिछाकर उसे दायां पैर के नीचे से पिंडली और जांघ के बीच से निकाल ले, और धरती पर बैठे। मात्र अन्तिम तशह्वुद में तवरुक करना सुन्नत है, फिर तहीयात पढ़े : **اللَّهُمَّ صَلِّ عَلَى مُحَمَّدٍ ... اَتَتْहِيَّاتُ لِلَّهِ ...**, फिर दस्त पढ़े : **وَعَلَى آلِ مُحَمَّدٍ كَمَا صَلَّيْتَ عَلَى إِبْرَاهِيمَ وَعَلَى آلِ إِبْرَاهِيمَ إِنَّكَ حَمِيدٌ مَجِيدٌ اللَّهُمَّ بَارِكْ** **عَلَى مُحَمَّدٍ وَعَلَى آلِ مُحَمَّدٍ كَمَا بَارَكْتَ عَلَى إِبْرَاهِيمَ وَعَلَى آلِ إِبْرَاهِيمَ إِنَّكَ حَمِيدٌ مَجِيدٌ**

“अल्लाहुम्म सल्लिल अला मुहम्मदिं-व्य-अला आलि इब्राहीम इन्क हमीदुम्मजीदु, अल्लाहुम्म बारिक अला मुहम्मदिं-व्य-अला आलि मुहम्मदु, कमा बारकत अला इब्राहीम व अला आलि इब्राहीम इन्क हमीदुम्मजीदु” और यह दुआ पढ़े : **اللَّهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ مِنْ عَذَابِ الْقَبْرِ وَعَذَابِ النَّارِ وَفَتْنَةِ الْمَحْيَا وَالْمَمَاتِ وَشَرِّ الْمَسِيحِ الدَّجَّالِ** : “अल्लाहुम्म इन्नी अज़ुजु बिक मिन् अज़ाबिल्कब्रि व अज़ाबिन्नारि व फिलति-ल-मह्या वल्ममाति व शर्ट-ल-मसीहिद्जाति” और दूसरी सावित दुआएं भी पढ़ना सुन्नत है।



फिर दोनों ओर सलाम फेरे, पहले दाएं ओर चेहरे को करते हुए “**السَّلَامُ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَةُ اللَّهِ وَرَكَاتُهُ** अस्सलामु अलैकुम व रह्मतुल्लाहु” कहे और इसी तरह बाएं ओर करते हुए भी। जब सलाम फेर ले तो अपनी जगह पर बैठे हुए नबी ﷺ से सावित दुआएं पढ़े।

# ज्ञान अनुसार कर्म की अनिवार्यता

मुसलमान भाईयो  
और बहनो !

वह ज्ञान जिसके अनुसार कर्म न हो, अल्लाह, उसके रसूल और मोमिनों के यद्याँ निदित है, अल्लाह तआला ने फरमाया :

﴿يَأَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذْ مُؤْلِكُ مَالَ أَنْتُمْ لَهُ مُؤْلِكٌ إِنَّمَا أَنْتُمْ مُّنْهَكُونَ﴾

“हे मोमिनो! तुम वह बात क्यों कहते हो जो करते नहीं, तुम जो करते नहीं उस का कहना अल्लाह को सजा नापसंद है”। अबू हुरैरः ﷺ कहते हैं : “वह ज्ञान जिसके अनुसार कर्म न किया जाए उस खजने की तरह है जिसे अल्लाह के गासे में खर्च न किया जाए”।

और फुजैल राहिमहुल्लाह कहते हैं : “ज्ञानी उस समय तक जाहिल रहता है जब तक उसके अनुसार कर्तव्य न करे”। और मालिक बिन दीनार कहते हैं : “तुम ऐसे व्यक्ति से मिलोगे जो एक अक्षर में भी गलती नहीं करता, लेकिन उसका सम्पूर्ण कर्म गलती से भरा होगा”।

अल्लाह तआला ने आप के लिए इस लाभ-दायक किताब को पढ़ना आसान कर दिया, पर इस पढ़ाई का फल अभी बाकी है, और वह है इसके अनुसार कर्म करना।

■ इस किताब में आप ने कुरूआनी आयतें और उनकी तफ़सीर पढ़ीं, आप ने इन से जो कुछ भी सीखा है उस के अनुसार कर्म करने की कोशिश करें; क्योंकि सहाबए किराम ﷺ “नबी ﷺ से दस आयतें सीखा करते थे, फिर दूसरी दस आयतें उस समय तक नहीं सीखते जब तक कि पहली आयतों का ज्ञान न होजाए और उनके अनुसार कर्म न कर लें, वह कहते हैं : हम ने ज्ञान और कर्म दोनों को एक साथ सीखा”। जैसा कि शरीअत ने हमें इस पर उभारा है, इन्हे अब्बास इस आयत : ﴿يَتَلَوُنَهُ حَقَّ تِلَاقِهِ﴾ “वे उसे पढ़ने के हक्क के साथ पढ़ते हैं” की तफ़सीर में कहते हैं : जैसा अनुसरण करना चाहिए वे वैसा ही उसका अनुसरण करते हैं। और फुजैल कहते हैं : कुरूआन कर्म करने के लिए उतरा लेकिन लोगों ने उस की तिलावत को कर्म बना लिया।

■ आप ने नबी ﷺ की हड्डीसें भी पढ़ीं, जिन्हें अपनाने और उनके अनुसार कर्म करने के लिए आप जलदी कीजिए; क्योंकि इस उम्मत के नेक लोग जो कुछ भी पढ़ते थे उसके अनुसार अपनी जीवन को ढालने और उसकी ओर बुलाने में जल्दी करते थे आप ﷺ की इस हड्डीस की पैरवी करते हुए : “यदि मैं तुम्हें किसी चीज़ का आदेश दूँ तो शक्ति भर उसे बजा लाओ, और किसी चीज़ से रोकूँ तो उस से रुक जाओ”।  $\frac{1}{4}$ बुख़ारी एवं मुस्लिम  $\frac{1}{2}$  और अल्लाह तआला की सज़ा से डरते हुए जैसा कि उसने फरमाया :

﴿فَإِيَّاكَ اللَّهَنَ يَحْلِفُونَ عَنْ أُمْرِكِهِمْ فَسَنَهُ أَوْ بُصِّبِرُهُمْ عَذَابُ أَلِيمٌ﴾ “सुनो जो लोग उसके  $\frac{1}{4}$ अल्लाह के रसूल के  $\frac{1}{2}$  आदेश का विरोध करते हैं, उन्हें डरते रहना चाहिए कि कहीं उन पर कोई ज़बरदस्त आफ़त न आ पड़े, या उन्हें कोई दुःख की मार न पड़े।” और यह है इस के कुछ उदाहरण :

► उम्मुल मोमिनीन उम्मे हबीबा ﷺ नबी ﷺ की यह हड्डीस रिवायत करती हैं : “जिस ने दिवा तथा रात्री में 12 रक़अत नमाज़ पढ़ी, तो इनके बदले उस के लिए जन्नत में एक घर बना दिया जाता है”। उम्मे हबीबा ﷺ कहती हैं जब से मैं ने यह हड्डीस सूनी इन्हें नहीं छोड़ा।

► इन्हे उमर ﷺ इस हड्डीस को : “मुसलमान का कोई भी हक्क न हो जिस की वह वसीयत करना चाहता हो, तो उस पर तीन रातें न आएं मगर उस की वसीयत लिख्खी हुई हो”।